



# निरयावलिका सूत्रकी विषयानुक्रमणिका ।

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
१	मङ्गलाचरण	१-२
२	शास्त्रका आरम्भ	३
३	गुणशीलक चैत्यका वर्णन	४-५
४	आर्यसुयर्मस्वामीका वर्णन और पञ्चाभिगमपूर्वक समागम	६-१०
५	जम्बूस्वामीका वर्णन	११-१६
६	जम्बूस्वामीका प्रश्न	१७-२२
७	शास्त्रका परिचय	२३-२४
८	जम्बूस्वामीका प्रश्न	२५-२७
९	कृणिकराजाका वर्णन	२८-३०
१०	पद्मावतीका वर्णन	३१-३४
११	काली देवीका वर्णन	३५-३७
१२	कालकुमारका वर्णन	३८
१३	सम्यक्त्वकी प्रशंसा	३९-४२
१४	देवताओं द्वारा श्रेणिक की परीक्षा	४३-४४
१५	देवताओं के द्वारा की गई श्रेणिक की स्तुति	४५-४६
१६	दो देवाने श्रेणिकको अर्पित द्वारादिकका वर्णन	४७-४८
१७	कृणिकराजका वर्णन	४९-५०
१८	चेष्टना देवीका वर्णन	५१-५२
१९	चेष्टना और कृणिकके प्रश्नोत्तरका वर्णन	५३-५४
२०	श्रेणिकराजका प्राणत्याग	५५
२१	रथमुक्षर सदग्रामका वर्णन	५६-५९
२२	कालीदेवीके विचारका वर्णन	६२-७२
२३	कालीराज्ञीका भगवान् को वन्दनके लिये जाना	७३-७७
२४	भगवान् से धर्मव्याका श्रवण	७७-७८
२५	काली राज्ञीका भगवान् से प्रश्न	७८-८०
२६	कालकुमारके वृत्तान्तका वर्णन	८१-८२
२७	कालीदेवीके पुत्रशोकका वर्णन	८३-८४
२८	गौतमस्वामीका भगवान् से कालकुमारके विषयमें प्रश्न	८४-८७
२९	चेष्टना राणीके दोहद (दोहला)का वर्णन	८८-९४

પ્રાપ્તિસ્થાન

શ્રી ય બા શ્વે સ્થાનકવાસી  
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ  
ગ્રીન લોન્ડ પાસે, રાજકોટ

Published by - -

Sree Akhil Bharat S S  
Jain Shastrodधार Samiti,  
Garedia Kuva Road RAJKOT  
(Saurashtra) W Ry Indi

ખીજ આવૃત્તિ પ્રત ૧૦૦૦  
વીર સવત ૨૪૮૬  
વિક્રમ સવત ૨૦૧૬  
છત્રી સન્ ૧૯૬૦

મુદ્રક અને મુદ્રણસ્થાન  
જયતિતાલ દેવચંદ મહેતા  
જ મ બા ર ત પ્રે સ,  
ગ રે હી આ કુ વા રે હ  
સાક માર્કેટ પાસે, રાજકોટ

## प्रस्तावना

ससारके सभी जीव परम अमृत समान सुखकी गवेयणा करते हैं, सुखके प्रयत्नमें लगे रहते हैं, सुखके कारणको ढूँढते हैं, सुखके चातावरणको पसंद करते हैं, सुखकी याचना और सुख ही की मिश्रित मानते हैं, तो भी वे परम सुखके बदले परम दुःख ही प्राप्त करते हैं। सभी प्रयत्न सभी कारण और सभी चातावरण ये दुःखरूप जालमें परिणत होकर आत्मरूप मोले माले मृगोंको फसा कर दुःखित करते हैं। जिससे आत्मा अपना मान भूलकर अज्ञानरूपी अन्धकारमें गोता खाता है भटकता है, फिर इन्द्रिय रूपी चोर चारों तरफसे आकर दुर्बल आत्माको घेर लेते हैं और अनेक प्रकारकी विडम्बना करते हुए आत्माको हैरान करते हैं। जैसे इन्द्र वज्रसे पर्वतको चूर २ कर डालता है वैसे ही वे आत्माके शम-दम आदि गुणोंको नाश करके आत्माको जड़ जैसा बनाते हुए दीन हीन बनाकर छोड़ते हैं।

जब आत्मा निर्धूल हो जाता है तब मोहरूपी सुभट आत्म-राज्यमें प्रवेश करता है, और वहाँ विघ्नपरपराको उपस्थित कर आत्माका सर्वस्व लूटकर उसको भवरूप रूपमें डालता है। वहाँ आत्माको सयोग वियोगरूप आधिपत्याधि रूप दुष्ट जलजतु हरणक तरहसे कष्ट पहुँचाते हैं, सर्प जैसे भेड़कको गिल जाता है वैसे ही जन्म जरा मृत्यु आत्माको गिलता रहता है। फिर किस प्रकार सुखकी आशा की जाय? ऐसी अवस्थामें तो सुखका स्वप्न भी नहीं मिल सकता, 'हा कष्टम्' तो भी ससारी जीव सुखकी आशा करते हैं।

फिर अविरति रूपी राक्षसी आकर आत्माको घेर लेती है और विष समान विषय भोगोंमें फसाकर उसे नि मार बना देती है, आत्माके निज स्वरूपको पलटाकर विभावदशा उत्पन्न करती है जिससे आत्मा परस्वरूपको अपना स्वरूप समझकर भवभ्रमण रूप परपराकी और भी वृद्धि करता हुआ कष्ट पर कष्ट भोगता है, सुख कैसे प्राप्त हो इसकी तलाशमें घूमता है, इतनेमें कषाय रूप राक्षस विविध प्रकारसे त्रास पैदा करता है, तो भी आत्मा दुःखके निदान



क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ.
३०	दोहदकी पूर्ति करनेके विषयमें श्रेणिकराजका वर्णन	९५-१०४
३१	दोहद पूर्तिके पीछे गर्भधारण विषयमें चेलुनादेवीका वर्णन	१०५-१०७
३२	कूणिकराजके जन्मका और कुमारको निर्जनस्थलमें छोड़नेका चेलुनादेवीकी आज्ञा और श्रेणिकराजका उपालम्भका वर्णन	१०७-११२
३३	कूणिकके त्यागादि और नामकरणका वर्णन	११२-११५
३४	श्रेणिकका ग्रन्थन और कूणिकके राज्याभिषेकका वर्णन	११६-११८
३५	श्रेणिकराजके वात्सल्यता परिचयका वर्णन	११९-१२०
३६	श्रेणिकराजके मरणादिका वर्णन	१२०-१२८
३७	कूणिकराज, श्रेणिकराजके मारण के कारणहोनेका वर्णन	१२९-१३५
३८	वैहल्यकुमारकी गन्धहस्तीसे क्रीडा	१३६-१४४
३९	चेटराज और कूणिकराजका दूत द्वारा सवाद	१४५-१५६
४०	कूणिककी मालादि कुमारों से मन्त्रणा	१५७-१६२
४१	कौटुम्बिक पुरुषोंसे कूणिक राजकी आज्ञा	१६३-१६४
४२	कूणिक और चेटरके युद्धोद्योगका वर्णन	१६५-१७५
४३	सुकालकुमारका वर्णन	१७६-१७८
४४	पद्मकुमारका वर्णन	१७८-१८२
४५	पद्मभनगारका वर्णन	१८२-१८५
४६	भद्रकुमारादि आठ कुमारोंका वर्णन और भद्रादि देवोंकी स्थिति	१८६-१९१
४७	चन्द्रदेवके पूर्वभवका वर्णन	१९२-१९४
४८	चन्द्रदेवका वर्णन	१९५-१९८
४९	अङ्गति गाथापत्रिका वर्णन	१९९-२३२
५०	सोमिल ब्राह्मणका वर्णन	२३३-२५६
५१	रुद्रपुत्रिका देवीका वर्णन	२५७-३१४
५२	पूर्णभद्रदेवका वर्णन	३१४-३१९
५३	मणिभद्रदेवका वर्णन	३२०-३२२
५४	श्रीदेवीका वर्णन	३२३-३३९
५५	निपथकुमारका वर्णन	३४०-३६८
५६	मायानि आदिनी वर्णन	३६९-३७०
५७	शाल्वप्रशस्ति	३७१-३७४

निरयालिका आदि पाँच उपाङ्ग भगवानकी धर्मकथानुयोग बाणीमें अन्तर्हित हैं। इन पाँचों उपाङ्गोंमें (१) निरयावलिका अन्तकृतका (अन्त-गडमूत्र) उपाङ्ग है, और (२) कल्पावतमिका अनुत्तरोपपातिकका, (३) पुष्पिता प्रद्वनव्याकरण सूत्रका, (४) पुष्पचूलिका विपाकमूत्रका, एवं वृष्णिदशा दृष्टिवादाङ्गका उपाङ्ग है।

इनमें निरयावलिका उपाङ्गमें काल आदि दस कुमारोंका वर्णन काल आदि दस अध्ययनोंमें किया गया है। जो मन्त्रिसमें इस प्रकार है—

महाराज श्रेणिककी अनेक रानियाँ थीं। उनमें नन्दा, चेल्हना, काली, सुकाली, महाकाली, कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा, वीरकृष्णा, रामकृष्णा, पितृसेनकृष्णा, और महासेनकृष्णा, ये उनकी मुख्य रानियाँ थीं। इनमें नन्दाके पुत्र अभयकुमार थे, चेल्हनाके पुत्र कूणिक, वैद्यस्य और वैद्यस्य ये। काली आदि दसों रानियोंके पुत्र क्रमशः काल, सुकाल, महाकाल, कृष्ण, सुकृष्ण, महाकृष्ण, वीरकृष्ण, रामकृष्ण, पितृसेनकृष्ण और महासेनकृष्ण थे। इन कुमारोंमें अभयकुमार प्रव्रजित हो गये। चेल्हनाके पुत्र कूणिकने काल आदि दस कुमारोंको अपनी ओर मिलाकर महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया और उन्हें अनेक प्रकारकी तकलीफें देने लगा। एक दिन कूणिक अपनी माताके चरण बन्दनके लिये आया। माताने उसे देखकर अपना मुह फिरा लिया। यह देख कूणिक हाथ जोड़ इस प्रकार बोला—हे माता! मैं अपने प्रारम्भसे राज्यका सम्राट् बना, यह देखकर भी तुझे आनन्द नहीं होता, तुम्हारे मुखपर हर्षका कोई चिह्न नहीं दिखायी देता, तुम उदासीन हो, क्या यह तुम्हारे लिये उचित है? भला तुम्ही सोचो, कौन ऐसी मा होगी जो अपने पुत्रकी उन्नति पर प्रसन्न न होगी। यह सुनकर महारानी चेल्हाने कहा—वेदा! तुम्हारी इस उन्नतिसे मुझे किस प्रकार आनन्द हो? क्यों कि तुमने अपने पिता महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया है, जो तुम्हारे देव गुरुके समान है, जिन्होंने तुम्हारे उपर अनेक उपकार किये हैं। उन्हींके साथ तुम्हारा यह व्यवहार समुचित है! जरा तुम्ही सोचो!

कूणिकने कहा—मा! जो श्रेणिक राजा मुझे मार डालना चाहते थे, वे मेरे परम उपकारी हैं, यह कैसे! स्पष्ट बताओ।

रूप उस कपायको ही सुखका निदान समझकर उसमें आसक्त होता है, सुखके जितने जितने भी कारण हे— अहिंसा सयम तप आदि, उनको दुःख रूप समझकर उन्हें छोड़ बैठता है, धर्म अधर्म आत्मा अनात्माके विवेकसे वंचित रहता है, उन्मार्गगामी बनता है, सुमार्गको परित्याग करता है, फिर उसी दुःख परपराकी जालमें फसता है। इतनेमें प्रमाद रूपी पिशाच आकर झूतता है और आत्माकी ऐसी छिन्न भिन्न दशा करता है कि आत्मा जड़ स्वरूप बनकर जड़ वस्तुओंमें ही आनन्द मानना है।

इधर अशुभयोग रूप भूत आत्मामें प्रवेश करता है, तब फिर क्या ? कल्पनासे भी बाहर परिस्थिति बन जाती है। अशुभ योगों से अशुभ प्रवृत्तियाँ अशुभ कार्योंकी और आत्माको घसीटती हैं। फिर आत्मा परतत्र उनकर ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मोंको मन्द तीव्र आदि रसमें प्रवृत्त हो बांधता है और एकसौ अड़तालीस प्रकृतियों की फासमें फँसकर नाना प्रकार का दुष्कृत्य करके नरक निगोद आदि अनन्त दुःखरूपी खड्डोंमें गिर जाता है। इस प्रकार अनन्त काल तक आत्मामें लिये मनुष्यभ्रम पाना तो दूर रहा, किन्तु निगोदकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रियसे चादर एकेन्द्रियका भी भ्रम वह नहीं पा सकता।

इस तरह चतुरगतीमें भटकता भ्रम भ्रमण करता २ आत्मा कदाचित् मनुष्य भ्रममें आ भी गया तो मिथ्यात्व अविरति कपाय प्रमाद और अशुभ योगों की प्रवृत्तियाँ उसको घेर लेती हैं, जिससे वह फिर भवाटवीमें पड़ जाता है और उसी विकल दशाको प्राप्त कर जन्म मरण आदि पाता रहता है।

इस प्रकारकी अवस्था सकल समारी जीवों की भगवानने अपने केवलज्ञानरूपी प्रकाशसे अवलोकन करके परम कृपा करते हुए शारीरिक मानसिक दुःखोंको मिटानेवाली जन्म मरण आदिको उच्छेद करनेवाली जिनवाणीको द्वादश अंग द्वारा प्रवचन रूपसे प्रकाशित की है। वह चाणी १ चरणकरणानुयोग २ धर्मकथानुयोग ३ गणितानुयोग और ४ द्रव्यानुयोग रूपमें विभक्त है।

निरयालिका आदि पाँच उपाङ्ग भगवानकी धर्मकथानुयोग वाणीमें अन्तर्हित हैं। इन पाँचों उपाङ्गोंमें (१) निरयावलिका अन्तकृतका (अन्त-गडसूत्र) उपाङ्ग है, और (२) कल्पावतसिका अनुत्तरोपपातिकका, (३) पुष्पिता प्रडनव्याकरण सूत्रका, (४) पुष्पचूलिका विपाकसूत्रका, एवं वृष्णिदशा दृष्टिवादाङ्गका उपाङ्ग है।

इनमें निरयावलिका उपाङ्गमें काल आदि दस कुमारोंका वर्णन काल आदि दस अध्ययनोंमें किया गया है। जो सक्षिप्तमें इस प्रकार हैं—

महाराज श्रेणिककी अनेक रानियाँ थी। उनमें नन्दा, चेल्लना, काली, सुकाली, महाकाली, कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा, वीरकृष्णा, रामकृष्णा, पितृसेनकृष्णा, और महासेनकृष्णा, ये उनकी मुख्य रानियाँ थी। इनमें नन्दाके पुत्र अभयकुमार थे, चेल्लनाके पुत्र कूणिक, वैदव्य और वैदायस थे। काली आदि दसों रानियोंके पुत्र क्रमशः काल, सुकाल, महाकाल, कृष्ण, सुकृष्ण, महाकृष्ण, वीरकृष्ण, रामकृष्ण, पितृसेनकृष्ण और महासेनकृष्ण थे। इन कुमारोंमें अभयकुमार प्रव्रजित हो गये। चेल्लनाके पुत्र कूणिकने काल आदि दस कुमारोंको अपनी ओर मिलाकर महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया और उन्हें अनेक प्रकारकी तरुलीफें देने लगा। एक दिन कूणिक अपनी माताके चरण चन्दनके लिये आया। माताने उसे देखकर अपना मुह फिरा लिया। यह देख कूणिक हाथ जोड़ इस प्रकार बोला—हे माता ! मैं अपने प्रारम्भसे राज्यका मन्त्राट् बना, यह देखकर भी तुझे आनन्द नहीं होता, तुम्हारे मुखपर हर्षका कोई चिह्न नहीं दिखायी देता, तुम उदासीन हो, क्या यह तुम्हारे लिये उचित है ? मला तुम्हीं सोचो, कौन गेमी मा होगी जो अपने पुत्रकी उन्नति पर प्रसन्न न होगी। यह सुनकर महारानी चेल्लनाने कहा—वेदा ! तुम्हारी इस उन्नतिसे मुझे किस प्रकार आनन्द हो ? क्यों कि तुमने अपने पिता महाराज श्रेणिकको कैद कर लिया है, जो तुम्हारे देव गुरुके समान हैं, जिन्होंने तुम्हारे उपर अनेक उपकार किये हैं। उन्हींके साथ तुम्हारा यह व्यवहार समुचित है ! जरा तुम्हीं सोचो !

कूणिकने कहा—मा ! जो श्रेणिक राजा मुझे मार डालना चाहते थे, वे मेरे परम उपकारी हैं, यह कैसे ! स्पष्ट बताओ।

रूप उस कषायको ही सुखका- निदान समझकर उसमें आसक्त होता है, सुखके जितने जितने भी कारण हैं- अहिंसा सयम तप आदि, उनको दुःख रूप समझकर उन्हें छोड़ बैठता है, धर्म अधर्म आत्मा अनात्माके विवेकसे वंचित रहता है, उन्मार्गगामी बनता है, सुमार्गको परित्याग करता है, फिर उसी दुःख परंपराकी जालमें फसता है। इतनेमें प्रमाद रूपी पिशाच आकर श्रुमता है और आत्माकी ऐसी छिन्न भिन्न दशा करता है कि आत्मा जड़ स्वरूप बनकर जड़ वस्तुओमें ही आनन्द मानता है।

इधर अशुभयोग रूप भूत आत्मामें प्रवेश करता है, तब फिर क्या ? कल्पनासे भी बाहर परिस्थिति बन जाती है। अशुभ योगों से अशुभ प्रवृत्तियाँ अशुभ कार्योंकी और आत्माको घसीटती हैं। फिर आत्मा परतंत्र बनकर ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मोंको मन्द तीव्र आदि रसमें प्रवृत्त हो बांधता है और एकसौ अड़तालीस प्रकृतियों की फासमें फमकर नाना प्रकार का दुष्कृत्य करके नरक निगोद आदि अनन्त दुःखरूपी खड्डोंमें गिर जाता है। इस प्रकार अनन्त काल तक आत्माके लिये मनुष्यभव पाना तो दूर रहा, किन्तु निगोदकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रियसे बादर एकेन्द्रियका भी भव वह नहीं पा सकता।

इस तरह चतुरगतीमें भटकता भव भ्रमण करता २ आत्मा कदाचित् मनुष्य भवमें आ भी गया तो मिथ्यात्व अविरति कषाय प्रमाद और अशुभ योगों की प्रवृत्तियाँ उसको घेर लेती हैं, जिससे वह फिर भवाटवीमें पड़ जाता है और उसी विकल दशाको प्राप्त कर जन्म मरण आदि पाता रहता है।

इस प्रकारकी अवस्था सकल समारी जीवों की भगवानने अपने केवलज्ञानरूपी प्रकाशसे अवलोकन करके परम करुणा करते हुए शारीरिक मानसिक दुःखोंको मिटानेवाली जन्म मरण आदिको उच्छेद करनेवाली जिनघाणीको द्वादश अंग द्वारा प्रवचन रूपसे प्रकाशित की है। वह घाणी १ चरणकरणानुयोग २ धर्मकथानुयोग ३ गणितानुयोग और ४ द्रव्यानुयोग रूपमें विभक्त है।

एक २ भाग काल आदि दस कुमारोंको दिया, और ग्यारहवाँ भाग खुद लेकर राज्य करने लगा।

राजा श्रेणिकने सेचनक गन्ध हाथी और रानी नन्दाने अठारह लडीवाला हार कूणिकके छोटे भाई वैहल्यको दिया था। वह हाथी पर बैठ गया नदीमें अपने अन्तःपुर परिवारके साथ क्रीडा करते थे। उनकी क्रीडा देखकर लोग कहने लगे—वास्तविक राज्योपभोग तो वैहल्य कुमार ही करते हैं। कूणिक तो नाम मात्रके राजा हैं, क्यों कि उनके पास सेचनक गन्ध हाथी नहीं है। धीरे-२ वैहल्यकी जलक्रीडाका समाचार कूणिक राजाकी रानी पद्मावतीको मालूम हुआ, वह वैहल्यसे सेचनक हाथी और अठारह लडीवाला हार ले लेनेके लिये कूणिकको बार बार प्रेरित करने लगी। कूणिकने अन्तमें रानीकी बात मानकर अपने भाईसे हाथी और हार माँगा। उन्होंने भी राज्यका हिस्सा माँगा, परन्तु कूणिक इस पर तैयार न हो सके। यह देख वैहल्य कुमार मौका पाकर हाथी हार आदि अपनी सभी सामग्री लेकर अपने अन्तःपुर परिवारके साथ वैशाली नगरीमें अपने नाना चेटकके पास पहुँचे। कूणिकने अपने दूतके द्वारा चेटकको सदेशा दिया—कि आप हाथी और हारके साथ वैहल्यको भेजें। इसपर चेटकने उत्तरमें सदेशा भेजा—यदि तुम राज्यका भाग वैहल्यको दो तो इसे हम हाथी और हारके साथ भेज सकते हैं, परन्तु कूणिकको यह शर्त मजूर नहीं हुई, फल स्वरूप दोनोंमें युद्ध हुआ। उधर कणिककी तरफ काल आदि दस कुमार थे उधर चेटककी और नौ लन्ठी नौ मल्लकि ये अठारह गणराजा थे। इनमें प्रत्येकके पास तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ और तीन २ करोड़ पैदल सैनिक थे। प्रथम दिनकी लड़ाईमें कालकुमार अपने तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ और तीन करोड़ पैदल सैनिकके साथ चेटक राजासे लड़नेके लिये आया और चेटकके एक अमोघ बाणसे सैन्य सहित मारा गया। दूसरे दिन सुकालकुमार, तीसरे दिन महाकाल, चौथे दिन कृष्णकुमार, पाँचवें दिन सुकृष्ण, छठे दिन महाकृष्ण, सातवें दिन वीरकृष्ण, आठवें दिन रामकृष्ण, नववें दिन पितृसेनकृष्ण, और दशवें दिन महासेनकृष्ण अपने २ सैन्य सहित चेटकके

रानीने कहा-बेटा ! जब तुम मेरे गर्भमें आये, उस समय मुझे दोहद उत्पन्न हुआ कि मैं राजा श्रेणिकके उदरवलिका मांस तल भूनकर मदिराके साथ खाऊँ। इसके लिये मैं उदास रहने लगी और दिनानुदिन क्षीण होने लगी। जब यह समाचार तुम्हारे पिताको मिला तो उन्होंने इसका कारण शपथ पूर्वक पूछा, तो मैंने अपना दोहद बतलाया। बादमें तुम्हारे पिताने मेरा दोहद पूरा किया। दोहद पूरा हो जानेके बाद मैंने सोचा-यह बालकने गर्भावस्थामें ही पिताका मांस खाया, उत्पन्न होनेपर न जाने क्या करेगा ? इस लिये जिस किसी प्रकार इस गर्भको गिरा देना हो श्रेयस्कर है। पर अनेक प्रकारकी ओषधीसे भी गर्भ न गिरा। फिर नौ महीनेके बाद उस गर्भसे तुम पैदा हुए, मैंने तुम्हें अनिष्ट समझ कर उकरडी पर फिकवा दिया। यह बात तुम्हारे पिताको मालूम हुई, वह तुम्हें खोज कर ले आये और मुझे उन्होंने इस कार्यके लिये बड़ी मर्त्तना दी। तेरी उड़लीको उकरडी पर सुर्गेने काट खाया जिससे वह सूज गयी उसमें पीप भर आया, तुझे असह्य वेदना होने लगी, तू चिड़ाने लगा, उस समय तेरे पिता तुम्हारे पास बैठे रहते थे, दिन रात तुम्हारी परिचर्या करते रहेते थे, तुम जब व्रणकी वेदनासे रो पड़ते थे, उस समय तुम्हारी उड़लीको अपने मुहमें डाल पीप चूसकर धूक देते थे, उससे तुझे शान्ति मिलती थी और तू धीरे-धीरे अच्छा हो गया। बेटा ! तू ही सोच, ऐसे परम उपकारी पिताके साथ तेरा यह वर्ताव उचित है ? अपनी मा के मुखसे यह सुन कूणिक बहुत दुःखी हुआ। परम उपकारी पिताका ग्रन्थन तोड़ूँ इस भावनासे उसी समय हाथमें कुल्हाड़ी लेकर जिस पिंजरेमें महाराजा श्रेणिक कैद थे, उस पिंजरेको तोड़नेके लिये चल पड़ा। लेकिन राजा श्रेणिकने कूणिकको हाथमें कुठार लेकर आते हुए देख मनमें सोचा-न जाने यह कूणिक मुझे किस कुमौतसे मारेगा ? इस भयसे उन्होंने अपनी अंगुठीमें जडा हुआ तालपुट विप चूस कर अपना अन्त कर लिया। पिताकी मृत्युसे कूणिक अत्यधिक दुःखी हुआ, उसे राजगृहकी प्रत्येक वस्तु पिताकी स्मृति दिलाकर दृग्गित करने लगी, पिताक प्रति किये हुए अन्याय उसकी आत्माको कष्ट देने लगे। वह राजगृहमें नहीं रह सका, राजगृह छोड़कर चम्पानगरीको उसने राजधानी बनायी। वहाँ अपने भाई चण्डुओंके साथ रहने लगा और राज्यको ग्यारह मार्गोंमें बाँटकर

अध्ययन हैं। उन दसों देवियोंका नाम-श्री (१) ह्री (२) धी (३) कीर्ति (४) बुद्धि (५) लक्ष्मी (६) इलादेवी (७) सुरादेवी (८) रसदेवी (९) और गन्धदेवी (१०) है। ये दसों देवियाँ भगवानके दर्शनके लिये आयीं और नाट्यविधि दिखाकर अपने २ स्थान पर चली गयी। गौतमस्वामीने इन देवियोंकी ऋद्धि प्राप्तिके बारेमें पूछा। भगवानने इन सगोत्रा पूर्व भवका वर्णन किया, और कहा-हे गौतम ! ये सभी देवलोकसे न्यव कर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेंगी और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेंगी !

इसका पाँचवाँ वर्गका नाम वृष्णिदशा वर्ग है। इसमें बारह अध्ययन हैं। ये बारह अध्ययन बारह कुमारोंका नामसे हैं। उन कुमारोंका नाम-निपथ (१) मायनी (२) वह (३) वह (४) पगता (५) ज्योति (६) दशरथ (७) हृदरथ (८) महाधन्वा (९) सप्तधन्वा (१०) दशधन्वा ११ और शतधन्वा १२ है। इनमें निपथकुमारका वर्णन इस प्रकार है-निपथ कुमार राजा बलदेव और रानी रेवतीका पुत्र थे। इनका विवाह पचास राजकन्याओंके साथ हुआ और वह अपने उपरी महलमें सुख पूर्वक रहने लगे। एक समय द्वारकाके नन्दन वन उद्यानमें भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे। भगवानके दर्शनके लिये कृष्ण वासुदेव आदि नन्दन वन उद्यानमें गये। निपथकुमारकी भी भगवानके पधारनेका समाचार ज्ञात हुआ। वह भी भगवानके दर्शनके लिये। धर्म तथा सुनकर आवश्यक धर्म स्वीकार कर अपने घर लौट गये। भगवानका अन्तेवासी वरदत्त अनगार निपथकुमारकी सौम्यता देख मुग्ध हो गये। और निपथकुमारकी यह सौम्यता और ऋद्धि आदि कैसे प्राप्त हुई ? इस बारेमें भगवानसे पूछा। भगवानने निपथकुमारके पूर्वभवका वर्णन किया। वरदत्तने पूछा-हे भदन्त ! यह निपथकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा ? भगवानने कहा-हाँ, वरदत्त ! यह निपथकुमार मेरे समीप प्रव्रजित होगा। इसके बाद भगवान जनपदमें विचरने लगे। एक समय निपथकुमार पोषधशालामें दर्भके आसन पर बैठे हुए थे। उनके मनमें यह भावना पैदा हुई -यदि भगवान यहाँ आँवें तो मैं उनका दर्शन करूँ और उनकी



साथ लड़ने आये और चेटकके द्वारा ससैन्य मारे गये। और अपने पाप कर्मके प्रभावसे निरय (नरक) गामी हुए। इसी वस्तुको भगवाने गौतम स्वामीको उनके पूछने पर निर्यावलिका नामसे फरमाया है।

कल्पावतसिका नामक द्वितीय वर्गमें दस अध्ययन हैं, इन दसों अध्ययनोंका नाम क्रमसे—पद्म (१) महापद्म (२) भद्र (३) सुभद्र (४) पद्मभद्र (५) पद्मसेन (६) पद्मगुल्म (७) नलिनीगुल्म (८) आनन्द (९) और नन्दन (१०) हैं। प्रथम अध्ययनमें पद्मकुमारका वर्णन इस प्रकार है। पद्मकुमार भगवान महावीर स्वामीके पास प्रव्रजित हो पाँच वर्षों तक आमण्य पर्याय पाली, अन्तमें मासिकी सल्लेखनासे साठ भक्तोंको छेदित कर काल प्राप्त हुए, और सौधर्म कल्पमें देवता होकर उत्पन्न हुए। वहाँसे च्यव कर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेंगे और सिद्ध होकर सब दुखोंका अन्त करेंगे। इसी प्रकार महापद्मसे लेकर नन्दन पर्यन्त नौ कुमारों का वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवानके समीप प्रव्रजित हुए और सल्लेखनासे अपने शरीरको त्याग कर देवलोकमें देव होकर उत्पन्न हुए। वहाँसे च्यव कर महाविदेह वर्षमें जन्म लेंगे और सिद्ध होकर सब दुखोंका अन्त करेंगे। ये पद्म आदि दस कुमारोंके पुत्र और महाराज श्रेणि कके पौत्र (पोते) थे।

पुष्पिता नामक तृतीय वर्गमें चन्द्र (१) सूर (२) शुक्र (३) बहुपुत्रिका (४) पूर्ण (५) मानभद्र (६) दत्त (७) शिव (८) बल्लेषरु (९) अनादृत (१०) इन दसों देवोंका दस अध्ययनोंमें वर्णन है। ये सब भगवान महावीर प्रभुके दर्शन करनेके लिये देवलोकसे अपने परिवारके साथ आये और अपनी वैक्रियिक शक्तिसे नाट्य विधि दिखाकर अन्तर्हित हो गये। गौतम स्वामीने उनकी विशाल ऋद्धिके बारेमें भगवानसे प्रछा—हे भटन्न ! इन्हें यह ऋद्धि कहाँसे प्राप्त हुई ? भगवानने गौतम स्वामीको चन्द्र आदि देवके पूर्वभवका वर्णन सुनाया और उन्होंने कहा—गौतम ! ये सब देवलोकसे च्यव कर महाविदेह वर्षमें उत्पन्न होकर सिद्ध होंगे।

पुष्पचूलिका नामक चतुर्थ वर्गमें भी दस देवियोंके नामसे दस

अध्ययन हैं। उन दसों देवियोंका नाम-श्री (१) ह्री (२) धी (३) कीर्ति (४) बुद्धि (५) लक्ष्मी (६) इलादेवी (७) सुरादेवी (८) रसदेवी (९) और गन्धदेवी (१०) हैं। ये दसों देवियाँ भगवानके दर्शनके लिये आयीं और नाट्यविधि दिग्गजर अपने २ स्थान पर चली गयी। गौतमस्वामीने इन देवियोंकी ऋद्धि प्राप्तिके बारेमें पूछा। भगवानने इन सबोंका पूर्व भवका वर्णन किया, और कहा-हे गौतम ! ये सभी देवलोकमें च्यव कर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेंगी और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेंगी !

इसका पाँचवाँ वर्गका नाम वृष्णिदशा वर्ग है। इसमें चारह अध्ययन हैं। ये चारहों अध्ययन चारह कुमारोंका नामसे हैं। उन कुमारोंका नाम-निपथ (१) मायनी (२) वह (३) वह (४) पगता (५) ज्योति (६) दशरथ (७) दृढरथ (८) महाधन्वा (९) सप्तधन्वा (१०) दशधन्वा ११ और शतधन्वा १२ हैं। इनमें निपथकुमारका वर्णन इस प्रकार है-निपथ कुमार राजा बलदेव और रानी रेवतीका पुत्र थे। इनका विवाह पचाम राजकन्याओंके साथ हुआ और वह अपने उपरी महलमें सुख पूर्वक रहने लगे। एक समय द्वारकाके नन्दन वन उद्यानमें भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे। भगवानके दर्शनके लिये कृष्ण वासुदेव आदि नन्दन वन उद्यानमें गये। निपथकुमारको भी भगवानके पधारनेका समाचार ज्ञात हुआ। वह भी भगवानके दर्शनके लिये। धर्म तथा सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार कर अपने घर लौट गये। भगवानका अन्तेवासी वरदत्त अनगार निपथकुमारकी सौम्यता देख मुग्ध हो गये। और निपथकुमारको यह सौम्यता और ऋद्धि आदि कैसे प्राप्त हुई ? इस बारेमें भगवानसे पूछा। भगवानने निपथकुमारके पूर्वभवका वर्णन किया। वरदत्तने पूछा-हे भदन्त ! यह निपथकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा ? भगवानने कहा-हाँ, वरदत्त ! यह निपथकुमार मेरे समीप प्रव्रजित होगा। इसके बाद भगवान जनपदमें विचरने लगे। एक समय निपथकुमार पोषाशालामें दर्भके आसन पर बैठे हुए थे। उनके मनमें यह भावना पैदा हुई-यदि भगवान यहाँ आवें तो मैं उनका दर्शन करूँ और उनकी

उपासना कर। भगवानने निषधकुमारके मनको बात जान ली और अठारह हजार श्रमणोंके साथ नन्दन वन उद्यानमें पधारे। निषध-कुमारने भगवानका दर्शन किया, और बादमें माना पितासे पूछकर अनगार हो गये और बयालीस भक्तोंको अनशनसे त्रैदित कर काल प्राप्त हुए। उनके काल प्राप्त होनेके बाद वरदत्त अनगारने भगवानसे पूछा-हे भदन्त ! आपका अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध अनगार इस शरीर को छोड़कर कहाँ गये ? भगवानने कहा-हे वरदत्त ! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध नामक अनगार सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी स्थिति तृतीया सागरोपम है। वह वहाँ से व्यव कर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमें विशुद्ध मातृ पितृ वंशवाले राजकुलमें उत्पन्न होगा, बाल्यावस्था बीत जानेपर स्थविरोके समीप प्रव्रजित होगा और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेगा। इसी प्रकार मायनी आदि ग्यारह राजकुमारोंका भी वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवान अरिष्टनेमिके समीप प्रव्रजित हुए और अपने नश्वर शरीरको छोड़ सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुए और व्यवकर, महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होंगे और सभी दुखोंका अन्त करेंगे।

यह पांचो उपाङ्गका संक्षिप्त वर्णन है।

इस निरयावलिका आदि पांचो उपाङ्गो पर जेनाचार्य पूज्य श्री घासीलालजी महाराजने सुन्दरबोधिनी नामकी टीका की है। इस टीका की विशेषता संस्कृत प्राकृतज्ञ विद्वान मूल और संस्कृत टीका को देखकर समझ लेंगे। और सकल साधारण मन्यजन हिन्दी और गुजराती भाषाके अनुवादसे इसकी विशेषता समझेंगे। इस पर हम अधिक लिखना उचित नहीं समझते, क्योंकि 'हाय कद्गनको आरसी क्या ?' वस्तु, इसी न्यायसे हम अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। इत्यलम्।

राजकोट, }  
१८ मई १९४८ }

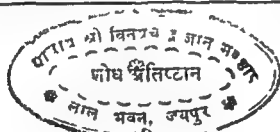
मुनि कन्हैयालाल

અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી  
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

ગઢેડીયા કુવા રોડ - ગ્રીન લોન્ પામે,

રા જ કો ટ

દાનવીરોની નામાવલી



ગરબાત તા ૧૮-૧૦-૪૪ થી તા ૧૫ ૫ ૬૦ સુધીમા  
દાખલ થયેલ મેમ્બરોના સુખારક નામો

લાઈક મેમ્બરોનુ ગામવાર ડકાવાડી લિસ્ટ

( ૩૧ ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનુ  
નામ આ યાદીમા સામેલ કરેલ નથી )

उपासना कर। भगवानने निषधकुमारके मनकी बात जान ली और अठारह हजार श्रमणोंके साथ नन्दन वन उद्यानमें पधारे। निषध-कुमारने भगवानका दर्शन किया, और बादमें माना पितासे पूछकर अनगार हो गये और बयालीस भक्तोंको अनशनसे त्रैदित कर काल प्राप्त हुए। उनके काल प्राप्त होनेके बाद चरदत्त अनगारने भगवानसे पूछा-हे भदन्त! आपका अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध अनगार इस शरीर को छोड़कर कहाँ गये? भगवानने कहा-हे चरदत्त! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक निषध नामक अनगार सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी स्थिति तैत्तीस सागरोपम है। वह वहाँ से च्यव कर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमें विशुद्ध मातृ पितृ वंशवाले राजकुलमें उत्पन्न होगा, गाल्यावस्था धीत जानेपर स्थविरोके समीप प्रव्रजित होगा और सिद्ध होकर सभी दुखोंका अन्त करेगा। इसी प्रकार मायनी आदि ग्यारह राजकुमारोंकाभी वर्णन जानना चाहिये। ये सभी भगवान अरिष्टनेमिके समीप प्रव्रजित हुए और अपने नश्वर शरीरको छोड़ सर्वार्थ सिद्ध विमानमें देव होकर उत्पन्न हुए और च्यवकर, महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होंगे और सभी दुखोंका अन्त करेंगे।

यह पाँचो उपाङ्गका सश्लिष वर्णन है।

इस निरयावलिका आदि पाँचो उपाङ्गो पर जेनाचार्य पूज्य श्री घासीलालजी महाराजने सुन्दरबोधिनी नामकी टीका की है। इस टीका की विशेषता सरकृत प्राकृतज्ञ विद्वान मूल और सस्कृत टीका को देखकर समझ लेंगे। और सकल साधारण भक्तजन हिन्दी और गुजराती भाषाके अनुवादसे इसकी विशेषता समझेंगे। इस पर हम अधिक लिखना उचित नहीं समझते, क्योंकि 'हाथ रुझनको आरसी क्या?' वस, इसी न्यायसे हम अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। इत्यलम्।

राजकोट,  
१७ मई १९४८ }

मुनि फन्हैयालाल.

અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

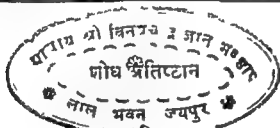


ગઢેડીયા કુવા ગેડ - ગ્રીન લોન્ પામે,

રા જ કે ટ



## દાનવીરોની નામાવલી



શરૂઆત તા ૧૮-૧૦-૪૪ થી તા ૧૫ ૫ ૬૦ મુદ્રીમા  
દાખલ થયેલ મેમ્બરોના મુખારક નામો



લાઈફ મેમ્બરોનુ ગામવાર કઠાવાગી લિસ્ટ



( ૩૧ ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનુ  
નામ આ યાદીમા સામેલ કહેલ નથી )

# આલમુરખીશ્રીઓ-૧૧

ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ની રકમ આપનાર )

ક્રમ	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતીલાલ મગજામભાઈ બણીતા મીલમાવીક	અમદાવાદ	૧૦૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાળીદામભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચંદભાઈ જેચંદભાઈ, નગીનભાઈ વૃન્દલાલભાઈ તથા વલ્લભદામભાઈ	ભાણવડ	૬૦૦૦
૩	કેઠારી જેચંદ અજરામજી હા હંગોવિંધભાઈ જેચંદભાઈ	રાજકોટ	૫૦૫૧
૪	શેઠ ધાન્ગીભાઈ જીવનભાઈ	વારસી	૫ ૦૧
૫	૨૫ પિતાશ્રી જીગનલાલ શામળદામના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ જીગનલાલભાઈ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૬	૨૫ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીવાલ જેશીગભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હા શેઠ ચીમનલાલભાઈ શાતીલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઈ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીભાઈ વીરાણી -મારક ટ્રેડ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકોટ	૫ ૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીભાઈ વીરાણી -મારક ટ્રેડ હા માતુની ઠડવીભાઈ વંશણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોચાલાલ પીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઈ મોહનલાલ -	અમદાવાદ	૫૦૦૧

નોટ - ધાન્ડોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફથી અમદાવાદમા પાલડી બસ સ્ટેન્ડ ૫ ને ૧૬૦૮ ના ૫૫૦ વાળી ૬૬૮ ચો વાર જમીન સમિતિને બેટ મળેલ છે અને જેનુ ૨૨-૨૨૨ તા ૨-૩-૬૦ ના રોજ થઈ ગયેલ છે

## - મુરખીશ્રીઓ - ૨૦ -

( ઓછામાં ઓછી રૂા ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર )

૧	વક્રીવ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોશી હા કહાનદાસભાઈ તથા વેણીલાલ ડોહાડી	જેતપુરા ૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	ગજકોટ ૩૬૦૪
૩	મહેતા શુભાભયદ પાનાયદ	રાજકોટ ૩૨૮૬૧૧-૧૧
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખનય	ઘાટકોપર ૩૨૫૦
૫	સઘવી પીનામ્બરદાસ શુભાભયદ	ભામનગર ૩૧૦૧
૬	નામદાર ઠાકોર માહેજી લખધી-મિહજી બહાદુર	ગોખી ૨૦૦૦
૭	ગેઠ ટહેજીદ કુવજી હા' ગેઠ ન્યાલયદ ટહેજીદ	મિદ્રપુરા ૨૦૦૦
૮	શાહ છગનલાલ હેમચંદ વમા હા મોહનલાલભાઈ તથા મોતીલાલભઈ	મુળઈ ૨૦૦૦
૯	શ્રી સ્વાનકવામી જૈન મઘ હા ગેઠ ચન્દ્રકાંત વીરમયદ મોરખી	૧૯૬૩
૧૦	મહેતા સોમયદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્નિ અ મૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ ૧૫૦૦
૧૧	મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	ભામનેધપુર ૧૫૦૨
૧૨	દોશી ઝપુરયદ અમગશી હા દલપતગમભાઈ	ભામનેધપુર ૧૦૦૨
૧૩	ખગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર ૧૦૦૨
૧૪	શેઠ માણેકલાલ ભાણુજીભાઈ	પોરબંદર ૧૦૦૧
૧૫	શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મહેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકત્તા ૧૦૦૧
૧૬	મહેતા સોમયદ નેણુસીભાઈ (કરાચીવાળા)	મોરખી ૧૦૦૧
૧૭	શાહ હરિલાલ અનોપયદ	ખભાત ૧૦૦૧
૧૮	મોદી કેશવદાસ હરીચંદ્ર	અમદાવાદ ૧૦૦૧
૧૯	કોઠારી છખીવદાસ હરખયદ	મુળઈ ૧૦૦૦
૨૦	કોઠારી રંગીવદાસ હરખયદ	ભાવનગર ૧૦૦૦



# સહાયક મેમ્બરો-૬૩

(ઓછામાં ઓછી રૂા ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

૧ શ્રી સ્થા જૈનમઘ હા શેઠ જુઝાભાઈ વેવશીભાઈ	વઢવાણશહેર	૭૫૦
૨ શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	શીવ	૭૦૦
૩ શેઠ ન્તનશી હીરજીભાઈ હા ગોરધનદાસભાઈ	ભાભોધપુર	૫૫૫
૪ ખાટવીયા ગીરધર પરમાણુ હા અમીચંભાઈ	ખાખીજાળીયા	૫૨૭
૫ મોરખીરાળા મઘની દેવચંદ નેણશીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્નિ		
અ સો મણીભાઈ તરફથી હા મુળચંદ દેવચંદ મઘની	મલાડ	૫૧૧
૬ વોરા મણીલાલ પોપ્પલાલ	અમવાલ	૫૦૨
૭ ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચ પામેન ગોસલીયા	,	૫૦૨
૮ શાહ ટ્રેમચંદ માણેચંદ તથા અ તૌ અમરતમેન	,	૫૦૨
૯ શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	,	૫૦૧
૧૦ શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,	૫૦૧
૧૧ શાહ શાતિલાલ માણેકલાલ	,	૫૦૧
૧૨ શેઠ શીવલાલ ડમરભાઈ (કરાચીવાળા)	લીમડી	૫૦૧
૧૩ કામદાર તાનચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૪ મહેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	,	૫૦૦
૧૫ શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપ્પભાઈ	,	૫૦૦
૧૬ શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	,	૫૦૧
૧૭ સ્વ પિતાશ્રી નદાજીના મ્મરણાર્થે હા વેલીચંદ શાતીલાલ	,	૫૦૧
(જાણુઆવાળા) મેઘનગર		૫૦૧
૧૮ શ્રી સ્થા જૈનસઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	ધાતમઢ	૫૦૦
૧૯ શેઠ જીજ્ઞાસચંદ પુખરાજજી	જૈનગામ	૫૦૦
૨૦ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	જૈનગામ	૫૦૦
૨૧ મહેતા મુળચંદ રાધાજી હા મગનલાલભાઈ તથા દલજીભાઈ	ધાતમઢ	૭૫૦
૨૨ શેઠ હરખચંદ પુરુષોત્તમ હા ઇન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૩ ,, દેશરીમલજી વ તીમવજી શુભલીયા	મલાડ	૫૦૦
૨૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા ખાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઈ ખાખીજાળીયા		૫૦૧
૨૫ શેઠ ખીમજીભાઈ ખાવાભાઈ હા કૃષ્ણચંદભાઈ શુવાળચંદભાઈ,		
નાગરદાસભાઈ, જમનાદામભાઈ	મુળઈ	૫૦૧

૨૬	શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ રંગવી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ મુળઈ	૫૦૧
૨૭	અ. કાતીલાલભાઈના અમરણાર્થે હા શેઠ બાલચંદ સાકરચંદ	૫૦૧
૨૮	કામદાર નીલાલ ફર્લેલજી (જેતપુરવાળા)	મુળઈ ૫૦
૨૯	શાહ જયતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ ૫૦૧
૩૦	વેગ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	શીવ ૫૦૧
૩૧	શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ તથા ડસ્તુરબેન હા ભાઈ અનોપચંદ	ખારડોડ ૫૦૧
૩૨	મહાન ત્યાગી બેન ધીરજીવં મુનીલાલ મહેતા	ધ્રાકા ૫૦૧
૩૩	શ્રી સ્થા બેન મધ	ધ્રાકા ૫૦૧
૩૪	શ્રી મગનલાલ છગનલાલ ગેઠ	ગજડોટ ૫૦૧
૩૫	ગેઠ ચતુન્દામ ગડગી તથા અ મૌ નંકુવરબેન	જામનગર ૫૦૩
૩૬	ગેઠ વેચ અમ-ગા (બેન ધીરજીવં વરની ફીલા પ્રસંગે લેટ) ભાણુવડ	૫૦૧
૩૭	શ્રા સ્થા બેન મધ (બેન ધીરજીવં વરની ફીલા પ્રસંગે લેટ) ભાણુવડ	૫૦૧
૩૮	વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ ગાહ	વીરમગામ ૫૦૧
૩૯	મહેતા શાંતિલાલ મણીલાલ હા ડમળાબેન મહેતા	અમદાવાદ ૫૫૬
૪૦	શ્રીચુત લાલચંદજી તથા અ સૌ ધીમાબેન	,, ૫૦૧
૪૧	શેઠ મોહનલાલ મુકુટચંદ બાલચા	,, ૫૦૧
૪૨	અ ગેઠ ઉકાભાઈ ત્રાભિવનદાસના અમરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ લક્ષ્મીબાઈ ગીન્ધર તન્ડી હા મરઘાબેન તથા મચુબેન	અમદાવાદ ૫૦૧
૪૩	પારેળ જયતીલાલ મનમુખલાલ રાજકોટવાળા હા વિનુભાઈ	, ૫૦૧
૪૪	શ્રીચુત ગેઠ લાલચંદજી મીશ્રીલાલજી	, ૫૦૧
૪૫	શ્રા સ્થા બેન મધ	વાકાનેઝ ૫૦૧
૪૬	શ્રી સ્થા બેન મધ	ખોટાદ ૫૦૧
૪૭	શેઠ ગુદડમલજી શેષમલજી ભેવ (બગર) પીપળગાવ	૫૦૧
૪૮	સ્વ તુરખીયા લહેરદ માણેકચંદના અમરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ જીવતીબાઈ તર-ચી ના ભાઈ જયતીલાલ તથા પૂનમચંદભાઈ	ડભાસ ૫૦૧
૪૯	ગાહ અચંદાન ગુન નજી હા ગેઠ ગુકનગજી	અમદાવાદ ૫૦૧
૫૦	લાવમાર ખોડીનાસ ગણેશભાઈ	ધ્રુકા ૫૦૧
૫૧	અ મૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા	ઘાટકોપર ૫૦૧
૫૨	મહેતા શાંતીલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદ્માવતી શાંતિલાલ મહેતા	અમદાવાદ ૫૦૦

- ૫૩ શેઠ હીરાજી દણીવત્સેય દણીકરીયા ૧૩ ૮ ૧૨ ૧ હુબલી ૫૦૧
- ૫૪ શેઠ છોટુભાઈ હરગોવિંદાસ કટ્ટેરીવાળા ૧ ૧ ૧૧ ૧ મુબઈ ૫૦૧
- ૫૫ પારેખ રતિલાલ નાનચદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના  
પિતાશ્રી નાનચદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના  
ધર્મપત્નિ અ સૌ વસત બહેનના અઠાઈ તપનિમિત્તે  
હા હુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૧૧
- ૫૬ સ્વ શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ  
શીવકુવરભાઈ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
- ૫૭ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેજી દ પારેખ મુબઈ (મોટુ ગા) ૫૦૧
- ૫૮ શ્રી લીમડી સમ્રાચના ગચ્છાધીપતી પૂ આચાર્ય મહારાજશ્રી  
લાલાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ  
(મહારાજશ્રી છોટાલાલજી સદાનનીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૯ સ્વ શ્રી વિનયભૂતિ શ્રી લખમીચંદજી મહાનગના સ્મરણાર્થે  
હા શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજશ્રી છોટાલાલજી  
સદાનનીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૦ બા પ્રભાવતી બેન કેશવલાલ ઉત્તેનવાળા તરફથી તેમની  
દીક્ષા પ્રસંગે વીરમગામ ૫૫૧
- ૬૧ શ્રીચુત હરજીનનદાસ રાયચંદ હા છળીવદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૨ શેઠ પોપટલાલ હસરાજ તથા વિાળીબેનના સ્મરણાર્થે  
હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૩ અ સૌ લીલાવતી બેન ધંધરાલાલ , ૫૦૨



# ૫૪૯ લાઇફ મેમ્બરો

## અમદાવાદ તથા પરાગો

૧ શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ	૨૫૧
૨ શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા ફકીરચંદ ભાઈ	૨૫૧
૩ શાહ કાતિલાલ ત્રીભે વનદામ	૨૫૧
૪ શાહ પોપ્પલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૫ શેઠ પ્રેમચંદ માનચંદ	૨૫૦
૬ શાહ ન્તીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૭ શેઠ લાલભાઈ મંગલદાસ	૨૫૧
૮ સ્વ અમૃતલાલ વધ માનનામ્બરણચૈ હા કાનજીભાઈ અમૃતનાલ દેશાજી	૨૫૧
૯ શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ	૨૫૧
૧૦ શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૧૧ બીપીનચંદ્ર તથા ઉમાકાત ચુનીલાલ ગોપાણી	૩૦૧
૧૨ શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આંકોટી સ્થા જેન ઉપાશ્રય હા વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧
૧૩ શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આંકોટી સ્થા જેન સંઘ હા શેઠ ચંદુલાલ અચરતનાલ	૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઈ મહાસુખલાલ	૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈનાલ ઉજ્જમશી	૨૫૧
૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી ગેઠ હા ડે કુ સરમ્વતીગેન શેઠ	૨૫૧
૧૭ શ્રી સોરાષ્ટ્ર ત્રા જેન સંઘ હા શેઠ કાતિલાલ જીવજીલાલ	૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ	૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦ શ્રી છોકોટી સ્થા જેન સંઘ હા ગેઠ પોન્નાલાલ પિતામ્બદાસ	૨૫૧
૨૧ દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનનામ્બરણચૈ હા ભાઈનાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય	૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આશારામ	૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચંદ	૨૫૧
૨૫ શાહ વ જીવનદાસ ઉમેદચંદ	૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાંત કસ્તુરચંદ	૨૫૧

૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાતિલાલ મોહનલાલ ધોગધાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ મૌ યેન રતનભાઈ નચ્ચિયા હા શેઠ કુલાજી, ચ પાલાનજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી સગમપુર દરીયાપુરી આઠ ડોટી સ્થા નેન ઉપાશ્રય હા ભાવસાર લોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુષ્પરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂ ચાચાજી હમરીમલજી બગડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચંદ જવાહીરલાલજી બગડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બખાભાઈ (મગજઠાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી સ્વજીભાઈ તથા સ્વ માતૃશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે હા વકલભાઈ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચંદ બખડાવાળા હા પાર્વતી બેન	૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ ગજસીતાપુવાળા	૨૫૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ	૨૫૦
૪૦ ભાવસાર છેટાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર મકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ મૌ યેન જીવીબેન રતિનાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હ ગોવિંદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર લોગીલાલ જમનાદાસ પાંજીવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવો બાલુભાઈ જમજશી તથા તેમના ધર્મપત્નિઓ અ સૌ ચ પામેન તથા વસંતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચંદ દેશાઈ વર્ષીતપ તથા આઠાઈ પ્રમગે હા જીપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેશાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોડજીદાસ	૨૫૧
૪૭ શાહ શામગભાઈ અમરરીલાલ	૫૧
૪૮ અ મૌ કકુબેન (ભાવસાર લોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ)	૩૦૯
૪૯ અ સૌ સંવતારબેન (જયતીલાલ લોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૦ અ મૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ લોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૧ અ સૌ મુનદાબેન (મણુભાઈ લોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૫૧

- ૫૨ શેઠ હીરાજી ડગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા વાગમલજી ડગનાથજી ૩૦૧
- ૫૩ શેઠ મણીલાલ બોધાલાલ ૨૫૧
- ૫૪ પટવા સુએરમલજી અનોપચદજી બોધપુરવાળા ૩૦૧
- ૫૫ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીલાલ શેઠના સ્મરણાર્થે  
હા રમણલાલ માણેકલાલ ૨૫૧
- ૫૬ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે  
હા કનૈયાલાલ ધનરાજજી ૩૦૧
- ૫૭ શ્રી સારંગપુત્ર દ આ કે આ જૈન મઘ  
હા શાહ રમણલાલ ભગુભાઈ ૨૫૧
- ૫૮ દોશી હજીવનદાસ જીવગજ તથા લક્ષ્મીભાઈ લહેચ્યદના સ્મરણાર્થે  
હા દોશી મનહરલાલ કચ્છનદાસ મુળીવાળા ૨૫૧
- ૫૯ શાહ પુનમચંદ કેતેહચંદ ૨૫૧
- ૬૦ શ્રીચુત ચતુર્ભાઈ નદલાલ ૨૫૧
- ૬૧ શ્રીચુત અમૃતલાલ ઈશ્વરલાલ મહેતા ૨૫૧
- ૬૨ શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઈ ૨૫૧
- ૬૩ અ મૌ બેન લાલુબેન મગનલાલ હા શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ  
વઢેવાણુ શહેરવાળા ૩૦૧
- ૬૪ અ મૌ બેન કાતાબેન ગોરધનદાસ (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૬૫ દોશી કુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા દોશી છબીલદાસ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
- ૬૬ લાલાજી ગમકુવરજી જૈન ૨૫૧
- ૬૭ શેઠ છોટાલાલ ગુમાનચંદ પાલનપુરવાળા ૨૫૧
- ૬૮ શાહ ધીંગજીલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
- ૬૯ મઘવી સૂર્યપાત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે  
હા સઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
- ૭૦ ભાવમાર મોહનલાલ અમુલખગચ ૨૫૧
- ૭૧ મહેતા મૃણચંદ મગનલાલ ૨૫૧
- ૭૨ વૈદ્ય નરસિંહદાસ સાકરચંદના ધર્મપત્નિ રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
- ૭૩ શાહ કુલચંદ મુલચંદભાઈ હા હંસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
- ૭૪ શેઠ મિત્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા ૨૫૧
- ૭૫ શાહ લલુભાઈ મગનભાઈ ચૂડાવાળા હા જશવંતલાલ લલુભાઈ ૩૦૧

૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાતિલાલ મોહનલાલ ધોગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ સૌ બેન રતનભાઈ નવિશા હા શેઠ ધુલાજી, ચ પાલાનજી	૨૫૩
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૪
૩૧ શ્રી નગસપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા જૈન ઉપાશ્રય હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૫
૩૨ શેઠ પુષ્પરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા માદડીવાળા	૨૫૬
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂ ગાયાજી હમરીમલજી બગડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુગચદ જવાહીરલાલજી બરડીયા	૨૫૭
૩૪ સ્વ ભાવમાન બખાભાઈ (મગળદાસ) પાનાચદના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ પુરીબેન	૨૫૮
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી સ્વજીભાઈ તથા સ્વ માતૃશ્રી મુળીભાઈના સ્મરણાર્થે હા ઝકલભાઈ ડોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવનાલ મગનલાલ	૨૫૯
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચદ બખડાવાળા હા પાર્વતી બેન	૨૬૦
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેજીદદ રાજસીતાપુવાળા	૨૬૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ	૨૬૨
૪૦ ભાવસાર છે ટાલાલ છગનલાલ	૨૬૩
૪૧ ભાવસાર સકરાભાઈ છગનલાલ	૨૬૪
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિનાલ હા ભાવમાન રનિવાવ હંગોવિં દાસ	૨૬૫
૪૩ ભાવમાન ભોગીલાલ જમનાદામ પાણુવાળા	૨૬૬
૪૪ સઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નિઓ અ સૌ ચ પામેન તથા વસતબેન તરફથી	૨૬૭
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચદ દેશાઈ વર્ધીતપ તથા આઈ પ્રમ બે હા જીપેન્દ્રકુમાર વનેચદ દેશાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોઝળદાસ	૨૬૮
૪૭ શાહ શામગભાઈ અમરશીલા	૫૧
૪૮ અ મૌ કકુબેન (ભવમાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ)	૩૦૯
૪૯ અ મૌ માવતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૬૯
૫૦ અ મૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૭૦
૫૧ અ સૌ મુનદાબેન (મણુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્નિ)	૨૭૧

- ૬૭ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા  
C/o ડૉ ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા ૩૦૧
- ૬૮ શેઠ રાજમલજી ધામીમલજી કેઠારી કેશીચડવાળા  
તરફથી મ્હા જૈન મધને ભેટ ૨૫૧
- ૬૯ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી C/o રતીલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
- ૧૦૦ ભાગ્યવતી અર્ચીદંકુમાર C/o અર્ચીદંકુમાર મકગભાઈ ભાવમાર ૨૫૧
- ૧૦૧ અ સૌ ચચળબેન મનસુખલાલ  
હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા ૨૫૧
- ૧૦૨ સ્વ આમીભાઈ તથા શેઠ વન્તીમલજી લોમાળના મ્મરણાર્થે  
હા શેઠ મીશ્રીમલજી દેવીચદજી જોમલાલ કેરવાળા ૨૫૧
- ૧૦૩ સ્વ શેઠ ક્રીશનમલજી માડોતના મ્મરણાર્થે  
હા ગીરેમલજી ક્રીશનમલજી મોજતવાલા ૨૫૧
- ૧૦૪ સ્વ શેઠ વકતાવરમલજીના મ્મરણાર્થે  
હા શેઠ ધીમાલાલજી મુકનગજી ગીયાગીયા (જેધપુરવાળા) ૨૫૧
- ૧૦૫ શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનદી પડિત સુનિશ્રી  
છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૧૦૬ અ સૌ ગતાબેન કાળીદાસ C/o કુમાર બુક બાઈન્ડીંગ વર્ક્સ ૨૫૧
- ૧૦૭ સ્વ શેઠ હીમતલાલ મગનલાલના મ્મરણાર્થે તેમના  
સુપુત્રો મેસર્સ દ્વાકાદાસ એન્ડ પ્રધર્મ તરફથી ૩૫૧
- ૧૦૮ અ સૌ કાતાબેનના મ્મરણાર્થે  
હા ભાવમાર નાગરદાસ હજીવનદાસ ૨૫૧
- ૧૦૯ શ્રી ઉમેદચંદ ઠાકરશી C/o M/s યુ ટી ગોપાણી એન્ડ સન્સ ૩૫૧
- ૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના મ્મરણાર્થે હા ભાવમાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
- ૧૧૧ શાહ ગાતિલાલ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૧૧૨ સરસ્વતી પુત્રક ભડાગ હા પ્રભુદાસભાઈ મહેતા ૨૫૧
- ૧૧૩ શાહ ભુગલાલ કાળીદાસ ૨૫૧
- ૧૧૪ સ્વ પિતાશ્રી મોતીલાલજીના મ્મરણાર્થે  
હા મહેતા રણજીલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
- ૧૧૫ શેઠ પરસોતમદાસ અમરખીના ધર્મપત્નિ સ્વ કુસુમબેનના  
મ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવિતાબેનના માસખમણા નિમિત્તે  
હા સોમચંદ પરસોતમદાસ (પાટ) સુદાનવાળા ૩૦૧



- ૭૬ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાદ મુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૭ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હા કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા  
(ચાદ મુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૮ મીસ નલીનીબેન જયતીલાલ ૨૫૧
- ૭૯ સ્વ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્નિ કાશીબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા શાંતિલાલ ઉમેદરામ (ચાદ મુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૦ સ્વ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ દિવાળીબાઈના  
સ્મરણાર્થે હા રતીલાલ માણેકલાલ (ચાદ મુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૧ મહેતા દેવીચ દિજી ખૂબચ દજી ધોઠા ગઢસીયાણાવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ ૨૫૧
- ૮૨ ધાસીલાલજી મોહનલાલજી કેઠારી C/o લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર ૨૫૧
- ૮૩ સ્વ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઈ મારફતીયાના સ્મરણાર્થે  
પુનાબેન તરફથી હા કરશનભાઈ (ચાદ મુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૪ શાહ મણીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
- ૮૫ ભાવસાર જયતીલાલ ભોગીલાલ ૨૫૧
- ૮૬ ભાવસાર દિનુભાઈ ભોગીલાલ ૨૫૧
- ૮૭ ભાવસાર રમણલાલ ભોગીલાલ ૨૫૧
- ૮૮ ભાવસાર કનુભાઈ સકરચંદ ૨૫૧
- ૮૯ શે. ભેડમલજી સાહેબ ભોધપુરવાળા ૨૫૧
- ૯૦ સ્વ ખેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઈ કુદણીવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા શાંતિલાલ વર્ધમાન ૨૫૧
- ૯૧ સ્વ શાહ કચરાભાઈ લહેરાભાઈના સ્મરણાર્થે  
હા શાંતિલાલ કચરાભાઈ ૨૫૧
- ૯૨ એક સ્વધર્મી બધુ હા શાહ રીખભદ્રાસજી જયતિલાલજી ૨૫૧
- ૯૩ અ સૌ સગસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ  
(સદાનદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૯૪ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરિયાપુરી સપ્રદાયના પૂ તપસ્વી  
મહારાશ્રી માણેકચંદ્રજી મહારાજના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી  
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
- ૯૫ જેકુવર મજલાલ પારેખ ૨૫૧
- ૯૬ પુનમચંદજી જવાહરલાલજી બરડીયા ૨૫૧

## ધંદોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેશાઈ જેતપુરવાળા

(અ મૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષી તપ નિમિત્તે)

હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર

૨૫૧

૨ શ્રીચુત લાઈલાલ જગનલાલ તુરખીયા

૩૫૧

૩ સ્વ ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેશાઈ જેતપુરવાળાના સ્મરણાર્થે

હા ભુપતલાલ ગૌરીશંકર દેશાઈ

૨૫૦

## ઉદેપુર

૧ શેઠ મોતીલાલજી રણજીનલાલજી હીંગડ

૨૫૧

૨ શ્રીમતી મોહીનીબાઈ C/o મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ

૨૫૧

૩ અ મૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરના

ધર્મપત્નિ હા શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ

૨૫૧

૪ શેઠ જગનલાલજી બાગેચા

૨૫૧

૫ શેઠ મગનલાલજી બાગેચા

૨૫૧

૬ સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે

હા શેઠ દોલતમિહજી લોઢા

૨૫૧

૭ સ્વ શેઠ પ્રતાપભલજી માખલાના સ્મરણાર્થે

હા પ્રાણુલાલ હીંગડાલ માખલા

૨૫૧

૮ શેઠ ભીમગજજી ચાવચ્ચદજી બાફણા

૨૫૧

૯ શ્રીચુત માહેબલાલજી મહેતા

૩૦૧

૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ

૨૫૧

૧૧ શેઠ દીપચદજી પન્નાલાલજી લોઢા

૨૫૧

## ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ

૨૫૧

૨ સ્વ બેન મતોકબેન કચરા હા ઓતમચદલાઈ, છોટાલાલભાઈ

તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા)

૨૫૧

૩ શેઠ ખુશાલચદ કાનજીભાઈ હા શેઠ પ્રતાપભાઈ

૨૫૧

૪ દોશી વીરૂલજી હુન્નચદ

૨૫૧

૫ મઘાણી મુળશંકર હજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો

૨૫૧

જયતીલાલ તથા સમણીકલાલ

૨૫૧

- ૧૧૬ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચંદજી, હુગરવાલ રાબજી  
રાબજીકાકેરડા વાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

## અમલનેર

- ૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ ૨૫૧  
૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શાહ ગાડાલાલ લીખાલાલ ૨૫૧

## અજમેર

- ૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ હુગરવાલ ૨૫૧

## અંતવર

- ૧ શ્રીમતી ચ પાઠેવી C/o બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧  
૨ આદમલજી મહાવીરપ્રસાદ પાલાવત ૨૫૧  
૩ શ્રીયુત રૂપલકુમાર સુમતિકુમાર જૈન ૨૫૧

## આસનસોલ

- ૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ  
મણીબાઈ તરફથી હા અમિકલાલ, અનિલકાત, વિનોદગય ૨૫૧

## આટકોટ

- ૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ ૩૦૧

## આણંદ

- ૧ શેઠ રમણીકલાલ એ કપાળી હા મનસુખલાલભાઈ ૨૫૧

## આકોલા

- ૧ શેઠ કચનલાલભાઈ રાઘવજી અજમેરા C/o મેમર્સ અજમેરા  
પ્રધર્મ એન્ડ કા (૫ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

## ઈગતપુરી

- ૧ શેઠ પાલાલ લખીચંદ જૈન ૨૫૧

## ધન્દોર

- ૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેશાઈ જેતપુરવાળા  
(અ મૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષી તપ નિમિત્તે)  
હા અન્વિદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧
- ૨ શ્રીચુત લાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૩૫૧
- ૩ સ્વ ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેશાઈ જેતપુરવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા ભુપતલાલ ગૌરીશંકર દેશાઈ ૨૫૦

## ઉદેપુર

- ૧ શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
- ૨ શ્રીમતી મોહીનીબાઈ C/o મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
- ૩ અ મૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરના  
ધર્મપત્નિ હા શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ ૨૫૧
- ૪ શેઠ છગનલાલજી બાગેચા ૨૫૧
- ૫ શેઠ મગનલાલજી બાગેચા ૨૫૧
- ૬ સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે  
હા શેઠ દોલતનિહલજી લોઢા ૨૫૧
- ૭ સ્વ શેઠ પ્રતાપભલજી માખલાના સ્મરણાર્થે  
હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ માખલા ૨૫૧
- ૮ શેઠ ભીમગજજી યાવગચદજી બાફણા ૨૫૧
- ૯ શ્રીચુત સાહેબલાલજી મહેતા ૩૦૧
- ૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેગલાલજી હીંગડ ૨૫૧
- ૧૧ શેઠ દીપચંદજી પન્નાલાલજી લોઢા ૨૫૧

## ઉપલેટા

- ૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોગ્ધનદાસ ૨૫૧
- ૨ સ્વ બેન મતોકબેન કચરા હા ચોતમચંદલાઈ, છોટાલાલભાઈ  
તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા) ૨૫૧
- ૩ શેઠ ખુગાલચંદ કાનજીભાઈ હા શેઠ પ્રતાપભાઈ ૨૫૧
- ૪ દોશી વીઠ્ઠલજી હરખચંદ ૨૫૧
- ૫ મધાણી મુળશંકર હગ્ગવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો  
જયતીલાલ તથા રમણીકલાલ ૨૫૧

## ઉમરગાંવ રોડ

- ૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

## ઝોડન કેમ્પ

- ૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે  
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરુષોત્તમદાસ - ૨૫૧
- ૩ શાહ ગોકગદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

## કલકતા

- ૧ શ્રી કલકતા જૈન મે સ્થા (ગુજરાતી) સઘ  
હા શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ ૨૫૧

## કલોલ

- ૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ  
આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
- ૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
- ૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા મારફતીયા  
ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
- ૫ સ્વ શ્રીચુત વાડીલાલ પરશોતમદામના સ્મરણાર્થે હા  
ધેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
- ૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
- ૭ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

## કડી

- ૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સઘ હા ભાવસાર  
દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ પાર્વતીબેન C/o જેસીગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

## કાંઠોર

- ૧ શ્રી સ્થા જૈનસઘ હા શેઠ જોશીગભાઈ પોચાલાલ  
( માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી ) ૨૫૧

## કેનાસગઢ

- ૧ શ્રી ૭વે સ્થા જૈન સઘ હા ગેઠ દેવચંદ અમુલખ ૨૫૧

## કુટયાણુ

- ૧ સઘવી ઠાકરશીભાઈ મઘજીના નમરણાયે  
હા શાહ હીમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

## કાનપુર

- ૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

## કુદણી-આટકોટ

- ૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

## કોલકી

- ૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧  
૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી  
( તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાયે ) ૩૦૨

## કેમ્પાલા

- ૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ દ્રાક્ષવાળાના સ્મરણાયે હા. તેમના  
સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧  
૨ શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ દ્રાક્ષવાળા ૨૫૧

## કુશળગઢ

- ૧ શેઠ ચ પાલાલજી દેવીચંદજી ૨૫૧

## ખાખીભળીયા

- ૧ ખાટવીયા શુલાખચંદ લીલાધર ૨૫૧

## ઉમરગાંવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ ખાનેલીવાળા ૨૫૧

## ઝોડન કેમ્પ

- ૧ મહેતા ડેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે  
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરપોત્તમદાસ ૨૫૧
- ૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

## કલકત્તા

- ૧ શ્રી કલકત્તા જૈન મેં સ્થા (ગુજરાતી) સઘ  
હા શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ ૨૫૧

## કલોલ

- ૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ  
આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
- ૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
- ૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા મારફતીયા  
ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
- ૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોતમદામના સ્મરણાર્થે હા  
ધેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
- ૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
- ૭ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

## કડી

- ૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સઘ હા ભાવસાર  
દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ પાર્વતીબેન C/o જેસીગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

## ગોડલ

- ૧ સ્વ બાબડા વચ્છરાજ તુલમીદાસના ધર્મપત્નિ કમળમાઈ  
તરફથી હા માણેકચદલાઈ તથા કપુરચદલાઈ ૨૫૧
- ૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ મૌ  
લીલાવતી સાકચદ કોઠારીના બીજ વર્ષીતપની ખુશાલીમા ૩૦૧
- ૩ કામદાગ જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા  
હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર ૩૦૧
- ૪ સ્વ કોઠારી કૃપાશ કર માણેકચદના સ્મરણાર્થે  
હા તેમના ધર્મપત્નિ પ્રભાકુવરબેન ૨૫૧
- ૫ કોઠારી શુલાળચદ રાયચદ રગુનવાળા ૨૫૧
- ૬ જસાણી ડગનાથભાઈ નાનજી હા ચુનીલાલભાઈ ૨૫૧
- ૭ માસ્તર હકમીચદ દીપચદ શેઠ ૨૫૧

## ગોધરા

- ૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ ૩૦૧
- ૨ સ્વ પ્રેમચદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચદ ૩૦૧

## ઘટકેણુ

- ૧ શાહ અડુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

## ઘોલવડ (થાણા)

- ૧ મહેતા શુલાળચદજી ગભીરમલજી ૩૦૦

## ઘોડનદી

- ૧ શેઠ ચદ્રભાણુ શોભાચદ ગાનીયા ૨૫૧

## ચુડા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા રતીવાલ મગનલાલ ગાધી ૨૫૧

## ચોટીલા

- ૧ શાહ વનેચદ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા જૈન સઘને ભેટ ૩૦૧



## ખારઘોડા

- ૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચદ શાહ  
તથા સ્વ અ સૌ બેન જમકુળાઈ તથા લીલાબાઈના  
સ્મરણાર્થે હા નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
- ૨ સ્વ શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા લાઈચદ ઓઘડલાઈ ૨૫૧

## ખીચન

- ૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ ૩૫૨

## ખુરદારોડ

- ૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી-એડપવાળા ૩૦૦
- ૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાતીલાલજી ભોરલાવાળા  
(મુનિશ્રી ચાદમલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

## ખ ભાત

- ૧ શેઠ ભાણુકલાલ ભગવાનદાસ ૨૫૧
- ૨ શેઠ ત્રિભોવનદાસ મગળદાસ ૨૫૧
- ૩ શ્રી સ્થા જૈન સમ હા પટેલ કાતીલાલ અબાલાલ ૨૫૧
- ૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ ૨૫૧
- ૫ શાહ સાકરચંદ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૬ શાહ સકરાભાઈ દેવચંદ ૨૫૧

## ગાધીધામ

- ૧ શાહ મોરારજી નાગજી એન્ડ કુા ૨૫૧

## ગુ દાલા

- ૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ ૨૫૧

## ગુલાબપુરા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન વર્ધમાન સઘ  
હા માગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા ૨૫૧

૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧
૫ વકીલ મણીલાલ ખેગારભાઈ પુનાત	૨૫૧

### જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧
---------------------------	-----

### જુનાગઢ

૧ શાહ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા હજિલાલભાઈ (હાટીનામાળીયાવાળા)	૨૫૧
--	-----

### જામજેઘપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન મઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીલોચનદાસ ભગવાનજી પાનેત્રીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઈ	૨૫૧
૬ શેઠ મજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

### જેતપુર

૧ ઠાઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ બેન મુરજકુવર વેણીલાલ ઠાઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરભેરામભાઈ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

### જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપૂરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાગ લીલાધર જીવરાજના સ્મરણથી તેમના ધર્મપત્નિ જામકબેન તરફથી હા શાતીલાલભાઈ ગોડલવાળા	૨૫૧

### જેઘપુર

૧ શેઠ નવરતનમલજી ધનવત્તમિહજી	૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા	૨૫૧

## ચારણજરોડ

- ૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચ દજી બાબેલ ૩૦૧

## જમશેદપુર

- ૧ દોશી ઝવેરચ દ વલ્લજી ૨૫૧

## જલેસર (બાલાસોર)

- ૧ સઘવી નાનચ દ પોપટભાઈ ચાનગઢવાળા ૨૫૧

## જયપુર

- ૧ શ્રીમાન હિંમતસિંહજી સાહેબ ગલૂડિયા, એડિસનલ કમીશ્નર  
અજમેર ડીવીઝનવાળાના ધર્મપત્નિ અ સૌ માણેકકુવરબેન  
તરફથી હા ખુશાલસિંહજી ગલૂડિયા ૩૫૧
- ૨ શ્રીમાન શેઠ શીરૈમલજી નવલખાના ધર્મપત્નિ અ સૌ પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

## જાવરા

- ૧ ૨૯ જાડારી સ્વરૂપચ દજી શાહના ધર્મપત્નિ મોતીબેનના  
સ્મરણાર્થે હા શ્રીચુત લાલચ દજી રાજમનજી ક્રીશ્નગઢવાળા  
( ચાહમુનિના ઉપદેશથી ) ૨૫૧

## જામખ લાળીયા ।,

- ૧ શેઠ વસનજી નારણજી ૨૫૧
- ૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા રણુઝોડદાસ પરમાણુ દ ૨૫૧
- ૩ મઘવી પ્રાણુલાલ લવજીભાઈ ૨૫૧

## જામનગર

- ૧ ગાહ છોટાલાલ કેશવજી ૨૫૧
- ૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ ૨૫૧
- ૩ ડા માહેબ પી પી શેઠ ૨૫૦

૪ શાહ રંગીલદામ પોપટલાલ	૨૫૧
૫ વકીલ મણીલાલ જેગારભાઈ પુનાત	૨૫૧

### જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧
---------------------------	-----

### જુનાગઢ

૧ શાહ મણીલાલ મીનાભાઈ હા હજીલાલભાઈ (હાટીનામાળીયાવાળા)	૨૫૧
--	-----

### જામજેઘપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન મઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીલોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેદાસ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઈ	૨૫૧
૬ શેઠ મજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

### જેતપુર

૧ ડેઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૨
૨ અ સૌ જૈન સુરજકુવર વેણીલાલ ડેઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરસેરામભાઈ (જમાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચદ	૨૫૧

### જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચદ કપૂરચદ	૨૫૧
૨ કામદાગ લીલાધર જીવરાજના સ્મગણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ જામકળેન તરફથી હા સાતીલાલભાઈ ગોઠલવાળા	૨૫૧

### જેઘપુર

૧ શેઠ નવરતનમલજી ધનવત્સિહજી	૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા	૨૫૧

૩	શેઠ પુખરાજી પદમરાજી ભાડારી	૨૫૧
૪	શેઠ વસ્તીમલજી આનંદમલજી સામસુખા	૨૫૧

### જોરાવરનગર

૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ ચ પકલાલ ધનજીભાઈ	૨૫૧
---	---	-----

### ઝરીયા

૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ કનૈયાલાલ ખી મોદી	૨૫૧
---	--	-----

### ડોઢાયયા

૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ	૨૫૦
---	------------------	-----

### ઢસા

૧	શ્રી ઢસાગામ સ્થા જૈન સઘ હા એક સદ્મહંમય તરફથી	૨૫૧
૨	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા બગડિયા નરખેરામ જોઢાલાલ (ઢસા જ કશન)	૨૫૦

### તાસગાવ

૧	સ્વ ચુનીલાલજી દુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ દોડુબાઈના તરફથી હા શેઠ રામચંદજી દુગડ	૩૫૧
---	---	-----

### થાનગઢ

૧	શાહ ઠાકરશીભાઈ કરસનજી	૨૫૧
૨	શેઠ જોઢલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૩	શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા સુખનાલભાઈ	૨૫૧
૪	હસાળેન અરવીંદ હા ભાઈ રવીંચંદ માણેકચંદ	૩૦૧

### દહાણુગેડ

૧	શાહ હરજીવનદામ ઓઘડ ખ ધાર (કરાચીનાગા)	૨૫૧
---	-------------------------------------	-----

### દાહોદ

૧	શેઠ માણેકલાલભાઈ ખેગારજી	૨૫૧
---	-------------------------	-----

## દિલ્હી

૦

- ૧ લાલજી પૂર્ણચંદજી જૈન (મેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧
- ૨ શ્રીચુત કીર્તનચંદજી મહેતાબચંદજી ચોગડીયા  
હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીચુત મહેતાબચંદ જૈન ૨૫૧
- ૩ અ મૌ મન્નનબેન ઇદગમલજી પારેખ ૨૫૧
- ૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ મન્મ ૩૦૧
- ૫ લાલાજી શુભશનગચજી જૈન એન્ડ મન્મ ૩૦૧
- ૬ શ્રી લક્ષ્મીચંદજીના અમણચેં નગીનાદેવી સુજતીના તન્દવી  
હા સઘવી હેમનકુમારજી જૈન ૨૫૧
- ૭ બેન વિજ્યાકુમારી જૈન C/o મહેતાબચંદ જૈન  
(વયોવૃદ્ધ સન્ન સ્વભાવી ફૂલમતીજી મહામતીજીની પ્રેરણાથી) ૨૫૧
- ૮ શ્રીમાન લાલાજી ગતનચંદજી જૈન C/o આઈ મી હોઝીયરી ૨૫૧

## બ્રાહ્મ

- ૧ શેઠ મણીલાલ જ્યેષ્ઠલાઈ

## ધાર

- ૧ શેઠ માગરમલજી પનાલાલજી

## ધારગંધો

- ૧ ભાવદીક્ષિત અ મૌ કપાળીબેન હીમતલાલ મઘવીના તપસ્વાચેં  
સઘવી ચીમનલાલ પન્નોતમદામ સઘવી તન્દવી ૩૦૫
- ૨ મઘવી નન્સિહદામ વખતચંદ ૩૦૧
- ૩ શ્રી શ્યા જૈન ચોટા મઘ હા શેઠ મગળજી જીવગજ ૨૫૧
- ૪ ઠંકકર નારણદામ હરગોવિંદદામ ૨૫૧
- ૫ ડોંગી કપુરચંદ મગળજી ૨૫૧

## ધોરજી

- ૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૩૫૧
- ૨ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઈ ૨૫૧

- ૩ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર જોઈલ મીલ (પ્રા લીમીટેડ) ૨૫૧
- ૪ સ્વ રાયચંદ પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ ૩૦૧
- ૫ ગાધી પોપટલાલ જ્યેષ્ઠભાઈ ૨૫૦
- ૬ દેશાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાના ધર્મપત્નિ  
દિવાળીબેન તરફથી હા કુમાર હસુમતી ૨૫૧
- ૭ શંક દલપતરામ વસનજી મહેતા ૨૫૧
- ૮ એક સદ્ગ્રંથસ્થે હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ ૨૫૧
- ૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી કચરાભાઈના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે  
હા પટેલ દલીચંદ ભગવાનજી ૩૦૧
- ૧૦ મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ જામખ ભાળીયાવાળા ૨૫૧

### ધ ધુકા

- ૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ ૨૫૧
- ૨ સ્વ ગુલામચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા વોરા પોપટલાલ નાનચંદ ૨૫૧
- ૩ શ્રી ચત્રબુજ વાઘજીભાઈ વસાણી ૨૫૧

### ધુલિયા

- ૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા કનૈયાલાલજી છાજેડ ૨૫૧

### નડીયાદ

- ૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ ૨૫૧

### નારાયણ ગામ

- ૧ મોતીલાલજી હીરાચંદ જોરડીયા જોરીવાળા ૨૫૧

### ન દુરખાર

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ ૨૫૦

### નાગોર

- ૧ શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કુ હા સાગરમલજી લુકડ ડેરવાળા તરફથી ૨૫૧

## પાલનપુર

- ૧ બેન લક્ષ્મીબાઈ હા મહેતા હરિલાલ પિતાબગદાન ૨૫૨
- ૨ શ્રી લોકાગ૨૭ મ્થા જૈન પુસ્તકાલય હા કેશવલાલ છ ગાહ ૨૫૧

## પાણમણા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન મઘ હા શાહ છોટાલાલ પૂજારાઈ ૨૫૧

## પાણેજ

- ૧ સ્થ મનસુખલાલ મોહનલાલ મઘવીના અમરણાથે  
હા ભાઈ ધીગજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

## પ્રાતીજ

- ૧ સ્થા જૈન મઘ હા શ્રીયુત ગબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

## પીપળગાવ

- ૧ શેઠ શુદ્ધમલજી કેપમલજી બેવ- C/o શેઠ બાલગદ મીશ્રીલાલ ૫૦૧

## પૂના

- ૧ શેઠ ઉત્તમચંદજી દેવળચંદજી પો. ૧ ૨૫૧

## ફાલના

- ૧ મહેતા પુખરાજજી હસ્તીમલજી માદડીવાળા ૩૦૧
- ૨ મહેતા કુદનમલજી અમરચંદજી નાદડીવાળા ૨૫૧

## બગસરા

- ૧ શે. પોપલાલ રાઘવજી ગઘડીવાળા  
હા નાનચંદ પ્રેમચંદ ગાહ ૨૫૧



૩	ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ચોઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪	સ્વ રાયચંદ પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ	૩૦૧
૫	ગાધી પોપટલાલ જેઠાદલાઈ	૨૫૦
૬	દેશાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાંઠવાળાના ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન તરફથી હા કુમાર હસુમતી	૨૫૧
૭	શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા	૨૫૧
૮	એક સદ્ગુણસ્થ હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૯	સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી કચરાભાઈના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હા પટેલ દલીપચંદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦	મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ જામખંભાણીયાવાળા	૨૫૧

### ધુધુકા

૧	શેઠ પોપટલાલ ધારંગીભાઈ	૨૫૧
૨	સ્વ ગુલાબચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા વેરા પોપટલાલ નાનચંદ	૨૫૧
૩	શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

### ધુલિયા

૧	શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા કનૈયાલાલજી છાજેડ	૨૫૧
---	--	-----

### નડીયાદ

૧	શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ	૨૫૧
---	---------------------	-----

### નારાયણ ગામ

૧	મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા બેરીવાળા	૨૫૧
---	--------------------------------------	-----

### નંદુરબાર

૧	શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ	૨૫૦
---	--	-----

### નાગોર

૧	શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કુ હા સાગરમલજી કુકડ ડેરવાળા તરફથી	૨૫૧
---	---	-----

## . બોટાદ

- ૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે ; ૨ ૨૫૧  
હા તેમના ધર્મપત્નિ છબલબેન ૨૫૧

## બોટૈલી

- ૧ શાહ પ્રવીણચંદ્ર નરમિહદાસ સાણુ દવાળા ૨૫૧  
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

## બોરા

- ૧ સ્વરૂપચંદ્ર જવાહરમલજી બોરડીયા, મનોબાઈ સુગનલાલજીના  
સ્મરણાર્થે (ચાદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧  
૨ બેન રાધીબાઈ (પૂ આચાર્ય ધર્મદાસજી મહારાજના સપ્રદાયના  
મત્રિ કીશનલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય શોભાગમલજી  
મહારાજના શિષ્ય સ્વ કેવળચંદ્ર મહારાજના સ્મરણાર્થે)  
(ચાદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧

## ભાણુવડ

- ૧ શેઠ જ્યેષ્ઠભાઈ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨  
૨ સધવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧  
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧  
૪ શેઠ ગમજી જીણાભાઈ ૨૫૧  
૫ શેઠ પદમશી લીમજી ફેફરીયા ૨૫૧  
૬ ફેફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા એ સૌ શાતાબેન વચનજી ૨૫૧  
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના  
ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન લીલાધર (જીજીવાળા) ૨૫૧

## ભાવનગર

- ૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચંદ કુવરજી ૩૦૧  
૨ કેઠારી ઉદયલાલજી સાહેબ ૨૫૧

## બરવાળા-ઘેઘારા

- ૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે  
હા તેમના ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી, ૨૫૧

## બદનાવર

- ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હા, મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

## બાલોતરા-

- ૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણસારી ૨૫૧

## બીદકા

- ૧ શાહ કાનજી શામજીભાઈ ૨૫૧

## બિકાનેર

- ૧ શેઠ ભેરદાસજી શેઠીયા ૨૫૪

## બેરાળ

- ૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી જ્ઞાનભડાર માટે ૨૫૧

## બેલારી

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ હજારીમલજી હસ્તીમલજી રાકા ૨૫૧

## બેરમો

- ૧ શ્રી બેરમો સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

## બેગલોર

- ૧ બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ, મહાવીર ટેક્સટાઈલ સ્ટોર તરફથી  
ભાઈ ચન્દ્રકાન્તના લગ્નની ખુશાલીમા ૨૫૨  
૨ શેઠ કિશનલાલજી કુલચંદજી આહેજ ૨૫૧

## , બોટાદ-

- ૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે ૨૫૧  
હા તેમના ધર્મપત્નિ છબલબેન ૨૫૧

## બોડેલી

- ૧ શાહ પ્રીણયદ્ર નરસિંહદાસ સાણુદવાળા ૨૫૧  
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

## બોર

- ૧ સ્વરૂપચન્દ્ર જવાહરમલ જોરડીયા, મનોભાઈ સુગનલાલના  
સ્મરણાર્થે (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧  
૨ બેન રાધીબાઈ (પૂ આચાર્ય ધર્મદાસજી મહારાજના સપ્રદાયના  
મત્રિ કીશનલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય શોભાગમલજી  
મહારાજના શિષ્ય સ્વ કેવળચંદ્ર મહારાજના સ્મરણાર્થે)  
(આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧

## ભાણુવડ

- ૧ શેઠ જયદભાઈ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨  
૨ સધવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧  
૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧  
૪ શેઠ રામજી જીણાભાઈ ૨૫૧  
૫ શેઠ પદમશી ભીમજી દોફરીયા ૨૫૧  
૬ દોફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા બ મૌ શાતાબેન વચનજી ૨૫૧  
૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના અમરણાર્થે હા તેમના  
ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન લીલાધર (ગુદાવાળા) ૨૫૧

## ભાવનગર

- ૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચંદ કુવરજી ૩૦૧  
૨ કાઠારી ઉદયલાલજી સાહેબ ૨૫૧

## બરવાળા-ઘેલાશા

- ૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે  
હા તેમના ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી, ૨૫૧

### બદનાવર

- ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હા મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

### બાલોતરા

- ૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદાસજી ભણુસારી ૨૫૧

### બીદકા

- ૧ શાહ કાનજી શામજીભાઈ ૨૫૧

### બિકાનેર

- ૧ શેઠ ભેરુદાનજી શેઠીયા ૨૫૪

### બેરાળ

- ૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી જ્ઞાનભડાર માટે ૨૫૧

### બેલારી

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ હજારીમલજી હસ્તીમલજી રાઠા ૨૫૧

### બેરમો

- ૧ શ્રી બેરમો સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

### બેગલોર

- ૧ બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ, મહાવીર ટેક્સટાઇલ સ્ટોર તરફથી  
ભાઈ ચન્દ્રકાન્તના લગ્નની પુચાલીમાં ૨૫૨  
૨ શેઠ કિશનલાલજી કુલચંદજી સાહેબ ૨૫૧

## માંડવા

- ૧ શ્રી માંડવા સ્થા જૈન સઘ  
હા અ સૌ કચનગૌરી રતીલાલ ગોસલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

## માલેગાવ

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા રતેલાલ, માહુ જૈન ૨૫૧

## મુખર્ધ તથા પરાંઓ

- ૧ સ્વ પિતાશ્રી કુદનમલજી મોતીલાલજી મુથાના સ્મરણાર્થે  
હા શેઠ મોતીલાલજી જુગરમલજી (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧
- ૨ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ હા કામદાર ઉપચદ શીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧
- ૩ અ સૌ કમળાબેન કામદાર હા કામદાર ઉપચદ શીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧
- ૪ સ્વ માતૃશ્રી કડવીબાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પૌત્ર  
હકમીચદ તાગચદ દોશી (અધેરી) ૨૫૧
- ૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧
- ૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્નાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
- ૭ સઘવી હિમતલાલ હરજીવનદામ ૨૫૧
- ૮ વોરા પાનાચદ મધજીના સ્મરણાર્થે  
હા ત્રબકલાલ પાનાચદ એન્ડ બ્રધર્મ ૨૫૧
- ૯ શાહ રામજી કરશનજી ચાનગઢવાળા ૨૫૧
- ૧૦ સ્વ જટાશકર દેવજીભાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે  
હા રણુછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશકર દોશી ૩૦૧
- ૧૧ ઘેલાણી વલભજી નરસેરામ હા નરમી હદામ વલભજી ૨૫૧
- ૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
- ૧૩ શાહ ત્રિભોવનદામ માનમિંગલાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા શાહ હરખચદ ત્રિભોવનદાસ ૨૫૧
- ૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડીયાવાળા) ઘાટડોપર ૨૫૧
- ૧૫ સ્વ પિતાશ્રી શામળજી કટ્યાણુજી ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા વૃજલાલ શામળજી બાવીમી ૩૦૧
- ૧૬ શાહ મનહરલાલ પ્રાણજીવનદાસ ૨૫૧

## ભીલખાંડા

- ૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી આનંદસિંહ સિંઘવી ૨૫૧  
 ૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

## ભીમ

- ૧ ચ પકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ ઊગામલજી માંગીલાલજી ૨૫૧

## ભુસાવલ

- ૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

## ભોખય

- ૧ જ્ઞાન મહિરના સેક્રેટરી શાહ કુવજી જીવરાજ ૨૫૧

## મદ્રાસ

- ૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી મહેતા ૨૫૧  
 ૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧  
 ૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચંદ ૨૫૧  
 ૪ બાપાલાલ ભાઈચંદ મહેતા ૨૫૧

## મનોર

- ૧ શાહ શેરમનજી દેવીચંદજી જગતગઢવાળા હા  
 પૂનમચંદજી શેરમલજી જોખ્યા ૨૫૧

## માનકુવા

- ૧ સ્વ મહેતા કુવજી નાથાલાલના રમરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ  
 કુવરઆઈ હરખચંદ (માનકુવા સ્થા જૈન સંઘ માટે) ૨૫૧

## માઠવી

- ૧ શ્રી સ્થા હકોટી જૈન સંઘ હા મહેતા ગુનીલાલ ચેલજી ૨૭૭

૪૪	શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ	ઘાટકોપર	૨૫૧
૪૫	શેઠ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઈ		૨૫૧
૪૬	શાહ શીવજી માણેકભાઈ		૨૫૧
૪૭	મેમર્મ અવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કંપા હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૪૮	શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી ( વેગવળવાળા )		૨૫૧
૪૯	મહેતા રતિલાલ ભાઈચંદ		૨૫૧
૫૦	શાહ ગેમજી હીરજી ગાલા		૨૫૧
૫૧	બેન કેશરભાઈ ચંદુલાલ જેર્મીંગભાઈ શાહ		૨૫૧
૫૨	પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્નિ અ સૌ ચચળભાઈના અમણાર્થે હા સાગભાઈ ચીમનલાલ		૨૫૧
૫૩	ધી મરીના મોર્ડન હાઈસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકંગી		૨૫૧
૫૪	મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા		૨૫૧
૫૫	શેઠ રમીકલાલ પ્રભાશંકર મોરખીવાળા તરફથી તેમના માતૃશ્રી મણીબેનના અમરણાર્થે		૩૦૧
૫૬	શ્રીયુત જયવતલાલ ચુનીલાલ વોરા		૨૫૦
૫૭	શાહ કુવરજી હસરાજ		૨૫૧
૫૮	દડીયા જેર્મીંગલાલ ત્રીકમજી		૨૫૧
૫૯	મોદી અણેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાલાલ અણેચંદ		૨૫૧
૬૦	શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધાગધાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ		૨૫૦
૬૧	અવ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના અમરણાર્થે હા લક્ષ્મીચંદભાઈ તવા ડેમવલાલભાઈ		૩૦૧
૬૨	અવ પિતાશ્રી શાહ અબાલાવ પુરુષોત્તમદાસના અમણાર્થે હા ગાહ ગાપલાલ અબાલાલ		૨૫૧
૬૩	અવ કસ્તુરચંદ અમરગીના અમરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્નિ ઝવેરબેન મગનલાલ વતી જયતિલાલ કસ્તુરચંદ મફકાગીયા (ચુડાવાળા)		૨૫૧
૬૪	શેઠ કુગરશી હમગજ વીમરીયા		૨૫૧
૬૫	શાહ ગતનશી મોણશીની કુા		૨૫૧
૬૬	શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા		૨૫૧
૬૭	શાહ ચંદુલાલ ડેશવલાલ		૨૫૧
૬૮	અવ પિતાશ્રી વિરચંદ જેર્મીંગ શેઠ લખતરવાળાના અમણાર્થે હા ડેશવલાલ વીરચંદ		૨૫૧
૬૯	ચંદુલાલ કાનજી મહેતા		૨૫૧



૧૭	સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ આશારામવતી જશવતલાલ શાંતિલાલ	૨૫૧
૧૮	ગાંધી કાતીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૧૯	શાહ રવજીભાઈ તથા ભાઈલાલભાઈની કુ (કાદીવલી)	૨૫૧
૨૦	અ સૌ લાધુબેન હા રવજીભાઈ ચામળ	૨૫૧
૨૧	સ્વ માતુશ્રી માણેકભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ વલ્લભદાસ નાનજી	૩૦૧
૨૨	એક સદગૃહસ્થ હા શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૨૩	શેઠ ખુશાલભાઈ ખેઝારભાઈ	૨૫૦
૨૪	શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૨૫	સ્વ માતુશ્રી ગોમતીબાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ	૨૫૧
૨૬	કોટેચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા	૨૫૧
૨૭	વોરા ઠાકરશી જશરાજ	૨૫૧
૨૮	કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી (ખારદોઢ)	૨૫૧
૨૯	અ સૌ બેન કુદનગૌરી મનહરલાલ સઘવી	૨૫૧
૩૦	કોઠારી રમણીકલાલ કસ્તુરચંદભાઈ	૨૫૧
૩૧	દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા દલીચંદ અમૃતલાલ દેશાઈ	૨૫૧
૩૨	સ્વ ત્રિભોવનદાસ મજપાળ વીંછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે હા હરગોવિંદદાસ ત્રિભોવનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૩૩	તેજણી કુબેરદાસ પાનાચંદ	૨૫૧
૩૪	શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદીવાળા)	૨૫૧
૩૫	શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખલાતવાળા હા ભાઈ જોડાલાલ નેમચંદ	૨૫૧
૩૬	શાહ કોશીભાઈ હીજીભાઈ	૩૦૧
૩૭	શ્રીમતી મણીબાઈ મજલાલ પાદેખ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા વૃજલાલ દુર્લભજી	૨૫૧
૩૮	દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૩૯	દોશી ચત્રભુજ સુદરજી	૨૫૧
૪૦	દોશી જીગલકિશોર ચત્રભુજ	૨૫૧
૪૧	દોશી પ્રવિણચંદ ચત્રભુજ	૨૫૧
૪૨	શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા ઝાટકીયા નરભેરામ મોરારજી	૨૫૧
૪૩	શાહ કાતીલાલ મગનલાલ	૨૫૧

૪૪	શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ	ઘાટકોપર	૨૫૧
૪૫	ગેઠ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઈ		૨૫૧
૪૬	શાહ શીવજી માણેકભાઈ		૨૫૧
૪૭	મેમર્મ મવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કુ હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૪૮	શાહ નગીનદામ કલ્યાણજી (વેરાવળવાળા)		૨૫૧
૪૯	મહેતા રતિલાલ બાઈચંદ		૨૫૧
૫૦	શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા		૨૫૧
૫૧	બેન કેશરભાઈ ચંદુલાલ જેર્સીંગભાઈ શાહ		૨૫૧
૫૨	પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ માચલાવાળાના ધર્મપત્નિ અ સૌ ચચળભાઈના અમ્મણાર્યે હા સાગભાઈ ચીમનલાલ		૨૫૧
૫૩	ધી મરીના મોર્ડન હાઈસ્કુલ ટ્રસ્ટ કંડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકગી		૨૫૧
૫૪	મહેતા મોટર ઓર્મ હા અનોપચંદ ડી મહેતા		૨૫૧
૫૫	શેઠ રમીકલાલ પ્રભાચંદર મોરળીવાળા તરફથી તેમના માતૃશ્રી મણીબેનના અમરણાર્યે		૩૦૧
૫૬	શ્રીચુત જશવંતલાલ ચુનીલાલ વેરા		૨૫૦
૫૭	શાહ કુવરજી હંસરાજ		૨૫૧
૫૮	દહીયા જેર્સીંગલાલ ત્રીઠમજી		૨૫૧
૫૯	મોદી અલેચંદ સુરચંદ રાજડોટવાળા હા ડોસાલાલ અલેચંદ		૨૫૧
૬૦	શાહ જેઠાલાલ ઠામરશી ધ્રાગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ		૨૫૦
૬૧	સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જમાણીના અમરણાર્યે હા લક્ષ્મીચંદભાઈ તવા કેશવલાલભાઈ		૩૦૧
૬૨	સ્વ પિતાશ્રી શાહ અબાલાલ પુરૂષોત્તમદાસના અમરણાર્યે હા શાહ બાપલાલ અબાલાલ		૨૫૧
૬૩	સ્વ કસ્તુરચંદ અમરગીના અમરણાર્યે હા તેમના ધર્મપત્નિ ઝવેરબેન મગનલાલ વતી જયતિલાલ કસ્તુરચંદ મસ્કારીયા (ચુડાવાળા)		૨૫૧
૬૪	શેઠ ડુગરશી હંમગજ વીસરીયા		૨૫૧
૬૫	શાહ રતનશી મોણશીની કુ		૨૫૧
૬૬	શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા		૨૫૧
૬૭	શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ		૨૫૧
૬૮	સ્વ પિતાશ્રી વિરચંદ જેર્સીંગ શેઠ લખતરવાળાના અમરણાર્યે હા કેશવલાલ વીરચંદ		૨૫૧
૬૯	ચંદુલાલ કાનજી મહેતા		૨૫૧

૭૦	શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન સઘ	૨૬	
	હા કેશરીમલ્લ અનોપચદલ ગુગલીયા	( મલાડ )	૨૫૧
૭૧	સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે		
	હા શાહ કાનલ પતુભાઈ	,,	૨૫૧
૭૨	અ સૌ પાનભાઈ હા શેઠ પદમશી નરસિંહભાઈ	,,	૨૫૧
૭૩	સ્વ નાગશીભાઈ સેજપાલના સ્મરણાર્થે હા રામલ નાગશી	,,	૩૦૧
૭૪	સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ સરસધવાળાના સ્મરણાર્થે		
	હા જગજીવન વણારશી ગોડા	,,	૨૫૧
૭૫	સ્વ કાનલ મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતૃશ્રી દિવાળીબાઈના		
	૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા જયતિલાલ કાનલ	,,	૨૫૧
૭૬	શાહ પ્રેમલ માલશી ગગર	,,	૨૫૧
૭૭	શાહ વેલશી જેશી ગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ		
	સ્વ નાનભાઈના સ્મરણાર્થે	,,	૩૦૧
૭૮	સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે હા		
	શાહ દામલ રાયશીભાઈ	,,	૩૦૧
૭૯	સ્વ પિતાશ્રી બીમલ કેરશી તથા માતૃશ્રી પાલાળાઈના		
	સ્મરણાર્થે હા શાહ ઉમરશી બીમશી	,,	૩૦૧
૮૦	શાહ વરજ ગભાઈ શીવજીભાઈ	,,	૨૫૧
૮૧	શાહ ખીમલ મુળજી પૂજા	,,	૨૫૧
૮૨	સ્વ માતૃશ્રી જઠલભાઈના સ્મરણાર્થે હા દેશાઈ મળલાલ કાળીદાસ	,,	૨૫૧
૮૩	અ સૌ સમતાગેન શાતિલાલ C/o શાતીલાલ ઉજમશી શાહ	,,	૨૫૧
૮૪	સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સૂરજગેન તરફથી		
	હા તનસુખનાલભાઈ	,,	૨૫૧
૮૫	સ્વ પિતાશ્રી હસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે		
	હા દેવશી હસરાજ કચ્છ બીદડાવાળા	,,	૨૫૧
૮૬	ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રાકમલ	(બોરીવલી)	૨૫૨
૮૭	શેઠ ત્રણકલાલ કન્તુરચ દલી મડી અજરામરશાસ્ત્ર ભડારને ભેટ (માટુ ગા)		૨૫૧
૮૮	અ સૌ બેન રજનગૌરી C/o શાહ ચંદલાલ ટક્કીચંદ	,,	૨૫૧
૮૯	શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ સૌ		
	મુશીલાબેનના વર્ષાતપની ખુશાલીમા	,,	૨૫૧
૯૦	દોશી બીખાલાલ વૃજલ લ પાળીયાદવાળા	,,	૨૫૧
૯૧	શાહ ગોપાળજી માવસગ	,,	૨૫૧

## ઉર્ફ

- ૯૨ દોશી કુલચંદ માણેકચંદ " ૨૫૦
- ૯૩ શેઠ ચંપકલાલ સુનીલાલ દાદલાવાળા " ૨૫૧
- ૯૪ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન આવક સંઘ હા મધવી ,  
ચીમનલાલ અમગ્યદ (દાદર) ૨૫૧
- ૯૫ શાંતિલાલ કુગચી અદાણી " ૨૫૧
- ૯૬ શાહ કરગન લધુભાઈ " ૩૦૧
- ૯૭ દીશનલાલ શ્રી મહેતા શીવ ૨૫૧
- ૯૮ માતુશ્રી છત્રીબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા શામળ શીવળ કચ્છ શુદાળાવાળા ગોરેગાવ ૨૫૧
- ૯૯ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ  
નેણુબાઈ વતી હા જેઠાલાલ ગયશી " ૨૫૧
- ૧૦૦ શુશીલાબેનન શકરાભાઈ C/o નવીનચંદ્ર વમતલાલ શાહ વિલેપાલે ૨૫૧
- ૧૦૧ બેન ચંદ્રબેન અમૃતલાલ વારિયા ૨૫૧
- ૧૦૨ સ્વ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે  
હા સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા) ૩૦૧
- ૧૦૩ શાહ ત્રીલોચન ગોપાલજી તથા અ શ્રી બેન ડુબા  
ત્રીલોચન (યાનગઢવાળા) શીવ ૨૫૧

## મુળી

- ૧ શેઠ ઉજ્જમશી વીગ્યાળ હા શેઠ કેશવલાલ ઉજ્જમશી ૩૦૧

## મોરબી

- ૧ દોશી માણેકચંદ સુદરજી ૩૫૧

## મોરબાસા

- ૧ શ્રીચુત નાથાલાલ હી મહેતા ૨૫૧
- ૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦

## ચાદગીરી

- ૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી બેકર્સ ૨૫૦

- ૭૦ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ  
હા કેશરીમવજી અનોપચદજી ગુગલીયા (મલાડ) ૨૫૧
- ૭૧ સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે  
હા શાહ કાનજી પતુભાઈ ,, ૨૫૧
- ૭૨ અ સૌ પાનભાઈ હા શેઠ પદમશી નરસિંહભાઈ ,, ૨૫૧
- ૭૩ સ્વ નાગશીભાઈ સેજપાલના સ્મરણાર્થે હા રામજી નાગશી ,, ૩૦૧
- ૭૪ સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીલોવનદાસ સરસધવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા જગજીવન વણારશી ગોડા ,, ૨૫૧
- ૭૫ સ્વ કાનજી મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતૃશ્રી દિવાળીભાઈના  
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા જયતિલાલ કાનજી ,, ૨૫૧
- ૭૬ શાહ પ્રેમજી માલશી ગગર ,, ૨૫૧
- ૭૭ શાહ વેલશી જેશી ગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપતિ  
સ્વ નાનભાઈના સ્મરણાર્થે ,, ૩૦૧
- ૭૮ સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે હા  
શાહ દામજી રાયશીભાઈ ,, ૩૦૧
- ૭૯ સ્વ પિતાશ્રી ભીમજી કોરશી તથા માતૃશ્રી પાલ્તાભાઈના  
સ્મરણાર્થે હા શાહ ઉમરશી ભીમશી ,, ૩૦૧
- ૮૦ શાહ વરજી ગભાઈ શીવજીભાઈ , ૨૫૧
- ૮૧ શાહ ખીમજી મુળજી પૂજા ,, ૨૫૧
- ૮૨ સ્વ માતૃશ્રી જકવભાઈના સ્મરણાર્થે હા દેશાઈ મજલાલ કાળીદાસ ,, ૨૫૧
- ૮૩ અ સૌ સમતાએન શાતિલાલ C/o શાતીલાલ ઉજમશી શાહ ,, ૨૫૧
- ૮૪ સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સૂરજએન તરફથી  
હા તનમુખનાલભાઈ , ૨૫૧
- ૮૫ સ્વ પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે  
હા દેવશી હંસરાજ કંઠ ધીંદડાવાળા ,, ૨૫૧
- ૮૬ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રાંકમજી (ભોરીવલી) ૨૫૨
- ૮૭ શેઠ ત્રળકલાલ કમ્તુરચ દલી મડી અજરામરશામ્જી લ ડારને લેટ (માડુ ગા) ૨૫૧
- ૮૮ અ સૌ બેન રજનગૌરી C/o શાહ ચંડુલાલ દક્ષીચંદ , ૨૫૧
- ૮૯ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપતિ અ સૌ  
સુશીલાબેનના વર્ષીતપની પ્રુથાવીમા ,, ૨૫૧
- ૯૦ દોશી ભીખાલાલ વૃજલ લ પાળીયાદવાળા ,, ૨૫૧
- ૯૧ શાહ ગોપાળજી માવસગ ,, ૨૫૧

૧૧	દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (ગીટાચંદ) એકઝીક્યુટીવ એન્જનીયર)	૨૫૧
૧૨	કામદાસ ચંદુલાલ જીવગજ (ધાગધાવાળા)	૨૫૦
૧૩	હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ	૨૫૧
૧૪	દક્ષતરી પ્રભુલાલ ન્યાયચંદ	૨૫૧
૧૫	સ્વ મહેતા દેવચંદ પુત્રોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ હેમકુવરભાઈ તરફથી હા જયતિલાલ દેવચંદ મહેતા	૨૫૧
૧૬	પારેખ શીવલાલ જૂઝાભાઈ મોઝામાવાળા હા અ. મૌ કંચનબેન	૨૫૨

### ૨૫૨

૧	પૂજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાયચંદભાઈ	૨૫૧
---	----------------------------	-----

### લાખતર

૧	શાહ રાયચંદ ઠાકરજીના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ	૨૫૧
૨	ભાવસાર હજીવનદાસ પ્રભુદામના સ્મરણાર્થે હા ત્રીભોવનદાસ હજીવનદાસ	૨૫૧
૩	શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે હા ભાઈ અમૃતલાલ તલકશા	૨૫૧
૪	શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૫	શાહ બદવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ બદવજી	૨૫૧
૬	દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ સમરતબહેન તરફથી હા જયતિલાલ ઠાકરશી	૨૫૧

### લાલપુર

૧	શેઠ નેમચંદ સવજી મોદી હા ભાઈ મગનલાલ	૨૫૧
૨	શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા મણીલાલભાઈ તથા જેર્સીંગલાલભાઈ	૨૫૧

### લાખેરી

૧	માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હા મહેતા અમૃતલાલ જેઠાલાલ (મીવીલ એન્જનીયર સાહેબ)	૨૫૧
---	--	-----

### લાકડીયા

૧	શ્રી લાકડીયા ચા નૈન સઘ હા શાહ રતનશી કરમજી	૨૫૧
---	---	-----

## રતલામ

- ૧ અનેક ભકતજનો તરફથી હા શ્રીમાન કેશરીમલ્લ (શ્રી કેવળચંદ્ર મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

## રાણપુર

- ૧ શ્રીમતિ માતુશ્રી સમરતબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા ડૉ નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
- ૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઈ ખીમભાઈના સ્મરણાર્થે  
હા શેઠ કાલીદાસ લહેરાભાઈ વશાણી ૩૦૧

## રાણાવાસ

- ૧ શેઠ જવાનમલ્લ નેમીચંદ્ર હા બાબુ રીખભયંદ્ર ૩૦૧

## રાયચુર

- ૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા શાહ શીવલાલ શુલાભયંદ્ર વડવોણવાળા ૨૫૧
- ૨ શેઠ કાશુરામભાઈ ચાદમલ્લ સચેતી મુથા ૨૫૧

## રાજકોટ

- ૧ વાડીલાલ કાઈમ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ ૪૦૦
- ૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલયંદ્ર ચીતલીયા ૨૫૧
- ૩ બાબુ પરશુરામ છગનલાલ શેઠ ઉદેપુરવાળા ૨૫૦
- ૪ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ્ર (એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧
- ૫ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ્ર તેમના ધર્મપત્નિના વર્ષીતપ પ્રસંગે ૨૫૧
- ૬ શેઠ પ્રભારામ વીઠ્ઠલભાઈ ૨૫૧
- ૬ ઉદાણી ન્યાલયંદ્ર હાકેમચંદ્ર વડીલ ૨૫૧
- ૮ બેન સચુભાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
- ૯ મારી સૌભાગ્યચંદ્ર મોતીચંદ્ર ૨૫૧
- ૧૦ બદાણી ભીમભાઈ વેલભાઈ તરફથી તેમના ધર્મપત્નિ અ. સૌ. સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧

૧૧	દોશી મોતીચંદ ધાગશીભાઈ (સીટાયઈ એફ્રીકયુટીવ એન્જનીયર)	૨૫૧
૧૨	કામદાગ ચંદુલાલ જીવગજ (ધાગધાનાળા)	૨૫૦
૧૩	હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ	૨૫૧
૧૪	દક્ષતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ	૨૫૧
૧૫	સ્વ મહેતા દેવચંદ પુત્રોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ હેમકુવરભાઈ તરફથી હા જયતિલાલ દેવચંદ મહેતા	૨૫૧
૧૬	પારેખ શીવલાલ ઝૂઝાભાઈ મોમ્નામાવાળા હા અ. મૌ કચનબેન	૨૫૨

### ૨૫૨

૧	પૂન્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદભાઈ	૨૫૧
---	----------------------------	-----

### લાખતર

૧	શાહ રાયચંદ ઠાકરગીના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ રાયચંદ શાહ	૨૫૧
૨	ભાવસાર હરજીવનદાસ પ્રભુદામના સ્મરણાર્થે હા ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૩	શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે હા ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી	૨૫૧
૪	શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૫	શાહ જાદવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ જાદવજી	૨૫૧
૬	દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ સમરતબહેન તરફથી હા જયતિલાલ ઠાકરશી	૨૫૧

### લાલપુર

૧	શેઠ નેમચંદ સવજી મોદી હા ભાઈ મગનલાલ	૨૫૧
૨	શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા મણીલાલભાઈ તથા જેશીંગલાલભાઈ	૨૫૧

### લાખેરી

૧	માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હા મહેતા અમૃતલાલ જેઠાલાલ (સીવીલ એન્જનીયર સાહેબ)	૨૫૧
---	--	-----

### લાકડીયા

૧	શ્રી લાકડીયા મ્યા જેન સઘ હા શાહ રતનશી ડરમણ	૨૫૧
---	--	-----



## લીમડી (સીરામટ)

- ૧ શાહ ચક્રભાઈ ગુલાબચંદ ૨૫૧

## લીમડી (પચમહાલ)

- ૧ શાહ કુવરજી ગુલાબચંદ ૨૫૧  
 ૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ ૨૫૧  
 ૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કર્ણાવટ ૨૫૧

## લોનાવલા

- ૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા ૨૫૧

## લુધિયાના

- ૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જૈન દિલ્હીવાળા ૨૫૧

## વઢવાણ શહેર

- ૧ શેઠ દિલીપકુમાર સવાઈલાલ C/o શાહ સવાઈલાલ ત્રમ્બકલાલ ૨૫૧  
 ૨ કામદાર મગનલાલ ગોકળદાસ હા રતીલાલ મગનલાલ ૨૫૧  
 ૩ સઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હા જીવણલાલ ગફલદાસ ૨૫૧  
 ૪ શેઠ કાતીલાલ નાગરદાસ ૨૫૧  
 ૫ વોરા ચત્રજી મગનલાલ ૨૫૧  
 ૬ સઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ ૨૫૧  
 ૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરજી ૨૫૧  
 ૮ વોરા ડોસ ભાઈ લાલચંદ ત્યા જૈન મધ  
     હા વોરા નાનચંદ શીવલાલ ૨૫૧  
 ૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ ત્યા જૈન સઘ  
     હા વોરા પાનાચંદ ગોખરદાસ ૨૫૧  
 ૧૦ દોશા વીરચંદ સુરચંદ હા દોશી નાનચંદ ઉજમશી ૨૫૧  
 ૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ તથા વોરા ચત્રજી મણીલાલ ૨૫૧  
 ૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઈ ૨૫૧  
 ૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલના ધમ પર્તિન  
     અ સૌ કમળાબેન રશુનવાળા ૨૫૧

૧૪ શેઠ વૃજલાલ સુખલાલ ૨૫૧

### વડોદરા

- ૧ કામદાર કેશવલાલ હિંમતરામ પ્રેક્ષર ૨૫૧  
 ૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧  
 ૩ સ્વ પિતાશ્રી ફકીરચંદ્ર પુળભાઈના સ્મરણાર્થે ૨૫૧  
     હા શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ્ર ૨૫૧

### વડીયા

શેઠ લવાનભાઈ કાળાભાઈ પચમીયા ૨૫૧

### વલસાડે

- ૧ શાહ ખીમચંદ્ર સુળભાઈ ૨૫૧

### વણી

- ૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ સ્વ ચચળબેન તથા  
     પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

### વટામણુ

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા પટેલ ડાહ્યાભાઈ હંભુભાઈ ૨૫૧

### વડગાવ

- ૧ શેઠ માણેકચંદ્ર રાજમલભાઈ બાકેણા ૨૫૧

### વાકાનેર

- ૧ ખ ઢેરીયા કાતીલાલ ત્રણકલાલ ૨૫૧  
 ૨ દફતરી ગુનિલાલ પોપટભાઈ મોરખીવાળા  
     હા પ્રાણુલાલ ગુનીલાલ દફતરી ૨૫૧

### વીંછીયા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા અજમેશ રાયચંદ્ર મજપાળ ૨૫૧

- ૧ માસ્તર વીઠલભાઈ મોદી ૨૫૧
- ૨ શાહ નાગરદાસ માણિક્યદ ૨૫૧
- ૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧
- ૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્નિ અ સૌ જેન હીલાવતીના વર્ષીતપ નિમિતે હા શાહ કાતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦
- ૫ સ્વ શેઠ ઉજ્જમશી નાનચદના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ નાનચદ ૨૫૧
- ૬ સ્વ શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચદ ખારાધોડાવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા ખીમચદભાઈ ૨૫૧
- ૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રમુગસના સ્મરણાર્થે હા અનુભાઈ ૨૫૧
- ૮ સઘની જેયદભાઈ નારણદાસ ૨૫૧
- ૯ સ્વ શાહ વેલશીભાઈ સાકરચંદ્ર કન્નાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે હા ભાઈ ચીમનલાલભાઈ ૨૫૧
- ૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા (મોટી જેનના સ્મરણાર્થે) ૨૫૧
- ૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઈના પુત્ર વાડીલાલભાઈના ધર્મપત્નિ અ સૌ નારગીજેનના વર્ષીતપ નિમિતે હા શાતિલાલ નારણદાસ ૨૫૧
- ૧૨ સ્વ છખીવદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ કમળાજેન તરફથી હા મણુવાકુમારી ૨૫૧
- ૧૩ શ્રી સ્થા જૈન શ્રાવીડા મઘ હા રભાજેન વડીલાલ ૨૫૧
- ૧૪ સ્વ ત્રિભોવનદાસ દેવચંદ તથા સ્વ ચચળજેનના સ્મરણાર્થે હા ડો હિમતલાલ સુખલાલ ૨૫૧
- ૧૫ શાહ મુળચંદ કાનજીભાઈ હા શાહ નાગરદાસ ઓઘડભાઈ ૨૫૧
- ૧૬ શેઠ મોહનલાલ પિનામ્બરદાસ હા ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ ૨૫૧
- ૧૭ શ્રીમતી હીરાજેન નથુભાઈના વર્ષીતપ નિમિતે હા નથુભાઈ નાનચદ શાહ ૩૦૧
- ૧૮ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ ૨૫૧
- ૧૯ સ્વ મણીયાર પરમેતમદાસ સુદરજીના સ્મરણાર્થે હા સાકરચંદ પરમેતમદાસ શાહ ૨૫૧

## વેરાવળ

- ૧ શાહ કેશવલાલ જેયદભાઈ ૨૫૧

- ૨ શાહ ખીમચંદ શોભાગ્યચંદ  
૩ ૨૧ શેઠ મદનજી જેઠદલાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નિ  
લાડકુવરખાઈ તરફથી હા ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧  
૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ શોભેચંદ કરશનજી ૨૫૧  
૫ શાહ હરકિશનદાસ કુલચંદ કાનપુવાળા ૨૫૧

### સતારા

- ૧ ૨૧ કોઠારી મદનલાલજી કુદનમલના સ્મરણાર્થે  
હા તેમના ધર્મપત્નિ રાજકુવરખાઈ ૨૫૧

### સરા

- ૧ શ્રી મરા સ્થા જૈન સઘ હા દોશી પાનાચંદ સોમચંદ ૨૫૧

### સાણુદ

- ૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હા શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧  
૨ અ સૌ અ પાળેન હા દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧  
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોશાભાઈ ૨૫૧  
૪ શાહ સાદરચંદ કાનજીભાઈ ૨૫૧  
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી મઘવી લીંમડીવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા વાડીલાલ મોહનલાલ કોઠારી ૨૫૧  
૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ ચુળાવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧  
૭ સઘવી નાગજીદાસ ધગમશીના સ્મરણાર્થે હા જયતીલાલ નારણદાસ ૨૫૧  
૮ ગાહં કસ્તુરચંદ હંજીવનદાસ સાણુદવાળા  
હા ડો માણેકલાલ કસ્તુરચંદ શાહ ૨૭૧  
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ગાધી ચુડાવાળા તરફથી  
તેમના ધર્મપત્નિ મજાબેન લલુભાઈના સ્મરણાર્થે ૩૦૧

### સાલખની

- ૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચંદ ૨૫૦

## સાદડી

- ૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા ૨૫૧

## સાસવડે

- ૧ ચદનમલજી મુથાના ધર્મપતિ અ સૌ રણુભાઈ મુથા તરફથી  
હા અમરચદજી મુથા ૨૫૧

## સુરત

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ રતિલાલ લટલુભાઈ ૨૫૧  
૨ શ્રીચુત કટયાણુચદ માણેકચદ હડાલાવાળા ૨૫૧  
૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા જૈન સઘ હા બાણુલાલ છોટાલાલ શાહ ૨૫૧

## સુરેન્દ્રનગર

- ૧ શેઠ ચાપશીભાઈ મુખલાલ ૨૫૧  
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચદ ૨૫૧  
૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપતિ અમરતબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧  
૪ શાહ ન્યાલચદ હરખચદ ૨૫૧  
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચદ ૨૫૧

## સુવધ

- ૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાન દી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી  
મહારાજના ઉપદેશથી સુવધ સ્થા જૈન સઘ જ્ઞાનભડારને લેટ ૨૫૧

## સજેલી

- ૧ શાહ હુણજી શુભાખચદભાઈ ૨૫૧  
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચદ દલીચદ ૨૫૧

## હારીજ

- ૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાશચદ્ર અમુલખભાઈ ૩૦૧  
૨ સ્વ જૈન ચદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

## હાટીના માળીયા

- ૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ ૨૫૦  
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે  
હા તેના નાનાજેન અ સૌ મણુલાજેન ભગવાનદાસ ગાંધી ૨૫૧

તા. ૧૫-૫-૬૦ મુધીના મેમ્બરોની સખ્યા

- ૧૧ આદ્ય મુરખીથી  
૨૦ મુરખીથી  
૬૩ સહાયક મેમ્બરો  
૫૪૯ લાઇફ મેમ્બર  
૬૪ બીજા કલાસના જુના મેમ્બરો

૭૦૭

આકરચ દ લાઇચ દ શેઠ  
મત્રી,

રાજકોટ તા ૧૬-૫-૬૦

\*

તા ૧૬-૫-૬૦થી તા ૩૧-૫-૬૦ મુધીમા નીચે મુજબ  
નવા મેમ્બરો નોંધાયા છે.

રૂ. ૫૦૦	કેઠારી પોપટલાલ ચત્રજીભાઈ	મુરેન્દ્રનગર
રૂ. ૩૫૧	સરસ્વતી પુસ્તક બંડાર	અમદાવાદ
રૂ. ૩૫૧	શેઠ જુરાલાલ કાળીદાસ	અમદાવાદ
રૂ. ૩૫૧	શેઠ મીયાચંદલ જુહારમલલ કટારીયા	રાવટી
રૂ. ૩૦૧	શ્રી મ્થા જૈન સઘ	મુરેન્દ્રનગર
રૂ. ૨૫૧	ડા. ધનજીભાઈ પુરપોતમદાસ	અમદાવાદ
રૂ. ૨૫૧	શાહ કાતીલાલ હીરાચંદ	સાણુદ
રૂ. ૨૫૧	શેઠ ગેરીલાલજી મુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા	અમદાવાદ

\*

મેમ્બર ફી.

ઓછામા ઓછા રૂ. ૫૦૦૦ આપી આદ્ય મુરખીપદ આપ દિપાવી શકો છે.  
ઓછામા ઓછા રૂ. ૩૦૦૦ આપી એક શાસ્ત્ર આપના નામથી છપાવી શકો છે.  
ઓછામા ઓછા રૂ. ૧૦૦૦ આપી મુરખીપદ મેળવી શકો છે.  
ઓછામા ઓછા રૂ. ૫૦૦ આપી સહાયક મેમ્બર બની શકો છે.

અને ઓછામા ઓછા રૂ. ૩૫૧ આપી લાઇફ મેમ્બર તરીકે દરેક લાઇ-બેન  
દાખલ થઈ શકે છે

ઉપરના દરેક મેમ્બરોને ૩૨ સૂત્રો તથા તેના તમામ ભાગો મળી લગભગ  
૭૦ ગ્રંથો જેની કિંમત લગભગ ૮૦૦ ઉપર થાય છે તે ભેટ તરીકે મળી શકે  
છે અને દરેક શાસ્ત્રમા તેમજુ નામ પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે

## સાદડી

- ૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનઝીયા ૨૫૧

## સાસવડે

- ૧ ચદનમલજી મુથાના ધર્મપત્નિ અ સૌ ૨ગુભાઈ મુથા તરફથી  
હા અમરચદજી મુથા ૨૫૧

## સુરત

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ ૨૫૧  
૨ શ્રીચુત કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧  
૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી સ્થા જૈન સઘ હા બાણુલાલ છોટાલાલ શાહ ૨૫૧

## સુરેન્દ્રનગર

- ૧ શેઠ આપશીભાઈ મુખલાલ ૨૫૧  
૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૨૫૧  
૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્નિ અમરતબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧  
૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ ૨૫૧  
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ ૨૫૧

## સુવધ

- ૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી  
મહારાજના ઉપદેશથી સુવધ સ્થા જૈન સઘ જ્ઞાનભડારને લેટ ૨૫૧

## સજેલી

- ૧ શાહ હુણાજી શુભાખચંદભાઈ ૨૫૧  
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ ૨૫૧

## હારીજ

- ૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઈ ૩૦૧  
૨ સ્વ જૈન ચંદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

## હાટીના માળીયા

- ૧ શેઠ ગોપાલજી ત્રીકાભાઈ ૨૫૦  
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે  
હા તેના નાનાજેન અ સૌ મળુલાજેન ભગવાનદાસ ગાધી ૨૫૧

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ, રાજકોટ

પચવર્ષિય યોજના અને તેનો હેતુ

ભવિષ્યના તમારા વાગ્દેવને ખાતર

ફક્ત પાચ વર્ષ માટે મહાયજ્ઞ બનો

સ્થાનકવાસી મમાજ માટે ધર્મના જે અવલમ્બન છે પહેલું શ્રમણવર્ગ અને બીજું આગમ બત્રીશી જ્યાં જ્યાં શ્રમણવર્ગની ગેરહાજરી હોય ત્યાં ત્યાં ધર્મ ટકાવવાનું અત્યારે પણ એકજ સાધન છે અને તે જૈન મિદ્ધાતો

પગ્દેશમાં વસ્તા તેમજ ગામડામાં રહેતા ભાઈઓને તેમજ ખડેનોને વીરવાણીનો લાભ ક્યારે મળી શકે તે જ્યાં તેઓ જે ભાષા જાણતા હોય તે ભાષામાં સૂત્રો લખાયેલ હોય

ભગવાન મહાવીરે કુંભાવેલ વાણીની શુદ્ધી ગણધરોએ કરી તે પ્રાકૃત ભાષામાં ગ્યેલા શાસ્ત્રો અત્યારની પ્રજા વાચી ન શકે એટલે લાભ તો કયાથી લઇ શકે ?

આ બધી મુશ્કેલીઓના નિવારણ માટે પૂ. આચાર્યશ્રી ધામીલાલજી મહારાજ મૂળ શાસ્ત્રોનું પ્રાકૃત, મસ્કૃત, હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાતર કરી એકજ પેઢી ઉપર એકજ પુસ્તકમાં સાથે ચારે ભાષામાં વીર પ્રભુના વચનોનો ખર્જનો હરકોઈ વ્યક્તિ સહેવાઈથી વાચીને તેનો અમૂલ્ય લાભ ઉઠાવી શકે તેવી રીતે તૈયાર કરી રહ્યા છે

આ સમિતિ દ્વારા પૂજ્યશ્રીના બનાવેલા લગભગ અઠાન શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થઈ ચૂક્યા છે હાલમાં ભગવતી સૂત્ર છપાય છે જેના લગભગ ૧૨ ભાગ થશે અને એક જ શાસ્ત્રનો ખર્જ લગભગ સવા લાખ રૂ. થશે બત્રીશ સૂત્રો અને તેના ભાગો મળીને લગભગ ૭૦ સી તેર બુકો પ્રસિદ્ધ થવાની ધારણા છે

રૂ. ૨૫૧૭ ભરનાર લાઈફ મેમ્બરને આ આખો સેટ જેની કિંમત લગભગ રૂ. ૭૦૦ થી રૂ. ૮૦૦ થાય છે તે ભેટ તરીકે આપવામાં આવે છે પરંતુ આવી રીતે રાજબરોજ તોટો પડતો રહે તે કયા સુધી ચલાવી શકાય ? અત્યાર સુધી



# તા ૧-૬-૬૦ સુધીમાં પ્રસિદ્ધ થયેલાં સૂત્રો

શાસ્ત્રોનો નં	શાસ્ત્રનું નામ	કિંમત
૧	ઉપાસકદશાગ (બીજી આવૃત્તિ) ખલાસ	૮-૮-૦
૨	દશવૈકલિક ૧ લો ભાગ	૧૦-૦-૦
	દશવૈકલિક ૨ નો ભાગ (છપાય છે	૭-૮-૦
૩	આચારાગ ૧ લો ભાગ	૧૨-૦-૦
	આચારાગ ૨ નો ,	૧૦-૦-૦
	આચારાગ ૩ નો ,	૧૦-૦-૦
૪	આવશનક	૭-૮-૦
૫ થી ૬	નિર્યાવલિકા	૧૧-૦-૦
૧૦	નદી સૂત્ર	૧૨-૦-૦
૧૧	કલ્પ સૂત્ર ૧ લો ભાગ	૨૫-૦-૦
	કલ્પ સૂત્ર ૨ નો ભાગ	૨૦-૦-૦
૧૨	અન્તકૃત	૮-૮-૦
૧૩	વિપાક	૧૫-૦-૦
૧૪	અનુતરોપપાતિક	૭-૮-૦
૧૫	દશાશ્રુત	૧૧-૦-૦
૧૬	ઔપપાતિક	૧૨-૦-૦
૧૭	ઉત્તરાધ્યપન સૂત્ર ૧ લો ભાગ	૧૫-૦-૦
	” ૨ નો ભાગ	૧૫-૦-૦
	” ૩ નો ભાગ (છપાય છે)	
	” ૪ થો “ (,,)	
૧૮	ભગવતી સૂત્ર ૧ લો ભાગ (છપાય છે)	

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ, રાજકોટ

પચવર્ષિય યોજના અને તેનો હેતુ

ભવિષ્યના તમારા વાગ્દેશરને ખાતર

કેકેત પાચ વર્ષ માટે મહાયક બને

સ્થાનકવાસી સમાજ માટે ધર્મના જે અવલબન છે પહેલુ શ્રમણવર્ગ અને બીજુ આગમ બત્રીશી જ્યા જ્યા શ્રમણવર્ગની ગેઠડાજી હોય ત્યા ત્યા ધર્મ ટકાવવાનુ અત્યારે પણ એકજ માધન છે અને તે જેન સિદ્ધાંતો

પગ્દેશમા વસ્તા તેમજ ગામડામા ગહેતા લાઇઓને તેમજ ખેડેનેને વીરવાણીનો લાભ ક્યારે મળી શકે કે જ્યારે તેઓ જે ભાષા બાણતા હોય તે ભાષામા સૂત્રો લખાયેલ હોય

લગવાન મહાવીરે ફરમાવેલ વાણીની શુ થણી ગણુધરોએ કરી તે પ્રાકૃત ભાષામા રચેલા શાસ્ત્રો અત્યારની પ્રજા વાચી ન શકે એટલે લાભ તો કયાથી લઇ શકે ?

આ બધી મુશ્કેલીઓના નિવારણ માટે પૂ આચાર્યશ્રી ધાસીલાલજી મહારાજ મૂળ શાસ્ત્રોનુ પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાતર કરી એકજ પેઇજ ઉપર એકજ પુસ્તકમા સાથે ચારે ભાષામા વીર પ્રભુના વચનોનો ખબનો હુન્કોઇ વ્યકિત સહેવાઈથી વાચીને તેનો અમૂલ્ય લાભ ઉઠાવી શકે તેવી રીતે તૈયાર કરી રહ્યા છે

આ સમિતિ ઠારા પૂજ્યશ્રીના બનાવેલા લગભગ અઠાગ શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થઈ ચુક્યા છે હાલમા લગવતી સૂત્ર છપાય છે જેના લગભગ ૧૨ ભાગ થશે અને એક જ શાસ્ત્રનો અર્થ લગભગ સવા લાખ રૂા થશે બત્રીશ સૂત્રો અને તેના ભાગો મળીને લગભગ ૭૦ સી તેર યુકો પ્રસિદ્ધ થવાની ધારણા છે

રૂા ૨૫૧૭ ભરનાર લાઇફ મેમ્બરને આ આજો સેટ જેની કિમત લગભગ રૂા ૭૦૦ થી રૂા ૮૦૦ થાય છે તે ભેટ તરીકે આપવામા આવે છે પરંતુ આવી રીતે રાજખરોજ તોટો પડતો રહે તે કયા સુધી ચલાવી શકાય ? અત્યાર સુધી

મેમ્બરોની સંખ્યા ૭૧૫ની થયેલ છે હાલમા મેમ્બરો થવા માટે વગર પ્રયત્ને નામો આવતા જાય છે જુનાઈ ૧૯૬૦મા મળનાર કાર્યવાહક કમિટી વખતે રૂ. ૫૦૧૫ મેમ્બર ફી કરવા માટે વાટાઘાટો ચાલે છે હાલમા કામ ચલાઉ રૂ. ૨૫૧૫ને બદલે મેમ્બર ફી રૂ. ૩૫૧૫ રાખવામા આવી છે

ગઈ જારલ સભાએ ઠરાવ કરીને પચવર્ષીય યોજના ઘડી કાઢી છે અને તેનો હેતુ અત્યારે શાસ્ત્રો લેટ તરીકે આપવામા જે ખોટ ખમવી પડે છે તે પુરી કરવાનો છે રૂ. ૨૫ થી વધુ ગમે તેટલી રકમ પાચ વર્ષ સુધી સમિતિને કોઈપણ વ્યક્તિ (મેમ્બર હોય ના હોય તે) લેટ આપે તેમ સમિતિએ અપીલ કરી છે સમિતિના પ્રમુખ શેઠ શાંતિલાલભાઈએ રૂ. ૧૦૦૦૦ એક હજાર પાચ વર્ષ સુધી આપવાનું બહેર કયું છે

અત્યાર સુધીમા રૂ. ૪૦૭૮૫ ની રકમ સમિતિને પહેલા વર્ષની લેટ તરીકે મળી પણ ગઈ છે આવી રીતે મદદ આપનારને શાસ્ત્રો લેટ મળવાના નથી તે વાત સમજી શકાય તેમ છે

લગ્ન પ્રસંગે, પૂત્ર જન્મ પ્રસંગે, દિક્ષા પ્રસંગે, વર્ષિતપ પ્રસંગે તેમજ થીજી શુભ પ્રસંગોએ થતા ખર્ચામા થોડો ટાપ સુકીને પણ આ યોજના અપનાવી લેવા સારા સમાજને અમો વિનંતિ કરીએ છીએ

અથાગ પરિશ્રમ વેઠીને સમાજના કલ્યાણ માટે જે સત આલુ અણમોહુ કાર્ય કરી રહ્યા છે અને જેને વ્યવસ્થિત રીતે પ્રમિદ્ધ કરીને ઘેર ઘેર આગમો પહોચાડવા જે સમિતિ કાર્યકરી રહી છે તેના હાથ મજબુત કરવા સમાજના સાધુ, સાધવી શ્રાવક-શ્રાવિકા એ દરેકની પવિત્ર ફરજ છે -એજ વિનંતિ

તા. ૧-૬-૬૦

રાજકોટ

સેવકો,

માનદ મત્રીઓ,



પચવર્ષીય ચોજનાની મંવત ૨૦૧૬ ની પહેલાં વર્ષની લેટ.

(તા ૩૧-૫-૬૦ અુધીના દાતાઓ તરફથી મળેલી ગકમો)

શ્રી	શેઠ શાંતિલાલ મગજાગમ	અમદાવાદ	૧૦૦૦
"	" બાબુલાલ નારણદાસ	ધોરાજી	૨૫૧
"	" ભાવમાર ભોગીલાલ છગનલાલ	અમદાવાદ	૨૫૧
"	" ઇશ્વરલાલ પુરૂષોત્તમદામ	અમદાવાદ	૨૫૧
"	" હરિલાલ અનોપચંદ	ખ ભાત	૨૫૦
"	" ગંગુભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૨૫૦
"	" મુલચંદ્ર જવાહીરલાલજી ખરડીયા	અમદાવાદ	૧૦૧
"	" ગુલાબચંદ લીલાધર ખાટવીયા	ખાખીનળીયા	૧૦૧
"	" મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	જામજોધપુર	૧૦૧
"	" શાહ ટેમચંદ માકચંદ	અમદાવાદ	૧૦૨
"	" હાથીભાઈ ચત્રભુજ જામનગરવાળા	અમદાવાદ	૭૫
"	" મહેતા ભાનુલાલ રૂગનાથ	ધ્રાક્ષ	૭૫
"	" ગાહ હરજીનદાસ કેશવજી	મુખઈ	૭૫
"	" જુઝાભાઈ વેલશીભાઈ	સુરેન્દ્રનગર	૭૫
"	" ગાહ હીનચંદ છગનલાલ હા ચીમનલાલ હીરાચંદ	માણુદ	૫૧
"	" મોતીલાલજી હીરાચંદ્રજી	નારાયણગામ	૫૧
"	" વકીલ મણીલાલ ડેશવલાલ	વડોદરા	૫૧
"	" શેઠ ત્રીલોચનદાસ મગજાગમ	ખ ભાત	૫૧
"	" ખાટવીયા અમીચંદ ગીરધરલાલ	બે ગલોર	૫૧
"	" સુમનલાલ ઝાળીદામભાઈ	કાનપુર	૫૧
"	" હરકીશનદાસ કૂલચંદભાઈ	કાનપુર	૫૧
"	" બાગમલજી રૂગનાથમલજી લણુમારી હા શેઠ નેનમલજી અમદાવાદ		૫૧
"	" ગીરધરલાલ મણીલાલ તરફથી		
	(સ્વ અ સો છબલભાઈના સ્મરણાર્થે)	ખારાધોડા	૫૧
"	" એક સફ્રમહંમદ હા શાહ રીઘભદાસ જયતિલાલ	અમદાવાદ	૫૧
"	" બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૫૧
"	" વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ	૫૧
"	" સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા ચંદલાલ ખેતશીભાઈ	વણી	૫૧
"	" શેઠ દોશી જીવરાજ લાલચંદ	સાણુદ	૫૧

૨૧	નર્મસિંહદાસ વખતચદે સઘવી	પ્રોગધા	૫૧
૨૨	ડો કસ્તુરચ દખાલાભાઈ શાહ હા રજનીકાંત કસ્તુરચ દ શાહ અમદાવાદ		૫૧
૨૩	શેઠ કસ્તુરચ દ હરજીવનદાસ હા ડો માણેકલાલ કસ્તુરચ દ માણુ દ		૫૧
૨૪	ખીમચ દ મણીલાલ	ખાગધોડા	૩૧
૨૫	કેશવલાલ ઓતમચ દ શાહ	ખારાધોડા	૩૧
૨૬	ભાઈલાલ ઉજમશી શાહ	અમદાવાદ	૩૧
૨૭	રતીલાલ પોપટલાલ મહેતાના પૂ માતુશ્રી		
	જેન ચચળજેનના તરફથી લેટ	વણી	૩૧
૨૮	અમૃતલાલ ઓઘડભાઈ	ખારાધોડા	૩૧
૨૯	મહેતા રણજીતલાલ મોતીલાલ (ઉદેપુરવાળા)	અમદાવાદ	૨૫
૩૦	કેશવલાલભાઈ	વીરમગામ	૨૫
૩૧	પ્રવિણાબેન લક્ષ્મણભાઈ	અમદાવાદ	૨૫
૩૨	પારેખ ભીખાલાલ નેમચ દ	સાણુ દ	૨૫

સમિતિ સર્વ દાતાઓનો આભાર માને છે

રાજકોટ

સાકરચ દ ભાઈચ દ શેઠ

તા ૧-૬-૧૯૬૦

મત્રી



શ્રી મુખામલજી સિંહમલજી નરસી  
કી તરફ સે સાર મેંટ ।

॥ શ્રી વીતરાગાય નમઃ ॥



જેનાચાર્ય-જૈનધર્મ-દિવાકર-પૂજ્યશ્રી-વાસીલાલજીમહારાજવિરચિતપા  
'મુન્દરવોધિ' ન્યાસ્યયા વ્યાસ્યયા સમલક્ષ્ણતમ્

॥ શ્રી-નિરયાવલિકાસૂત્રમ્ ॥

॥ અથ મઝ્જાલચરણમ્ ॥

( માલિની-ઝન્દઃ )

મુરમનુજમુનીન્દ્રૈર્વન્ધમાનાઽદ્વિપન્ન,

વિદિતસકલતત્ત્વ વોધિદ તીર્થનાથમ્ ।

કૃતમવજલનોંકારુપધર્મોપદેશ,

વિમલનયનદ ત વર્ધમાન પ્રણમ્ય ॥ ૧ ॥

---

શ્રી નિરયાવલિકાસૂત્ર કી મુન્દરવોધિની ટીકાકા હિન્દીમાપાનુવાદ  
“મઝ્જાલચરણ”

જિનકે ચરણકમલ, દેવ, મનુષ્ય ઓર મુનિવરોંસે વદિત હૈં ।  
જો સર્વ તત્વોંકે જ્ઞાતા ઓર યોગિકો દેને ચાલા હૈં । તથા સસાર-  
સાગરસે પાર હોનેકે લિયે નૌકાસ્વરૂપ શ્રુતચારિત્ર ધર્મકે ઉપદેશક  
હૈં । એજ જ્ઞાનરૂપી નેષ્ટ્રકે દાતા હૈં, ઓર ચતુર્વિધસચરૂપી તીર્થકે સ્વામી  
હૈં । એસે ત્રિલોકમેં પ્રસિદ્ધ (ચૌવીસવેં તીર્થકર) શ્રી વર્ધમાનસ્વામીકો  
નમસ્કાર કરકે ॥ ૧ ॥

---

શ્રી નિરયાવલિકા સૂત્રની મુન્દરવોધિની નામે ટીકાનો

ગુજરાતી અનુવાદ.

“મગલાચરણ.”

જેના ચરણ કમળ દેવ મનુષ્ય તથા મુનિવરોંસે વદિત છે, જે સર્વ તત્વના  
મજ્જનારા તથા બોધિવૃક્ષને આપવા વાળા છે, જે સસારસાગર તરી જવા માટે  
હોડી રૂપી શ્રુતચારિત્ર ધર્મના ઉપદેશક છે, જે જ્ઞાનરૂપી અમુના દેનાર છે તથા ચાર  
પ્રકારના સધરૂપી તીર્થના પ્રણ છે, એવા ત્રણ લોકમા વિખ્યાત (ચૌવીસમા તીર્થકર)  
શ્રી વર્ધમાન સ્વામીને નમસ્કાર કરીને, (૧)

सकलनिगमदक्ष ज्ञानचक्षुःसमेत,

कलितसकललब्धि पूर्वधार मुनीन्द्रम् ।

जिनवचनरहस्यद्योतक दीनबन्धु,

करण-चरणधार गौतम चाऽपि नत्वा ॥ २ ॥

(पृथ्वी छन्दः)

सगुप्तिसमिति समा विरतिमादधान सदा,

समावदखिलक्षम कलितमङ्गुवारिप्रकम् ।

मदोरमुखवस्त्रिकाविलसिताऽऽननेन्द गुरु,

प्रणम्य भवत्रारिधिष्ठवमपूर्वबोधमदम् ॥ ३ ॥

(अनुष्टुप् छन्दः)

जैनीं सरस्वती नत्वा लोकालोकप्रकाशिनीम् ।

निरयावलिकावृत्तिं कुर्वे सुन्दरबोधिनीम् ॥ ४ ॥

तथा, सब शास्त्रों के तत्व समझाने में दक्ष (चतुर), ज्ञानदृष्टि से तत्वातत्त्व का निर्णय करने वाले, सम्पूर्ण लब्धिवाले, चौदहपूर्व धारक, स्याद्वादरूप जिन-वचनके रहस्यको बताने वाले, षट्कायके रक्षक, और चरण-करणके धारी, मुनियोंमें प्रधान ऐसे श्री गौतम-स्वामीको शीश झुकाकर ॥ २ ॥

तथा समितिगुप्तिधारक, समदर्शी, विरतिमार्गमें चलने वाले, पृथिवीके समान सब परीपहोपसर्गोंको सहन करने वाले, निरतिचार चारित्रवाले, सम्यक् बोध के देने वाले, वायुकाय आदि जीवोंकी रक्षाके लिए डोरा सहित मुखवस्त्रिकासे जिनका मुखचन्द्र देदीप्यमान है, और जो ससारसागरमें तैरनेके लिए नौकाके समान हैं, ऐसे परमकृपालु गुरुदेवको वन्दना करके ॥ ३ ॥

तथा सर्व शास्त्रों के तत्व समझाववाभा चतुर, ज्ञानदृष्टि से तत्वातत्त्वने निर्णय करवावाणा, संपूर्ण लब्धीवाणा, ओह पूर्व धारक, स्याद्वाद रूपी जिन-वचनना रहस्यने बतावना, छकायनी रक्षा करनेवाला तथा अरुण करणना धारक, मुनियोंभा प्रधान जेवा श्री गौतम स्वामीने अस्तक नभावीने, (२) तथा समिति गुप्तिना धारण करतारा समदर्शी, विरतिमार्गभा विचरनाश, पृथ्वीनी पेठे तभाभा परीपहोला तथा उपसर्गोंने सहन करवावाणा, निरतिचार चारित्रवाणा, सब ई उपदेश आपवावाणा, वायुकाय आदि जीवोंनी रक्षाने आटे डोरा सहित मुखवस्त्रिका थी जेनु उपहारवि ह जोषी नहु छे तभा जे ससारसागर तरवा आटे ओह नाव समान छे जेवा परम कृपालु गुरुदेवन वन्दन करीने (३)

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे  
होत्था । रिद्धिस्थिमियसमिद्धे ॥ १ ॥

छाया-तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरम् आसीत् ।  
ऋद्धस्तिमितसमृद्धम् ॥ १ ॥

टीका-‘तेण कालेण’ इत्यादि-तस्मिन् काले=अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकरूपे  
तस्मिन् समये=कालविशेषरूपे हीयमानलभणे राजगृह नाम नगरम् आसीत् ।

तद्-(राजगृह)-उर्णनमित्यमाह-‘रिद्धिस्थिमियसमिद्धे’ इत्युपलक्षणम्,  
तेन ‘प्रमुदयजनजाणवण, उत्ताननयणपेक्खणिज्जे, पासाईए, दरिसणिज्जे,  
अभिरुवे, पडिरुवे,’ इत्येतेषामपि सङ्ग्रहः । छाया-ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्,  
प्रमुदितजनजानपदम्, उत्ताननयनप्रेक्षणीयम्, पासादीयम्, दर्शनीयम्, अभि-  
रूपम्, प्रतिरूपम् ।

“ऋद्ध”-इत्यादि-ऋद्ध=नभःस्पर्शिशुलप्रासादयुक्त ‘बहुजनसङ्कुलं च  
स्तिमित=स्वपरचक्रभयरहित, समृद्ध = हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्यादिपरिपूर्णमिति  
ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्, अत्र त्रिपदकर्मधारयः । ‘प्रमुदिते’-ति प्रमुदितजनजान-  
पदयुक्तम् । तत्रत्यास्तत्राऽऽगता देशान्तरीयाश्च जना हिरण्य-सुवर्ण-धनधान्य-

तथा लोकोलोकके स्वरूपको प्रकाशित करने वाली-जिनवाणीको  
नमस्कार करके मैं धासीलाल मुनि निरयावलिकामूत्र की ‘सुन्दरबोधिनी’  
नामक टीका की रचना करता हूँ ॥ ४ ॥

‘तेण कालेण’ इत्यादि । उस काल उस समय में अर्थात्-  
अवसर्पिणीके चौथे आरेके, उम्मी हीयमान रूप समयमें राजगृह नाम-  
का प्रसिद्ध नगर था । जिसमें नभःस्पर्शी ऊँचे-ऊँचे सुन्दर महल थे ।  
जहाँ स्व-पर चक्रका कोई भय नहीं था । और वह धन, धान्यादि  
ऋद्धियोंसे समृद्ध परिपूर्ण था । जो वहाँ के निवासियोंको तथा देश-

तथा लोकलोकना स्वरूपने प्रकाशित करवावाणी (जिन-वाणीने नमस्कार करी  
हुँ धासीलाल मुनि निरयावलिका मूत्रनी ‘सुन्दरबोधिनी’ नामनी टीकानी  
रचना करे छु (४)

तेण कालेण इत्यादि ते काल अने ते समयभा अर्थात् अवसर्पिणी(काण)ना आया  
आनाना हीयमान (उत्तरता) समयभा राजगृह नामे जेक अभ्यात नगर छत्तु के जेभा  
गगनमुणी आया आया सुन्दर महलये छत्ता जया स्व पर अकने पाय न होता  
तथा ते नगर धन धान्यादि ऋद्धिआयी परिपूर्ण समृद्धिवाणु छत्तु, जे त्याना रहे-  
वाशीआने तथा देश परदेशी आववावाणाने सोनु आदी रत्न वगेदना वेपाए-



सकलनिगमदक्ष ज्ञानचक्षुःसमेत,

कलितसकललब्धि पूर्वधार मुनीन्द्रम् ।

जिनवचनरहस्यद्योतक दीनबन्धुं,

करण-वरणधार गौतम चाऽपि नत्वा ॥ २ ॥

( पृथ्वी छन्दः )

सगुप्तिसमिति समा विरतिमादधान सदा,

समावदस्विलसम कलितमञ्जुचारित्रिकम् ।

सदोरमुखवस्त्रिकाविलसिताऽऽननेन्दु गुरु,

प्रणम्य भववारिधिपुत्रमपूर्वबोधमदम् ॥ ३ ॥

( अनुष्टुप् छन्दः )

जैनीं सरस्वती नत्वा लोकांलोकप्रकाशिनीम् ।

निरयावलिकावृत्तिं कुर्वे सुन्दरबोधिनीम् ॥ ४ ॥

तथा सब शास्त्रांके तत्त्व समझाने में दक्ष (चतुर), ज्ञानदृष्टि से तत्त्वातत्त्व का निर्णय करने वाले, सम्पूर्ण लब्धिवाले, चौदहपूर्व धारक, स्याद्वादरूप जिन-वचनके रहस्यको बताने वाले, बद्धकायके रक्षक, और वरण-करणके धारी, मुनियोंमें प्रधान ऐसे श्री गौतम स्वामीको शीश झुकाकर ॥ २ ॥

तथा समितिगुप्तिधारक, समदर्शी, विरतिमार्गमें चलने वाले, पृथिवीके समान सभ परीषदोपसर्गोंको सहन करने वाले, निरतिचार चारित्रवाले, सम्यक् बोध के देने वाले, वायुकाय आदि जीवोंकी रक्षाके लिए डोरा सहित मुखवस्त्रिकासे जिनका मुखचन्द्र देदीप्यमान है, और जो ससारसागरमें तैरनेके लिए नौकाके समान हैं, ऐसे परमरूपालु गुरुदेवको वन्दना करके ॥ ३ ॥

तथा सर्व शास्त्रों तत्त्व समझववाभा चतुर, ज्ञानदृष्टि तरवातरवने निर्णय करवावाणा, सम्पूर्ण लब्धीवाणा, बौद्ध पूर्व धारक, स्याद्वाद रूपी जिन-वचनना रहस्यने जतापनार, छत्रायनी रक्षा करनार तथा अरण्य करणना धारक, मुनियोंभा प्रधान जेवा श्री गौतम स्वामीने अस्तक नभावीने (२) तथा समिति गुप्तिना धारण करतारा समदर्शी, विरतिमार्गभा विचरनारा, पृथ्वीनी पेटे तभाभ परीषदो तथा उपसर्गोने सहन करवावाण, निरतिचार चारित्रवाणा, सम्यक् उपदेश आपवावाणा, वायुकम आदि जीवोनी रक्षाने भाटे डोरा सहित मुखवस्त्रिक थी जेनुं उपधारि ह शास्त्री नहु छे तथा जे समानसागर तरवा भाटे जेठ नाव समान छे जेवा परम रूपालु गुरुदेवन वन्दन करीने (३)

‘चिराईए, पुव्वपुरिसपन्नत्ते, सच्छत्ते, सज्जए, सपटे, सपडागे, कय-  
वियदीए, लाइयोहोइयमट्टिए’ इति, । छाया-चिरादिरुम्, पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तम्,  
सच्छत्रम्, सवजम्, सघण्टरुम्, सपतारुम्, कृतवितर्दिरुम्, लिप्तोपलिप्तमद्वितम्, इति ।

‘चिरादिरुम्’ इति-चिरः=उडुकोलिकः आदिः=निवेशो यस्य तत् तथा,  
‘पूर्वपुरुषे’ति पूर्वपुरुषैः=प्राचीनपुमिः प्रज्ञप्तम्=उपादेयतया प्रतिबोधितम्, सच्छत्रम्,  
सवजम्, सघण्टम्, सपतारुम्, एतत्सर्वं स्पष्टम्, कृतवितर्दिरुम्=रचितवेदिरुम्,  
‘लाइये’त्यादि लाइय=गोमयमृत्तिकादिना भूस्मृणुपलेपनम् च उडोइय=भित्ति-  
समुदायस्य सेटिकादिभिः समष्टीकरणं च, लाइयोहोइये, ताभ्या महित=युक्त  
प्रशस्तम् परिष्कृतमिति यावत्, एवम्भूत चैत्यमासीत् ।

तत्र व्यन्तरायतनभूमौ अशोरुवरपादप.=अशोकराख्यो महावृक्षोऽस्ति,  
तस्याऽधस्तटे ‘पृथिवीशिलापट्टक’ पट्टक इव पट्टकः, आसनरूपेण परिणता  
पृथिवीशिलेन्यर्थः, अभवत्=आसीत्, तस्य शास्त्रान्तरे वर्णनमित्यमाह-

“विक्खभायामसुप्पमाणे, आङ्गण-रूय बूर नवणीय तूलफासे, पासाईए,  
दरिमणिज्जे, अभिरुवे, पडिरुवे” इति । छाया-विष्कम्भायामसुप्पमाणः, अजिनक  
रूत-बूर नवनीन तूलस्पर्शः, प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूपः, इति ।

‘विष्कम्भे’-ति-विस्तारदैर्घ्याभ्यां समुचितप्रमाणोपेतः ‘अजिनके’  
ति-अजिनमेवाऽजिनक=मृगचर्म, रूत=कार्पास, बूर=स्निग्धवनस्पतिविशेषः,  
नवनीत=दग्धविशारविशेषः, तूल=अर्क-शालमलीवृक्षजातम्, तद्वत्स्पर्शः कोमल-

व्यन्तरायतनं या । उसका वर्णन अन्यत्र (दूसरे शास्त्रोंमें) इस प्रकार है-

पूर्व पुरुषोंके कथनानुसार वह प्राचीन कालसे है । उसमें छत्र,  
ध्वजा, घण्टा, पताका आदि लगे हुए थे और वेदिकाएँ बनी हुई थी ।  
उसकी भूमि गोमय और मिट्टी से लिपी हुई थी । भीतें खड़ी चूना  
आदि से धवलित थी ।

वहाँ उसी स्थान पर एक बड़ा अशोक वृक्ष था । उसके नीचे मृग-  
चर्म, कपास बूर (वनस्पति), मक्खन और आकड़े (अर्क) की रुई (तूल)

इतु जेतु वर्णन अन्यत्र (गीता शास्त्रोमा) आवी दीते छे —

अगाठिना होडाना कडेवा प्रभाण्ण ते णुना वणतथी छे तेमा छत्र, धण,  
घण्टा, पताका आदि लागेला हुता वेदिको जनवी हुती तेनी भूमि छाणु अने  
भाटीथी लोपिही हुती अने बीतो णडी-सुता वगेरिथी धवलित हुती

त्या जे जग्गा उपर जेक मोट्टु अशोक वृक्ष हुतु तेनी नीचे मृगचर्म,  
कपास, बूर (वनस्पति) भाणणु अने आकडाना इ जेतु सुवाणु अने उचित

बस्त्रादीना समर्थलभ्यतया विविधवाणीज्येन स्वस्वाभीष्टाना पूर्णतया यथानीति  
 लाभेन च प्रमुदिता भवन्ति । 'उत्ताने'—ति उत्ताननयनप्रेक्षणीयम्=सौन्दर्या  
 तिशयादुन्मीलितनिमेषपातवर्जिताक्षिभिर्दर्शनीयम् 'प्रासादीयम्'=द्रष्टृणा चित्तप्रासा-  
 दजनकत्वात्प्रमोदजनकम्, दर्शनीयम् = दृष्टिसुखदत्त्वेन पुनः पुनर्दर्शनयोग्यम् ।  
 अभिरूपम्=मनोज्ञाकृतिकम्, प्रतिरूपम्=अपूर्वचमत्कारकशिल्पकला-वलितत्वेना  
 द्वितीयरूपम् ॥ १ ॥

मूलम्—तत्थ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणशिलए (नाम)  
 चेइए (होत्था) वण्णओ । असोगवरपायवे पुढवीसिलापट्टए  
 (होत्था) ॥ २ ॥

छाया—तत्र उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गुणशिलक (नाम) चैत्यम् (आसीत्)  
 वर्णकः । अशोकवरपादयः पृथिवीशिलापट्टकः (आसीत्) ॥ २ ॥

टीका—'तत्थ' इत्यादि—तत्र=राजगृहे, उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गुणशिलक  
 (नाम) चैत्यम्=व्यन्तरायतनमासीत्, कीदृश चैत्यमिति जिज्ञासाया शास्त्रान्तरे  
 तद्वर्णनमेवमाह—

देशान्तरसे आनेवालीको स्वर्ण चादी रत्नादिके व्यापारसे लाभान्वित  
 करनेके कारण आनन्द जनक था । जिसका अतिशय सौन्दर्य टक-  
 टकी लगाकर अनिमेष दृष्टिसे देखनेके योग्य होनेसे वह 'प्रेक्षणीय'  
 था । जो दर्शकोंका मन प्रफुल्लित कर देनेके कारण 'प्रासादीय' प्रमोद  
 जनक था । नेत्रोंको देखनेमे बारम्बार सुख देनेवाला होनेके कारण  
 'दर्शनीय' था । सुन्दर आकृतिका होने के कारण 'अभिरूप' था ।  
 अपूर्व-अपूर्व चमत्कार उत्पन्न करने वाली शिल्पकलाओं से युक्त होने  
 के कारण प्रतिरूप अर्थात् अनुपम था ॥ १ ॥

'तत्थ' इत्यादि । उस राजगृहके ईशान कोणमें गुणशिलक नामका

राजगृहस्थ लावकारक होवाथा आनन्दजनक હતુ, જેનું અતિશય સૌદર્ય આનંદેષ  
 દ્રષ્ટથી જોવા લાયક હોવાથી તે 'પ્રેક્ષણીય' હતુ, જે જોનારના મનને પ્રફુલ્લિત કર-  
 વાના કારણે 'પ્રાસાદીય' પ્રમોદજનક હતુ, આજોથી જોવામા વાર વાર મુખ આપનાર  
 હોવાથી 'દર્શનીય' હતુ, સુદર આકૃતિવાળુ હોવાથી 'અભિરૂપ' હતુ નવીન નવીન  
 આશ્ચર્ય ઉપજાવે એવી શિ-પકલાઓવાળુ હોવાથી પ્રતિરૂપ અર્થાત્ અનુપમ હતુ ॥ १ ॥

'તત્થ' ઇત્યાદિ તે રાજગૃહના ઈશાનકોણમા ગુણશિલક નામનું વ્યન્તરાયતન

सपत्ने, ओयसी, तेयसी, वयसी, जससी, जियकोहमाणमायालोहे, जीवियोंसा-  
मरणभयविषममुक्ते, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, करणचरणप्पहाणे, निगहप्पहाणे,  
घोरबभचेरमासी, उच्छदसरीरे, चोहसपुब्बी, चउनाणोवगए' इति । अस्य च्छाया-  
" कुलसम्पन्नः, वलसम्पन्नः, विनयसम्पन्नः, लाघवसम्पन्नः, ओजस्वी, तेजस्वी,  
वचस्वी, यशस्वी, जितक्रोधमानमायालोभः, जीविताशामरणभयविषममुक्तः, तपः  
प्रधानः, गुणप्रधानः, करणचरणप्रधानः, निग्रहप्रधानः, घोरब्रह्मचर्यमासी, उच्छ-  
दशरीरः, चतुर्दशपूर्वा, चतुर्ज्ञानोपगतः " । इति,

'कुले'ति-कुल=पैतृक पक्षस्तत्सम्पन्नः, उत्तमपैतृरुपक्षयुक्तः, 'बले'  
ति-बलेन=सहननसमुत्थेन पराक्रमेण युक्तः, वज्र-रूपम-नाराच सहननधारीत्यर्थः,  
'विनये'ति-विनयति=नाशयति अष्टप्रकारक कर्म यः स विनयः=अभ्युत्थानादि-  
शुरुसेवालक्षणस्तत्सम्पन्नः । 'लाघवे'ति-लाघव द्रव्यतः स्वल्पोपधित्वम्,  
भावतो गौरवत्रयनिवारण, तत्सम्पन्नः । 'ओजस्वी'ति-ओजः=सकलेन्द्रियाणां  
पाटन तपःप्रभृतिप्रभावात् समुत्थतेजो वा, तद्वान्, 'तेजस्वी'ति-तेजः=अन्त-  
र्बहिर्देदीप्यमानत्वम् तेजोलेख्यादि वा, तद्वान्, 'वचस्वी'ति-वचः=आदेय वचनं  
सकलप्राणिगणशितसपादक निरवग्रवचन, तद्वान्, 'यशस्वी'ति-यशः=तपः

(शुद्ध) होनेसे कुलसपन्न थे । वलसपन्न अर्थात् सहनन से उत्पन्न पराक्रमसे युक्त थे । वज्ररूपमनाराचसहननके धारी थे । जो आठ कर्मोंका नाश करे उसको विनय कहते हैं, वह अभ्युत्थानादि शुरु-  
सेवा स्वरूप है, उससे युक्त थे । लाघवसपन्न थे अर्थात् द्रव्यसे अल्प उपधि वाले थे और भावसे गौरव-(गारव)-त्रय रहित थे । इन्द्रि-  
योंके सौन्दर्य और तप आदि के प्रभावसे ओजस्वी-प्रतिभाशाली थे । अन्तर 'आत्मप्रभाव' और बहार 'शरीर प्रभाव' से देदीप्यमान होने के कारण तेजस्वी थे । सष प्राणियोंके हितकारक और निर-  
वग्र (निर्दोष) वचन युक्त होनेसे आदेय (ग्राह्य) वचन वाले थे ।

कुलसपन्न होता, वलसपन्न होता, अर्थात् सहननशी उत्पन्न यथेता पराक्रमवाणा होता  
जो आठ कर्मोंका नाश करे तेने विनय कहे छे, ते अभ्युत्थानादि शुरुसेवाना लक्षण  
युक्त विनयसपन्न होता, लाघवसपन्न होता अर्थात् द्रव्यशी थोडी उपाधिवाणा होता  
अने भावशी त्रय गौरवशी रहित होता इन्द्रियोना सौंदर्य थी तथा तप वगेरेना प्रभा  
वशी प्रतिभाशाली होता अतएव आत्मप्रभाव अने अकार शरीरप्रभावशी देदीप्यमान  
होवाना कारण तेजस्वी होता सर्वे प्राणीओना कल्याणकारक तथा निर्दोष वचन युक्त  
होवाशी आदेय (ग्राह्य) वचनवाणा होता तप तथा सयमनी आराधना करवाशी

સ્પર્શઃ, इत्यर्थः, 'मासादीय' इत्यादिष्वाना व्याख्या पूर्वोक्तरीत्याऽवगन्तव्या ।  
एवम्भूतः पृथिवीशिलापट्टक आसीत् ॥ २ ॥

મૂલમ્—તેણં કાલેણ તેણં સમણં સમણસ્સ ભગવઓ  
મહાવીરસ્સ અતેવાસી અજ્જસુહમ્મે ણામં અણગારે જાહસંપણ્ને  
જહા કેસી જાવ પંચહિં અણગારસણ્હિં સદ્ધિં સંપરિવુઢે પુઠ્ઠા-  
ણુપુઠ્ઠિં ચરમાણે (ગામાણુગામ દુહજ્જમાણે) જેણેવ રાયગિહે  
જાવ અહાપડિરૂવં ઓગ્ગહં ઓગિણિહત્તા સંજમેણ જાવ વિહરહ્ ।  
પરિસા ણિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ । પરિસા પડિગયા ॥ ૩ ॥

છાયા—તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે શ્રમણસ્ય ભગવતો મહાવીરસ્યા  
અંતેવાસી આર્યસુધર્મા નામાઽનગારો જાતિસમ્પન્નો યથા કેશી, યાવત્ પદ્મભિર-  
નગારશતૈઃ માર્દે સપરિવૃત્ત પૂર્વાનુપૂર્વ્યા ચરન્ (ગ્રામાનુગ્રામ દ્રવન્) યત્રૈવ રાજ  
શુદ્ધ નગર યાવત્ યથાપ્રતિરૂપમવગ્રહમવગૃહ્ય સયમેન યાવદ્ વિહરતિ । પરિષ-  
ત્તિર્ગતા । ધર્મેઃ કથિતઃ । પરિપ્ત પ્રતિગતા ॥ ૩ ॥

ટીકા—‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि—तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमण-  
स्य भगवतो महावीरस्य अन्तेवासी=शिष्यः, आर्यसुधर्मा (स्वामी) नामाऽनगारः  
विहरतीत्यन्वयः । अथ तद्वर्णनमाह—जातिसम्पन्न=सुविशुद्धमातृवशद्युक्तः, ‘यथा-  
केशी’ ति-केशिनामा श्रमणो गणधरो यथाऽऽसीदित्यर्थः, अत्र यावच्छब्देनैव  
केशिविशेषणानि सगृह्यन्ते—तथाहि—‘कुलसपत्ने, बलसपत्ने, विणयसपत्ने, लाघव

के समान स्पर्शधाला, उचित प्रमाण से लम्बा चौड़ा आसन के आकार-  
सा बना हुआ पृथ्वीशिलापट्ट था, जो दर्शनीय अभिरूप प्रतिरूप था ॥२॥

‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि । उस काल उस समय में श्रमण  
भगवान् महावीर स्वामीके अन्तेवामी (शिष्य) श्री आर्यसुधर्मास्वामी  
विचरते थे । उनका वर्णन केशी श्रमणके समान इस प्रकार है—

માતાકા વશ વિશુદ્ધ હોનેસે જાતિસપ્પન્ન થે । પૈતૃક પક્ષ નિર્મલ

પ્રમાણની લગાઈ પહોળાઈ વાણ આસનના આકાર જેવું પૃથ્વીશિલાપટ્ટ હતું જે દર્શ-  
નીય અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતું (૨)

‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि ते काल અને તે સમયમાં અમણ ભગવાન્ મહાવીર  
સ્વામીના અન્તેવાસી શ્રી આર્યસુધર્મા સ્વામી વિચારી રહ્યા હતા તેમનું વર્ણન કેશી  
શ્રમણ સમાન આ પ્રકાર છે —

માતાતુ કુળ વિશુદ્ધ હોવાથી જાતિસપ્પન્ન હતા, પિતાનો પક્ષ શુદ્ધ હોવાથી

संपन्ने, ओयसी, तेयसी, वयसी, जससी, जियकोइमाणमायालोहे, जीवियासां  
मरणभयविषमृक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, करणचरणप्पहाणे, निर्गहप्पहाणे,  
घोरबभचेरगामी, उच्छृङ्खलसरीरे, चोइसपुब्बी, चउनाणोवगण' इति । अस्य चञ्जया-  
"कुलसम्पन्नः, बलसम्पन्नः, विनयसम्पन्नः, लाघवसम्पन्नः, ओजस्वी, तेजस्वी,  
वचस्वी, यशस्वी, जितक्रोधमानमायालोभः, जीविताशामरणभयविषमृक्तः, तपः  
प्रधानः, गुणप्रधानः, करणचरणप्रधानः, निग्रहप्रधानः, घोरब्रह्मचर्यवासी, उच्छृ-  
ङ्खलसरीरः, चतुर्दशपूर्वी, चतुर्ज्ञानोपगतः" । इति,

'कुले'ति-कुल=पैतृक' पक्षस्तत्सम्पन्नः, उत्तमपैतृकपक्षयुक्तः, 'बले'  
ति-बलेन=सहननसमुत्थेन पराक्रमेण युक्तः, वज्र-रूपम-नाराच सहननधारीत्यर्थः,  
'विनये'ति-विनयति=नाशयति अष्टमकारक कर्म यः स विनयः=अभ्युत्थानादि-  
गुरुसेवालक्षणस्तत्सम्पन्नः । 'लाघवे' ति-लाघवं द्रव्यतः स्वरूपोपमित्वम्,  
भावतो गौरवत्रयनिवारण, तत्सम्पन्नः । 'ओजस्वी'ति-ओजः=सकलेन्द्रियाणां  
पाटा तपःप्रभृतिप्रभावात् समुत्थतेजो वा, तद्वान्, 'तेजस्वी'ति-तेजः=अन्त-  
र्बहिर्देदीप्यमानत्वम् तेजोलेखादि वा, तद्वान्, 'वचस्वी'ति-वचः=आदेयं वचनं  
सकलप्राणिगणशितसपादक निरवयवचन, तद्वान्, 'यशस्वी' ति-यशः=तपः

(शुद्ध) होनेसे कुलसंपन्न थे । बलसंपन्न अर्थात् सहनन से उत्तम  
पराक्रमसे युक्त थे । वज्ररूपमनाराचसहननके धारी थे । जो आठ  
कर्माँका नाश करे उसको विनय कहते हैं, वह अभ्युत्थानादि गुरु-  
सेवा स्वरूप है, उससे युक्त थे । लाघवसंपन्न थे अर्थात् द्रव्यसे अल्प  
उपधि वाले थे और भावसे गौरव-(गारव)-द्रव्य रहित थे । इन्द्रि-  
योंके सौन्दर्य और तप आदि के प्रभावसे ओजस्वी-प्रतिभाशाली थे ।  
अन्तर 'आत्मप्रभाव' और वहार 'शरीर प्रभाव' से देदीप्यमान  
होने के कारण तेजस्वी थे । सब प्राणियोंके हितकारक और निर-  
वय (निर्दोष) वचन युक्त होनेसे आदेय (ग्राह्य) वचन वाले थे ।

कुलसंपन्न होता, बलसंपन्न होता, अर्थात् सहननशील उत्पन्न भयेला पराक्रमवाणा होता  
जो आठ कर्मानों का नाश करे तेने विनय कहे छे, ते अभ्युत्थानादि गुरुसेवाना लक्षण  
युक्त विनयसंपन्न होता, लाघवसंपन्न होता अर्थात् द्रव्यशीथोडी विराधिवाणा होता  
अने भावशीथ गौरवशीथ रहित होता इन्द्रियोना सौंदर्यशीथ तथा तप वजोरेना प्रभा  
वशी प्रतिभाशाली होता अन्तर आत्मप्रभाव अने अष्टांश शरीरप्रभावशी देदीप्यमान  
होवाणा कारणे तेजस्वी होता सर्वे प्राणीओना कल्याणकारक तथा निर्दोष वचन युक्त  
होवाशी आदेय (ग्राह्य) वचनवाणा होता तप तथा सधर्मनी आराधना करवाशी

सयमाराधनरूपातिस्तद्वान्, 'जिते'—स्यादि—उदयावलिकामविष्टक्रोधादीनां वि-  
जयो=विफलीकरण, तद्वान्, 'जीविते'—स्यादि—जीवित=प्राणधारण तस्यांश्चा,  
मरण=मृत्युस्तस्माद्भय=त्रासः, ताभ्या विप्रमुक्तः=वर्जितः, 'तपःप्रधान' इति—  
तपति=दहति ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्माणि इति तपः=चतुर्थ-पञ्चा-ऽष्टमभक्ता-  
दिलक्षण तत्प्रधानः शेषमुनिजनापेक्षया विविधप्रकारक-तपोयुक्तः पारणादौ ना  
नाविधाभिग्रहयुक्तः । 'गुणप्रधान' इति-गुण' = ज्ञानादिरत्नत्रय क्षान्त्यादिर्वा  
नत्प्रधानः, उक्तञ्च—

“परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता ।

विद्या विनोदोऽनुदिन न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववता भवन्ति ॥१॥” इति ॥

तप और सयमके आराधनसे प्रसिद्धि प्राप्ति होने के कारण यशस्वी  
थे । उदयावलिकामें आनेवाले क्रोध आदिको निष्फल करनेके कारण  
कषायोंके विजेता थे । जीनेकी आशा और मृत्युके भयसे रहित थे ।  
अन्य मुनियोंकी अपेक्षा चतुर्थ भक्त आदि तप अधिक करनेसे, और  
पारणा आदिमें अनेक प्रकारके कठिन अभिग्रह करनेसे, 'तपःप्रधान'  
थे, सम्यग् ज्ञान आदि रत्नत्रय, और क्षान्ति आदि दसविध यति-  
धर्मसे युक्त होनेके कारण 'गुणप्रधान' थे । कहा भी है:-

“परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता ।

विद्या विनोदोऽनुदिने न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववता भवन्ति ॥” इति ॥

अर्थात्—परोपकारमें आनन्द मानना, निःस्पृहता रखना, विनय,  
सत्य, प्रशान्त भाव, विद्या विनोद, मध्यस्थ भाव और दीनताका त्याग,  
ये गुण महापुरुषोंमें होते हैं ॥

प्रसिद्धिप्राप्त होवाने कारणे यशस्वी होता, उदयावलिकामें क्रोध आदि  
आववा वाणा कषादिने एतत्वाथी कषायोना विजेता होता एतवान् आशा तथा  
मृत्युना भय रहित होता

धीमा मुनिज्योनी अपेक्षाये चतुर्थ लक्षण (उपवास) आदि तप णहु करवाधी  
तथा पारणा आदिमा अनेक कठिन आलेख्य करवाधी 'तपप्रधान' होता

सम्यग् ज्ञान आदि रत्नत्रय तथा शान्ति (क्षमा) आदि दशविध यतिधर्मधी  
युक्त होवाधी 'गुणप्रधान' होता कह्य पद्य छे छे—

“परोपकारैकरतिर्निरीहता, विनीतता सत्यमनुत्थचित्तता ।

विद्या विनोदोऽनुदिन न दीनता, गुणा इमे सत्त्ववता भवन्ति ॥” इति ॥

अर्थात्—परोपकारमा आनन्द मानना, निःस्पृहता रखनी, विनय, सत्य प्रशान्त

‘करणे’ति-करणसप्ततिः, चरणसप्ततिः, तत्प्रधानः, ‘निग्रहप्रधान’ इति इन्द्रियनोऽन्द्रियनिरोधकरणेन, स्वात्मनोऽपूर्य्यपरिस्फोटन, तत्प्रधानः, ‘घोर-ब्रह्मे’-त्यादि-ब्रह्म=कामपरिपेयणत्यागस्तत्र चरण ब्रह्मचर्य, घोर च तद् ब्रह्मचर्य घोरब्रह्मचर्यम् अल्पसत्त्वेन दुरुनुष्ठेय, तत्र वस्तु शीलमस्येति घोरब्रह्मचर्यवासी । ‘उच्छृङ्खलशरीर’ इति-उच्छृङ्खलमुज्जितमिव मन्कारपरित्यागाच्छरीर येन स उच्छृङ्खलशरीरः, सर्वथा शरीरमस्कारवर्जितः । ‘चतुर्दशपूर्वी’=चतुर्दशपूर्वधारी. चतुर्ज्ञानोपगतः=केवलवर्जितमत्यादिचतुर्ज्ञानवान एतादृशकेशिभ्रमणगणपरसदृशः पञ्चमगणपरः श्रीसुधर्मस्वामी पञ्चाभिरनगारणतैः पञ्चशतसंख्यसमुनिभिः सार्द्धं=सह सपरिवृतः = पञ्चशतमुनिपरिवारयुक्तः, ‘पूर्णानुपूर्व्या’ - तीर्थं करोक्तपरम्परया चरन्=विहरन्, (‘ग्रामानुग्रामम्’ एकस्मात् ग्रामात् ग्रामान्तरं द्रवन्=गच्छन् यान-वाहनादि विना पदविहारेण ग्रामान्तरमपरित्यजन्, अनेनाऽप्रतिबद्ध-विहारिता सूचिता) ‘जेणेव’ इति-यस्मिन्नेव क्षेत्रविभागे राजगृहनामक नगरमस्ति गुणशिलक नाम चैत्यं च तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति, उपागत्य

तथा करण चरणके धारी थे, इन्द्रिय नोऽन्द्रिय (मन) के दमन करने से आत्माका अपूर्व वीर्य स्फोरन करनेके कारण ‘निग्रहप्रधान’ थे । अल्पसत्त्ववालों से दुश्चरणीय ब्रह्मचर्यके गारक होनेसे ‘घोर-ब्रह्मचारी’ थे । शृङ्गारके लिए सर्वथा शरीरसस्काररहित होनेके कारण ‘उच्छृङ्खलशरीर’ (शरीरममत्वरहित) थे । तथा चतुर्दश पूर्व और चार ज्ञानके धारी थे । इस प्रकार केजी भ्रमण गणपर के समान गुणके धारण करनेवाले चार ज्ञान और चौदह पूर्वके धारी पंचम गणधर श्री-सुधर्मा स्वामी पाँच सौ मुनियोंके परिवार सहित तीर्थं करोकी मर्यादाका पालन करते हुए और ग्रामानुग्राम विचरते हुए, जहाँ राजगृह

भाव, विद्या विनोद, अर्थस्थभाव अने दीनताने त्याग अने शुश्रूषा महापुरुषोभा होय ते

तथा तेजो करण्य अरुणना धान्य उरनावाणा जाता, धीन्द्रियेन तत्रा नोऽन्द्रिय (मन) ने दमन करवाथी आत्माना अपूर्व वीर्य प्रगट करवाना कारणे ‘निग्रहप्रधान’ जाता अल्पसत्त्ववाणावी मुग्धवीजे पणाय जेवा प्रह्लादचर्यने धारण करवाथी ‘घोर प्रह्लादचारी’ जाता शृङ्गार भटे शरीरने सर्वथा मन्काररहित राखना होवाथी उच्छृङ्खलशरीर (शरीरममत्वरहित) जाता

“तथा चतुर्दशपूर्व अने चार ज्ञानना धारी जाता अने प्रभावे देशी भ्रमण गणधरणी समान शुषने धारण करवावाणा चार ज्ञान अने चौदह पूर्वना धारी गय । गणधर सुधर्मा स्वामी पायसो मुनिजोना परिवार साथे तीर्थं करो नी मर्यादानु पालन करता यका अने ग्रामानुग्राम विचरता यका न्या राजगृह नगरे, न्या शुश्रूषा



तस्य 'जम्बू' इति नाम कृतम्, स पञ्चमगणधरसुधर्मस्वामिनिकटे धर्मश्रवणात्  
प्रतिपन्नशीलसम्यक्त्वोऽपि पित्रोराग्रद्वशादद्यानाभिभ्यश्रेष्ठिनामष्टौ कन्या, परिणीत  
वान्, किन्तु कन्यानां हावभावादिभिर्न व्यामोहितः, अतः—

“सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्या, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।

ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्री नदीषु कथं ब्रुवेत् ॥ १ ॥” इति ॥

ततो रात्रौ ताः प्रतिबोधयन् चौर्यार्थमागतं चतुःशतनयनवति-तस्कर  
परिवृत 'प्रभव'-नामानं तस्कराधिपतिं प्राबोधयत्, ततः प्रातरेव पञ्चशततस्कर

एकः क्रद्धिशाली देवने उनकी कुक्षिमे जन्म लिया, माताने स्वप्नमें  
जम्बू वृक्षको देखा इस लिए उनका नाम जम्बू रखा था। उस जम्बू  
कुमारने पञ्चम गणधर श्री सुधर्मास्वामी के पास धर्म सुनकर सम्य  
क्त्व और शीलान्त धारण किया। पश्चात् सम्यक्त्व और शीलव्रत  
धारी होकर भी मातापिताके आग्रहसे आठ इन्ध सेठोंकी आठ  
कन्याओंके साथ विवाह किया, फिरभी ये कन्याओंके हाव - भाव  
आदिमे मोहित नहीं हुए। कहा भी है,—

“सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्या, भवाब्धिस्तीर्यते सुखम् ।

ये दधानो मुनिर्जम्बूः, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुवेत् ॥ १ ॥ इति”

अर्थात्-सम्यक्त्व और शीलरूप तुम्बोके द्वारा भवसमुद्र सुखसे  
तैरा जाता है। उन्ही सम्यक्त्व और शीलको धारण करने वाले जम्बू  
अनगार स्त्रीरूप नदियों में कैसे डूब सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं ॥१॥

विवाहके बाद रात्रिमे उन आठो स्त्रियोंको प्रतिबोध देते हुए

तेष्वीनि दूजे न न स्त्रीषां भतामे भवेनामा न्यू वृक्षने जेयु तेथी तेतु नाम  
न्यू पाठयु त्तु ते न्यू कुमारे पञ्चम गणधर श्री सुधर्मा स्वामीनी पास धर्मतु  
श्रवण करी अभ्यस्तव तथा शीलनयन व प्य -र्यु सम्यक्त्व तथा शीलव्रत धारी होवा  
छना पयु भतापिताना आग्रह्यो धृष्ट शठो । आठ कन्याओं साथे लग्न क्युं पयु ते  
आठे कन्याओंनी लव-भान आदि योगमा गोपि । यना नहोना अभ कहु छे ते—

सम्यक्त्व-शील-तुम्बाभ्या भवाब्धिस्तीर्यते सुखम्

ये दधानो मुनिर्जम्बू, स्त्रीनदीषु कथं ब्रुवेत् ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थात् सम्यक्त्व तव सावउप तुणटीने भना सागर सुजेरी तारी नयाय  
छे तेन अभ्यस्तव तव सावने धारय करी न्यू वागी स्त्री इपी नीओमा डेम  
इपी शठे? अर्थात् कभी न दूजे (१)

विवाह पछी रात्रिमे ते आठे स्त्रीओने उपदेश आपता न्यूकुमारे शरी

भार्याएकतज्जनकजननी-स्वजनकजननीभिः सह स्वय पञ्चशतसप्तविंशतितमो यातु-  
कागतकनकनवनवतिकोटीः स्वगृहसम्पत्तिं च परित्यज्य प्राप्ताजीत् । क्रमेण  
केवली जातः, षोडशवर्षाणि गृहस्थत्वे, विंशतिवर्षाणि उन्नस्थावस्थाया,  
चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि केवलिवर्षाये व्यतीतानि, एवमशीतवर्षाणि सर्वायुः परि-  
पाल्य श्रीप्रभव स्वपदे सम्भाष्य सिद्धिमगमत् । उक्तञ्च-

( यमन्ततिलकावृत्तम् )

“ जम्बूसमो भविसमुद्ररैकचित्तो,  
भूतो न कोऽपि भविता वरणीतलेऽस्मिन् ।  
यस्तस्करानपि चकार शिवाध्वनीनान्  
माधून् प्रियाऽएकपिताजननीश्च धीरः ॥ १ ॥

जम्बू कुमारने चोरीके लिए आये हुए ‘प्रभव’को चार सौ निन्यानवे  
(४९९) चोरोंके साथ प्रतियोधित किया । उसके पश्चात् प्रातःकाल  
ही जम्बू कुमार पाँचसौ चोर, और अपनी आठो भार्याएँ, उनके  
मातापिता और अपने मातापिता इस तरह पाँचसौ सत्ताइस (५२७)  
जनोंने दीक्षा ग्रहण की । जम्बूकुमारने अपने दहेजमे आई हुई  
निन्यानवे (९९) कोटि स्वर्ण मोहरोंको तथा घरकी समस्त सम्पत्ति  
को त्याग कर दीक्षित हुए, और क्रमसे तप सयम आराधन करके  
केवल ज्ञान पाये । वे सोलह वर्ष गृहस्थाश्रममें रहे, बीस वर्ष उन्नस्थ  
रहे और ४४ चाँवालीस वर्ष केवलवर्षाधमे रहे । इस प्रकार ८०  
अस्सी वरसकी सर्व आयु व्यतीत करके प्रभव स्वामी को अपने पद  
पर स्थापितकर सिद्धपदको पाये । कहा भी है-

४२वा आवेला प्रलयने या मो नवाणु (४६८) बेरोनी साथे उपदेश आये, अने  
प्रतियोधित करी ते पछी नवाग्भाज पायमे येन, पोतानी गाठ खीमे तथा तेमना  
माता पिता तथा पोताना माता पिता, अने न भुं पोते खेवी गीते पायमे यत्ता  
वीश (५२७) नखोमे दीक्षा ग्रहण करी जम्बू कुमार पोताना हायन्मा आवेली  
नवाणु (६८) करोड सेना भडोण तथा घरनी समस्त सपत्तिने त्याग करी दीक्षित  
थया अने कभशी तप सयम आराधन करीने ठेण ज्ञान मेण-यु तेमो सोण वरस  
गृहस्थाश्रममा रह्या वीश वरस छन्नस्य रह्या तथा युमालीस (४४) वरस देवल  
पर्यायमा रह्या आभ खेसी (८०) वरमनु सर्व आयुध्य पूछु करीने प्रलय  
स्वामीने पोताना पद पर स्थापित करी पाते सिद्धपदने प्राप्त करुं कहुं छे छे -



भार्याष्टकतज्जनकजननी-स्वजनकजननीभिः सह स्वयं पञ्चशतसप्तविंशतितमो योतु-  
कागतकनकनवनवतिकोटीः स्वगृहसम्पत्तिं च परित्यज्य प्राप्ताजीत् । क्रमेण  
केवली जात', षोडशवर्षाणि गृहस्थत्वे, विंशतिवर्षाणि उन्नस्थाप्रस्थाया,  
चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि केवत्रिपर्याये व्यतीतानि, एवमशीतवर्षाणि सप्तयुः परि-  
पाल्य श्रीप्रभव स्वपदे सम्भाष्य सिद्धिमगमत् । उक्तञ्च-

(यसन्ततिलकावृत्तम्)

“जम्बूसमो भविसमुद्ररणैकचित्तो-

भूतो न कोऽपि भविता ररणीतलेऽस्मिन् ।

यस्तस्करानपि चकार शिवाध्वनीनान्

माधुन् प्रियाऽष्टकपिताजननीश्च धीरः ॥ १ ॥

जम्बू कुमारने चोरीके लिए आये हुए 'प्रभव'को चार सौ निन्यानवे  
(४९९) चोरोके साथ प्रतियोधित किया । उसके पश्चात् प्रातःकाल  
ही जम्बू कुमार पाँचसौ चोर, और अपनी आठो भार्याएँ, उनके  
मातापिता और अपने मातापिता इस तरह पाँचसौ सत्ताहस (५२७)  
जनोंने दीक्षा ग्रहण की । जम्बूकुमारने अपने दहेजमे आई हुई  
निन्यानवे (९९) कोटि स्वर्ण मोहरोंको तथा घरकी समस्त सम्पत्ति  
को त्याग कर दीक्षित हुए, और क्रमसे तप समय आराधन करके  
केवल ज्ञान पाये । वे सोलह वर्ष गृहस्थायासमें रहे, बीस वर्ष उन्नस्थ  
रहे और ४४ चांचालीस वर्ष केवलपर्यायमे रहे । इस प्रकार ८०  
अस्सी वरसकी मर्व आयु व्यतीत करके प्रभव स्वामी को अपने पद  
पर स्थापितकर सिद्धपदको पाये । कहा भी है-

करोवा आवेला प्रलयने आ ये नवाछु (४६६) चोरोनी स थे उपदेश आये, अने  
प्रतियोधित कर्य ते पछी नवारभाज पायमे चोर, पोतानी आठ स्त्रीओ तथा तेभना  
माता पिता तथा पोताना माता पिता, अने जू पोते जेवी गीते पायमे सत्ता  
वीश (५२७) जेओओ दीक्षा ग्रहण करी जम्बू कुमार पाताना हायनमा आवेली  
नवाछु (६६) करोठ सेना महारा तथा वरनी समन्त स पत्तिने त्याग करी दीक्षित  
थया अने कंभरी तप समय आराधन करीने ठाण ज्ञान मेणवु तेओ सोण वरस  
गृहस्थाश्रममा रह्य वीश वरस छन्नस्थ रह्य तथा युमादीस (४४) वरस उपव  
पर्यायमा रह्य आभ जेसी (८०) वरमनु सर्व आयुध्य पूर्ण करीने प्रभव  
स्वामीने पोताना पद पर स्थापित करी पोते सिद्धपदने प्राप्त कथुं कछु छे डे -

सक्षिप्ता=शरीरान्तर्गतत्वेन सङ्कुचिता विपुला=विशाला अनेकयोजनपरिमितक्षेत्र  
 गतवस्तुभस्मीकरणसमर्थाऽपि, तेजोलेख्या=विशिष्टतपोजनितलब्धिविशेषसमुत्पन्न-  
 तेजोज्वाला यस्य स सक्षिप्तविपुलतेजोलेखः=शरीरान्तर्लीनतेजोलेखावान् ।  
 एव गुणगणसमेतो 'जम्बूस्वामी' आर्यसुधर्मणोऽनंगारस्य अदूरसामन्ते-  
 दूर=विप्रकर्षः, सामन्त=समीप तयोरभावोऽदूरसामन्त तस्मिन् नातिदूरे नाति-  
 निकटे, उचिते देशे इत्यर्थः । 'उडूजाणु' इति-ऊर्ध्वजानुः-ऊर्ध्वं जानुनी  
 यस्य स तथा, जाव-(यावत्)-शब्देन 'अहोसिरे, मयजलिपुटे, उक्कुडासणे,  
 ज्ञानकोष्ठोपगण, सजमेण तवमा अप्पाण भावेमाणे' इत्येण मद्ग्रहः । 'अहोसिरे'  
 इति-अधःशिराः=नतमस्तकः, इतस्ततश्चक्षुर्व्यापार निवर्त्य नियमितभूमिभागनि  
 हितदृष्टिरित्यर्थः । 'मयजलिपुटे' इति कृताञ्जलिपुटः=मस्तकन्यस्तसम्पुटीकृत-  
 इस्त, 'उक्कुडासणे' इति-उत्कुटासनः उत्कुट=भूमावलग्नपुतम् आसन यस्य  
 स तथोक्तः भूपदेशाम्पृष्टपुततयोपविष्ट इत्यर्थः । ध्यानकोष्ठोपगतः-ध्यायते=  
 चिन्तयतेऽनेनेति ध्यानम्, एकस्मिन् वस्तुनि तदेकाग्रतया चित्तस्थावरथापन  
 मित्यर्थः, ध्यान कोष्ठ इव ध्यानकोष्ठस्तमुपगतः, यथा कोष्ठगत धान्य विकीर्ण  
 न भवति तथैव ध्यानत इन्द्रियान्त करणवृत्तयो बहिर्न यान्तीति भावः, निय

और परीपहोपसर्ग-कषाय-रूप शत्रुके विजय करनेमें भयानक अर्थात्  
 वीर थे । घोरव्रतवाले थे अर्थात् कठिन व्रतके पालक थे ।

तपके प्रभावसे उत्पन्न होने वाली और अनेक योजन विस्तृत  
 (लम्बे-चौड़े) क्षेत्रमें रही हुई वस्तुको भस्म करने वाली अन्तर्ज्वाला  
 रूप लब्धिको 'तेजोलेख्या' कहते हैं, उसको सक्षिप्त करनेवाले, अर्थात्  
 गुप्तरूपसे रखनेवाले थे । इस तरह गुणके भण्डार श्री जम्बू अनंगार  
 श्री आर्यसुधर्मा स्वामी के पास उर्ध्वजानु किये हुए, ऊपर ऊपर न  
 देखते हुए, दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाये, उक्कुडासनसे बैठे

भयानक अर्थात् वीर (जहादुर) होता उन व्रतधारी होता अर्थात् कठक व्रतनु  
 पालन करता होता

तपना प्रभावशी उत्पन्न भवावाणी अने अनेक योजन विस्तारना क्षेत्रमा  
 रहेली वस्तुने भस्म करवावाणी अत्यन्तवाला उ । लब्धिने 'तेजोलेख्या' कहे छे  
 तेने सक्षिप्त करवावाणी अर्थात् गुप्तपद्मा राखवावाणी छता आपी रीते शुशुना  
 लडार श्री जम्बू स्वामीके श्री आर्यसुधर्मा स्वामीनी पाये उर्ध्वजानु रङ्गिने आलु-  
 आलुके नजर न नापता जे हाथ लेझिने माथु नभापी उक्कुडामने जेठेला मनने

न्त्रितचित्तवृत्तिमानित्यर्थः । 'सजमेण' इति-सयमेन सप्तदशविधेन, 'तवसे' ति-तपसा=द्वादशविधेन आत्मान भावयन् विहरति=तिष्ठति. इति ॥ ४ ॥

मूलम्-तएण से भगव जम्बू जायसडे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी-उवगाणं भंते । समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ता ? एव खलु जंजू । समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं एवं उवगाणं पच वग्गा पणत्ता, तं जहा-निरयावलियाओ १, कप्पवडिंसियाओ २, पुप्फियाओ ३, पुप्फचूलियाओ ४, वणिहदसाओ ५ ॥ ५ ॥

टिप्पणी-ततः खलु भदन्त ! स भगवान् जम्बूः जातश्रद्धः यावत् पर्युपासीनः एवमवादीत्-उपाङ्गाना भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रश्नः ? । एव खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन एवम् उपाङ्गाना पञ्च वर्गाः प्रश्नताः, तद्यथा-निरयावलिकाः (१) कल्पावतसिकाः (२) पुष्पिताः (३) पुष्पचूलिकाः (४) वणिदशाः (५) ॥ ५ ॥

टीका-'तएणसे' इत्यादि-ततः खलु=निश्चयेन सः=असौ भगवान्=अपूर्वसम्यक्त्वशीलसमाराधनयशोवान् जम्बूः-जातश्रद्धः=उत्पन्नप्रश्ने=उः, यावच्छब्देन-जातसशयः=उद्भूतसदेहः, जातकुतूहलः=उत्पन्नात्सुक्य, इति सद्ग्रहो बोध्यः, श्रीसुधर्मस्वामिनमुपागत्य सविधिवन्दन विधायाभिमुख प्राञ्जलिः पर्युपासीन=सेवमान. एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=अरोचत् अप्राप्तीदित्यर्थः-

हुए ध्यानरूपी कोठेमें स्थित, अर्थात् चित्तवृत्तिको एकाग्र करके तप और सयमसे आत्माको भावित करते हुए बैठे थे ॥ ४ ॥

'तएणसे' इत्यादि । उसके बाद श्री आर्य जम्बू अनगार जो जिज्ञासु थे, जिनमे श्रद्धा थी और जिन्हे जिज्ञासाके कारण कुतूहल (उत्सुकता) हुआ था । श्रद्धा उसने हुई, सशय उसने हुआ और कुतूहल हुआ । जिन्हें भला भाति श्रद्धा थी, भली भाति सशय था और भली

ध्यानरूपी कोठामा स्थित राणीने अर्थात् चित्तवृत्तिने कोठाअ करीने तप तथा सयमभी आत्माने भावित करता थाज कोठा होता ॥ ४ ॥

'तएण से' इत्यादि त्थार पञ्ची श्री आर्य जम्बूस्वामी के ने लज्जासु होता, नेने सारी रीते श्रद्धा होती, सशय पञ्च सारी रीते होता, अने कुतूहल पञ्च सारी रीते

हे भदन्त ! = हे भगवन् ! इदं गुरोः सम्बोधनम्, उपाङ्गानां श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् आदिकरेण, तीर्थकरेण, स्वयं सगुह्येन पुरुषोत्तमेन, पुरुषसिंहेन, पुरुषवरपुण्डरीकेन, पुरुषवरगन्धहस्तिना, लोकोत्तमेन, लोकनाथेन,

माति कौतूहलं था, खड़े होकर जहाँ श्री आर्यसुधर्मा स्वामी थे, वहाँ गये। वहाँ जाकर श्री आर्यसुधर्माको अपने दक्षिण तरफसे अजलि गुट (दोनों हाथ) को घुमानेरूप तीनबार प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना की, तत्पश्चात् श्री आर्य सुधर्मास्वामी से न अधिक दूर और न अधिक पास—निकट सेवामे उपस्थित हो युगलकर जोड़ विधिपूर्वक शुश्रूषा करते हुए, इस प्रकार बोले—

हे भगवन् ! - श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने जो स्वशासनकी अपेक्षासे धर्मकी आदि करनेवाले, जिससे मसार-सागर तैरा जाय उसे तीर्थ कहते हैं, वे तीर्थ चार प्रकार के हैं—साधु, सा वि, श्रावक और श्राविका, ऐसे चतुर्विध सघ रूप तीर्थकी स्थापना करने वाले स्वयं बोधको पाने वाले, जानादि अनन्त गुणोंके धारक होनेसे पुरुषोत्तम। राग द्वेषादि शत्रुओंके पराजय करनेमे अलौकिक पराक्रमशाली होनेसे पुरुषोंमे केसरीसिंहके समान। समस्त अशुभ रूप मलसे रहित होनेके कारण विशुद्ध श्वेत कमल के समान निर्मल। अथवा—जैसे कीचड़से वसन्न और जलके योगसे बड़ा हुआ होकर

यद्यु त्तु ते उक्ता यद्यने न्या श्री आर्य सुधर्मा स्वामी जना त्या गया त्या जने श्री आर्य सुधर्माने पोतानी जमली भावुज्येथी अजलिपु (वे हाथ) देववा राउ करी त्रय वाग प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना करी त्थार पछी श्री आर्य सुधर्मा स्वामीथी जहुं हं नहि तेम जहुं पास पण नहि जेम निकट मेनामा उपस्थित यद्य वे हाथ जोडी विधिपूर्वक सेवा करता आम् जे या -

हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीरस्वामीजे जे स्वशासनकी अपेक्षा धर्मकी आदि करवावाजा, जेथी ससारसागर तैरी जवाय तेने तीर्थ कहे जे ते तीर्थ - चार प्रकार्णा जे—साधु, सावि, श्रावक अने—श्राविका जेवा चतुर्विधसघ उप तीर्थनी स्थापना करवावाजा, पोते बोध पायेवा, जान वगेरे अनन्त गुण मपन्न होवाथी पुरुषोत्तम, रागद्वेषादि शत्रुजोना पराजय करवावा अलौकिक पराक्रमवाजा होवाथी पुरुषोत्तम केसरी सिंह समान, समस्त अशुभाउपी भगथी रहित होवाथी विशुद्ध, श्वेतकमल समान निर्मल, जेथी के—जेम कादवगाथी उत्पन्न थयेतु श्रमण पाछीना योगथी पधतु होवा छता

લોકહિતેન, લોકપ્રદીપેન, લોકપ્રદાતકરેણ, અભયદેન, ચક્ષુર્દેન, માર્ગદેન,

મી સમગ્રે ઉન દોનોં (જલ-કીચ) કે સસર્ગ કો જોડકર મદા નિર્લેપ રહતા હૈ, ઓર અપને અલૌકિક સુગધિ આદિ ગુણોસે દેવ મનુષ્યા દિકોંકા શિરામૃષણ વનતા હૈ, વૈસે હી ભગવાન કર્મરૂપી કીચડ સે ઉત્પન્ન ઓર ભાગરૂપી જલસે વઢે દૃષ્ટ હોકર મી ઉન દોનોંકે સસર્ગકોં ત્યાગ કર નિર્લેપ રહતે હૈં ઓર કેવલજ્ઞાનાદિ ગુણોસે પરિપૂર્ણ હાનેકે કારણ મન્ય જીવોં કે શીરોધાર્ય હૈં, જિમકા ગન્ધ સૂઘતે હી મઝ જાયી હમ કે મારે માગ જાતે હૈં । ઉસ જાથીકો 'ગન્ધસ્ત્રી' કહતે હ । ઉમ ગન્ધસ્ત્રીકે આશ્રયસે જૈસે રાજા સદા વિજયો જાતા હૈ, ઉસી પ્રકાર ભગવાનકે અતિશય સે દેશકે ૧ અતિવૃષ્ટિ, ૨ અનાવૃષ્ટિ, ૩ કાલમ(તીડ), ૪ વૃદ્ધે, ૫ પક્ષી, ૬ સ્વચક્ર-પરચક્ર-ભય, યહ છહ પ્રકારકી રૂતિ, ઓર મહામારી આદિ સમી ઉપદ્રવ તત્કાલ દૂર હો જાતે હૈ । ઓર આશ્રિત મન્ય જીવ મદા મઘ પ્રકારસે વિજયી જાતે હૈ । ચૌતીમ અતિશયોં ઓર વાણીકે પંતીમ ગુણોસે યુક્ત હોને-કે કારણ લોગોમે ઉત્તમ । અલભ્ય રત્નત્રય કે લાભ રૂપ યોગ ઓર લવ્ય રત્નત્રયકે પાલન રૂપ ક્ષેમકે કારણ હોને સે મન્ય જીવોંકે નાય । અકન્દ્રિય આદિ સમગ્ર પ્રાણીગણકે હિતકારક । જિમ પ્રકાર

એ જોડ (પાણી-કદવ) ના મનગને ડોડીને હમેશા નિર્લેપ રહે છે, તથા પોતાની અવૌકસ સુગધ આદિ શુભોચી દેવ, મનુષ્ય આદિના મન્ત્રકનુ ભૂષણ થાન છે, તેવીજ રીતે ભગવાન-કમરૂપી કદવમાયાં ઉત્પન્ન અને ભોગપ્રી જલથાં વૃદ્ધ પામ્યા છતાં તે બહુના મસ ના ત્યાગ કરને નિર્લેપ રહે છે, તથા કવણજન આદિ શુભોચી પરિપૂર્ણ હોવાથી ભવ્યશ્વેના નિર્દોષરૂપે જેનો ગધ સુઘતાજ ગધા હાયાં બીકથીજ ભાગી જાય છે તેવા હાથીને 'ગધસ્ત્રી' કહે છે, તે ગધસ્ત્રીના આશ્રયથી જેમ નાનકે હમેશા વિજય મેળવે છે, તેવીજ રીતે ભગવાનના આનંદશયથી દેશના અતિવૃષ્ટિ (૧) અનાવૃષ્ટિ (૨), રાસણ (તીડ) (૩), ઉદર (૪) પક્ષી (૫), સ્વચક્ર પરચક્ર ભય (૬), એ છ પ્રકારની રૂતિ (ઉપદ્રવ) અને મહામારી આદિ સર્વે ઉપદ્રવ તત્કાલ દૂર થઈ જાય છે, તથા આશ્રિત ભવ્ય શ્વે હમેશા સર્વ પ્રકારે વિજયી થાય છે ચૌતીમ આનંદશય તથા વાણીના પાત્રીશ શુભોચી યુક્ત હોવાથી લોકોના ઉત્તમ, અલભ્ય રત્નત્રયના લાભપ્રી યોગ તથા લવ્ય રત્નત્રયના પાલન રૂપી ક્ષેમનું કારણ હોવાથી ભવ્ય શ્વેના નાયક, એકન્દ્રિય આદિ સર્વ પ્રાણીગણના હિત કરનારા, જેમ કીપક



દીપક સવકે લિયે સમાન પ્રકાશકારી હૈ તા ખી નેત્રવાલે હી ઉસસે લાભ ઉઠા સકતે હૈં નેત્રહીન નહી, ઉસી પ્રકાર ભગવાનકા ઉપદેશ મનકે લિયે સમાન હિતકર હોને પર ખી ભવ્ય જીવ હી ઉસસે લાભ ઉઠાતે હૈં અભવ્ય નહી, અતએવ ભવ્યોંકે હૃદયમે અનાદિ કાલ સે રહે હુણ મિથ્યાત્વ રૂપ અન્ધકાર કો મિટાકર આત્માકે યથાર્થ સ્વરૂપકો પ્રકાશિત કરનેવાલે । લોક શબ્દસે યહા લોક ઔર અલોક ઢાનોંકા ગ્રહણ હૈ અતએવ કેવલજ્ઞાન રૂપી આલોકસે સમસ્ત લોકા લોકકે પ્રકાશ કરનેવાલે । મોક્ષકે સાધક ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્ય રૂપી અભય કો દેનેવાલે, અથવા-સમસ્ત પ્રાણિયોંકે સકલકો છુડાને વાલી દયા (અનુમમ્પા) કે ધારક । જ્ઞાનનેત્રકે દાયક, અર્થાત્ જૈસે કિસી ગહન વનમેં છુદેરોંસે છૂટે ગયે ઔર આંખોં પર પટ્ટી બાંધ કર તથા હાથ પૈર પકડ કર ગડ્ડેમેં ગિરાયે ગયે પથિકકે કોઈ દયાલુ મન બંધનોં કો તોડ કર નેત્ર છોલ દેતા હૈ, ઈસી પ્રકાર ભગવાન ખી સસાર રૂપી અપાર કાન્તારમે રાગ-દ્વેષ રૂપ છુદેરોંસે, જ્ઞાનાદિ ગુણોંકો છૂટ કર તથા કદાગ્રહ રૂપ પટેસે જ્ઞાન ચક્ષુકો ઢક કર મિથ્યાત્વ કે ગડ્ડેમે ગિરાયે ગયે ભવ્ય જીવોંકે ઉસ કદાગ્રહ રૂપ પટેકો દૂર કર જ્ઞાનનેત્રકો દેને વાલે હૈં, અતએવ સમ્યક્ રત્નત્રય સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગ,

બધાને માટે સરખો પ્રકાશ કરે છે તો પણ આખવાળાજ માત્ર તેનાથી લાભ મેળવી શકે છે નેત્રહીન એટલે આખળા મેળવી શકતા નથી તેમ ભગવાનનો ઉપદેશ બધા માટે સમાન હિતકારક હોવા છતાં પણ ભવ્ય છવોજ તેનો લાભ મેળવી શકશે અભવ્ય નહિ મેળવી શકે એ રીતે ભવ્યોના હૃદયમા અનાદિ કાળથી રહેલું મિથ્યાત્વરૂપી અધાર મટાડીને આત્માના યથાર્થ સ્વરૂપને પ્રકાશિત કરવાવાળા લોક શબ્દથી અહીં લોક અને અલોક બેઉ સમજવાના છે આ રીતે કેવળજ્ઞાનરૂપી આલોકથી તમામ લોક અને અલોકને પ્રકાશ કરવાવાળા, મોક્ષના સાધક, ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્યરૂપી અભયને દેવાવાળા, અથવા સમસ્ત પ્રાણિઓના સકલ મટાડનારી દયા (અનુકંપા)ના ધારક જ્ઞાનરૂપી નેત્ર આપનારા અર્થાત્ જેમ કેઈ ગહનવનમા લૂગરાથી લૂટાઈ ગયેલા અને આખે પાટા બાંધીને તથા હાથપગ પકડીને ખાડામા નાખી દીધેલા સુસાફરને કેઈ દયાળુ બધા બધાનો તોડી આખો ઉઘાડી દે છે તેવી રીતે ભગવાન પણ સસારરૂપી અટવીમા રાગ-દ્વેષ રૂપી લૂગરાથી, જ્ઞાનાદિ ગુણોને લૂટી તથા કદાગ્રહરૂપી પાટાથી જ્ઞાનચતુને ઢાકી દઈ મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામા પાડી નાખેલા ભવ્યછવોને કદાગ્રહરૂપી પાટાથી સુક્ત કરી જ્ઞાનરૂપી નેત્ર દેવાવાળા એટલે સમ્યક્ રત્નત્રય સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગ અથવા વિશિષ્ટ

શરણદેન, જીવદેન, યોધિદેન, વર્મદેન, ધર્મદેશનાદેન, ધર્મનાયકેન. ઈર્મસાર-  
થિકેન, ધર્મવર-ચાતુરતચક્રવર્તિકેન, દ્વીપત્રાણ-શરણ-ગતિપ્રતિષ્ઠેન, અપ્રતિહત-

અથવા વિશિષ્ટ ગુણકો પ્રાપ્ત होने वाले, क्षयोपशम भाव रूप मार्गको  
देने वाले । कर्म शत्रुओ से दुःखित प्राणियोंको शरण (आश्रय)  
देने वाले, पृथिव्यादि पद्मजीव-निकाय मे दया रखने वाले, अथवा  
मुनियोंके जीवनाधार स्वरूप संयमजीवितको देने वाले । शम सवेग  
आदि प्रकाश, अथवा जिनवचनमें रुचिको देने वाले । धर्मके उपदेशक ।  
वर्मके नायक अर्थात् प्रवर्त्तक । धर्मके सारथी अर्थात् जिस प्रकार  
रथपर चढे हुए को सारथी रथके द्वारा सुखपूर्वक उसके अभीष्ट  
स्थान पर पहुँचाता है, उसी प्रकार भव्य प्राणियों को र्म  
रूपी रथके द्वारा सुखपूर्वक मोक्ष स्थान पर पहुँचाने वाले । दान,  
शील, तप और भावसे नरक आदि चार गतियों का अथवा चार  
कपायोंका अन्त करनेवाले, अथवा चार-दान, शील, तप और भाव से  
अन्त=रमणीय, या दान आदि चार अन्त=अवयव वाले, अथवा दान  
आदि चार अन्त=स्वरूप वाले श्रेष्ठ वर्म को 'धर्मवरचातुरन्त' कहते  
हैं, यही जन्म जरा मरण के नाशक होने से चक्र के समान है ।  
अतएव धर्मवरचातुरन्त रूप चक्र के धारक । यहाँ पर 'वर'  
पद देनेसे राजचक्रकी अपेक्षा धर्मचक्रकी उत्कृष्टता तथा सौगत  
(बौद्ध) आदि धर्मका निराकरण किया गया है, क्योंकि राजचक्र

શુભના પ્રાપ્ત કરાવવાવાળા ક્ષયોપશમભાવ રૂપી માર્ગ દેવાવાળા, કર્મશત્રુથી પીડિત  
પ્રાણિઓને આશ્રય દેવાવાળા, પૃથ્વી આદિ છ જીવનિકાયમાં દયા નખવાવાળા, અથવા  
મુનીયોના જીવન આધાર સ્વરૂપ સંયમ જીવન દેવાવાળા, શમ સવેગ આદિ પ્રકાશ  
અથવા જિન વચનમાં રૂચિ દેવાવાળા, ધર્મના ઉપદેશક, ધર્મના નાયક અર્થાત્ પ્રવ-  
ર્તક, ધર્મના સારથી અર્થાત્ જેમ રથ ઉપર બેઠેલાને સારથી રથવડે સુખપૂર્વક તેના  
અભીષ્ટ સ્થાને પહોંચાડે છે તેવી રીતે ભવ્ય પ્રાણિઓને ધર્મરૂપી રથદ્વારા સુખપૂર્વક  
મોક્ષસ્થાન પર પહોંચાડનાર, દાન, શીલ, તપ તથા ભાવથી નરક આદિ ચાર ગતિ  
ઓના અથવા ચાર કપાયોના અન્ત કરવાવાળા, અથવા ચાર-દાન, શીલ, તપ તથા  
ભાવથી અન્ત=રમણીય, અથવા દાન આદિ ચાર અન્ત=અવયવવાળા, અથવા દાન  
આદિ ચાર અન્ત=સ્વરૂપવાળા, શ્રેષ્ઠ ધર્મને 'ધર્મવરચાતુરન્ત' કહે છે, જેના જન્મ જરા  
મરણના નાશ કરવાવાળા હોવાથી એક સમાન છે, એટલે ધર્મવરચાતુરન્ત રૂપી એકના  
ધારક, અહીં 'વર' પદ ગ્રહણ કરવાથી રાજચક્રની અપેક્ષા ધર્મચક્રની ઉત્કૃષ્ટતા તથા  
સૌગત (બૌદ્ધ) આદિ ધર્મનું નિરાકરણ કરેલું છે, કેમકે રાજચક્ર કેવળ આ લોકનુંજ

દીપક સવકે લિયે સમાન પ્રકાશકારી હૈ તા ખી નેત્રવાલે હી ઉસસે લાભ ઉઠા સકતે હૈં નેત્રહીન નહી, ઉસી પ્રકાર ભગવાનકા ઉપદેશ સવકે લિયે સમાન હિતકર હોને પર મી ભવ્ય જીવ હી ઉસસે લાભ ઉઠાતે હૈ અભવ્ય નહી, અતણ્વ ભવ્યોંકે હૃદયમે અનાદિ કાલ સે રહે હુણ મિથ્યાત્વ રૂપ અન્ધકાર કો મિટાકર આત્માકે યથાર્થ સ્વરૂપકો પ્રકાશિત કરનેવાલે । લોક શબ્દસે યહા લોક ઔર અલોક ઢાનોંકા ગ્રહણ હૈ અતણ્વ કેવલજ્ઞાન રૂપી આલોકસે સમસ્ત લોકા લોકકે પ્રકાશ કરનેવાલે । મોક્ષકે સાધક ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્ય રૂપી અભય કો દેનેવાલે, અથવા-સમસ્ત પ્રાણિયોંકે સકલકો છુડાને વાલી દયા (અનુમમ્પા) કે ધારક । જ્ઞાનનેત્રકે દાયક, અર્થાત્ જૈસે કિસી ગહન વનમે છુદેરોસે લૂટે ગયે ઔર આંખોં પર પટ્ટી બાધ કર તથા હાથ પૈર પકડ કર ગડ્ડેમેં ગિરાયે ગયે પથિકકે કોઈ દયાલુ સવ બન્ધનોં કો તોડ કર નેત્ર છોલ દેતા હૈ, ઇસી પ્રકાર ભગવાન મી સસાર રૂપી અપાર કાન્તારમે રાગ-દ્વેષ રૂપ છુદેરોંસે, જ્ઞાનાદિ ગુણોંકો લૂટ કર તથા કદાગ્રહ રૂપ પટ્ટેસે જ્ઞાન ચક્ષુકો ઢક કર મિથ્યાત્વ કે ગડ્ડેમેં ગિરાયે ગયે ભવ્ય જીવોંકે ઉસ કદાગ્રહ રૂપ પટ્ટેકો દૂર કર જ્ઞાનનેત્રકો દેને વાલે હૈં, અતણ્વ સમ્યક્ રત્નત્રય સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગ,

બધાને માટે સરખો પ્રકાશ કરે છે તે પશુ આખવાળાજ માત્ર તેનાથી લાભ મેળવી શકે છે નેત્રહીન એટલે આખણ મેળવી શકતા નથી તેમ ભગવાનનો ઉપદેશ બધા માટે સમાન હિતકારક હોવા છતાં પણ ભવ્ય જીવોજ તેનો લાભ મેળવી શકશે અભવ્ય નહિ મેળવી શકે એ રીતે ભવ્યોના હૃદયમા અનાદિ કાળથી રહેલું મિથ્યાત્વરૂપી અધાર મટાડીને આત્માના યથાર્થ સ્વરૂપને પ્રકાશિત કરવાવાળા લોક શબ્દથી અહીં લોક અને અલોક બેઉ સમજવાના છે આ રીતે કેવળજ્ઞાનરૂપી આલોકથી તમામ લોક અને અલોકને પ્રકાશ કરવાવાળા, મોક્ષના સાધક, ઉત્કૃષ્ટ ધૈર્યરૂપી અભયને દેવાવાળા, અથવા સમસ્ત પ્રાણિઓના સકલ મટાડનારી દયા (અનુકરણ)ના ધારક જ્ઞાનરૂપી નેત્ર આપનારા અર્થાત્ જેમ કોઈ ગહનવનમા લૂગરાથી લૂટાઈ ગયેલા અને આખે પાટા બાંધીને તથા હાથપગ પકડીને ખાડામા નાખી દીધેલા અસાક્ષરને કોઈ દયાળુ બધા બધાને તોડી આખે ઉઘાડી દે છે તેવી રીતે ભગવાન પણ સસારરૂપી અટવીમા રાગ-દ્વેષ રૂપી લૂગરાથી, જ્ઞાનાદિ ગુણોને લૂટી તથા કદાગ્રહરૂપી પાટાથી જ્ઞાનચતુને ઢાકી દઈ મિથ્યાત્વરૂપી ખાડામા પાડી નાખેલા ભવ્યજીવોને કદાગ્રહરૂપી પાટાથી મુક્ત કરી જ્ઞાનરૂપી નેત્ર દેવાવાળા એટલે સમ્યક્ રત્નત્રય સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગ અથવા વિશિષ્ટ

## सुन्दरोगिनी टीका अ. १ शास्त्रपरिचयः

शब्दसमुदायात्मकत्वाभ्यतात्पर्यविषयीभूतः को भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, कथित इत्यर्थः । जम्बूस्वामिपृच्छानन्तरं सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिं प्रति प्राह—हे जम्बू ! एवम्=इत्थम् खलु=निश्चयेन यावत्=उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता श्रमणेन भगवता महावीरेण एव=वक्ष्यमाणरीत्या उपाद्धाना 'पञ्च वर्गाः' इति, अथ यत्नसमूहो वर्गस्ते प्रज्ञप्ताः=निरूपिताः, तद्यथा=तदेव दर्शयते—निरयावलिकाः (१), अम्योपाद्गस्य 'रुल्लिके'ति नामान्तरम्, कृत्पावतसिकाः (२), पुष्पिताः (३), पुष्पचूलिकाः (४), वृष्णिदशाः (५), अस्य 'वह्निदशे'ति नामान्तरम् । इदं सर्वं यावद्यवगतबहुत्वविवक्षायां बहुवचनम् ।

तत्र निरयावलिकाः—

यथावलिकाप्रविष्टा=त्रेणिप्प्रवस्थिता. उत्तरे च नरकाऽऽवामाः प्रमङ्ग तप्तद्रामिनश्च मनुष्यास्तिर्यञ्चः प्रतिपाद्यन्ते तास्तथा (१), कृत्पावतसिकाः—

मोक्षको प्राप्त करने वाले उन प्रभुने उपाङ्गोंका क्या भाव कहा ? । इस प्रकार जम्बूस्वामीके पूछने पर श्री सुधर्मा स्वामीने जम्बूस्वामीसे कहा—हे जम्बू ! इस प्रकार उक्त गुण विशिष्ट यावत् सिद्धि गतिको प्राप्त करने वाले भगवान्ने उपाङ्गोंके पांच वर्ग निरूपण किये हैं वे क्रमशः इस प्रकार हैं :—

(१) निरयावलिका, इसका दूसरा नाम 'रुल्लिका', भी है । (२) कृत्पावतसिका, (३) पुष्पिता, (४) पुष्पचूलिका और (५) वृष्णिदशा, इसका भी 'वह्निदशा' दूसरा नाम है । यहाँ मत्र जगत्-अवयवगत बहुत्व विवक्षा से बहु वचन है ।

उन पाचोमेसे प्रथम—(१) निरयावलिका सूत्रमे नरकावासो-का तथा उनमें उत्पन्न होने वाले मनुष्य और तिर्यञ्चोंका वर्णन है ।

नरकावासा ते प्रभुणे उपागोने। लाव शु दृष्टो ते ओ प्रकटे ॥ १ ॥ स्वाभीणे पूछ वायी श्री सुवभा स्वाभीणे ॥ १ ॥ स्वाभीने श्रु -डे ॥ १ ॥ ओ प्रकटे कडेवाशुविशिष्ट यानत् सिद्ध गतिनी प्राप्ति करवावाणा लगाने उपागोना पाच वर्ग निरूपण किये छे ते अनुक्रमे नीचे प्रमाणे छे—

(१) निरयावलिका, आनु गीष्णु नाम 'कटिपदा' पणु छे (२) कृत्पावतसिका (३) पुष्पिता (४) पुष्पचूलिका तथा (५) वृष्णिदशा आनु पणु 'वह्निदशा' ओषु गीष्णु नाम छे अर्द्धा गये ठेकाछे अवयवगत बहुत्व विवक्षायी बहुवचन वपरायु छे

ओ पांचेमाथी प्रथम (१) निरयावलिका सूत्रमा नरकावासोनु तथा तेमा उत्पन्न यनारा मनुष्य तथा तिर्यञ्चोनु वर्णन छे

વરજ્ઞાનદર્શનચરણે, કળાતૃત્તચ્છદ્યકેન, જિનેન, જાયકેન, તીર્ણેન, તારકેન, બુદ્ધેન, વોધકેન, મુક્તેન, મોચકેન, સર્વજ્ઞેન સર્વદર્શિના, શિવમચલમરુજ-મન ન્તમક્ષયમવ્યાપાવમપુનરાવૃત્તિક સિદ્ધિગતિનામપ્રેય સ્થાન સપ્રાપ્તેન, કોર્થઃ=

કેવલ હસ લોકકા સાધક છે, પરલોકકા નહીં, તથા સૌગત આદિ ધર્મ યથાર્થ નત્વોકા નિરૂપક ન હોનેસે શ્રેષ્ઠ નહીં । ‘ચક્રવર્તી’ પદ દેનેસે તીર્થદુરોક્તો હવે સ્વખંડકે અધિપતિકી ઉપમા દી ગઈ છે, ક્યોકિ હવે ચક્રવર્તીં ખી ચાર સીમાવાલે, અર્થાત્ ઉત્તર દિશામેં હિમવાન્ ઓર પૂર્વ, દક્ષિણ, પશ્ચિમ, દિશાઓમેં લવણ સમુદ્ર તક જિસકી સીમા છે એસે ભરતક્ષેત્ર પર એક શાસન રાજ્ય કરતા છે । મસાર-સમુદ્રમે ઢૂંચતે હુણે જીવોંકે એક માત્ર આશ્રય હોનેસે દ્વીપ સમાન । ભવ્ય જીવોંકે કલ્યાણકારી હોનેસે ત્રાણસ્વરૂપ અતએવ ઉનકે શરણ-આધારસ્થાન । તીનો કાલમેં અવિનાશી સ્વરૂપ વાલે । આવર-ણરહિત કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શન કે ધારક । જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોંકા નાશ કરને વાલે । રાગ-દ્વેષરૂપ શત્રુકો સ્વયં જીતને વાલે ઓર દુસરોંકો જીતાને વાલે । ભવમસુદ્રકો સ્વયં તૈરને વાલે ઓર દુસરોંકો તિરાને વાલે । સ્વયં યોધકો પ્રાપ્ત કરને વાલે ઓર દુસરોંકો પ્રાપ્ત કરને વાલે । સ્વયં મુક્ત હોને વાલે ઓર દુસરોંકો મુક્ત કરનેવાલે । સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શી તથા નિરૂપદ્રવ, નિશ્ચલ, કર્મરોગરહિત, અનન્ત, અક્ષય, આધારહિત પુનરાગમનરહિત, એસે સિદ્ધ સ્થાન અર્થાત્

સાધન છે પ દોષગ્ર નહીં તથા સૌગત આદિ ધર્મ યથાર્થ તરવેના નિરૂપક ન કરતા હોવાથી શ્રેષ્ઠ નથી । ‘ચક્રવર્તી’ પદ આપવાથી તીર્થદેશને છ ખ-ના અધિપતિની ઉપમા દીધી છે, તેમકે તે ચક્રવર્તીં પણ આ સીમાવાળા અર્થાત્ ઉત્તર દિશામા હિમવાન અને પૂર્વ, દક્ષિણ, પશ્ચિમ દિશાઓમા લવણસમુદ્ર સુધી જેની સીમા છે એવા ભ તક્ષેત્ર પર એક શાસન રાજ્ય કરે છે । મસારસમુદ્રમા ઢૂંચતા હોવાને એકજ આશ્રય હોવાથી દ્વીપ સમાન, ભવ્યહોવાના કલ્યાણકારી હોવાથી ત્રાણ સ્વરૂપ તેથી તેઓનાં શરણ આધારસ્થાન ત્રણે કાળમા આવરણરહિત કેવળજ્ઞાન, કેવળદર્શનના ધારક, જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોંકા નાશ કરવાવાળા, રાગદ્વેષરૂપી શત્રુને જીતેજીત ન રા તમજી જીતને હતાવવાવાળા, ભવમસુદ્રને બાંતે તરનારા તેમ જીતને તાગનારા, પોતે બોધ મેળવનારા તેમજ જીતને બોધ પ્રાપ્ત કરાવનારા, પોતે મુક્ત થવાવાળા તથા જીતને મુક્ત કરવાવાળા, સર્વજ્ઞ સર્વદર્શી તથા ઉપદ્રવ વગરના નિશ્ચલ કર્મરોગ રહિત, અનન્ત, અક્ષય, આધારહિત, પુનરાગમનરહિત, એવા સિદ્ધસ્થાન એટલે મોક્ષને પ્રાપ્ત

मृलम्-जडणं भते । समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणंपच्च  
वग्गा पन्नत्ता तं जहा निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ,  
पढमस्स णं भते । वग्गस्स उवगाणं निरयावलियाणं समणेणं  
भगवया जाव संपत्तेणं कड अज्झयणा पन्नत्ता ? ॥ ६ ॥

श्रुथा-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन उपाद्धाना पञ्च  
वर्गाः प्रवृत्ता तद्यथा-निरयावलिका यावत् वृष्णिदशाः, प्रथमस्य खलु भदन्त !  
वर्गस्य उपाद्धाना निरयावलिकाना श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन कति  
अययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

टीका-‘जडण भते’ इत्यादि । अथ सोत्साह सविनय जम्बूस्वामी  
सुधर्मस्वामिनः पप्रच्छ-भदन्त-हे भगवन् ! यदि-यदा खलु-निश्चयेन यावत्=  
उक्तगुणवता समाप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन=दुश्चरतपश्चर्याप्रसिद्धेन भगवता  
महावीरेण उपाद्धाना पञ्चवर्गाः प्रज्ञप्ताः निरूपिताः तद्यथा=तदेव दर्शयते-  
निरयावलिका इत्यादिभ्यः वृष्णिदशपर्यन्ता, तेषु हे भदन्त ! हे भगवन् निर-  
यावलिकानामुपाद्धाना प्रथमवर्गस्य श्रमणेन भगवता यावत्=उक्तगुणवता सम्पा-  
प्तेन=मोक्षगतेन कति=कियत्सरयमानि अययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

मृलम्-एव खलु जंबू । समणेणं जाव संपत्तेण उवगाणं  
पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, त

निरयावलिका-अन्तकृद्दशाङ्गका उपाङ्ग है । कल्पावतसिका-अ-  
नुत्तरोपपातिक दशाङ्गका । पुष्पिका-प्रश्नव्याकरणका । पुष्पचलिका-  
विपाकसूत्रका । और वृष्णिदशा-दृष्टिवादका उपाङ्ग है । ॥ ७ ॥

‘जडण भते’ इत्यादि । हे भदन्त ! भगवान् महावीर प्रभुने नि-  
रयावलिका से लेकर वृष्णिदशा पर्यन्त उपाङ्गोंके पांच वर्ग कहे उनमें  
भगवानने निरयावलिका के कितने अध्ययन कहे हैं ? ॥ ६ ॥

निरयावलिका-अतकृद्दशाङ्गानु उपाङ्ग छे, कल्पावतसिका ओ अनुत्तरोपपातिक  
दशाङ्गानु, पुष्पिका प्रश्नव्याकरणानु, पुष्पचलिका, ओ विपाक सूत्रानु तथा, वृष्णिदशा, ओ  
दृष्टिवादनु उपाङ्ग छे ॥ ५ ॥

‘जडण भते’ इत्यादि हे भदन्त ! भगवान् महावीर प्रभुने निरयावलिकाथी  
भाडीने वृष्णिदशा सुधीना उपाङ्गाना पाच वर्ग कहे तेमा भगवाने निरयावलिकाना  
कैटवा अध्ययन कहे छे ? ॥ ६ ॥

नाम-कल्पावतमरुदेवप्रतिबद्धग्रन्थपद्धतिः, तास्तथा (२), पुष्पिताः-सयमभाव नया पुष्पिताः सुखिताः प्राणिनः सयमाऽऽराधनपरित्यागेन ग्लानावस्था प्राप्ताः सङ्कुचिताः सन्तो भूयस्तदाराधनेन पुष्पिता यत्र प्रतिपाद्यन्ते ताः पुष्पिता (३), 'पुष्पचूलिकाः' पूर्वोक्तार्थविशेषप्रतिपादिकाः पुष्पचूडा, ता एव तथा ङ-लयोरैक्यात् (४), वृष्णिदशाः-अथ चाऽन्वयः-वृष्णिपदेन 'नामैकदेशेन नाम ग्रहणम्' इति न्यायवलात् अन्यरुवृष्णिनराधिपो ग्रह्यते, तत्कुले ये, जातास्तेऽपि अन्धकवृष्णयो निगद्यन्ते, तेपा दशाः=अवस्थाश्चरितगतिसिद्धिगमनलक्षणा यासु ग्रन्थपद्धतिषु वर्ण्यन्ते तास्तथा (५), तत्र 'अन्तकृद्दशाङ्गस्य कल्पिका (निरया-वलिका) (१), अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य कल्पावतसिकाः (२), प्रश्नव्याकरणस्य पुष्पिकाः (ता) (३), विषाकमूत्रस्य पुष्पचूलिकाः (४), दृष्टिवादस्य वृष्णिदशाः (५) उपाङ्गानि विज्ञेयानि ॥ ५ ॥

(२) द्वितीय-कल्पावतसिका सूत्रमे सौधर्म आदि बारह देव-लोकोमें कल्पप्रधान इन्द्र सामानिक आदिकी मर्यादायुक्त-कल्पावतसक विमानोंका और तप विशेषसे उनमें उत्पन्न होने वाले देवोंको तथा उनकी ऋद्धिका वर्णन है ।

(३) तृतीय पुष्पिता सूत्रमें जिन्होंने सयम भावनासे विकसित हृदय होकर सयम लिया, पीछे उसके आराधनाका परित्याग करनेमें शिथिल होनेसे ग्लान अवस्थाको प्राप्त हुए और फिर सयमकी आ राधना करके पुष्पित और सुखी बने, उनका वर्णन है ।

(४) चौथे पुष्पचूलिकासूत्रमें-पूर्वोक्तार्थका ही विशेष वर्णन है ।

(५) पाँचवें-वृष्णिदशा सूत्रमें-अन्धकवृष्णि राजाके कुलमें उ त्पन्न होने वालोंकी अवस्था-चरित्र, गति और सिद्धिगमनका वर्णन है ।

(२) द्वितीय-कल्पावतसिका सूत्रमा सौधर्म आदि बारह देवलोका कल्प प्रधान इन्द्रसामानिक आदि मर्यादायुक्त कल्पावतसक विमानानु तथा तप विशेषशी तेभा उत्पन्न यनारा देवानु तथा तेमनी ऋद्धिनु वर्णन छे

(३) तृतीय-पुष्पिता सूत्रमा जेमछे सयम भावनाशी विकसित हृदयपूर्वक सयम लीधो, पीछे तेनी आराधनानो परित्याग करवामा शिथिल थछ जता ग्लान अवस्था प्राप्त थछ अने क्षरी सयमनी आराधना करी पुष्पित अने सुखी बन्या तेनु वर्णन छे

(४) चौथा पुष्पचूलिका-सूत्रमा अगाडि कहेला अर्थनुअ विशेष वर्णन छे

(५) पाँचमा वृष्णिदशा-सूत्रमा अन्धकवृष्णि राजा कुलमा उत्पन्न यनारनी अवस्था, चरित्र, गति तथा सिद्धिगमननु वर्णन छे

मूलम्—जड़णं भते । समणेणं जाव संपत्तेण उवंगाणंपंच  
वग्गा पन्नत्ता तं जहा निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ,  
पढमस्स णं भंते । वग्गस्स उवगाणं निरयावलियाणं समणेणं  
भगवया जाव सपत्तेणं कड अज्झयणा पन्नत्ता ? ॥ ६ ॥

उाथा—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन उपाद्धाना पञ्च  
वर्गा प्रज्ञप्ताः तद्यथा—निरयावलिका यावत् वृष्णिदशाः, प्रथमस्य खलु भदन्त !  
वर्गस्य उपाद्धाना निरयावलिकाना श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन कति  
अययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

टीका—‘जड़ण भते’ इत्यादि । अथ सोत्माह सविनय जम्बूस्वामी  
सुधर्मस्वामिनः पप्रच्छ—भदन्त—हे भगवन् ! यदि—यदा खलु—निश्चयेन यावत्=  
उक्तगुणवता सम्प्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन=दुश्चरतपश्चर्याप्रसिद्धेन भगवता  
महावीरेण उपाद्धाना पञ्चवर्गा प्रज्ञप्ताः निरूपिताः तद्यथा=तदेव दर्शयते—  
निरयावलिका इत्यारभ्य वृष्णिदशपर्यन्ता, तेषु हे भदन्त !—हे भगवन् निर-  
यावलिकानामुपाद्धाना प्रथमवर्गस्य श्रमणेन भगवता यावत्=उक्तगुणवता सम्प्रा-  
प्तेन=मोक्षगतेन कति=क्रियत्सरयकानि अययनानि प्रज्ञप्तानि ? ॥ ६ ॥

मूलम्—एव खलु जवू । समणेणं जाव सपत्तेण उवगाणं  
पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, त

निरयावलिका—अन्तकृद्दशाङ्गका उपाद्धाना । कल्पावतसिका—अ-  
नुत्तरोपपातिक दशाङ्गका । पुष्पिका—प्रश्नव्याकरणका । पुष्पचूलिका—  
विपाकसूत्रका । और वृष्णिदशा—दृष्टिवादका उपाद्धाना ॥ ६ ॥

‘जड़ण भते’ इत्यादि । हे भदन्त ! भगवान् महावीर प्रभुने नि-  
रयावलिका से लेकर वृष्णिदशा पर्यन्त उपाद्धानोंके पाँच वर्ग कहे उनमें  
भगवानने निरयावलिका के कितने अययन कहे हैं ? ॥ ६ ॥

निरयावलिका—अन्तकृद्दशाङ्गका उपाद्धाना, कल्पावतसिका—अनुत्तरोपपातिक  
दशाङ्गका, पुष्पिका—प्रश्नव्याकरणका, पुष्पचूलिका, और विपाक सूत्रका तथा, वृष्णिदशा, और  
दृष्टिवादका उपाद्धाना ॥ ६ ॥

‘जड़ण भते’ इत्यादि हे भदन्त ! भगवान् महावीर प्रभुने निरयावलिकाथी  
भाडीने वृष्णिदशा सुधीना उपाद्धाना पाच वर्ग कहे ताका भगवाने निरयावलिकाना  
केटवा अध्ययन कहे ॥ ६ ॥



जहा-काले १ सुकाले २ महाकाले ३ कण्हे ४ सुकण्हे ५  
तहा महाकण्हे ६ वीरकण्हे ७ य बोद्धव्वे रामकण्हे ८ तहेव  
य पित्तसेणकण्हे ९ नवमे दसमे महासेणकण्हे १० उ ॥ ७ ॥

जाया-एव खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन उपाङ्गानां प्रथमस्य  
वर्गस्य निर्यावलिकानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-कालः (१) सुकाल,  
(२) महाकाल, (३) कृष्णः (४) सुकृष्ण, (५) तथा महाकृष्ण, (६) वीर  
कृष्णश्च (७) बोद्धव्यः । रामकृष्ण\* (८) तथैव च पितृसेनकृष्णो नवम\* (९)  
दशमो महासेनकृष्णस्तु (१०) ॥ ७ ॥

टीका-सुधर्मास्वामी प्राह-‘एव खलु’ इत्यादि-हे जम्बू ! एव खलु  
यावत्=उत्तमगुणवता सम्प्राप्तेन सिद्धिगतिं गतेन, श्रमणेन=धीरपरीपद्मोपसर्ग  
सहनशीलेन भगवता महावीरेण निर्यावलिङ्गानामकोपाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य  
दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-काल\* (१), सुकालः (२), महाकाल (३),  
कृष्ण (४), सुकृष्ण\* (५), तथा महाकृष्ण (६), वीरकृष्ण\* (७), रामकृष्ण\*  
(८), तथैव च पितृसेनकृष्णः (९), नवम\* । दशमस्तु महासेनकृष्ण (१०)

बोद्धव्य इति सर्वत्रान्वेनि, विज्ञेय इति तदर्थः । काल्यादिशब्देभ्य  
इदमर्थेऽण्प्रत्यये कृते कालादयः शब्दा सिद्ध्यन्ति तथा काल्या\*तन्नाम्न्या

श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामीसे कहते हैं-‘एव खलु’  
इत्यादि ।

हे जम्बू ! श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त भगवानने निर्यावलिकाके  
दस अध्ययन कहे है, उन दस अध्ययननोके नाम इस प्रकार हैं :-  
(१) काल, (२) सुकाल, (३) महाकाल, (४) कृष्ण, (५) सुकृष्ण (६)  
महाकृष्ण, (७) वीरकृष्ण, (८) रामकृष्ण (९) पितृसेन कृष्ण, और  
(१०) महासेनकृष्ण ।

‘काली’ आदि शब्दोंसे-उसके सम्बन्धी अर्थमे ‘अण्’ प्रत्यय

श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामीने अहे छे — ‘एव खलु’ इत्यादि  
हे जम्बू ! श्रमण यावत् मोक्षप्राप्ति भगवाने निर्यावलिकानां दश अध्ययन  
कहे छे ओ दश अध्ययनना नाम आ प्रकारना छे —

(१) काल, (२) सुकाल, (३) महाकाल, (४) कृष्ण, (५) सुकृष्ण, (६) महाकृष्ण,  
(७) वीरकृष्ण, (८) रामकृष्ण, (९) पितृसेनकृष्ण तथा (१०) महासेनकृष्ण  
‘काली’ आदि शब्दोंसे तेना सम्बन्धी अर्थमे ‘अण्’ प्रत्यय कहे छे, जेथी

महाराज्या अय पुत्र इति काल । एव सर्वत्र विज्ञेयम् । अत्र 'कुमारे'ति सर्वत्र योजनीय यथा—'कालकुमार' इत्यादि, कालीकुमार इत्यर्थः ॥ ७ ॥

मूलम्—जडणं भते । समणेण जाव सपत्तेणं उवंगाण पढमस्स निरयावलियाण दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भते । अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अहे पन्नत्ते ? ॥ ८ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् समाप्तेन उपाद्धाना प्रथमस्य निरयावलिकाना दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य भदन्त ! अ ययनस्य निरयावलिकाना श्रमणेन यावत् समाप्तेन सोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? ॥ ८ ॥

टीका—'जडण भते' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! = हे भगवन् ! यावत् = पूर्वोक्तगुणवता समाप्तेन = मुक्ति लब्धवता, श्रमणेन भगवता महावीरेण निरयावलिकानामुपाद्ध्यस्य प्रथमस्य वर्गस्य दश अ ययनानि प्रज्ञप्तानि = निगदितानि हे भदन्त ! = हे भगवन् ! निरयावलिकाना प्रथमस्य अध्ययनस्य यावत् = पूर्वोक्तगुणवता समाप्तेन = मुक्ति लब्धवता श्रमणेन = भगवता महावीरेण सोऽर्थः प्रज्ञप्तः = प्रतिपादितः ?

अत्र सर्वत्र 'श्रमणेन' 'यावत्' 'समाप्तेन' इत्यादिपदाना पुन पुनरुपादानं भगवद्भक्तिराहुल्यसूचनाय ।

किया है, जिससे काली महारानीका पुत्र काल कुमार कहा जाता है, उसके चरित्रप्रतिबोधक अध्ययन भी काल-अध्ययन नामसे प्रसिद्ध है । इन प्रकार सब अध्ययनकी योजना समझना चाहिए ॥ ७ ॥

जम्बू स्वामीने सुधर्मा स्वामीसे फिर पूछा 'जडण भते' इत्यादि । हे भदन्त ! इन दस अध्ययनोंमें प्रथम—कालकुमार अध्ययनका भगवानने क्या अर्थ कहा ?

यहां सर्वत्र श्रमण आदि पदोंका पुन पुन उपादान किया है वह भगवानकी अतिशय भक्ति सूचनार्थ है । अथवा वाक्यभेदसे

जाली भट्टारानीना पुत्र कालकुमार कहैवाय छे तेनु चरित्रप्रतिबोधक अध्ययन पणु काल-अध्ययन नामथी प्रसिद्ध छे आ प्रकारे गद्या अध्ययननी योजना समझनी लेधये ॥७॥

जम्बू स्वामीने सुधर्मा स्वामीने वणी पूछथु—'जडण भते' इत्यादि छे लहत, ये दस अध्ययनोंमा प्रथम—कालकुमार अध्ययनको भगवाने शु अर्थ कहा? अही सर्वत्र श्रमण आदि पदोंका पुन पुन उपादान कर्यु छे, ते भगवानकी अतिशय भक्ति सूचनार्थ छे, अथवा वाक्य भेद थी सुनइकित होय न समझवो लेधये

યદ્વા-વાક્યભેદેન પુનરુક્તિર્ન વિજ્ઞેયા । અન્યચ મગવદ્ગુણાના સન્તત  
સ્મરણેન મઘ્યાનામન્યવિષયતો મનોનિવૃત્તિપૂર્વકોપાદેયવિષયાવધાનાર્થ પુનઃ પુનઃ  
કથન ગુણ એવેતિ ॥ ૮ ॥

અથ પ્રથમ કાલકુમાર વર્ણયતિ-‘એવ સ્વલુ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-એવ સ્વલુ જબ્ । તેણં કાલેણં તેણ સમણેણ ડહેવ  
જબ્બહીવે દીવે ભારહે વાસે ચપા નામં નયરી હોત્થા, રિહ્મ, પુન્નમ્મદે  
ચેહ્મણ, તત્થણ ચંપાણ નયરીણ સેણિયસ્સ રત્તો પુત્તે  
ચેહ્મણાણ દેવી અત્તણ કૂણિણ નામ રાયા હોત્થા, મહયા, ॥૧॥

છાયા-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ડહેવ જમ્બૂ  
દ્વીપે દ્વીપે ભારતે વર્ષે ચપા નામ નગરી અબૂત । ઋદ્ધ, પૂર્ણમ્મદ્ર ચૈત્યમ્,  
તત્ર સ્વલુ ચમ્પાયા નગર્યા શ્રેણિકસ્ય રાજ્ઞ ચેહ્મનાયા દેવ્યા આત્મજ રૂણિકો  
નામ રાજાઽમ્ભવત્, મહતા ॥ ૧ ॥

ટીકા-હે જમ્બૂ : ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ડહેવ=અસ્મિન્નેવ દેશત  
પ્રત્યક્ષ દૃશ્યમાને જમ્બૂદ્વીપે=તન્નામકમ યદ્વીપે ન પુનર્જમ્બૂદ્વીપાનામનન્તત્વાદન્ય-  
ત્રેતિ ભાવ । ભારતે વર્ષે=ભરતક્ષેત્રે=ભરતક્ષેત્રસ્ય મધ્યમદેશે ચમ્પા નામ નગરી

પુનરુક્તિદોષ નહી સમજના ચાહિયે । અથવા મગવાન કે ગુણોનો  
બાર બાર સ્મરણ કરનેસે મઘ્યોં ના અન્ય વિષયસે મનોવૃત્તિ ના  
નિરોધ હોજાતા હૈ । ઉપાદેય વિષયમે સાવધાન હોનેકે લિયે પુન  
પુનઃ ડહ્મી શબ્દોના ઉચ્ચારણ કિયા હૈ અર્થાત્ ડહ્મી પદોના બાર  
બાર શ્રવણ કરનેસે ઉપાદેય વિષય પર ચિત્ત અદ્વાલુ હોજાતા હૈ ॥૮॥

યદ્વા પ્રથમ કાલ કુમારના વર્ણન કરતે હૈ—

શ્રી સુધર્માસ્વામી શ્રી જમ્બૂસ્વામી સે કહ્તે હૈ—‘ એવ સ્વલુ ’  
ઇત્યાદિ ।

હે જમ્બૂ ! ત્વ કાલ ત્વ સમય હસી હી-મધ્ય જમ્બૂ દ્વીપ

અથવા મગવાનના શુભોાનુ વાર વાર સ્મરણ કરવાથી મઘ્યોની ખીલા વિષયથી મનોવૃત્તિનો  
નિરોધ થઈ જાય છે ઉપાદેય વિષયમા સાવધાન થવા માટે ફરી ફરી તે શબ્દોનુ  
ઉચ્ચારણ કર્યું છે અર્થાત્ તેના તે શબ્દો વાર વાર શ્રવણ કરવાથી ઉપાદેય વિષયમા  
ચિત્ત અદ્વાલુ થઈ જાય છે ॥ ૮ ॥

અહિ પહેલા કાલકુમારનુ વર્ણન કરે છે -

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જમ્બૂ સ્વામીને કહે છે - ‘ એવ સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ

હે જમ્બૂ ! તે કાલ તે સમય આજ મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમા ભરતનામે ક્ષેત્ર છે તેના

अभूत् 'ऋदस्तिमितसमृद्धा' ऋद्धा=नभःस्पर्शितहुलप्रासादयुक्ता बहुलजनसङ्कुला च, स्तिमिता=स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धन-धान्यादिपरिपूर्णा, अत्र त्रि-पदकर्मधारयः ।

तत्रेशानकोणे पूर्णमद्र नाम चैत्यम्=व्यन्तरायतनम् उद्यानमिति वा आसीदिति शेषः । तत्र खलु चम्पानगर्या त्रेणिकस्य=तन्नामकस्य, राज्ञः पुत्रः चेलनायाः=तन्नाम्न्या देव्या=राज्ञ्याः आत्मजः=भद्रजातः कृणिको नाम राजा अभवत् । 'महता' शब्देन-'महयाहिमवतमहतमलयमदरमहिन्दमारे' अञ्चतविमुद्ध-दीहरायकुलवससृप्पमृष्ट, निरतर रायल्लवणविराडयगमगे मीमधरे मणुस्सिन्दे, पुरिससीहे, पसतडिण्डवररज्ज पसाहेमाणे विहरइ' इत्यादीना सङ्ग्रहः । छाया-महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रमारः, अत्यन्तविशुद्धदीर्घराजकुलवगसुप्रसूतः, नि-रन्तर राजलक्षणधिराजिताङ्गाङ्गः, सीमन्तरः, मनुष्येन्द्रः, पुरुषसिंह, प्रशान्त-हिम्वदम्बर राज्य प्रमाधयन् विहरति ।

राजवर्णनमाह-'महाहिमव'दित्यादिना-महाश्वासा हिमवान् महा हिम-वान् स इव महान् जेपराजपर्वतापेक्षया, मलयो=मलयाचल, मन्दरो=मेरुगिरिः, महेन्द्रः=सुरपतिः पर्वतविशेषो वा, तद्वत्सारः=प्रवानो यस्तथा, अत्यन्तविशुद्धः=अतिनिर्मलः दीर्घः=चिरकालीनो राजा कुलरूपो वशस्तत्र प्रसूतः=जातः अति-

में भरत नामका क्षेत्र है, उसके मध्य भागमें चम्पा नामकी नगरी गगनचुम्बी प्रासादों से अलङ्कृत स्वचक्र परचक्रका भय रहित और धनधान्य आदि से सम्पन्न थी । उसके ईशान कोणमें पूर्णमद्र नामका व्यन्तरायतन था । उस चम्पानगरीमें त्रेणिक राजाके पुत्र कोणिक राजा राज्य करते थे जो चेलना महारानीके गर्भसे जन्मे थे ।

कोणिक राजाका वर्णन इस प्रकार है-महा हिमवान पर्वतके समान थे अर्थात्-शेष अन्य राजा रूप पर्वतोंसे बड़े चढ़े थे । मलय पर्वत और महेन्द्र पर्वत के समान श्रेष्ठ थे, अत्यन्त निर्मल प्राचीन

मध्य भागमा यथा नामनी नगरी आकाशम्पर्शी भवनाथी शैलित स्वयम् अङ्क लय रहित अने धन धान्य आदिथी स पद्म हुती तेना छशान कोणुमा पूषुल्ल नामे व्यतदायतन हुतु ते यथा नगरीमा त्रेणिके राजाना पुत्र कोणिके राजा राज्य करता हुता, जे चेलणा महाराणीना गर्भथी जन्म्या हुता

कोणिक राजानु वर्णन आ प्रकारे छे -

महा हिमवान पर्वत समान हुता अर्थात् शेष अन्य राजा रूपी पर्वतोंथी मोटा हुता मलय पर्वत अने महेन्द्र पर्वतना समान श्रेष्ठ हुता अत्यन्त निर्मल

યદ્વા-વાચ્યમેદેન પુનરુક્તિર્ન વિજ્ઞેયા । અન્યચ્ચ ભગવદ્ગુણાના સન્તત સ્મરણેન મન્યાનામન્યવિષયતો મનોનિવૃત્તિપૂર્વકોપાદેયવિષયાવધાનાર્થ પુનઃ પુનઃ કથન ગુણ એવેતિ ॥ ૮ ॥

અથ પ્રથમ કાલકુમાર વર્ણયતિ-‘એવ સ્વલુ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-એવં સ્વલુ જંબૂ । તેણં કાલેણં તેણ સમણેણ ઇહેવ જંબૂદીપે દીપે ભારહે વાસે ચપા નામં નયરી હોત્થા, રિહ્મ, પુત્તમહે ચેહ્મ, તત્થણ ચંપાણ નયરીણ સેણિયસ્સ રત્તો પુત્તે ચેહ્મણાણ દેવી અત્તણ કૂણિણ નામ રાયા હોત્થા, મહયા, ॥૧॥

ઢાયા-એવ સ્વલુ જમ્બૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ઇહેવ જમ્બૂ દ્વીપે દ્વીપે ભારતે વર્ષે ચપા નામ નગરી અભૂત । ઋદ્ધ, પૂર્ણમદ્ર ચૈત્યમ્, તત્ર સ્વલુ ચમ્પાયા નગર્યા ગ્રેણિકસ્ય રાજ ચેહ્મનાયા દેવ્યા આત્મજ. કૂણિકો નામ રાજાઽભવત્, મહતા ॥ ૧ ॥

ટીકા-હે જમ્બૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ઇહેવ=અસ્મિન્નેવ દેશત. પ્રત્યક્ષ દૃશ્યમાને જમ્બૂદ્વીપે=તન્નામકમ યદ્વીપે ન પુનર્જમ્બૂદ્વીપાનામનન્તત્પ્રાદન્ય ત્રેતિ માત્ર । ભારતે વર્ષે=ભરતક્ષેત્રે=ભરતક્ષેત્રસ્ય મધ્યપ્રદેશે ચમ્પા નામ નગરી

પુનરુક્તિદોષ નહીં સમજના ચાહિયે । અથવા ભગવાન કે ગુણોંકો ચાર ચાર સ્મરણ કરનેસે મન્યોં કા અન્ય વિષયસે મનોવૃત્તિ કા નિરોધ હોજાતા હૈ । ઉપાદેય વિષયમે સાવધાન હોનેકે લિયે પુનઃ પુનઃ ઝઢ્ઢી શબ્દોંકા ઉચ્ચારણ કિયા હૈ અર્થાત્ ઝઢ્ઢી પદોંકા ચાર ચાર શ્રવણ કરનેસે ઉપાદેય વિષય પર ચિત્ત શ્રદ્ધાલુ હોજાતા હૈ ॥૮॥

યદ્વા પ્રથમ કાલ કુમારકા વર્ણન કરતે હૈ—

શ્રી સુધર્માસ્વામી શ્રી જમ્બૂસ્વામી સે કહતે હૈ—‘ એવ સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ ।

હે જમ્બૂ ! ઝસ કાલ ઝસ સમય ઇસી હી-મધ્ય જમ્બૂ દ્વીપ

અથવા ભગવાનના શુભોંતુ વાર વાર અમરણ કરવાથી અન્યોંની ધીમ્લ વિષયથી મનોવૃત્તિનેા નિરોધ થઈ જાય છે ઉપાદેય વિષયમા સાવધાન થવા માટે ફરી ફરી તે શબ્દોંતુ ઉચ્ચારણ કર્યું છે અર્થાત્ તેના તે શબ્દો વાર વાર શ્રવણ કરવાથી ઉપાદેય વિષયમા ચિત્ત શ્રદ્ધાલુ થઈ જાય છે ॥ ૮ ॥

અહિ પહેલા કાલકુમારતુ વર્ણન કરે છે -

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જમ્બૂ સ્વામીને કહે છે - ‘ એવ સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ

હે જમ્બૂ ! તે કાલ તે સમય આજ મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમા ભરતનામે ક્ષેત્ર છે જેના

यस्या सा तथा, सोमल्लरचरणयुक्ता, अत्र-‘यावत्’ शब्देन-‘अहीनपर्विन्दिय मरीरा, लक्षणवज्रगुणोपवेया, माणुष्माण्ण्यमाणपडिपुण्णसुजायमव्वगमुदरगा, ससिसोमाकारा, कान्ता, पियदसणा, सुम्मा’ इत्यन्तविशेषणानामन्यत्रोक्ताना समन्वयो योद्धव्यः । एषा छाया-अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा, लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता, मानोन्मानप्रमाणपरिपूर्णसुजातमर्गादसुन्दरानी, शशिसोम्याकारा, कान्ता, पिय-दर्शना, मुरुपा, इति ।

अथैतानि विशेषणानि प्रतिपद व्याचक्ष्महे-अहीनानि=लक्षणस्वरूपाः या परिपूर्णानि पञ्च इन्द्रियाणि यस्मिंस्तादृश शरीर यस्याः सा अहीनपञ्चेन्द्रिय-शरीरा-स्वस्वविषयग्रहणसमर्थपूर्णाकारच-नुरादीन्द्रियशिशिटेत्यर्थः, ‘लक्षणे’ ति लक्ष्यन्ते=चिह्नयन्ते यैस्तानि लक्षणानि=स्त्रीचिह्नानि इत्यन्वयिद्यानर्जायितरेणा रूपाणि वा, व्यज्यन्ते यैस्तानि व्यञ्जनानि=मपतिलकादीनि, गुणा=सौशील्य-पातिव्रत्यादयो, यद्वा - प्रोक्तप्रकारैर्लक्षणैर्व्यज्यन्ते इति लक्षणव्यञ्जनानि च

रानी यी । ‘सुकुमालपाणिपाया’ जिसके हाथ पैर अत्यन्त कोमल थे । ‘अहीनपर्विन्दियसरीरा’ लक्षण और स्वरूपसे परिपूर्ण (पूरी) पांच इन्द्रिया सहित शरीर वाली श्री, अर्थात् जिनकी चक्षु आदि पाचों इन्द्रियाँ अपने-अपने विषय ग्रहण करनेमें पूर्ण सावधान, तथा-यथायोग्य आकार वाली यी ।

‘लक्षणवज्रगुणोपवेया’ जिनके द्वारा पहचान होती है उनको लक्षण (चिह्न) कहते हैं । अथवा हाथ आदिमें गनी हुई विद्या वन जीवन आदिकी रेखाओंको लक्षण कहते हैं । जिनके द्वारा अभिव्यक्ति (प्रगटपन) होती है, उन तिल और मस आदि को व्यञ्जन कहते हैं, सुशीलता पतिव्रतता आदि गुण हैं, इन तीनों से जो स्त्री युक्त हो उसे लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं, अथवा लक्षणोंके द्वारा व्यक्त

‘सुकुमालपाणिपाया’ नेना हाथ पग अत्यन्त कोमल हुता

‘अहीनपर्विन्दियसरीरा’ लक्ष्ण तथा अवउपथी परिपूर्ण पाय छद्रियो अहित गरीरवाणी हुती अर्थात् नेनी चक्षु आदि पाये छद्रियो पाय येनाना अहुषु करवामा पूर्ण सावधान तथा यथायेव आकारवाणी हुती

लक्षणवज्रगुणोपवेया’ नेनाथी ओणणाय तेने लक्ष्ण अहे छे अथवा हाथ आदिमा भनेसी विद्या धन आदिनी रेणाओने लक्ष्ण (चिह्न) अहे छे नेना हाण अलिअङ्गिन (प्रगटपणु) थाय छे ते तल अथवा मस आदिने व्यञ्जन अहे छे सुशीलता पतिव्रतपणु आदि गुणु छे आ अण्णुथी ने श्री युक्त होय तेने लक्षणव्यञ्जनगु-णोपपेता अहे छे अथवा लक्ष्णो द्वारा व्यक्त होवावाणा अण्णुने लक्ष्ण व्यञ्जन गुणु

निर्मलचिरन्तनराजकुलसमुत्पन्नः, निरन्तर=सर्वदा, राज्ञां लक्षणानि=स्वस्तिकचक्र  
चक्रादीनि तैः विराजित=शोभितमहाङ्ग=प्रत्यङ्ग यस्य स तथा, सामुद्रिकशास्त्र-  
प्रतिपादितराजलक्षणोपेतशरीर इत्यर्थः, 'सीमन्धरः' राजमर्यादापालकः 'मनु-  
ष्येन्द्र'=मनुष्येषु=नरेषु इन्द्र इव ऐश्वर्यवान्, 'पुरुषसिंहः'=पुरुषेषु सिंह इव  
शूर=शत्रून् प्रति अप्रतिहतवीर्यवान्, 'प्रशान्ते' ति-प्रशान्तानि डिम्बानि=अति  
वृष्ट्यनाट्टट्टिमृपङ्गलभशुकात्यासन्नराजरूपा पिप्पलाः, डम्बरानि=परस्परराजमजा-  
विरोधरूपक्लेशा यत्र, तथाभूत राज्य प्रसाधयन्=परिपालयन् विहरति=तिष्ठति ॥९॥

मूलम्—तस्स ण कूणियस्स रत्तो पडमावई नामं देवी  
होत्था, सोमालपाणिपाया जाव विहरइ ॥ १० ॥

जाया-तस्य खलु कूणिकस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी अभवत्, सु-  
कुमारपाणिपादा यावत् विहरति ॥ १० ॥

टीका—'तस्सण' इत्यादि-तस्य कूणिकस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी  
अभवत्, तस्या वर्णनमाह—'सुकुमारपाणिपादा' सुकुमार=कोमल पाणिपाद

राजवशमे जन्मे थे। जिनके शरीर के प्रत्येक अवयवमे स्वस्तिक,  
शङ्ख, चक्र आदि राजचिह्न यथास्थान स्थित थे। राजमर्यादाके पालक  
थे। ऐश्वर्यसम्पन्न होनेसे मनुष्योंके इन्द्र थे। और शत्रुओंको अप्रति  
हत शक्ति द्वारा जीतनेसे पुरुषमे सिंहके समान थे। जिनका राज्य  
अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मृषक चूहे, शालभ-टिड्डियाँ, शुक-तोते तथा  
राजाओ का युद्धादिके कारण गाव के समीप निवास करना, इन  
उह प्रकार की ईतियो=उपद्रवोंसे मुक्त था। एसे राज्यका पालन  
महाराज कोणिक करते थे। ॥ ९ ॥

'तस्मण' इत्यादि। महाराज कोणिकके पद्मावती नामक महा-

प्राचीन राज्यवशमा जन्म्या हुता जेना शरीरना प्रत्येक अवयवमा स्वस्तिक, शङ्ख,  
चक्र आदि राजचिह्न योग्य ठाक्यो रहेला हुता राजमर्यादाना पालक हुता ऐश्वर्य  
मपन होवाथी मनुष्योना इन्द्र हुता तथा शत्रुजोने अप्रतिहत शक्ति द्वारा हतवाथी  
पुरुषमा सिंहसमान हुता जेतु राज्य अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मृषक (उदरे), शलभ  
(तीड), शुक (पोपट) तथा राजजोना युद्ध आदिना कारणे गामनी नलुक निवास करेला,  
ओ छ प्रकारनी धति ओले उपद्रवथी मुक्त छतु ओवा राज्यनु पालन महाराज  
कोणिक करता हुता ॥ ९ ॥

'तस्मण' इत्यादि महाराज कोणिकके पद्मावती नामकी महाराणी हुती

यस्या मा तथा, कोमलरचरणयुक्ता, अत्र-‘यावत्’ शब्देन-‘अहीनपचिंदिय मरीरा, लक्षणवज्रगुणोववेया, माणुम्माणप्यमाणपडिपुण्णमुजायसव्वगसुदरगा, ससिसोमाकारा, काना, पियदसणा, मुरुवा’ इत्यन्तविशेषणानामन्यत्रोक्तानां समन्वयो जोद्धव्यः । एषा छाया-अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा, लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता, मानोन्मानप्रमाणपरिपूर्णमुजातमर्गद्वन्द्वराज्ञी, शशिसोम्याकारा, कान्ता, पियदर्शना, मुरुवा, इति ।

अथैतानि विशेषणानि प्रतिपद व्याचक्ष्महे-अहीनानि=लक्षणस्वरूपाया परिपूर्णानि पञ्च इन्द्रियाणि यस्मिन्तादृश शरीर यस्याः सा अहीनपञ्चेन्द्रिय-शरीरा-स्वरूपविषयग्रहणसमर्थपूर्णाकारचक्षुरादीन्द्रियविशिष्टत्यर्थः, ‘लक्षणो’ ति व्यज्यन्ते=चिह्नयन्ते यैस्तानि लक्षणानि=स्त्रीचिह्नानि अतएव विद्यामनजीवितरेणा रूपाणि वा, व्यज्यन्ते यैस्तानि व्यञ्जनानि=मपतिरूपादीनि, गुणा=सौजीव्य-पातिव्रत्यादयो, यडा - पूर्वोक्तप्रकारैर्लक्षणैर्व्यज्यन्ते इति लक्षणव्यञ्जनास्ते च

रानी यी । ‘सुकुमात्पाणिपाया’ जित्तके हाथ पैर अत्यन्त कोमल ये । ‘अहीनपचिंदियसरीरा’ लक्षण और स्वरूपसे परिपूर्ण (पूरी) पाँच इन्द्रिया सहित शरीर वाली यी, अर्थात् जित्तकी चक्षु आदि पाचों इन्द्रिया अपने-अपने विषय ग्रहण करनेमें पूर्ण सावधान, तथा-यथायोग्य आकार वाली यी ।

‘लक्षणवज्रगुणोववेया’ जिनके द्वारा पहचान होती है उनको लक्षण (चिह्न) कहते हैं । अथवा हाथ आदिमें ननी हुई विद्या धन जीवन आदिकी रेखाओंको लक्षण कहते हैं । जिनके द्वारा अभिव्यक्ति (प्रगटपन) होती है, उन तिल और मस आदि को व्यञ्जन कहते हैं, सुशीलता पतिव्रतता आदि गुण हैं, इन तीनों से जो स्त्री युक्त हो उसे लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कहते हैं, अथवा लक्षणोंके द्वारा व्यक्त

‘सुकुमात्पाणिपाया’ नेना हाथ पैर अत्यन्त कोमल हुता

‘अहीनपचिंदियसरीरा’ लक्षण तथा व्यञ्जयथी परिपूर्ण पाच इन्द्रियो सहित शरीरवाणी हुती अर्थात् नेनी चक्षु आदि पाचो इन्द्रियो पाच पोमाना अक्षु करवाभा पूर्ण सावधान तथा यथाये व्य आकारवाणी हुती

‘लक्षणवज्रगुणोववेया’ नेनाथी ओणभाय तेने लक्षण कडे छे अथवा हाथ आदिमा भनेसी विद्या धन आदिनी रेणायेने लक्षण (चिह्न) कडे छे नेना द्वारा अभिव्यक्ति (प्रगटपण) थाय छे ते तव अथवा मस आदिने व्यञ्जन कडे छे सुशीलता पतिव्रतपण आदि गुण छे आ त्रयेथी ने श्री युक्त होय तेने लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता कडे छे अथवा लक्षणो द्वारा व्यक्त होवावाणा शुभोने लक्षण व्यञ्जन गुण



ગુણાઃ, અથવા-પ્રોક્તસ્વરૂપાણા લક્ષણવ્યજ્ઞનાના યે ગુણાસ્તૈઃ, ઉપપેતા=સમ  
ન્નિના, અત્ર 'ઉપ' 'અપ'ઇત્યુપસર્ગયોઃ શકન્ધ્વાદિત્વાત્પરરૂપમ્ ।

હસ્તસ્થપ્રધાનરેખાલક્ષણાનિ યથા—

“જસ્સ હવહ્ મહુરેહો, હત્થો અહવા રઠ્ઠિયસયલરેહો ।

સો અપ્પાઝ અહણો, તહા દુહી લક્ષણન્નુણિન્દિહો ॥ ૧ ॥

एगेगगुलिमज्जे, होई पणवीसवच्छर आऊ ।

जाणह जीवियरेह, जा य कणिट्ठगुलीमूला ॥ २ ॥

करहाओ वणरेहा, मणिवधत्तो तहेव पिउरेहा ।

गया सठ्ठा पुण्णा, हवति चे आउगोत्तधणलाहो ॥ ३ ॥”

ઝાયા-યસ્ય ભવતિ મહુરેહો, હસ્તોઽથવા રઠિતસકલરેહઃ ।

સોઽપ્પાયૂરધનસ્તથા દુઃખી લક્ષણૈર્નિર્દિષ્ટ ॥ ૧ ॥

एकैकाङ्गुलिमभ्ये, भवति पञ्चविंशतिवत्सरमायुः ।

जानत जीवितरेखा, या च कनिष्ठाङ्गुलीमूलात् ॥ २ ॥

હોને વાલે ગુણોંકો લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણ કહતે હૈં, ઓર ઇનસે યુક્ત સ્ત્રીકો-  
લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહતે હૈં, અથવા પૂર્વોક્ત લક્ષણો ઓર વ્યજ્ઞ  
નોંકે ગુણોંકો લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણ કહતે હૈં, ઓર ઇનસે યુક્ત સ્ત્રીકો  
લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહતે હૈં । મહારાણી પન્નાવતી ઇન ગુણોં સે યુક્ત થી ।

હાથ કી પ્રધાન રેખાઓંકે લક્ષણ ઇસ પ્રકાર હૈં-જિસકે હાથમે  
બહુત રેખાઈ હૈં યા ધિલ્લુલ રેખાઈ ન હૈં વે અલ્પાયુ વાલે નિર્ધન  
ઓર દુઃખી હોતે હૈં, એસે, લક્ષણકે જાનને વાલે કહતે હૈં ॥ ૧ ॥

જો રેખા કનિષ્ઠ અંગુલીકે મૂલસે નિકલતી હૈં વહ જીવન-  
આયુ-કી રેખા હૈં । એક-એક અંગુલીમે પચીસ-પચીસ વર્ષકી આયુ  
હોતી હૈં, અર્થાત્ યદિ આયુકી રેખા ઇક અંગુલ તક હૈં તો (૨૫)

કહે છે તથા તેનાથી યુક્ત જે સ્ત્રી હોય તેને લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહે છે અથવા  
પૂર્વોક્ત લક્ષણો તથા વ્યજ્ઞનાના ગુણોને લક્ષણ વ્યજ્ઞન ગુણ કહે છે તથા તેનાથી યુક્ત  
જે સ્ત્રી હોય તેને લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહે છે મહારાણી પન્નાવતીમા આ ગુણો હતા

હાથની મુખ્ય મુખ્ય રેખાઓના લક્ષણ આ પ્રકારના છે-જેના હાથમા બહુ  
રેખાઓ હોય અથવા બિલકુલ રેખા ન હોય તે અલ્પ આયુવાળા, નિર્ધન તથા દુઃખી  
હોય છે એમ લક્ષણના બાણવાવાળા કહે છે ।

જે રેખા ટચલી આગળીના મૂળથી નીકળે છે તે જીવન-આયુની રેખા છે એક  
એક આગળીમા પચીસ-પચીસ વર્ષની આયુ હોય છે અર્થાત્ જે આયુની રેખા એક  
આગળી મુખી હોય તો પચીસ વર્ષની આયુ, એ દિસામે આગળ પચીસમ જ લેવું એમ (૨)

करभाङ्गनरेखा, मणिवन्धात्तयैव पितृरेखा ।

एताः सर्वाः पूर्णा, भवन्ति चेदायुर्गोत्रधनलाभः ॥ ३ ॥ इति ।

‘माने’ति-मीयते-परिच्छिद्यते पदार्थोऽनेनेति मान, तुलादगुलीप्रस्था-  
दिना तोलन, यद्वा-जलादिपरिपूर्णकुण्डादिप्रविष्टे पुरुषादौ यदा द्रोणपरिमित  
जलादि निस्सरति तदा स पुरुषादिमानवानित्युच्यते तदेव, उन्मानम्=ऊर्ध्व-  
मान, यद्वा-अर्द्धभाररूपः परिमाणविशेषः, प्रमाण=सर्वतो मान, यद्वा-निजा-  
अगुलीभिरष्टोत्तरशतादगुलिपरिमितोच्छ्रायः, इत्थ च-मान चोन्मान च प्रमाणं  
चेत्येषा द्वन्द्वे मानोन्मानप्रमाणानि, तैः परिपूर्णानि=सम्पन्नानि, अत एव सु-

पच्चीस वर्षकी आयु, दो अगुली तक हो तो (५०) पचास वर्षकी  
आयु, इस हिसाबसे आगे समझना चाहिये ॥ २ ॥

धन की रेखा करम-गुहेसे निकलती है और मणिवन्ध (करके  
मूल) से पितृरेखा फूटती है। यदि ये मय रेखाएँ पूर्ण हो तो आयु  
गात्र प्रतिष्ठा और धनका लाभ होता है ॥ ३ ॥

“माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णमुजायसव्वगसुदरगा” जिसके द्वारा पदार्थ  
मापा जाय उसे मान कहते हैं, अर्थात् तराजू अगुली सेर छटांक  
आदिके द्वारा तोलना, अथवा कोई पुरुष आदि जलसे सपूर्ण भरे हुए  
कुण्ड (शरीरप्रमाण गहरा, शरीरप्रमाण लम्बा व शरीरप्रमाण चौड़ा)  
आदि में घुसे और उसके घुसनेसे एक द्रोण-(परिमाणविशेष) जल  
बाहर निकले तो, उस पुरुष आदिको मानयुक्त कहते हैं। मान-  
शब्दसे इसीका ग्रहण करना चाहिए। मान से अधिकको अथवा  
अर्धभार रूप परिमाण को उन्मान कहते हैं। सर्वतोमान को, अथवा  
अपने अगुलीसे (१०८) एक सौ आठ अगुली ऊँचाईको प्रमाण कहते

धननी रेखा करम-गुहाथी निकले छे तथा मणिवन्ध (काटना मूलथी) पितृरेखा फूटे  
छे जे आ जभी रेखाजो पूर्ण होय तो आयु, गोत्र, प्रतिष्ठा तथा धनने लाभ याय छे (३)

“माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णमुजायसव्वगसुदरगा” जेना द्वारा पदार्थ मापी  
शकय तेने मान कह्ये छे अर्थात् तराजू, आगण, सेर, छटांक आदिना द्वारा तोलवु  
अथवा कछ पुरुष वजेरे जलथी सपूर्ण भरेला कुण्डादि (शरीर नेटली छेला तथा लाभो  
पछोणो)मा पेसे अने तेना पेसवाथी जेक द्रोण (परिमाण-विशेष) जल जहार निकले  
तो ते पुरुष आदिने मानयुक्त कह्ये छे मान शब्दथी आब बात सभजयी जेछजे  
मानथी अधिकने अथवा अर्धभार रूप परिमाणने उन्मान कह्ये छे, सर्वतोमानने अथवा  
पैतानी आगणीथी (१०८) जेकसे आठ आगणी छियाधने प्रमाण कह्ये छे आ मान

ગુણાઃ, અથવા-પ્રોક્તસ્વરૂપાણા લક્ષણવ્યજ્ઞનાના યે ગુણાસ્તૈઃ, ઉપપેતા=સમ  
ન્નિના, અત્ર 'ઉપ' 'અપ'ઇત્યુપસર્ગયોઃ શકન્ધ્વાદિત્વાત્પરરૂપમ્ ।

હસ્તસ્થપ્રધાનરેખાલક્ષણાનિ યથા—

“જસ્સ દવ્વ ડહુરેહો, હત્થો અહવા રહિયસયલરેહો ।  
સો અપ્પાઝ અઢ્ઢણો, તઢા દુહી લક્ષણન્નુણિન્દિહો ॥ ૧ ॥

એગેગુલિમજ્જે, હોઈ પળવીસવચ્છર આઝ ।  
જાણહ જીવિયરેહ, જા ય કણિદ્વગુલીમૂલા ॥ ૨ ॥

કરઢાઓ ધળરેહા, મણિવધત્તો તહેવ પિરેરેહા ।  
પયા સઢવા પુળ્લા, હવતિ ચે આઝગોત્તધળલાહો ॥ ૩ ॥”

છાયા-યસ્ય ભવતિ વહુરેસો, હસ્તોઽથવા રહિતસકલરેસઃ ।  
સોઽત્પાયૂરધનસ્તથા દુઃસ્વી લક્ષણઙ્ગૈર્નિર્દિષ્ટ' ॥ ૧ ॥

એકૈકાઙ્ગુલિમધ્યે, ભવતિ પશ્ચર્વિંશતિવત્સરમાયુઃ ।

જાનત જીવિતરેસા, યા ચ કનિષ્ઠાઙ્ગુલીમૂલાત્ ॥ ૨ ॥

હોને વાલે ગુણોકો લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણ કહતે હૈં, ઓર ઇનસે યુક્ત સ્ત્રીકો-  
લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહતે હૈં, અથવા પૂર્વોક્ત લક્ષણો ઓર વ્યજ્ઞ  
નોકે ગુણોકો લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણ કહતે હૈં, ઓર ઇનસે યુક્ત સ્ત્રીકો  
લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહતે હૈં । મહારાની પદ્માવતી ઇન ગુણો સે યુક્ત થી ।

હાથ કી પ્રધાન રેખાઓકે લક્ષણ ઇસ પ્રકાર હૈં-જિસકે હાથમેં  
વહુત રેખાઈ હૈં યા ચિત્કુલ રેખાઈ ન હૈં વે અલ્પાયુ વાલે નિર્ધન  
ઓર દુઃસ્વી હોતે હૈં, એસે, લક્ષણકે જાનને વાલે કહતે હૈં ॥ ૧ ॥

જો રેખા કનિષ્ઠ અંગુલીકે મૂલસે નિકલતી હૈ વહ જીવન-  
આયુ-કી રેખા હૈ । એક-એક અંગુલીમેં પચીસ-પચીસ વર્ષકી આયુ  
હોતી હૈ, અર્થાત્ યદિ આયુકી રેખા એક અંગુલ તક હૈ તો (૨૫)

કહે છે તથા તેનાથી યુક્ત ને સ્ત્રી હોય તેને લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહે છે અથવા  
પૂર્વોક્ત લક્ષણો તથા વ્યજ્ઞનોના ગુણોને લક્ષણ વ્યજ્ઞન ગુણ કહે છે તથા તેનાથી યુક્ત  
ને સ્ત્રી હોય તેને લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપપેતા કહે છે મહારાણી પદ્માવતીમા આ ગુણો હતા

હાથની મુખ્ય મુખ્ય રેખાઓના લક્ષણ આ પ્રકારના છે-જેના હાથમા બહુ  
રેખાઓ હોય અથવા બિલકુલ રેખા ન હોય તે અત્પ આયુવાળા, નિર્ધન તથા દુઃખી  
હોય છે એમ લક્ષણના બાલુવાળા કહે છે ૧

ને રેખા દરેકી આગળીના મૂળથી નીકળે છે તે જીવન-આયુની રેખા છે એક  
એક આગળીમા પચીસ-પચીસ વર્ષની આયુ હોય છે અર્થાત્ ને આયુની રેખા એક  
આગળી મુખી હોય તો પચીસ વર્ષની આયુ, એ દિગાને આગળ પલસમજ લેવું એમ (૨)

आया-तत्र सल्ल चम्पाया नगर्या श्रेणिस्य राज्ञः भार्या कृणिस्य राज्ञः  
सुलमाता माली नाम देवी अभवत्, मुकुमारपाणिपादा, यावत् मुरुपा ॥११॥

टीका-‘तत्पण’ इत्यादि-तत्र = तस्या चम्पाया नगर्या ‘सल्ल’ इति  
वाक्यालङ्कारे, श्रेणिस्य राज्ञः भार्या=पट्टरात्री कृणिस्य राज्ञः सुलमाता=लघु-  
जननी माली नाम देवी मुकुमारपाणिपादेति पूर्ववत्, अभवत्, पुनः सा कीदृशी?  
ति विशेषवर्णनमाह-‘कौमुदिरयणिरत्रिमल्लपडिपुन्नसोमवयणा, कुडलुल्लिखितगण्डलेहा,  
मिंगारागारचारुवेसा’ आया-कौमुदीरजनिमरत्रिमल्लपरिपूर्णसोम्यवदना, कुण्डलो-  
ल्लिखितगण्डरेखा, शृङ्गारागारचारुवेसा, एतेषा विशेषणानामेव व्याख्या-तथाहि  
‘कौमुदी’ति-‘कु’शब्देन मही प्रोक्ता, ‘मुद’ हर्षे ततो द्वयम् । धातुनैर्नियमैश्चैव,  
तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥

सौ पृथिव्या मोदत इति, जन्तुर्भाषितव्यर्थत्वाद् हर्षयति प्राणिन इति  
कुमुदश्चन्द्रस्तस्येय कौमुदी आश्विन-कार्तिकपूर्णिमाचन्द्रिना, तत्प्रधानो यो रज-

‘तत्पण’ इत्यादि । अत्र चम्पा नगरीमें श्रेणिक राजाकी पट्टरात्री  
कोणिक राजाकी लघुमाता माली नामकी देवी सुकुमाल कर-चरणवाली  
यावत् मुरुपा थी ।

फिर इन्हीं काली स्त्री का वर्णन करते हैं—

‘कौमुदिरयणिरत्रिमल्लपडिपुन्नसोमवयणा’

कौमुदी शब्दका अर्थ इस प्रकार है—

“‘कु’ शब्देन मही प्रोक्ता, ‘मुद’ हर्षे, ततो द्वयम् ।

धातुनैर्नियमैश्चैव, तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥”

‘कु’ शब्दका अर्थ पृथिवी है, ‘मुद’ शब्दका अर्थ हर्षित  
करना है, जो पृथ्वीमें रहे हुए जनोको आनन्द उत्पन्न करे उसको कौमुदी  
कहते हैं । कौमुदी याने आश्विन कार्तिक मास रूप शरद ऋतुकी

‘तत्पण’ इत्यादि ते अया नगरीमा श्रेष्ठि राज्ञनी पट्टरात्री कोणिक राज्ञनी  
लघुमाता माली नामे देवी मुकुमाल हाथ पगवाणी गहु अवयवान हती  
यणी ते माली देवीनु वर्णन करे छे—

‘कौमुदिरयणिरत्रिमल्लपडिपुन्नसोमवयणा’

कौमुदी शब्दको अर्थ आवे छे—

“‘कु’ शब्देन मही प्रोक्ता, ‘मुद’ हर्षे, ततो द्वयम् ।

धातुनैर्नियमैश्चैव, तेन सा कौमुदी स्मृता ॥ १ ॥”

‘कु’ शब्दको अर्थ पृथ्वी छे ‘मुद’ शब्दको अर्थ ‘हर्षित करवु’ छे जे पृथ्वी  
उपर रहेवा मायसेने आनन्द करावे तेने कौमुदी कहे छे कौमुदी अर्थात् आसे कार्तिक

જાતાનિ=યથોચિતાયવસન્નિવેશન્તિ, સર્વાણિ=સકલાનિ અદ્વાનિ=અજ્યતે=વ્ય  
જ્યતે જ્ઞાયતે પ્રાણી યૈસ્તાનિ મસ્તઞ્ઞાદારમ્ય ચરણાન્તાનિ યસ્મિન્ શરીરે તદ્  
માનોન્માનપ્રમાણપરિપૂર્ણસુજાતસર્વાદ્ગમ્, ંત એવ તાદૃશ સુન્દરમદ્ગ્=વપુર્યસ્યાઃ  
સા તથોક્તા, 'શશી'તિ શશી=ચન્દ્રસ્તદ્વત્ સૌમ્યઃ=આહ્વાદરુ આકારઃ=સ્વરૂપ  
યસ્યાઃ સા, 'કાન્તા' કમનીયા, ચિત્તહારિણી, 'પ્રિયે'તિ પ્રિય=ર્શરજનમના  
હાદરુ દર્શનમ્=અવલોમન યસ્યાઃ સા પ્રિયદર્શના, યત્તુ-દર્શન રૂપમિતિ ક્વ્યા  
રૂપાત તત્પૂર્વોત્તરોપાત્તવિશેષણપૌનરુત્તચાપસ્યા હેયમેવ । યત એવવિશેષણવિશિષ્ટાત  
એવ સુરૂપા=સર્વાતિશાયિરૂપભાવણ્યવતી, રૂપેણ લાવણ્યસ્યાપ્યુપચક્ષિતત્વાત્ ॥ ૧૦ ॥

મૂલમ્—તત્થળં ચપાણ નગરીણ સેણિયસ્સ રત્નો ભજ્ઞા કૂળિ-  
યસ્સ રત્નો ચુલ્હમાડયા કાલી નામ દેવી હોત્થા સોમાલ-  
પાણિપાયા જાવ સુરૂપા ॥ ૧૧ ॥

હૈં । હન માન ઉન્માન ઓર પ્રમાણસે યુક્ત હાનેક કારણ સુજાત  
(યથાયોગ્ય અવયવોકી રચનાસં સુન્દર) જો સર્વાદ્ગ-જિસકે દ્વારા  
પ્રાણી વ્યક્ત હોતા હૈં-કિસી આકૃતિકે રૂપમે દિશ્વાઈ દેતા હૈં ઉસે,  
અર્થાત્ પૈરોસે લેકર મસ્તક તકકે અવયવોકો અગ કહતે હૈં । હન  
સબ અગોસે સુન્દર અગવાલી મહારાણી પદ્માવતી યી ।

“સસિસામાકારા” ચન્દ્રમાકે સમાન શાન્ત આકારવાલી થી ‘કતા’  
જો કમનીયા-ચિત્ત દરણ કરનેવાલી હો ઉસ સ્ત્રીકો ‘કાન્તા’ કહતે હૈં ।

‘પ્રિયદસણા’ જિસકી દૃષ્ટિ દર્શકોંકે મનમેં આહ્વાદ ઉત્પન્ન કરતી  
હો ઉસ સ્ત્રીકો ‘પ્રિયદર્શના’ કહતે હૈં । હસ પ્રકાર ઉક્તગુણવિશિષ્ટ  
હોનેસે-વહ ‘સુરૂપા’ શ્રેષ્ઠ રૂપ લાવણ્યવતી યી ॥ ૧૦ ॥

ઉન્માન તથા પ્રમાણથી યુક્ત હોવાને કારણે સુજાત (યથાયોગ્ય અવયવોના રચનાથી  
સુન્દર) જે સવાગ, જતા દ્વારા પ્રાણી વ્યક્ત હોય તે-કોઈ આકૃતિના રૂપમા દેખાય છે  
તેને અર્થાત્ પગથી માડીને માથા સુધીના અવયવોને અગ કહે છે આ અથા અગોથી  
ફેર અગવાળી મહારાણી પદ્માવતી હતી

‘સસિસામાકારા’ ચન્દ્રમા સમાન શાન્ત આકારવાળી હતી ‘કતા’ જે  
કમનીયા ચિત્ત હરણ કરવાવાળા હોય તે સ્ત્રીને ‘કાન્તા’ કહે છે

‘પ્રિયદસણા’ જેની નજર જોનારાના મનમા આનંદ ઉત્પન્ન કરતી હોય તે  
સ્ત્રીને ‘પ્રિયદર્શના’ કહે છે આ પ્રકારે કહેલા ગુણવિશિષ્ટ હોવાથી તે ‘સુરૂપા’ શ્રેષ્ઠ  
રૂપલાવણ્યવતી હતી (૧૦)

यस्याः सा तथा । वैश्वासिका = सर्वथा विश्वसनीया, सम्मता = सम्मानयोग्या  
तत्कृतगृहकार्याणां समतत्वात्, बहुमता = पतिदासीदामादिसकलपरिजनसम्मानिता,  
अनुमता = सकलकार्यानुमतिप्रदयोग्यत्वात् सकलकुटुम्बममदर्शिनी विप्रियकरणे-  
ऽप्यनुकूलेत्यर्थः, भाण्डकरण्डकसमाना = आभरणकरण्डकतुल्या भूषणकरण्डकवत्पति-  
सुरक्षितेत्यर्थः, तैलकेलेव सुमगोपिता = तैलकेला देशविशेषमसिद्धो मृण्मयस्तैलभा-  
जनविशेषः, सोऽतिसौन्दर्येण दृष्टिदोषसमवाद् भद्रमयाच सुष्ठु सगोप्यते, एव सा,  
चेलपेटेव सुसपरिगृहीता = बहुमूल्यवस्त्रमञ्जुपेव मनागप्यविचलतया स्वायत्तीकृता  
सा = पूर्वोक्तगुणविशिष्टा काली देवी श्रेणिकेन राजा स्वपतिना सार्द्धं विपु-  
लान् = बहून् नानाविधान् भोगान् = शब्दादिविषयान् भुञ्जाना = अनुभवन्ती  
विहरति = आस्ते स्म ॥ ११ ॥

मूलम्-तीसेणं कालीए देवोए पुत्ते काले नामं कुमारे  
होत्था, सोमालपाणिपाए जावसुरूवे ॥ १२ ॥

छाया-तस्याः खलु कात्याः देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्,  
सुकुमारपाणिपादः यावत् मूर्खः ॥ १२ ॥

शील आदि गुणके कारण विश्वास याग्य थी । पतिके मनके अनुकूल  
कार्य करनेसे समान योग्य थी. सकल कुटुम्बके हित करनेसे 'बहुमता'  
थी, सब कार्य पतिकी समतिसे करनेके कारण 'अनुमता' थी, भूषणकरण्ड-  
कके समान 'सुरक्षिता' थी । किसी देशमें मिट्टीका तेलपात्र ऐसा सुन्दर  
होता है कि जिसको दृष्टिदोषसे बचानेके लिये गुप्त रखते हैं, इसी  
प्रकार वह सुगोपित थी, बहु मूल्य वस्त्रवाली पेट्टीके समान सर्वथा  
सुपरिगृहीता थी । ऐसे विशिष्ट गुणवाली काली महारानी श्रेणिक  
राजा के साथ अनेक प्रकारके शब्दादिविषयोंका अनुभव करती  
हुई रहती थी ॥ ११ ॥

योग्य હતુ શીલ આદિ ગુણો વડે વિશ્વાસપાત્ર હતી પતિના મનને અનુકૂળ કાર્ય કરવાથી  
સન્માનયોગ્ય હતી સકલ કુટુંબનુ હિત કરવાથી 'બહુમતા' હતી બધા કાર્ય પતિની  
સમતિથી કરવાને કારણે 'અનુમતા' હતી ભૂષણકરણ્ડક (ધરણના કરડીયા-ડાળલા)ની પેઠે  
સુરક્ષિત હતી ઠાઠ દેશમા માટીનુ તેલપાત્ર એવુ સુદર હોય છે તે જેને દ્રષ્ટિ દોષથી  
બચાવવા માટે ગુપ્ત રાખે છે તેની પેઠે આ પણ સુગોપિત હતી, કિંમતી વસ્ત્રવાળી  
પેટીની પેઠે સર્વથા રાખાથી સુપરિગૃહીતા હતી એવા વિશિષ્ટ ગુણવાળી કાલી મહારાણી  
શ્રેણિક રાજાની સાથે અनेक प्रकारના શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતી રહેતી ॥ ११ ॥

નિરુશ્વન્દ્રસ્તદ્વત્ વિમલ પરિપૂર્ણ સૌમ્ય=રમણીય વદન=મુલ યસ્યાઃ સા તથા, 'કુણ્ડલે'તિ-કુણ્ડલાભ્યા કર્ણાભરણવિશેષાભ્યા ઉલ્લિખિતા=ઘૃષ્ટા ગણ્ડરેખા=કપાલતલવિરચિત્કસ્તૂરીરેખા યસ્યાઃ સા તથા, 'શૃંગારે'તિ-શૃંગારસ્ય રસવિશેષ્ય અગારમિવ અગાર, તથા ચારુઃ=સુન્દરઃ વેશો=નેપથ્ય યસ્યાઃ સા તથા, ઇતિ ।

પુનઃ કોદશી સેત્યાહ- 'સેણિયસ રણો ઇદ્ધા કતા પિયા મણુઆ નામધિજ્ઞા વેસામિયા સમ્મયા પહુમયા અણુમયા મહકરહમસમાણા તેલ્લકેલા ઇવ સુસગોવિયા ચેલપેહા ઇવ સુસપરિગ્ગહિયા સા કાલી દેવી સેણિણ રણા સદ્ધિં વિહલાઈ ભોગભોગાઈ મુજમાણા વિહરઈ' છાયા- 'શ્રેણિકસ્ય રાજા ઇષ્ટા કાન્તા પ્રિયા મનોજ્ઞા નામધેયા વૈશ્વાસિકા સમતા વહુમતા અનુમતા માણ્ડકર ણ્ડકસમાના તેલકેલેવ સુસગોપિતા ચેલપેટેવ સુસપરિગૃહીતા સા કાલી દેવી શ્રણિકેન રાજા સાર્દે વિપુલાન્ ભોગભોગાન્ મુજ્જાના વિહરતિ ।

ઈષ્ટા=અમિલપણીયા પાતિવ્રત્યાદિગુણવાહુલ્યાત્, કાન્તા=કમનીયા, પ્રિયા =પ્રેમવતી સદાપ્રેમવિપયત્વાત્ કિમન્યદર્શનેનેતિ પરિણામજનિકા, મનોજ્ઞા =પતિમનોવિનોદિની, ભાવત. પતિભાવવતી, સ્વરૂપતઃ શોભના । નામપ્રેયા=પ્રશસ્તનામવતી, નામધાર્યા, ઇતિ વા છાયા, તત્ત્વ નામધાર્ય =હૃદિ ધરણીય

પૂર્ણિમાકી ઉડ્ડલ ચન્દ્રિકા (ચાંદની) ઉસ ચન્દ્રિકાવાલા ચન્દ્રમાકે સમાન નિર્મલ સપૂર્ણ રમણીય મુલવાલી થી । ' કુડલુલ્લિહિયગડલેહા ' જિનકે ઘર્ષણ લગનેસે કપોલ પર રહી હુઈ કસ્તૂરી આદિ સુગધી દ્રવ્યકી રેખા દટ ગઈ હૈ એસે વિશાલ કુડલકો ધારણ કરનેવાલી થી । ' સિંગારાગારચારુવેસા ', શૃંગાર રસકા ઘર ઓર સુન્દર વેષ વાલી થી । ' ઇષ્ટા ' પાતિવ્રત્ય આદિ શુણોસે રાજા શ્રેણિકકે અમિલપિત થી । ' કાન્તા ' રાજા કે મનમેં આહાદ ઉત્પન્ન કરનેકે કારણ કાન્તા-કમનીય થી । રાજાકે પ્રેમ ઉત્પન્ન કરનેકે કારણ 'પ્રિયા' થી । રાજાકે મન પ્રસન્ન કરનેકે કારણ 'મનોજ્ઞા' થો તથા પ્રશસ્ત નામવાલી થો, ઉસકા નામ હૃદયમેં ધારણ કરને યોગ્ય થા ।

માસ રૂપી શરદ ઋતુની પૂર્ણિમાની ઉજવલ ચન્દ્રિકા તે ચન્દ્રિકાવાળા જે ચન્દ્રમા સમાન નિર્મલ સ પૂર્ણ રમણીય મુખવાળી હતી 'કુડલુલ્લિહિયગડલેહા'—જેને ધમારે લાગવાથી ગાલ પર રહેલી કસ્તૂરી આદિ સુગધી દ્રવ્યની રેખા જતી રહી છે એવા વિશાલ કુડલને ધારણ કરવા વાળી હતી 'સિંગારાગારચારુવેસા' શૃંગાર રસનું ઘર તથા સુદર વેષ વાળી હતી 'ઈષ્ટા' પાતિવ્રત્ય આદિ શુણોથી રાજા શ્રેણિકની માનીતી હતી 'કાન્તા' રાજાના મનમાં આનંદ ઉત્પન્ન કરનારી હતી તેથી કાન્તા એટલે કમનીય હતી રાજાને પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવાને કારણે 'પ્રિયા' હતી રાજાનું મન પ્રસન્ન કરવાવાળી હોવાથી 'મનોજ્ઞા' હતી તથા પ્રશસ્ત નામવાળી હતી અથવા તેનું નામ હૃદયમાં ધારણ કરવા

યસ્યાઃ સા તથા । વૈશ્વાસિકા = સર્વથા વિશ્વસનીયા, સમ્મતા = સમ્માનયોગ્યા તત્કૃતગૃહકાર્યાણા સમતત્વાત્, વહુમતા = પતિદાસીદાસાદિસકલપરિજનસમ્માનિતા, અનુમતા = સકલકાર્યાનુમતિગ્રહણયોગ્યત્વાત્ સકલકુટુમ્બમમદર્શિની વિપ્રિયકરણે-  
 ઽપ્યુનુકૂલેત્યર્થઃ, ભાણ્ડકરણ્ડકસમાના = આભરણકરણ્ડકતુલ્યા ભૂષણકરણ્ડકવત્પતિ-  
 સુરક્ષિતેત્યર્થઃ, તૈલકેલેવ સુમગોપિતા = તૈલકેલા દેશવિશેષપ્રસિદ્ધો મૃષ્મયસ્તૈલભા-  
 જનવિશેષઃ, સોઽતિસૌન્દર્યેણ દૃષ્ટિદોષસમવાદ્ મદ્ગમયાચ્ચ મૃદુ સગોપ્યતે, एव सा,  
 'ચેલપેટેવ સુસપરિગૃહીતા = મહુમૂલ્યવસ્ત્રમજ્જુપેવ મનાગમ્યચિચલતયા સ્વાયત્તીકૃતા  
 સા = પૂર્વોક્તગુણવિશિષ્ટા કાલી દેવી શ્રેણિકન રાજા સ્વપતિના સાર્દ્ધ વિપુ-  
 લાન્ = વહૂન્ નાનાવિધાન્ ભોગાન્ = શબ્દાદિવિષયાન્ શુદ્ધાના = અનુભવન્તી  
 વિહરતિ = આસ્તે સ્મ ॥ ૧૧ ॥

મૂલમ્-તીસેણં કાલીએ દેવોએ પુત્તે કાલે નામ કુમારે  
 હોત્થા, સોમાલપાણિપાએ જાવસુરૂવે ॥ ૧૨ ॥

છાયા-તસ્યાઃ સ્વલ્પ કાલ્યા. દેવ્યા. પુત્રઃ કાલો નામ કુમારોઽભવત્,  
 મુકુમારપાણિપાદઃ યાવત્ સુરૂપઃ ॥ ૧૨ ॥

શીલ આદિ ગુણકે કારણ વિશ્વાસ યાગ્ય થી । પતિકે મનકે અનુકૂલ  
 કાર્ય કરનેસે સમાન યોગ્ય થી. સકલ કુટુમ્બકે હિત કરનેસે 'વહુમતા'  
 થી, મય કાર્ય પતિકી સમતિસે કરનેકે કારણ 'અનુમતા' થી, ભૂષણકરણ-  
 કકે સમાન 'સુરક્ષિતા' થી । કિસી દેશમેં મિટ્ટીકા તેલપાત્ર એસા સુન્દર  
 હોતા હૈ કિ જિસકો દૃષ્ટિદોષસે બચાનેકે લિયે ગુપ્ત રખતે હૈં, હમ્ની  
 પ્રકાર વહ સુગોપિત થી, વહુ મૂલ્ય વસ્ત્રવાલી પેટીકે સમાન સર્વથા  
 સુપરિગૃહીતા થી । એસે વિશિષ્ટ ગુણવાલી કાલી મહારાની શ્રેણિક  
 રાજા કે સાથ અનેક પ્રકારકે શબ્દાદિવિષયોંકા અનુભવ કરતી  
 હુઈ રહતી થી ॥ ૧૧ ॥

યોગ્ય હતુ શીલ આદિ ગુણો વડે વિશ્વાસપાત્ર હતી પતિના મનને અનુકૂળ કાર્ય કરવાથી  
 સન્માનયોગ્ય હતી સકલ કુટુમ્બનુ હિત કરવાથી 'વહુમતા' હતી બધા કાર્ય પતિની  
 સમતિથી કરવાને કારણે 'અનુમતા' હતી ભૂષણકરણક (ધરેણાના ડર ડીયા-ડાળલા)ની પેઠે  
 સુરક્ષિત હતી કોઈ દેશમા માટીનુ તેલપાત્ર એવુ સુદર હોય છે કે જેને દૃષ્ટિ દોષથી  
 બચાવવા માટે ગુપ્ત રાખે છે તેની પેઠે આ પણ સુગોપિત હતી, કિંમતી વસ્ત્રવાળી  
 પેટીની પેઠે સર્વથા રાખતી સુપરિગૃહીતા હતી એવા વિશિષ્ટ ગુણવાળી કાલી મહારાણી  
 શ્રેણિક રાખતી સાથે અનેક પ્રકારના શબ્દાદિ વિષયોના અનુભવ કરતી રહેતી ॥૧૧॥



टीका-‘तीसेण’ इत्यादि । तस्याः काल्या देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्, स कीदृशः ? इत्यपेक्षायामाह-सुकुमारपाणिपादः, सुरूपः, इत्यनयोर्व्याख्या पूर्वोक्तदिशाऽवसेया । यावत्करणात् ‘पासाइए, दरिसणिज्जे, अभिरुवे, पडिरुवे, इत्येषा सङ्ग्रहो ज्ञेयः । एनच्छाया-प्रासादीय’, दर्शनीयः, अभिरूपः प्रतिरूप’, इति । प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=दृष्टिसुखदत्त्वेन भूयो भूया दर्शनयाग्यः, अभिरूपः=मनोज्ञाकृतिकः, प्रतिरूपः=सर्वातिशायिरूपलावण्यवान् इति । अत्र प्रसङ्गवशात् श्रेणिक-कूणिक-वर्णनं, कालकुमारादिवर्णनं च संक्षेपतः कथ्यते-

तत्र किल पुत्रवत्प्रजापालम्य श्रेणिकभूपालस्य राज्ये रत्नद्वयमासीत्-देवसमर्पितहारः १, सेचनरुहस्ती २ च, यावत् तदोद्योगज्यम्य मूल्य ततोऽप्यधिकं मूल्यं तद्वन्नद्वयस्य । हारोत्पत्तिग्रे भणिष्यते । कूणिकस्योत्पत्तिः

‘तीसेण’ इत्यादि । उस काली महारानी के कोमल कर चरण वाला और सुन्दर रूपवाला ‘काल’ नामका कुमार था । वह ‘कालीकुमार’ के नामसे भी प्रसिद्ध है । जो मनको प्रसन्न करनेवाला, देखनेवालोंके नेत्रको आनन्द देनेवाला, सुन्दर आकृतिवाला और अतिशय रूप लावण्यका धारण करनेवाला था ।

यहाँ प्रसङ्गवश श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारका संक्षिप्त वर्णन करते हैं—

वह पुत्रके समान प्रजाके पालन करनेवाले श्रेणिक राजाके राज्यमें दो रत्न थे-(१)=प्रथम देवसमर्पित हार, (२) दूसरा सेचनक हस्ती था । ये दोनों रत्न इतने मूल्यवान् थे कि जो राजाका सम्पूर्ण राज्य भी दे दिया जाय तो भी उनकी कीमत न हो सके । हारकी

‘तीसेण’ इत्यादि ते काली महाराणीने डोभण हाथ पग बाणो, तथा सुहर उप बाणो काल नामने कुवर हुतो ते ‘कालीकुमार’ ना नामथी प्रसिद्ध छे ने मनने प्रसन्न करवावाणो, नरुहे जेनाराना नेत्रने आनन्द आपवा बाणो, सुहर आकृति बाणो तथा अतिशय रुप लावण्यने धारण करवा बाणो हुतो ।

अहाँ प्रसङ्गवश राज्य श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारनु संक्षिप्त वर्णन करे छे—

त्या पुत्रनीपेठे प्रभनु पालन करवा बाणो श्रेणिक राजाना राज्यभा जे रत्न हुता (१)प्रथम देवे आपेलहार (२) नीणु सेचनक हाथी हुतो आ जेउ रत्न जेवा किमती हुता छे ने राजनु आयु राज्य पक्ष दुध देवाथ तो पक्ष सेनी किमती न थप शके

शास्त्रकारेण स्वय विस्तारेण स्थयिष्यते, कालादिकुमारानां च आरम्भसङ्ग्रामतो नरकयोग्यकर्मोपचयात् तत्प्राप्तिर्मरणवर्णन चात्रैव शास्त्रे-प्रतिपादयिष्यते ।

ऋणिकश्चम्पाया नगर्या प्राज्य राज्य चकार । कृणिकस्य चेलनाऽह-  
जातावन्यावपि वैहल्य-वैहायसो द्वा भ्रातरागस्ताम् ।

अथ उदाचित् प्रथमस्थले मरुत्तवकुद्विसम्पन्न मुरवृन्दवन्दितपदा  
रविन्दोऽपाम्ततन्द्रः शक्रेन्द्र सुधर्ममभाया सम्पत्त्वप्रशसा चक्र । तथाहि-

“ अतोमुहुत्तमित्त वि फासिय हुज्ज जेहिं समत्त ।”

तसि अवङ्गुगलपरिपटो चेव ससारो ॥ १ ॥

उत्पत्ति आगे कही जायगी और ऋणिक की उत्पत्ति शास्त्रकार स्वय  
विस्तारसे कहेंगे । कालकुमार आदि कुमारोंक आरम्भ और संग्रामसे  
नरकयोग्य कर्मोंके उपचयके कारण उनकी नरकप्राप्तिका और मरणका  
वर्णन इसी शान्त्रिमे किया जायगा ।

चम्पा नगरीमे ऋणिक राजा निष्कटक राज्य करता था । उस  
कृणिक राजाके चेलना मातासे जन्मे हुए-वैहल्य और वैहायस नामके  
दो भाई थे ।

एक समय मौज्ज्म देवलोकमे सपूर्ण देव ऋद्धिवाले देववृन्दसे  
वदितचरण घाले उत्साही शक्रेन्द्रने सुधर्मा सभाके अन्दर इन  
प्रकार सम्पत्त्वप्री प्रशसा की, जैसे कहा है:-

“ अतोमुहुत्तमित्त वि फासिय हुज्ज जेहिं समत्त ।

तेसि अवङ्गुगलपरिपटो चेव ससारो ॥ १ ॥ ”

हाननी उत्पत्ति विषे आगण कहेवाभा आवशे तथा द्रष्टुवनी उत्पत्ति शास्त्रकार पोते  
विस्तारथी कहेथे काल कुमार आदि कुमाराना आरम्भ तथा संग्रामथी नरकयोग्य कर्मोना  
उपचयना कारणे तेमनी नरकप्राप्तिं तथा मरणं च शास्त्रमा करवाभा आवशे  
ऋणिक राजा तथा नगरीमा निष्कटक राज्य करता होता तो द्रष्टुिक रान्तने  
माता चेलनाथी जन्मेला वैहल्य तथा वैहायस नामे मे भाई होता

एक समय मौज्ज्म देव लोकमा सपूर्ण ऋद्धिवाणा देववृन्दया वदित चरणवाला  
उत्साही शक्रेन्द्रे सुधर्मा सभानी अन्दर आ प्रकारे सम्पत्त्वप्री प्रशसा करी जेम  
कहु छे छे -

“ अतोमुहुत्तमित्त वि फासिय हुज्ज जेहिं समत्त ।

तेसि अवङ्गुगलपरिपटो चेव ससारो ॥ १ ॥ ”

टीका-‘तीसेण’ इत्यादि । तस्याः काल्या देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमारोऽभवत्, स कीदृशः ? इत्यपेक्षायामाह-सुकुमारपाणिपादः, सुरूपः, इत्यनयोर्व्याख्या पूर्वोक्तदिशाऽवसेया । यावत्करणात् ‘पासाइए, दरिसणिज्जे, अभिरुवे, पडिरुवे, इत्येषा सङ्ग्रहो ज्ञेयः । एतच्छाया-प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः प्रतिरूपः, इति । प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=दृष्टिसुगवदत्वेन भूयो भूया दर्शनयाग्यः, अभिरूप=मनोज्ञाकृतिकः, प्रतिरूपः=सर्वातिशायिरूपलावण्यान् इति । अत्र प्रसङ्गवशात् श्रेणिक-कूणिक-वर्णनं, कालकुमारादिवर्णनं च संक्षेपतः कथ्यते-

तत्र किल पुत्रवत्प्रजापालस्य श्रेणिकभूपालस्य राज्ये रत्नद्वयमासीत्-देवसमर्पितहारः १, सेचनरुहस्ती २ च, यावत् नदीयं राज्यस्य मूल्यं ततोऽप्यधिकं मूल्यं तद्वन्नद्वयस्य । हारोत्पत्तिर्ग्रे भणिष्यते । कूणिकस्योत्पत्तिः-

‘तीसेण’ इत्यादि । उस माली महारानी के कोमल-कर धरण वाला और सुन्दर रूपवाला ‘काल’ नामका कुमार था । वह ‘कालीकुमार’ के नामसे भी प्रसिद्ध है । जो मनको प्रसन्न करनेवाला, देखनेवालोंके नेत्रको आनन्द देनेवाला, सुन्दर आकृतिवाला और अतिशय रूप-लावण्यका धारण करनेवाला था ।

यहाँ प्रसङ्गवश श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारका संक्षिप्त वर्णन करते हैं—

वहाँ पुत्रके समान प्रजाके पालन करनेवाले श्रेणिक राजाके राज्यमें दो रत्न थे-(१)=प्रथम देवसमर्पित हार, (२) दूसरा सेचनक हस्ती था । ये दोनों रत्न इतने मूल्यवान थे कि जो राजाका सम्पूर्ण राज्य भी दे दिया जाय तो भी उनकी कीमत न हो सके । हारकी

‘तीसेण’ इत्यादि ते काली महाराणीने डोमण हाथ पग बाणो, तथा सुहर उप बाणो काल नामने कुपर हतो ते ‘कालीकुमार’ ना नामथी प्रसिद्ध छे ने मनने प्रसन्न करवावाणो, नन्दे जेनाराना नेत्रने आनन्द आपवा बाणो, सुहर आकृति बाणो तथा अतिशय रूप लावण्यने धारण करवा बाणो हतो—

अहाँ प्रसंगवश राजे श्रेणिक, कूणिक तथा काल कुमारनु संक्षिप्त वर्णन करे छे—

त्या पुत्रनीपेठे प्रजानु पालन करवा बाणा श्रेणिक राजांना राज्यभा ने रत्न हता (१)प्रथम देवे आपेवहार (२) नीलु सेचनक हाथी हतो आ जेठ रत्न जेवा किमती हता छे ने राजानु आपु राज्य पछु दर्थ देवाय तो पछु सेनी किमत न थय शके

કિંચ—

( ઇન્દ્રવજ્રાચ્ચન્દઃ )

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર દિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ ।

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર દિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥૨૥”

હૃદયભૂમિકાયા મજ્ઞાત\* સમ્યક્ત્વાચારદૃઢમૂલો ભાવનાજલધારાસિચ્ચ-  
માનઃ શ્રુતચારિત્રલક્ષણધર્મસ્કન્ધઃ પ્રમાણશાસ્ત્રો નયપ્રતિશાસ્ત્રો દયાદાનક્ષમાધૃતિ-

અર્થાત્-નિર્મલ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખકા નિધાન છે, વૈરાગ્યકા  
ધામ (ઘર) છે, સમારકે ક્ષણભગુર ઓર નાશવાન સુખોંકી અમારતા  
સમજ્ઞનેકે લિપ્ત સચ્ચા વિવેકસ્વરૂપ છે, ભવ્ય જીવોંકે મનુષ્ય તિર્યચ્ચ  
સમ્યન્ધી ઓર નરક નિગોદ આદિ દુઃખોંકા ઉચ્છેદ કરનેવાલા છે  
ઓર મોક્ષ સુખરૂપી વૃક્ષકા ધીજસ્વરૂપ છે ॥ ૧ ॥

ઓર મી કહા છે—

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર દિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ ।

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર દિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥૨૥”

અર્થાત્-સમારયે સમ્યક્ત્વ રત્નકે સમાન અન્ય રત્ન નથી,  
સમ્યક્ત્વ વન્ધુ કે સમાન અન્ય વન્ધુ નથી । સમ્યક્ત્વ મિત્રકે સમાન  
અન્ય મિત્ર નથી । સમ્યક્ત્વ લાભકે સમાન અન્ય લાભ નથી ॥ ૨ ॥

સમ્યક્ત્વ રૂપી મહાવૃક્ષ હૃદય ભૂમિમેં ઉત્પન્ન હોતા છે સમ્ય-  
ક્ત્વ કા આચાર જિસકા મૂલ છે, ભાવના જલસે સીંચા જાતા છે,

અર્થાત્-નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનુ નિધાન છે વૈરાગ્યનુ ધામ (ઘર) છે  
સમારના ક્ષણભગુર તથા નાશવાન સુખોંકી અમારતા સમજ્ઞના માટે ખરેખર વિવેક  
સ્વરૂપ છે ભવ્ય જીવોંકા મનુષ્ય તિર્યચ્ચ સમ્યન્ધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુઃખના  
ઉચ્છેદ કરવાવાળુ છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષના ધીજ સ્વરૂપ છે (૧)

ફરી પણ કહ્યું છે કે—

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર દિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર દિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥ ૨ ॥”

અર્થાત્-સમારમા સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું ધીનું રત્ન નથી સમ્યક્ત્વ બાધુના  
જેવો ધીને બાધુ નથી સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો ધીને કોઈ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ  
લાભના જેવો ધીને કોઈ લાભ નથી (૨)

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમા ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વનો આચાર  
જેનું મૂળ છે ભાવનાજળથી જેનું સિંચન થાય છે જેનું શ્રુત તથા ચારિત્ર ધર્મ રૂપી

“अन्तर्मुहूर्तमात्रमपि स्पृष्ट भवेद् यैः सम्यक्त्वम् ।

तेषामपार्द्धपुद्गलपरिवर्तनैव ससारः ॥ १ ॥” इति च्छाया,  
सम्यक्त्वसद्भावे प्रथमसवेगादयो गुणाः प्रसभमुदयन्ते तदानीं कथमपि  
तदुदय प्रतिरोद्धु न कथन समर्थो भवति ।

उक्तञ्च—

( मालिनीछन्दः )

“असममुखनिधान धाम सविग्नतायाः,  
भवमुखविमुखत्वादीपने सद्विवेकः ।

नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां  
शिवमुखतरुबीज शुद्धसम्यक्त्वलाभः ॥ १ ॥”

जो भव्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र भी सम्यक्त्वका स्पर्श कर  
लेता है, वह देशतः न्यून (कम) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष  
पाता है । अर्ध पुद्गलपरावर्तनका स्वरूप अणुत्तरोपपातिक सूत्रकी  
अर्धबोधिनी टीकासे समझ लेना चाहिए

सम्यक्त्वकी प्राप्ति होने पर शम, सवेग आदि गुण आत्मामें  
सहज उत्पन्न होते हैं, सम्यक्त्वके सद्भावमें गुणोंके विकासको कोई  
नहीं रोक सकता है । कहा भी है—

“असममुखनिधान धाम सविग्नतायाः,  
भवमुखविमुखत्वोदीपने सद्विवेकः ।

नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां,  
शिवमुखतरुबीज शुद्धसम्यक्त्वलाभः ॥ १ ॥”

जो भव्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र पक्ष सम्यक्त्वको स्पर्श करी ले छे ते  
देशत (थोड़ा) न्यून (छोटा) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष पावे छे अर्ध  
पुद्गलपरावर्तननु स्वरूप अणुत्तरोपपातिक सूत्रनी अर्धबोधिनी टीकासे समझ लेवुं नोछे  
सम्यक्त्वनी प्राप्ति यवाथी शम सवेग आदि शुष्ण आत्माभा सहज उत्पन्न  
थाय छे सम्यक्त्वना सद्भावभा शुष्णना विकासने शक्ती शकतु नथी

कहु पक्ष छे ३—

“असममुखनिधान धाम सविग्नतायाः,  
भवमुखविमुखत्वोदीपने सद्विवेकः ।

नरनरकपशुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां,  
शिवमुखतरुबीज, शुद्धसम्यक्त्वलाभः ॥ १ ॥”

કિન્ન—

( ઇન્દ્રવજ્રાદ્યન્દઃ )

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર હિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ ।

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર હિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥૨૥”

હૃદયભૂમિકાયા મજ્ઞાતઃ સમ્યક્ત્વાચારદૃઢમૂલો ભાવનાજલધારાસિન્ધુ-  
માનઃ શ્રુતચારિત્રલક્ષણધર્મસ્વન્ધઃ પ્રમાણશાસ્ત્રો નયપ્રતિશાસ્ત્રો દયાદાનક્ષમાદૃતિ-

અર્થાત્-નિર્મલ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખકા નિધાન છે, વૈરાગ્યકા  
ધામ (ઘર) છે, સમારકે ક્ષણભગુર ઓર નાશવાન સુખોંકી અમારતા  
મમજ્ઞનેકે લિંપે સચ્ચા વિવેકસ્વરૂપ છે, ભગ્ય જીવોંકે મનુષ્ય તિર્યચ્ચ  
સમ્યન્ધી ઓર નરક નિગોદ આદિ દુઃખોંકા ઉચ્છેદ કરનેવાલા છે  
ઓર મોક્ષ સુખરૂપી વૃક્ષકા યીજસ્વરૂપ છે ॥ ૧ ॥

ઓર મી કહા છે—

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર હિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ ।

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર હિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥૨૥”

અર્થાત્-સસારમેં સમ્યક્ત્વ રત્નકે સમાન અન્ય રત્ન નથી,  
સમ્યક્ત્વ વન્ધુ કે સમાન અન્ય વન્ધુ નથી । સમ્યક્ત્વ મિત્રકે સમાન  
અન્ય મિત્ર નથી । સમ્યક્ત્વ લાભકે સમાન અન્ય લાભ નથી ॥ ૨ ॥

સમ્યક્ત્વ રૂપી મહાવૃક્ષ હૃદય ભૂમિમે ઉત્પન્ન હોતા છે સમ્ય-  
ક્ત્વ કા આચાર જિસકા મૂલ છે, ભાવના જલસે સીંચા જાતા છે,

અર્થાત્-નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનું નિધાન છે વૈરાગ્યનું ધામ (ઘર) છે  
નસારના ક્ષણભગુર તથા નાશવાન સુખોંની અસારતા સમજવા માટે અરેખર વિવેક  
સ્વરૂપ છે ભગ્ય જીવોંના મનુષ્ય તિર્યચ્ચ સમ્યન્ધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુઃખોંના  
ઉચ્છેદ કરવાવાળું છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષના યીજ સ્વરૂપ છે (૧)

કેરી પણ કહ્યું છે કે —

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર હિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર હિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥ ૨ ॥”

અર્થાત્-સસારમા સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું બીજું રત્ન નથી સમ્યક્ત્વ બધુના  
જેવો બીજો બધું નથી સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો બીજો ડોઠ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ  
લાભના જેવો બીજો ડોઠ લાભ નથી (૨)

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમા ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વને આચાર  
જેવું મૂળ છે ભાવનાજળથી જેવું મિથુન થાય છે જેવું શ્રુત તથા ચારિત્ર ધર્મ રૂપી

“अन्तर्मुहूर्तमात्रमपि स्पष्ट भवेद् यैः सम्यक्त्वम् ।

तेषामपार्द्धपुद्गलपरावर्तनैव ससारः ॥ १ ॥” इति च्छाया,  
सम्यक्त्वसद्भावे प्रथमसवेगादयो गुणाः प्रसभमुदयन्ते तदानीं कथमपि  
तदुदय प्रतिरोद्धुं न कथन समर्थो भवति ।

उक्तञ्च—

( मालिनीछन्दः )

“असमसुखनिधान धाम सविग्नतायाः,  
भवसुखविमुक्तत्वोदीपने सद्विवेकः ।

नरनरकपथुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां

शिवसुखतरुबीज शुद्धसम्यक्त्वलाभ ॥ १ ॥”

जो भण्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र भी सम्यक्त्वका स्पर्श कर  
लेता है, वह देशतः न्यून (कम) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष  
पाता है। अर्ध पुद्गलपरावर्तनका स्वरूप अणुत्तरोपपातिक सूत्रकी  
अर्थबोधिनी टीकासे समझ लेना चाहिए

सम्यक्त्वकी प्राप्ति होने पर शम, सवेग आदि गुण आत्मामें  
सहज उत्पन्न होते हैं, सम्यक्त्वके सद्भावमें गुणोंके विकासका कोई  
नहीं रोक सकता है। कहा भी हैः—

“असमसुखनिधान धाम सविग्नतायाः,

भवसुखविमुक्तत्वोदीपने सद्विवेकः ।

नरनरकपथुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां,

शिवसुखतरुबीज शुद्धसम्यक्त्वलाभ ॥ १ ॥”

जो भण्य प्राणी अन्तर्मुहूर्त मात्र पण्य सम्यक्त्वको स्पर्श करी ले छे ते  
देशत (थाडु) न्यून (ओछा) अर्धपुद्गलपरावर्तनसे अवश्य मोक्ष पावे छे अर्ध  
पुद्गलपरावर्तनसे अवश्य अणुत्तरोपपातिक सूत्रकी अर्थबोधिनी टीकासे समझ लेवुं नोछे

सम्यक्त्वकी प्राप्ति यवाथी शम सवेग आदि शुद्ध आत्मामा सहज उत्पन्न  
माय छे सम्यक्त्वका सद्भावमा शुद्धीना विकासने रोकी शकतु नथी

छुं पण्य छे छे —

“असमसुखनिधान धाम सविग्नतायाः,

भवसुखविमुक्तत्वोदीपने सद्विवेकः ।

नरनरकपथुत्वोच्छेदहेतुर्नराणां,

शिवसुखतरुबीज, शुद्धसम्यक्त्वलाभ ॥ १ ॥”

કિંચ—

( ઇન્દ્રવજ્રાછન્દઃ )

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર હિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ ।

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર હિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥૨૥”

હૃદયભૂમિકાયા મન્જાત' સમ્યક્ત્વાચારદ્દમૂલો ભાવનાજલધારાસિન્ય-  
માનઃ શ્રુતચારિત્રલક્ષણધર્મસ્કન્ધઃ પ્રમાણશાલો નયપતિશાલો દયાદાનક્ષમાધૃતિ-

અર્થાત્-નિર્મલ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખકા નિધાન છે, વૈરાગ્યના  
ધામ (ઘર) છે, સમારકે ક્ષણભગુર ઓર નાશવાન સુખોંકી અમારતા  
સમજાનેકે લિષ્ઠ સચ્ચા વિવેકસ્વરૂપ છે, અન્ય જીવોંકે મનુષ્ય તિર્યચ્ચ  
સમ્યન્ધી ઓર નરક નિગોદ આદિ દુ સ્વોંકા ઉચ્છેદ કરનેવાલા છે  
ઓર મોક્ષ સુખરૂપી વૃક્ષકા યીજસ્વરૂપ છે ॥ ૧ ॥

ઓર મી કહા છે —

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર હિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ ।

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર હિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥૨૥”

અર્થાત્-મસારમેં સમ્યક્ત્વ રત્નકે સમાન અન્ય રત્ન નહીં,  
સમ્યક્ત્વ વન્ધુ કે સમાન અન્ય વન્ધુ નહીં । સમ્યક્ત્વ મિત્રકે સમાન  
અન્ય મિત્ર નહીં । સમ્યક્ત્વ લાભકે સમાન અન્ય લાભ નહીં ॥ ૨ ॥

સમ્યક્ત્વ રૂપી મહાવૃક્ષ હૃદય ભૂમિમેં ઉત્પન્ન હોતા છે સમ્ય-  
ક્ત્વ કા આચાર જિસકા મૂલ છે, ભાવના જલસે સીંચા જાતા છે,

અર્થાત્-નિર્મળ સમ્યક્ત્વ અતુલ સુખનું નિધાન છે વૈરાગ્યનું ધામ (ઘર) છે  
મસારના ક્ષણભગુર તથા નાશવાન સુખોંકી અમારતા સમજના માટે ખરેખર વિવેક  
સ્વરૂપ છે અન્ય જીવોના મનુષ્ય તિર્યચ્ચ સમ્યન્ધી તથા નરક નિગોદ આદિ દુ ખના  
ઉચ્છેદ કરવાવાળું છે તથા મોક્ષસુખ રૂપી વૃક્ષના ધીજ સ્વરૂપ છે (૧)

ફરી પણ કહું છે કે —

“ સમ્યક્ત્વરત્નાન્ન પર હિ રત્ન, સમ્યક્ત્વવન્ધોર્ન પરોઽસ્તિ વન્ધુઃ

સમ્યક્ત્વમિત્રાન્ન પર હિ મિત્ર, સમ્યક્ત્વલાભાન્ન પરોઽસ્તિ લાભઃ ॥ ૨ ॥”

અર્થાત્-મસારમા સમ્યક્ત્વ રત્નના જેવું ધીજી રત્ન નથી સમ્યક્ત્વ બધુના  
જેવો ધીજી બધુ નથી સમ્યક્ત્વ મિત્રના જેવો ધીજી કોઈ મિત્ર નથી અને સમ્યક્ત્વ  
લાભના જેવો ધીજી કોઈ લાભ નથી (૨)

સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષ હૃદયરૂપ ભૂમિમા ઉત્પન્ન થાય છે સમ્યક્ત્વને આચાર  
જેવું મૂળ છે ભાવનાજળથી જેવું મિચન થાય છે જેવું શ્રુત તથા ચારિત્રધર્મ રૂપી



દલોશીલભવિજનમનોમિલિન્દવૃન્દગુહ્નિનજિનવચનપ્રેમપ્રમુને શાસ્ત્રગતિકં. (વૃતિ-  
‘વાડ’ इति भाषायाम्) स्वर्गाप्यर्गसुखफलो निजात्मकल्याणरसं सम्यक्त्वमहामही  
रहो मिथ्यात्वगजेन्द्रादिकृतोपसर्गकुशास्त्रकुतर्कमहावातशतसहस्ररप्युन्मूलयितुमशक्यः।

इति मिस्तरेणास्य वर्णनमाचाराङ्गमत्रम्या (चतुर्याध्ययनेऽऽचारचिन्ता-  
मणिटीकानोऽवसेयम् ।

एव सम्यक्त्वप्रशमा कुर्वाणः सुरपतिरविज्ञानेन जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रे  
श्रेणिकभूप ददर्श । सम्यक्त्वगुणशालिन राजनयपालिन त विलोम्य प्रफुटवन्

जिमके श्रुत और चारित्र धर्मरूपी स्कध है, प्रत्यक्ष आदि प्रमाणरूप  
जिमकी शाखाएँ हैं, नयरूप प्रतिशाखाएँ हैं, दया, दान, क्षमा, धृति  
और शीलरूप पत्र-पत्ते हैं, जिनवचनका प्रेमरूप सुन्दर पुष्प है, जिस  
पर मध्य जीवोंके मनरूपी भ्रमवृन्द गूज रहे हैं, शास्त्ररूपी वाडसे  
सुरक्षित है, स्वर्ग और मोक्षके सुखरूप फल है, निज आत्माके  
कल्याणरूप रस है, ऐसे सुदृढ सम्यक्त्वरूपी महावृक्षको मिथ्यात्वरूपी  
महागजकुत उपसर्ग और कुशास्त्र कुतर्करूपी हजारो महावायु नहीं  
उखाड़ सकता ।

सम्यक्त्वका विस्तृत वर्णन आचाराङ्ग सूत्रके चौथे अध्ययनकी  
आचारचिन्तामणि टीकामें किया गया है ।

इस प्रकार सम्यक्त्व प्रशमा करते हुए सुरपति सुधर्मा इन्द्रने  
अवधिज्ञान द्वारा जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें श्रेणिक राजाको देखा । सम्य-  
क्त्वगुणशाली राजनीति को पालनेवाले राजाको देखकर प्रसन्नमुख होकर

સ્કધ (થડ) છે પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ રૂપ જેની શાખાઓ છે નયરૂપી પ્રતિ-શાખાઓ  
છે દયા, દાન ક્ષમા, ધૃતિ તથા શીલરૂપ પાઠડા છે જિન વચનના પ્રેમરૂપી સુદર  
પુષ્પ છે જેના ઉપ-ભય છવોના મનરૂપી ભમરાના વૃદ્ધ શુબ્ધ કરી નહા છે  
શાસ્ત્રરૂપી વાડથી સુરક્ષિત છે સ્વાર્ગ તથા મોક્ષના સુખરૂપી ફલ છે પોતાના આ માના  
કલ્યાણરૂપી રસ છે એવા સુદૃઢ સમ્યક્ વરૂપા મહાવૃક્ષને મિથ્યાત્વરૂપી મહાગજકૃત  
ઉપસર્ગો તથા કુશાસ્ત્ર કૃતર્ક રૂપી હજારો મહાવાત ઉખેડી નોંદ શકે

મમ્યક્ત્વનું વિસ્તા થી વર્ણન આચારાંગ સૂત્રના ચોથા અધ્યયનની આચર  
ચિન્તામણિ ટીકામાં કરેલ છે

આ પ્રકારે સમ્યક્ત્વની પ્રશ્નના ક તા થકા સુરપતિ સુધર્મા ઈન્દ્રે અવધિજ્ઞાન  
દ્વારા જમ્બુ દ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાં શ્રેણિક રાજાને જોયા મમ્યક્ત્વગુણશાલી રાજનીતિનું  
પાલન કરવાવાળા રાજાને જોઈને પ્રસન્નમુખ થઈ પોતે સમ્યક્ત્વગુણથી નિમગ્ન થન્દ,

कमलः सम्यक्त्वगुणविमलः सादर भूयो भूयोऽवाप्तसम्यक्त्वादिगुणश्रेणिक श्रेणिक  
सुधर्मत्याया स्वदेयसभाया प्रशंसाम् । इत्थं पुरन्दराम्यशैलनिस्सृता श्रेणिक-  
सम्यक्त्वप्रशंसासरित् सकलसुरमदस्य श्रवणसिन्धुमयागादृत ।

‘देवाश्च तदीयसम्यक्त्वादिगुणगणमहिमान् श्राव श्रावममन्दानन्दतुन्दिला  
जातकौतूहलाः श्रेणिक धन्यममन्यन्त । तदा द्वौ मिथ्यात्वदेवौ शक्रवचनं न  
श्रुदधतुः । श्रेणिक परीक्षितु मनुष्यलोके तदन्तिक समागतौ । उक्तञ्च—

“मुहेंदुदिव्म मुहवत्थिगो हि सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।

परिक्खिउ साहुमुवेसधारी अज्जामेओ य सरोतढे सो ॥ १ ॥”

उाया—‘मुखेन्दुदीव्यन्मुखवत्त्रिगो हि, सर्गात्सुरः श्रेणिग्गजमागात् ।

परीक्षितु साहुमुवेपधारी, आर्यासमेतश्च सरस्वतेऽगौ ॥ १ ॥’

स्वयं सम्यक्त्व गुणसे निर्मल इन्द्र, आदरके साथ नार नार सम्यक्त्व-  
गुणधारी श्रेणिक राजाकी प्रशंसा अपनी सुधर्ममभासे करने लगे ।  
इस प्रकार राजा श्रेणिककी प्रशंसारूपी नदी इन्द्रके मुखरूपी पर्वतसे  
निकल कर सभामें बैठे हुए सब देवोंके कर्णरूपी सागरमें पहुँची ।

देवता लोग उनके सम्यक्त्व आदि गुणोंकी महिमा सुन-  
सुन कर अपूर्व आनन्दसे भर गए और आश्चर्यचकित होकर श्रेणिक  
राजाको धन्यवाद देने लगे उस समय दो मिथ्यात्वी देवोंने इन्द्रके  
वचनपर श्रद्धा नहीं की और राजा श्रेणिककी परीक्षा लेनेके लिये  
मनुष्य लोकमें उनके पास आये । जैसे कहा है—

मुहेंदुदिव्म मुहवत्थिगो हि, सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।

परिक्खिउ साहुमुवेसधारी, अज्जामेओ य सरोतढे सो ॥ १ ॥

आह—सहित बारबार पोटानी सुधर्मा सभाभा सम्यक्त्वगुणधारी श्रेणिक राजानी  
प्रशंसा करवा लाग्या ’जे प्रकासे राजा श्रेणिकनी प्रशंसाइपी नदी इन्द्रना मुणइपी  
पर्वतथी निकजी सभाभा बैठेला मर्व देवाना कर्णइपी सागरभा पहुँची

देवता लोक तेना सम्यक्त्व आदि गुणोंने महिमा सासणी सासणीने अपूर्व  
आनदथी भरपूर भई गया तथा आश्चर्य चकित भईने श्रेणिक राजाने धन्यवाद  
देवा लाग्या

ते सभये जे मिथ्यात्वी देवोंजे इन्द्रना वचन उपर श्रद्धा न करी अने राजा  
श्रेणिकनी परीक्षा लेवा भाटे मनुष्य लोकभा तेनी पासे आग्या जेभ कछु छे छे —

मुहेंदुदिव्म मुहवत्थिगो हि सग्गा सुरो सेणियरायमागा ।

परिक्खिउ साहुमुवेसधारी, अज्जामेओ य सरोतढे सो ॥ १ ॥

દલોશીલમવિજનમનોમિલિન્દવૃન્દગુજ્જિનજિનવચનપ્રેમપ્રમુનં શાસ્ત્રત્તિકં. (વૃત્તિ-  
'વાડ' इति भाषायाम्) स्वर्गापवर्गसुखफलो निजात्मकल्याणरस. सम्यक्त्वमहामही  
रहो मिथ्यात्वगजेन्द्रादिकृतोपसर्गकुशास्त्रकृतैर्महावातशतसहस्रेरप्युन्मूलयितुमशक्यः।

इति विस्तरेणास्य वर्णनमाचाराङ्गप्रत्यस्या (चतुर्व्याययनेऽऽचारचिन्ता-  
मणिटीकानोऽवसेयम् ।

एष सम्यक्त्वप्रशमा कुर्वाणं सुरपतिरवधिज्ञानेन जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रे  
श्रेणिरुभूष ददर्श । सम्यक्त्वगुणशालिन राजनयपालिन त विलोक्य प्रफुटवन्

जिमके श्रुत और चारित्र धर्मरूपी स्कंध है, प्रत्यक्ष आदि प्रमाणरूप  
जिमकी शाखाएँ हैं, नयरूप प्रतिशाखाएँ हैं, दया, दान, क्षमा, धृति  
और शीलरूप पत्र-पत्ते हैं, जिनवचनका प्रेमरूप सुन्दर पुष्प है, जिस  
पर भव्य जीवोंके मनरूपी भ्रमरवृन्द गुंज रहे हैं, शास्त्ररूपी वाडसे  
सुरक्षित है, स्वर्ग और मोक्षके सुखरूप फल है, निज आत्माके  
कल्याणरूप रस है, ऐसे सुदृढ सम्यक्त्वरूपी महावृक्षको मिथ्यात्वरूपी  
महागजकृत उपसर्ग और कुशास्त्र कृतैर्कैरूपी हजारों महावायु नहीं  
उखाड़ सकती ।

सम्यक्त्वका विस्तृत वर्णन आचाराङ्ग सूत्रके चौथे अध्ययनकी  
आचारचिन्तामणि टीकामें किया गया है ।

इस प्रकार सम्यक्त्व प्रशमा करते हुए सुरपति सुधर्मा इन्द्रने  
अवधिज्ञान द्वारा जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें श्रेणिरु राजाको देखा । सम्य-  
क्त्वगुणशाली राजनीति को पालनेवाले राजाको देखकर प्रसन्नमुख होकर

સ્કંધ (ધડ) છે પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ રૂપ જેની શાખાઓ છે નયરૂપી પ્રતિ-શાખાઓ  
છે દયા, દાન ક્ષમા, ધૃતિ તથા શીલરૂપ પાદડા છે જિન વચનના પ્રેમરૂપી સુદર  
પુષ્પ છે જેના ઉપર ભવ્ય જીવોના મનરૂપી ભ્રમરના વૃદ્ધ શુભન કરી નહ્યા છે  
શાસ્ત્રરૂપી વાડથી સુરક્ષિત છે સ્વર્ગ તથા મોક્ષના સુખરૂપી ફલ છે પોતાના આમાના  
કલ્યાણરૂપી રસ છે એવા સુદૃઢ સમ્યક્ત્વરૂપી મહાવૃક્ષને મિથ્યાત્વરૂપી મહાગજકૃત  
ઉપસર્ગો તથા કુશાસ્ત્ર કૃતકે રૂપી હજારો મહાવાત ઉમેડી નોંદી શકે

સમ્યક્ત્વનું વિસ્તૃત થી વર્ણન આચારાંગ સૂત્રના ચોથા અધ્યયનની આચર  
ચિંતામણિ ટીકામાં કરેલું છે

આ પ્રકારે સમ્યક્ત્વની પ્રશમા કરતા થકા સુરપતિ સુધર્મા ઇન્દ્રે અવધિજ્ઞાન  
દ્વારા જમ્બુ દ્વીપના ભરત પ્રેતમાં શ્રેણિક રાજાને જોયા સમ્યક્ત્વગુણશાલી રાજનીતિનું  
પાલન કરવાવાળા રાજાને જોઈને પ્રસન્નમુખ થઈ પોતે સમ્યક્ત્વગુણથી નિભળ ઇન્દ્ર,

ततः श्रेणिकोऽदत्-त्वावशाना दम्भ दुराचार च वीक्ष्य मम धर्मानु-  
रागो नापगच्छति, पृथिवी पाताल गच्छेत्, सूर्यः पश्चिमदिश्युदियात्, चन्द्रो  
वह्निं वर्पेत्, वह्निः शीतलो भवेत्, अमृत विष भवेत् तदपि मम सम्यक्त्व  
न प्रचलेत् । ततो देवद्वयमधिज्ञानेन राजान सम्यक्त्वधर्मे निश्चल विज्ञाय  
पुनः पुनः स्तौति । तथाहि—

( इन्द्रवज्रा )

“ सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,

धन्योऽसि राजन् ! कृतपुण्यराशि ।

तुल्यस्त्वया कोऽपि न भूतलेऽस्मिन्,

सर्वं समक्ष त्वयि दृष्टमेतत् ॥ १ ॥

ऐसे साधुके वचन सुनकर राजा क्रोधित हो बोले—

निर्लज्ज ! छोड़ इस दुःकृत्यको, नहीं तो दण्ड दूंगा । यह

सुनकर वह साधुवेषधारी गोला ? किमको दण्ड देते हैं ? गौतमादि  
चौदह हजार मुनि और चन्दनवाला आदि छत्तीस हजार साध्वियाँ  
सभी अन्तर दुराचारी और चाहर साधुपनका आडम्बर रखते हैं तो  
मुझ अकेलेपर ही क्यों आक्षेप करते हो ? ।

यह सुनकर राजा श्रेणिक बोले—तुम्हारे जैसे दम्भी और दुरा-  
चारीको देख कर मेरा धर्मका अनुराग नहीं हट सकता है, अर्थात्  
जिनवचनपर स्थित मेरी दृढ़ श्रद्धा नहीं हट सकती है, पृथ्वी पाता-  
लमे चली जाय, सूर्य पश्चिममें उदय हो जाय, चन्द्र अग्नि वरसावे,  
अग्नि शीतल बन जाय, अमृत विष बने तो भी मेरा सम्यक्त्व विच-  
लित नहीं हो सकता ।

जैसा साधुना वचन साधणी राजा क्रोध करीने गोत्या —

निर्लज्ज ! छोड़ दे आ दुःकृत्यने, नहीं तो दंड करीश आ साधणीने ते  
साधुवेषधारी गोत्या—दंड डेने आपशे ? गौतम आदि चौदह हजार मुनि तथा यहन  
आणा आदि छत्तीस हजार साध्वीओ तभाम अन्तर दुराचारो तथा पाडा साधुपणाने  
आडंबर नाचे छे तो मारा अकेलाना उपरअ डेम आक्षेप करे छे ?

आ साधणीने राजा श्रेणिक गोत्या—तभारा जेवा दली तथा दुराचारीने  
जेधने मारे धर्म उपरने अनुराग डगी शक्ये नहि, अर्थात् जिनवचन उपर मारी  
दृढ़ श्रद्धा विचलित न थछे शक्ये पृथ्वी पाताणभा चाली जाय, सूर्य पश्चिमभा जगे,  
अग्नि वरसावे, अग्नि ठंडा भनी जाय, अमृत जेर भनी जाय तो पणु भाइ  
सम्यक्त्व बलायमान थछे शक्ये नहि

ततः साधुरूपधारी सरो जलाशये जालावतस्य स्थितः, आर्यिकारूपधारी तत्र सरस्तीरे तिष्ठति स्म । अत्रान्तरे श्रेणिको राजा पवनसेवनार्थं समागतः । तत्र मत्स्यं हन्तुमुद्यतः साधु विलोक्यात्रोचन-निमित्ति साधुर्भूत्वा दुराचरमि ? ।

स सरोप तमुवाच-इयमार्यिका दोहदवतीन्यतो मीनमास बुभुभाणाऽस्तीत्येतदर्थं जालं विस्तारयामि, त्वमितो गच्छ राजन् ! किं ते प्रयोजनं येतादृशप्रश्नेन ? इति तद्वचनं राजा श्रुत्वा कोपावृणनयनोऽवदत् निर्लज्ज ! कृत्यं मिदं त्यज, अन्यथा देहदण्डं ते दास्यामि । इति श्रुत्वाऽसौ साधुरवोचत्-गौतमादयश्चतुर्दशसहस्रमुनयश्चन्दनमालाढयः षट्त्रिंशत्सहस्रार्यिकाश्च सर्वे अन्तर्दुराचारिणो गहि साधुवेषधारिणः सन्ति तर्हि किं मामधिक्षिपसि ? ।

उन दोनों देवोंने वैक्रिय शक्तिसे साधु और साध्वीका रूप धारण किया मुखपर सदोरकमुखचस्त्रिका बाधी और कक्ष प्रदेश (काख) में रजोहरण लिया, इस प्रकार वेप उनाकर सरोवरके किनारे जा खड़े हुए । उनमेंसे एक देव साधुरूप धारण किया हुआ जाल फैलाकर सरोवरके तटपर खड़ा होगया और दूसरा साध्वी रूप धारण किया हुआ वही उसके समीपमें खड़ा हो गया । उसी अवसरपर महाराज श्रेणिक क्रीडाके निमित्त घूमते हुए वहाँ आ पहुँचे उन्होंने मछली मारनेके लिए उद्यत साधुको देखकर कहा ओह ! तुम साधु होकर यह दुष्ट आचरण क्यों करते हो ? तब वह साधुवेषधारी क्रोधित होकर बोला-यह आर्या गर्भवती होनेसे इसको मछली खानेका दोहद उत्पन्न हुआ है इस लिए मछलिया मारनेको जाल फैलाये खड़ा हूँ, जाइये-राजन् ! इससे आपका क्या प्रयोजन है ?

ते अन्ने देवोऽप्ये वैक्रिय शक्तिर्यथा साधु तथा साध्वीनु इप धारण कथुं भुण उपर डोरामहित भुणवस्त्रिका बाधी तथा काणभा रणेहरणु वीधु अे प्रकारेनो वेप लध तणावने कठिं नधं विषा रक्षा अेमाथी अेक देव साधुनु इप धारण करीने नण द्वेलावी सरोवरना तन् उपर विषो रक्षो तथा पीने साध्वीनु इप धारण करी त्यान तेनी पासे विषो रक्षो ते वषते महाराज अेषुक कीडा निमित्ते इरता इरता त्या आवी पडोऽप्या तेमणे माछली मारवा माटे उद्यत थयेला साधुने नेधने कळु आह ! तमे साधु यरने आ दुष्ट आचरण शा माटे करे छे ? त्यारे ते साधुवेषधारी कीध करीने जाइयो-आ आर्या गर्भवती होवाथी तेने माछली भावाने उडोणे थये छे अेटता माटे माछली मारवाने नण द्वेलावीने विषो छु नंअो राजन् ! अेनु आपने शु प्रयोजन छे ?

ततः श्रेणिकोऽयदत्-त्वादृशाना दम्भ दुराचार च वीक्ष्य मम धर्मानु  
रागो नापगच्छति, पृथिवी पाताल गच्छेत्, सूर्यः पश्चिमदिश्युदियात्, चन्द्रो  
वह्निं चर्पेत्, गहिः शीतलो भवेत्, अमृत विष भवेत् तदपि मम सम्यक्त्व  
न प्रचलेत् । ततो देवद्वयमधिज्ञानेन राजान सम्यक्त्वधर्मे निश्चल विज्ञाय  
पुनः पुनः स्तौति । तथाहि—

( इन्द्रवज्रा )

“ सम्यक्त्वधारी च परोपकारी,  
धन्योऽमि राजन् ! कृतपुण्यराशिः ।  
तुल्यस्त्वया कोऽपि न भूतलेऽस्मिन्,  
सर्वं समक्ष त्वयि दृष्टमेतत् ॥ १ ॥

ऐसे साधुके वचन सुनकर राजा क्रोधित हो बोले—

निर्लज्ज ! छोड़ इस दुष्कृत्यको, नहीं तो दण्ड दूंगा । यह

सुनकर वह साधुवेपथारी गोला ? किमको दण्ड देते हैं ? गौतमादि  
चौदह हजार मुनि और चन्दनमाला आदि छत्तीस हजार साधुओं  
सभी अन्तर दुराचारी और ग़र साधुपनका आडम्बर रखते हैं तो  
मुझ अकेलेपर ही क्यों आक्षेप करते हो ? ।

यह सुनकर राजा श्रेणिक बोले—तुम्हारे जैसे दम्भी और दुरा  
चारीको देख कर मेरा धर्मका अनुराग नहीं हट सकता है, अर्थात्  
जिनवचनपर स्थित मेरी दृढ श्रद्धा नहीं हट सकती है, पृथ्वी पाता-  
लमे चली जाय, सूर्य पश्चिममें उदय हो जाय, चन्द्र अग्नि वरसावे,  
अग्नि शीतल बन जाय, अमृत विष बने तो भी मेरा सम्यक्त्व विच-  
लित नहीं हो सकता ।

जैसा साधुना वचन साधुजी राजा क्रोध करीने गोल्या —

निर्लज्ज ! छोड़ दे आ दुष्कृत्यने, नहीं तो दंड करीश आ साधुजीने ते  
साधुवेपथारी गोल्यो—दंड डोने आपशे ? गौतम आदि चौदह हजार मुनि तथा अष्टन  
गणना आदि छत्तीस हजार साधुजीओ तमाभ अन्तर दुराचारी तथा गड़ान साधुपणाने।  
आडंबर राजे छे तो मारा ओकठाना उपरन डेम आक्षेप करे छे ?

आ साधुजीने राजा श्रेणिक—गोल्यो—तमारा जेवा दली तथा दुराचारीने  
ओधने मारे धर्म उपरने अनुराग डगी शक्ये नहीं, अर्थात् जिनवचन उपर मारा  
दंड श्रद्धा विचलित न थछे शक्ये पृथ्वी पानागभा वाली जाय, सूर्य पश्चिममा गिगे,  
अग्नि वरसावे, अग्नि ठंडा गनी जाय, अमृत जेर गनी जाय तो पछे माइ  
सम्यक्त्व बलायमान थछे शक्ये नहीं

અન્યથા—

શાર્દૂલવિક્રીડિતમ્ ।

“ સમ્યક્ત્વ વિમલ પર દૃઢતર યદ્વર્ણિત તાવક,  
દેવેન્દ્રેણ તતોઽધિક ત્વયિ સદા તદ્ ભૂપતે ! રાજતે ।  
દાન દીનદયાલુતા જિનવચોમર્મજ્ઞતા સાધુતા,  
ધર્મેઋપિયતા ગુરૌ વિનયિતા દેવેઽનુરાગસ્તથા ॥ ૨ ॥

હસકે પશ્ચાત્ત ઉન દોનોં દેવોને અવધિજ્ઞાન દ્વારા રાજાકો સમ્યક્ત્વ ધર્મકે અન્દર નિશ્ચલ જાનકર ધારમ્બાર હસ પ્રકાર સ્તુતિ કરને લગે—

“ સમ્યક્ત્વધારી ચ પરોપકારી, ધન્યોઽસિ રાજન્ ! કૃતપુણ્યરાશિઃ ।  
તુલ્યસ્ત્વયા કોઽપિ ન ભૂતલેઽસ્મિન્, સર્વે સમક્ષ ત્વયિ દૃષ્ટમેતત્ ॥ ૧ ॥  
અર્થાત્—હે સમ્યક્ત્વધારી, પરોપકારી રાજન્, તુમ ધન્ય હો ।  
તુમ્હારે જૈસા પુણ્યવાન્ અટલસમક્તિધારી હસ ભૂતલ પર અન્ય નહોં ।  
જો સમ્યક્ત્વધારોકે ગુણ હોતે હે ચે સય તુમમે પ્રત્યક્ષ પાચે જાતે હે ॥૧॥

ફિર મી—

સમ્યક્ત્વ વિમલ પર દૃઢતર યદ્વર્ણિત તાવક,  
દેવેન્દ્રેણ તતોઽધિક ત્વયિ સદા તદ્ ભૂપતે ! રાજતે ।  
દાન દીનદયાલુતા જિનવચોમર્મજ્ઞતા સાધુતા,  
ધર્મેઋપિયતા ગુરૌ વિનયિતા દેવેઽનુરાગસ્તથા ॥ ૨ ॥

ત્યાર પછી તે બન્ને દેવો અવધિજ્ઞાન દ્વારા રાજાને સમ્યક્ત્વ ધર્મની અંદર નિશ્ચલ બાણીને વારવાર તેની આ પ્રમાણે પ્રશંસા કરવા આપ્યા—

સમ્યક્ત્વધારી ચ પરોપકારી, ધન્યોઽસિ રાજન્ ! કૃતપુણ્યરાશિઃ ।  
તુલ્યસ્ત્વયા કોઽપિ ન ભૂતલેઽસ્મિન્, સર્વે સમક્ષ ત્વયિ દૃષ્ટમેતત્ ॥ ૧ ॥

અર્થાત્—હે સમ્યક્ત્વધારી પરોપકારી રાજન્ તમે ધન્ય છો, તમારા જેવા પુણ્યવાન અટલ સમક્તિધારી આ પૃથ્વી ઉપર બીજા નથી જે સમ્યક્ત્વધારીના ગુણ હોય છે તે બધા તમારામા પ્રત્યક્ષ જોવામા આવે છે (૧)

ફરી પણ—

સમ્યક્ત્વ વિમલ પર દૃઢતર યદ્વર્ણિત તાવક,  
દેવેન્દ્રેણ તતોઽધિક ત્વયિ સદા તદ્ ભૂપતે ! રાજતે ।  
દાન દીનદયાલુતા જિનવચોમર્મજ્ઞતા સાધુતા,  
ધર્મેઋપિયતા ગુરૌ વિનયિતા દેવેઽનુરાગસ્તથા ॥ ૨ ॥

एव स्तुवन् देवदर्शनममोघ भवतीति प्रसन्न एको देवो हारमपरश्व  
द्वौ मृदोलम् श्रेणिकाय दत्त्वा स्वस्थान गतो । ततः श्रेणिकेन देवदत्तहारश्चे-  
ष्टनायै दत्तः, द्वौ मृदोलम् च नन्दायै । नन्दा च 'पतिदत्त किमपि वस्तु  
सागरं प्रायमिति मनसि कृत्वा पातिव्रत्यरथायै मृदोलम् जानानाऽपि सपत्नी-  
द्वेष विधाय सादरमागतो । सत्पोत्कर्षं मञ्जूपाया स्थापनसमये भूषणकरण्डा

हे राजन् ! दान देना, दीन पर दया रखना, जिनवचनके  
रहस्यका जानना, सज्जनता रखना, मर्मका अद्वितीय प्रेम, शुरुजनके  
साथ विनय और दीनराग देवके प्रति अनुराग इत्यादि जो तुम्हारे  
हृदय सम्पत्तयके निर्मल गुण इन्द्रने वर्णन किये हैं उससे भी अधिक  
तुम्हारेमें साक्षात् मौजूद हैं ॥ २ ॥

इस प्रकार राजाकी प्रशंसा करते हुए देवोंने देवदर्शन अमोघ  
होता है, इस भावसे प्रसन्न होकर उनमेंसे एक देव राजाको हार  
और दूसरा देव दो मिट्टीके गोले भेंट करता है । पाद वे दोनों  
अपने स्थानपर गये आर राजा अपने स्थानपर आया । पश्चात् राजा  
श्रेणिकने देवममर्पित हार चेल्लना महारानीको दिया, और दोनों मिट्टीके  
गोले नन्दा महारानीको दिये । नन्दाने भी 'पतिकी दी हुई कोई भी  
वस्तु आदरसे लेना चाहिए, यह पतिव्रताका धर्म है' ऐसा विचार-  
कर अपनी मौतके साथ ईर्ष्याको छोड़कर आदरसे उन गोलोको लेलिये ।  
और अत्यन्त हर्ष के साथ उन मिट्टीके गोलोको सुरक्षितपनेसे अपनी

छे ॥ २ ॥ दान देना, दीन पर दया रखना, जिनवचनका रहस्यने  
बोझना, सज्जनता रखनी, धर्मका अद्वितीय प्रेम, शुरुजनकी साथे विनय तथा  
दीनराग देवका अनुराग, इत्यादि वे तमाम हृदय सम्पत्तयका निर्मल गुण इन्द्र  
वरुण इत्यादि तेनाथी पक्ष वधाते तमामका साक्षात् मौजूद हैं (२)

आ प्रकार गजनी प्रशंसा करता था देवाये देवदर्शन अमोघ होय है, ये  
भावथी प्रसन्न धर्म तेमनाभावथी एक देव गजने हार अने भीजे हव ने भाटीना  
गोणा ले आये है पछी ते जेठ पोताना स्थाने गया तथा राजा पोताने स्थाने  
आव्या पछी राजा श्रेणिके देवे आपेले हार चेल्लना महाराणीने आये तथा  
जेठ भाटीना गोणा नदा महाराणीने आये नदाये पक्ष 'पतिअ आपेले दोह  
पक्ष वस्तु आदरथी लेवी जेठअ ये पतिव्रतानो धर्म है' अथ विचार करी पोतानी  
शोकथनी साथे धर्माने छोडी आदरथी ते गोणा लह बीधा अने अत्यंत हर्षथी ते



ઘાતેન તૌ મગ્નૌ । તત્રૈકસ્મિન્ કુણ્ડલયુગલમપરસ્મિન્ વસ્ત્રયુગ્મ ચ વીક્ષ્ય પર પ્રમુદિતા જાતા ।

અન્યદાઽભયો મગવન્ત મહાગીરમ્થુ પૃષ્ઠવાન્-અપશ્ચિમ. કો રાજકૃષિ મેવિષ્યતિ ? । મગવતા પ્રોક્તમ્-અતઃ પર વદ્મસુકુટો નૃપો ન પ્રવ્રજિષ્યતીતિ શ્રુત્વા શ્રેણિકભૂપેન તાતેન દીયમાન રાજ્ય ન સ્વીકૃતવાન્ ।

નન્દયા દીક્ષાભિલાપિણમભયકુમાર જ્ઞાત્વા કુણ્ડલયુગલ વૈઢલ્યાય વત્તમ્, વસ્ત્રયુગ્મશ્ચ વૈહાયસાય । તદન્તુ મહતોત્સવેન મહારાઙ્ગી નન્દાઽભયકુમારશ્ચોમૌ પ્રવ્રજિતૌ ।

પેટીમે રાખને લગી ડસ સમય ભૂષણકરડકકી ટકરસે દોનોં ફૂટ ગય, તથ વહાં વહ દેખતી હૈ કિ એક ગોલેમે કુણ્ડલકી જોડી ઓર દૂસ-રેમેં દો દિવ્ય વસ્ત્ર હૈ, એસા દેખકર રાની ચહુત પ્રસન્ન હુઈ ।

એક સમય અભયકુમારને મગવાન મહાવીર સ્વામીસે પૂછા કિ-હે મગવન્ ! અતિમ રાજકૃષિ કૌન હોગા ?

મગવાનને કહા-હે અભયકુમાર ! આજ પીઝે મુકુટવદ્ધ રાજા પ્રવ્રજિત નહીં હોગા । યદ્ય સુનકર અભયકુમારને મનમેં વિચાર કિયા કિ-અગર પિતાદ્વારા મિલને વાલે રાજ્યકો સ્વીકાર કરુ તો મૈ મી મુકુટવદ્ધ રાજા ચન્, પરન્તુ મગવાનકા વચન હૈ કિ-મુકુટવદ્ધ રાજા રાજકૃષિ નહીં બનેગા છત્તદર્ય મૈ રાજ્ય નહીં લૂગા । ઇસ લિયે પિતાસે પ્રાપ્ત હોતે રાજ્યકો ડનને સ્વીકાર નહીં કિયા ।

માઠીના ગોળાને સુરક્ષિત રીતે પોતાની પેટીમા રાખવા લાગી પરંતુ તે રાખતી વખતે આભૂષણના ડાબલાના અથડાવાથી બેઠ ફૂટી ગયા ત્યારે તેના બેવામા આવ્યું કે એક ગોલામા કુડલની બેડી છે તથા બીજામા બે દિવ્ય વસ્ત્ર છે આ બેમને રાણી બહુ પ્રસન્ન થઈ

એક સમય અભયકુમારે ભગવાન મહાવીર સ્વામીને પૂછ્યું કે-હે ભગવાન્ ! અતિમ રાજકૃષિ કોણ થશે ?

ભગવાને કહ્યું-હે અભયકુમાર આજ પછી મુગટધારી રાજા પ્રવ્રજિત થશે નહિં આ સાબગીને અભયકુમારે મનમા વિચાર કર્યો કે બે પિતા તરફથી મળનાર રાજ્યને સ્વીકાર કરે તો હું પણ મુગટવદ્ધ રાજા બનું પરંતુ ભગવાનનું વચન છે કે મુગટવદ્ધ રાજા રાજકૃષિ નહિં બને તે માટે પિતા તરફથી મળનાર રાજ્યને સ્વીકાર નહિં કરે, આમ નિશ્ચય કરીને તેણે રાજ્યને સ્વીકાર ન કર્યો

श्रेष्ठिकस्य कर्म-महाकर्म-प्रमुखात्प्राप्तिनाम्ने कालकुमारः  
 पुत्र जायते । अने प्रजिने वल्लभा चित्र इन्द्रिः कर्मादि गहि  
 कर्मदिगन्तुनौ, नद मन्त्रगति न-मन्त्रमुपविष्यते नन्व वदन्ता गन्त-  
 लैधद भाव कोमीनि मदै न्मन्त्र ।

गुणे श्रेष्ठिकेन प्रमुखात्प्राप्तिनाम्ने श्रेष्ठिको वदो मन्त्रपूरे निमित्त ।  
 एतेन द्वेव कामं कृत्यादिन दायते । भूय मोन्नादिकं निन्दन ।

अन्तर्यामिनी को दीक्षाभिन्नापी जायते नन्वा महाकर्मने कृष्ण  
 पुत्र वैद्वन् कृष्णको दिया और दन्तपुत्र वैद्वान कृष्णको दिया  
 नौ नि ददे दन्तवसे नन्वा महाकर्म औ अन्तर्यामिनी दोनों  
 प्रजिने हुए ।

श्रेष्ठिक राजाके कारी महाकर्म आदि अन्य गनियेके काल  
 महाकर्म आदि और भी अनेक पुत्र थे । अन्तर्यामिनीके दीक्षा लेने  
 प श्रेष्ठिक राजा निन्का चित्र आगे वर्णन करेंगे उन्होंने एक  
 नन्व पञ्चानने कालकुमार आदि इन कुमारोंके साथ इन प्रकार  
 मन्त्रा (मन्त्रा) की-अपने पिता महाकर्म श्रेष्ठिक अपने दृष्ट सुवके  
 विद्वान्क है इन नि इनको दन्तवसे दानक गन्तका ग्राह भा  
 कके सुवहर्षक गन्तसुवका अनुभव करे । यह बात सब भाइ-  
 योंको पन्त आई और उन्होंने स्वीकार क ली ।

अपने पूर्वभवके दैते श्रेष्ठिकगजने अपने पिता श्रेष्ठिकको  
 किनी जन्मे पकड़कर लोहेके पीजरेमें दानक सुव शान अपने

अन्तर्यामिनी के दिक्षु दिक्षु श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके कुरादि नद वैद्वन्  
 दन्तवसे दन्तवसे नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्

श्रेष्ठिक - नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्

श्रेष्ठिक - नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्  
 नद नद-श्रेष्ठिके नद नद-श्रेष्ठिके नद वैद्वन् कुरादि नद वैद्वन्

ઘાતેન તૌ ભગ્નો । તૈરુસ્મિન્ કુણ્ડલ્યુગલમપરમ્મિન્ વસ્ત્રયુગ્મ ચ વીક્ષ્ય પર  
મમુદિતા જાતા ।

અન્યદાઽભયો ભગવન્ત મહાવીરપ્રભુ પૃષ્ઠવાન્-અપશ્ચિમ. કો રાજઋષિ  
ર્મત્રિપ્યતિ ? । ભગવતા પ્રોક્તમ્-અતઃ પર વદ્મસુકુટો નૃપો ન પ્રવ્રજિપ્યતીતિ  
શ્રુત્વા શ્રેણિકભૂપેન તાતેન દીયમાન રાજ્ય ન સ્વીકૃતવાન્ ।

નન્દયા દીક્ષાભિલાપિણમભયકુમાર જ્ઞાત્વા કુણ્ડલ્યુગલ વૈદહ્યાય  
દત્તમ્, વસ્ત્રયુગ્મશ્ચ વૈહાયસાય । તદન્તુ મહતોત્સવેન મહારાણી નન્દાઽભયકુમા  
રશ્ચોભૌ પ્રવ્રજિતૌ ।

પેટીમાં રત્નને લગી उस समय भूषणकरडककी टक्करसे दोनों फूट गए,  
तब वहा वह देखती है कि एक गोलेमे कुण्डलकी जोड़ी और दूस-  
रेमें दो दिव्य वस्त्र है, ऐसा देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई ।

एक समय अभयकुमारने भगवान महावीर स्वामीसे पूछा  
कि-हे भगवन् ! अंतिम राजर्क्षाप कौन होगा ?

भगवानने कहा-हे अभयकुमार ! आज पीछे सुकुटबद्ध राजा  
प्रव्रजित नहीं होगा । यह सुनकर अभयकुमारने मनमें विचार किया  
कि-अगर पिताद्वारा मिलने वाले राज्यको स्वीकार करू तो मैं भी  
सुकुटबद्ध राजा बनू, परन्तु भगवानका वचन है कि-सुकुटबद्ध राजा  
राजर्क्षपि नहीं बनेगा एतदर्थ मैं राज्य नहीं लूंगा । इस लिए पितासे  
प्राप्त होते राज्यको उनने स्वीकार नहीं किया ।

માટીના ગોળાને સુરક્ષિત રીતે પોતાની પેટીમાં રાખવા લાગી પરંતુ તે રાખતી  
વખતે આભૂષણના ડાળલાના અથડાવાથી એક કૂટી ગયા ત્યારે તેના બેવામાં આબ્ધુ  
કે એક ગોલામાં કુડલની બેડી છે તથા બીજામાં બે દિવ્ય વસ્ત્ર છે આ બેંધને  
રાણી બહુ પ્રસન્ન થઈ

એક સમય અભયકુમારે ભગવાન મહાવીર સ્વામીને પૂછ્યું કે-હે ભગવાન્ !  
અંતિમ રાજઋષિ કોણ થશે ?

ભગવાને કહ્યું-હે અભયકુમાર આજ પછી સુગટધારી રાજા પ્રવ્રજિત થશે  
નહિ આ સાણગીને અભયકુમારે મનમાં વિચાર કર્યો કે જો પિતા તરફથી મળનાર  
રાજ્યનો સ્વીકાર કરૂ તો હું પણ સુગટબદ્ધ રાજા બનું પરંતુ ભગવાનનું વચન છે  
કે સુગટબદ્ધ રાજા રાજઋષિ નહિ બને તે માટે પિતા તરફથી મળનાર રાજ્યનો  
સ્વીકાર નહિ કરૂ, આમ નિશ્ચય કરીને તેણે રાજ્યનો સ્વીકાર ન કર્યો

भूपस्यैतादृशी दशा जाता ?, केन कर्मणा-एतादृगवस्था जातेति सर्वज्ञो जानाति, सर्वज्ञमन्तरेण को नाम कर्मगतिं ज्ञातुं शक्नोति । हे आत्मन् ! यदि धर्मो नारायते तदा तत्रापि तादृशी दुर्दशा भविष्यति ।

इत्यादि स्वमनसि विचार्य चेन्नलना निरन्तर प्रवर्धमानपरिणामेन धर्म-क्रिया करोति । नमस्कारपौरुषीप्रभृतिदशविधप्रत्यारयानसमाचरण श्रावन्व्रत-परिपालन, मार्यमाणजीवरक्षण, स्वधर्मपरिपोषण, दीनाऽनायाऽन्यपद्गवादिऋणा-करण साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकारूपचतुर्विधतीर्थसेवाकरणमशरणाशरण्यता

ऐसे शक्तिशाली महाप्रभाववाले भूपकी भी यह दुर्दशा हो रही है, किम कर्मसे इनकी ऐसी दशा हुई है इसे तो सर्वज्ञके सिवाय कोई नहीं जान सकता है । हे आत्मन् ! अगर तू धर्मका आराधन नहीं करेगा तो तेरी भी ऐसी ही दुर्दशा होनेवाली है ।

इत्यादि कर्मकी गहन गतिसे और अपने पतिकी दुर्दशाको विचारती हुई निरन्तर प्रवर्धमान परिणामसे धर्मक्रिया करती थी । नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी आदि दस प्रकारके प्रत्यारयान (पचखाण) नित्यप्रति करती थी । श्रावकके व्रतोंका पालन करता थी, मारेजाते हुए जीवोंको बचाती थी, साधर्मियोंका पोषण करती थी, और दीन, अनाथ, पङ्गुजनोंके ऊपर परम करुणा करके अन्न, वस्त्र, औषधि आदिके द्वारा उनके दुःखोंका निवारण करती थी । साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार तीर्थ की सेवा करती थी । निराधारकी

प्रभाववाणा राज्ञी पक्ष आनी दुर्दशा यध नही छे क्या कर्मधी तेमनी आवी दशा यध छे ते तो सर्वज्ञ सिवाय कोरि नखी शकतु नथी

हे आत्मन् ! अगर जो धर्मनु आराधन नहि करे तो तारी पक्ष आवीन दुर्दशा थवानी छे

आ प्रभाषे कर्मनी गहन गतिने अन चोताना पतिनी दुर्दशाने, विचार करती थकी दुर्दशा प्रवर्धमान परिणामथी धर्मक्रिया करती छती नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी आदि दश प्रकारना प्रत्याभ्यान (पचखाण) नित्य प्रति करती छती श्रावकना व्रतानु पालन करती छती मार्या नता छवोने गयावती छती साधर्मियोंनु पोषण करती छती तथा दीन, अनाथ, छुवापागणा भाषुसेना छपर परम करुणा करीने अन्न पत्र औषध वगैरेशी तेमना दु जोनु निवारण करती छती साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका उप यर तीर्थनी सेवा करती छती निराधारनी आधार छती क्या सुधी

તદા ચેલ્લના ચ પ્રચ્છન્નરીત્યા સ્વાદ્ય વસ્તુ તથા ચ સ્વપરિવાનવસ્ત્રમાર્દ્રીકૃત્ય  
 ભૂપસમીપે ગચ્છતિ । ગુમ્પરીત્યા ભોજ્ય વસ્ત્રનિપ્પીઢનજલ ચ ભૂપાય સમર્પયતિ ।  
 કશાઘાતપ્રવલવેદનાશમનાય મેપજમિશ્રિતવસ્ત્રજલેન ગાત્ર પ્રક્ષાયતિ, તત્પ્રભાવેન  
 ભૂપો વેદના ન વેદયતિ ।

અથ ચેલ્લનાવૃત્તાન્ત વર્ણયતે—ચેલ્લના ત્રિકાલ ધર્મક્રિયા સમારાધયતિ  
 મનસિ વિચારયતિ ચ—‘અહો ! કર્મણા વિચિત્રાગતિરીદ્દશશક્તિગાલિનોઽપિ  
 શ્રુત્યોંકે દ્વારા સૌ-સૌ ચાવુરુકી માર મહારાજ શ્રેણિકકો દિલવાતા  
 થા ઓર સ્નાન-પાન ભી રોક દિયા યા, જ્ય મનમે આતા ત્વ સ્નાનેકો  
 દેતા યા । હસ પ્રમાર રાજાકો ભૂલ્લ ઓર પ્યાસકી યાતનાસે પીઢિત  
 દેલ્લકર ચેલ્લના મહારાની અત્યત દુ ગ્વિત હુઈ ઓર વહ સ્નાનેકી વસ્તુ  
 ગુલ્લ રીતિસે બાંધ લેતી ઓર પાનીસે ભીગે વસ્ત્ર પહનકર રાજાકી  
 પાસ જાતી યી સ્વાદ્ય વસ્તુ ગુલ્લ રીતિસે રાજાકો સ્વિલાની ઓર અપને  
 કપડે નિચોડ કર ડસકા પાની પોલાતી ઓર ચાવુરુકી પ્રવલ જોડસે  
 ઉત્પન્ન હુઈ વેદનાકો શાન્ત કરનેકે લિપ્ત ઓપધસે મિલે હુઈ વસ્ત્ર જલસે  
 રાજાકે શરીરકો ધોતો થી, જિસસે વેદના કુછ કમ પડજાતી થી ।

અથ ચેલ્લનાકે વિષયમે કહતે હૈ—ચેલ્લના મહારાની ધર્માત્મા  
 ઓર ધર્મપરાયણા યી । ત્રિકાલ (પ્રાત કાલ, મધ્યાહ્ન ઓર સાયકાલ)  
 ધર્મધ્યાન કરતી થી ઓર અપને પતિ મહારાજ શ્રેણિકકે વિષયમે  
 ઘોલતી થી કિ-અહો ! કર્મોંકી કેસી વિચિત્ર ગતિ હૈ, કિ જિસસે

સો સો આયુકને માર મહારાજ શ્રેણિકકે દેવરાવતો હતો તથા આવો પીવાનુ પશુ  
 અટકાવ્યુ હતુ પોતાના મનમા આવે ત્યારે આવને આપતો હતો આ પ્રકારે રાજાને  
 ભૂખ અને તરસની પીડાથી દુ ખી ભેઠને ચેલ્લના મહારાણી જાહુ દુ ખી થઇ અને  
 તે આવના વસ્તુ છાની રીતે બાધી તથા પાણીથી ભીંજવેલા વસ્ત્ર પહેરી રાજાના  
 પાસે જતી આવની વસ્તુ છાની રીતે ઠાઠી રાજાને અવરાવતી તથા પોતાના  
 કપડા નિચોવીને તેનુ પાણી પીવરાવતી તથા આયુકના સખત ઘાથી ઉત્પન્ન થતી  
 વેદનાને શાત કરવા માટે ઔષધ લગાડેલા વસ્ત્રના પાણીથી રાજાના શરીરને ધોતી  
 હતા જેથી વેદના કષ્ટક બોધી પડી જાતી હતી

હવે ચેલ્લનાનું વૃત્તાત કહે છે—ચેલ્લના મહારાણી ધર્માત્મા તથા ધર્મપરાયણા  
 હતી ત્રિકાલ ધર્મ ધ્યાન કરતી હતી તથા પોતાના પતિ મહારાજ શ્રેણિકની ખાબતમા  
 કહેતી હતા કે-અહો ! કર્મોંકી કેવી વિચિત્ર ગતિ છે જેથી આવો શક્તિશાળી મહા-

भूपत्यैतादृशी दशा जाता ?, केन कर्मणा-एतादृगवस्था जातेति सर्वज्ञो जानाति, सर्वज्ञमन्तरेण को नाम कर्मगतिं ज्ञातुं शक्नोति । हे आत्मन् ! यदि धर्मो नारायते तदा तत्रापि तादृशी दुर्दशा भविष्यति ।

इत्यादि स्वमनसि विचार्य चेन्नना निरन्तर प्रवर्धमानपरिणामेन धर्म-क्रिया करोति । नमस्कारपौरुषीप्रभृतिदशत्रिप्रत्याख्यानसमाचरण श्रावन्त्रत-परिपालन, भार्यमाणजीवरक्षण, स्वधर्मिपरिपोषण, दीनाऽनाथाऽन्यपद्वन्वादिकरुणा-करण साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकारूपचतुर्भिर्धर्तीर्थसेवाकरणमशरणाशरण्यता

ऐसे शक्तिशाली महाप्रभाववाले भूपती भी यह दुर्दशा हो रही है, किम कर्मसे इनकी ऐसी दशा हुई है इसे तो सर्वज्ञके सिवाय कोई नहीं जान सकता है । हे आत्मन् ! अगर तू धर्मका आराधन नहीं करेगा तो तेरी भी ऐसी ही दुर्दशा होनेवाली है ।

इत्यादि कर्मकी गहन गति को और अपने पतिकी दुर्दशाको विचारती हुई निरन्तर प्रवर्धमान परिणामसे धर्मक्रिया करती थी । नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी आदि दस प्रकारके प्रत्याख्यान (पचखाण) नित्यप्रति करती थी । श्रावकके प्रतीका पालन करता थी, मारेजाते हुए जीवोंको बचाती थी, साधर्मियोंका पोषण करती थी, और दीन, अनाथ, पङ्गुजनोंके ऊपर परम करुणा करके अन्न, वस्त्र, औषधि आदिके द्वारा उनके दुःखोंका निवारण करती थी । साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार तीर्थ की सेवा करती थी । निराधारकी

प्रभाववाला राजा भी यह आवा दुर्दशा था नहीं छे क्या कर्मथी तेमनी आवी दशा था छे ते तो सर्वज्ञ सिवाय कौन नखी शकतु नथी

हे आत्मन् ! अगर जो तू धर्मनु आराधन नहि करे तो तारी पण आवीण दुर्दशा थवानी छे

आ प्रभाछे कर्मनी गहन गतिनो अन पौताना पतिकी दुर्दशानो, विचार करती थकी हमेशा प्रवर्धमान परिणामथी धर्मक्रिया करती छती नमस्कार (नवकारसी) पौरुषी आदि दश प्रकारना प्रत्याख्यान (पचखाण) नित्य प्रति करती छती श्रावकना प्रतीक पालन करती छती भार्या नत्ता लुवेने न्यावती छती साधर्मिआनु पोषण करती छती तथा दीन, अनाथ, लुलापागना भाखुसेना उपर परम करुणा करीने अन्न पत्र औषध वगैरथी तेमना हु पौनु निवारण करती छती साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका उप यर तीर्थनी सेवा करती छती निराधारनी आधार छती क्या सुधी

सकलजीवहितसुखपथ्यकारिता च दधाना, एव मित्रिधर्मक्रिया कुराणा विहरति,  
त्रिकालसामायिक च कुरुते । तथाहि—

“सा चेत्लणा भूमिथल पमज्ज, वत्थाइ सव्व पडिलेक्ख भावा ।

वद्धा सदोर मुहवत्तिमासे, सामाइय त कुणए तिकाल ॥ १ ॥”

छाया—“सा चेत्लना भूमिस्थल प्रमार्ज्य, वत्तादि सर्व प्रतिलेख्य भावात् ।

वद् वा सदोरा मुखस्त्रीमास्ये, सामायिक तत् कुरुते त्रिकालम् ॥ १ ॥”

अन्यदा कूणिकः सर्वालङ्कारविभूषित स्वमातुश्चेत्लनादेव्याश्चरणौ वन्दितु  
समागतस्तत्र तामार्तध्यानयुक्ता दृष्ट्वा वन्दमानः कूणिकराजः स्वजननीं पृच्छति—

आधार थी, कहाँ तक कहें महारानी चेत्लना सब प्रकारसे सब  
जीवोंके लिए हितकारी, पथ्यकारी, और सुखकारी थी, और अनेक  
प्रकारसे धर्मक्रिया करती हुई शीलव्रत आदि आराधन करती हुई  
तीनों काल सामायिक करती थी । कहा है,—

“सा चेत्लणा भूमिथल पमज्ज, वत्थाइ सव्व पडिलेक्ख भावा ।

वद्धा सदोर मुहवत्तिमासे, सामाइय त कुणए तिकाल ” ॥ १ ॥

वह चेत्लना महारानी विधिपूर्वक पहले प्रमार्जिका (पूजनी) से  
भूमिको पूज लेती थी, बाद वस्त्रोंकी प्रतिलेखना (पडिलेहणा) करके  
मुँहपर सदोरकमुखवस्त्रिका बाधकर तीनों कालमें सामायिक करती थी ।

एक समय कूणिक महाराज सब अलङ्कार पहिने हुए अपनी  
माता चेत्लना महारानीके पास चरण-वन्दनके लिए आये । अपने  
पतिके दुःखसे दुःखित आर्तध्यानयुक्त अपनी माताको देखकर कहने

कहीये महाराणी येवना सर्व प्रकारे णधा एवोने भाटे हितकारी, पथ्यकारी अने  
सुखकारी હતી तथा अनेक प्रकारे धर्मक्रिया करती थी शीलव्रत आदि आराधन  
करती थी त्रये काल सामायिक करती હતી કહ્યું છે કે—

“सा चेत्लणा भूमिथल पमज्ज, वत्थाइ सव्व पडिलेक्ख भावा ।

वद्धा मदोर मुहवत्तिमासे सामाइय त कुणए तिकाल ॥ १ ॥”

— ते येवना महाराणी विधिपूर्वक पहिने शुद्धाशी भूमिने पुछ पछी पत्थोनी  
प्रतिलेखना (पडिलेहणा) કરી મો ઉપર દોરા સહિત મુખવસ્ત્રિકા બાધીને ત્રયે કાલ  
(સવાર બપોર સાંજ) સામાયિક કરતી હતી

એક સમય કૂણિક મહારાજ ણધા અલંકાર પહેરીને પોતાની માતા ચેત્લના  
મહારાણીની પાસે ચરણ-વંદન માટે આવ્યા પોતાના પતિના દુઃખથી દુઃખિત આર્ત-  
ધ્યાન કરતી પોતાની માતાને જોઈને કહેવા લાગ્યા—હે જનની ! હું પોતે મોટા

हे मातः ! यदहं खलु स्वयमेव महाराज्याभिषेकेण विशालराज्यश्रियमनुभवामि तेन किं तव मनसि सन्तोष उल्लास प्रमोदो न वर्तते ? तुभ्य मम भाग्योदयो न रोचते किम् ? । ततश्चेल्लणा देवी रूणिकराजमेवमवादीत्-हे पुत्र ! यच्च देवगुरुसदृशपरमस्नेहानुरागरक्त निज तात निगडान्धने विधाय स्वयं राज्यश्रियमनुभवसि तत्कथं तादृशेन दुष्कृतेन मम मनसि तुष्टिर्होषिकाशश्च । ततः रूणिक पृच्छति-हे मातः ! कथं मयि तातः स्नेहानुरागरक्त ? , तदा सा जगाद-हे पुत्र ! यथोपकुर्वते तमेव त्वं द्वेष्टि, पश्य-जन्मानन्तरं मदाज्ञप्तया दास्या वने त्वं विस्मृष्टस्तदानीं तवेयमद्भुतलिः कुक्कुटेन तुण्डेन खण्डिता, अस्-

लगे-हे जननी मैं स्वयं बड़े राज्यके अभिषेकसे अभिषिक्त होकर विशाल राज्यश्रीका अनुभव कर रहा हूँ, इससे तुम्हारे मनमें क्या सन्तोष, उल्लास, प्रमोद नहीं है ? क्या मेरा भाग्योदय तुझे इष्ट मालूम नहीं देता ? । पुत्रके ऐसे वचन सुनकर महारानी चेल्लना देवी बोली-पुत्र ! तू देव और गुरुके समान परम स्नेहवाले अपने पिताको जन्ममें डालकर स्वयं राजश्रीका अनुभव करता है ऐसे दुष्कृत्यसे किस तरह मेरा मन सन्तुष्ट और प्रसुदित हो सकता है ? ।

तव रूणिक महाराज बोले-हे जननी ! मेरे पिताका मुझपर किस तरहका अनुराग है ? ।

माता बोली-वत्स ! जो तेरे उपकारी हैं, तू उनकी ढेप करता है, देख-तेरे जन्म होनेके बाद तुझे मेरी आज्ञासे दासीने अशोक-वाटिकामें छोड़ दिया था, उस समय तेरी यह अगुली कुक्कुट-(मुर्गे) ने अपनी तीक्ष्ण चोंचसे खडित कर दी थी और तू

राज्यना अभिषेकथी अभिषेक करायेलो छोटो विशाल राज्यश्रीने अनुभव करी रह्यो छु तेथी तभारा मनभा शु सन्तोष, उल्लास आनन्द नहीं थतो ? शु भाइ भाग्योदय तभने नथी गमतु ? पुत्रना आवा वयन सासणी महाराजी चेल्लना देवी बोली-पुत्र ! तू देव तथा गुरु समान परम स्नेहवाला पोताना पिताने पधनभा नाथी पोते राज्यश्रीने अनुभव करी रह्यो छे जेवा दुष्कृत्यथी डेवी रीते भाइ मन सन्तुष्ट तथा आनन्दित रही थके ?

तयारे द्रष्टिक महाराज बोल्या-हे जननी ! माग पिताने भारा उपर डेवी जातने अनुराग छे ?

माता कहे-वत्स ! जे तारे उपकारी छे तनेज तु द्वेष करे छे जे-ताने जन्म थया पछी भारी आज्ञाथी दासीजे तने अशोकवाटिकाभा भूझी दीधो डतो ते वणते तारी आ आगणी कुक्कुडजे पोतानी तीणी आयथी अडित करी दीधी डती



कूणिकस्य युद्ध साहाय्यविधायकानां कालादिदशकुमाराणां रथमुशल नामकसङ्ग्रामे प्रचुरजनविनाशकरणेन नरकपायोग्यकर्मसम्पादनहेतोर्निरयागामित्वेन कालादिदशकुमारविवरणग्रथितस्य प्रथमाभ्ययनस्य 'निरयायुः' इति नाम ।

अथ रथमुशलाभिधानसङ्ग्रामाभिर्भावे कारणमुच्यते, तथाहि—चम्पाया नगर्यां कूणिको राजा राज्यशासन करोति । तदीयावनुजौ वैहल्य-वैहायसौ पितृत्तसेचनमहस्तिनमारुढौ दिव्यकुण्डलवसनहारालङ्कृतौ विलसन्तौ कूणिक

राजगृह नगरको छोडकर राजाने अपनी राजधानी चम्पानगरीमें की और वहा अपने भाइयो व कुटुम्बियोके सहित रहकर राज्य करने लगे ।

इसप्रकार महाराज कूणिकका वर्णन यहां पर समाप्त होता है ।

रथमुशल संग्रामका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

कूणिक राजाके युद्धमें सहायता करनेवाले कालकुमार आदि दस कुमारोंने रथमुशल संग्राममें बहुत जनोके विनाश करनेके कारण नरकप्राप्तिरूप कर्मोका उपार्जन किया और नरकगामी बने, उन्ही दस कुमारोका वर्णन इस प्रथम अभ्ययनमें है, इस कारण इसका 'निरयायु' नाम है ।

अब रथमुशल संग्रामकी उत्पत्तिका कारण कहते हैं—

चम्पानगरीमें कूणिक राजा राज्य करते थे । उनके वैहल्य और वैहायस, ये दो छोटे भाई थे । वे पिताके दिये हुए सेचनक हाथीपर चढकर दिव्य कुण्डल वस्त्र और हारको पहनकर विलास

नगरने छोडीने राजाके पोतानी राजधानी चम्पानगरीमा करी अने त्या पोताना लाधयो । तथा कुटुम्बियो साथे रहने राज्य करवा लाधो ।

आ प्रभासे महाराज कूणिकनु वर्णन अडी समाप्त थाय छे

रथमुशल संग्रामनु संक्षिप्त वर्णन आ प्रजे छे —

कूणिक राजाने युद्धमा सहायता करवावाणा जलकुमार आदि दश कुमारोंने रथमुशल संग्राममा घला भाष्योनेना विनाश करवाना कारण्थी नरकप्राप्तिरूप कर्मोनु उपार्जन कर्युं तथा नरकगामी जन्य तेज दश कुमारोनु वर्णन आ प्रथम अभ्ययनमा छे आ कारण्थी आनु 'निरयायु' नाम छे

इये रथमुशल संग्रामनी उत्पत्तिनु का लु कडे छे —

चम्पानगरीमा कूणिक राजा राज्य करता छता तेगने वैहल्य तथा वैहायस के नानासाध छता तेयो पिताके आपेला सेचनक हाथी उपर बेसीने दि य कुटुम्ब,

राजमहिषी पद्मावती निरीक्ष्य सेचनकगजमपहर्तुं कृणिक प्रेरितवति । कूणिकेन नैकधा विज्ञाप्यमानाऽपि हस्तिहरणनिपक्तमानसा ततो न निवृत्ता । ततः पद्मावतीप्रेरितः कूणिको हस्तिन तौ याचते । हस्तियाचने कृते वैहङ्ग्यवैहायसौ सपरिवारौ सान्तःपुरौ कूणिकभयाद् विजाल्या नगर्या चेदकनामप्रेय स्वमातामह राजान प्रपञ्चौ ।

कूणिकेन दूतप्रेषणेन स्वकीयानुजो चेदको याचित, परञ्च चेदकेन तौ न प्रेषितौ, किन्तु दूतद्वारा कूणिकनिःशङ्के सयादः प्रहितः—राज्यभागमाभ्या यदि दास्यसि तदाऽयू हारहस्तिनो च प्रेषयिष्यामीति । ततः कूणिकः कोपा-रुणनयनयुगलो गतौ प्रेषयामास—यदि तौ वैहङ्ग्य-वैहायसौ न प्रेषयसि तदा युद्धाय सनद्धो भव । चेदकेनोक्तम्—अहमपि सनद्धोऽस्मि ।

करते थे । उन्हें देखकर पद्मावती रानीने सेचनक हाथीको अपने अधीन करनेके लिये कूणिकको प्रेरित किया । भ्रातृप्रेमके कारण कूणिकके बहुत समझाने पर भी रानीका मन हाथीसे नहीं हटा । अन्तमें पद्मावतीकी जात मानकर कूणिकने दोनों भाइयोंसे हाथीकी याचना की । हाथीकी याचना करनेपर दोनों भाई भयभीत हो अपने-२ परिवार सहित विजाला नगरीमें अपने नाना चेटक महाराजके पास चले गये ।

कूणिकने दूतद्वारा राजा चेटकसे हार और हाथी सहित भाइयोंको मागा । तब चेटकने दूतद्वारा कूणिकको यह समाचार भेजा—यदि तुम राज्यका भाग इन दोनोंको देते हो तो इनको तथा हार एवं हाथीको भेज सकते है । यह सुनकर महाराज कूणिककी आँखें लाल हो गयीं और उन्होंने सन्देश भेजा—यदि हार हाथीके साथ

पक्षी तथा डार पहेरीने निवास करता होता । तेमने जेधने पद्मावती राज्ञीके सेचनक हाथीने पोताना कण्ठमा लेवा माटे कूणिकने प्रेरणा करी भ्रातृप्रेमने क्षीधे कूणिके माहु सगनवी छता यषु राज्ञीनु मन हाथीथी छड्यु नहि आणरे पद्मावतीनी वात भाणीने कूणिके भन्ने लाध्थो पासेथी हाथी भाग्यो हाथी भागवाथी भन्ने लाध्ने थ्रीक लाणी भन्ने पोताना परिवार साथे विजालानगरीमा पोताना नाना चेटक महाराजनी पासे आट्या गया

कूणिके दूत द्वारा राजा चेटक पासे डार तथा हाथी सहित लाध्थो भाग्या त्यारे चेटके दूत द्वारा कूणिकने आ भयाया भोकेट्या “ जे तमे राज्यने लाग आ भन्नेने देता छे ते तेमने तथा डार तेमज हाथीने भोकेली शकु ” आ आकणी महाराज कूणिकनी आणो लाव थध गध तथा तेमणे सदेश भोकेट्यो जे डार

કૂણિકસ્ય યુદ્ધ સાહાય્યગ્રિધાયકાના કાલાદિદશકુમારાણા રથમુશલ નામકસદ્ગ્રામે પ્રચુરજનચિનાશકરણેન નરકપાયોગ્યકર્મસમ્પાદનહેતોનિરયાગામિત્વેન કાલાદિદશકુમારચિવરણગ્રથિતસ્ય પ્રથમાભ્યયનસ્ય 'નિરયાયુઃ' इति નામ ।

અથ રથમુશલાભિપ્રાનસદ્ગ્રામાગિર્ભાવે કારણમુચ્યતે, તથાદિ-ચમ્પાયા નગર્યા કૂણિકો રાજા રાજ્યશાસન ક્રોતિ । તદીયાવનુજૌ વૈહલ્ય-વૈહાયસૌ પિતૃદત્તસેચનમ્હસ્તિનમારુદૌ દિવ્યકુણ્ડલવસનદારાલદ્ધકૃતૌ ઘ્રિલસન્તૌ કૂણિક

રાજગૃહ નગરકો ઝોડકર રાજાને અપની રાજધાની ચમ્પાનગરીમે કી ઓર વહા અપને માઇયો વ કુદુમ્મિયોકે સહિત રહ્નર રાજ્ય કરને લગે ।

इसप्रकार महाराज कूणिकका वर्णन यहा पर समाप्त होता है ।

રથમુશલ સગ્રામકા સક્ષિપ્ત વર્ણન રસ પ્રકાર હૈ.—

કૂણિક રાજાકે યુદ્ધમે સહાયતા કરનેવાલે કાલકુમાર આદિ દસ કુમારોને રથમુશલ સગ્રામમેં વહુત જનોંકે ચિનાશ કરનેકે કારણ નરકપ્રાપ્તિરૂપ કર્મોકા ઉપાર્જન કિયા ઓર નરકગામી બને, ઉન્હી દસ કુમારોકા વર્ણન ડસ પ્રથમ અભ્યયનમેં હૈ, ડસ કારણ ડસકા 'નિરયાયુ' નામ હૈ ।

અવ રથમુશલ સગ્રામકી ઉત્પત્તિકા કારણ કહતે હૈ—

ચમ્પાનગરીમેં કૂણિક રાજા રાજ્ય કરતે યે । ઉનકે વૈહલ્ય ઓર વૈહાયસ, યે દો છોટે ભાઈ યે । વે પિતાકે દિયે હુણ સેચનક હાથીપર ચઢકર દિવ્ય કુણ્ડલ વસ્ત્ર ઓર હારકો પહનકર વિલાસ

નગરને ઠોડીને રાજાએ પોતાની રાજધાની ચમ્પાનગરીમા કરી અને ત્યા પોતાના ભાઈઓ તથા કુટુંબિઓ સાથે રહીને રાજ્ય કરવા લાગ્યો

આ પ્રમાણે મહારાજ કૃષ્ણિકનું વર્ણન અહીં સમાપ્ત થાય છે

રથમુશલ મગ્રામનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન આ પ્રકારે છે —

કૃષ્ણિક રાજાને યુદ્ધમા મહાયતા ડરવાવાળા ડાલકુમાર આદિ દશ કુમારોને રથમુશલ મગ્રામમા ઘણા માણમેનો ચિનાશ ડરવાના કારણથી નરકપ્રાપ્તિરૂપ કર્મોનું ઉપાર્જન કર્યું તથા નરકગામી બન્યા તેજ દશ કુમારોનું વર્ણન આ પ્રથમ અભ્યયનમા છે આ કારણથી આનું 'નિરયાયુ' નામ છે

હવે રથમુશલ મગ્રામની ઉત્પત્તિનું કારણ કહે છે —

ચમ્પાનગરીમા કૃષ્ણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા તેમને વૈહલ્ય તથા વૈહાયસ એ બે નાનાભાઈ હતા તેઓ પિતાએ આપેલા સેચનક જાગી ઉપર બેગીને દિ ય કુડલ,

सैन्यदले गरुडव्यूहः, चेटकसैन्ये च सागरव्यूहो निर्मित आसीत् । ततश्च प्रथमेऽहि कूणिकराजस्य कालकुमारोऽनुजो निजसैन्ययुतः सेनापतिः स्वय युध्यमानश्चेटकेन निक्षिप्तेनामोघेनैकेन शरेण निहतः । कूणिकसैन्यं च भग्नम् । ततो द्वयोरपि राज्ञोरल निज निज स्थान प्राप्तम् ।

द्वितीयेऽहि सुकालो निजसैन्यममन्वितो रणमुपगतो युध्यमानश्चेटकेनैकेन शरेण निपातितः । एव तृतीयेऽहि महाकालः, चतुर्थे दिने कृष्णकुमारः, पञ्चमे दिवसे सुकृष्णकुमारः, षष्ठे महाकृष्णः, सप्तमे वीरकृष्णः, अष्टमे रामकृष्णः, नवमे पितृसेनकृष्णः, दशमे दिने पितृमहासेनकृष्णश्च चेटकेनैकेन बाणेन प्रत्यहमेकैश्चः काठदयो दश कुमारा निहता । दशसु निहतेषु कूणिक-

एकही अमोघ बाण छोडते थे । वहाँ कृणिकके सैन्यमें गरुडव्यूह था और चेटक (चेडा) के सैन्यमें सागरव्यूह । उनके बाद पहिले दिनमें कूणिक राजाके छोटे भाई कालकुमार अपनी सेना सहित सेनापति बनकर स्वयं चेटक-(चेडा) महाराजके साथ लडता हुआ उनके अमोघ बाणसे मारा गया । और कूणिककी सेना नष्ट होगयी ।

दूसरे दिन सेनासहित सुकालकुमार युद्धमें चेटकके बाणसे मारे गये । इसी तरह तीसरे दिन महाकाल कुमार, चौथे दिन कृष्ण कुमार, पंचवें दिन सुकृष्णकुमार, छठे दिन महाकृष्ण कुमार, सातवें दिन वीरकृष्ण कुमार, आठवें दिन रामकृष्ण कुमार, नवमें दिन पितृसेनकृष्ण कुमार और दसवें दिन पितृमहासेनकृष्ण कुमार चेटकके एक-एक बाणसे मारे गये । दसों कुमारोंके मारे जाने पर

दिवसभा ओकअ अमोघ बाण छोडता डता आ तरफ दूखिकना सैन्यभा गरुड व्यूह डतो तथा चेटक (चेडा) ना सैन्यभा सागर-व्यूह डतो त्थार पछी पडेवे दिवसे दूखिक राजाने नानोबाध डालकुमार पोतानी सेना सहित सेनापति गनीने पोते चेटक (चेडा) महाराजनी साथे लडता लडता तेना अमोघ बाणथी भार्या गये, अने दूखिकनी सेनाने नाश थड गये।

णीजे दिवसे सेना साथे सुकालकुमार युद्धभा चेटकना बाणथी भार्या गया आली रीते त्राने दिवसे महाकाल कुमार, चौथे दिवसे कृष्णकुमार, पाचमे दिवसे सुकृष्ण कुमार, छठे दिवसे महाकृष्ण कुमार, सातमे दिवसे वीरकृष्ण कुमार, आठमे दिवसे रामकृष्णकुमार, नवमे दिवसे पितृसेनकृष्णकुमार, तथा दशमे दिवसे पितृमहा सेनकृष्णकुमार, चेटकना ओक-ओक बाणथी भार्या गया दशेय कुमाराना भार्या गयाथी,

ततो युद्धनिश्चयानन्तर कूणिकेन सह कालप्रभृतयो दश वैमात्रेया अनुजा राजानश्चेककृपेण सद्ग्रामाय समुपगताः । तत्रैकैरस्य त्रीणि त्रीणि गजानामश्वाना स्थाना च सहस्राणि, मनुष्याणा च तिस्रः कोटय आसन्, कूणिकस्यापि तावदेव बलम् ।

चेटरूपोऽपि एतादृश सद्ग्रामप्रसङ्ग विज्ञायाष्टादशगणराजैः सह सम्मेलनं कृतवान् । कालादीना प्रत्येक यावद् गजादिवलपरिमाणं तावदेव चेटरूपस्यापि । ततो युद्धं प्रवृत्तम् । चेटरु राजस्तु युद्धकाले व्रतपरायण आसीत्, अतो रणे एकस्मिन् दिने एकमेवामोघं बाणं मुञ्चति । तत्र युद्धक्षेत्रे कणिक-

वैहल्य और वैहायसको नहीं भेजते हो तो युद्धके लिये तैयार हो जाओ । चेटरुने कहा-हम भी तैयार हैं ।

इस प्रकार युद्धका निश्चय होजानेके बाद कूणिकके साथ कालकुमार आदि दसों सौतेले छोटे भाई चेटरु राजासे लड़नेके लिए आये । उन दसोंमें प्रत्येकके साथ तीन-तीन हजार हाथी घोड़े और रथ थे तथा तीन-तीन करोड़ सैनिक थे । कूणिक के साथ भी इतनी ही सेना थी ।

चेटरु (चेडा) महाराज भी इस प्रकार सद्ग्रामका प्रसङ्ग समझकर अठारह देशके गणराजाओंका सघटन किया । कालादि कुमारोंके प्रत्येकके पास जितनी सेनायें थी, उतनी ही चेटरु आदि प्रत्येक राजाके पास थी । अनन्तर दोनोंका युद्ध हुआ । चेटरु (चेडा) महाराज तो युद्धकालमें व्रतधारी थे, इस लिए युद्धमें एक दिनमें साथे वैहल्य देने वैहायसने न भेकवता हो तो युद्धने भाटे तैयार था जन्मो चेटरु कहु-अमे पणु तैयार छीये

आ प्रभाछे युद्धने निश्चय थया पछी कूणिकनी साथे कालकुमार आदि दशे औरमान नानाबाधे चेटरु राजा साथे लड़वा भाटे आव्या अे दशेयभा दरेकनी साथे त्रणु त्रणु हजार हाथी घोडा तथा रथ हता अने त्रणु त्रणु करोड सैनिक हता कूणिक राजांनी पासे पणु ओपडीअ सेना हती

चेटरु (चेडा) महाराज पणु आ प्रकारने लड़धने प्रसंग ममछने अठार देशना गणराजाओनु सगठन कथुं काल आदि कुमारोनी दरेकनी पासे जेटली सेनाओ हती तेदलीअ चेटरु आदि प्रत्येक राजांनी पासे हती तयार पछी जन्नेनु युद्ध थयु चेटरु (चेडा) महाराज तो युद्धकालमा मगधारी हता अेथी युद्धमा अेक

‘रथमुशल चे’ति=मुशलेन सहितो रथस्तस्मात् निस्सरन्मुशलो धावमानो जनसमुदायं यत्र विनाशयति स सद्ग्रामो ‘रथमुशल’ इति निगद्यते ॥ १२ ॥

तत्र कूणिकेन सह कालः स्वयलसमन्वितः रथमुशलसङ्ग्राममुपयातः, इत्याशयक सूत्रमाह—‘तएण से काले’ इत्यादि ।

मूलम्—तएणं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहि दत्ति-सहस्सेहि, तिहि रहसहस्सेहि, तिहि आससहस्सेहि, तिहि मणुयकोडीहि गरुडवूहे एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रत्ता सद्धिं रहमुसलं सगामं ओयाए ॥ १३ ॥

छाया—ततः खलु स कालः कुमारः अन्यदा रुदाचित् त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः त्रिभी रथसहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः त्रिभिर्मनुजकोटिभिः गरुडव्यूहे एकादशेन खण्डेन कूणिकेन रात्रा सार्द्धं रथमुशल सङ्ग्रामम् उपयातः ॥ १३ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि—ततः सद्ग्रामनिर्णयानन्तरं सः=असौ प्रथमः कालः=कालकुमारः अन्यदा=अन्यस्मिन् कदाचित्=कस्मिंश्चित् समये त्रिभिः=त्रिसहस्रैः, दन्तिना=दन्तिना सहस्राणि=दन्तिसहस्राणि तैस्तथा, त्रिभी रथ-सहस्रैः, त्रिभिरश्वसहस्रैः, त्रिभिर्मनुजकोटिभिः सह गरुडव्यूहे एकादशेन खण्डेन

वेदना होती है उस सग्रामको ‘महाशिलाकटक’ कहते हैं ।

‘रथमुशल’—मुशलयुक्त रथको ‘रथमुशल’ कहते हैं, अर्थात्—रथसे—निकलकर मुशल बहुत वेगसे दौड़कर शत्रुपक्षका विनाश—(संहार) करता है उस सग्रामको ‘रथमुशल’ कहते हैं । ॥ १२ ॥

वहाँ कूणिके साथ कालकुमार अपनी सेना लेकर रथमुशल सग्राममें उपस्थित हुए, इस आशयका सूत्र कहते हैं—‘तएण से काले’ इत्यादि ।

सग्रामके निश्चित होजानेके पश्चात् वह कालकुमार नियत

रथमुशल—मुशलयुक्त रथने ‘रथमुशल’ कहे छे अर्थात् रथमाथी नीकणी मुशल गहु वेगधी डोडीने शत्रुपक्षको विनाश (संहार) करे छे ओ सग्रामने “रथमुशल” कहे छे (१२)

रथा कूणिकनी साथे कालकुमार पोतानी सेना लधने रथमुशल सग्राममा उपस्थित थया आ आशयनु सूत्र कहे छे—‘तएण से काले’ इत्यादि

सग्रामने निश्चय भय गया यही ते कालकुमार निश्चित वधते तथ तथ केनर

ચેટક જેતુ દેવારાધનાયાદ્યમમક્ત કૃતવાન । તતઃ શક્રચમરૌ દ્વૌ દેવેન્દ્રૌ પ્રસન્નૌ  
સમાગતૌ । તત્ર શક્ર ઉવાચ-ચેટકો વ્રતધારી શ્રાવકોઽસ્તીત્યતસ્ત ન હનિષ્યામિ,  
પર ત્વા રક્ષિતુ શક્નોમિ, કૂળિકેનોક્ત-તથાઽસ્તુ, તતઃ શક્રસ્તદ્રક્ષણાય વજ્ર  
કલ્પમમેઘઋચ વિકુર્વિતવાન । ચમરશ્ચ-‘મહાશિલાકણ્ઠક’ ‘રથમુશલ’ ચેતિ દ્વૌ  
સંક્રામૌ વિકુર્વિતવાન, તત્ર મહાશિલેવ પ્રાણાપહારકત્વાત્ કણ્ઠકો ‘મહાશિલા-  
કણ્ઠક’ ઇત્યુચ્યતે । અથવા-ત્તણાગ્રેણાપિ હતસ્ય ગજાશ્વાદર્મહાશિલાકણ્ઠકેન  
હતસ્યેવ વેદના યત્ર ભવતિ સ સદ્ગ્રામો ‘મહાશિલાકણ્ઠક’ ઇત્યુચ્યતે ।

‘ચેટકકો જીતે’ હસ ભાવસે કળિક રાજાને દેવતાકો આરાધન કર  
નેકે લિષ્ઠ અષ્ટમમક્ત કિયા । ડસકે ઘાદ શક્રેન્દ્ર ઓર ચમરેન્દ્ર પ્રસન્ન  
હુષ્ઠ ઓર કૂળિકકે પાસ આયે । ડનમેસે શક્રેન્દ્ર ઘોલે-હે કૂળિક ।  
ચેટક (ચેડા) રાજા વ્રતધારી શ્રાવક હૈ હસ લિષ્ઠ હમ ડસે નહીં માર  
સકતે, પર તેરી રક્ષા કર સકતે હૈ । શક્રેન્દ્રકે મુલસે નિકલે હન  
વચનોકો શ્રવણકર કૂળિકને ‘તથાસ્તુ’ કરા । કૂળિકકે ‘તથાસ્તુ’  
કહને ઘાને સ્વીકાર કરલેનેકે ઘાદ શક્રેન્દ્ર કૂળિકકી રક્ષા કે લિષ્ઠ-  
વજ્રસદૃશ અમેઘ કવચ વૈક્રિયક્રિયાસે ઘનાયા । ચમરેન્દ્રને મહાશિલા  
કટક ઓર રથમુશલ નામક સગ્રામ વિકુર્વિત કિયા ।

‘મહાશિલાકણ્ઠક’-જો મહાશિલાકે સમાન પ્રાણોકા કટક અર્થાત્  
ઘાતક હૈ ઘર મહાશિલાકટક કહલાતા હૈ, અથવા તિનકેકી નોંકસે  
મારનેપર મી હાથી ઘોડે આદિકો મહાશિલાકટકસે મારને જેસી તીવ્ર

‘ચેટકને જીતુ’ જોવા આવથી કૂળિક રાજાએ દેવતાનુ આરાધન કરવા માટે અઠમ  
( ૩ ઉપવાસ ) કર્યા તેથી શક્રેન્દ્ર તથા ચમરેન્દ્ર પ્રસન્ન થયા તથા કૂળિકની પાસે  
આવ્યા તેમાથી શક્રેન્દ્ર ઓટ્યા-હે કૂળિક । ચેટક ( ચેડા ) રાજા વ્રતધારી શ્રાવક  
છે તેથી અમે તેને નહિ મારી શકીએ, પણ તારી રક્ષા કરી શકીએ શક્રેન્દ્રના  
મુખથી નિકળેલા આ વચનો સામળીને કૂળિકે ‘તથાસ્તુ’ કહ્યું કૂળિકના ‘તથાસ્તુ’  
કહેવાથી ચેટકે સ્વીકાર કરી લીધા પછી શક્રેન્દ્રે કોળિકની રક્ષાને માટે વજ્રના જેવું  
અમેઘ કવચ વૈક્રિય કિયાથી બનાવ્યું

ચમરેન્દ્રે મહાશિલાકટક તથા રથમુશલ નામે સગ્રામ વિકુર્વિત કર્યો

‘મહાશિલાકટક’-જે મહાશિલાના જેવો પ્રાણીનો કટક અર્થાત્ ઘાતક છે તે  
મહાશિલાકટક કહેવાય છે, અથવા તણખલાની અણીથી મારવાથી પણ હાથી ઘોડા  
આદિને મહાશિલાકટકથી મારવા જેવી તીવ્ર વેદના થાય છે, એ સમામને ‘મહા-  
શિલાકટક’ કહે છે

विषयो विचारः वृक्षम्यादुर इव, यात्करणात्—“चित्ति, कप्पि, पत्थि, मणोग, सकप्पे” इति सगृह्यन्ते, तदनु चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः=स एव व्यवस्थायुक्तः पुत्रविषयको विचारः पल्लवित इव, प्रार्थितः स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः सकल्पः=मनसि इष्टरूपेण निश्चयः फलित इव समुदपश्यत=जातः ।

अर्थात् आत्मविषयक विचार उत्पन्न हुआ । वह—‘चित्ति’ अर्थात् बारबार स्मरणसे ‘द्विपत्रित’ के समान, ‘कल्पित’ वही पुत्रविषयक विचार व्यवस्थायुक्त होनेसे ‘पल्लवित’ के समान, ‘प्रार्थित’ मनमें विचार स्वीकृत होजानेके कारण ‘पुष्पित’ के समान, ‘मनोगत सकल्प’ वही इष्ट रूपसे मनमें निश्चित होजानेके कारण ‘फलित’ के समान अवस्थाको प्राप्त हुआ ।

भावाय—सग्रामके प्रारम्भ होजाने पर महारानी कालीके हृदयमें पुत्र स्नेहके कारण एक समय वृक्षके अकुरके सदृश आत्मिक भाव अकुरित हुए, पश्चात् वेही विचार बारबारके चिन्तन-स्मरणसे द्विपत्रित अर्थात् जैसे बीजसे अकुर और अकुरके कुछ बढ़नेपर दो कोमल किशलय—दो नये पत्ते निकलते हैं, उसी प्रकार विचारोंका स्वरूप बढ़ा, बाद वेही वात्सल्यमय विचार ‘कल्पित’ याने पल्लवित—अधिक पत्रोंके रूपमें अग्रसर हुए, पश्चात् मनमें बढ़ते—पनपते हुए उन विचारोंके ‘प्रार्थित’ होजानेपर याने अपने विश्वाससे स्वीकृत होजाने पर ‘पुष्पित’ फूले हुएके समान होगये और अन्तमें जब

थये ते ‘चित्ति’=अर्थात् बारबार स्मरणशी द्विपत्रित समान, ‘कल्पित’=ते पुत्र विषये विचार व्यवस्थायुक्त यथाथी पल्लवितना समान, ‘प्रार्थित’=मनमा विचारने स्वीकार यथ जवाथी पुष्पितना समान मनोगत सकल्प=ते इष्टरूपशी मनमा निश्चय यथ जवाथी इलितना समान अवस्थाने प्राप्त थये।

भावार्थ—सग्राम शब्द यथ जता महाराणी कालीना हृदयमा पुत्र-स्नेहना गरखे ओक वृक्षना इलुगा जेवो आत्मिक भाव अकुरित थये। पछी तेज विचार बारबारना चिन्तन स्मरणशी द्विपत्र अर्थात् जेभ जीजभाथी अकुर अने अकुर जग वधवाथी जे कोमल किशलय—जे नवा पादज निकणे छे तेवीज सीते विचारानु स्वल्प वधवा जाद तेज वात्सल्यमय विचार ‘कल्पित’ अर्थात् ‘पल्लवित’ वधारे पादजाना रूपमा आगज आवे—पछी मनमा वधता—वस्तार पावता ते विचार ‘प्रार्थित’ यथ जता याने पोतानाज विश्वासशी स्वीकाराछ जवाथी पुष्पित इलनी पेटे यथ गया तथा



=अशेन सहितेन एकादशभागिना कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशल=तदाख्य सङ्ग्रामम् उपयातः=उपगतः प्राप्त इत्यर्थः ॥ १३ ॥

मूलम्—तएणं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुटुब-  
जागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-  
जित्था—एव खलु मम पुत्ते कालकुमारे तिहि दतिसहस्सेहिं  
जाव ओयाए, से मन्ने कि जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? जीवि-  
स्सइ, नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ ? णो पराजिणिस्सइ ?  
काले णं कुमारे ण अह जीवमाणं पासिज्जा ? ओहयमणं  
जाव झियाइ ॥ १४ ॥

छाया—ततः खलु तस्या कात्या देव्या अन्यदा कदाचित् कुटुम्ब  
जागरिका जाग्रत्या अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—एव खलु  
मम पुत्रः कालकुमार त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत् उपयातः तन्मन्ये किं जेष्यति ?  
न जेष्यति ? जीविष्यति ? न जीविष्यति ? पराजेष्यते ? न पराजेष्यते ? काल  
खलु कुमारम् अह जीवन्तं द्रक्ष्यामि ? अपहतमनःसकल्पा यावत् ध्यायति ॥ १४ ॥

टीका—‘तएण तीसे’ इत्यादि । तत् = युद्धप्रवर्तनानन्तरम् अन्यदा कदा  
चित् एकस्मिन् दिने कुटुम्बजागरिकाः—कुटुम्बः=स्वजनवर्गः पोष्यवर्गादिस्तदर्थं  
जागरिका=जागरणमिन्द्रियैर्विषयज्ञानयोग्यावस्था जाग्रत्या,=प्राप्नुवत्याः, तस्या  
कात्या देव्या अयम्=एष एतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षणः आध्यात्मिक=आत्म-

समयपर तीन २ हजार हाथी-घोडे-रथ आदि, एव तीन करोड पैदल  
सेनाको लेर गरुडव्यूहमे, ग्यारहवें अशके भागी राजा कूणिकके साथ  
‘रथमुशल,’ संग्राम में उपस्थित हुआ ॥ १३ ॥

‘तएण तीसे’ इत्यादि

संग्राम आरम्भ होनेपर ह्मण एक समय कुटुम्बजागरणा करती  
हुई काली महारानीके हृदयमें वृक्षके अद्भुतसमान ‘आध्यात्मिक’

हाथी घोडा रथ आदि अने त्रयु कशेड पायदण सेनाने लधने अउड व्यूहमा अगीधारमा  
शागना शागीधार राण कूष्मिकनी साथे ‘रथमुशल’ संग्राममा उपस्थित थया ( १३ )

‘तएण तीसे’ इत्यादि

संग्रामने आरम्भ थया ओके पथत, कुटुम्ब-जागरणा करती काली महारानीना  
हृदयमा वृक्षमा अद्भुतनी पेठे ‘आध्यात्मिक’ अर्थात् आत्मविषयक विचार उत्पन्न

त्रिपयो विचारः वृक्षस्याङ्कुर इव, यावत्करणात्—“चित्ति ए, कप्पि ए, पत्थि ए, मणोग ए सकप्पे ” इति सगृह्यन्ते, तदनु चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः=स एव व्यवस्थायुक्तः पुत्रविषयको विचारः पल्लवित इव, प्रार्थितः स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः सकल्पः=मनसि इष्टरूपेण निश्चयः फलित इव समुदपद्यत=जातः ।

अर्थात् आत्मविषयक विचार उसन्न हुआ । वह — ‘ चित्तित ’ अर्थात् बारबार स्मरणसे ‘द्विपत्रित’ के समान, ‘कल्पित’ वही पुत्रविषयक विचार व्यवस्थायुक्त होनेसे ‘पल्लवित’ के समान, ‘प्रार्थित’ मनमें विचार स्वीकृत होजानेके कारण ‘पुष्पित’ के समान, ‘मनोगत सकल्प’ वही इष्ट रूपसे मनमें निश्चित होजानेके कारण ‘फलित’ के समान अवस्थाको प्राप्त हुआ ।

भावाय—सन्नामके प्रारम्भ होजाने पर महारानी कालीके हृदयमें पुत्र स्नेहके कारण एक समय वृक्षके अङ्कुरके सदृश आत्मिक भाव अङ्कुरित हुए, पश्चात् वेही विचार बारबारके चिन्तन-स्मरणसे द्विपत्रित अर्थात् जैसे गीजसे अङ्कुर और अङ्कुरके कुण्ड बढ़नेपर दो कोमल किशलय—दो नये पत्ते निकलते हैं, उसी प्रकार विचारोका स्वरूप बढ़ा, याद वेही वात्सल्यमय विचार ‘कल्पित’ याने पल्लवित—अधिक पत्रोंके रूपमें अग्रसर हुए, पश्चात् मनमें बढ़ते—पनपते हुए उन विचारोंके ‘प्रार्थित’ होजानेपर याने अपने विश्वाससे स्वीकृत होजाने पर ‘पुष्पित’ फूले हुएके समान हांगये और अन्तमें जब

थये। ते ‘चित्तिन’=अर्थात् बारबार स्मरणरूपी द्विपत्रित समान, ‘कल्पित’=ते पुत्र विषये। विचार व्यवस्थायुक्त यथाथी पल्लवितना समान, ‘प्रार्थित’=मनमा विचारने। स्वीकार यथ नवाथी पुष्पितना समान मनोगत सङ्ग पत्ते भण्डइथी मनमा निश्चय यथ नवाथी फलितना समान अवस्थाने प्राप्त थये।

सावार्थ—सन्नाम गइ यथ जाता भडाराणी कालीना हृदयमा पुत्र-स्नेहना कारणे ओउ वृक्षना इष्टुगा जेवो आत्मिक भाव अङ्कुरित थये। पछी तेज विचार बारबारना चिन्तन स्मरणरूपी द्विपत्र अर्थात् जेभ जीजमाथी अङ्कुर अने अङ्कुर जरा वधवाथी जे कोमल किशलय—जे नवा पादडा निकणे छे तेवीज रीते विचारानु स्वइय वधवा पाद तेज वात्सल्यमय विचार ‘कल्पित’ अर्थात् ‘पल्लवित’ वधारे पादडाना इयमा आगण आवे—पछी मनमा वधता—वस्तार पावता ते विचारो ‘प्रार्थित’ यथ जाता याने पोतानाज विश्वासथी स्वीकाराथ नवाथी पुष्पित इलनी पेठे यथ गया तथा

સકલ્પસ્વરૂપમાહ-‘એવ સ્વલ્પિ’-ત્યાદિના । મમ પુત્રઃ=આત્મજઃ કાલ  
કુમારઃ ત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈઃ=ત્રિસહસ્રસંખ્યકગૈઃ, યાવત્કરણાત્-રથાનામશ્વાનાઞ્ચ  
ત્રિભિઃ સહસ્રર્મનુષ્યાણા ચ નિસૃઘિઃ કોટિભિઃ સહ ઉપયાતઃ=સદ્ગ્રામાય ગતઃ,  
તન્મન્યે=તત્ સદિદે-કિં જેષ્યતિ ? સદ્ગ્રામે શત્રૂનભિભૂય મતાપ પ્રાપ્સ્યસ્યતિ ?,  
અથવા-ન જેષ્યતિ ?, જીવિષ્યતિ ?=પ્રાણધારણ કરિષ્યતિ ? અથવા-ન જીવિ-  
ષ્યતિ ? પરાજેષ્યતે ?=શત્રુતઃ પરાસ્તો ભવિષ્યતિ ? વા ન પરાજેષ્યતે ? અહ  
કાલ કુમાર=સ્વપુત્ર સ્વલ્પ=નિશ્ચયેન જીવન્ત = પ્રાણયુક્ત દ્રક્ષ્યામિ=પ્રેક્ષિષ્યે,  
इत्येवम्, ‘અપહતમન’સકલ્પા’-અપહતો=મલિનીભૂતો મનઃસકલ્પો=યોગ્યાડયોગ્ય  
પ્રિચારો યસ્યાઃ સા તથા, યાવત્કરણાત્-કરયલ્પલ્હસ્થિયમુદ્ધી, અદૃજ્ઞાણોવગયા,  
ઓમથિયણયણવચણકમલા, દીણત્રિવલ્લવચણા, મણોમાણસિણ દુઃખેણ અભિભૂયા’  
एतेषा सद्ग्रहः । કરતલપર્યસ્તિતમુલ્હી, આર્ત-યાનોપગતા, અવમથિતનયનવદન  
કમલા, દીનવિવર્ણવદના, મનોમાનસિકેન દુઃખેણ અભિભૂતા, इतिच्छाया., ‘કર

ऊनपर हृद सकलप होगया तब वे फलितसमान अवस्थाको प्राप्त हुए  
याने वृक्षके फलके समान फलरूप बन गये ।

अब महारानी कालीके विचारका स्वरूप कहते हैं-‘एव स्वल्प’  
इत्यादि ।

मेरा पुत्र कालकुमार तीन२ हजार हाथी घोड़े रथ और तीन  
कोटि सेनाके साथ सग्राममे गया है । मेरे मनमे इस बातका सशय  
आ रहा है कि-वह युद्धमे शत्रुओं पर विजय पावेगा अथवा नहीं ?  
वह जीवित रहेगा या नहीं ? । शत्रु उससे पराजित होंगे या नहीं ? ।  
मैं अपने लाल कालकुमारको जीवितावस्थामे देखूंगी या नहीं ? । इस  
प्रकारके अनेक सशयात्मक विचार करने लगी । ऐसे कर्तव्यकर्तव्यके

अतमा न्यारे तेना ઉપર હૃદ સકલ્પ થઇ ગયો ત્યારે તે ‘ફલિત’ જેવી અવસ્થાને  
પ્રાપ્ત થાય છે અર્થાત્ વૃક્ષના ફળની જેમ ફલરૂપ થઇ ગયા

હવે મહારાણી કાલીના વિચાર (સકલ્પ)નુ સ્વરૂપ કહે છે-‘એવ સ્વલ્પ’ ઇત્યાદિ  
માર્ગે પુત્ર કલ કુમાર ત્રણ ત્રણ હાથી ઘોડા રથ તથા ત્રણ કરોડ સેનાની  
માથે સગ્રામમા ગયો છે મારા મનમા આ વાતનો સશય આવે છે કે તે યુદ્ધમા  
શત્રુઓ ઉપર વિજય મેળવશે કે નહિ ? તે જીવિત રહેશે કે નહિ ? તેનાથી શત્રુ  
પરાજય પામશે કે નહિ ? હું મારા લાલ કાલકુમારને જીવિત અવસ્થામા જોઈશ કે  
નહિ ? આ પ્રકારના અनेक सशयात्मक विचार करना लागी जेवा कर्तव्य अकर्तव्यना

तले'ति-रुतले=इस्ततले पर्यन्तित=स्थापित मुख यया सा तथा, 'आर्ते'ति-  
-कृत=दुःख पुत्रविरहजन्य तत्र भवमार्त, तच्च ध्यान, तत्रोपगता=पुत्रविरहजन्य-  
दुःखान्वित ध्यानयुक्तेत्यर्थः, 'अमथिते'ति-अमथितानि=अधःकृतानि नयन-  
चदनरूपाणि कमलानि यया सा तथा, प्रबलदुःखेन निम्नम्नाननेत्रमुखकमले-  
त्यर्थः, 'दीने'ति-दीनम्य=अकिंचनस्येव विवर्ण=कान्तिरहितं मुख यस्याः सा  
तथा=शोकम्नानचदनेत्यर्थः, 'मनोमानसिकेने'ति-मनसि भव मानसिकं दुःखं  
मनस्येव, न इति, वचनादिभिरप्रकाशितत्वात्-यत् तन्मनोमानसिक, तेन दुःखेन  
अभिभूता=न्यासा, शोकसागरमविष्टा ध्यायति=आर्तं ध्यानं करोति, इति ॥१४॥

मूलम्-तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे  
समोसरिए । परिसा निग्गया । तए णं तीसे कालीए देवीए,  
इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए  
जाव समुप्पज्जित्था ॥ १५ ॥

छाया-तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रवणो भगवान् महावीरः सम-  
वसृत । परिपत् निर्गता । ततः खलु तस्याः माल्याः देव्याः एतस्याः  
कथायाः लब्धार्थाया सत्याः अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावन् समुदपद्यत ॥१५॥

विचार और उनका निर्णय जब शिथिल अवस्थाको धारण करने लगे  
तब सहसा रानीका मन मलिन होगया और हथेलीपर अपना मुँह  
रखकर पुत्र विरहके दुःखसे क्षुब्ध रानी आर्तध्यान करने लगी ।  
अत्यन्त दुःखके कारण कुम्हलाये हुए कमलके समान नेत्र और  
मुखको नीचा किये हुए बैठ गई, उसका मुख दीनजनके समान शोका  
च्छादित-उदासीन हो गया । वह मानसिक दुःखोंसे घिरी हुई शोक  
सागरमें डूबी हुई आर्तध्यानपरायणा थी । ॥ १४ ॥

विचार तथा तेना निष्ठुय न्यारे शिथिल अवस्थाने धारण करवा लाग्या त्यारे अेकदम  
राणीनुं मन मलिन थई गथु तथा हथेली उपर पोतानुं भो राणीने पुत्र विरहना  
हुं पथी पीडाती राणी आर्तध्यान करवा लागी अत्यंत दुःखने लीधे करमाई गयेला  
कमलना जेवा नेत्र तथा मुणने नीथु करीने जेसी गढ तेनुं मुण गरीअ भाषुमना  
जेवुं शोकाच्छादित ( दीनगीरीथी छवाई गयेछु ) उदासीन थई गथु ते मानसिक  
हुं पोथी घेरायेली शोकना सागरमा डूणी जवाई आर्तध्यानपरायणा छती ( १४ )

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसत्त=सदेवमनुष्यपरिपदि भव्यानुपदेष्टु समुपस्थितः, परिपत्=जनसमुदायः निर्गता=गृहान्निस्सृता । तत् परिपन्निर्गमनानन्तर खलु=निश्चयेन तस्याः=पूर्वोक्तायाः प्रसिद्धाया या, काल्या देव्याः एतस्याः=समी पतरवर्तिन्याः कथायाः लब्धार्थायाः-लब्धोऽर्थो यया सा तस्याः प्राप्तार्थाया इत्यर्थः, अयम् एतद्रूप=वक्ष्यमाणस्वरूप, ‘आध्यात्मिकः’ आत्मनि विचारः यावत्पदगृहीताना ‘चित्तिण, कप्पिण, पत्थिण, मणोगण सकप्पे’ एतेषा च व्याख्याऽवब्रहितपूर्वमूत्राक्तरीत्या विज्ञेया, समुदपद्यत ॥ १५ ॥

तदेव दर्शयति—‘एव खलु’ इत्यादि ।

मूलम्—एवं खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि० इह-मागए जाव विहरइ, तं महाफल खलु तहारूवाणं जाव विउलस्स अट्टस्स गहणयाए, तं गच्छामि ण समण जाव पब्बुवासामि, इमं च णं एयारूव वागरणं पुच्छिस्सामित्तिकहु एवं सपेहेइ, सपेहिता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । धम्मियं जाणप्पवर जुत्तमेव उवट्टवेह, उवट्टवित्ता जाव पच्चप्पिणंति ॥ १६ ॥

‘तेण कालेण’ इत्यादि ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी उस नगरीमें पवारे । देवता और मनुष्योंकी सभामें भव्योको धर्म-देशना देने लगे । धर्मकथा श्रवण करनेके लिए परिषद् निकली । भगवान् यहाँ पधारे हैं, ऐसा वृत्तान्त सुनकर काली रानीके मनमें वक्ष्यमाण आगे कहे जानेवाले विचार उत्पन्न हुए । ॥ १५ ॥

‘तेण कालेण’ इत्यादि

ते ठाणे ते समये श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ते नगरीभा पधार्या देवता तथा मनुष्यांनी सभामा भव्योने धर्मदेशना देवा लाग्या धर्मकथा सभणवा आठे परिषद नीकणी भगवान् अर्ही पधार्या छे जेवो वृत्तान्त साभणी ठाही राणीना मनमा वक्ष्यमाण-आ प्रभाषे विचार उत्पन्न यया (१५)

ઝાયા—એવ સ્વલ્પ શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીર: પૂર્વાનુપૂર્વ્યાં ડહાગત' યાવદ્ વિહરતિ, તન્મહાફલ સ્વલ્પ તથારૂપાણા યાવત્ વિપુલસ્યાર્થસ્ય ગ્રંહણતયા તદ્રચ્છામિ સ્વલ્પ શ્રમણ યાવત્ પર્યુપાસે, ઇદ ચ સ્વલ્પ એતદ્રૂપ વ્યાખરણ પ્રશ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા એવ સપ્રેક્ષતે સપ્રેક્ષ્ય કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દ-યિત્વા એવમવાદીત્-ક્ષિપ્રમેવ મો દેવાનુપ્રિયા. ! ધાર્મિક યાનમવર યુક્તમેવ ઉપસ્થાપયત, ઉપસ્થાપ્ય યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ ॥ ૧૬ ॥

ટીકા—એવ સ્વલ્પ યત્-શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીર: પૂર્વાનુપૂર્વી=યથા-ક્રમ, યદ્વા-પૂર્વેષા તીર્થસ્થાના યા આનુપૂર્વી=પરિપાટી મર્યાદેત્યર્થ:, તા ચરન્=આચરન્ પરિપાલયન્નિત્યર્થ:, “ગામાણુગામ દૂઝ્જમાણે”=ગ્રામાનુગ્રામ દ્રવન્ ‘ગ્રામાનુગ્રામમ્’-એકસ્માદ્ ગ્રામાદ્ અનુ=પશ્ચાદ્ યો ગ્રામસ્તમ્, અર્થાદનુક્રમેણ ગ્રામાગ્રામાન્તર દ્રવન્=વિહરન, ઇદ=અસ્યા ચમ્પાનગર્યા વિગ્રમાન પૂર્ણમદ્રમુદ્યાનમ્ આગત =સમન્તાદ્ વિહત્યોપસ્થિત., યાવત્કરણાત્ ‘અહાપદ્ધિરુવ ઓગ્ગહ ઓગિ-પિહત્તા સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણે’ એતેષા સગ્રહઃ । ઝાયા-‘યથા-પતિરૂપમ્ અવગ્રહમ્ અવગૃહ્ય સયમેન તપસા આત્માન ભાવયન્’ ઇતિ । ‘યથે’-તિ-યથાપ્રતિરૂપ=યથા સયમિકલ્પમ્ અવગ્રહમ્=નિવાસાર્થમુદ્યાનપાલસ્યાજ્ઞામ્ અવ-ગૃહ્ય=આદાય સયમેન=સસદશવિધેન તપસા=ઢાદશવિધેન આત્માન ભાવયન્=વાસયન્ સયોજયન્નિતિ યાવત્, વિહરતિ =વિરાજતે, તત્=તસ્માત્ મહાફલ-મહત્=વિશાલ ફલ=શુભપરિણામલક્ષણમ્, અત્ર ‘અત એવે’તિશેષ: સ્વલ્પ=નિશ્ચ-યેન તથારૂપાણા શુભપરિણામરૂપમહાફલજનનસ્વભાશાના, યાવન્-હ્રદેન-“અરિ-હતાણ, મગવતાણ, ણામગોયસ્સવિ સવ્વણયાપ્પ કિમગપુણ અભિગમણ-વદણ-ણમસણ-પહિપુચ્છણ-પજ્જુવાસણાપ્પ, એકસ્સવિ આરિયસ્સ, ધમ્મિયસ્સ, સુવચ-ણસ્સ સવ્વણયાપ્પ કિમગ પુણ” એતેષા સહગ્રહ: । ઝાયા—‘અર્હતા મગવતા

વે વિચાર યે હૈં-‘એવ સ્વલ્પ’ ઇત્યાદિ—

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રશ્ન યહૌ પધારે હૈં, ઓર સયમી લોગોકે રૂપકે અનુસાર નિવાસને લિખ ઉદ્યાનપાલસી આજ્ઞા લેકર સયમ ઓર તપસે અપની આત્માકો ભાવિત કરતે હુએ વિરાજતે હૈં, તથારૂપ અરિ-

તે વિચાર આ છે —‘એવ સ્વલ્પ’

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રશ્ન અહીં પધાર્યા છે તથા સયમી લોકોના કન્ધન અનુસરી નિવાસને માટે ઉદ્યાનપાલની ( વાડીના પાલક કે માણીની ) આજ્ઞા લઈને સયમ તથા તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા થકા બિરાજે છે તથા રૂપ અરિહત અર્થાત્ સર્વજ્ઞતાના કારણે જોનાથી કોઈ વાત અબાણી નથી અને મ પૂર્ણ ઐશ્વર્યના

नामगोत्रस्यापि श्रवणतया किमङ्ग ! पुनरभिगमन-चन्दन-नमस्यन-प्रतिप्रच्छन्न-पर्युपासनेन, एकस्यापि आर्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया किमङ्ग ! पुनः' इति । 'अर्हता'-नास्ति रहः=प्रच्छन्न किञ्चिदपि येषां सर्वज्ञत्वात्तेऽर्हन्तस्तेषाम्, 'भगवता'-भगः=समग्रैश्वर्यादिगुणः, स विद्यते येषां ते भगवन्तस्तेषाम् । नाम च=वर्धमानादि, गुणनिष्पन्नमभिधानं गोत्रं च=कश्यपादि, तयोः समाहारे नामगोत्रं, तस्य श्रवणेनापि महाफलं भवति । किमङ्ग ! पुनः अभिगमन=सम्मुखं गमनम्, चन्दन=गुणकीर्तनम् । नमस्यन=पञ्चाङ्गसयत्ननमनपूर्वकं नमस्कारणम्, प्रतिप्रच्छन्न=शरीरादिवार्ताप्रश्नः, पर्युपासना=सावद्ययोगपरिहारपूर्वक-निरवद्यभावेन सेवाकरणम्-एतेषां समाहारस्तथा, अयं भावः-भगवन्नामगोत्रं श्रवणमात्रेणापि शुभपरिणामरूपं फलं भवति, तर्हि अभिगमनादिना जातं फलं किं पुनः कथनीयम् ? अर्थात् तत्फलमानन्त्याद्वक्तुमशक्यमिति । एकस्यापि आर्यस्य=आर्यप्रणीतस्य धार्मिकस्य=श्रुतचारित्र्यलक्षणधर्मप्रतिबद्धस्य सुवचनस्य=सर्वप्राणिहितकारकवचनसः श्रवणतया=श्रवणेन यत् फलं तत् किं पुनर्वाच्यम् ?

हन्त अर्थात् सर्वज्ञताके कारण जिनसे कोई बात छिपी हुई नहीं है और सम्पूर्ण ऐश्वर्यके कारण जो भगवान हैं, उनके वर्धमान आदि नाम और कश्यप आदि गोत्रके सुननेसे भी शुभ परिणाम स्वरूप महाफल होता है तो सम्मुख जाना, गुण-कीर्तन करना और पाँचों अर्गोंको यत्नपूर्वक नमस्कार नमस्कार करना, शरीर आदिकी सुख ज्ञाता पूछना, और भगवानके त्यागी होनेके कारण सावद्यका परिहार-पूर्वक उनकी निरवद्य सेवा करना, इन सबका क्या फल होगा, इसका तो कहना ही क्या ?

और उनका एक भी श्रेष्ठ श्रुत चारित्र्य धर्म युक्त और समस्त प्राणियोंके हितकारी सुवचनके श्रवणसे जो महाफल मिलता है तो

कारण ७ भगवान् छे तेमना वर्धमान आदि नाम तथा कश्यप आदि वगेरे गोत्रने सावद्यवाथी शुभ पारिष्कार स्वरूप महाफल थाय छे-तो सम्मुख जनु, सुखनु कीर्तन करनु, तथा पाये अगोने यत्नपूर्वक नमस्कार करवा, शरीर आदि वगेरेनी सुभ-थाता पूछनी तथा भगवान त्यागी होवाथी सावद्यना पारिहार पूर्वक तमनी निरवद्य सेवा करनी अथवा नु शुद्ध होय तेनु ता ठडेपुंज शु ?

तमना वचनना आचार अन तमना अक पक्ष श्रेष्ठ श्रुत चारित्र्य धर्म युक्त तथा समस्त प्राणियोंके हितकारी सुवचन सावद्यवाथी जे महाफल भजे

अर्थात् वक्तुमशक्यम् । विपुलस्य=प्रभूततरस्य अर्थस्य=भगवद्वचनप्रतिपाद्यविषय-  
स्य श्रुतचारित्रलक्षणस्य ग्रहणतया=ग्रहणेन यत्फल भवति तत् किं पुनर्वाच्यम् ?  
अर्थात्कथमपि वस्तु न शक्यम् । तत्=तस्मात् कारणात् अहं गच्छामि श्रमण-  
श्राम्यति=तपस्यतीति श्रमणो=द्वादशवर्षाणि घोरतपश्चरणात् 'श्रमण' इति प्रसिद्धिं  
लब्धवान्, तम् । जावशब्देन-'भगव महावीर, वदामि, नमसामि, सत्कारेमि,  
सम्मानेमि, कल्याण, मगल, देव्य, चैत्य, विणएण' इत्येषा सहृद्ग्रह' । एत-  
च्छाया—'भगवन्त, महावीर, वन्दे, नमस्यामि, सत्कारयामि, सम्मानयामि,  
कल्याण, मङ्गल, दैवत, चैत्य, विनयेन' इति ।

'भगवन्त' मिति-भगः = ज्ञान, माहात्म्य, यशः, वैराग्य, मुक्तिः,

उनका विपुल श्रुत चारित्र रूप जो अर्थ है उसको ग्रहण करनेके  
फलका तो कहना ही क्या है ?-वह फल तो अकथनीय=है । इस-  
लिये मैं श्रमण भगवान् महावीर प्रभुके पास जाऊँ और उनको  
वन्दन-नमस्कार करूँ, सत्कार सम्मान करूँ जो कल्याण स्वरूप हैं,  
मगल स्वरूप हैं, दैवत-दृष्ट देव हैं और चैत्य-ज्ञानस्वरूप हैं उन  
प्रभुकी विनयपूर्वक उपासना करूँ ।

अब यहाँ श्रमण भगवान् आदि पदोंका विशेष अर्थ करते हैं:-

(१) श्रमण=साढे चारह वरस तक घोर तपस्या की, इसलिए  
'श्रमण' नामसे प्रसिद्ध हैं । (२) भगवान्-भग शब्दके ज्ञानादि  
दस अर्थ जिनमें हो उन्हें भगवान् कहते हैं । 'भग' शब्दके दस अर्थ-

(१) सम्पूर्ण पदार्थोंको विषय करनेवाला ज्ञान

(२) माहात्म्य अर्थात् अनुपम और महान् महिमा.

छे तो तेभना विपुल श्रुत चारित्र इपी के अर्थ छे तेना अदृष्ट करवाना इणनु तो  
कहेवुअ शु ? ते इण तो अकथनीय छे आथी हु श्रमण भगवान् महावीर प्रभुनी  
पाये जठि तथा तेभने वदन नमस्कार कइ सत्कार सम्मान कइ के कल्याण स्वइय  
छे भगण स्वइय छे दैवत अर्थात् दृष्ट देव छे तथा चैत्य-ज्ञानस्वइय छे ते प्रभुनी  
विनयपूर्वक उपासना कइ

हुवे अर्द्धा श्रमण भगवान् आदि शब्दोंका विशेष अर्थ करीये छीये

(१) श्रमण=साढे बार वरस सुधी छिअ तपश्चर्या करी तेथी 'श्रमण' नामथी  
प्रसिद्ध छे (२) भगवान्-भग शब्दका ज्ञान आदि दस अर्थ जेभा छेअ तेने भगवान्  
कहेवा 'भग' शब्दोंका दस अर्थ-

(१) सम्पूर्ण पदार्थोंके विषय करवावा ज्ञान

(२) माहात्म्य अर्थात् अनुपम तथा महान् महिमा



नामगोत्रस्यापि श्रवणतया किमद्ग ! पुनरभिगमन-वन्दन-नमस्यन-प्रतिप्रच्छन-पर्युपासनेन, एकस्यापि आर्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया किमद्ग ! पुनः' इति । 'अर्हता'-नास्ति रहः=प्रच्छन्न किञ्चिदपि येषा सर्वज्ञत्वात्तेऽर्हन्तस्तेषाम्, 'भगवता'-भगः=समग्रैश्वर्यादिगुणः, स विद्यते येषा ते भगवन्तस्तेषाम् । नाम च=वर्धमानादि, गुणनिष्पन्नमभिधान गोत्र च=कश्यपादि, तयोः समाहारे नामगोत्र, तस्य श्रवणेनापि महाफल भवति । किमद्ग ! पुनः अभिगमन=सम्मुख गमनम्, वन्दन=गुणकीर्तनम् । नमस्यन=पञ्चाङ्गसयत्ननमनपूर्वक नमस्कारणम्, प्रतिप्रच्छन=शरीरादिवार्ताप्रश्नः, पर्युपासना=सावद्ययोगपरिहारपूर्वक-निरवद्यभावेन सेवाकरणम्-एतेषा समाहारस्तथा, अय भावः-भगवन्नामगोत्र श्रवणमात्रेणापि शुभपरिणामरूप फल भवति, 'तर्हि अभिगमनादिना जात फल किं पुनः कथनीयम् ? अर्थात् तत्फलमानन्त्याद्वक्तुमशक्यमिति । एकस्यापि आर्यस्य=आर्यप्रणीतस्य धार्मिकस्य=श्रुतचारित्र्यलक्षणधर्मप्रतिबद्धस्य सुवचनस्य=सर्वप्राणिहितकारकवचसः श्रवणतया=श्रवणेन यत् फल तत् किं पुनर्वाच्यम् ?

हन्त अर्थात् सर्वज्ञताके कारण जिनसे कोई बात छिपी हुई नहीं है और सम्पूर्ण ऐश्वर्यके कारण जो भगवान हैं, उनके वर्धमान आदि नाम और कश्यप आदि गोत्रके सुननेसे भी शुभ परिणाम स्वरूप महाफल होता है तो सम्मुख जाना, गुण-कीर्तन करना और पाँचों अंगोंको यतना पूर्वक नमस्कार नमस्कार करना, शरीर आदिकी सुख-ज्ञाता पूछना, और भगवानके त्यागी होनेके कारण सावद्यका परिहार-पूर्वक उनकी निरवद्य सेवा करना, इन सबका क्या फल होगा, इसका तो कहना ही क्या ?

और उनका एक भी श्रेष्ठ श्रुत चारित्र्य धर्म युक्त और समस्त प्राणियोंके हितकारी सुवचनके श्रवणसे जो महाफल मिलता है तो

कारणैः भगवान् छे तेमना वर्धमान आदि नाम तथा कश्यप आदि वज्रेने गोत्रने सावद्यवाथी शुभ पारश्याम स्वयं महाज्ञेय थाय छे-तो सम्मुख जनुं, शुष्कनुं कीर्तन करनुं, तथा पाये अंगोने यतनापूर्वक नमस्कार नमस्कार करवा, शरीर आदि वज्रेने शुभ-शाता पूछयी तथा भगवान त्यागी होवाथी सावद्यना पारहार पूर्वक तमनी निरवद्य सेवा करयी अ यधानु शु क्षण होय तेनु ता छेवुज शु ?

तमना वचनना आचार अन तमना अक पक्ष श्रेष्ठ श्रुत चारित्र्य धर्म युक्त तथा समस्त प्राणियोंके हितकारी सुवचन सावद्यवाथी जो महाज्ञेय भजे

સ્યામિ=સચત્ત્વપશ્ચાદ્ગતમનપૂર્વક નમસ્કરોમિ, સત્કારયામિ=અભ્યુત્થાનાદિનિરવધ-  
ક્રિયાસમ્પાદનેનાઽઽરાધયામિ, સમ્માનયામિ=મનોયોગપૂર્વકમર્દદુચિતવાક્યપ્રયોગા-  
દિના સમારાધયામિ, કલ્યાણ=કર્મચક્રસકલોપાધિવ્યાધિગાધાવિધુરત્વાત્ કલ્યો  
મોક્ષસ્તમ્, આ=સમન્તાત્ નયતિ=પ્રાપયતીતિ જ્ઞાનાદિરત્નત્રયલક્ષણમોક્ષમાર્ગોપદેશ-  
દાનદ્વારા ( ભવિજનાન્ ) કલ્યાણ જન્મજરાદિરોગમુક્તાન્ આણયતિ=ધાતૂનામને-  
કાર્થત્વાત્ સમ્પાદયતીતિ યા કલ્યાણસ્તમ્, 'મદ્ગલ=સકલહિતપ્રાપકત્વાન્દુભમય,  
યદ્વા-મા ગાલયતિ ભવાન્નેસ્તારયતીતિ મદ્ગલઃ, અથવા-મદ્ગલે=અજરામરત્વગુણેન  
ભવિજનાન્ ભૂપયતીતિ મદ્ગો=મોક્ષસ્ત લાતિ=આદત્ત ઇતિ મદ્ગલસ્તમ્, દૈવતમ્=  
આરાધ્યદેવસ્વરૂપમ્ અત્ 'દૈવતેય દૈવતમિતિ સ્વાર્થેઽન્' ચૈત્ય=ચિત્તે ભય તદસ્યા

નિર્મલ મનકે સાથ વચનસે સ્તુતિ કરું । યતના-પૂર્વક પાંચ અગ  
નમારુ નમસ્કાર કરું । યતના-પૂર્વક અભ્યુત્થાન આદિ નિરવધ  
ક્રિયાસે ભગવાનકા સત્કાર કરું । મનોયોગ-પૂર્વક અર્હન્તો કા  
ઉચિત વાક્ય દ્વારા સમ્માન કરું । કર્મચક્રસે ઉત્પન્ન હોનેવાલી  
ઉપાધિ-વ્યાધિકે નાશક હોનેસે 'કલ્ય' કો મોક્ષ કહતે હૈં, ઉસકો  
પ્રાપ્ત કરાનેકે કારણ ભગવાન્ કલ્યાણ-સ્વરૂપ હૈં । અથવા જ્ઞાનાદિ  
રત્નત્રયરૂપ મોક્ષ માર્ગકે ઉપદેશ દ્વારા ભવ્ય જીવોકો જન્મ, જરા  
મૃત્યુરૂપ રોગસે મુક્ત કરતે હૈં, હસ કારણ શ્રી કલ્યાણસ્વરૂપ હૈં ।  
સમ્પૂર્ણહિતકો પ્રાપ્ત કરાનેવાલે તથા ભવસાગરસે તારનેવાલે હૈં હસલિયે  
ભગવાન મદ્ગલ સ્વરૂપ હૈં । અથવા અજર અમર ગુણોસે ભવ્યજનોકો  
ભૂષિત કરનેકે કારણ 'મદ્ગ' કો મોક્ષ કરતે હૈં, ઉસે જો પ્રાપ્ત કરાવે  
વહ મદ્ગલ કહલાતા હૈં, હસલિયે ભગવાન શ્રી મદ્ગલ હૈં । હૃષ્ટદેવ સ્વરૂપ

કરે યતના-પૂર્વક પાંચ અગ નમાવીને નમસ્કાર કરે યતના-પૂર્વક અભ્યુત્થાન આદિ  
નિરવધ ક્રિયાથી ભગવાનનો સત્કાર કરે મનોયોગ-પૂર્વક અર્હન્તોનું ઉચિત વાક્યોથી  
સમ્માન કરે કર્મચક્રથી ઉત્પન્ન થનારી ઉપાધિ અને વ્યાધિના નાશક હોવાથી 'કલ્ય'  
તે મોક્ષ કહેવાય છે તેને પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી ભગવાન કલ્યાણ-સ્વરૂપ છે  
અથવા-જ્ઞાનાદિ રત્નત્રયરૂપ મોક્ષ માર્ગના ઉપદેશ દ્વારા ભવ્ય જીવોને જન્મ જરા  
મૃત્યુ રૂપ રોગથી મુક્ત કરે છે આ અમરથી પણ કલ્યાણ-સ્વરૂપ છે સંપૂર્ણ હિતને  
પ્રાપ્ત કરાવવાવાળા તથા ભવસાગરથી તારવાવાળા છે તેથી ભગવાન મગલ-સ્વરૂપ  
છે અથવા અજર અમર ગુણોથી ભવ્ય જનોને ભૂષિત કરવાના કારણે મગને મોક્ષ  
કહેલ છે તેને જો પ્રાપ્ત કરાવે તે મગજ કહેવાય છે આથી ભગવાન પણ  
મગજ છે એવા હૃષ્ટદેવ-સ્વરૂપ હોવાથી દૈવત છે અને વિશિષ્ટ જ્ઞાનવાળા હોવાથી

सौन्दर्यम्, वीर्यः, श्रीः, धर्मः, ऐश्वर्यं, सोऽस्याऽस्तीति भगवान्, तम्, 'महावीर' मिति-वीरयति=पराक्रमते मोक्षानुष्ठाने इति वीरः, महाश्यासौ वीरो महावीरो=वर्धमानस्वामी चरमतीर्थकरस्तम् वन्दे=मनःप्रणिधानपूर्वकं वाचा स्तौमि, नमः

(३) विविध प्रकारके अनुकूल और प्रतिकूल परीषहोंको सहन करनेसे उत्पन्न होनेवाली या ससारकी रक्षा करनेवाले अलौकिक भावोंसे उत्पन्न होनेवाली कीर्ति ।

(४) क्रोध आदि कपायोंका सर्वथा निग्रहरूप वैराग्य ।

(५) समस्त कर्मोंका क्षयस्वरूप मोक्ष ।

(६) सुर-असुर और मानवके अन्तःकरणको हरलेने वाला सौन्दर्य ।

(७) अन्तराय कर्मके नाशसे उत्पन्न होनेवाला अनन्त बल ।

(८) धातिया-कर्मरूपी-पटलके हट जानेसे प्रादुर्भूत होनेवाली अनन्त चतुष्टय-(ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, वीर्य-रूप) लक्ष्मी ।

(९) मोक्षके द्वारको खोलनेका साधन श्रुत चारित्र्य यथा-ख्यात चारित्र्य रूप धर्म ।

(१०) तीन लोकका आधिपत्य रूप ऐश्वर्य ।

( ३ ) महावीर-मोक्षके अनुष्ठानमे पराक्रम करनेवाले होनेसे महावीर कहे जाते हैं, ऐसे महावीर वर्धमान स्वामी चरम तीर्थकरकी

(३) विविध प्रकारका अनुकूल तथा प्रतिकूल परीषहोने सहन करवाया उत्पन्न होनेवाली अथवा ससारकी रक्षा करवावाली अलौकिक भावनायी उत्पन्न होनेवाली कीर्ति

(४) क्रोध आदि कपायोंका सर्वथा निग्रहरूप वैराग्य

(५) समस्त कर्मोंका क्षयस्वरूप मोक्ष

(६) सुर-असुर और मानवका अन्तःकरणसे लड़ने के लिये होनेवाला सौन्दर्य

(७) अन्तराय कर्मका नाशसे उत्पन्न होनेवाला अनन्त बल

(८) धातिया कर्म रूपी पटलके हट जानेसे प्रादुर्भूत होनेवाली अनन्त चतुष्टय (ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, वीर्य-रूप) लक्ष्मी

(९) मोक्षका द्वारको खोलनेका साधन श्रुत चारित्र्य यथाख्यात चारित्र्य रूप धर्म

(१०) त्रैलोक्य का आधिपत्य रूप ऐश्वर्य

(३) महावीर-मोक्षका अनुष्ठानमा पराक्रम करवावाला महावीर ठहरेवाला ऐसे महावीर वर्धमान स्वामी चरम तीर्थकरकी निर्भय भवनी साथे वाणीधी स्तुति

मूलम्—तए णं सा काली देवी ण्हाया कयवलिकम्मा  
जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा वट्ठहिं खुज्जाहि जाव मह-  
त्तरगविदपरिक्खित्ता अत्तेउराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव  
वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दूरुहइ, दूरुहित्ता  
नियगपरियालसंपरिखुडा चप नयरिं मज्झं—मज्झेणं निग्गच्छइ,  
निग्गच्छित्ता जेणेव पुन्नभदे चेडए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
छत्ताईए जाव धम्मिय जाणप्पवर ठवेड, ठवित्ता धम्मियाओ  
जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वट्ठहिं खुज्जाहि जाव महत्तरग-  
विदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो वंदइ, वदित्ता  
ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणा नमसमाणा अभिमुहा  
विणएणं पजलिउडा पज्जुवासइ ॥ १७ ॥

छाया—ततः खलु सा काली देवी स्नाता कृतवलिकर्मा यावत् अल्प-  
महार्घाभरणालङ्कृतशरीरा ण्हीभि कुञ्जाभि. यावन्महत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ताः अन्तः  
पुराभिर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, यत्रैव धार्मिको यानप्रवर-  
स्तत्रोपागच्छति, उपागत्य धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरुह्य निजरूपपरिवार-  
सपरिवृता चम्पा नगरिं मध्य-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव पूर्णभद्रश्वेत्य-  
स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छात्रादिक यावद् धार्मिक यानप्रवर स्थापयति  
स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य ण्हीभि कुञ्जाभि.  
यावत्—महत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ता यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति,  
उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीर त्रिकृत्वो वन्दते, वन्दित्वा स्थिता चैव  
सपरिवारा शुश्रूषमाणा नमस्यन्ती अभिमुखी विनयेन माञ्जलिपुटो पर्युपासते । १७।

टीका—‘तए णं सा’ इत्यादि—ततः=तदनन्तर सा पूर्वोक्ता काली देवी  
स्नाता=कृतस्नाना कृतवलिकर्मा=स्नाने कृते पशुपस्यायथ कृतान्नभागा, जाव-

સ્તીતિ, યદ્વા ચિત્તિર્વિશિષ્ટજ્ઞાન તથા યુક્તમિતિ, સર્વથા વિશિષ્ટજ્ઞાનવન્તમિત્યર્થઃ, વિનયેન=પ્રતિપત્તિરિશેષેણ પર્યુપાસે=સેવે, તથા 'ઇમ' તિ-ઇદ=મમ હૃદયસ્થમ્ એતદ્રૂપ પુત્રવિપયક વ્યાકરણ=પ્રશ્ન શ્વલ્લ=નિશ્ચયેન=પ્રશ્ન્યામિ=નિર્ણેપ્યામિ, इति કૃત્વા=इति मनसि निश्चित्य एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य=विचार्य, कौटुम्बिकपुरुषान्=प्रधानकर्मकारिपुरुषान्=शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणम् अवदत्=आज्ञापयदिति ।

કિમાજ્ઞાપયત્ ? ટ્પ્યાહ-‘ક્ષિપ્રમેવે’ત્યાદિના-મો દેવાનુપ્રિયાઃ ! =હે કાર્ય કરણપ્રવીણા ! યૂય ધાર્મિક=ધર્માય નિયુક્ત ધાર્મિક, યાત્યનેનેતિ યાન રથાદિક, તત્ર પ્રવર શ્રેષ્ઠ શીઘ્રગામિત્વાદિગુણોપેતમ્, इत्युपलक्षण तेन ‘चाउघट, आसरह’ इत्यनयोरपि ग्रहणम् । एतच्छाया-चतुर्घण्टम्, અશ્વરથમ્ इति । चतुर्घण्टमिति-चतस्रः=पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्च लम्बमाना घण्टा यस्य यस्मिन् वा स चतुर्घण्टस्तम् ‘अश्वरथ’ मिति-अश्वयुक्तो रथोऽश्वरथः, શારૂપાર્થિવાદિત્વાન્મખ્ય મપદલોપ, તમ્-યુક્તમેવ=અશ્વસારૂપ્યાદિસહિતમેવ ન તુ તદ્રહિત, ક્ષિપ્ર=શીઘ્રમેવ નતુ વિલમ્બેન, ઉપસ્થાપયત=પ્રગુણીકૃત, ઉપસ્થાપ્ય=પ્રગુણીકૃત્ય યાવચ્છબ્દેન કૌટુમ્બિકપુરુષા કાલીદેવ્યાજ્ઞાનુસારેણ સર્વ કૃત્વા તદાજ્ઞા પ્રત્યર્પયન્તિ ॥૧૬॥

होनेसे दैवत है । विशिष्ट ज्ञान युक्त होनेसे चैत्य है । ऐसे भगवानकी विनयके साथ निरवद्य सेवा कर, ओर मेरे हृदयमे स्थित पुत्रसम्बन्धी प्रश्नका निश्चय कर । इस प्रकार अपने मनमे विचार कर काली महारानीने अपने कौटुम्बिक (आज्ञाकारी) जनोको बुलाया और आज्ञा दी ।

क्या आज्ञा दी ? वह कहते हैं-हे चतुर कार्यकर्ताओ ! तुम लोग रथोमे श्रेष्ठ-शीघ्र गतिवाला रथ जिसके आगे पीछे और दोनो बाजुओंमे चाल घण्टिकायें लगी हुई हैं ऐसा धार्मिक अश्वरथ, सारथी आदिके सहित लाओ । कौटुम्बिक पुरुष काली महारानीको आज्ञा अनुसार रथ तैयार कर उनसे बोले हे महारानी ! आपकी आज्ञानुसार रथ तैयार है ॥ १६ ॥

ચૈત્ય છે એવા ભગવાનની વિનય-પૂર્વક નિરવધ સેવા કરે તથા ભારા હૃદયમા રહેલ પુત્રસંબંધી પ્રશ્નને નિશ્ચય-બુલાસો-કરે આ પ્રકારે પોતાના મનમા વિચાર કરી કાલી મહારાણીએ પોતાના કૌટુમ્બિક (આજ્ઞાકારી) જનોને બોલાવ્યા તથા આજ્ઞા કરી

હે ચતુર કાર્યકર્તાઓ ! તમે લોકો ઉત્તમ રથ-શીઘ્ર ગતિવાળા રથ જેની આગળ પાછળ તથા બંને બાજુઓએ ચાર ઘટ્ટીઓ લગાડેલી એવા ધાર્મિક અશ્વરથ, સારથી આદિ સહિત લામ આવો કૌટુમ્બિક પુરુષોએ કાલી મહારાણીની આજ્ઞા પ્રમાણે રથ તૈયાર કરીને તેને કહ્યું -હે મહારાણી ! આપની આજ્ઞા પ્રમાણે રથ તૈયાર છે (૧૬)

याहिं ४, जोनयाहिं ५, पल्लवियाहिं ६, ईसिणियाहिं ७, वासिणियाहिं ८, लासियाहिं ९, लउमियाहिं १०, दविडीहिं ११, सिहलीहिं १२, आरवीहिं १३, पक्णीहिं १४, गहलीहिं १५, मुसण्डीहिं १६, शगरीहिं १७, पारसीहिं १८, णाणादेसाहिं-इगियचित्तिपत्थियचियाणियाहिं," इत्येषा सग्रहः ।

चिलातीभिः=अनार्यदेशोत्पन्नाभिः-वामनाभि=ह्रस्वशरीराभिः १, वद-  
भाभिः=मल्लकोष्ठाभिः २, चर्चरीभिः=वर्चरदेशसम्भवाभिः ३, उकुशिकाभिः ४,  
यौनकाभिः ५, पल्लविकाभिः ६, इसिनिकाभिः ७, वासिनिकाभिः ८, लासि-  
काभिः ९, लकुशिकाभिः १०, द्राविडीभिः ११, सिंहलीभिः १२, आरवीभिः  
१३, पक्णीभिः १४, गहलीभिः १५, मुसण्डीभिः १६, शगरीभिः १७, पार-  
सीभिः १८, नानादेशाभिः=बहुविधदेशोत्पन्नाभिरित्यर्थः, इद्वितचिन्तितप्रार्थित-  
विज्ञायिकाभिः, इद्वितेन=नेत्रवक्त्रहस्ताङ्गुल्यादिवेष्टाविशेषेण चिन्तित=हृदि भावित,

देशकी, (४) 'उकुशिका'-उकुश देशकी, (५) 'यौनका'-यौन देशकी, (६)  
'पल्लविका'-पल्लव देशकी, (७) इसिनिका'-इसिनिकदेशकी, (८) 'वासिनिका'  
वासिनिक देशकी, (९) 'लासिका'-लासिक देशकी, (१०) 'लकुशिका'-  
लकुश देशकी, (११) 'द्राविडी'-द्रविड देशकी, (१२) 'सिंहली'-सिंहल  
देशकी, (१३) 'आरवी'-अरब देशकी, (१४) 'पक्णी'-पक्कण देशकी, (१५)  
'गहली'-गहल देशकी, (१६) 'मुसण्डी'-मुसण्ड देशकी, (१७) 'शगरी'-  
शगर देशकी, और (१८) 'पारसी'-पारस देशकी दासियाँ ।

इस प्रकारकी अनेक देशमे उत्पन्न होनेवाली दासियाँ, जो इद्वित,  
चिन्तित, प्रार्थितको जाननेवाली थी ।

'इद्वित'-का अर्थ-नेत्र, मुख, हाथ तथा अंगुली आदिके इशारेसे  
अभिप्रायको जानना ।

देशनी (७) इसनिक देशनी (८) वासिनिक देशनी (९) लासिक देशनी (१०) लकुश  
देशनी (११) द्रविड देशनी (१२) सिंहल द्वीप देशनी (१३) अरब देशनी (१४)  
पक्कण देशनी (१५) गहल देशनी (१६) मुसण्ड देशनी (१७) शगर देशनी तथा  
(१८) पारस देशनी दासीज्यो ।

आवी रीते अनेक देशमा उत्पन्न भनारी दासीज्यो धजित, चिन्तित, प्रार्थितने  
जान्नुवा पाणी छती

'धजित' नो अर्थ नेत्र, मुख, हाथ तथा आंगुली आदिना ध्याराथी अभि-  
प्रायने जान्नुवो ।

शब्देन-‘कयकोजयमगलपायच्छित्ता शुद्धपावेस्साह वत्थाह पवरपरिहिया’ इत्येषा सङ्ग्रहः । एतच्छाया च-कृतकौतुकमङ्गलपायश्चिता, शुद्धप्रवेश्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिधृता’ ‘कृतकौतुके’ति-कृतानि कौतुकानि मयीपुण्ड्रादीनि, मङ्गलानि=सर्पपदभ्यक्षतचन्दनदूर्वादीनि च प्रायश्चित्तानीव दुःस्वप्नादिविनाशाय आवश्यकतया स्वात्प्रायश्चित्तानि यथा सा तथा, यथा पापविनाशार्थं प्रायश्चित्तमवश्य क्रियते तथैव दुःस्वप्नदोषशान्त्यर्थं दभ्यक्षतादीनि मङ्गलान्यवश्य ध्रियन्त इति तात्पर्यम् । ‘अल्पमहर्घे’-ति-अल्पानि=स्तोकभारवन्ति महार्घाणि=बहुमूल्यानि यानि आभरणानि=भूषणानि तैरलङ्कृत=भूषित शरीर यस्या. सा अल्पमहार्घाभरणालङ्कृत शरीरा, बहीभिः=प्रचुराभिः, कुञ्जाभिः=कुञ्जशरीराभिः सेवापरायणदासीभिः. ‘नाव’ शब्देन-“चिलाईहि वामणाहि १, वट्टहाहि २, बव्वरीहि ३, वडसि

‘तएण सा’ इत्यादि-बाद रानीने स्नान किया और पशु पक्षी आदिके लिये अन्नका भाग निकालनेरूप बलिकर्म किया और दृष्टिदोष (नजर) निवारणके लिये मयी (काजल) का चिह्न किया और पाप नाश करनेके लिए जैसे प्रायश्चित्त किया जाता है वैसे ही दुःस्वप्न आदि दोषोंके निवारणके लिए मङ्गलरूप सरसो, दूर्वा, चावल चन्दन ओर दूब आदिको धारण किया, तथा अल्प भार किन्तु बहुमूल्य भूषणोंसे शरीरको भूषित किया और सेवापरायण कुबड़ी आदि १८ अठारह प्रकारकी दासियोंको साथ चलनेका हुक्म दिया । उन दासियोंके नाम इस प्रकार हैं-(१) ‘चिलाती’ चिलात नामके अनार्य देशमें उत्पन्न होने वाली ‘कुञ्जा’-कुबड़ी तथा ‘वामना’-ठिंगनी दासियाँ, (२) ‘वट्टमा’-जिस देशमें छोटे-छोटे पेटवाले जन्मते हैं उस देशकी, (३) ‘बव्वरी’-धर्वर

‘तएण सा’ इत्यादि पक्षी राक्षसी स्नान कर्तुं तथा पशु पक्षी आदिने भाटे अन्नको भाग काटवा इपी बलिकर्म कर्तुं तथा दृष्टिदोष (नजर) का निवारण करने भाटे मयी (काजल)नु चिह्न कर्तुं तथा पापनाश करवा भाटे जेमे प्रायश्चित्त काय छे तेवीजरीते दुःस्वप्न आदि दोषोना निवारणने भाटे भगवत्पु सरसव, दूर्वा चावल, चन्दन तथा दूर्वा वज्रेने धारण कर्त्ता, तथा वज्रनभा अल्प पण्डु किम्बतमा भारे अवा धरेणुाथी शरीरने शङ्खायुं सेवापरायण कुबड़ी दासीओ आदि १८ प्रकारनी दासीओने नाये आलवाने हुकम कर्त्तौ तना नाम आ प्रकारे छे --(१) चिलात नामना अनार्य देशमा उत्पन्न यनारी कुबड़ी अने ठिंगणी दासीओ (२) जे देशमा नाना नाना पेटवाणा जन्म छे ते देशनी (३) जर्जर देशनी (४) जङ्गल देशनी (५) योन देशनी (६) पञ्च





प्रार्थित च=अभिलषित च विज्ञानन्ति यास्तथा, तामिःबुध्यमानाभिः, युक्तेति शेषः । तथा 'महत्तरे'ति-अतिशयेन महान्=महत्तरः स एव महत्तरकः=अन्तः पुररक्षकः, तेषां वृन्दम्=नानादेशोत्पन्नवेदकसमूहस्तेन 'परिक्षिप्ता'='परि=सर्वतः क्षिप्ता=मध्ये स्थापिता, तथा सती अन्तःपुरात् निर्गच्छति=वर्हिनिःसरति निर्गत्य यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थाने बोद्धा=वर्हिर्भवा उपस्थानशाला=उपवेशनमण्डपः यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थले धार्मिकयानप्रवरः=रथादियानोत्तमः, तत्रैव=तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति=समुपैति, उपागप्य=धार्मिकयानप्रवरसमीपमागत्य धार्मिक=धर्माय नियुक्त यानप्रवर दूरोहति=आरोहति, दूरं=उक्तयानप्रवरमारुह्य 'निजके' ति-निजा एव निजकाः=स्वकीयाः परिवाराः=दास्यादयः, तैः सपरिवृता=परिवेष्टिता, चम्पा नगरीं मध्यमध्येन=चम्पानगर्या मध्यभागेन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव पूर्णभद्रचैत्य तत्रैव उपागच्छति=समायाति, उपागत्य 'छत्ताई' छत्रादिकान् 'यावत्'-शब्देन तीर्थकरातिशेषान् पश्यति, दृष्ट्वा धार्मिक यानप्रवर स्थापयति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवराद्=धार्मिकरथात् प्रत्यवरोहति=अधस्तादवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य बहीभिः कुञ्जाभिःपूर्वोक्तदासीभिर्युक्ता यावत् महत्तरकवृन्दं परिक्षिप्ता पञ्चाभिगमपुरस्सर यत्रैव=यस्मिन्नेव पूर्णभद्रोद्याने भगवान् महावीर-

‘चिन्तित’-हृदयके भावको अनुमानसे समझना ।

‘प्रार्थित’-अभिलषितको अनुमानसे जानना ।

ऐसी दासियोंके साथ अन्तःपुररक्षक पुरुषवृन्दसे तथा अनेक देशमें उत्पन्न होनेवाले दाससमूहसे घिरी हुई अन्तःपुरसे बारह निकलकर भवनके सभा-मण्डपमें जिस स्थलपर धार्मिक रथ था वहाँ आई और रथमें बैठी । बाद अपने सब परिवार के साथ चम्पा नगरीके बीच-रास्तेसे होकर जहाँ पूर्णभद्र चैत्य था वहाँ पहुँची । और तीर्थकरके छत्र आदि अतिशयोंको देखकर अपने रथको स्थापित किया और

‘चिन्तित’-हृदयना भावने अनुमानथी समझने।

‘प्रार्थित’-अभिलषित ( धृष्टा जेनां होय ते ) अनुमानथी जानवु

जैवी दासीजैनी साथे अतः पुररक्षक पुरुषवृन्दी तथा अनेक देशना उत्पन्न यनारा दाससमूहथी घेरयेवी अतः पुरथी गहार नीकणीने अपनना सभासुपमा न ठेकावे धार्मिक रथ हुतो त्या जध रथमा भेटी पछी पोताना सधणा परिवारनी साथे अथा नगरीना मध्य रस्तामा यधने कथा पूर्णभद्र चैत्य हुतु त्या पडोची तथा तीर्थकरना छत्रादि अतिशयाने बोधने पोताना रथन उलो राणी नीचे उतारी अने पछी पोताना

स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीर त्रिःकृत्यो वन्दते, च= पुनः स्थितैव सपरिवारा भूश्रूपमाणा=सेवमाना नमस्यन्ती अभिमुखी=सम्मुखं स्थिता विनयेन = नम्रभावेन भाञ्जलिपुटा = छलाटतटसविनयविन्यस्तम्बरकमला पर्युपास्ते=सेवते ॥ १७ ॥

मूलम्—तए णं समणे भगव जाव कालीए देवीए तीसे य महतिमहालयाए धम्मकहा भाणियव्वा जाव समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ॥ १८ ॥

छाया—ततः खलु श्रमणो भगवान् यावत् काल्यै देव्यै तस्या च महातिमहालयाया परिपदि धर्मकथा भणितव्या यावत् श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरन् आम्नाया आराधको भवति ॥ १८ ॥

टीका—‘तएण समणे’ इत्यादि—ततः=तदनन्तर श्रमणो भगवान् महावीरः यावत्—सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तुकामः, काल्यै देव्यै तस्या=पूर्वोक्ताया महाति—महालयाया=अतिविशालाया परिपदि धर्मकथा भणितव्या=कथयितव्या, धर्मकथास्वरूप विस्तरत उपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसजीविन्याख्याया व्याख्याया विलोकनीय विशेषजिज्ञासुभिरिति ।

रथसे नीचे उतरी । फिर अपने सब परिवारके साथ पाच अभिगम पूर्वक जहाँ भगवान् बिराजते हैं वहाँ पहुँचकर विधिपूर्वक वन्दना-नमस्कार किया, और सपरिवार भगवान्‌के सम्मुख नतमस्तक हो विनयके साथ अञ्जलिपुटको छलाटपर रखती हुई खड़ी होकर सेवा करने लगी ॥ १७ ॥

‘तएण समणे’ इत्यादि । बाद मोक्षगामी श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने काली महारानीको लक्ष्य करके विशाल परिपदमें धर्मकथा कही । धर्मकथाका विशेष वर्णन जाननेके जिज्ञासुओंको हमारी चनाई

सधणा परिवार साथे पाच अभिगम—पूर्वक न्या भगवान् बिराजता उता त्या पडोखीने विधिपूर्वक वन्दना—नमस्कार कया तथा सपरिवार भगवान्‌ना सम्मुख माथु नभायीने विनयपूर्वक अञ्जलि पुटने (जेडेला हाथने) छलाट पर राणी बशी रहीने सेवा करवा लागी (१७)

‘तएण समणे’ इत्यादि, बाद मोक्षगामी श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने काली महारानीने लक्ष्य करी विशाल परिपदमा धर्मकथा कही धर्मकथानु विशेष वर्णन

‘जाव’ शब्देन—‘एयस्स अगारधम्मस्स अणगारधम्मस्स सिक्खाए उट्ठिए’ इत्येपा सङ्ग्रहः । एतच्छाया च—‘एतस्य अगारधर्मस्य अनगारधर्मस्य, शिक्षायाम् उत्थित’ इति । एतस्यागारधर्मस्यानगारधर्मस्य शिक्षाया मुत्थितः=उद्यतः श्रमणोपासकः=श्रावकः श्रमणोपासिका=श्राविका वा द्वावपि विहरन्तौ आज्ञायाः=भगवदाज्ञायाः आराधकौ भवतः ॥ १८ ॥

अथ कालीवक्तव्यमाह—‘तए ण सा’ इत्यादि ।

मूलम्—तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ—जाव—हियया समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो जाव एव वयासी—एव खलु भते । मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहि जाव रहमुसलसगाम ओयाए, से ण भते किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? जाव काले णं कुमारे अह जीवमाणं पासिज्जा ? । कालीति समणे भगव महावीरे कालिं देविं एव वयासी—एव खलु काली ! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहिं जाव कूणिएणं रक्षा सङ्घिं रहमुसल सगाम सगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइ-ग्रनिवयियचिधज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेड-गस्स रत्तो सपम्ब सपडिदिसि रहेण पडिरह हव्वमाणए ॥१९॥

छाया—तत खलु सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य भ्रान्तिके धर्मे श्रुत्या निश्चय्य हृष्टा यावत्-हृदया श्रमण भगवन्त महावीरं त्रि-

हृष्टं उपासकदशाङ्ग सूत्रकी अगारधर्म-सजीवनी नामकटीकामे देखना चाहिये ।

‘जाव’ शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामे तत्पर श्रावक और श्राविका को भगवानकी आज्ञाके आराधक जानना ॥ १८ ॥

कतधुवा भाटे एशसुओओ अमारी मनावेदी उपासरुदशाङ्गसूत्रनी अगारधर्मसजीवनी नामनी टीकाभा लेध लेवु लेधये

‘जाव’ शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामे तत्पर श्रावक तथा श्राविकान भगवानकी आज्ञाके आराधक समझना ॥ १८ ॥

કૃત્વો યાવદેવમવાદીત્-एव खलु भदन्त ! मम पुत्रः कालः कुमारः त्रिभि-  
र्दन्तिसहस्रैः यावत्-रथमुशलसद्ग्रामम् अवयातः, स खलु भदन्त ! किं जेष्यति ?  
नो जेष्यति ? यावत् कालः खलु कुमारमह जीवन्त द्रक्ष्यामि ? कालि ! इति  
श्रमणो भगवान् महावीरः कालीं देवीमेवमवादीत्-एव खलु कालि ! तव पुत्रः  
कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावत् कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशल सद्ग्राम  
सद्ग्रामयन् इतमथितप्रवरवीरघातितनिषतितचिह्नध्वजपताकः निरालोका दिशः  
कुर्वन् चेदकस्य राज्ञः सपक्ष सप्रतिदिक् रथेन प्रतिरथ इव्यमागतः ॥ १९ ॥

ટીકા-તતઃ=ધર્મકથાશ્રવણાનન્તર, કાલી દેવી શ્રમણસ્ય ભગવતો મહા  
વીરસ્ય અન્તિકે=સમીપે ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુત્વા=કર્ણવિપયીકૃત્ય નિશમ્ય=  
હૃદયેનાડપ્તધાર્યે હૃદ-યાવત્-હૃદયા-હૃદ્દુષ્ટચિત્તાનન્દિતા હર્ષવશવિસર્પદ્-હૃદયા સતી  
શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીર ત્રિ.કૃત્વ.=ત્રિવાર યાવત્-વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવ=  
વક્ષ્યમાણમ્ અવાદીત્=અવોચત્-હે ભદન્ત ! खलु=નિશ્ચયેન एवम्=અનેન પ્રકા-  
રેण મમ પુત્રઃ કાલકુમારઃ ત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈઃ=ઈસ્તિસહસ્રૈઃ, 'જાવ'શબ્દેન-  
ત્રિભિસ્ત્રિભી રથાશ્વમહસ્રૈર્મનુગ્મ્યાણા તિષ્ઠભિઃ કોટિભિર્યુક્તો રથમુશલ સદ્ગ્રામમ્  
અવયાત.=સમુપાગત, હે ભદન્ત ! सः=કાલઃ કુમાર. खलु=નિશ્ચયેન किं  
जेप्यति ? वा नो जेष्यति ? यावच्छब्देन-जीविष्यति ? नो जीविष्यति ?  
पराजेप्यते ? नो पराजेप्यते ? अह काल कुमार खलु=नિશ્ચયેन जीवन्त

અવ કાલી રાણીકે પ્રશ્નકા વર્ણન કરતે હૈં-‘ તણ સા ’ ઇત્યાદિ ।

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરકે સમીપ શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ સુનકર  
ઔર उसे हृदयमें धारणकर प्रफुल्लित हो तीन घार वन्दन-नमस्कार  
करके इस प्रकार भगवानसे पूछने लगी-

હે ભગવાન ! મેરા પુત્ર કાલકુમાર ત્રીન ૨ હજાર હાથી-ઘોડે-  
રથ ઔર तान करोड पैदल सेनाके साथ रथमुशल सग्राममे गया है  
वह विजयी होगा या नहीं ?, वह जीवित रहेगा या नहीं ?, वह परा-  
भवको पायेगा या जीतेगा ?, मैं उसे जिन्दा देखूंगी या नहीं ?,

હવે કાલી રાણીના પ્રશ્નનુ વર્ણન કરે છે-‘ તણ સા ’ ઇત્યાદિ

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસેથી શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ સાંભળીને તથા તેને  
હૃદયમાં ધારણ કરી પ્રફુલ્લિત થઈ ત્રણ વાર વદન-નમસ્કાર કરી આવી રીતે ભગવાનને  
પૂછવા લાગી -

હે ભગવન્ ! મારો પુત્ર કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા  
ત્રણ કરોડની પાદલ સેનાની સાથે રથમુશલ સગ્રામમાં ગયો છે તે વિજયી થશે કે

‘जाव’ शब्देन—‘एयस्स अगारधम्मस्स अनगारधम्मस्स सिक्खाए उट्ठिए’ इत्येपा सङ्ग्रहः । एतच्छाया च—‘एतस्य अगारधर्मस्य अनगारधर्मस्य, शिक्षायाम् उत्थित’ इति । एतस्यागारधर्मस्यानगारधर्मस्य शिक्षाया मुत्थित’=उद्यतः श्रमणोपासकः=श्रावकः श्रमणोपासिका=श्राविका वा द्वावपि विहरन्तौ आज्ञायाः=भगवदाज्ञायाः आराधकौ भवतः ॥ १८ ॥

अथ कालीवक्तव्यमाह—‘तए ण सा’ इत्यादि ।

मूलम्—तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ—जाव—हियया समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव एव वयासी—एव खलु भते । मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहि जाव रहमुसलसगाम ओयाए, से ण भते किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? जाव काले ण कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ? । कालीति समणे भगव महावीरे कालिं देविं एव वयासी—एव खलु काली । तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहि जाव कूणिण्णं रत्ता सङ्गिं रहमुसल सगाम सगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइ—अनिवयियचिधज्जयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रत्तो सपक्ख सपडिदिसिं रहेण पडिरह हव्वमागए ॥१९॥

छाया—तत खलु सा काली देवी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके धर्मे श्रुत्या निशम्य हृष्टा यावत्-हृदया श्रमण भगवन्त महावीरं त्रि-

हूर्द्धे उपासकदशाङ्ग सूत्रकी अगारधर्म-सजीवनी नामकटीकामे देखना चाहिये ।

‘जाव’ शब्दसे अगार अनगार धर्मकी शिक्षामे तत्पर श्रावक और श्राविका को भगवानकी आज्ञाके आराधक जानना ॥ १८ ॥

आधुना भाटे अशुभोच्चे अभादी जनावेदी उपासकदशाङ्गसूत्रनी अगारधर्मसजीवनी नामनी टीकाभा लेख लेख लेख

‘जाव’ शब्दशी अगार अनगार धर्मनी शिक्षाभा तत्पर श्रावक तथा श्राविकाने भगवाननी आज्ञाना आराधक समज्जवा ॥ १८ ॥

કૃત્વો યાવદેવમવાદીત્-एव खलु भदन्त ! मम पुत्रः कालः कुमारः त्रिभिर्-  
 दन्तिसहस्रैः यावत्-रथमुशलसदग्रामम् अवयातः, स खलु भदन्त ! किं जेष्यति ?  
 नो जेष्यति ? यावत् कालः खलु कुमारमह जीवन्त द्रक्ष्यामि ? कालि ! इति  
 श्रमणो भगवान् महावीर कालीं देवीमेवमवादीत्-एव खलु कालि ! तत्र पुत्रः  
 कालः कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावत् कृष्णिकेन राज्ञा सार्द्धं रथमुशल सदग्राम  
 सङ्ग्रामयन् हतमथितप्रवरवीरघातितलिपतितचिह्नजपताकः निरालोका दिशः  
 कुर्वन् चेदकस्य राज्ञः सपत्न्य समतिदिक् रथेन प्रतिरथ हव्यमागतः ॥ १९ ॥

ટીકા-તતઃ=ધર્મકથાશ્રવણાનન્તરં, કાલી દેવી શ્રમણસ્ય ભગવતો મહા  
 વીરસ્ય અન્તિકે=સમીપે ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુત્વા=કર્ણવિપયીકૃત્ય નિશમ્ય=  
 હૃદયેનાઽવધાર્યં હૃદ-યાવત્-હૃદયા-હૃદતુષ્ટિચિત્તાનન્દિતા હર્ષવશવિસર્પદ્વહૃદયા સતી  
 શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીર ત્રિ.કૃત્વઃ=ત્રિવાર યાવત્-વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવ=  
 વક્ષ્યમાણમ્ અવાદીત્=અવોચત્-હે ભદન્ત ! खलु=નિશ્ચયેન એવમ્=અનેન પ્રકા-  
 રેણ મમ પુત્રઃ કાલકુમાર. ત્રિભિર્દન્તિસહસ્રૈઃ=હસ્તિસહસ્રૈઃ, 'જાવ'શબ્દેન-  
 ત્રિભિસ્ત્રિભી રથાશ્વમહસ્રૈર્મનુષ્યાણા તિષ્ઠભિ. કોટિભિર્યુક્તો રથમુશલ સઙ્ગ્રામમ્  
 અવયાત.=સમુપાગત, હે ભદન્ત ! सः=કાલઃ કુમાર. खलु=નિશ્ચયેન किं  
 जेष्यति ? वा नो जेष्यति ? यावच्छब्देन-जीविष्यति ? नो जीविष्यति ?  
 पराजेष्यते ? नो पराजेष्यते ? अह काल कुमार खलु=નિશ્ચયેન जीवन्त

अव काली रानीके प्रश्नका वर्णन करते हैं-‘ तएण सा ’ इत्यादि ।

श्रमण भगवान् महावीरके समीप श्रुतचारित्रलक्षण वर्म सुनकर  
 और उसे हृदयमें धारणकर प्रफुल्लित हो तीन बार वन्दन-नमस्कार  
 करके इस प्रकार भगवानसे पूछने लगी-

हे भगवान् ! मेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-घोड़े-  
 रथ और तान करोड पैदल सेनाके साथ रथमुशल सग्राममें गया है  
 वह विजयी होगा या नहीं ? वह जीवित रहेगा या नहीं ? वह परा-  
 भवको पायेगा या जीतेगा ? मैं उसे जिन्दा देखूंगी या नहीं ?

હવે કાલી રાણીના પ્રશ્નનું વર્ણન કરે છે-‘ તएण सा ’ ઇત્યાદિ

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસેથી શ્રુતચારિત્રલક્ષણ વર્મ સાંભળીને તથા તેને  
 હૃદયમાં ધારણ કરી પ્રફુલ્લિત થઈ ત્રણ વાર વદન-નમસ્કાર કરી આવી રીતે ભગવાનને  
 પૂછવા લાગી-

હે ભગવન્ ! મારો પુત્ર કાલકુમાર ત્રણ ત્રણ હજાર હાથી-ઘોડા-રથ તથા  
 ત્રણ કરોડની પાયદળ સેનાની સાથે રથમુશલ સંગ્રામમાં ગયો છે તે વિજયી થશે કે

द्रक्ष्यामि ? । इति कालीदेवीमश्न श्रुत्वा श्रमणो भगवान् महावीर. एव=वक्ष्य  
 साण प्रतिवचनम् अवादीत्=अवोचत्, हे कालि ! एव खलु तव पुत्रः कालः  
 कुमारः त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावच्छन्देन युद्धसामग्रीयुक्तः, कूणिकेन राज्ञा सार्द्धं  
 रथमुशल सग्राम सङ्ग्रामयन्=सग्रामं कुर्वन् 'हतमथिते'—ति—सैन्यगतहतत्वरो  
 पात् हतः, मानगतमथितत्वारोपात् मथितः, प्रवराश्रिते वीराः प्रवरवीराः=सुभटाः  
 आतिताः=विनाशिता यस्य स प्रवरवीरघातितः आर्पत्वाश्च निष्ठान्तस्य पूर्व-  
 प्रयोगः, चिह्नस्य=सैन्यलक्षणस्य वजाः=गरुडचिह्नयुक्ता' केतव', पताकाश्च  
 चिह्नवज्रपताकाः, निपातिताः चिह्नवज्रपताका यस्य स निपातितचिह्नवज्रपताकः,  
 हतो मथितः प्रवरवीरघातितश्चासौ निपातितचिह्नवज्रपताकः=हतमथितप्रवरवीर  
 घातितनिपातितचिह्नवज्रपताकः, तादृशः सन् निरालोकाः=हतप्रभाः दिशः  
 कुर्वन्-सर्वदिशं प्रभारहिता. कुर्वन्-चेटकस्य राज्ञः सपक्ष-समानौ पक्षौ=वाम-  
 दक्षिणापार्श्वौ यस्य (आगमनस्य) तत् सपक्ष यथास्यात्तथा आगत इत्यनेनान्वयः,  
 क्रियाविशेषणम्, अतः सामान्ये नपुंसकम्, एव सप्रतिदिक्=समाना. प्रतिदिशो  
 यस्य तत् सप्रतिदिक् समानप्रतिदिक्त्वेन परस्पराभिमुख यथास्यात्तथा, उदमपि  
 क्रियाविशेषणम्, रथेन प्रतिरथ-प्रतिगतः=समुख रथो यस्य तत् प्रतिरथ=  
 रथाभिमुख यथास्यात्तथा हव्य=शीघ्रम् आगतः=आयातः, चेटकराजस्य सर्वथा  
 सम्मुख समागत इत्यर्थः ॥ १९ ॥

ऐसे काली महारानीके प्रश्नोंको सुनकर भगवान् बोले—

हे काली महारानी ! तेरा पुत्र कालकुमार तीन २ हजार हाथी-  
 घोड़े-रथ और युद्धकी समस्त सामग्री सहित कूणिक राजाके साथ  
 रथमुशल सग्राममें युद्ध करता हुआ वह अपनी सेना और सारी रण-  
 सामग्रीके नष्ट होजाने पर, बड़े २ वीरों के मारे जाने और घायल  
 होने पर तथा ध्वजा पताका आदि चिन्होंके धराशायी होजानेसे अकेला  
 नहिं ? , ते लुप्तते न्हेथे ते नहिं ? , ते क्षारी न्हेथे ते लुप्तते ? , हु तेने लुप्तते  
 देभीथ ते नहिं ? ,

आवा काली महाराणीना प्रश्नो शालणीने भगवान् बोल्या-हे काली महाराणी !  
 तारे पुत्र कालकुमार त्रय त्रय हजार हाथी-घोडा-रथ तथा युद्धनी तमाम सामग्री  
 साथे कूणिक राजानी साथे रथमुशल सग्राममें युद्ध करते यहाँ सेना तथा रथसामग्री  
 तमाम नाश पाया पड़ी, भोग भोग वीराना भरखुशी अने घायल यवाही तथा  
 ध्वज पताका आदि चिन्हो जमीनदोस्त थो जवाही ओकेबो ज योताना पराक्रमी

मूलम्—तए णं से चेडए राया काल कुमारं एजमाणं  
पासइ, कालं एजमाणं पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे  
धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं  
ठाणं ठाइ ठाइत्ता आययकण्णायय उमु करेइ करित्ता कालं  
कुमार एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोवेइ । तं कालगए  
णं काली । काले कुमारे नो चेव णं तुमं कालं कुमारं  
जीवमाणं पासिहिसि ॥ २० ॥

उाया-ततः खलु म चेटको राजा कालं कुमारम् एजमान पश्यति ।  
कालमेजमान दृष्ट्वा आशुरुत्तं यावत् मिसमिसन् धनुः परामृशति, परामृश्य  
इषु परामृशति, परामृश्य वैशाख स्थानं निष्ठति, स्थित्वा आयतमूर्णायितमिषु  
रुरोति, कृत्वा काल कुमारमेकादृत्य कृटादृत्य जीविताद् व्यपरोपयति । तत्  
कालगतः खलु कालि । कालः कुमारं नो चैव खलु त्वं काल कुमारं  
जीवन्तं द्रक्ष्यसि ॥ २० ॥

टीका—‘तएण से चेडए’ इत्यादि—ततः=कृणिरस्य रणे चेटकसम्मूख-  
गमनानन्तरं सः=पूर्वोक्तः प्रसिद्धो वा चेटको राजा एजमानम्=आयान्तं काल  
कुमारं पश्यति, एजमानं काल कुमारं दृष्ट्वा=अवलोक्य आशुरुत्तः=शीघ्रकोपाविष्टः,  
जाव शब्देन—‘रुडे, कुविण, चडिक्किण,’ एतेषां सङ्ग्रहः । एतच्च उाया—रुष्टः,  
कुपितः, चाण्डिक्रियतः, इति ॥ रुष्टः=रोपयुक्तः, कुपित—अन्तःस्थितक्रोधानेन  
प्रस्फुरदधरः, चाण्डिक्रियत=चाण्डिक्रिय=रौद्ररूपत्वं सजातमस्येति चाण्डिक्रियतः=

ही अपने पराक्रमसे सभी दिशाओको निस्तेज करता हुआ रथपर  
बैठकर चेटक राजाके रथके सामने महावेगसे आया ॥ १९ ॥

‘तएण से चेडए’ इत्यादि । तदनन्तर चेटक राजा कालकुमारको  
अपने सम्मुख आया हुआ देखकर तत्क्षण क्रुद्ध हो उठे, रुष्ट हुए  
और आन्तरिक कोपके कारण उनके होठ फड़फड़ाने लगे, उन्होंने

गन्धी दिशाओने निस्तेज करतो थेतो रथभा नेसीने चेटक राजाना रथनी सामे भडा  
वेगशी आये। (१९)

‘तएण से चेडए’ इत्यादि त्थार भाद चेटकराज कालकुमारने पोतानी  
अभ्युप आवेला नेधने तत्क्षण क्रोधित थई गया, इष्ट यथा तथा आन्तरिक क्रोध ने  
दीधे तेना डोड इडइडवा लाग्या, तेमणे रौद्र ( अथानक ) रूप धारण कर्युं जेव क्रोधनी



मुहूर्तान्तरेण=अन्तर्मुहूर्तानन्तरम् आस्वस्था=लब्धचैतन्या सती उत्थया=कथमपि दास्यादिना उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते, नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एव=वक्ष्यमाणम् अवादीत्-हे भदन्त ! एतत्=भवद्भाषितम्, एवम्=एवमेवास्ति, तथ्यम्=यथार्थम्, हे भदन्त ! अवितथम्=यथार्थस्वरूपनिरूपकम्, हे भदन्त ! असदिग्धम्=सशयविपरीतानयवसायवर्जितम् हे भदन्त ! एष=भवद्भुक्तः अर्थः=भावः खलु=निश्चयेन सत्यं=सम्यग्निर्णायकः, तद् यथा=येन प्रकारेण यूयमेतद्वदथ, इति कृत्वा=इति भगवत्समीपे निवेद्य श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा तमेव=पूर्वोक्तमेव धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरुह्य यस्या दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशः प्रतिगता ॥ २१ ॥

कालीराइया गमनानन्तर गौतमः पृच्छति-‘भतेत्ति’ इत्यादि ।

मूलम्-भतेत्ति भगव गोयमे जाव वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-कालेण भंते । कुमारे तिहि दतिसहस्सेहि जाव रहमुसलं संगाम सगामेमाणे चेडएण रत्ता एगाहच्चं कूडाहच्च जीवियाओ ववरोविण समणे कालमासे काल किच्चा कहि उववन्ने ? । गोयमाइ समणे भगव महावीरे गोयम एव वयासी-एव खलु गोयमा । काले कुमारे तिहि दतिसहस्सेहि जाव जीवियाओ ववरोविण समणे कालमासे

समान मूर्च्छित हो घडामसे भूमिपर गिर पडी । कुछ समय पश्चात् सचेष्ट होकर दासी आदिके द्वारा खडी हुई । बाद भगवानको वन्दन नमस्कार करके बोली-हे भदन्त ! जैसा आप कहते हैं, वैसा ही है, यथार्थ है, सन्देह रहित है, सत्य है और सर्वथा सत्य है । ऐसा कहकर भगवान् को वन्दन-नमस्कार करके पूर्वोक्त धार्मिक रथमें बैठकर अपने स्थानपर गयी ॥ २१ ॥

पडी गइ थोडा वधत पछी चेतना आवी तथा दासीओनी भददथी जेणी थइ पछी भगवानने वदन नमस्कार करीने गोली-हे भदन्त जेम आप कहे छे तेमज छे यथार्थ छे शंकाहित छे सत्य छे तथा सर्वथा सत्युज छे जेम कही भगवानने वदन नमस्कार करी अगाछ वधुवेवा धार्मिक रथमा जेसीने पोताना स्थाने गइ (२१)

कालं किञ्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दस-  
सागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ २२ ॥

छाया—भदन्त ! इति भगवान् गौतमः यावद् उन्दते नमस्यति  
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—काल, खलु भदन्त ! कुमारः त्रिभिर्दन्ति-  
सहस्रैर्यावद् रथमुशल सग्राम सग्रामयन् चेटकेन राज्ञा एकाहत्य कूटाहत्य  
जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे कालं कृत्वा क गतः ? क उपपन्नः ?  
गौतम ! इति श्रमणो भगवान् महावीरः गौतममेवमवादीत्—एव खलु गौतम !  
कालः कुमारं त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यावद् जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे  
कालं कृत्वा चतुर्थ्या पङ्कपभाया पृथिव्या हेमाभे नरके दशसागरोपमस्थितिकेषु  
नैरयिकेषु नैरयिकृत्या उपपन्न ॥ २२ ॥

टीका—हे भदन्त ! इति सगो य-भगवान् गौतमः यावत्=मोभगति-  
प्राप्त श्रमण भगवन्त महावीर उन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवा-  
दीत्—हे भदन्त ! कालः कुमारं खलु=निश्चयेन त्रिभिर्दन्तिमहस्रै, यावद् रथ-  
मुशल सदग्राम सदग्रामयन् चेटकेन राज्ञा वज्ररूपेण एकेनैव बाणेन जीविताद्  
व्यपरोपितो मृतः सन् कालमासे=कालावसरे कालं कृत्वा क गतः ? क उपपन्नः ?  
हे गौतम ! इति मबोधय श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्त गौतमम्-  
एवम्=वक्ष्यमाणम् अवादीत्—हे गौतम ! खलु=निश्चयेन एवम्=उक्तकर्मकारकः  
कालकुमार त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्युक्तो यावत् जीविताद् व्यपरोपितः सन् कालमासे

रानीके चले जानेके बाद श्री गौतम स्वामी भगवानसे पूछते  
हैं—‘मतेत्ति’ इत्यादि ।

हे भदन्त ! कालकुमार तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ और  
अपने सम्पूर्ण सैन्य वर्गके साथ रथमुशल सग्राममें लड़ाई करता हुआ  
चेटक राजाके वज्रस्वरूप एक ही बाणसे मारा गया । वह मृत्युके  
समय कालप्राप्त होकर कहाँ गया और कहाँ उत्पन्न हुआ ? ।

भगवान कहते हैं—हे गौतम ! वह कूर कर्म करनेवाला काल-

राष्ट्रीना गया पछी श्री गौतम स्वामी भगवानने पूछे छे—‘मतेत्ति’ इत्यादि

छे भदन्त ! कालकुमार त्रय त्रय डल्लर हाथी-घोडा-रथ तथा पोटाना स पूर्य  
सैन्य वर्ग साथ रथमुशल सग्राममा लडाई करतो थके चेटक राजाना वज्रस्वरूप ओक  
बाणुधी मार्यो गयो ते मृत्युने अवसरे काल करीने क्या गयो अने क्या उत्पन्न थयो ?

भगवान कहे छे—हे गौतम ! कूर कर्म करनेवाले ते कालकुमार पोटानी

कालं कृत्वा चतुर्थ्या पङ्कप्रभाया पृथिव्या हेमामे नामके नरके=नरकवासे दशमा  
गरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतया=नारकित्वेन उपपन्नः=समुत्पन्नः॥ २२॥

गौतमस्वामी पुनः पृच्छति—‘कालेण भते’ इत्यादि ।

मूलम्—कालेण भते । कुमारे केरिसएहि आरभेहि केरिस  
एहि समारभेहि केरिसएहि आरभसमारभेहि केरिसएहि भोगेहि  
केरिसएहि संभोगेहि केरिसएहि भोगसभोगेहि केरिसएण वा  
असुभकडकम्मप्पभारेणं कालमासे कालं किञ्चा चउत्थीए पक्कप्प-  
भाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने ? । एव खलु गोयमा !  
तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, रिद्ध-  
त्थिमियसमिद्धे । तत्थणं रायगिहे नयरे सेणिए नाम राया होत्था,  
महया० । तस्स णं सेणियस्स रत्तो नदा नाम देवी होत्था, सोमाला  
जाव विहरति । तस्सणं सेणियस्स रत्तो पुत्ते नदाए देवीए अत्तए  
अभए नाम कुमारे होत्था, सोमाले जाव सुरूवे साम-दान-भेद-  
दड-कुसले जहा चित्तो जाव रजधुराए चित्तए यावि होत्था ॥ २३ ॥

छाया-कालः खलु भदन्त ! कुमार कीदृशैरारम्भैः, कीदृशैः समा-  
रम्भैः, कीदृशैः आरम्भसमारम्भैः, कीदृशैर्भोगैः, कीदृशैः संभोगैः, कीदृशैः  
भोगसंभोगैः कीदृशेन वा अशुभकृतकर्मप्रागभारेण कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्या  
पङ्कप्रभाया पृथिव्या यावत् नैरयिकतया उपपन्नः ? । एव खलु गौतम ? तस्मिन्  
काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमभूत् ऋद्धस्तिमितसमुद्गम् । तत्र खलु  
राजगृहे नगरे श्रेणिको नाम राजाऽभूत् महा० । तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञो  
नन्दा नाम देवी अभूत् मुकुमारा० यावत् विहरति । तस्य खलु श्रेणिकस्य

कुमार अपनी सेना सहित लडता हुआ यहाँसे मरकर पङ्कप्रभा नामक  
चौथे नरकके अन्दर हेमा भनामके नरकावासमें दस सागरोपम स्थितिवाला  
नैरयिक हुआ ॥ २२ ॥

सेना सहित लडता था। ऋद्धि नामकी पङ्कप्रभा नामकी चौथी नरकमा हुआ।  
नामकी नरकावासमा इस सागरोपमनी स्थितिवाली नैरयिक (नारकी) थी। २२

राज्ञः पुत्रो नन्दाया देव्या आत्मजः अमयो नाम कुमारोऽभूत् सुकुमारः यावत्  
सुरूपः साम-दान-भेद-दण्डकुशलः, यथा चित्तो यावद् राज्यधुरायाश्चिन्त-  
कोऽभूत् ॥ २३ ॥

टीका-कालकुमारः खलु हे भदन्त ! कीदृशैः आरम्भैः प्राणातिपातादि  
सावधानुष्ठानैः, समारम्भैः=वर्ज्यादिना प्राण्युपमर्दनरूपव्यापारैः, आरम्भसमा-  
रम्भैः=आरभ्यन्ते=विनाश्यन्ते जात्रा यैर्हिमादिन्यापारैरित्यारम्भास्तेषां समा-  
रम्भाः सम्पादनानि तैः, कीदृशैः भोगैः=जन्दादिविषयैः ?, कीदृशैः सम्भोगैः=  
तीव्राभिलाषजनकविषयैः ?, कीदृशैः भोगसम्भोगैः=महारम्भपरिग्रहरूपविषया-  
भिलाषैः ?, कीदृशेन वा अशुभकर्मप्राग्भारेण=अशुभकर्मसमूहेन कालमासे=काला  
वसरे काल कृत्वा चतुर्थ्या पृथिव्या यावत् नैरयिकृतया उपपन्नः ? । हे गौतम !  
'एव खलु' इत्यादि निगदमिदम् ॥ २३ ॥

पुन. श्री गौतम स्वामी पूछते हैं:- 'कालेण भते' इत्यादि ।

हे भदन्त ! वह कालकुमार हिमा झूठ आदि सावध अनुष्ठान-  
नरूप आरम्भसे तलवार आदि शस्त्रोंद्वारा प्राणियोंका उपमर्दनरूप समार-  
म्भसे, जिमसे प्राणियोंका सहार होता है ऐसे आचरण करनेसे, किस  
तरहके शब्दादि विषय भोगोंसे तथा किस तरहके तीव्र अभिलाषाजनक  
विषयोंके सम्भोगोंसे और किस तरहके महारम्भ और महापरिग्रहरूप  
विषयोंके अभिलाषारूप भोगोपभोगोंसे और कौनसे अशुभ कर्मोंके  
पुञ्जसे वह काल करके चौथे नरकमें गया ? । भगवान कहते हैं-हे  
गौतम ! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर या जो क्राद्ध  
अदिसे समृद्ध था । उसमें त्रेणिक राजा राज्य करते थे । उनकी रानीका

पुन गौतम स्वामी पूछ छे — 'कालेण भते' इत्यादि

हे भदन्त ! ते कालकुमार हिंसा, झूठ, आदि सावध अनुष्ठानरूप आरम्भथी,  
तलवार आदि शस्त्रोंथी प्राणियोंको नाश करवाइय, समारम्भथी, जेनाथी प्राणियोंको  
सहार थाय अथवा आरम्भनु आचरण करवाथी, केवी जतना शब्दादि विषयसौगंधा,  
केवी जतनी तीव्र आलसाया वडे उत्पन्न यता विषयोंना सौगंधी, तथा केवी जतना  
महारम्भ अने महापरिग्रहरूप विषयोंनी आलसायाइय भोगोपभोगोथी तथा केवा  
अशुभ कर्मोंना पुज्जथी ते काल करीने (मृत्यु पायीने) येथा नरकमा गये ? भगवान  
कहे छे-हे गौतम ! ते काल ते समये राजगृह नामनी नगरी હતી જે સદ્ધિ  
આદિથી સમૃદ્ધ હતી તેમા ત્રેણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા તેની રાણીનું નામ નંદા

મૂલમ્—તસ્સ ણં સેણિયસ્સ રત્નો ચેલ્લણા નામં દેવી હોત્થા, સોમાલા જાવ વિહરઈ । તણં સા ચેલ્લણા દેવી અન્નયા કયાઈં તંસિ તારિસગંસિ વાસઘરંસિ જાવ સોહ સુમિણે પાસિત્તા ણ પડિબુદ્ધા, જહા પમાવઈ, જાવ સુમિણપાઢગા પડિવિસજિતા, જાવ ચેલ્લણા સે વયણં પડિચ્છિત્તા જેણેવ સણ ભવણે તેણેવ અણુપવિટ્ઠા ॥ ૨૪ ॥

છાયા—તસ્ય खलु श्रेणिकस्य राज्ञश्चेल्लना नाम देवी आसीत् सुकुमारा यावद् विहरति । ततः खलु सा चेल्लना दैवी अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशके वासगृहे यावत् सिंह स्वप्ने दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धा यथा प्रभावती, यावत् स्वप्नपाठका, प्रतिविमर्जिता यावत् चेल्लना तस्य वचनं प्रतीप्य यत्रैव स्वकं भवनं तत्रैवानुपविष्टा ॥ २४ ॥

टीका—‘तस्स ण’ ‘इत्यादि । ‘तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञः’ इत्यारभ्य ‘तत्रैवानुपविष्टा’ इत्यन्तम्य व्याख्यानं सुगमम् ॥ २४ ॥

નામ નન્દા થા, જો અત્યન્ત સુકુમાર થો, યાવત્ અપને પૂર્વજન્મ ઉપાર્જિત પુણ્યસે પ્રાપ્ત મનુષ્ય-સમ્પન્ધી સુખોકા અનુભવ કરતી હુઈ વિચરતી થી । ઉનકે અભયકુમાર નામક પુત્ર થા, જો સુકુમાર સુરૂપ તથા સમી લક્ષણોસે યુક્ત થા । સામ, દામ, દણ્ડ, ભેદ આદિ નીતિમેં નિપુણ થા । ચિત્તાપ્રધાનકે સમાન રાજકાર્ય દક્ષતાસે કરતા થા ॥ ૨૩ ॥

‘તસ્સ ણ’ ‘ઇત્યાદિ ।

હવે શ્રેણિક રાજાકી દ્વસરી રાણી ચેલના થી, જો સુકુમારતા (કોમલતા) આદિ નારીગુણોસે સમી તરફ યુક્ત થી । ઉસને સ્વપ્નમેં એક સમય સિંહ દેખા ઉસી સમય જાગ ઉઠી આર પ્રભાવતીકે સમાન

હવે જે ગાહુ સુકુમાર હતી પોતાના પૂર્વજન્મમા કરેલા પુણ્યથી પ્રાપ્ત થયેલા મનુષ્ય સળાથી સુખોને અનુભવ કરતી વિચરતી હતી તેને અભયકુમાર નામે પુત્ર હતો જે સુકુમાર રૂપવાન તથા બધા લક્ષણોથી યુક્ત હતો સામ, દામ, દડ, ભેદ આદિ નીતિમા નિપુણ હતો ચિત્ત પ્રધાનની પેઠે રાજકાર્યને દક્ષતાપૂર્વક કરતો હતો ૨૩

‘તસ્સ ણ’ ઇત્યાદિ તે શ્રેણિક રાજાની બીજી રાણી ચેલના હતી જે સુકુમાર (કોમળતા) આદિ સ્ત્રીને લગતા ગુણોથી સર્વ પ્રકારે યુક્ત હતી તેણે સ્વપ્નામા એક વખત સિંહને જોયો અને બાળી ઉઠી. પ્રભાવતીની પેઠે રાજાને સ્વપ્ન કહ્યું જેથી રાજાએ

मूलम्—तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाडं तिण्हं  
मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-धन्नाओ  
णं ताओ अन्मयाओ जाव जम्मजीवियफले जाओ ण णियस्स  
रत्तो उदरवलीमंसेहि सोल्लेहि य तल्लिएहि य भज्जिएहि य  
सुरं च जाव पसन्न च आसाएमाणीओ जाव परिभाएमाणीओ  
दोहल पविणेंति ॥ २५ ॥

छाया—ततः खलु तस्याश्चेल्लनाया देव्या अन्यदा कदाचित् त्रिपु  
मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अयमेतद्रूपो दोहद प्रादुर्भूतः-धन्याः खलु ताः अम्बाः  
यावत् (तामा) जन्म-जीवित-फल याः खलु निजस्य राज्ञः उदरवलिमासैः  
रूलैश्च तल्लितैश्च भजितैश्च सुरा च यावत् प्रसन्ना च आम्नादयन्त्यो यावत्  
परिमाजयन्त्यो दोहद प्रविणयन्ति ॥ २५ ॥

टाका—‘तएण तीसे’ इत्यादि । ततः=तदनन्तर खलु=निश्चयेन अन्यदा  
कदाचित् चेल्लनाया देव्याः त्रिपु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अयम्=वक्ष्यमाणः, ए-  
तद्रूप =एतदाकारकः दोहद. प्रादुर्भूतः=समुत्पन्न -ता अम्बा =जनन्यः धन्याः  
=प्रशसनीया यावत् जन्मजीवितफल =तासा जन्मनो जीवितस्य च फल=  
आनन्दरूपम् याः निजस्य राज्ञः=स्वामिनः खलु रूलै पक्वै तल्लितै =स्नेहादिना  
गजाको जाकर स्वप्न कहा, राजाने स्वप्नपाठक बुलाये । उन्होंने स्वप्नका  
फल कहा और राजाने उन्हे प्रीतिदान देकर विसर्जित (विदा) किये ।  
स्वप्नफल सुननेके पश्चात् रानी अपने महलमे गयी ॥ २४ ॥

‘तएण तीसे’ इत्यादि ।

याद रानी चेल्लनाको, गर्भके तीन महिने पूरे होनेपर ऐसा  
दोहद-(दोहला) उत्पन्न हुआ कि-धन्य हैं वे माताएँ, यावत् उन्हीका  
जन्म और जीवित सफल है जो अपने पतिके उदरवलि (कलेजा)के

स्वप्नपाठकाने जोलाव्या, तेजोअे स्वप्नइल कहु राजाअे तेभने प्रीतिदान आपीने  
विसर्जित (विदाय) कया स्वप्नइल साधव्या पछी राणी पोताना भइसमा गध २४

‘तएण तीसे’ इत्यादि पछी राणी चेल्लनाने त्रिपु भडिना पुरा थता अेवे  
दोहले (तीन धन्ना) थये के धन्य ते माताअेने अने तेभने जन्म तथा एवतार सइस  
छे के ने पोताना पतिना उदरवलि (कलेजा)ना भासने शूण उपरसेकने तथा तेसमा

પક્વૈઃ=કેવલવહ્નિપક્વૈ ઉદરવલિમાસૈ\* દોહદ પ્રવિનયન્તીત્યનેન સમ્બન્ધઃ,  
 સુરા=મદિરા ચ યાવત્ પરિભાજયન્ત્ય =અન્યોન્ય દદત્યો દોહદ પ્રવિણયન્તિ=  
 પૂરયન્તિ, અહમપિ સ્વપતેઃ શ્રેણિકસ્ય રાજ્ઞઃ પક્વતલિતમર્જિતોદરવલિમાસૈર્દોહદ  
 પ્રપૂરયેય તદા ધન્યા કિંતુ તાદૃક્કરણેઽમ્મર્થાઽસ્મિ, इत्यादि ॥ ૨૫ ॥

મૂલમ્--તણ સા ચેલ્લના દેવી તસિ દોહલસિ અવિણિજ  
 માર્ણસિ સુકા મુક્વા નિમ્મસા ઓલુગ્ગા ઓલુગ્ગસરીરા નિત્તેયા  
 દીણવિમળવયણા પહુઇયમુહી ઓમંથિયનયણવયણકમલા જહો-  
 ચિય પુપ્ફવત્થગધમહ્લાલકાર અપરિમુંજમાણી કરતલમલિયવ્વ  
 કમલમાલા ઓહયમણસકપ્પા જાવ ઝિયાઇ ॥ ૨૬ ॥

છાયા—તત\* સ્વલ્પ સા ચેલ્લના દેવી તસ્મિન્ દોહદે અવિનીયમાને  
 શુષ્કા બુદ્ધશિતા નિર્માસા અવરુગ્ના, અવરુગ્નશરીરા નિસ્તેજાઃ દીનવિમળાવદના  
 પાણ્ડુકિતદ્રુગ્વી અવમન્થિતનયનવદનકમલા યથોચિત પુષ્પવલ્લગન્ધમાલ્યાલક્ષ્ણમ્  
 અપરિમુજ્જન્તી કરતલમલિતેવ કમલમાલા ઉપહતમન સદ્ગુણા યાવદ્ ધ્યાયતિ ॥ ૨૬ ॥

ટીકા—‘તણ સા’ इत्यादि-તત =તદનુ સા ચેલ્લના દેવી તસ્મિન્  
 દોહદે અવિનીયમાને =અપૂર્યમાણે સતિ શુષ્કા=શુષ્કપ્રાયા રુધિરપરિશોષણાત્,

માંસકો શૂલપર પકાકર ઓર તેલમેં તલકર એવ અગ્નિમેં સેકકર મદિરાકે  
 સાથ આસ્વાદન કરતી હુઈ યાવત્ પરસ્પર-આપસમેં દેતી હુઈ અપને  
 દોહદ (દોહલે)કો પૂરા કરતી હૈં । યદિ મૈં બી અપને પતિ શ્રેણિક  
 રાજાકે પકાપે હુવે તલે હુવે સેકે હુવે ઉદરવલિ (કલેજા)કે માંસસેં  
 દોહદકો પૂરા કરુ તો મૈં ધન્ય બનૂં પરન્તુ એસા કરનેમેં અસમર્થ હુ ॥ ૨૫ ॥

‘તણ સા’ इत्यादि—

ઉસકે બાદ વહ ચેલના રાની દોહદ નહીં પૂરા હોનેસે રક્તકે

તળીને કે આગ્નિમા સેકીને દાઝની સાથે તેના સ્વાદ લેતી અને અરસપરસ દેતા પોતાના  
 એ દોહદને પરિપૂર્ણ કરે છે બે હુ પશુ મારા પતિ શ્રેણિક રાજાના પકાપેલા તળેલા  
 અને સેકેલા કલેબાના માંસથી મારો દોહદ પૂરો કરૂ તો ધન્ય બનુ પશુ તેમ કરવામા  
 હુ અસમર્થ છુ ૨૫

‘તણ સા’ इत्यादि

ત્યાર પછી તે ચેલના રાણી પોતાને દોહદ (ધંચા) પુરો ન થવાથી લોહી સૂકાઇ

बुधुक्षिता=आहाराऽकरणेन बुधुक्षितेव, निर्मासा=मामरहिता-मांसवृद्धभावात्,  
 अवरुग्णा=रोगवतीव मनोवृत्तिभङ्गात्, अवरुग्णशरीरा=भग्नगात्रा, निस्तेजाः=  
 शरीरद्युतिरहिता, दीनविमनोवदना=दीनस्येव वि=विगतम्=उत्साहरहित मनः,  
 कान्ति रहित वदन च यस्याः सा तथा-अकिञ्चनवदत्साहहीनमनोनिष्पभमुख-  
 वतीति भावः । पाण्डुकितमुग्धी=पाण्डुवर्णयुक्तमुग्ववती, अवमथितनयनवदनकमला  
 =अधः कृतनेत्रमुखकमला, यथोचित=यथायोग्य पुष्पवस्त्रगन्धमालालङ्कारम्-अपरि-  
 भुञ्जन्ती=असेवमाना, करतलमलिता=हस्ततलमर्दिता कमलमालेव कान्तिहीना,  
 उपहतमनःसरूपा = कर्तव्याकर्तव्यविवेकविकला यावद् ध्यायति=आर्तध्यान  
 करोति ॥ २६ ॥

मूलम्-तएणं तीसे चेल्लणाए देवीए अंगपडियारियाओ  
 चेल्लणं देवि सुक्क भुक्खं जाव झियायमाणी पासंति, पासित्ता  
 जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करतल-

सुख जानेके कारण सुख गयी । अरुचिसे आहार आदि नहीं करनेके  
 कारण भूखी रहने लगी । शरीरमे मांस नहीं रहनेके कारण क्षीण-  
 काय हो गयी, मनको चोट पहुँचनेसे रोगी के समान हो गयी,  
 शरीरकी कान्ति हट जानेसे तेजरहित हो गयी, उसका मन दीनके  
 समान उत्साहरहित और मुख निस्तेज हो गया, अतएव रानीका  
 चेहरा फीका पड़ गया । इस कारण नेत्र और मुखकमलको नीचे  
 किये हुए यथायोग्य पुष्प वस्त्रादिकको भी नहीं धारण करती थी,  
 वह हाथसे मली हुई-कुचली हुई कमलकी मालाके समान 'कान्तिहीन  
 दुःखित' मनवाली कर्तव्याकर्तव्यके विवेकसे रहित होकर 'यावत्' आर्त-  
 ध्यान करती थी ॥ २६ ॥

जवाथी शुष्क यथ गम अङ्गिथी आहारा आदि न उरवाथी भूषणी रहेवा भाडी शरीरमा  
 मांस न रहेवाथी शरीरे दुणणी यथ गम मनमा धा लागवाथी रोगीसमान यथ गम  
 शरीरनी कान्ति ओछी यत्ता तेजरहित यथ गम तेनु मन दीन समान उत्साहरहित  
 तथा मोहु निस्तेज यथ गमु आम राणीने ओहरे शीका पडी गये आथी नेत्र तथा  
 मुख नीचे लुकावीने छेडी यती, यथायोग्य पुष्प-वस्त्रादि अलङ्कारे धरणु करती नहोती  
 ते लथना भर्त्तनयी करमायेवी कमलनी माणा जेवी कान्ति वगरनी दुःखित मन वाणी कर्तव्य  
 अकर्तव्य विवेकथा रहित यनी जमने सधणे वषात आर्तध्यानमा वीतावती छती २६



पक्वैः भजितैः=केवलवह्निपक्वै उदरवलिमासैः दोहद प्रविनयन्तीत्यनेन सम्बन्धः,  
सुरा=मदिरा च यावत् परिभाजयन्त्य =अन्योन्य ददत्यो दोहद प्रविनयन्ति=  
पूरयन्ति, अहमपि स्वपतेः श्रेणिकस्य राज्ञः पक्वतलितभर्जितोदरवलिमासैर्दोहद  
प्रपूरयेय तदा धन्या किंतु तादृक्करणेऽममर्थाऽस्मि, इत्यादि ॥ २५ ॥

मूलम्—तएणं सा चेळुणा देवी तसि दोहलसि अविणिज-  
माणैसि सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया  
दीणविमणवयणा पडुइयमुही ओमंथियनयणवयणकमला जहो-  
चिय पुप्फवत्थगधमल्लालकार अपरिभुंजमाणी करतलमलियव्व  
कमलमाला ओहयमणसकप्पा जाव झियाइ ॥ २६ ॥

छाया—ततः खलु सा चेळुना देवी तस्मिन् दोहदे अविनीयमाने  
शुष्का बुद्धक्षिता निर्मासा अवरुणा, अवरुणशरीरा निस्तेजा दीनविमनावदना  
पाण्डुकितम्रुवी अवमन्थितनयनवदनकमला यथोचित पुष्पवस्त्रगन्धमात्स्यालङ्कारम्  
अपरिभुञ्जन्ती करतलमलितेव कमलमाला उपहतमनःसङ्कल्पा यावद् ध्यायति ॥ २६ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—तन =तदनु सा चेळुना देवी तस्मिन्  
दोहदे अविनीयमाने =अपूर्यमाणे सति शुष्का=शुष्कप्राया रुधिरपरिशोषणात्,

मांसको शूलपर पकाकर और तेलमें तलकर एव अग्निमें सेककर मदिराके  
साथ आस्वादन करती हुई यावत् परस्पर-आपसमें देती हुई अपने  
दोहद (दोहले)को पूरा करती हैं। यदि मैं भी अपने पति श्रेणिक  
राजाके पकाये हुवे तले हुवे सेके हुवे उदरवलि (कलेजा)के मांससे  
दोहदको पूरा करू तो मैं धन्य बनू परन्तु ऐसा करनेमें असमर्थ हू ॥ २५ ॥

‘तएण सा’ इत्यादि—

उसके बाद वह चेलना रानी दोहद नहीं पूरा होनेसे रक्तके

तण्णाने के अज्जमा सेडीने हाउनी साथे तेने स्वाद लेती अने अरसपरस देता पोताना  
ओ दोहदने परिपूरुं करे छे ओ हु पखु भारा पति श्रेणिक राजाना पडायेला तणेला  
अने सेडिला कलेजाना भासथी भारा दोहद पूरा करे तो धन्य अनु पखु तेम करवामा  
हु असमर्थ ॥ २५

‘तएण सा’ इत्यादि

त्याह पछी ते चेलना राणी पोताने दोहद (धृच्छा) पुरा न थवाथी बोली सूझा

मूलम्—तएणं से सेणिए राया चेळणं देवि एववयासी  
माणं तुमं देवाणुप्पिए । ओहय० जाव झियायह, अहं ण  
तहा जइस्सामि जहा णं तव दोहलस्स सपत्ती भविस्सइत्ति  
कहु चेळण देवि ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहि मणुन्नाहिं  
मणामाहिं ओरालाहि कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहि मंगल्लाहिं  
मियमधुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहि समासासेइ, समासासित्ता चेळ-  
णाए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव  
वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता  
तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं वहूहिं आएहि उवाएहि य  
उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि  
य परिणामेमाणे२ तस्स दोहलस्स आय वा उवायं वा ठिइं  
वा आवदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ ॥ २९ ॥

उाया—ततः खलु स श्रेणिको राजा चेल्लना देवीमेवमवादीत्—मा  
खलु त्व देवानुमिये ! अवहत० यावद् ध्याय, अह खलु तथा यतिष्ये, यथा  
खलु तव दोहदम्य सम्पत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा चेल्लना देवीं ताभिरिष्टाभि-  
फान्ताभि\* प्रियाभिमनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिरुदारामिः कल्याणामिः शिवाभिर्धन्या

धन्य हैं जो अपने पतिके उदरवलिका मास पकाकरके तलकरके और  
अग्निमें सेक भूनकर मदिराके साथ एक दूसरी सखीको देती हुई—  
आस्वादन करती हुई अपना दोहद पूरा करती हैं । मुझे भी ऐसा  
ही दोहद उत्पन्न हुआ है—लेकिन हे स्वामिन् ! वह दोहद पूरा नहीं  
होनेसे आज मेरी यह दशा हुई है और मैं आर्तध्यान करती हू ॥ २८ ॥

उदर-वलिका मासने पकायी तजीने अग्निमा सेडी भूछ मदिरानी साथे ओक थीछ  
सभीने आपती आस्वाद लेती पोताने दोहद पूरा करे छे भने पण ओवोअ दोहद  
उत्पन्न थये छे पण छे स्वाभिन् ! ते पुरे नहि थवाथी आअ मारी आवी दशा  
थर छे अने आर्तध्यान करे छु (२८)

તા અમ્વાઃ, યા સ્વલુ નિજસ્ય રાજ્ઞ ઉદરવલિમાસૈઃ શૂલકૈશ્વ યાવદ્ દોહદ વિન  
યન્તિ,' ('યદ્યદમપ્યેવ કરોમિ તદા ધન્યા ભવામિ' ઇતિ । તતઃ સ્વલુ અહ દે  
સ્વામિન્ ! તસ્મિન્ દોહદે અવિનીયમાને શુષ્કા બુઘુક્ષિતા યાવદ્ ધ્યાયાર્મિ ॥૨૮॥

ટીકા—'તણ સે' ઇત્યાદિ । સમ્રાન્તઃ સન્=આશ્રયચકિતઃ સન્ ।  
નો આદ્રિયતે=ન સમ્માનયતિ, નો પરિજાનાતિ=ન સમ્યક્ વૃષ્ટવચન દ્વયે  
નિદધાતિ । તૂળ્ણીકા=સમાલમ્બિતમૌનભાવા । દ્વિતીયમ્પિ દ્વિતીયવાર તૃતીય  
મપિ=તૃતીયવારમ્ । શેષ સુગમમ્ ॥ ૨૮ ॥

‘તણ સે’ ઇત્યાદિ

મહારાજ શ્રેણિક દાસિયોંકે મુગ્ધસે હસ વૃત્તાન્તકો સુનકર  
ઘચરાને હુણ શીઘ્ર ચેલના રાનીકે પામ આયે, ઓર ચેલના રાનીકી  
કુરવસ્થાકી દેખકર બોલે—હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ્હારી હસ તરફકી હુ સ  
જનક અવસ્થા કૈસે હો ગયી ? ઓર કયોં આત્મધ્યાન કર રહી હો ?  
ઘજ સુનકર રાની કુછ નહીં બોલી । પશ્ચાત્ રાજાને દો ત્રીન વાર  
પુનઃ પૂછા—હે દેવાનુપ્રિયે ! કયા તુમ્હારી હસ વાતકા સુનને લાયક  
મં નહીં હું જો મુક્ષસે તુમ અપની વાત છિપાતી હો ? હસ પ્રકાર  
રાજાદ્વારા દો ત્રીન વાર પૂછે જાને પર રાની બોલી—હે સ્વામિન્ !  
એસી કોઈ વાત નહીં હૈ જો આપસે છુપાઈ જાય ઓર આપ ઉસે  
સુનનેકે યોગ્ય નહીં હો, આપ ઉસે સર્વથા સુન સકતે હૈ, વજ વાત  
હસ પ્રકાર હૈ—ઉદાર સ્વપ્નકે ફલ સ્વરૂપ ગર્ભકે ત્રીસરે માસકે  
અન્તમે મુક્ષે હસ પ્રકાર દોહદ (દોહલા) ઉત્પન્ન હુઆ હૈ કિ—વે માતાં

‘તણ સે’ ઇત્યાદિ

મહારાજ શ્રે ૧૩, દાસીઓને મેઢેથી આ વૃત્તાન્તને સાંભળી, ગભરાતા, બહારી  
ચેલના રાણીની પસે આવ્યા, તથા ચેલના રાણીની ખરાબ અવસ્થાને જોઈને બોલ્યા—  
હે દેવાનુપ્રિયે ! તમારી આ પ્રકારની હુ ખજનક અવસ્થા કેવી રીતે ઘડ ગઈ ? શા  
માટે આત્મધ્યાન કરે છે ? આ સાંભળીને રાણી કાઈ ને બોલી પછી રાજાએ બે ત્રણ  
વાર-ફરીને પૂછ્યું—હે દેવાનુપ્રિયે ! શું તમારી આ વાત સાંભળવા લાયક હું નથી કે  
જેથી મારાથી તું પોતાની વાત છુપી રાખે છે ? આ પ્રકારે બે ત્રણ વાર રાજાએ  
પૂછવાથી રાણી બોલી—હે સ્વામી ! એવી કોઈ વાત નથી જે આપથી છાની રખાય  
તથા આપ તે સાંભળવા યોગ્ય ન હો. આપ તે સર્વથા સાંભળી શકો છો. એ વાત  
આમ છે—તે ઉદાર સ્વપ્નના ક્વ સ્વરૂપ ગર્ભના ત્રીજા મહિનાના અંતમા મને એવા  
પ્રકારનો દોહદ (ધંધા) ઉત્પન્ન થયો કે તે માતાને ધન્ય છે કે જે પોતાનો પતિના

મૂલમ્—તણં સે સેણિયે રાયા ચેલ્ણં દેવિં એવંવયાસી  
માણં તુમં દેવાણુપ્પિયે ! ઓહયં જાવ ઝિયાયહ, અહં ણ  
તહા જહ્સસામિ જહા ણં તવ દોહલસ્સ સપત્તી ભવિસ્સહિત્તિ  
કહ્હુ ચેલ્ણ દેવિં તાહિ હિટ્ઠાહિં કંતાહિં પિયાહિ મણુન્નાહિં  
મણામાહિં ઓરાલાહિ કલ્હાણાહિં સિવાહિં ધન્નાહિ મંગલ્લાહિ  
મિયમધુરસસ્સિરીયાહિં વગ્ગૂહિ સમાસાસેહ્, સમાસાસિત્તા ચેલ્હ-  
ણાણ દેવીણ અતિયાઓ પહિનિવ્વમહ્, પહિનિવ્વમિત્તા જેણેવ  
વાહિરિયા ઉવટ્ઠાણસાલા જેણેવ સીહાસણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ્,  
ઉવાગચ્છિત્તા સીહાસણવરંસિ પુરત્થાભિમુહે નિસીયહ્, નિસીહિત્તા  
તસ્સ દોહલસ્સ સંપત્તિનિમિત્તં વહ્હિં આણહિ ઉવાણહિ ય  
ઉપ્પત્તિયાહિ ય વેણહિયાહિ ય કમ્મિયાહિ ય પારિણામિયાહિ  
ય પરિણામેમાણેઃ તસ્સ દોહલસ્સ આય વા ઉવાયં વા ઠિહ્  
વા આવદમાણે ઓહયમણસકપ્પે જાવ ઝિયાયહ ॥ ૨૧ ॥ —

છાયા—તતઃ खलु स श्रणिमो राजा चैल्लना देवीमेवमवादीत्—मा  
खलु त्व देवानुप्रिये ! अवहतं यावद् ध्याय, अह खलु तथा यतिष्ये, यथा  
खलु तव दोहदस्य सम्पत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा चैल्लना देवीं तामिरिष्टाभिः  
कान्ताभि प्रियाभिमनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिरुदाराभिः कल्याणामिः शिवाभिर्धन्या

धन्य हैं जो अपने पतिके उदरवलिका भास पकाकरके तलकरके और  
अग्निमें सेक भुनकर मदिराके साथ एक दूसरी सखीको देती हुई—  
आस्वादन करती हुई अपना दोहद पूरा करती हैं । मुझे भी ऐसा  
ही दोहद उत्पन्न हुआ है—लेकिन हे स्वामिन् ! वह दोहद पूरा नहीं  
होनेसे आज मेरी यह दशा हुई है और मैं आर्तध्यान करती हूँ ॥ २८ ॥

ઉદર-વલિના ભાસને પકાવી તાગીને અગ્નિમા સેકી બૂજી મદિરાની માથે એક ખીજી  
સખીને આપતી આસ્વાદ લેતી પોતાનો દોહદ પૂરો કરે છે અને પણ એવોજ દોહદ  
ઉત્પન્ન થયો છે પણ હે સ્વામિન્ ! તે પુરો નહિ થવાથી આજ મારી આવી દશા  
થઈ છે અને આર્તધ્યાન કરે છું (૨૮)

भिर्मात्रलयाभिर्मितमधुरसश्रीकाभिर्वल्गुभिः समाश्वासयति, समाश्वास्य चेल्लनाया देव्या अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव सिंहासन तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखो निषीदति, निषद्य तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्त बहुभिरायैरुपायैश्च औत्पत्तिकीभिश्च वैनयिकीभिश्च कार्मिकी (कर्मजा) मिश्च पारिणामिकीभिश्च परिणामयन् तस्य दोहदस्य आय वा उपाय वा स्थिति वा अविन्दन् अपहृतमनः सकल्यो यावद् ध्यायति ॥ २९ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः=तदनन्तर स श्रेणिको राजा चेल्लनामवादीत्-हे देवानुप्रिये ! त्व आर्तध्यान मा कुरु, अह तथा यतिष्ये यथा तव दोहदस्य सम्पत्ति = सम्पन्नता भविष्यतीति कृत्वा=इति कथयित्वा चेल्लना देवी ताभि = वक्ष्यमाणाभिः शृणुभि = अभिलषणीयाभिः, कान्ताभि = वाञ्छितार्थपूरणीभि, प्रियाभिः=प्रेमोत्पादिनाभिः, मनोज्ञाभिः=शोभनाभि = मनोऽभाभिः=पुनःपुन मनोऽनुष्मरणीयाभिः, उदाराभिः=अत्यङ्गनाभिः, वक्ष्याणीभिः=वाञ्छितार्थप्राप्तिकारिकाभि, शिवाभि = उपद्रवरहिताभि, धन्याभिः=गर्भवाञ्छासम्पादिकाभिः, माङ्गल्याभिः=वर्णप्रियाभिः, मितमधुरसश्रीकाभि = मितमत्तकोकिलशब्दवन्मनोहरस्वरशोभाभिः, वल्गुभि = वाणीभि समाश्वासयति=

‘तए ण से’ इत्यादि ।

चेलना रानीकी ऐसी बात सुनकर राजा बोले-हे देवानुप्रिये ! तुम आर्तध्यानको छोड़ो मैं ऐसा ही प्रयत्न करूँगा जिससे तुम्हारा दोहद पूरा हो । ऐसा कहकर राजाने मनको आहाद करनेवाली, वाञ्छित अर्थको देनेवाली प्रेममयी मनोज्ञ, वारम्बार मनको अच्छी लगनेवाली, अद्भुत, मनोवाञ्छित फलको देनेवाली, सुखदायी, गर्भ वाञ्छाको पूर्ण करनेवाली, कानोंको प्रिय लगनेवाली, मत्त कोकिलाके स्वरके समान मनोहर वाणी द्वारा रानीको सन्तुष्ट किया । रानीको

‘तएण से’ इत्यादि

चेलना राणीनी अवी वान सालणी राजा बोल्या-‘हे देवानुप्रिये । तु आर्त-  
ध्या । छोडी हे हुं जेवेल प्रयत्न करीश हे जेथी तारे होहद पूरा थाय ओग कही  
राजजे मनने आनंद कवनारी, वाछित अर्थ (छंछा प्रभावे) देवावाणी, प्रेममयी,  
मनोज्ञ, बार बार मनने सारी लागनारी, अद्भुत मनोवाञ्छित कृणने देवावाणी,  
सुखदायी गर्भवाछने पूर्ण करवावाणी, कानने प्रिय लागवावाणी, मत्त गनेल केथ  
वना स्वर जेवी मनोहर वाणी द्वारा राणीने सन्तुष्ट करी राणीने आ प्रकारे

सन्तोषयति । समाश्वास्य चेल्लनादेवीसमीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्र वाद्या उपस्थानशाला आस्थानमण्डपः, यत्र सिंहासन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासनवरे=श्रेष्ठसिंहासने पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वाभिमुखः सन् निषीदति=उपविशति तस्य दोहदस्य सम्पत्तिनिमित्त=सम्पादनार्थं बहुभिः=अनेकैः आयैः=माधनैः, उपायैः=प्रयोगैः, तथा-औत्पत्तिकीभिः=शास्त्राभ्यासनिरपेक्षा-दृष्टाऽश्रुताऽननुभूतविषयग्राहिकाभिः, च पुन वैनयिकीभिः=गुरुरत्नाधिकादिशुश्रूषासजाताभिः कर्मिकीभिः=कर्मजाभिः-अनिश क्रियाकरणेन जायमानाभिः, पारिणामिकीभिः=वयआदिपरिणाम जन्याभिः, परिणामः=दीर्घकालपूर्वापरपर्या-कोचजन्य आत्मनो धर्मविशेष, स प्रयोजनमस्याः सा पारिणामिकी, अव-यवगतबहुत्वविवक्षाया ताभिः, चतुर्विधाभिः बुद्धिभिः परिणामयन् २=दोहद-सम्पादनरूपविचार कुर्वन् २ तस्य दोहदस्य आय=साधनम् वा उपाय=प्रयोगं वा स्थिति=व्यवस्था वा अविन्दन्=अलभमानो भूयः अपहतमनःसकल्पो यावद् 'यायति=आर्त'यान करोति ॥ २९ ॥

इस प्रकार आश्वासन देकर राजा सभामण्डपमें आये, और पूर्व दिशाकी ओर मुँहकर अपने सिंहासनपर बैठे तथा उस दोहदको पूरा करनेकी चिन्ता करने लगे, परन्तु—

(१) शास्त्रोंके अभ्यास बिना ही अनदेखे अनसुने और अनुभवमें भी न आये हुए विषयोंको यथार्थ रूपसे ग्रहण करनेवाली औत्पत्तिकी बुद्धि, (२) विनयसे उत्पन्न होनेवाली वैनयिकी बुद्धि, (३) हमेशा कार्य करनेसे उत्पन्न होनेवाली कर्मिकी बुद्धि, (४) वयकेपरिणामसे उत्पन्न होनेवाली पारिणामिकी बुद्धि,

इन चारों प्रकारकी बुद्धि द्वारा तथा अनेक साधन (सामग्री) एवम् अनेक प्रयोग द्वारा भी राजा उस दोहदको पूरा करनेमें समर्थ नहीं हो सके अतएव आर्तध्यान करने लगे ॥ २९ ॥

आश्वासन करने राजा सभामण्डपमा आया तथा पूर्वदिशा तरफ में राभी पोताना सिंहासन पर बैठे तथा ते दोहद (धृष्ट्या) पुरे करवाणी चिन्ता करवा लाग्या परन्तु—

(१) शास्त्रोंमा अभ्यास बिना न ज्ञेयेला न साधनेला तथा अनुभवमा पण्ड न आवेला विषयेने यथार्थज्ञे ज्ञानुवावाणी 'औत्पत्तिकी' बुद्धि, (२) विनयधी उत्पन्न यनारी 'वैनयिकी' बुद्धि, (३) हमेशा कार्य करवाणी उत्पन्न यनारी 'कर्मिकी' बुद्धि, (४) उभरना परिणामे उत्पन्न यनारी 'पारिणामिकी' बुद्धि आ आरे प्रकारनी बुद्धि द्वारा तथा अनेक साधन सामग्री जेटले अनेक प्रयोग द्वारा पण्ड राजा ते दोहदने पुरे करवामा समर्थ न यथा तेथी आर्तध्यान करवा लाग्या (२६)

मूढम्—इमं च अभयं कुमारे ण्हाए जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमिन्ता जेणेव चाहिरिया उव-ट्टाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं राय ओहय० जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता एव वयासी-अन्नया णं ताओ। तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव हियया भवह किन्न ताओ। अज्ज तुब्भे ओहय० जाव झिया-यह? तं जइणं अह ताओ। एयस्स अट्ठस्स अरिहे सवणयाए तो ण तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूयमवितह असदिद्धं परिकहेइ, जाण अहं तस्स अट्ठस्स अतगमणं करोमि। तएण से सेणिए राया अभयं कुमार एव वयासी-णत्थि णं पुत्ता। से केइ अट्ठे जस्स णं तुम अणरिहे सवणाए एव खल्लु पुत्ता। तव चुल्ल-माउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुमि-णस्स तिण्ह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य जाव दोहलं विणेति।

तएणं सा चेल्लणा देवी तसि दोहलंसि अविणिज्जमा-णसि सुक्का जाव झियायइ। तएणं अह पुत्ता। तस्स दोहलस्स सपत्तिनिमित्त बहुहिं आएहि य जाव ठिइ वा अविंदमाणे ओहय० जाव झियामि। तएणं से अभयं कुमारे सेणिय राय एव वयासी-माणं ताओ। तुब्भे ओहय० जाव झियायह, अह ण तह जइहामि, जहाणं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ—त्ति कट्ठ सेणिय राय ताहि इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता जेणेव सए गिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अन्भितरण रहस्सिए ठाणिज्जे पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह णं

तुम्हे देवाणुप्पिया । सूणाओ अल्ल मंसं रुहिरं वत्थिपुडगं च  
गिण्हह । तएणं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभयेणं कुमारेणं एवमुत्ता  
समाणा हट्ठं करतलं जाव पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंति-  
याओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सूणा तेणेव उवा-  
गच्छति, उवागच्छित्ता, अल्ल मंसं रुहिरं वत्थिपुडगं च गिण्हति  
गिण्हित्ता, जेणेव अभय कुमारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता  
करयलं तं अल्ल मस रुहिरं वत्थिपुडगं च उवणेति ॥ ३० ॥

छाया—इतथ खल्ल अभयः कुमारः स्नातः यावत्-शरीरः स्वकात्  
शरीरं प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव वाक्ता उपस्थानशाला यत्रैव श्रेणिको  
राजा तत्रैवोपागच्छति, श्रेणिक राजानम् अवहत्तं यावद् ध्यायन्त पश्यति,  
द्रष्टा एवमवादीत्-अन्यदा खल्ल तात ! यूय मा द्रष्टा दृष्टं यावद्ब्रह्मदयाः  
भवथ, किं खल्ल तात ! अथ यूयम् अवहत्तं यावद् ध्यायथ, तद् यदि खल्वह  
वात ! एतस्यार्थस्याऽहं भवणताये तदा खल्ल यूय मम एतमर्थं यथाभूत-  
मवितथमसदिग्धं परिकल्पयत, यस्मात् खल्वह तस्यार्थस्यान्तगमनं करोमि ।

‘ इमं च ण ’ इत्यादि ।

उपर अभयकुमार स्नानकर यावत् सभी प्रकारके आभूषणोंसे  
सुसज्जित हो अपने महलसे निकलकर उसी सभा-मण्डपमें आए  
जहाँ श्रेणिक राजा बैठे थे । श्रेणिक राजाको आर्तध्यान करते हुए  
देखकर बोले—

हे तात ! और दिन जब मैं आता था तो आप मुझे देख  
कर प्रसन्न होते थे, किन्तु आज क्या कारण है जो मेरी ओर देखते  
भी नहीं और आर्तध्यानमें बैठे हैं । अगर इस बातको सुननेके

‘ इमं च ण ’ इत्यादि

आ आणु अभयकुमार स्नान करी तमाभ प्रकारना आभूषणोधी सज्ज थल  
महेलमाधी नीकणी तेज सभाभ उपमा आण्था के जथा श्रेणिक राजा नेहा हुना श्रेणिक  
राजाने आर्तध्यान करता नेहं कल्ल-हे तात ! हु जयारे णीजा दिवसे आवतो त्यारे  
आप भने नेहं भुशी यता हुता पणु आण शु करणु छे के भारी आभुय नेता  
नथी तथा आर्तध्यानमा नेहा छे। ने हु आ वातने साखणवा योअ हु मेम सभ



मूढम्—इमं च अभयं कुमारे ण्हाए जाव सरीरे, सयाओ  
 गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमिच्चा जेणेव बाहिरिया उव-  
 ट्ठणसाला जेणेव सेणिण् राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 सेणियं राय ओहय० जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता एव  
 वयासी-अन्नया णं ताओ। तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव  
 हियया भवह किन्न ताओ। अज्ज तुब्भे ओहय० जाव झिया-  
 यह? तं जइणं अह ताओ। एयस्स अट्ठस्स अरिहे सवणयाए  
 तो ण तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूयमवितहं असदिद्धं परिकहेइ,  
 जाण अहं तस्स अट्ठस्स अतगमणं करोमि। तएण से सेणिण्  
 राया अभयं कुमार एव वयासी-णत्थि ण पुत्ता। से केइ अट्ठे  
 जस्स णं तुम अणरिहे सवणाए एव खल्लु पुत्ता। तव चुल्ल-  
 माउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुमि-  
 णस्स तिण्ह मासाण बहुपडिपुत्ताण जाव उयरवल्लिमंसेहिं  
 सोल्लेहि य जाव दोहलं विणेति।

तएणं सा चेल्लणा देवी तसि दोहलंसि अविणिज्जमा-  
 णसि सुक्का जाव झियायइ। तएणं अह पुत्ता। तस्स दोहलस्स  
 सपत्तिनिमित्तं वडुहिं आएहि य जाव ठिइ वा अविंदमाणे  
 ओहय० जाव झियामि। तएणं से अभयं कुमारे सेणिय राय  
 एव वयासी-माणं ताओ। तुब्भे ओहय० जाव झियायह, अह  
 ण तह जइहामि, जहाणं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए  
 तस्स दोहलस्स सपत्ती भविस्सइ—त्ति कट्ठ सेणिय राय ताहि  
 इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता जेणेव सए  
 गिण् तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अविभतरए रहस्सिए  
 ठाणिज्जे पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह णं

मम सुल्लमातुश्चेत्लनाया देव्यास्तस्य दोहदस्य सपत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा श्रेणिक राजानं तामिरिष्टाभिर्यावद् वल्गुभिः समाश्रासयति, समाश्रास्य यत्रैव स्त्रक् गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आभ्यन्तरान् राहस्यिकान् स्थानीयान् पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत न्वलु गृय देवानुम्रिया' । मृनात आर्द्रं मास रुधिर वस्तिपुटकं च गृहीत ।

ततः खलु ते स्थानीयाः पुरुषा अभयेन कुमारेण एवमुक्ताः सन्तः इष्टाः करतल० यावद् प्रतिश्रुत्य अभयस्य कुमारस्यान्तिकात् प्रतिनिष्कामन्ति, प्रतिनिष्कम्य यत्रैव शूना तत्रैवोपागच्छन्ति, आर्द्रं मास रुधिर वस्तिपुटकं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव अभयः कुमारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० तमार्द्रं मास रुधिर वस्तिपुटकं च उपनयन्ति ॥ ३० ॥

टीका—‘इमं च ण’ इत्यादि—यथाभूतमवितथमसदिग्धमित्येतानि पदानि पूर्वमेव व्याख्यातानि । राहस्यिकान्-गुप्तविचारकान् स्थानीयान्=गौरवशालिनः स्वभृत्यान्, मृनातः=अमारिघोषितातिरिक्तवधस्थानात् आर्द्रं मास रुधिर वस्तिपुटकं शोणितयुक्तमुदरान्तर्वर्त्तिभाग (‘रुहेजा’ इति भाषायाम्) गृहीत=आनयतेत्यर्थः । शेष स्पष्टम् ॥ ३० ॥

आर्तध्यानको छोडें मैं शीघ्र ऐसा उपाय करूँगा जिससे मेरी माताका दोहद (दोहला) पूर्ण होजाय । इस तरह विनययुक्त मधुर वचनोंसे अपने पिताका मन सन्तुष्ट करके अभयकुमार अपने महल आये । महल आकर उनने अपने गुप्त पुरुषोंको बुलाये और कहा कि—हे देवानुम्रियो ! तुम लोग अमारि-घोषणाकी सीमाके बाहरके वस्थानसे, वस्तिपुटके साथ गीला मांस लाओ । इसके बाद उन राजपुरुषोंने उनकी आज्ञाका यथावत् पालन किया ॥ ३० ॥

अथ वयं साधनी अक्षयकुमार बोद्ध्या—हे नात । आप आर्तध्यान छोडें, हुं नक्षत्री अथो उपाय करीश डे जेथी भारी मातानो दोहद पूर्य अर्थ नथे

आ प्रभाषे विनय वाणी मधुर वचनोन्नी पोताना पितानुं मन मत्तुष्टयभाडी अक्षयकुमार पोताने भलेल गया त्यां आवीने तेखे अगत शुभ पुत्रोने ओलावीने उहु डे—हे देवानुम्रियो । तमे लोडे अमारि घोषणा करेदी नीमा (राज्यनी अक्षुर्द सीमानी अदर डिसा न-करवी अवी घोषणा—जोहरानवाणी नथ्या) थी जहार कसाधभानामाथी अस्तीपुट साथे धीहु (ताणु) मास लध आवे

त्यार पडी ते राजपुत्रोने तेमनी आज्ञानुं कर्मा प्रभाषे पालन उर्यु (३०)

તતઃ સ્વલુ સ શ્રેણિકો રાજા અમયકુમારમેવમવાદીત-નાસ્તિ મ્હ  
પુત્ર ! સ કોડ્પ્યર્થઃ યસ્ય સ્વલુ ત્વમનર્હઃ શ્રવણતાયૈ । એવ સ્વલુ પુત્ર ! ત્વ  
શુભલમાતૃચલ્લનાયા દેવ્યાસ્તસ્યોદારસ્ય યાવત્ મહાસ્વપ્નસ્ય ત્રિષુ માસેષુ  
વહુમતિપૂર્ણેષુ યાવત્ ઉદરવલિમાસૈઃ શૂલકૈશ્ચ યાવત્ દોહદ વિનયન્તિ । તતઃ  
સ્વલુ સા ચેલ્લના દેવી તસ્મિન્ દોહદે અવિનીયમાને શુષ્કા યાવદ્ ધ્યાયતિ ।  
તતઃ સ્વલુ પુત્ર ! તસ્ય દોહદસ્ય સમ્પત્તિનિમિત્ત વહુભિરાયૈરુપાયૈશ્ચ યાવત્  
સ્થિતિં વા અવિન્દન્ અપહતઃ યાવદ્ ધ્યાયામિ ।

તતઃ સ્વલુ સઃ અમય કુમારઃ શ્રેણિક રાજાનમેવમવાદીત-મા સ્વલુ  
તાત ! યુયમ્ અવહતઃ યાવદ્ ધ્યાયત, મહ સ્વલુ તથા યતિષ્યે યથા સ્વલુ

યોગ્ય મુક્તે સમજાતે હૈં તો જૈસી હો બૈસી યથાર્થરૂપસે નિ.સકોષ  
હોકર મુક્તે કરિયે, જિસસે મૈં ઉસકે નિરાકરણકા પ્રયત્ન કરૂં ।

અમયકુમારકી એસી વિનયયુક્ત વાણી સુનકર રાજા બોલે-હે  
પુત્ર ! એસી કોઈ વાત નહીં હૈં જો તુમ્હસે છિપાઈ જાય-તેરી છોટી  
માતા ચેલના રાનીકો મહાસ્વપ્નકે તીસરે મહિનેકે અન્તમેં દોહદ (દોહલા)  
ઉત્પન્ન હુઆ હૈં કિ-‘આપકે ઉદરવલિકે માસકો શૂલા ( પકા ) કર  
ઔર તલ-મૂનકર મદિરાકે સાથ આસ્વાદન કરૂં ।’

હસ દોહદ (દોહલા) કે પૂર્ણ ન હોનેકે કારણ વહ મહાદુ સ્તિત  
ઔર કુશકાય હોકર આર્તધ્યાન કર રહી હૈં । હે પુત્ર ! હસ દોહદ  
(દોહલા) કો પૂર્ણ કરનેકે લિએ અનેક ઉપાય સોચે પરન્તુ કોઈ ઉપાય  
પૂરા નહીં દિશાયી દેતાં એતદર્થ આર્તધ્યાન કરતા હુઆ બૈઠા હૂં । અપને  
પિતાકે મુક્તસે એસે વચન સુનકર, અમયકુમાર બોલે-હે તાત ! આપ

જતા હો તો જો હોય તે મથાર્થ રૂપે નિસકોષ થઈ મને કહે જોથી હું તેનું  
નિરાકરણ કરવા પ્રયત્ન કરૂં

અમયકુમારની એવી વિનયયુક્ત વાણી સાંભળી રાજા જોલ્યા-હે પુત્ર ! જોવી  
કોઈ વાત નથી કે જે તારથી છાની રખાય-તારી નાની માતા ચેલના રાણીને મહા  
સ્વપ્નના નીલા માસને આતે દોહદ (ધબહા) ઉત્પન્ન થયો છે કે-‘તમારા ઉદરવલિ-  
માસને પકાવી તળી શુભ (સેડી) મદિરાની સાથે આસ્વાદ કરૂં ’ આ દોહદ પુરો ન  
થવાને કારણે તે મહાદુ સ્તિત તથા કુશકાય થઈ આર્તધ્યાન કરી રહી છે, હે પુત્ર !  
તે દોહદને પૂર્ણ કરવા માટે અનેક ઉપાય વિચારી લેયા પણ કોઈ ઉપાય પૂરો થાય  
તેમ દેખાતો નથી. એ માટે આર્તધ્યાન કરતો બેઠો છું પોતાના પિતાના મુખેથી

मम धुल्लमातुश्चेल्लनाया देव्यास्तस्य दोहदस्य सपत्तिर्भविष्यतीति कृत्वा त्रेणिक राजान ताभिरिष्टाभिर्यावद् बल्लुभिः समाभ्वासयति, समाभ्वास्य यत्रैव स्त्रक गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आभ्यन्तरान् राहस्यिकान् स्थानीयान् पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय देवानुप्रिया' । मृनात आर्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक च गृहीत ।

ततः खलु ते म्यानीया' पुरुषा अभयेन कुमारेण एवमुक्ता मन्तः इष्टाः करतल० यावद् प्रतिश्रुत्य अभयस्य कुमारस्यान्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव शूना तत्रैवोपागच्छन्ति, आर्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक च गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव अभयः कुमारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल० तमार्द्र मास रुधिर वस्तिपुटक च उपनयन्ति ॥ ३० ॥

टीका—'इम च ण' इत्यादि—यथाभूतमवितथमसदिग्धमित्येतानि पदानि पूर्वमेव व्याख्यातानि । राहस्यिकान्-गुप्तविचारकान् स्थानीयान्=गौरवशालिन' स्वभृत्यान्, मृनातः=अमारिघोषितातिरिक्तबधस्थानात् आर्द्र मास रुधिर वस्ति पुटक शोणितपुक्तमुदरान्तर्वर्त्तिभाग ('रुछेजा' इति भाषायाम्) गृहीत=आनयतेत्यर्थः । शेष स्पष्टम् ॥ ३० ॥

आर्तध्यानको छोडें मैं शीघ्र एसा उपाय करूंगा जिससे मेरी माताका दोहद (दोहला) पूर्ण होजाय । इस तरह विनययुक्त मधुर वचनांसे अपने पिताका मन सतुष्ट करके अभयकुमार अपने महल आये । महल आकर उनने अपने गुप्त पुरुषोंको बुलाये और कहा कि-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग अमारि-घोषणाकी सीमाके बाहरके वनस्थानसे, वस्तिपुटके साथ गीला मांस लाओ । इसके बाद उन राजपुरुषोंने उनकी आज्ञाका यथावत् पालन किया ॥ ३० ॥

मेवा वचन सासणी अलयकुमार भोल्या-हे तात । आप आर्तध्यान छोडें, हु नलही मेवे उपाय करीश डे जेथी भारी माताने दोहद पूर्ण थर नथे

आ प्रभाषे विनय वाणा मधुर वचनोथी पोताना पितानु मन सतुष्ट पमाडी अलयकुमार पोताने महेल गया त्या आवीने तेणे अगत गुप्त पुत्रोने भोलावीने कहु डे-हे देवानुप्रियो । तमे बोडे अमारि घोषणा करेही सीमा ( राक्षसी अमुक सीमानी अदर हिमा न करवी मेवी घोषणा-जडेरानवाणी जग्या ) ची अहार असाधनानाभाथी अस्तीपुट साथे लीलु (ताणु) मास लथ आवे

त्यार पछी ते राजपुत्रोने तेभनी आज्ञानु कछा प्रभाषे पालन कथु (३०)

मूलम्—तएणं से अभए कुमारे त अहं मंसं रुहिरं कप्पणीकप्पिय करेइ, करित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सेणियं राय रहसिगय सयणिजंसि उत्ताणय निवज्जावेइ, निवज्जावित्ता, सेणियस्स उदरवलीसु त अहं मस रुहिरं विरवेइ, विरवित्ता, वत्थिपुडण्ण वेढेइ, वेढित्ता सवतीकरणेण करेइ, करित्ता चेळ्ळण देवि उप्पिपासाए अवलोयणवरगय ठवावेइ, ठवावित्ता चेळ्ळणाए देवीए अहे सपक्ख सपडिदिसि सेणिय राय सयणिजंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ, सेणियस्स रन्नो उदरवल्लिमंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेइ, करित्ता से य भायणंसि पक्खिवति ।

तएण से सेणिए राया अलियमुच्छिय करेइ करित्ता मुहुत्तंतरेण अन्नमन्नेणं सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ ।

तएणं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उदरवल्लिमसाइ गिण्हेइ, गिण्हित्ता जेणेव चेळ्ळणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेळ्ळणाए देवीए उवणेइ ।

तएण सा चेळ्ळणा देवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उदरवल्लिमसेहि सोल्लेहि जाव दोहल विणेइ ।

तएणं सा चेळ्ळणा देवी सपुण्णदोहला एव संमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला त गब्भं सुह सुहेणं परिवहइ ॥ ३१ ॥

छाया-तत् खलु सः अमयः कुमारस्तमात्रं मासं रुधिरं कल्पनीकल्पितं करोति, कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिक

राजान् रदसिगत शयनीये उत्तानक निषादयति, निषाद्य श्रेणिकस्योदरवलिषु तदार्र्द्रं मास रुधिर विरावयति, विराव्य, वस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा सवन्तीकरणेन करोति, कृत्वा चेष्टना देवीमुपरिग्रासादे अवलोकनवरगता स्थापयति, स्थापयित्वा चेष्टनाया देव्या अधः सपक्ष सप्रतिदिक् श्रेणिकं राजानं शयनीये उत्तानक निषादयति, श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमासानि कल्पनीकल्पितानि करोति, कृत्वा तच्च भाजने प्रक्षिपति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्छां करोति, कृत्वा मुहूर्तान्तरेण अन्योऽन्येन सार्द्धं सरूपन् तिष्ठति । ततः खलु स. अभयकुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमासानि गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चेष्टना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेष्टनाया देव्या उपनयति । ततः खलु सा चेष्टना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमासैः शूलैर्यावद् दोहद विनयति ।

ततः खलु सा चेष्टना देवी सम्पूर्णदोहदा एव समानितदोहदा विच्छिन्नदोहदा त गर्भं सुख-सुखेन परिवहति ॥ ३१ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि—ततः=तदनन्तरं सः=अभयः कुमारः तद्=उपनीतम्—आर्द्रम् मास रुधिरं कल्पनीकल्पित—कल्पनी=कर्त्तविका ‘कतरणी’ इति मीपायाम्, तथा कल्पित=कर्त्तित करोति, कल्पशब्दोऽत्र छेदनार्थकः, उक्तञ्च—‘सामर्थ्ये वर्णनाया च, छेदने करणे तथा ।

औपम्ये चाधिवासे च, कल्प-शब्द विदुर्बुधा’ ॥ १ ॥’

‘तएण से’ इत्यादि—उसके बाद अभयकुमारने एकान्त स्थानमें राजाको सीधा सुलाकर उनके पेटपर उस मास-लोथड़ेको रक्खा, फिर उसे वस्तिचर्मसे बाधा, वह ऐसा प्रतीत होता था जैसे उससे रक्त झरता हो । तत्पश्चात् रानीको ऊपर-महलमें बुलवाई और उस दृश्यको देख सके ऐसे योग्य सुविधाजनक स्थानपर बैठाई बाद राजाको जिसे रानी ठीक तरहसे देख सके ऐसे तथा कुछ अन्धकारवाले स्थानपर सुलाया,

‘तएण से’ इत्यादि पछी अभयकुमारने एकान्त स्थानमा राजाने मीधा (सीता) सुपायी तेना पेट उपर ते मासना बाध ने बाण्यो पछी तेने अन्तीथर्मथी बाध्यो ते ओषु लागतु छुटु के बाण्ये तेमाथी बाही अरतु होथ त्थार पछी राणीने उत्तर-महलमा बासायी तथा ते आटेभाव ओष्ठ शङ्के ओवा योग्य सुविधाजनक स्थाने ओसाडी पछी गगनने ओम राणी गराणर ओष्ठ शङ्के तेवा अने बाडा अधकारवाणा स्थाने सुपायथा पछी

कृत्वा यत्रैव श्रेणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रेणिक राजान  
 रहसिगतम्=एकान्तेस्थित शयनीये=शय्यायाम् उत्तानरु=उत्तान निपादयति=  
 शाययति, निपात्य=शाययित्वा श्रेणिकस्योदरवलिपु=उदरभागेषु तद्=उपनीतम्  
 भार्द्रं मास रुधिर च विराचयति=धातूनामनेकार्थत्वादुपसर्गबलाद्वा स्थापयती  
 त्यर्थः, विराच्य=स्थापयित्वा वस्तिपुटकेन वेष्टयति, वेष्टयित्वा स्रवन्तीकरणेन  
 करोति=स्पन्दमानीकरोति, कृत्वा उपरि मासादे चेल्लना देवीम् अवलोकन  
 व्रगताम्=सम्यङ्निरीक्षणपरा स्थापयति, यथा सा सम्यग् द्रष्टुं शक्नुयात्तथा  
 प्रासादोपर्युपवेशयति, स्थापयित्वा, चेल्लनाया देव्या अवः=नीचैः सपक्ष=समा  
 नवामुदक्षिणपार्श्वे सप्रतिदिक्=समानप्रतिदिग्भाग सर्वथा चेल्लनासमुत्थ यथा  
 स्यात्तथा श्रेणिक राजान शयनीये उत्तानरु निपादयति=क्रिश्चिदन्धकारावृतमदेक्षे  
 शाययति । श्रेणिकस्य राज्ञ उदरवलिमासानि, कल्पनीकल्पितानि=शङ्ककृतिता  
 नीव करोति, कृत्वा तच्च=मास रुधिर च भाजने प्रक्षिपति=निदधाति ।

ततः खलु स श्रेणिको राजा अलीकमूर्च्छां=रुपटमूर्च्छां करोति, कृत्वा  
 मुहूर्तान्तरेण अन्योऽन्येन=परस्परं सार्द्धं सलपन्=वार्तालापं कुर्वन् तिष्ठति ।

ततः खलु स अभयकुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः उदरवलिमासानि गृह्णाति,  
 गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च चेल्लनाया देव्याः  
 उपनयति=समीपे स्थापयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी श्रेणिकस्य राज्ञस्तैरुदरवलिमासैः शूलैः=  
 पक्वैः, यावद् दोहदं विनयति=पूरयति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी सम्पूर्णदोहदा=सम्पूर्णमनोरथा एव सम्मा  
 नितदोहदा=आहतदोहदा, विच्छिन्नदोहदा=इष्टवस्तुप्राप्त्याऽन्यवस्त्वभिलाषरहिता  
 त गर्भं सुखं सुखेन परिवहति=धारयति ॥ ३१ ॥

फिर राजाके पेटपर बँधे हुए उस मासको कतरनी (कैंची) से काट-  
 काटकर बर्तनमें रख दिया, कुछ देर तक राजा झूठी मूर्च्छामें पड़े  
 रहे, और बाद आपसमें बात-चीत करने लगे ।

इस प्रकार अभयकुमारने रानीका दोहद पूरा किया । रानी  
 अपने दोहदके पूर्ण होनेपर सुखपूर्वक गर्भको धारण करने लगी ॥३१॥

राजाना पेट ઉપર બાંધેલુ તે માસ કાતરથી કાપી-કાપીને વાસણમાં રાખી દીધુ  
 થોડા વખત સુધી રાજા ખોટી મૂર્છામાં પડ્યા રહ્યા અને પછી આપસમાં વાત કરવા  
 લાગ્યા આવી રીતે અભયકુમારે રાણીનો દોહદ (ઈન્છા) પુરો કર્યો રાણી પોતાનો  
 દોહદ પુરો થવાથી ગર્ભને ધારણ કરતી સુખ પૂર્વક રહેવા લાગી (૩૧)

मूलम्—तए ण तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे जाव समुपजित्था, जइ ताव इमेणं दारएणं गव्वगएण चैव पिउणो उदरवलिमसाणि खाइयाणि त सेय खल्ल मम एयं गव्वं साडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, एव सपेहेइ सपेहित्ता त गव्वं वडूहिं गव्वसाडणेहि य गव्वपाडणेहि य गव्वगालणेहि य गव्वविद्धंसणेहि य इच्छइ साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चैव णं से गव्वे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा ॥ ३२ ॥

छाया-तत\* खल्ल तस्याश्चेल्लनाया देव्या अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापर-  
रात्र कालसमये अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत-यदि तावत् अनेन दारकेण  
गर्भगतेन चैव पितुरुदरवलिमासानि खादितानि तत् श्रेयः खल्ल मम एत  
गर्भं शातयितु वा पातयितु वा गालयितु वा विध्वंसयितु वा । एव समक्षते,  
समेक्ष्य त गर्भं बहुभिर्गर्भशातनैश्च गर्भपातनैश्च गर्भगालनैश्च गर्भविध्वसनैश्च  
इच्छति शातयितु वा पातयितु वा गालयितु वा विध्वंसयितु वा, नो चैव  
खल्ल स गर्भं शीर्यते वा पतति वा गलति वा विध्वंसते वा ॥ ३२ ॥

टीका—‘तएण तीसे’ इत्यादि-तत\*—तदनन्तरम् शातयितुम्=औषधै-  
र्विशिर्णयितु, पातयितु=गर्भाशयाब्दहिष्कर्तुम्, गालयितु=रुधिरादिरूप कर्तुम्,

‘तएण तीसे’ इत्यादि—

एक समय रानी रातको सोचने लगी कि—इस बालकने गर्भमें  
आते ही अपने पिताके कलेजेका मांस खाया, इस लिये मुझे उचित  
है कि इस गर्भको मडानेके लिए, गिरानेके लिए और विध्वंस कर  
नेके लिए कुछ उपाय करू । ऐसा विचारकर रानीने औषधि आदिके

‘तएण तीसे’ इत्यादि

એક સમય રાણી રાતમાં વિચાર કરવા લાગી કે આ બાળકે ગર્ભમાં આવતાજ  
પોતાના આપના કલેજનું માંસ ખાધું આથી મારે માટે યોગ્ય છે કે આ ગર્ભને  
સડાવવા માટે—પાડી નાખવા માટે—ગાળવા માટે અને નાશ કરવા માટે કાંઈ ઉપાય



કૃત્વા યત્રૈવ શ્રેણિકો રાજા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય શ્રેણિક રાજાન રુદ્રસિંગતમ્=અકાન્તેસ્થિત શયનીયે=શય્યાયામ્ ઉત્તાનક=ઉત્તાન નિપાદયતિ=શાયયતિ, નિપાત્ર=શાયયિત્વા શ્રેણિકસ્યોદરવલિપુ=ઉદરભાગેષુ તદ્=ઉપનીતમ્ આર્દ્ર માસ રુધિર ચ વિરાવયતિ=ધાતુનામનેકાર્યત્વાદુપસર્ગવલાદ્વા સ્થાપયતી ત્થર્થ., વિરાવ્ય=સ્થાપયિત્વા વસ્તિપુટકેન વેષ્ટયતિ, વેષ્ટયિત્વા સ્વવંતીકરણેન કરોતિ=સ્યન્દમાનીકરોતિ, કૃત્વા ઉપરિ પ્રાસાદે ચેલ્લના દેવીમ્ અવલોકન-વ્રગતામ્=સમ્યગ્નિરીક્ષણપરા સ્થાપયતિ, યથા સા સમ્યગ્ દ્રષ્ટુ શક્તુયાત્તથા પ્રાસાદોપર્યુપવેશયતિ, સ્થાપયિત્વા, ચેલ્લનાયા દેવ્યા અગ્ર=નીચે સપક્ષ=સમા નવામુદક્ષિણપાર્શ્વે સપ્રતિદિક્=સમાનપ્રતિદિગ્ભાગ સર્વથા ચેલ્લનાસમુદ્ધ યથા સ્થાત્તથા શ્રેણિક રાજાન શયનીયે ઉત્તાનક નિપાદયતિ=ચિદ્વિદન્ધકારાદ્વૃત્તમદેશે શાયયતિ । શ્રેણિકસ્ય રાજા ઉદરવલિમાસાનિ, કલ્પનીકલ્પિતાનિ=શક્ત્યર્કર્તિતા નીચ કરોતિ, કૃત્વા તત્ત્વ=માસ રુધિર ચ ભાજને પ્રક્ષિપતિ=નિદધાતિ ।

તત' સ્વલુ સ શ્રેણિકો રાજા અલીકમૂર્ચા=રુપટમૂર્ચા કરોતિ, કૃત્વા મુહૂર્તાન્તરેણ અન્યોઽન્યેન=પરસ્પરેણ સાર્દ સલપન્=વાર્તાલાપ કુર્વન્ તિષ્ઠતિ ।

તત. સ્વલુ સ અભયકુમાર. શ્રેણિકસ્ય રાજા. ઉદરવલિમાસાનિ મુદ્ધાતિ, મુદ્ધીત્વા યત્રૈવ ચેલ્લના દેવી તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ચ ચેલ્લનાયા દેવ્યા ઉપનયતિ=સમીપે સ્થાપયતિ ।

તત સ્વલુ સા ચેલ્લના દેવી શ્રેણિકસ્ય રાજાસ્તૈરુદરવલિમાસેઃ શૂલૈઃ=પન્ચૈઃ, યાવદ્ દોહદ વિનયતિ=પૂરયતિ ।

તતઃ સ્વલુ સા ચેલ્લના દેવી સમ્પૂર્ણદોહદા=સમ્પૂર્ણમનોરથા એવ સમ્મા નિતદોહદા=આહતદોહદા, વિચ્છિન્નદોહદા=ફટ્વસ્તુપ્રાપ્ત્યાઽન્યવસ્ત્વભિલાષરહિતા ત ગર્ભે સુખ સુલેન પરિવહતિ=ધારયતિ ॥ ૩૧ ॥

ફિર રાજાકે પેટપર વેંચે હુણે ઉસ માસકો કતરની (કેંચી) સે કાટ-કાટકર ઘર્તનમેં રલ્લ દિયા, કુઝ દેર તક રાજા ક્ષ્ટી મૂર્છામેં પડે રહે, ઓર ગાદ આપસમે બાત-ચીત કરને લગે ।

હસ પ્રકાર અભયકુમારને રાનીના દોહદ પૂરા કિયા । રાની અપને દોહદકે પૂર્ણ હોનેપર સુખપૂર્વક ગર્ભકો ધારણ કરને લગી ॥૩૧॥

ગળના પેટ ઉપર બાધેલુ તે માસ કાતરથી કાપી-કાપીને વાસણમા રાખી દીધુ થોડા વખત મુખી રાજા ખોટી મૂર્છામા પડયા રહ્યા અને પછી આપસમા વાત કરવા લાગ્યા આવી રીતે અભયકુમારે રાણીને દોહદ (દૂધ) પુરો કર્યો રાણી પોતાનો દોહદ પુરો થવાથી ગર્ભને ધારણ કરતી મુખ પૂર્વક રહેવા લાગી (૩૧)

इति आर्तवशार्ता सा चासौ दुःखेनार्ता=सा तथा-आर्तयानविवशीभूता दुःखिता सती त गर्भं परिवदति ।

ततः खलु सा चेष्टना देवी नवसु मासेषु बहुप्रतिपूणेषु यावत् सुकुमार स्वरूप दारक पुत्र प्रजाता=प्रजनितवती ॥ ३३ ॥

मूलम्-तएणं तीसे चेष्टणाए देवीए इमे एयारूवे जाव समुप्पजित्था-जइ ताव इमेण दारएणं गव्वमएण चेव पिउणो उदरवल्लिमसाइं खाइयाइ, तं न नज्जइ ण एसदारए सवड्डमाणे अम्ह कुलस्स अंतकरे भविस्सइ, तं सेय खलु अम्ह एयं दारगं उक्कुरुडियाए उज्झावित्ताए एव सपेहेइ, सपेहित्ता दास-चेडिं सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छ ण तुम देवाणु-प्पिए । एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ।

तए णं सा दासचेडी चेष्टणाए देवीए एव बुत्ता समाणी करयल० जाव कट्टु चेष्टणाए देवीए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता त दारगं करतलपुडेण गिण्हइ गिण्हित्ता, जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झाइ । तए णं तेणं दारएणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झितेण समाणेण सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था ।

तएणं से सेणिए राया इमीसे कहाए लच्छट्टे समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, त दारग एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसि-मिसेमाणे तं दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ गिण्हित्ता, जेणेव

पालन करने लगी, और फिर नौ मास बीतनेपर सुकुमार एव सुन्दर पुत्रको जन्म दिया ॥३३॥

यद्य अने आर्तध्यानवश दुःखी यद्यने गर्भं नु पालन करवा लागी तथा नव मास बीत्या पछी सुकुमार अने सुन्दर पुत्रने जन्म आये। (३३)

विध्वसयितु=सर्वथा नाशयितुम्, एवम्=उक्तप्रकारेण समेक्षते=विचारयति, अन्यत् सर्वं सुबोधम् ॥ ३२ ॥

मूलम्—तए ण सा चेल्लणा देवी तं गम्भ जाहे नो संचा-  
एइ षट्ठहिं गम्भसाडणेहि य जाव गम्भविद्धंसणेहि य साडि  
त्तए वा जाव विद्धसित्तए वा, ताहे सता तता परितंता निव्विन्ना  
समाणा अकामिया अवसवसा अट्टवसट्टदुहट्टा तं गम्भ परिवहइ।

तए ण सा चेल्लणा देवी नवणह मासाण बट्ठुपडिपुण्णाण  
जाव सोमाल सुरूवं दारय पयाया ॥ ३३ ॥

छाया—तत. खलु सा चेल्लना देवी त गर्भं यदा नो शक्नोति  
बहुभिर्गर्भशातनैश्च यावद् गर्भविध्वसनैश्च शातयितु वा यावद् विध्वसयितु वा  
तदा शान्ता तान्ता परितान्ता निर्विण्णा सती अकामिका अपस्ववशा आर्त-  
वशार्तदुःस्वार्ता त गर्भं परिवहति ।

ततः खलु सा चेल्लना देवी नवसु मासेसु बहुमतिपूर्णेषु यावत्  
सुकुमार सुरूप दारक प्रजाता ॥ ३३ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—तत = गर्भविध्वसनप्रयासवैफल्यानन्तर सा  
चेल्लना देवी यदा त गर्भं नाशयितु नो शक्नोति तदा शान्ता=ग्लानि प्राप्ता,  
तान्ता=खेद प्राप्ता, परितान्ता=विशेषतः खिन्ना, निर्विण्णा=अतिसन्नयितखेदापन्ना  
अकामिका=स्वकार्यसम्पादनाऽसमर्थतया बाञ्छारहिता, अत एव अपस्ववशा=  
पराधीना आर्तवशार्तदुःस्वार्ता=आर्तवशम्=आर्तध्यानवश्यताम् ऋता=गता (प्राप्ता)

द्वारा वैसा ही उपाय किया, परन्तु वह गर्भ न सड़ सका, न गिर  
सका न गल सका और न उसका किसी प्रकार नाश हो सका ॥ ३२ ॥

‘तएण सा’ इत्यादि—यादमें रानी अपने प्रयासके विफल  
होनेके ग्लानिको प्राप्त हुई, खेदको प्राप्त हुई, अपने इच्छित कार्यके  
विफल होनेसे असमर्थ हुई और आर्तध्यान वश दुःखी होकर गर्भका

४३ जेवा विचार करी राखीजे औबधी आदिथा जेवाक उपाय कर्या परतु ते गर्भ  
न सड्यो, न पड्यो, न गल्यो क न केअ प्रकारे तेनो नाश, थअ शक्यो, (३२)

‘तएण सा’ इत्यादि. पछी राखी पोताना प्रयासमा निव्वल जयाथा अइसेअ  
क ना लागी जेअ सुकत थअ अन धारेअ ठार्य आम विइअ थयाथा फत असमर्थ

गृहीत्वा यत्रैव चेन्नना देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेन्नना देवामु-  
च्चावचाभिराक्रोशनाभिराक्रोशति, आक्रुश्य उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिर्निर्भर्त्सयति  
निर्भर्त्स्य, एवमुद्धरणामिरुद्धयति, उद्धर्ष्य एवमवादीत-किमर्थं खलु त्व  
मम पुत्रमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्जयसि ? इति कृत्वा चेन्नना देवामुच्चाव-  
चशपथशापिता करोति, कृत्वा एवमवादीत-त्व खलु देवानुप्रिये ! एन दारक-  
मनुपूर्वेण सरक्षन्ती सगोपयन्ती सवर्द्धय ।

ततः खलु सा चेन्नना देवी श्रेणिकेन राज्ञा एवमुक्ता सती लज्जिता  
घ्रीडिता विवृष्टा करतलपरिगृहीत० श्रेणिकस्य राज्ञो विनयेन एतमर्थं प्रतिशृणोति,  
प्रतिश्रुत्य त दारकमनुपूर्वेण सगोपयन्ती सवर्द्धयति ॥ ३४ ॥

टीका-‘तएण तीसे’ इत्यादि-ततः=तत्पश्चात् पुत्रजन्मानन्तर तस्याः  
चेन्ननाया देव्या अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणलक्षण यावत् पदेन “अज्ज्ञत्थिए,  
चित्थिए, पत्थिए, कप्पिए, मणोगए सकप्पे” एतेषा समग्रः । एतेषा व्या-  
ख्या प्रागुक्ता, समुदपद्यत=जात -यदि तावत् अनेन दारकेण=पुत्रेण गर्भ-  
गतेनैव पितुरुदरवलिमासानि खादितान, मया तत्र ज्ञायते खलु एष दारकः  
सवर्द्धमानः=वृद्धिं प्राप्तः सन् प्रोढावस्थायाम् अस्माक कुलस्य=वंशस्य अन्तकरः=  
नाशको भविष्यति तत्=तस्मात्कारणात् खलु=निश्चयन एकान्ते=निर्जने स्थले  
एन दारकम् उत्कुरुटिकाया=कचवरपुञ्जस्थाने ‘उकरडी’ इति भाषायाम्  
उज्जितु=त्यक्तुमस्माक श्रेयः=कल्याणकारकम् ।

एवम्=अनेन प्रकारेण समेषते=विचारयति, समेष्य दासचेटीं शब्द-  
यति=आह्वयति शब्दयित्वा एवम्=वक्ष्यमाणम् अवादीत-हे देवानुप्रिये ! त्व  
खलु गच्छ एन दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्ज-प्रक्षिप ।

‘तएण तीसे’ इत्यादि-बाद रानीके मनमे ऐसा विचार उत्पन्न  
हुआ कि इस बालकने गर्भमें आते ही पिताकी उदरवलिका मास  
खाया । यदि यह पडा होकर समर्थ बनेगा तो न जाने हमारे वंशका  
किस प्रकार नाश करेगा ? इस लिये उचित है कि इसे एकान्त स्थान  
जहाँ कोई न देख सके ऐसी उकरडीपर फिकवा दूँ ।

‘तएण तीसे’ इत्यादि पछी राखीना मनमा अयेवा विचार उत्पन्न थयोडे-  
आ भाण्डे गर्भमा आवता न भापनी उदरवलीनु भास पाधु ने भोटोथता समर्थ  
बनथ ता न नष्टोत्त अमारा वंशने कया प्रकारे नाश करथे भने उचित हे हे  
आने अकान्त स्थान, जया कोठे न शके अयेवा उकरडी उभर डेखायी देवे ॥ ३४ ॥

चेष्टणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता चेष्टणं देवि उच्चा  
वयाहिं आओसणाहि, आओसइ आओसिता उच्चावयाहिं नि-  
ब्भच्छणाहिं निभच्छेइ निब्भच्छिता एव उद्धसणाहिं उद्धंसेइ,  
उद्धंसिता, एव वयासी-किस्स ण तुम मम पुत्त एगंते उक्कुरु  
डियाए उज्झावेसि ? तिकट्टु चेष्टणं देवि उच्चावयसवहसाविय  
करेइ करिता, एव वयासी-तुम णं देवाणुप्पिए । एयं दारगं  
अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी सगोवेमाणी सवड्ढेहि ।

तएणं सा चेष्टणा देवी सेणिएण रत्ता एव वुत्ता समाणी  
लज्जिया विलिया विड्डा करयलपरिग्गहियं० सेणियस्स रत्तो  
विणएणं एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, त दारयं अणुपुब्बेण  
सारक्खमाणी सगोवेमाणी सवड्ढइ ॥ ३४ ॥

छाया-तत' खलु तस्याश्रेष्ठनाया देव्या अयमेतद्रूपो यावत् समुद-  
पद्यत-यदि तावद् अनेन दारकेण गर्भगतेन चैव पितुरुदरवलिमासानि स्वादि-  
तानि तन्न ज्ञायते खलु एष दारकः सर्वदर्शमान अस्माक कुलम्यान्तकरो भवि-  
ष्यति तच्छ्रेयः खलु अस्माकम् एन दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्जितम्, एव  
सम्प्रेक्षते, सम्प्रेक्ष्य दासचेटीं शब्दयति शब्दयित्वा प्रथमवादीत्-गच्छ खलु त्वं  
देवानुमिये ! एन दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्जति ।

तत खलु सा दासचेटी चैल्लनया देव्या एवमुक्ता -सती करतल०  
यावत् कृत्वा चैल्लनाया देव्या एनमर्थं त्रिनयन प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य त  
दारक करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैवाशोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपा-  
गत्य त दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्जति ।

तत खलु तेन दारकेण एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्जितेन सता  
साऽशोकवनिका उद्योतिता चाप्यभवत् ।

तत खलु स श्रेणिको राजा अस्या. कथाया लब्धार्थं सन् यत्रैवा  
शोकवनिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त दारकमेकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्जित  
पश्यति दृष्ट्वा आश्चर्यतः, यावत् मिसिमिसीकुर्वन् त दारक करतलपुटेन गृह्णाति,

लपा ज्वलन् सन् त दारक करतलपुटेन गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी  
तत्रैवोपागच्छति उपागत्य चेल्लना देवीम् उच्चावचाभिः=नानाप्रकाराभिः आ-  
क्रोशनाभिः=मानसिकक्रोषैः आक्रोशति=तिग्मकारपूर्वकं क्रुध्यति, आक्रुरय=पकुप्य  
उच्चावचाभिः=नानाविधाभिः भर्तृनाभिः=दूर्वचनावमानैः निर्भर्त्सयति=परुषवच-  
नैरपमानयति, निर्भर्त्स्य एवम्=अनेन प्रकारेण उद्वर्षणाभिः=तर्जन्यादिदर्शनपूर्व-  
कतिरस्कारैः, उद्वर्षयति=तिरस्करोति, उद्वर्ष्य एवम्=अनुपदवक्ष्यमाणम् अवा-  
दीत्-हे देवि ! त्व किमर्थं खलु मम पुत्रमेकान्ते उत्कुरुटिकाया दासचेष्टया  
समुज्जयसि ?, इति कृत्वा=उत्तरीत्या आक्राशनादिरु विधाय चेल्लना देवीम्  
उच्चावचशपथशापिता = नानाप्रकारकदेवगुरुधर्मादिशपथैः शापिता = प्रतिज्ञापिता  
करोति, कृत्वा, एवम्=अमुना प्रकारेण अवादीत्-हे देवानुमिये ! त्वम् एन  
दारक अनुपूर्वेण=क्रमेण सरक्षन्ती आपद्भयः, संगोपयन्ती=वस्त्राच्छादनगर्भगृह-  
प्रवेशनादिभिः क्षेम प्रापयन्ती सत्तुल्य स्तन्यपानादिना वृद्धिं प्रापय । ततः=

हुए और क्रोधसे जलते हुए वे उस बालकको हाथमें लेकर चेल्लना  
रानीके पास पहुँचे, और अनेक प्रकारके आक्रोश शब्दोंसे रानीका  
तिरस्कार किया, अनेक प्रकारके कठोर शब्दोंसे भर्त्सना की, तर्जनी  
आदि अशुली दिखाकर बहुत अपमान किया और बोले-हे रानी !  
किस लिये तूने मेरे इस बालकको दासी द्वारा उकरडीपर फिकवा  
दिया । हम तरह चेल्लना रानीको उलाहना देकर देव, गुरु, धर्म  
आदिकी शपथ देकर हम प्रकार बोले-हे देवानुमिये ! तुम इस  
बालककी आपत्तिसे रक्षा करो और वस्त्रसे ढाँककर प्रसूतिगृहमें ले  
जाओ जिस प्रकार यह सुखी रहे वैसा प्रयत्न करो और स्तनपान  
आदि कराकर हमका अच्छी तरह पालन-पोषण करो ।

तस्या ते जाणकने दाथमा उपाडी लधने चेल्लना राणीनी पासे पडोअ्या अने अनेक  
प्रकारना आक्रोश शब्दोथी राणीना तिरस्कार कथ्यो अनेक प्रकारना कठोर शब्दोथी  
नानाधर करी तर्जनी आगणी देखाडी गहुँ अपमान कथ्यो अन कहुँ-हे राणी ! शा  
भाटे ते माता आ जाणकने दासी द्वारा उकरडीये ड्रेकावी दीधो आवी रीते चेल्लना  
राणीने ठपडो आपी देव, गुरु, धर्म आदिना सोगड आपी-आ प्रभावे  
सेल्लना-हे देवानुमिये ! तमे आ जाणकनी आपत्तिथी रक्षा करे अने वस्त्रथी ढाकी  
प्रसूतिगृहमा लध जाओ. नेवी रीते आ सुणी रहे तेवा प्रयत्न करे तथा स्तन-  
पान आदि करावी तेने सारी रीते पालन-पोषण करे .

તતઃ=ચેલ્લનયા દેવ્યૈવમ્વક્તા સતી સા દાસચેટી 'તથાઽસ્તુ' ઇતિકૃત્વા કરતલપરિગૃહીતમઙ્ગલિપુટ મસ્તકે કૃત્વા=નિધાય ચેલ્લનાયા દેવ્યા એનમ્=અર્થમ્=નિદેશમ્ પ્રતિશૃણોતિ=સ્વીકરોતિ પ્રતિશ્રુત્ય ત દારક કરતલપુટેન ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા યત્રૈવ અશોકવનિકા=અશોકવાટિકા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ત દારકમેકાન્તે ઉત્કુરુટિકાયામુજ્જતિ=મસિપતિ ।

તતઃ સ્વલુ તેન દારકેણ એકાન્તે ઉત્કુરુટિકાયામુજ્જિતેન સતા સાઽશોકવનિકા ઉધોતિતા=પ્રકાશિતા ષાઽપ્યમ્ભવત્ ।

તતઃ=દારકમધેપણાનન્તર સ શ્રેણિકો રાજા અમ્યાઃ કથાયાઃ=દારક-પ્રધેપણવૃત્તાન્તસ્ય ળ્ઞ્ઞાર્થઃ=જ્ઞાતસમાવારઃ સન્ યત્રૈવાશોકવનિકા તત્રૈવોપાગ-ચ્છતિ, ઉપાગત્ય ત દારકમેકાન્તે ઉત્કુરુટિકાયામુજ્જિત પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા ચ-આશુરક્તઃ આશુ=શીઘ્ર રક્તઃ=કોપેનાઽરુણનયનઃ યાવત્ મિસિમિસન્=ક્રોધઞ્જા

ऐसा अपने मनमें विचारकर दासीको बुलवाया और उससे कहा-हे देवानुप्रिये ! इसको छिपाकर लेजा और एकान्त उकरडी-पर डाल आ ।

इस तरह चेलना रानीकी आज्ञा पाकर दासीने 'उस बाल-कको हाथोंसे उठाया और अशोकवाटिकामें जाकर एकान्त स्थानमें उकरडीपर डाल दिया । वह बालक बड़ा तेजस्वी था इस कारण उससे अशोकवाटिका प्रकाशयुक्त हो गयी ।

पश्चात् राजा श्रेणिकको किसी तरह विदित हुआ कि रानी चेल्लनाने जन्मते बालक (नवजात शिशु)को कहीं फिक्का दिया है, तब राजा दृढते हुए अचानक अशोकवाटिकामें आये और उकरडीपर पड़े हुए बालकको देखा । उसे देखकर राजा उसी समय बड़े क्रुद्ध

એવો પોતાના મનમાં વિચાર કરી દાસીને બોલાવી, અને તેને કહ્યું-હે દેવા-નુપ્રિયે ! આને મતાડીને લઈ જા અને એકાન્ત ઉકરડે નાખી દે

આવી રીતે ચેલના રાણીની આજ્ઞા થતા દાસીએ તે બાળકને હાથ વડે ઉપાડીને અશોકવાટિકામાં જઈને એકાન્ત સ્થાનમાં ઉકરડે ફેંકી દીધો તે બાળક બહુ તેજસ્વી હતો આ કારણે તેનાથી અશોક-વાટિકા પ્રકાશયુક્ત બની ગઈ

પછી રાજા શ્રેણિકના બાબુવામાં કેઈ રીતે આવ્યું કે રાણી ચેલનાએ જન્મતા (નવજાત શિશુ) બાળકને કયાક ફેંકાવી દીધો છે ત્યારે રાજા પોતે તપાસ કરવા માટે ગયા-કમથી તપાસ કરતા અશોકવાટિકામાં આવ્યા અને ઉકરડા ઉપર પડેલા બાળ-કને દીઠો તેને જોઈને તેજ વખતે રાજા બહુ ગુસ્સે થયા અને ક્રોધમાં બળતા થયા

लपा ज्वलन् सन् त दारक करतलपुटेन गृहाति गृहीत्वा यत्रैव चेल्लना देवी  
तत्रैवोपागच्छति उपागत्य चेल्लना देवीम् उच्चावचाभिः=नानाप्रकाराभिः आ-  
क्रोशनाभिः=मानसिकक्रोषैः आक्रोशति=तिरस्कारपूर्वकं नृध्यति, आक्रुश्य=प्रकुप्य  
उच्चावचाभिः=नानाविधाभिः भर्त्सनाभिः=दुर्वचनापमानैः निर्भर्त्सयति=परुषत्रव-  
नैरपमानयति, निर्भर्त्स्य एवम्=अनेन प्रकारेण उद्धर्षणाभिः=तर्जन्यादिदर्शनपूर्व-  
कतिरस्कारैः, उद्धर्षयति=तिरस्करोति, उद्धर्ष्य एवम्=अनुपदवक्ष्यमाणम् अवा-  
दीत्-हे देवि ! त्वं किमर्थं खलु मम पुत्रमेवान्ते उत्कुरुटिकाया दासचेटया  
समुज्जयसि ?, इति कृत्वा=उत्तरीत्या आक्राशनादिकं विधाय चेल्लना देवीम्  
उच्चावचशपथशापिता = नानाप्रकारकदेवगुरुधर्मादिशपथैः शापिता = प्रतिज्ञापिता  
करोति, कृत्वा, एवम्=अमुना प्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिये ! त्वम् एन  
दारक अनुपूर्वेण=क्रमेण सरक्षन्ती आपद्भ्यः, संगोपयन्ती=वस्त्राच्छादनगर्भगृह-  
प्रवेशनादिभिः क्षेम प्रापयन्ती सर्वदयं स्तन्यपानादिना वृद्धिं प्रापय । ततः=

हुए और क्रोधसे जलते हुए वे उस बालकको हाथमें लेकर चेल्लना  
रानीके पास पहुँचे, और अनेक प्रकारके आक्रोश शब्दोंसे रानीका  
तिरस्कार किया, अनेक प्रकारके कठोर शब्दोंसे भर्त्सना की, तर्जनी  
आदि अंगुली दिखाकर बहुत अपमान किया और बोले-हे रानी !  
किस लिये तूने मेरे इस बालकको दासी द्वारा उकरडीपर फिकवा  
दिया । इस तरह चेल्लना रानीको उलहना देकर देव, गुरु, धर्म  
आदिकी शपथ देकर इस प्रकार बोले-हे देवानुप्रिये ! तुम इस  
बालककी आपत्तिसे रक्षा करो और वस्त्रसे ढाँककर प्रसूतिगृहमें ले  
जाओ जिम प्रकार यह सुखी रहे वैसा प्रयत्न करो और स्तनपान  
आदि कराकर इसका अच्छी तरह पालन-पोषण करो ।

तेज्या ते जाणकने हाथमा छिपाडी लहने चेल्लना राणीनी पास पडोन्था अने अनेक  
प्रकारना आक्रोश शब्दोथी राणीने तिरस्कार कथे अनेक प्रकारना कठोर शब्दोथी  
नानाधर करी तर्जनी आगणी छेपाडी गहु अपमान करु अने कहु-छे राणी । शा  
भाटे ते मारा आ जाणकने दासी द्वारा उकरडीये डेडावी दीधो आपी रीते चेल्लना  
राणीने ठपडे आपी देव, गुरु, धर्म आदिना सोजद आपी-आ प्रभाणे  
छोट्या-छे देवानुप्रिये । तमे आ जाणकनी आपत्तिथी रक्षा करे अने पत्रथी ढाकी  
प्रसूतिगृहमा लह जाओ-लेवी रीते आ सुणी रहे तेवा प्रयत्न करे तथा स्तन-  
पान आदि करावी तेनु सारी रीते पालन-पोषण करे ।



श्रेणिकराजनिदेशानन्तर 'खलु' वाक्यालङ्कारार्थः, सा=श्रेणिकराजमहिषी 'चेल्लना' देवी श्रेणिकेन राज्ञा एवम्=पूर्वोक्तप्रकारं प्रतिपालननिदेशम् उक्ता= निवेदिता सती 'लज्जिता, स्वतः, त्रीडिता परतः, विह्वला=उभयतो लज्जिता, देशी शब्दः, एते समानार्थका, यद्वा-'व्यलीके' ति छाया व्यलीका=पति-प्रतिकूलाचरणेन सापराधा करतलपरिशुद्धीत शिर आवृत्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा श्रेणिकस्य राज्ञो=राजसम्बन्धिनम् एतम्=दारकपरिपालननिदेशरूपम्-अर्थम्=पुत्ररक्षणनिदेशं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, स्वीकृत्य त दारक=अनुपूर्वेण= यथावत् सरक्षन्ती सगोपयन्ती सर्वर्द्धयति=पालनपोषणादिना वृद्धिं नयति ॥ ३४ ॥

मूलम्-तए णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुलुडियाए उज्जि  
ज्जमाणस्स अग्ग गुलियाए कुक्कुडपिच्छएणं दूमिया यावि  
होत्था, अभिक्खण अभिक्खण पूय च सोणिय च अभिनि-  
स्सवइ । तए णं से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया  
महया सहेण आरसइ । तएण सेणिए राया तस्स दारगस्स  
आरसितसइ सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता न दारग करतलपुडेण गिणहइ गिणिहत्ता त अग्ग  
गुलिय आसयसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूय च सोणिय च

इस प्रकार राजाके कहनेपर रानी, अपने इस अकर्तव्यपर स्वतः लज्जित हुई, 'राजा मेरे इस अकर्तव्य कर्मसे अपने मनमें क्या समझे होंगे?' ऐसा विचार कर राजासे लज्जित हुई, इस प्रकार रानी चेलना दोनों ही ओरसे बड़ी ही लज्जित हुई । पतिके प्रतिकूल आचरणसे रानीको अतिशय खेद और पश्चात्ताप हुआ । बाद वह हाथ जोड़कर सविनय पुत्रपालनरूप राजाकी आज्ञाको स्वीकार कर बालकका भलीभाँति पालन करने लगी ॥ ३४ ॥

आ प्रकारे राजाना कडेवाशी राणी पोताना आ दुःकृत्यथी स्वतः लज्जित भवति, 'राजा मेरा आ दुःकृत्यथी पोताना मनमा शु सभन्या हरे' जेम विचारिने राजाशी लज्जित भवति, आ प्रभाण्णे जन्ने प्रकारे जहु लज्जित भवति पतिना विरुद्ध आचरणशी राणीने अतिशय खेद जने पश्चात्ताप यथा ग्राह दाथ जेरीने सविनय पुत्रपालनइय राजानी आज्ञानो स्वीकार करी पावन करवा बाजी. (३४)

आसएणं आमुसइ । तए णं से दारए निव्वुए निव्वेयणे  
तुसिणीए संचिट्ठइ । जाहे वि य णं से दारए वेयणाए अभि-  
भूए समाणे महया महया सदेणं आरसइ ताहे वि य णं सेणिए  
राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, तं  
दारगं करतलपुडेणं गिण्हइ, तं चेव जाव निव्वेयणे तुसि-  
णीए संचिट्ठइ ।

तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चदसूर-  
दसणिय करेति, जाव सपत्ते वारसाहे दिवसे अयमेयारूव गुण-  
निप्फन्न नामधिज्ज करेति, जम्हाण अम्ह इमस्स दारगस्स  
एगते उक्कुरुडियाए पज्झिज्जमाणस्स अगुलिया कुक्कुडपिच्छएण  
दूमिया, त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 'कूणिण' ।  
तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्ज करेति  
'कूणिय'त्ति ॥ ३५ ॥

ठाया—तत खलु तस्य दारकस्य एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्ज्यमान-  
स्याग्राङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूना चाऽप्यभूत्, अभीभ्रमभीक्ष्ण पूय च  
शोणित चाभिनिस्स्रवति । तत खलु स दारको वेदनाभिभूतः सन् महता  
महता शब्देन आरसति । तत खलु श्रेणिको राजा तस्य दारकस्याऽऽरसित-  
शब्द श्रुत्वा निश्चय्य यत्रैव स दारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, त दारक-  
करतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा तामग्राङ्गुलिकामास्ये प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य, पूय च  
शोणित चाभ्येन आमुशति । ततः खलु स दारको निवृत्तो निर्वेदनस्तूष्णीकः सतिष्ठते ।  
यदपि च खलु स दारको वेदनायाऽभिभूतः सन् महता—महता शब्देन आरसति  
तदाऽपि च खलु श्रेणिको राजा यत्रैव स दारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य  
त दारकः करतलपुटेन गृह्णाति, तदेव यावत् निर्वेदनस्तूष्णीकः सतिष्ठते ।

तत खलु तस्य दारकस्याम्नापितरौ तृतीये दिवसे चन्द्रधूर्यदर्शन-  
कारयत् यावत् समाप्ते द्वादशाहे दिवसे इममेतद्रूप गुणनिप्फन्न नामधेय कुरुतः  
यस्मात् खलु अस्माकमस्य दारकस्य एकान्ते उत्कुरुटिकायामुज्ज्यमानस्याङ्गु-  
लिका कुक्कुटपिच्छकेन दूमिता (कूणिता) तद् भवतु खलु अस्माकमस्य दारक-

स्य नामधेय 'कूणिकः' । ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ नामधेय कुरुतः 'कूणिकः' इति ॥ ३५ ॥

टीका—'तएण तस्स' इत्यादि—ततः=गृहसमानयनानन्तर तस्य दारकस्य एकान्ते—उत्कुरुटिकायाम् उज्झ्यमानस्य अग्रादगुलिका कुक्कुटपिच्छकेन=पिच्छ एव पिच्छकः=चञ्चु, कुक्कुटस्य पिच्छकः कुक्कुटपिच्छकः, तेन=कुक्कुट चञ्चुना, दूना=परितापिता दष्टेति यावदिति च अभूत् । तेनादगुलितोऽभीक्ष्ण मभीक्ष्ण=पुन पुनः पूय=दूषितदुर्गन्धशोणितम्—'पीप'—इति भाषायाम्—शोणित =रक्त च अभिनिस्स्रवति । ततः =तस्मात् =पूयशोणिताभिस्त्रावात् स दारको वेदनाभिभूतः=तीव्रदुःखपीडितः सन् महता-महता=उच्चैरुच्चैः शब्देन=चीत्कारेण आरसति=बिलपति । ततः खलु श्रेणिको राजा तस्य दारकस्य आरसित-शब्दम् =आर्तनादं श्रुत्वा निशम्य =हृदयेनावधार्य यत्रैव स दारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं दाक् ऋतलपुटेन गृह्णाति, गृहीत्वा ताम्=कुक्कुट-दष्टामग्रादगुलिकाम्=अङ्गुल्या अग्रभागम् आस्ये=स्वमुखे प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य-पूय शोणितं च आस्येन=मुखेन आमृशति=चोषयति । ततः=तस्माच्चावणात् खलु स दारको निवृत्तः=शान्तः निर्वेदनः=वेदनारहितः तूष्णीकः=समौनः सतिष्ठते=आस्ते । एव यदा यदा स आर्चस्वरेण रीति तदा तदा श्रेणिक एवमेव करोति ।

'तएण तस्स' इत्यादि—

एकान्त उकरडीपर डाले हुए उस बालककी अगुलीके अग्र भागको कुक्कुट (मुर्गे)ने काट खाया जिससे उसकी अगुली पक गयी और उससे बारबार रक्त और पीप बहने लगा, इससे उसको बड़ी वेदना होती थी और आर्तस्वरसे रुदन करना था । उसको आर्तनाद सुनकर राजा उसके पास आता था और बालकको उठाकर उसकी अगुली अपने मुहमें लेकर झरते हुए शोणित और पीपको चूस २ कर यूकना था जिससे उस बालककी वेदना कम होती थी

'तएण तस्स' इत्यादि

अथान उकरडी उप नाथी गेधेन ते छेकरानी आगणीना आगला भागने कुकडो करडी गये जेथी तेनी आगणी पाडी गछ तथा तेमाथी बार बार बोही अने पड़ पड़ेवा लाग्यु आथी तेने णहु वेदना यती हती अने तेथी ते आर्तस्वरथी उदन करतो हतो ।

तेने आर्तनाद साणणी राजा तेनी पास आवतो अने आणकने उपडीने तनी आगणी पोताना भोमा छधने अरता बोही अने पड़ने खुसी-खुसीने यूही नाभतो हतो जेथी ते आणकनी वेदना मोछी यती हती / अने ते शात ( रुडोना अध ) छध

ततः=अङ्गुलीपीडाशमनानन्तर तस्य दारकस्य मातापितरौ तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनं कारयतः कारितवन्तौ यावत् सम्प्राप्ते द्वादशे दिवसे एतद्रूपं गुण-निष्पन्नं नामधेयकुरुत -यस्मात् खलु उत्कुरुटिकाया पतितस्यास्य दारकस्याङ्गुलिका कुक्कुटपिच्छकेन दूषिता=पीडिताऽतः कृणिता-सकुचिता जाता तत्=तस्मात्का रणाद् भवतु अस्य दारकस्य नाम 'कूणिक' इति, तदनु मातापितरौ तस्य दारकस्य नाम कुरुतः 'कूणिक' इति ॥ ३५ ॥

मूलम्-तएणं तस्स कूणियस्स अणुपूव्वेण ठिइवडियं च जहा मेहस्य जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ, अट्टुओ दाओ ॥३६॥

छाया—ततः खलु तस्य कूणिकस्यानुपूर्वेण स्थितिपतितं च यथा मेघस्य यावत् उपरि मासादवरगतो विहरति । अष्ट दाया' ॥ ३६ ॥

और वह चुप होजाता था । जब कभी भी यह बालक वेदनासे छटपटाने लगता था तभी राजा श्रेणिक आकर उसकी वेदना उसी प्रकारसे शान्त करता था ।

बाद माता पिताने तीसरे दिन उस बालकको चन्द्र सूर्यका दर्शन कराया । यावत् बारहवें दिन बड़े उत्सवके साथ उस बालकका नाम रखते हुए बोले कि-उकरडीपर डाले हुए हमारे इस बालककी अङ्गुली मुर्गेके काट खानेसे कृणित-सकुचित होगई इस कारणसे इस बालकका गुण-निष्पन्न नाम 'कूणिक' रखवा जाय, ऐसा सोच-कर माता-पिताने उसका नाम 'कूणिक' रखवा । ॥ ३५ ॥

‘तएण तस्स’ इत्यादि—

नामकरणके बाद कूणिकका कुलपरम्परागत उत्सव-विवाहादि

वृत्ते। हते। न्याये न्याये ते भाजक वेदनाथी तड्डडवा लागतो त्यादे त्यादे नाना श्रेष्ठिक आवीने तेनी वेदना तेज रीते शात करता हता

बाद माता पिताने तीसरे दिवसे ते भाजकने यह सूर्यना दर्शन कराव्या पछी बारह दिवस भोग उत्सवथी ते भाजकनु नाम पाडना भोल्या डे-उकरडी उपर नाभी दीधेवा अभारा आ भाजकनी आगणी कुकडाणा करडी भावाथी कूष्ठिक (स कुचित) थई गछ तेथी आ भाजकनु शुष्कनिष्पन्न (शुष्क दर्शवतु) नाम 'कूष्ठिक' राखवु लेधये आवु विशारी भाता पिताने तेनु नाम 'कूष्ठिक' राख्यु (उप)

‘तएण तस्स’ इत्यादि

नामकरण पछी कूष्ठिकना कुलपरंपरागत उत्सव-विवाह आदि कार्य श्रेष्ठ-

टीका—‘तएण तम्म’ इत्यादि । ततः=नामकरणानन्तर तस्य कूणिकस्य अनुपूर्वेण=अनुक्रमेण स्थितिपतित=कुलक्रमागतम् उत्सवादिष्वम् यथा, मेघस्य=मेघकुमारस्येव करोति यावत् अष्टाष्ट दायः=श्वशुरेण जामात्रे दीयमानाः पदार्थाः ‘दहेज’ इति भाषायाम् ॥ ३६ ॥

मूलम्—तएण तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुवरत्ता० जाव समुप्पजित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रत्तो वाघाएणं नो सचाएमि सयमेव रज्जसिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, त सेय मम खलु सेणियं रायं निलयबंधणं करेत्ता अप्पाण महया—महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए त्तिक्कट्टु एव सपेहित्ता सेणियस्स रत्तो अतराणि य छिदाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे२ विहरइ ।

तएणं से कूणिण कुमारे सेणियस्स रत्तो अंतर वा जाव मम्म वा अलभमाणे अन्नया कयाइ कालादीए दस कुमारे नियघरे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे सेणियस्स रत्तो वाघाएणं नो सचाएमो सयमेव रज्जसिं करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, त सेय देवाणुप्पिया ! अम्ह सेणिय रायं निलयबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्टं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्टागारं च जयवणं च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिं करेमाणाणं जाव विहरित्तए ।

कार्यं मेघ कुमारके समान हुए । श्वशुरकी ओरसे आठ—आठ दहेज वस्तुएं आयी और अष्ट प्रासादपर पूर्वपुण्योपाजित मनुष्यसम्बन्धी पाँचों इन्द्रियोंके सुखका अनुभव करने लगे ॥ ३६ ॥

कुमार समान यथा श्वशुरना तरङ्गी आठ—आठ दहेज वस्तु आयी अने उत्तम भलेसगा पूर्वपुण्योपाजिते मनुष्यसम्बन्धी पाँचों इन्द्रियोंका सुखको अनुभव करेया लाग्या (३६)

तएणं ते कालादीया दस कुमारा कूणियस्स कुमारेस्स  
एयमद्व विणएण पडिसुणेति । तएणं से कणिए कुमारे अन्नया  
कयाइ सेणियस्स रत्तो अंतर जाणाइ, जाणित्ता सेणिय रायं  
नियलवधणं करेइ, करित्ता अप्पाणं महया—महया रायाभिसेएणं  
अभिसिंचावेइ । तएणं से कणिए कुमारे राया जाए महया० ॥ ३७ ॥

छाया—ततः खलु तस्य कूणिकस्य कुमारस्य अन्यदा पूर्वराज्ञा०  
यावत्समुदपद्यत—एव खलु अह श्रेणिकस्य राज्ञो व्याघ्रातेन न शक्नोमि स्वयं  
मेव राज्यश्रियं कुर्वन् पालयन् विहर्तुं, तच्छ्रेयो मम खलु श्रेणिक राजानं  
निगडवन्धनं कृत्वा आत्मानं महता—महता राज्याभिषेकेणामिषेचयितुम्, इति  
कृत्वा एव मप्रेक्षते, सपक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि च छिद्राणि च विर-  
हान् च प्रतिजाग्रद् विहरति ।

ततः खलु स कूणिकः श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तरं वा यावत् मर्म वा  
अलभमानः अन्यदा कदाचिन् कालादिकान् दशकुमारान् निजगृहे गन्धपति,  
शब्दयित्वा एवमवादीत्—एव खलु देवानुमिया ! वयं श्रेणिकस्य राज्ञो व्या-  
घ्रातेन नो शक्नुमः स्वयमेव राज्यश्रियं कुर्वन्तः पालयन्तो विहर्तुम्, तच्छ्रेयो  
देवानुमियाः ! अस्माकं श्रेणिक राजानं निगडवन्धनं कृत्वा राज्यं च राष्ट्रं  
च पलं च बाहनं च कोशं च कोष्ठागारं च जनपदं च एकादशभागान् विभज्य  
स्वयमेव राज्यश्रियं कुर्वाणानां पालयतां यावद् विहर्तुम् ।

ततः खलु ते प्रागादिका दशकुमाराः कूणिकस्य कुमारस्यैतमर्थं  
विनयेन प्रतिशृण्वन्ति ।

ततः स कूणिकः कुमारः अन्यदा कदाचिन् कूणिकस्य राज्ञो-  
ऽन्तरं जानाति, ज्ञात्वा श्रेणिक राजानं निगडवन्धनं करोति, कृत्वा आत्मानं  
महता महता राज्याभिषेकेणामिषेचयति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमारो राजा जातो महा० ॥ ३७ ॥

टीका—‘ततः खलु तस्ये’ त्यादि—अन्यदा तस्य कूणिक—कुमारस्य

‘तएण तस्स’ इत्यादि—

वाद एक समय कूणिककुमार रात्रिके पिछले पहरमें विचार

‘तएण तस्स’ इत्यादि

पछी.ओके समय कूणिक कुमार रात्रिना पीछला पहरमा विचार करवा लाया



जाव सवालकार-विभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्व-  
मागच्छइ। तएणं से कूणिए राया चेल्लण देवि ओहय० जाव  
झियायमाणि पासइ, पासित्ता, चेल्लणाए देवीए पायग्गहण  
करेइ, करित्ता चेल्लण देवि एवं वयासी-कि णं अम्मो। तुम्हं  
न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा नाणदे वा, जं णं  
अहं सयमेव रज्जसिरि जाव विहरामि ? ॥ ३८ ॥

छाया-तत. खलु स कूणिको राजा अन्यदा कदाचित् स्नातः यावत्  
सर्वालङ्कारविभूषितश्चेलनाया देव्याः पादवन्दको हव्यमागच्छति ।

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लना देवीम् अपहत० यावद् ध्यायन्तीं  
पश्यति, दृष्ट्वा चेल्लनाया देव्याः पादग्रहण करोति, कृत्वा, चेल्लना देवीमेव-  
मवादीत्-किं खलु अम्ब ! तव न तुष्टिर्वा नोत्सवो वा न हर्षो वा नानन्दो  
वा ? यस्त्वलु अहं स्वयमेव राज्यश्रिय यावद् विहरामि ॥ ३८ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि-ततःराज्यप्राप्त्यनन्तर स कूणिको राजा  
अन्यदा कदाचित्=कस्मिंश्चित्समये स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितः चेल्लनाया  
देव्याः=निजमातु. पादवन्दक=चरणीं वन्दितुं स हर्षं ससम्भ्रम हव्य=शीघ्रम्  
आगच्छति ।

ततः=आगमनानन्तर खलु = निश्चयेन स कूणिको राजा निजमातर

वाद एक समय मौका पाकर कूणिकने राजा श्रेणिकको बन्धनमे  
डाल दिया और राज्याभिषेक कराकर अपने आप राजा बन गये ॥३७॥

‘तएण से’ इत्यादि—

इसके अनन्तर एक दिन वह राजा कूणिक सभी प्रकारके  
वस्त्र और अलङ्कारोंसे सज्जित होकर अपनी माता चेल्लना देवीके चरण  
वन्दनके लिये हर्ष एव उत्सुकताके साथ जल्दी २ आये, और

पछा ओक समय तक ओछेन दुष्खिउ राजा ओछिउने णधनमा नाणी दीधो अने  
राज्याभिषेक करावी पोते राजा णनी ओछो (३७)

‘तएण से’ इत्यादि

त्यान पछी ओक दिवस ते राजा दुष्खिके तमाम प्रकारना वस्त्र अने अलङ्कारों  
सेधी सज्जित रह पोतानी माता चेल्लना देवीना चरण-वन्दन भाटे दुध अने



पूर्वरात्रापररात्रावसरे यावत् विचारो जातः—एव खलु श्रेणिकभूपस्य व्याघातेन=  
प्रतिबन्धेन राज्यधियं कुर्वन् पालयन् स्वयमेव=स्वतन्त्रः विहर्तुं=विचरितुं अहं  
नो शक्नोमि तत्=तस्मात् कारणात् श्रेणिकराजस्य-निगडबन्धनं कृत्वा विशाल-  
राज्याभिषेकेणात्मानमभिषेचयितुं मम श्रेयः इति कृत्वा=इति सकल्पं विधाय  
एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्ष्यते=विचारयति, संप्रेक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि=  
अवकाशान् छिद्राणि=दूषणानि विरहान्=एकाग्रानि च प्रतिजाग्रत=अन्वेषयन्,  
विहरति । तदनु श्रेणिकभूपस्य मर्म=गुप्ततुष्टिं राज्य=शासनं राज्यलक्ष्मी वा  
राष्ट्र=देशं बल=सैन्यं वाहन=यानं रथादिकम् कोश=भाण्डागारं, कोष्ठागार=  
धान्यगृहं, जनपद=स्वदेशम्, अन्यत्सर्वं सुगमम् ॥ ३७ ॥

मूलम्—तए णं से कूणिण् राया अन्नया कयाइं णहाए

करने लगे कि—श्रेणिक राजाका राज्यशासनरूप प्रतिबन्ध होनेके कारण  
मैं सुखपूर्वक राज्यलक्ष्मीका उपभोग नहीं कर सकता हूँ इस लिए  
मुझे उचित है कि इस श्रेणिक राजाको कीसी तरह बन्धनमें डाल  
दूँ और स्वयं राजा बनकर राज्यलक्ष्मीका उपभोग करूँ । ऐसा विचार  
कर राजाका छिद्र देखने लगे । श्रेणिक राजाका कोई छिद्र, दूषण  
और मर्म हाथ नहीं आनेपर एक समय काल आदि दस कुमारोंको  
अपने घरमें बुलाकर सलाह करने लगे—बोले कि हम लोग राजाके  
कारण ही राज्यश्रीका उपभोग नहीं कर सकते इस लिए किसी  
तरह राजाको बन्धनमें डालकर हम लोग राज्य—राष्ट्र, सेना, वाहन,  
कोश, कोष्ठागार और स्वदेश इनके ग्यारह भाग करके स्वयं राज्य-  
श्रीका उपभोग करें । इस बातको सभी कुमारोंने स्वीकार कर लिया ।

६ श्रेणिक राजानु राज्य शासनरूप प्रतिबन्ध होवाने कारणे सुख-पूर्वक राज्यलक्ष्मीने  
उपभोग हुं करी शकते नथी भाटे भने उचित छे के आ श्रेणिक राजने केछ पछु  
रीते बन्धनमा नाथी हुँ भने हुं पोते राज मनीने राज्यलक्ष्मीने उपभोग  
करे मेम विचार करी राजना छिद्र जेवा भउये। श्रेणिक राजानु केछ छिद्र ह्यपु  
अने मर्म हाथ न आववाथी जेक समय काल आदि दश कुमारने पोताना घरमा  
बोलावी सलाह करवा लाग्ये। कछु के—आपणे राजना कारणे राज्यश्रीने उप  
भोग करी शकत नथी आथी केछ पछु रीते राजने बन्धनमा नाथी आपणे राज्य,  
राष्ट्र, सेना, वाहन, भूमेने, केछार तथा देश जेना ग्यारह भाग करीने आपणे  
पोते राज्यश्रीने उपभोग करीजे आ बातने जथा कुमारने स्वीकार करी लीये।

जाव सवालकार-विभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्व-  
मागच्छइ । तएणं से कूणिए राया चेल्लण देवि ओहय० जाव  
झियायमाणि पासइ, पासित्ता, चेल्लणाए देवीए पायग्गहण  
करेइ, करित्ता चेल्लण देवि एव वयासी-किं णं अम्मो । तुम्हं  
न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा नाणदे वा, जं णं  
अहं सयमेव रज्जसिरि जाव विहरामि ? ॥ ३८ ॥

छाया-ततः खलु स कूणिको राजा अन्यदा कदाचित् स्नातः यावत्  
सर्वालङ्कारविभूषितश्वेलनाया देव्याः पादवन्दको हव्यमागच्छति ।

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लना देवीम् अपहत० यावद् यायन्तीं  
पश्यति, दृष्ट्वा चेल्लनाया देव्याः पादग्रहण करोति, कृत्वा, चेल्लना देवीमेव  
मवादीत्-किं खलु अम्ब ! नव न तुष्टिर्वा नोत्सवो वा न हर्षो वा नानन्दो  
वा ? यत्खलु अहं स्वयमेव राज्यश्रिय यावद् विहरामि ॥ ३८ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि-ततः राज्यप्राप्त्यनन्तर स कूणिको राजा  
अन्यदा कदाचित्=कर्मश्रित्समये स्नातः यावत् सर्वालङ्कारविभूषितः चेल्लनाया  
देव्याः=निजमातुः पादवन्दकः=चरणौ वन्दितुं सङ्घर्षं ससम्भ्रमं हव्य=शीघ्रम्  
आगच्छति ।

ततः=आगमनानन्तर खलु = निश्चयेन स कूणिको राजा निजमातर

चाद एक समय मौका पाकर कूणिकने राजा श्रेणिकको बन्धनमे  
डाल दिया और राज्याभिषेक कराकर अपने आप राजा बन गये ॥ ३७ ॥

‘तएण से’ इत्यादि—

इसके अनन्तर एक दिन वह राजा कूणिक सभी प्रकारके  
वस्त्र और अलङ्कारोंसे सज्जित होकर अपनी माता चेल्लना देवीके चरण  
वन्दनके लिये हर्ष एव उत्सुकताके साथ जल्दी २ आये, और

पछा ओक समय तक नेछन द्रष्टुं राख श्रेष्ठिने बधनमा नाणी दीधो अने  
राज्याभिषेक करावी पोते राजा अनी गेहे (३७)

‘तएण से’ इत्यादि

त्यार पछी ओक दिवस ते राजा कूणिक तैमात्र प्रकाशना वस्त्र अने अलङ्कारों  
से सज्जित रह्यो पोतानी माता चेल्लना देवीना चरण-वन्दन भाटे हुये अने

पूर्वरात्रापररात्रावसरे यावत् विचारो-जातः-एव खलु श्रेणिकभूषस्य व्याघातेन= प्रतिबन्धेन राज्यधियं कुर्वन् पालयेन् स्वयमेव=स्वतन्त्रः विहर्तुं=विचरितुं अहं नो शक्नोमि तत्=तस्मात् कारणात् श्रेणिकराजस्य निगडबन्धनं कृत्वा विशालं राज्याभिषेकेणात्मानमभिषेचयितुं मम श्रेयः' इति कृत्वा=इति सकल्पं विधाय एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, ममेक्ष्य श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तराणि= अवकाशान् छिद्राणि=दूषणानि विरहान्=एकान्तानि च प्रतिजाग्रत=अन्वेषयन्, विहरति । तदनु श्रेणिकभूषस्य मर्म=गुप्तत्रुटिं राज्य=शासनं राज्यलक्ष्मी वा राष्ट्र=देशं बल=सैन्यं वाहन=यानं रथादिकम् कोश=भाण्डागारं, कोष्ठागार=धान्यगृहं, जनपद=स्वदेशम्, अन्यत्सर्वं सुगमम् ॥ ३७ ॥

मूलम्-तए णं से कूणिण् राया अन्नया कयाइं णहाए

करने लगे कि-श्रेणिक राजाका राज्यशासनरूप प्रतिबन्ध होनेके कारण मैं सुखपूर्वक राज्यलक्ष्मीका उपभोग नहीं कर सकता हूँ इस लिए मुझे उचित है कि इस श्रेणिक राजाको कीसी तरह बन्धनमे डाल दूँ और स्वयं राजा बनकर राज्यलक्ष्मीका उपभोग करूँ । ऐसा विचार कर राजाका छिद्र देखने लगे । श्रेणिक राजाका कोई छिद्र, दूषण और मर्म हाथ नहीं आनेपर एक समय काल आदि दस कुमारोको अपने घरमें बुलाकर सलाह करने लगे-बोले कि हम लोग राजाके कारण ही राज्यश्रीका उपभोग नहीं कर सकते इस लिए किसी तरह राजाको बन्धनमे डालकर हम लोग राज्य-राष्ट्र, सेना, वाहन, कोश, कोष्ठागार और स्वदेश इनके ग्यारह भाग करके स्वयं राज्य-श्रीका उपभोग करें । इस बातको सभी कुमारोंने स्वीकार कर लिया ।

हे श्रेणिक राजानु राजन शासनरूप प्रातणध होवाने कारणे सुख-पूर्वक राज्यलक्ष्मीना उपभोग हु करी शकते नथी माटे भने उचित छे के आ श्रेणिक राजने केछ पक्ष रीते बन्धनमा नाथी छे भने हु पोते राज गनीने राज्यलक्ष्मीना उपभोग करे ओम विचार करी राजना छिद्र जेवा भउये। श्रेणिक राजनु केछ छिद्र इपक्ष भने मर्म हाथ न आववाथी ओक समय काल आदि दश कुमारोने पोताना घरमा बोलावी सलाह करवा लाग्ये। कहु छे-आपण्हे राजना कारणेओ राज्यश्रीना उपभोग करी शकता नथी आथी केछ पक्ष रीते राजने बन्धनमा नाथी आपण्हे राज्य-राष्ट्र, सेना, वाहन, जनपद, कोशर तथा दश ओना अजीधार भाग करीने आपण्हे पोतेओ राज्यश्रीना उपभोग करीओ आ वातने जथा कुमारोओ स्वीकार करी बंधि

बहुपडिपुत्ताणं मम अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धन्नाओ  
णं ताओ अम्मयाओ जाव अगपडिचारियाओ निरवसेसं  
भाणियव्व जाव जाहे वि य णं तुम वेयणाए अभिभूए  
महया जाव तुसिणीए संचिद्धसि, एव खलु तव पुत्ता । सेणिए  
राया अच्चतनेहाणुरागरत्ते ।

तएणं से कूणिए राया चेळुणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं  
'सोच्चा निसम्म चेळुणं देवि एव वयासी—दुट्ठु णं अम्मो ।  
मए कय, सेणिय राय पियं देवय गुरुजणं अच्चतनेहाणु-  
रागरत्तं निलयवधणं करतेणं, त गच्छामि ण सेणियस्स रत्तो  
सयमेव नियलाणि छिदामि त्तिकट्ठु परसुहत्थगए जेणेव चार-  
गसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

तएणं सेणिए राया कूणिय कुमार परसुहत्थगयं एज-  
माणं पासइ, पासित्ता एव वयासी—एसणं कूणिए कुमारे अप-  
त्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्व-  
मागच्छइ । त न नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेणं मारिस्सइ  
त्तिकट्ठु भीए जाव सजायभए तालपुडग विस आसगसि पक्खिवड ।

तएण से सेणिए राया तालपुडगविसे आसगसि पक्खित्ते  
समाणे मुहुत्तंतरेणं परिणममाणसि निप्पाणे निच्चिद्ध जीववि-  
प्पजडे ओइन्ने । तएणं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला  
तेणेव उवागय, सेणिय राय निप्पाणं निच्चिद्ध जीवविप्पजड  
ओइन्न पासइ, पासित्ता, महया पिइसोएणं अप्फुण्णे समाणे  
परसुनियत्ते विव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि सव्वगेहिं  
सनिवडिए ।

तएणं से कूणिए कुमारे मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे  
रोयमाणे, कंदमाणे, सोयमाणे, विलवमाणे, एवं वयासी—अहो

चेष्टना देवीम् अपहृतमनःसरूपा यावत् ध्यायन्तीम्=आर्तभयान कुर्वन्ती पश्यति,  
दृष्ट्वा चेष्टलनाया देव्याः पार्दग्रहणं करोति=चरणौ वन्दते, कृत्वा=चरणवन्दन  
विधाय-चेष्टलना देवीमेवमवादीत्-हे अम्ब ! किं खलु=किमर्थं तव न तुष्टि=  
न सन्तोषः। या=अथवा नोत्सय =न चित्तोल्लासः, वा न हर्षः =न प्रमोदः,  
नानन्द=न सुखम्, यदहं खलु स्वयमेव महता राज्याभिषेकेण विशालराज्य-  
श्रियं कुर्वन्=पालयन् विहरामि=विचरामि ॥ ३८ ॥

“ मूलम्-तं एणं सा चेष्टणा देवी कूणियं रायं एव वयासी-  
कहण पुत्ता । मम तुट्टी वा उस्सए वा हरिसे वा आणदे  
वा भविस्सइ ? ज णं तुम सेणियं राय पिय देवय गुरुजग  
अच्चतनेहाणुरागरत्त नियलवधणं करित्ता अप्पाण-महया राया-  
भिसेएणं अभिसिंचावेसि ।

तएण से कूणिए राया चेष्टणं देवि एव वयासी-चाए-  
उकामेण अम्मो ! मम सेणिए राया, एव मारेउ, वधिउ,  
निच्छुभिउकामए णं अम्मो ! मम सेणिय राया, तं कहण  
अम्मो मम सेणिए राया अच्चतनेहाणुरागरत्ते ? ।

तएण सा चेष्टणा देवी कूणिय कुमार एव वयासी-एव  
खलु पुत्ता ! तुमसि मम गब्भे आभूए समाणे तिण्ह मासाण

उन्होने अपनी माताको दीन हीन अवस्थामें-आर्तध्यान करती हुई  
देखा । वह आर्तध्यान करती हुई चेष्टना देवीको चरणवन्दन करके  
बोले-हे जननि ! मैं अपने तेज-प्रतापसे महाराज्याभिषेकके साथ  
इस विशाल राज्यश्रीका उपभोग करता हूँ तो क्या इसे देखकर  
तुम्हें मन्तोष नहीं हो रहा है, तुम्हारे चित्तमें न उल्लास है, न  
प्रमोद है और न सुख ही, इसका क्या कारण है ? ॥ ३८ ॥

उत्सुकतां साये जलही-जलही आये। अन तेषु पोतानी माताने दीन हीन अव  
स्थाभा आर्तध्यान करती जेम् ते आर्तध्यान करती चेष्टना देवीना यरषु वदन  
करीन जेये। हे जननी ! हु पोताना तेज प्रतापयी महाराज्याभिषेकपूर्वक आ  
विशाल राज्यश्रीना उपयोग करी रखी छ, तो शु आ जेम्ने तने सतोष थतो नथी ?  
तारा मनभा नथी उल्लास, नथी प्रमोद के नथी सुण. आनु शु कारषु छे ? (३८)

बहुपडिपुन्नाणं मम अयमेयारूवे दोहले पाउवभूए-धन्नाओ  
णं ताओ अम्मयाओ जाव अगपडिचारियाओ निरवसेसं  
भाणियव्व जाव जाहे वि य णं तुम वेयणाए अभिभूए  
महया जाव तुसिणीए संचिद्धसि, एव खलु तव पुत्ता । सेणिए  
राया अच्चतनेहाणुरागरत्ते ।

तएणं से कूणिए राया चेह्णिए देवीए अंतिए एयमट्ठं  
सोच्चा निसम्म चेह्णं देवि एव वयासी-दुट्ठु णं अम्मो !  
मए कय, सेणिय राय पियं देवय गुरुजणं अच्चतनेहाणु-  
रागरत्तं निलयवधणं करतेणं, त गच्छामि णं सेणियस्स रत्तो  
सयमेव नियलाणि छिंदामि त्तिकट्ठु परसुहत्थगए जेणेव चार-  
गसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

तएणं सेणिए राया कूणिय कुमार परसुहत्थगयं एज्ज-  
माणं पासइ, पासित्ता एव वयासी-एसणं कूणिए कुमारे अप-  
त्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिव्रजिए परसुहत्थगए इह हव्व-  
मागच्छइ । त न नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारिस्सइ  
त्तिकट्ठु भीए जाव सजायभए तालपुडग विस आमगसि पक्खिवड ।

तएण से सेणिए राया तालपुडगविसे आसगसि पक्खित्ते  
समाणे मुहुत्ततरेणं परिणममाणसि निप्पाणे निच्चिद्ध जीववि-  
प्पजढे ओइत्ते । तएण से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला  
तेणेव उवागय, सेणिय राय निप्पाणं निच्चिद्ध जीवविप्पजढ  
ओइन्न पासइ, पासित्ता, महया पिइसोएण अप्फुण्णे समाणे  
परसुनियत्ते विव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि सव्वगेहिं  
संनिवडिए ।

तएणं से कूणिए कुमारे मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे  
रोयमाणे, कंदमाणे, सोयमाणे, विलवमाणे, एवं वयासी-अहो

णं मए अधन्नेणं अपुन्नेणं अकयपुन्नेणं दुट्ठु कय सेणियं राय  
 पियं देवयं अच्चतनेहाणुरागरत्त नियलबन्धणं कांतेणं, मम  
 मूलागं चेव ण सेणिए राया कालगए-त्तिकट्ठु ईसर-तलवर  
 जाव सधिवाल-सद्धि सपरिखुडे रोयमाणेइ इद्धिं सक्कारसमुदएणं  
 सेणियस्स रत्तो नीहरणं करेइ, करित्ता बहूइं लोइयाइ मय-  
 किच्चाइ करेइ । तएणं से कूणिए कुमारे एएणं महया  
 मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूइ समाणे अन्नया कयाइ  
 अतेउरपरिढालसंपरिखुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ  
 पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवा-  
 गच्छइ । तत्थवि णं विउलभोगसमिइसमन्नागए कालेणं अप्प-  
 सोए जाए यावि होत्था ।

तए णं से सेणिए राया अन्नया कयाइ कालादीए दस-  
 कुमारे सदावेइ, सदावित्ता, रज्जं च जाव जणवयं च एक्कारस-  
 भाए विरिचइ, विरिचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे  
 विहरइ ॥ ३९ ॥

छाया-तत्त खलु सा चेवल्लना देवी कूणिक राजानमेवमवादीत्-कथं  
 खलु पुत्र ! मम दुष्टिर्वा उत्सवो वा हर्षो वा आनन्दो वा भविष्यति यस्मिन्  
 त्वं श्रेणिक राजानं प्रियं दैवतं गुरुजनकमत्यन्तस्नेहानुरागरवत् निगडवन्धनं  
 कृत्वा आत्मानं महतारं राज्याभिषेकेण अभिषेचयसि ।

‘तएण सा’ इत्यादि—

कूणिकके ऐसे वचन सुनकर रानी चेवल्लनाने राजा कूणिकको  
 इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—हे पुत्र ! तुम्हारे इस राज्याभिषेकसे  
 मुझे सन्तोष अथवा चित्तमें उत्लास प्रमोद एवं सुख किस प्रकार

‘तएण सा’ इत्यादि

कूणिकना जेवा वचन माळणीने गळी चेवनाजे राजा कूणिकने आवी रीते  
 हळेंतुं शब्द केलुं—हे पुत्र ! तू ! मम राज्याभिषेकथी मने सतोष अथवा मनभा उत्लास,  
 प्रमोद जेवने सुख देवी रीते-याय ? केअडे तु, अत्यंत स्नेहानुरागयुक्त, हे

તતઃ સ્વલુ સા કૂણિકો રાજા ચેલ્લના દેવીમેવમવાદીત્-ઘાતયિતુકામઃ  
સ્વલુ અમ્બ ! મમ શ્રેણિકો રાજા, એવ મારયિતુ, બન્ધયિતુ, નિઃશોભયિતુકામઃ  
સ્વલુ અમ્બ ! મમ શ્રેણિકો રાજા, તત્કથ સ્વલુ અમ્બ ! મમ શ્રેણિકો રાજા-  
અત્યન્તસ્નેહાનુરાગરક્તઃ ? ।

તત સ્વલુ સા ચેલ્લના દેવી કૂણિક કુમારમેવમવાદીત્-એવ સ્વલુ  
પુત્ર ! ત્વયિ મમ ગર્ભે આબૂતે સતિ ત્રિપુ માસેષુ વહુપ્રતિપૂર્ણેષુ મમાયમેતદ્દૂપો  
દોહદઃ પ્રાદુર્ભૂતઃ-ધન્યા સ્વલુ તા અમ્બાઃ યાવત્ અદ્વપ્રતિચારિકાઃ, નિરવશેષં

હો ? જય કિ તુમ અત્યન્ત સ્નેહ ઓર અનુરાગસે યુક્ત, દેવ ગુરુજન  
સદૃશ અપને પિતા, પ્રિય રાજા શ્રેણિકો બન્ધનમેં ડાલકર વિશાલ  
રાજ્ય સુખકા ઉપભાગ કરતે હો ।

યહ સુનકર રાજા કૂણિકને ચેલ્લના દેવીસે ઇસ પ્રકાર કહના  
પ્રારમ્ભ કિયા-હે માતા ! યહ રાજા શ્રેણિક જો મેરી ઘાત ચાહનેવાલા  
હૈ એવ મેરા મરણ ઓર બન્ધન ચાહનેવાલા હૈ તથા મેરે મનકો દુઃખ  
દેનેવાલા હૈ વહ સુદ્ધપર અત્યન્ત સ્નેહ ઓર અનુરાગસે અનુરક્ત  
કૈસે હો સકના હૈ ?

કૂણિકકે ઇસ પ્રકાર કહનેપર ચેલ્લના દેવીને ડસસે કહા-હે  
પુત્ર ! સુન-જય તૂ મેરે ગર્ભમેં આયા ડસકે ત્રીન મહીને પૂર્ણ હોતે  
સુદ્ધે ઇસ પ્રકારકા દોહદ (દોહલા) ઉત્પન્ન હુઆ કિ-

વે માતાઈ ધન્ય હૈં જો અપને પતિકે ઉદરચલિમાસકો તલ-  
ભૂનકર મદિરાકે સાથ સ્વાતી હુઈ યાવત્ અપને દોહદ (દોહલા)કો

અને ગુરુજન સમાન પાતાના પ્રિય રાજા શ્રેણિકને બન્ધનમા નાખી આ વિશાલ રાજ્ય  
સુખનો ઉપભોગ કરે છે

આ સામળા રાજા કૂણિકે ચેલ્લના દેવીને આ પ્રમાણે કહેવા માડયુ-હે માતા !  
આ રાજા શ્રેણિક જ મારો ઘાત ચાહે છે અને મારૂ મરણ તથા બન્ધન ચાહેવાવાળો  
છે તથા મારા મનને દુઃખ દેનારો છે તે મારા ઉપર અત્યંત સ્નેહ તથા અનુરાગથી  
અનુરક્ત કેમ હોઈ શકે ?

કૂણિકના આ પ્રકારે કહેવાથી ચેલ્લના દેવીએ તેને કહ્યું —  
હે પુત્ર ! સામળ-જ્યારે તું મારા ગર્ભમા આવ્યો ત્યારથી ત્રણ મહિના પૂરા  
થતા મને એવી જાતનો દોહદ (તીવ્ર ઈચ્છા) ઉત્પન્ન થયો કે —  
“તે માતાને ધન્ય છે કે જે પોતાના પતિના ઉદરચલિ માસને તાળી મૂકીને  
મદિરાની સાથે ખાતા પોતાનો દોહદ સંપૂર્ણ રીતે પૂરો કરે છે હું પણ જો રાજા



अणितव्य यावत् यदापि च खलु त्व वेदनयाऽभिभूतो महता यावत् तूष्णीकः  
सतिष्ठसे, एव खलु तव पुत्र ! श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ।

पूर्ण करती हैं । मैं भी यदि राजा श्रेणिकके उदरवलिका मांस खाऊँ तो बड़ा अच्छा हो ।” इस प्रकार दोहद होनेपर मैं दिन-रात आर्त ध्यान करने लगी और दोहदके पूरे न होनेके कारण सूखकर पीली पड़ गई । जब तुम्हारे पिताको यह खबर दासियों द्वारा ज्ञात हुई तो उन्होंने मुझसे मेरे दोहदका वृत्तान्त सुनकर अभयकुमार द्वारा उसकी पूर्ति की । दोहद (दोहला) पूर्ण होनेके बाद मैंने विचार किया कि इस बालकने गर्भमें आते ही अपने पिताका मांस खाया तो जन्म लेकर न जाने क्या करेगा ? इस लिए इस गर्भको किसी भी उपायसे नष्ट कर डालूँ, परन्तु वह गर्भ नष्ट न हो सका और तू पैदा हुआ, तेरा जन्म होनेपर मैंने तुझे दासीके द्वारा एकान्त स्थान उकरडीपर फिकवा दिया । पश्चात् यह वृत्तान्त तेरे पिता राजा श्रेणिकको मालूम हुआ, उन्होंने तेरी खोज की और खोजकर तुझे मेरे पास ले आये । उन्होंने तेरा परित्याग करनेके कारण मेरी कड़ी भर्त्सना की और मुझे शपथ देकर कहा कि-तुम इस बच्चेका अच्छी तरह पालन पोषण करो । उकरडीपर पड़े हुए तेरी अंगुलीके अग्र भागको मुर्गेने काट लिया जिससे तुझे बड़ी वेदना होती थी, तू

श्रेणिकनु उदरवलिनु मांस भाउ तो भणु साइ थाय ” आ प्रकारने दोहद यवधी हु  
दिन-रात आर्त ध्यान करवा लागी अने दोहद पूरा न यवधी सुकाने पीजा पडी गर्भ  
न्याय तारा पिताने आ अणर दासीआ द्वारा बालुवामा आवी त्यारे तेमझे भारा  
भोटथी भारा दोहदनु वृत्तात साबगाने ते अभयकुमार द्वारा परिपूर्व कर्मा दोहद पूरा  
थया पछी मे पियार कर्था के आ जाणके गर्भमा आवत न पोताना पितानु मांस  
भाधु तो जन्म लधने तो अणर नाह के त शु करथे ? भाटे आ गर्भने दोहद पखु  
उपायथी नाश करी नाथु पखु त गर्भने नाश न यध थकथे अने तु पदा थये  
तारे जन्म थया पछी मे तने दासी भारकत ओकात-स्थान उकरडे के कापी दीथे। पछी  
आ हकीकतनी तारा पिता राजा श्रेणिकने अणर पडी तेमझे तारी तपास करी अने  
तने शधीने राजा भारी पासे लाव्या तेमझे भारे परित्याग करवा भाटे अने भट्ट  
ठपुके आथ्या अने भने सोगद आपीने कलु क-आ जाणके सारी रीते पालन  
पोषण करे ’ तु उकरडे पडथे तो त्यारे तारा आगणाना आगवा मागने कुकडे करथे।

ततः खलु स कूणिको राजा चेल्लनाया देव्या अन्तिके एतमर्थं  
श्रुत्वा निशम्य चेल्लना देवीमेवमवादीत-दुष्ट खलु अम्ब ! मया कृत श्रेणिकं  
राजान् प्रिय दैवत गुरुजनकमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगडबन्धनं कुर्वता, तद्  
गच्छामि खलु श्रेणिकस्य राज्ञः स्वयमेव निगडानि छिनत्ति, इति, कृत्वा  
परशुहस्तगतो यत्रैव चारकशाला तत्रैव प्रधारयति गमनाय ।

दिन-रात कष्टसे चिल्लाता रहता था, उस समय तेरे पिता तेरी कटी  
हुई अंगुलीको अपने मुहमें लेकर पीप और शोणितको चूसकर धूक  
देते थे, तब तुझे शांति होती थी और तू चुप होजाता था । जब  
कभी भी तुझे पीडा होती थी तब तेरे पिता इसी तरह किया करते  
थे, और तू शांति पानेके कारण चुप होजाता था । हे पुत्र ! इस  
कारण मैं कहती हूँ कि तेरे पिता राजा श्रेणिक तुझपर अत्यन्त  
स्नेह और अनुरागसे युक्त है ।

वह कूणिक राजा चेल्लना रानीके मुहसे इस प्रकार वृत्तान्त  
सुनकर कहने लगे-हे माता ! मैंने सभी प्रकारके हित करनेवाले इष्ट-  
देवता स्वरूप परमोपकारक अत्यन्त स्नेह-अनुरागसे युक्त अपने पिता  
राजा श्रेणिकको बन्धनमें डाला यह उचित नहीं किया सो मैं स्वयं  
जाकर उनके बन्धनको काटता हूँ, ऐसा कहकर कुठार हाथमें लेकर  
जहाँ कारागार था वहाँ जानेके लिए चला ।

हतो जेथी तने जहु वे ना थती हती अने तु ते कष्टथी दिवस रात जहु रड्याज  
करतो हतो ते समये तारा पिता तारी कपायेदी आगजीने पोचाना मोभा लभ पइ अने डोही जे  
नीकगतु हतु ते बूसीने थूकी होता होता त्यारे तने शांति थती हती अने तु छानो  
रही जतो हतो ज्यारे वणी पाछी पीडा थती त्यारे तारा पिता ज्येवीज गीते करता  
हता अने तु शांत भजवाथी छानो रही जतो हतो हे पुत्र ! आ कारजुथी हुं कहु  
छु के तारा पिता राजा श्रेणिक तारा पर जहु स्नेह अने अनुराग राखता हता

ते कूणिक राजा चेल्लना राजाजीना मोढेथी आ प्रभाजे हकीकत सालणी कडेवा  
लाग्या-हे माता ! मे सर्व प्रकारे हित करवावाणा, भट्टदेव स्वयं परम उपकारक,  
जहुज स्नेहभाव राखवावाणा मारा पिता राजा श्रेणिकने बंधनभा नाग्या ते वाजणी  
न कर्युं तेथी हुं पोते जधने तेमना बंधन कापी नाछु छु ज्ये कही कुडाडी डायभा  
लभ न्या केड्यानु हतु त्या गया

भणितव्य यावत् यदापि च खलु त्व वेदनयाऽभिभूतो महता यावत् तूष्णीकः  
सतिष्ठसे, एव खलु तव पुत्र ! श्रेणिको राजाऽत्यन्तस्नेहानुरागरक्तः ।

पूर्ण करती हूँ । मैं भी यदि राजा श्रेणिकके उदरघलिका मांस खाऊँ  
तो बड़ा अच्छा हो ।” इस प्रकार दोहद होनेपर मैं दिन-रात आर्त  
ध्यान करने लगी और दोहदके पूरे न होनेके कारण सूखकर पीली  
पड़ गई । जब तुम्हारे पिताको यह खबर दासियों द्वारा ज्ञात हुई  
तो उन्होंने मुझसे मेरे दोहदका वृत्तान्त सुनकर अभयकुमार द्वारा  
उसकी पूर्ति की । दोहद (दोहला) पूर्ण होनेके बाद मैंने विचार  
किया कि इस बालकने गर्भमे आते ही अपने पिताका मांस खाया  
तो जन्म लेकर न जाने क्या करेगा ? इस लिए इस गर्भको किसी  
भी उपायसे नष्ट कर डालू, परन्तु वह गर्भ नष्ट न हो सका और तू  
पैदा हुआ, तेरा जन्म होनेपर मैंने तुझे दासीके द्वारा एकान्त स्थान  
उकरडीपर फिकवा दिया । पश्चात् यह वृत्तान्त तेरे पिता राजा श्रेणि  
कको मालूम हुआ, उन्होंने तेरी खोज की और खोजकर तुझे मेरे  
पास ले आये । उन्होंने तेरा परित्याग करनेके कारण मेरी कड़ी  
भर्त्सना की और मुझे शपथ देकर कहा कि-तुम इस बच्चेका अच्छी  
तरह पालन पोषण करो । उकरडीपर पड़े हुए तेरी अंगुलीके अग्र  
भागको मुर्गेने काट लिया जिससे तुझे बड़ी वेदना होती थी, तू

श्रेणिकनु उदरघलितु मांस भाउ तो जलु साइ थाय " आ प्रकारने दोहद यवाथी हु  
दिन-रात आर्तध्यान करवा लागी अने दोहद पूरे न यवाथी सुकाधने पीणी पडी गर्भ  
न्याय तारा पिताने आ भणर दासीयो द्वारा जलुवामा आवी त्यारे तेमझे भारा  
भोटथी भारा दोहदनु वृत्तात साकागाने ते अभयकुमार द्वारा परिपूर्ण कर्था दोहद पूरे  
थया पछी मे विचार कर्था के आ जाणके गर्भमा आवतज पोताना पितानु मांस  
प्राधु तो जन्म लधने तो भणर नाइ के ते शु करये ? भोटे आ गर्भने कोछ पछु  
उपायथी नाश करी नाथु पछु त गर्भने नाश न यध शक्यो अने तु पैदा थयो  
तारे जन्म थया पछी मे तने दासी भारक्ष ओकात-स्थान उकरडे डेकावी दीधो पछी  
आ हुडीकतनी तारा पिता राजा श्रेणिकने भणर पडी तेमझे वारी तपास करी अने  
तने शाधीने राजा भारी पासे लाव्या तेमझे भारे परित्याग करवा भोटे अने जहु  
ठपुके आथ्यो अने मने सोणद आपीने उछु के-“आ जाणकनु सारी रीते पालन  
पोषणु करे ” तु उकरडे पड्यो जतो त्यारे तारु आगजांना आगला भागने कुकटा करइयो

ततः खलु स कूणिकः कुमरो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्-अहो ! खलु मया अभन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्टु कृत श्रेणिक राजानं प्रिय दैन्यतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगड-बन्धनं कुर्वता, मम मूलरु चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर-तलवर-यावत्-सन्धिपालैः सार्धं सपरिवृतो रुदन् ४ ( क्रन्दन् शोचन् विलपन् ) महता क्रुद्धिसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरणं करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दुःखे-नाभिभूतः सन् अन्यदा उदाचित् अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः समाण्डामन्त्रोप-

मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर घडामसे गिर पड़ा ।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोना हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद ओर विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला-मैं अभाग हूँ, पापी हूँ, पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने घुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम उपकारी और स्नेह-ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजाको बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई । ऐसा कहकर अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बड़े समारोहके साथ राजाकी अन्तिम लौकिक क्रिया की । उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख-देखकर अत्यन्त दुःखी

न थाय अवा हु भथी इदन करता थका ताक्षिधर वाणा कुवाडीथी कापेला ठाभण अ पक वृक्षनी पेटे जमीन उपर घडाग पडी पड्या

त्यार पछी ते कुविक कुमार बोडा समय पछी भूर्छारहित थया भूर्छा हटी गया पछा ते इदन करता कइषु शब्दथो आर्तनाद करता थाक अने विलाप करता करता आ प्रभावे गोत्या-हु अभागी छु पापी छु, पुण्यहीन छु, जेथी मे पराण कार्य क्यु देव गुरुजन समान परम उपकारी अने स्नेह ममताथी लागणी राभनार पोताना पिता श्रेणिक राजने बधनमा (किदभानामा) नाप्या अने माराज कान्छथी ओनु मृत्यु थयु ओम कहीने पोताना कुटु भीओनी साथे इदन करता थका अहु समारोहपूर्वक राजा श्रेणिकनी अंतिम लौकिक क्रिया करी

त्यार पछी त कुविक राजगृहमा पोताना पितानी उपभोग सामग्रीओ ने

તતઃ સ્વલુ શ્રેણિકો રાજા કૂણિક કુમાર પરશુહસ્તગતમેજમાન પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા એવમવાદીત્-એવ સ્વલુ કૂણિકઃ કુમાર. અપાર્થિનપાર્થિતો યાવત્, શ્રીહી-પરિવર્જિતઃ પરશુહસ્તગત ઇદ્ ઇવ્યમાગચ્છતિ, તન્ન જ્ઞાયતે સ્વલુ મા કેનાપિ કુમારેણ (કુત્સિતમારેણ) મારયિષ્યતીતિ, કૃત્વા ભીતો યાવત્ સજાતભયસ્તાલ-પુટક પિપમાસ્યે પ્રક્ષિપતિ ।

તતઃ સ્વલુ સ શ્રેણિકો રાજા તાલપુટકવિષે આસ્યે પ્રક્ષિપ્તે સતિ મુહૂર્ત્તાન્તરેણ પરિણમ્યમાને નિષ્પ્રાણો નિશ્ચેષ્ટો જીવવિપ્રત્યક્તોઽવતીર્ણઃ ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂણિકઃ કુમારો યત્રૈવ ચારકશાલા તત્રૈવોપાગતઃ, ઉપા-ગત્ય શ્રેણિક રાજાન નિષ્પ્રાણ નિશ્ચેષ્ટ જીવવિપ્રત્યક્તમવતીર્ણ પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા મહતા પિતૃશોકેન આક્રાન્તઃ સન્ પરશુનિકૃત્ત ઇવ ચમ્પકવરપાદપઃ ‘ધસ’ ઇતિ ધરણી-તલે સર્વાન્ન સનિપત્તિતઃ ।

उसके बाद राजा श्रेणिकने, हाथमें कुठार लिए हुए कूणिक कुमारको आते हुए देखकर उनके मुँहसे सहसा ये शब्द निकल पड़े कि—यह कूणिककुमार अनुचितको चाहनेवाला कर्तव्यहीन यावत् लज्जावर्जित हाथमे कुठार लिए हुए जल्दीसे आ रहा है, न जाने किस प्रकार यह मुझे बुरी तरह मारेगा, इस बातसे डरकर राजा श्रेणिकने अपनी अगुठीमे रहे हुए तालपुट विषको अपने मुखमें रख लिया । मुँहमे रखनेके बाद वह विष क्षणमात्रमें मारे शरीरमे फैल गया और राजा प्राण गव चेष्टासे रहित हो मृत्युको प्राप्त हो गया ।

इसके बाद कूणिककुमार कारागारमे आया और आकर प्राण एव चेष्टासे रहित—मरेहुए—राजा श्रेणिकको देखा । देखकर पिताके

ત્યાર પછી રાજા શ્રેણિકે હાથમા કુહાડી લઇને કૂણિક કુમારને આવતો જોયો. જોઇને તેના મોઢેથી તુરત આવા શબ્દો નીકળી પડ્યા કે—‘આ કૂણિક કુમાર અનુ-ચિત ચાહવાવાળો કર્તવ્યહીન નિર્લજ્જ થઇને કુહાડી લઇ જલ્દી અહીં આવે છે. ખબર નથી પડતી કે તે મને કેવી રીતે ખરાબ રીતે મારી નાખશે. આ વાતથી હારી જઇને રાજા શ્રેણિકે પોતાની અગુઠીમા રહેલ તાલપુટ ઝેર પોતાના મોઢા મૂક્યું. મોઢા મૂક્યા પછી તે ઝેર એક પળ માત્રમા આખા શરીરમા ફેલાઇ ગયું અને રાજા પ્રાણથી અને હલન-ચલનથી રહિત થઇ મૃત્યુ પામ્યા.

ત્યાર પછી કૂણિક કુમાર કેદખાનામા આવ્યા અને આવીને રાજા શ્રેણિકને પ્રાણ અને હલન-ચલનથી રહિત—મરેલા જોયા, જોઇને પિતાના મરણન્ય સહન

ततः खलु स कूणिकः कुमारो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्-अहो ! खलु मया अभन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्टु कृत श्रेणिक राजान प्रिय दैवतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगड-बन्धन कुर्वता, मम मूलरु चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर-तलवर-यावत्-सन्धिपालैः सार्द्धं सपरिवृतो रुदन् ४ (क्रन्दन् शोचन् विलपन्) महता क्रुद्धिसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरण करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दुःखे-नाभिभूतः सन् अन्यदा कदाचित् अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः सभाण्डामन्त्रोप-

मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर घडामसे गिर पड़ा ।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोता हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद ओर विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला-मैं अभाग हूँ, पापी हूँ, पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने घुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम उपकारी और स्नेह-ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजाको बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई । ऐसा कहकर अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बड़े समारोहके साथ राजाकी अन्तिम लौकिक क्रिया की । उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख-देखकर अत्यन्त दुःखी

न थाय अवा दुःखी इदं करता यका ताक्षधर वाणा कुलादीथी कपेला ठामन य पक वृक्षनी पेटे जमीन उपर घडाग पडी पड्या

त्यार पछी ते कूणिक कुमार थोडा समय पछी मूर्छारहित थया मूर्छा हटी गया पछी ते इदं करता कइषु शब्दथा आर्तनाद करता थाक अने विलाप करता करता था प्रभाषे पोल्या-हु अभागी छ पापी छ, पुण्यहीन छ, नेथी मे भराण कार्य कथु देव गुरुजन समान परम उपकारी अने स्नेह ममताथी लागणी राभनार पोताना पिता श्रेणिक राजने बधनमा (कैदभानामा) नाभ्या अने माराज ठान्छथी ओनु मृत्यु थयु ओम कहीने पोताना कुटुम्भीओनी साथे इदं करता यका अहु समारोहपूर्वक रान्नी श्रेणिकनी अतिम लौकिक क्रिया करी

त्यार पछी त कूणिक राजगृहमा पोताना पितानी उपभोग सामग्रीओ ने

તતઃ સ્વલુ શ્રેણિકો રાજા કૂણિકં કુમાર પરશુહસ્તગતમેજમાન પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા એવમવાદીત-એવ સ્વલુ કૂણિકઃ કુમાર. અમાર્થિનપ્રાર્થિતો યાવત્ શ્રીહી-પરિવર્જિતઃ પરશુહસ્તગત ઇહ દૃવ્યમાગચ્છતિ, તન્ન જ્ઞાયતે સ્વલુ મા કેનાપિ કુમારેણ (કુત્સિતમારેણ) મારયિષ્યતીતિ, કૃત્વા ભીતો યાવત્ સજાતમયસ્તાલ-પુટક પિપમાસ્યે પ્રક્ષિપતિ ।

તતઃ સ્વલુ સ શ્રેણિકો રાજા તાલપુટકત્રિપે આસ્યે પ્રક્ષિપ્તે સતિ મુહૂર્તાન્તરેણ પરિણમ્યમાને નિષ્પાણો નિશ્ચેષ્ટો જીવવિપ્રત્યક્તોઽવતીર્ણઃ ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂણિકઃ કુમારો યઐવ ચારુશાલા તઐવોપાગતઃ, ઉપા-ગત્ય શ્રેણિક રાજાન નિષ્પાણ નિશ્ચેષ્ટ જીવવિપ્રત્યક્તમવતીર્ણ પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા મહતા પિતૃશોકેન આક્રાન્તઃ સન્ પરશુનિકૃત્ત ઇવ ચમ્પકવરપાદપઃ ‘ધસ’ ઇતિ ધરણી-તલે સર્વાઙ્ગઃ સનિપતિતઃ ।

उसके बाद राजा श्रेणिकने, हाथमें कुठार लिए हुए कूणिक कुमारको आते हुए देखकर उनके मुँहसे सहसा ये शब्द निकल पड़े कि—यह कूणिककुमार अनुचितको चाहनेवाला कर्तव्यहीन यावत् लज्जावर्जित हाथमे कुठार लिए हुए जल्दीसे आ रहा है, न जाने किस प्रकार यह मुझे बुरी तरह मारेगा, इस बातसे डरकर राजा श्रेणिकने अपनी अगुठीमे रहे हुए तालपुट विषको अपने मुखमें रख लिया । मुँहमें रखनेके बाद वह विष क्षणमात्रमें सारे शरीरमें फैल गया और राजा प्राण गब चेष्टासे रहित हो मृत्युको प्राप्त हो गया ।

इसके बाद कूणिककुमार कारागारमे आया और आकर प्राण एव चेष्टासे रहित-मरेहुए-राजा श्रेणिकको देखा । देखकर पिताके

ત્યાર પછી રાજા શ્રેણિકે હાથમા કુહાડી લઇને કૂણિક કુમારને આવતો જોયો જોઇને તેના મોઢેથી તુરત આવા શબ્દો નીકળી પડ્યા કે—‘આ કૂણિક કુમાર અતુ ચિત્ત ચાહવાવાળો કર્તવ્યહીન નિર્લજ્જ થઇને કુહાડી લઇ જલ્દી અહીં આવે છે. ખબર નથી પડતી કે તે મને કેવી રીતે ખરાબ રીતે મારી નાખશે આ વાતથી ડરી જઇને રાજા શ્રેણિકે પોતાની અગુડીમા રહેલ તાલપુટ ઝેર પોતાના મોઢા મૂક્યું મોઢા મૂક્યા પછી તે ઝેર એક પળ માત્રમા આખા શરીરમા ફેલાઇ ગયું અને રાજા પ્રાણથી અને હલન-ચલનથી રહિત થઇ મૃત્યુ પામ્યા

ત્યાર પછી કૂણિક કુમાર દેખાનામા આવ્યા અને આવીને રાજા શ્રેણિકને પ્રાણ અને હલન-ચલનથી રહિત-મરેલા જોયા, જોઇને પિતાના મરણન્ય સહન

ततः खलु स कूणिकः कुमारो मुहूर्तान्तरेण आस्वस्थः सन् रुदन् क्रन्दन् शोचन् विलपन् एवमवादीत्-अहो ! खलु मया अभन्येन अपुण्येन अकृतपुण्येन दुष्ट कृत श्रेणिक राजान प्रिय दैवतमत्यन्तस्नेहानुरागरक्त निगड-  
बन्धन कुर्वता, मम मूलरु चैव खलु श्रेणिको राजा कालगतः, इति कृत्वा ईश्वर-तलवर-यावत्-सन्धिपालैः सार्द्धं सपरिवृतो रुदन् ४ (क्रन्दन् शोचन् विलपन्) महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन श्रेणिकस्य राज्ञो नीहरण करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति ।

ततः खलु स कूणिकः कुमार एतेन महता मनोमानसिकेन दुःखे-  
नाभिभूतः सन् अन्यदा कदाचित् अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः समाण्डामत्रोप-  
मरणजन्य असहनीय कष्टसे आक्रान्त हो तीक्ष्ण कुठारसे कटे हुए  
कोमल चम्पक वृक्षकी तरह भूमिपर घडामसे गिर पडा ।

इसके अनन्तर वह कूणिककुमार कुछ समय बाद मूर्छारहित  
हुआ, मूर्छाके हट जानेपर वह रोना हुआ करुण शब्दसे आर्तनाद  
ओर विलाप करता हुआ इस प्रकार बोला-मैं अभाग हूँ, पापी हूँ,  
पुण्यहीन हूँ, जो कि मैंने घुरा कार्य किया, देवगुरुजनके समान परम  
उपकारी और स्नेह-ममतासे अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजाको  
बन्धनमें डाला और मेरे ही कारण इनकी मृत्यु हुई । ऐसा कहकर  
अपने कुटुम्बके साथ रुदन करता हुआ बड़े समारोहके साथ राजा-  
की अन्तिम लौकिक क्रिया की । उसके बाद वह कूणिक राजगृहमें  
अपने पिताकी उपभोग सामग्रियोंको देख-देखकर अत्यन्त दुःखी

न थाय अवा हु भथा इदन करता थका ताक्षिधर वाणा कुछाडीथी कापेला डोभण  
अ पक वृक्षणी पंके जमीन उपर धडाग पडी पड्या

त्यार पछी ते हूषिक कुमार थोडा समय पछी मूर्छारहित थया मूर्छा हटी  
गया पछी ते इदन करता कइषु शब्दथो आर्तनाद करता थक अने विलाप करता  
करता था प्रभावे मोट्या-हु अभागी छु पापी छु, पुण्यहीन छु, नेथी मे  
भराव कार्य क्यु देव गुरुजन समान परम उपकारी अने स्नेह ममताथी लागणी  
राजनार पोताना पिता श्रेणिक राजाने बधनमा (कैदभानामा) नाभ्या अने भाराज  
काष्ठथी अने मृत्यु थयु अम कहीने पोताना कुटुलीओनी साथे इदन करता थका  
अहु समारोहपूर्वक राजा श्रेणिकनी अन्तिम लौकिक क्रिया करी

त्यार पछी त हूषिक राजभूषमा पोताना पितानी उपभोग सामग्रीओ ने



तस्मिन्नाश्रमे कश्चित्तापसो मास मास तपसा क्षपयन् पारणा कुर्वन् आसीत् । राजा त तपस्विनं विबोध्य समतुष्यत्, तापस च स्वभवने पारणा कर्तुं प्रार्थयत् । तापसेनोक्तम्-पारणाया पञ्च दिनानि साम्प्रतमवशिष्यन्ते पञ्चदिवसानन्तरं पारणायै तव राजधानीमागमिष्यामि, हे राजन् ! ममायं नियमो यत्-‘पारणादिने एकस्मिन्नेव गृहे भिक्षामाचरामि,’ यद्येकत्र भैक्ष्यं न लभे तदा मास क्षपयामि’ इति तापसनियमं श्रुत्वा श्रेणिको राजा निजराजधानीमागमत् ।

नतः पञ्चसु दिवसेषु व्यतीतेषु पारणाऽहे तापस’ श्रेणिकराज-द्वार-मागतः । तस्मिन् दिने राज्ञो महत्या शिरोवेदनया राजभवनं व्याकुलमासीत् ।

तापस मास-मासके उपवाससे पारणा करता था । राजा उस तापस-को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और उससे प्रार्थना की-हे महात्मन् ! आप मेरे यहाँ पारणा करनेके लिये पधारे । राजाकी ऐसी प्रार्थना सुनकर तापस बोला—

हे राजन् ! अभी मेरे पारणेमें पाँच दिन घटते (अवशिष्ट) हैं उनके पूर्ण होजानेपर मैं तुम्हारे यहाँ पारणेके लिये आउँगा परन्तु मेरा एक नियम है उसको ध्यानमें रखना-पारणेके दिन केवल एकही घर भिक्षाके लिए जाता हूँ । यदि वहाँ भिक्षा नहीं मिली तो फिर मासक्षपण (खमण) के बाद ही पारणा करना हूँ । राजा उस तापसके इस नियमको सुनकर अपनी राजधानीको लौट गया ।

उसके पाच दिन बीत जानेके पश्चात् वह तापस पारणेके दिन, राजा श्रेणिकके द्वारपर आया । उस दिन राजाके सिंगमें असह्य वेदना थी जिससे समूचा राजभवन व्याकुल था, इसलिये उस

करी पारणा करता होता । राजा ने तापसने जोधन अत्यंत भुशी धयाः अने तेजोने प्रार्थना करी-हे महात्मन् ! आप आरें त्या पारणा करवाने पधारे । राजानी ऐसी प्रार्थना साधणी तापस जोह्यो —

हे राजन् ! कुछ आरें पारणा करवाने पाय दिवस अवशिष्ट ( बाकी ) हैं ते पूरा यह गया पछी हूँ तारे त्या । प्या आरें आपीश परतु आरें ओक नियम । छे ते ध्यानमा राख्ये-हूँ पारणाने दिवस मात्र ओकज घेर भिक्षाने आरें जाऊ छु जो त्या भिक्षा न भगे तो वगी पाछा करीने माम-अमण पछीज पारणा कर छे राजा ने तापसने आ नियम साधणीने पोतनी राजधानीमे पाछा गये ।

तेने पाय दिवस बीती गया पछी ते तापस पारणाने दिवस नव्य श्रेणिकना । दाद आयेक ते दिवस राजांना आयामा असह्य वेदना यनी होती जेथे आपु राजभवन-

दिति तापस सत्कर्तुं कोऽपि नाशकत् । तापसस्तादृश राजभवन निरीक्ष्य ततः परावृत्तो द्वितीय मास क्षपयितु प्रारभत । शिरोवेदनाया शान्ताया राजा तापसमुपागच्छत् तापसश्च स्वनियम राजान आवितवान् । भूपः पुनः पारणार्थं तापस मार्थितवान् । पारणादिने श्रेणिकराजधानीमसौ तापस आगतः । तस्मिन् दिने राजभवन बहिर्प्रदीप्तमासीदिति तापसागमन राज्ञा विस्मृतम् अतस्तापसः परावृत्तत् । ततश्चतुर्थ मास स क्षपयितु प्रारभत । वद्वौ शान्ते राजा तापस-

तापसका किसीने सत्कार नहीं किया । तापस इस प्रकार राजमहलको व्याकुल देखकर लौट गया और पुनः एक मासका उपवास करने लगा ।

जब राजाने शिरवेदनासे छुटकारा पाया तब वह पुन उसी तापसके पास गया, और उसे पारणेके लिए अपने यहां आनेकी सविनय प्रार्थना की । तापसने राजाकी प्रार्थनाको सुनकर फिर अपने उस नियमको दोहराया और बादमें राजाके यहां पारणाके लिये आना स्वीकार कर लिया । पारणाके दिन वह तापस फिर राजाके यहां आया, परन्तु सयोगसे उम दिन राजभवनमें आग लग गयी, और राजा 'आज तापसका पारणा दिन है' यह भूल गया । तापस राजभवनको आगकी लपटोंसे जलता हुआ देखकर लौट गया और फिर तीसरे महीनेका उपवास करने लगा । आगके शान्त होजानेपर राजाको स्मरण हुआ कि मैंने तापसको पारणाके लिये आज बुलाया था परन्तु राजभवनमें आग लग जानेसे मैं उसे भूल गया, बेचारा

व्याकुल इतु आया त तापसने कोऽपि स कार न कर्था तापस आ प्रभाषे राजभवेदने अस्थिर (व्यस्त) नेध पाछा कर्था अने क्षरी ते ओक भावना उपवास करवा लाव्यो

जनादे राजने भाधाने हु आवे भरी गये त्वादे ते क्षरीने तेज तापसनी पास गये अने तेने पारषा भाटे पोताने त्या आववानी सविनय प्रार्थना करी तापसे राजनी प्रार्थनाने साक्षणी क्षरीने पोताने ते नियम भीछ वार कछो अने पछी गजने त्या पारषा भाटे आववाने स्वीकार कर्था

पारषाने द्विपस ते तापस पाछे राजने त्या आव्यो परतु सयोगवशात् ते द्विपस राजभवनमा आग लागी गध तथा राज 'आज तापसने पारषाने द्विपस छे' ओ भूली गये तापसे राजभवनने आगनी ज्वालाओधी गजतु नेथु अने नेधने पाछे क्षरी गये अने पाछा त्रीज भडिनाना उपवास करवा लाव्यो आग शात गध गया पछी राजने याद आव्यु के-मे तापसने पारषा भाटे आने बोलाव्या इता परतु राजभवनमा आग लागी ज्वाली हु ते भूली गये जियारा तपस्वी

तस्मिन्नाश्रमे कथित्तापसो मास मास तपसा क्षपयन् पारणा कुर्वाण आसात् । राजा त तपस्विनं विबोध्य समतुष्यत्, तापस च स्वभवने पारणा कर्तुं प्रार्थयत् । तापसेनोक्तम्-पारणाया पञ्च दिनानि साम्प्रतमवशिष्यन्ते पञ्चदि वसानन्तर पारणायै तव राजधानीमागमिष्यामि, हे राजन् ! ममाय नियमो यत्-‘पारणादिने एकस्मिन्नेव गृहे भिक्षामाचरामि, यद्येकत्र भैक्ष्य न लभे तदा मास क्षपयामि’ इति तापसनियमं श्रुत्वा श्रेणिको राजा निजराजधानीमागमत् ।

ततः पञ्चसु दिवसेषु व्यतीतेषु पारणाऽहे तापसः श्रेणिकराज-द्वार मागतः । तस्मिन् दिने राज्ञो महत्या शिरोवेदनया राजभवनं व्याकुलमासी

तापस मास-मासके उपवाससे पारणा करता था । राजा उस तापस-को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और उससे प्रार्थना की-हैं महात्मन् ! आप मेरे यहाँ पारणा करनेके लिये पधारे । राजाकी ऐसी प्रार्थना सुनकर तापस बोला—

हे राजन् ! अभी मेरे पारणेमें पाँच दिन घटते (अवशिष्ट) हैं उनके पूर्ण होजानेपर मैं तुम्हारे यहाँ पारणेके लिये आउँगा परन्तु मेरा एक नियम है उसको ध्यानमें रखना-पारणेके दिन केवल एकही घर भिक्षाके लिए जाता हूँ । यदि वहाँ भिक्षा नहीं मिली तो फिर मासक्षपण (खमण) के बाद ही पारणा करता हूँ । राजा उस तापसके इस नियमको सुनकर अपनी राजधानीको लौट गया ।

उसके पाँच दिन बीत जानेके पश्चात् वह तापस पारणेके दिन, राजा श्रेणिकके द्वारपर आया । उस दिन राजाके सिरमें असह्य वेदना थी जिससे समूचा राजभवन व्याकुल था, इसलिये उस

करी पारणा करता हुआ राजा ते तापसन बोधन अत्यंत प्रसी यथा अने तेजेने प्रार्थना करी-हे महात्मन् ! आप भारे त्या पारणा करवाने पधारे ' राजाना अथी प्रार्थना सासणी तापस गोह्यो —

हे राजन् ! छः भारे पारणा करवाने पाय दिवस अवशिष्ट ( बाकी ) छे ते पूरा थई गया पछी हु तारे त्या । छः भारे आवीश परतु भारे ओक नियम छे ते ध्यानमा राखजे-हु पारणाने दिवस मात्र ओकत्र घेर भिक्षाने भारे लई छे जे त्या भिक्षा न भजे तो पणी पाछे करीने मास भ्रमण पछीज पारणा कर छे राजा ते तापसने आ नियम सासणीने पोतनी राजधानीजे पाछे गये।

तेने पाय दिवस बीती गया पछी ते तापस पारणाने दिवस राजा श्रेणिकना दारे आयो, ते दिवस राजाना माथमा असह्य वेदना थनी छती जेथा आधु राजभवन

इदं च कुगुरुसेवाफलम् अतः कुगुरुं विहाय सुगुरुं सेवनीयः । कु-  
गुरुसेवनेन न मोक्षमार्गज्ञानं न वा भवभ्रमणनिवृत्तिः । कुगुरोः सम्यक् सेवने-  
ऽपि नाऽऽत्मकल्याणम् । उक्तञ्च—

नाऽऽम्रं सुषिक्तोऽपि ददाति निम्बकं,

पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,

धर्मं शिवं वा कुगुरुर्न सश्रितः ॥ १ ॥

इति कूणिकस्य श्रेणिकघातकत्वे कारणविवरणम् ॥ सू० ३९ ॥

यह कुगुरुसेवाका फल है, इस लिये कुगुरुका छोड़कर सद-  
गुरुकी सेवा करनी चाहिए । कुगुरुकी सेवासे न मोक्षमार्गका ज्ञान  
होता है न भवभ्रमण हो मिटता है । कुगुरुकी अच्छी तरह सेवा  
करे तो भी आत्मकल्याण नहीं हो सकता । कहा भी है:-

“नाऽऽम्रं सुषिक्तोऽपि ददाति निम्बकं,

पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,

धर्मं शिवं वा कुगुरुर्न सश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—नीमको चाहे कीतना भी सींचे तोभी उसमें आमका  
फल नहीं आमकता । अच्छीसे अच्छी वस्तु खिलानेपर भी बन्ध्या  
गौ दूध नहीं दे सकती । दरिद्र राजाकी चाहे कितनी भी सेवा की

तथा तेन पुत्रं धत्तने जन्मन्थां अने कूष्ठिडं कुम्भाः’ ना नाभथी प्रसिद्धं यथे । नद्वान  
( नियाणा ) ना प्रभावथी ते श्रेष्ठिडने घातकं यथे ।

आ कुशुर्नेवानुं इल छे आथी कुशुर्ने छोडीने सइशुर्नी सेवा करपी जोधंछे  
कुशुर्नी सेवायां नथी मोक्षमार्गानुं ज्ञानं यत्तु के नथी भवभ्रमणं पण भटतु कुशुर्नी  
सारी रीते सेवा करीये तो पण आत्मकल्याणं यथं शक्यतु नथी कहु पण छे के —

नाऽऽम्रं सुषिक्तोऽपि ददाति निम्बकं,

पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रिय,

धर्मं शिवं वा कुगुरुर्न सश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—लोअछने गमे तेठल पाली पाली तो पण तेमा आणानुं इल न  
आपी शके साराभा सारी वस्तु भवभाववाथी पण बंध्या गाय दूध न आपी शके  
दरिद्र राजानी गमे तेठली पण सेवा करवाभा आवे तो पण ते धन न आपी शके

ફલ તદાઽહ જન્માન્તરેઽસ્ય રાજ્ઞો દુઃખદો ભવેયમ્' ઇતિ વિચાર્ય પરભવદુઃખ-  
દાયકનિદાન કૃતવાન્ ।

તતો રાજા તાપસનિકૃટમાગતઃ । તત્ર તાપસ ઉવાચ-હે રાજન્ ! ધૂયો  
ધૂયો મા નિમન્વ્ય ત્વ વિસ્મરસિ, 'અથ સર્વથા યાવજ્જીવ ચતુર્વિધાઽઽહાર પરિ-  
ત્યજ્ય પરભવે તવ દુઃખદો ભવેયમ્' એતાદૃશ પ્રતિજ્ઞાતવાનસ્મિ ।-

રાજા ધૃશ પ્રાર્થયામાસ પરશ્ચ તાપસો ન શાન્તકોપોઽભવત્ । રાજા  
વિવશતયા તાપસાશ્રમાન્નિવૃત્ત્ય સ્વભવનમુપાગતો રાજ્યકાર્યે લગ્નઃ । અસૌ તાપસ'  
કાલાવસરે કાલ કૃત્વા તસ્મૈવ રાજ્ઞશ્ચેલ્લનાદેવીગર્ભતઃ પુત્રત્વેનોદપદ્યત । પ્રાદુર્ભૂય  
'કૃણેકકુમાર' ઇતિ વિખ્યાતઃ । નિદાનપ્રભાવાત્ શ્રેણિકરાજસ્ય ઘાતકોઽભૂત ।

મી મેરી તપશ્ચર્યાકા ફલ હો તો મૈ ચાહતા હૂં કિ-ઈસ રાજા શ્રેણિકકો  
અગલે જન્મમેં દુઃખદાયી હોઁ' એસા વિચારકર જન્માતરમે દુઃખ  
દેનેવાલા નિદાન (નિયાણા) કિયા ।

ઉસકે બાદ રાજા તાપસકે પાસ આયા । તાપસને રાજાસે કહા-  
હે રાજન્ ! તૂ મુજે ઘારે ન્યૌના દેકર મૂલ જાતા હૈ, આજ મૈને  
એસી પ્રતિજ્ઞા કરલી હૈ કિ-'યાવજ્જીવ ચારોં પ્રકારકે આહારકો ત્યાગ  
કર પરભવમેં તુમ્હારે લિયે દુઃખદાયી થવૂં' ।

રાજાને તાપસસે ઘટ્ટ પ્રાર્થના કી પરન્તુ ઉમ્મકા કોપ શાન્ત  
નહી હુઆ । રાજા હારકર તાપસકે આશ્રમસે અપની રાજધાનીમે  
આયા ઓર રાજકાજમેં સલગ્ન હો ગયા । વહ તાપસ કાલાન્તરસે  
મરકર ઉસકી રાની ચેલ્લનાકે ગર્ભમેં આયા ઓર ઉસકા પુત્ર હોકર  
પૈદા હુઆ ઓર 'કૃણેકકુમાર' કે નામસે પ્રસિદ્ધ હુઆ । નિદાન  
( નિયાણા ) કે પ્રભાવસે વહ શ્રેણિકકા ઘાતક હુઆ ।

કેતરા ) ની બરાબર પછુ મારી તપશ્ચર્યાનુ કૃણ હોય તો હું ઇચ્છુ છુ કે-  
'હું આ રાજા શ્રેણિકને જન્માતરમા હું ખદાયી થાઉં' આમ વિચાર કરી જન્માતરમા  
હું ખ દેવાવાળો થવા નિદાન ( નિયાણુ ) કર્યું

ત્યાર પછી રાજા તાપસની પાસે આવ્યા તાપસે રાજાને કહ્યું-હે રાજન્ ! મને  
વારે વારે નિમત્રણ દઈને બૂલી જાય છે આજ મે એવી પ્રતિજ્ઞા કરી છે કે-'જ્યા  
સુધી છવુ ત્યા સુધી ચારે પ્રકારના આહારનો ત્યાગ કરી પરભવમા તમને હું ખદાયી થાઉં'  
રાજાએ તાપસને બહુ પ્રાર્થના કરી પછુ તેનો કોપ શાન્ત થયો નહિ રાજા હારી  
જઈને તાપસના આશ્રમેથી પોતાની રાજધાનીમા આવીને રાજકાર્યમા કામે લાગી  
ગયો તે તાપસ કાલાતરે મરી ગયા પછી તેની રાણી ચેલ્લનાના ગર્ભમા આવ્યો,

इदं च कुगुरुसेवाफलम् अतः कुगुरुं विहाय सुगुरुं सेवनीयः । कु-  
गुरुसेवनेन न मोक्षमार्गज्ञानं न वा भवभ्रमणनिवृत्तिः । कुगुरोः सम्यक् सेवने-  
ऽपि नाऽऽत्मकल्याणम् । उक्तञ्च—

नाऽऽत्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बकः,

पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रियः,

धर्मं शिवं वा कुगुरुं सश्रितः ॥ १ ॥

इति कूणिकस्य श्रेणिकयातकत्वे कारणविवरणम् ॥ सू० ३९ ॥

यह कुगुरुसेवाका फल है, इस लिये कुगुरुका छोड़कर सद-  
गुरुकी सेवा करनी चाहिए । कुगुरुकी सेवासे न मोक्षमार्गका ज्ञान  
होता है न भवभ्रमण हो मिटता है । कुगुरुकी अच्छी तरह सेवा  
करे तो भी आत्मकल्याण नहीं हो सकता । कहा भी है:-

“नाऽऽत्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बकः,

पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रियः,

धर्मं शिवं वा कुगुरुं सश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—नीमको चाहे कीतना भी सींचो तोभी उसमें आमका  
फल नहीं आसकता । अच्छीसे अच्छी वस्तु खिलानेपर भी बन्ध्या  
गौ दूध नहीं दे सकती । दरिद्र राजाकी चाहे कितनी भी सेवा की

तथा तेन पुत्रं यच्छने जन्मन्त्या अने कूणिक कुभार' ना नामथी प्रसिद्धं थये । नन्दान  
( नियाण्डा ) ना प्रभावथी ते श्रेष्ठिकने। धातक थये।

आ कुशुडनेवानु इल छे आथी कुशुडने छोडीने मङ्गुडनी सेवा करपी लोभको  
कुशुडनी सेवाया नथी मोक्षमार्गानु ज्ञान थतु के नथी अवग्रन्थ पण भटतु कुशुडनी  
सारी रीते सेवा करीये तो पण आत्मकल्याण थर्ष शकतु नथी कछु पण छे के —

नाऽऽत्र सुपिक्तोऽपि ददाति निम्बकः,

पुष्टा रसैर्वन्ध्यगवी पयो न च ।

दुःस्थो नृपो नैव सुसेवितः श्रियः,

धर्मं शिवं वा कुगुरुं सश्रितः ॥ १ ॥

अर्थात्—लोभडने गमे तेदछु पाण्णी पाम्ना ता पण तेमा आणानु इल न  
आपी शके साराभा सारी वस्तु अवराववाथी पण वध्या गाय दूध न आपी शके  
दरिद्र राजानी गमे तेदछी पण सेवा करवाभा आवे तो पण ते धन न आपी शके

मूलम्—तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रत्तो पुत्ते  
 चेह्लणाए देवीए अत्तए कूणियस्स रत्तो सहोयरे कणीयसे भाया  
 वेहल्ले नामं कुमारे होत्था सोमाले जाव सुरुवे । तएणं  
 तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएण रत्ता जीवतएणं चेव सेयणए  
 गधहत्थी अट्टारसवके य हारे पुव्वदिन्ने ।

तए ण से वेहल्ले कुमारे सेणिएणं गधहत्थिणा अतेउरपरि  
 यालसपरिवुडे चप नगरि मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता  
 अभिक्खणं २ गंग महानइ मज्जणयं ओयरइ ।

तएण सेयणए गधहत्था देवीओ सोंडाए गिण्हइ, गिण्ह-  
 ता अप्पेगइयाओ पुट्टे ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ, एवं  
 अप्पेगइयाओ कुंभे ठवेइ, अप्पेगइयाओ सीसे ठवेइ, अप्पे  
 गइयाओ दत्तमुसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ सोंडाए गहाय उट्टु  
 वेहास उविहइ, अप्पेगइयाओ सोंडागयाओ अदोलावेइ अप्पे  
 गइयाओ दंततरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेणं प्हाणेइ,  
 अप्पेगइयाओ अणेगेहि कीलावणेहिं कीलावेइ ।

तएणं चंपाए नयरीए सिघाडगतिगचउक्कचच्चरमहापहपहेसु  
 बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परुवेइ—एव खल्लु

जाय किन्तु वह धन नहीं देसकता, वैसेही कुत्सित गुरुको सेवामें  
 न श्रुतचारित्रलक्षण धर्मकी प्राप्ति होती है और न मोक्षकी प्राप्ति  
 हो सकती है ।

‘कृणिक श्रेणिकका घातक क्यों हुआ?’ इसका विवरण  
 उपरोक्त लिखे अनुसार है ॥ सू० ३९ ॥

वेदीन दी। कुत्सित (न्यायन) सुइनी सेवार्थी नहीं तो श्रुतचारित्रलक्षण धर्मकी  
 प्राप्ति घाती है नहीं भेक्षनी प्राप्ति यथ शकती

‘इति, श्रेणिको घातक कथं भवेति? तेन विवरण उपर दत्ता प्रमाद्येते (सू० ३८)

देवाणुप्पिया । वेहल्ले कुमारे एयणएणं गधहत्थिणा अतेउर०  
ति चेव जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं एस ण  
वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफल पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, नो  
कूणिए राया ।

तएण तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए  
समाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—‘एवं खल्ल वेहल्ले  
कुमारे सेयणएण गधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं  
कीलावेइ त एस ण वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफल पच्चणुब्भव-  
माणे विहरइ, नो कूणिए राया, त किं अम्ह रज्जेण वा जाव  
जणवएण वा जइ ण अम्ह सेयणगे गधहत्थी नत्थि ? त सेय  
खल्ल-मम कणिय राय एयमट्ठु विन्नवित्तए’ त्ति कट्ठु एव  
सपेहेइ, सपेहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
गच्छित्ता करयल० जाव एव वयासी—एव खल्ल सामी । वेहल्ले  
कुमारे सेयणएण गधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं  
कीलावेइ, त किण्ण सामी । अम्ह रज्जेण वा जाव जणवएण  
वा जइण अम्ह सेयणए गधहत्थी नत्थि ? ।

तएण से कूणिए राया पउमावईए देवीए एयमट्ठु नो  
आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण सा पउ-  
मावई देवी अभिक्खणर कणिय राय एयमट्ठु विन्नवेइ ।

तएण से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणर  
एयमट्ठु विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ वेहल्ल कुमार सदावेइ  
सदावित्ता सेयणग गधहत्थि अट्टारसवक च हार जायइ ।



तएण से वेहल्ले कुमारे कूणिय रायं एवं वयासी-एव खल्लु सामी । सेणिएणं रत्ता जीवन्तेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्टारसवके य हारे दिन्ने, त जइ ण सामी । तुब्भे मम रज्जस्स य रट्ठस्स य जणवयस्स य अद्धं दलह तो ण अहं तुब्भं सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवकं च हार दलयामि ।

तएणं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एवमट्ठ नो आत्ताइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं२ सेयणग गंधहत्थि अट्टार सवकं च हार जायइ ।

तएण तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रत्ता अभिक्खणं२ सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवकं च हार (जाएमाणस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पजित्था) एव खल्लु अक्खिउकामे णं गिण्हिउकामे णं उद्दालेउकामे ण मम कूणिए राया सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवकं च हार त जाव ममं कूणिय राया [नो जाणइ] ताव [सेय मे] सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवकं च हार गहाए अतेउरपरियालसपरिवुडस्स सभडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयरायं उवसपजित्ताण विहरत्तिए । एव सपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स रत्तो अत्तराणि जाव पडिजागरमाणे२ विहरइ ।

तएण से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयाइ कणियस्स रत्तो अत्तर जाणइ जाणित्ता, सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवकं च हार गहाए अतेउरपरियालसपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी

तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वेमालीए नयरीए अज्जग  
चेडय रायं उवसपज्जित्ता णं विहरइ ॥ ४० ॥

छाया—तत्र खलु चम्पाया नगर्यां श्रेणिकम्य राज्ञः पुत्रश्चेल्लनाया देव्या  
आत्मजः श्रेणिकस्य राज्ञः सहोदरः मनीयान् भ्राता वैहल्लयो नाम कुमार  
आसीत् सुकुमारयात्सुरूपः ।

ततः खलु तस्य वैहल्लयम्य कुमारस्य श्रेणिकेन राजा जीवता चैव  
सेचनको गन्धहस्ती अष्टारशक्को हारश्च पूर्वदत्तः । ततः खलु स वैहल्लयः  
कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतश्चम्पाया नगर्यां मध्य-  
मभ्येन निर्गच्छति, निर्गत्य अभीक्ष्णं गङ्गा महानदीं मज्जनकम् अवतरति ।  
ततः खलु सेचनका गन्धहस्ती देवीः शृण्वत्या गृह्णाति, ग्रहीत्वा अप्येक्षिकाः  
पृष्ठे स्थापयति, अप्येक्षिका स्नाने स्थापयति, अप्येक्षिकाः कुम्भे स्थापयति

‘तत्पथण चपाए’ इत्यादि—

उस चम्पानगरीमें श्रेणिक राजाका पुत्र, रानी चेल्लनाका  
आत्मज, राजा कृणिकका सहोदर छोटा भाई वैहल्लय नामका कुमार  
था, जो कि सुकुमार यावत् सुरूप था ।

उस वैहल्लय कुमारको राजा श्रेणिकने अपनी जीवितावस्थामें  
ही सेचनक नामका गन्ध हाथी और अठारह लडोवाला हार दिया ।  
एक दिन वह वैहल्लय कुमार सेचनक गन्ध हाथीपर चढ़कर अपने  
अन्न पुर परिवारके साथ चम्पानगरीके मध्यसे निकला, निकलकर  
गगानदीमें धारवार स्नान करनेके लिए अवतरित हुआ । तत्पश्चात्  
वह सेचनक हाथी वैहल्लयकी रानीयोंको अपनी मुड़से पकड़कर

‘तत्पथण चपाए’ इत्यादि

ते चम्पानगरीमा श्रेणिक राजानो पुत्र, राणी चेल्लनानो आत्मज (दीकरे)  
राज कृणिकने सहादर नानोभास वैहल्लय नामे कुमार हतो के ने सुकुमार अने  
सुरूप हतो

ते वैहल्लय कुमारने राजा श्रेणिके पोतानी छवित अवस्थाभा सेचनक नामने  
गन्धहाथी तथा अठार सरवाणो हार दीधो हतो ओक द्विषस ते वैहल्लयकुमार सेचनक  
गन्धहाथी उपर यडीने पोताना अत पुर परिवार साथे चम्पानगरीना मध्यभागभा यधने  
नीकल्यो, नीकणीने बारवार गगानदीमा स्नान करवा माटे हतयो त्यार पछी ते सेचनक  
हाथी वैहल्लयनी राणीओने पोतानी सूदमा पकडीने तेमाथी कोष-अकने पोतानी पीक

तएण से वेहल्ले कुमारे कूणिय रायं एवं वयासी-एव खलु सामी । सेणिएणं रन्ना जीवतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्टारसवके य हारे दिन्ने, त जइ ण सामी । तुब्भे मम रज्जस्स य रट्ठस्स य जणवयस्स य अद्धं दलह तो ण अहं तुब्भं सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवकं च हारं दलयामि ।

तएणं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एवमट्ठ नो आणाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं२ सेयणग गंधहत्थि अट्टार सवकं च हार जायइ ।

तएण तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खणं२ सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवकं च हार (जाएमाणस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पजित्था) एव खलु अक्खिविउकामे णं गिण्हिउकामे णं उदालेउकामे ण मम कूणिए राया सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवक च हार त जाव ममं कूणिय राया [नो जाणइ] ताव [सेयं मे] सेयणगं गंधहत्थि अट्टारसवक च हार गहाए अंतेउरपरियालसपरिवुडस्स सभंडमत्तोवगरणमायाए चपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जग चेडयराय उवसपजित्ताण विहरित्थिए । एव सपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स रन्तो अतराणि जाव पडिजागरमाणे२ विहरइ ।

तएण से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयाइ कणियस्स रन्तो अतर जाणइ जाणित्ता, सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवक च हार गहाय अंतेउरपरियालसपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए चपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी

गन्धहस्तिना यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति तदेव खलु वैदल्लयः कुमारो राज्यश्रीफलं प्रत्यनुभवन् विहरति नो कूणिको राजा, तत्किमस्माकं राज्येन वा, यावज्जनपदेन वा यदि खलु अस्माकं सेचनको गन्धहस्ती नास्ति ?, तच्छ्रेयः खलु मम कूणिक राजानमेतमर्थं विज्ञपयितुम् ।

इति कृत्वा एव मप्रेक्षते, सप्रेक्ष्य यत्रैव कूणिको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलं यावदेवमवादीत्—एव खलु स्वामिन् ! वैदल्लयः ? कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिना यावद् अनेकैः क्रीडनकैः क्रीडयति, तत्किं खलु स्वामिन् ! अस्माकं राज्येन वा यावत् जनपदेन वा, यदि खलु अस्माकं सेचनको गन्धहस्ती नास्ति ? ।

अन्तःपुर परिवारसे साथ अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है । वास्तविक राज्यश्रीका उपभोग तो वैदल्लयकुमार ही करता है, न कि राजा कूणिक ।

उसके बाद जब यह वृत्तान्त रानी पद्मावतीको मिला तो उसके मनमें ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि—‘वैदल्लयकुमार सेचनक हाथीके द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है इसलिए वही राज्यलक्ष्मी फलका उपभोग करता हुआ रहता है, न कि कूणिक राजा, इस लिये हमें इस राज्यसे और जनपदसे क्या लाभ ? यदि हमारे पास सेचनक हाथी नहीं है इसलिए यही अच्छा है कि कूणिक राजासे कहूँ कि वे वैदल्लयसे वह सेचनक हाथी लें’ । ऐसा विचारकर जहाँ कूणिक राजा था वहाँ गयी, और जाकर हाथ जोड़कर इस प्रकार बोली—हे स्वामिन् ! वैदल्लयकुमार सेचनक गन्धहस्तीके द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करता है, हे स्वामिन् ! यदि

वैदल्लय कुमार सेचनक गंध हाथी द्वारा अंतःपुर परिवार सहित अनेक प्रकारकी क्रीडा करे छे भरी रीते राज्यश्रीको उपभोग तो वैदल्लय कुमार करे छे—नहिं के राजा कूणिक’ तयार पछी न्यारे आ लकीकेन राष्ट्री पद्मावतीना ज्ञाप्यमा आदी तयारे तेना मनमा ओवो विचार उत्पन्न थयो ठ—वैदल्लयकुमार सेचनक हाथी द्वारा अनेक प्रकारकी क्रीडा करे छे भाटे तेन रजनलक्ष्मीना द्वयको उपभोग कन्तो रह छे नहिं के कूणिक राजा, भाटे अभने आ राजनथी के जनपदथी शु लाभ को आमारी पासे सेचनक हाथी न होय तो ?, तेथी कूणिक राजाने कहुं के वैदल्लय पासेथी ते सेचनक हाथी लई वे ओन साइ छे ओम विचार करी न्या कूणिक राजा जता त्या गछ अभने नहिं के लई ओडी आ प्रकारे बोली—हे स्वामी ! वैदल्लय कुमार सेचनक गंध हाथी

अप्येकिकाः शीर्षे स्थापयति, अप्येकिकाः दन्तमुशले स्थापयति, अप्येकिकाः शृण्डया गृहीत्वा उर्ध्वं वैहायसमुद्ब्रूते, अप्येकिकाः शृण्डागता आन्दोलयति, अप्येकिकाः दन्तान्तरेषु नयति, अप्येकिकाः शीरुरेण स्नपयति, अप्येकिकाः अनेकैः क्रीडनैः क्रीडयति ।

ततः खलु चम्पाया नगर्यां शृङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर-महापथ-पथेषु बहुजनोऽन्योऽन्यस्य एवमाख्याति यावत् प्ररूपयति-एव खलु देवानुप्रियाः । वैहल्लयः कुमारः सेचनकेन गन्धहस्तिनाऽन्तपुरं तदेव यावद् अनेकैः क्रीडनैः क्रीडयति तदेव खलु वैहल्लयः कुमारो राज्यश्रीफलं प्रत्यनुभवन् विहरति नो कृणिको राजा ।

ततः खलु तस्याः पद्माख्या देव्या अस्याः कथायाः लब्धार्थायाः सत्या अयमेतद्रूपो यावत् समुदपद्यत-एव खलु वैहल्लयः कुमारः सेचनकेन उनमेंसे किसी एकको पीठपर रखता है तो किसीको अपने कंधेपर, किसीको कुम्भस्थलपर रखता है तो किसीको अपने सिरपर, एव किसीको अपने दन्ताशूलपर रखता है, और किसीको सूडसे पकड़कर ऊपर आकाशमें लेजाता है । इसी तरह किसी एकको सूडमें दबाकर झुलाता है, किसी एकको अपने दन्ताशूलके बीचमें अधरसे रखलेता है । तथा किसी एकको अपनी सूडसे निकलते हुए फुहारोंसे स्नान कराता है ! एव किसी एकको अनेक प्रकारकी क्रीडाओंसे सन्तुष्ट करता है ।

यह वृत्तान्त नगर भरमें फैल गया, तथा बहुतसे मनुष्य गलियो, सड़की आदि स्थान-स्थानपर आपसमें इस प्रकार वार्तालाप करने लगे-हे देवानुप्रियो ! वैहल्लयकुमार सेचनक गंधहस्तीके द्वारा

ऊपर राखे तो कोधने ऊध ऊपर, कोधने कुलम्भण ऊपर राखे तो कोधने पोताना भाथा ऊपर अने अने प्रभावे कोधने पोताना दत्तशूल ऊपर राखे तो कोधने सूडधी पकडीने ऊपर आकाशमा लध गाय आवी रीते कोधने कोधने सूडमा हंभावीन डीयिका अवरावे कोधने पोताना दत्तशूलना वयमा अधरधी राणी ले तथा तथा कोधने कोधने पोतानी सूडमाधी नीकणता पुवारा वडे स्नान करावे, तेमज कोधने अनेक प्रकारना क्रीडाओंधी सगुष्ट करे छे

आ दडीकत आभा गाभमा इलाध गध तथा धव्वा मनुष्यो गलिआ सडकी आदि अनेक ठेकावे ठेकावे पोत पोताना आवी रीत वार्तालाप करवा लाग्या-हे देवानुप्रियो !

हारो दत्तः, तद् यदि खलु स्वामिन् ! यूय महा राज्यस्य च यावत् जन-  
पदस्य च अर्द्धं दत्तं तदा खल्वह युष्यस्य सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं  
च हारं ददामि ।

ततः खलु स कूणिको राजा वैदल्लयस्य कुमारस्य एतमर्थं नो  
आद्रियते नो परिजानाति, अभीक्ष्ण २ सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं  
च हारं याचते ।

ततः खलु तस्य वैदल्लयस्य कुमारस्य कूणिकेन राज्ञा अभीक्ष्ण २  
सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं [ यान्यमानस्य सतोऽयमेतद्रूप  
आध्यात्मिकं ४ समुदपद्यत ] एव खलु आक्षेप्तुकामः खलु, ग्रहीतुकामः खलु,  
आच्छेदतुकामः खलु मा कूणिको राजा सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च  
हारम् तद् यावन्मा कूणिको राजा [ ना जानाति ] तावत् [ श्रेयो मम ]  
सेचनकं गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हारं गृहीत्वान्तःपुरपरिवारमपरिवृतस्य सभा-

दिया है, सो यदि आप उसे लेना चाहते हैं तो मुझे भी राज्या  
और जनपदका आधा भाग दीजिये फिर मैं भी आपके लिये इन  
दोनोंको देदूंगा । परन्तु राजा कूणिकने वैदल्लयकुमारकी इस बातको  
पसन्द नहीं किया, न कभी इसको अच्छी तरह सोचाही, परन्तु  
घार-घार अपनी माँगको दोहराता रहा ।

तदन्तर कूणिक राजा द्वारा बार २ हाथी और हार माँगनेपर  
वैदल्लय अपने मनमें सोचता है कि कूणिक राजा मेरे पर मिथ्यादोष  
लगा कर मेरा सेचनक गंधहायी और हार मुझसे छीन लेना चाहता  
है, इसलिये उचित है कि जबतक कूणिक मुझसे हाथी और हार

तथा अठार सरवाणी हार दीधो छे जे त आप लेवा आहो छ। तो भने पक्ष  
राज्य तथा जन पदना अर्धो लाग आपा पछी हु पक्ष आपन आ भाने आपीश  
परतु राजा कूणिक वैदल्लय कुमारनी आ बात पनव करी नहि न तो कही जे बातने।  
हीक रीते विचार करी जेथो मात्र बारबार पोतानी मागणी कर्या करी

त्यार पछी कूणिक राजा तत्कथं बारबार हाथी तथा हारनी मागणी थत  
वैदल्लय पाताना मनमा विचार करे छ के आ कूणिक राजा मारा उपर जोटे दोष  
लगाडीने मारे सेचनक गंध हाथी अने हार मारी पासेथी पडावी लेवा भागे छे  
माटे अज वाजणी छ के ०५ सुधी कूणिक मारी पासेथी ते हाथी अने हार न  
पडावी दीजे त पक्षीज सेचनक गंध हाथी तथा अठार सरवाणी हार तथा अत भुद

ततः खलु म कूणिको राजा पद्मावत्या देव्या एतमर्थं नो आद्रियते,  
नो परिजानाति, तूष्णीकः सतिष्ठते ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी अभीक्ष्णं कूणिक राजानमेतमर्थे  
व्रित्तपयति ।

ततः खलु स कूणिको राजा पद्मावत्या देव्या अभीक्ष्णं एतमर्थं  
विज्ञाप्यमानः अन्यदा कदाचित् वैहल्लय कुमारः शब्दयति शब्दयित्वा सेचनक  
गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं हारं याचते ।

ततः खलु स वैहल्लयः कुमारः कूणिक राजानमेवमवादीन्—एव खलु  
स्वामिन् ! श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रश्च  
हमारे पास सेचनक गन्ध हाथी नहीं है तो इस राज्य और  
जनपदसे क्या लाभ ? ।

यह सुनकर राजा कूणिकने पद्मावती देवीके इस विचारका  
आदर नहीं किया और न उस घातकी ओर ध्यान दिया, केवल  
शुपचाप रह गया ।

परन्तु उस राजा कूणिकने रानी पद्मावतीके द्वारा बारबार  
विज्ञापित होनेके कारण एक समय कुमार वैहल्लयको अपने यहाँ  
बुलाया, बुलाकर उससे सेचनक गन्ध हाथी और अट्टारह लडीवाला  
हार मागा ।

कूणिकका ऐसा अभिप्राय जानकर वैहल्लयकुमारने इस प्रकार  
कहना आरम्भ किया—हे स्वामिन् ! राजा श्रेणिकने अपनी जीविता  
वस्थामें ही मुझे सेचनक गन्ध हाथी और अट्टारह लडीवाला हार

द्वारा अनक प्रकारनी कडा करे छे ह स्वामी ! जे आरखी पासे सेचनक गंध हाथी  
न होय तो आ राज्य अने जनपदथा शु लाभ ?

आ साजगी राजा कूणिके पद्मावती देवीना आ विचारने आदर कयो नहि  
के न ते वात त इ ध्यान दीधु मात्र शुपायुप रछा

त्यार पछी ते राजा कूणिके राखी पद्मावतीना भारइत बार बार विज्ञापन कर-  
वाना आवतु तेथी जेके पथन वैहल्लय कुमारने पोताने त्या गोलावये अने तेनी  
पासेगी सेचनक गंध हाथी तथा अदर सरवाणो हार माग्यो

कूणिकने अवे अभिप्राय राखीने वैहल्लय कुमार आ प्रकारे ठडेवा भाउयु—  
हे स्वामिन् ! श्रेणिक राजा जे पोतानी श्रुति अवस्थामा अने सेचनक गंध हाथी

मूलम्—तएण से कूणिए राया इमीसे कहाए लछट्टे समाणे  
—एव खलु वेहल्ले कुमारे मम असंविदितेणं सेयणगं गध-  
हर्त्थि अट्टारसवकं च हार गहाय अतेउरपरियालसंपरिखुडे जाव  
अज्जय चेडयं राय उवसंपज्जित्ता ण विहरइ, तं सेयं खलु  
मम सेयणगं गंधहर्त्थि अट्टारसवकं च हार आणेउ दूयं पेसि-  
त्तए, एवं सपेहेइ, सपेहित्ता दूयं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-  
गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिया । वेसालिं नयरि, तत्थ ण तुम  
मम अज्ज चेडग राय करतल० वद्धावेत्ता एव वयाहि—एव  
खलु सामी । कूणिए राया विन्नवेइ—एस ण वेहल्ले कुमारे  
कूणियस्स रन्नो असंविदितेणं सेयणगं गधहर्त्थि अट्टारसवकं  
च हार गहाय इह हव्वमागए, तए ण तुब्भे सामी । कणियं  
राय अणुगिण्हमाणा सेयणगं गधहर्त्थि अट्टारसवकं च हार  
कणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्ल कुमार च पेसेह ।

तए णं से दूए कूणिएण० करतल० जाव पडिसुणित्ता  
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा चित्तो  
जाव वद्धावित्ता एव वयासी—एवं खलु सामी । कूणिए राया  
विन्नवेइ—एस ण वेहल्ले कुमारे तहेव भाणियव्व जाव वेहल्ल  
कुमार च पेसेह ।

तए ण से चेडए राया त दूय एव वयासी—जह चैव  
ण देवाणुप्पिया । कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेह्णुणाए  
देवीए अत्तए मम नत्तए तहेव ण वेहल्ले वि कुमारे सेणि-

ह्याथी, अठारह लडीवाला हार ओर सभी प्रकारकी गृहसामग्री लेकर  
चम्पानगरीस निकल वैशालीनगरीमें आर्य चेटकके पास पहुँचकर  
रहने लगा ॥ ४० ॥

प्रकारकी गृह सामग्री लपटने चम्पानगरीथी नीकणी वैशाली नगरीभा आर्य चेटकनी  
पासे पहुँची २६वा लाय्ये (४०)





सपद्य खलु विहरति, तच्छ्रेयः खलु मम सेचनक गन्धहस्तिनमष्टादशवक्र च  
 हागम् आनेतु दूत प्रेषयितुम्, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य दूत शब्दयति, शब्दयित्वा  
 एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व देवाणुप्रिय ! वैशाली नगरी, तत्र खलु त्व मम  
 आर्य चेटक राजान करतल० वर्द्धयित्वा एव वद-‘एव खलु स्वामिन् ! कूणिको  
 राजा विज्ञापयति-एष खलु वैहल्ल्य कुमारः कूणिकस्य राज्ञः असविदितेन  
 सेचनक गन्धहस्तिनमष्टादशवक्र च द्वार गृहीत्वा इह हव्य मागतः, ततः खलु  
 यूय स्वामिन् ! कूणिक राजानमनुगृह्णन्तः सेचनक गन्धहस्तिनमष्टादशवक्र च  
 द्वार कूणिकस्य राज्ञः प्रत्यर्पयत, वैहल्ल्य कुमार च प्रेषयत ।

ततः खलु म दूतः कूणिकेन० करतल० यावत् प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वक  
 गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यथा चित्तो यावद् वर्द्धयित्वा एवमवादीत्-

आर्य चेटकके पास जाकर रहने लगा है, इस कारण मुझे उचित है  
 कि दूत भेजकर सेचनक गंध हाथी और अठारह लडीवाला हार  
 भगावूँ, ऐसा विचारकर दूतको बुलाता है और बुलाकर इस प्रकार  
 कहता है —

हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें मेरे नाना चेटकके पास तुम  
 जभो उनके पास जाकर हाथ जोड़ जय-विजय शब्दके साथ राजाको  
 बधाकर इस प्रकारसे कहो-हे स्वामिन् राजा कूणिक इस प्रकार  
 विज्ञप्ति करते हैं कि मुझसे बिना कुछ कहे ही वैहल्ल्य कुमार सेचनक  
 गन्ध हाथी और अठारह लडीवाला हार लेकर आपके यहाँ जव्दीसे  
 चला आया है, सो आप वैहल्ल्यकुमारको सेचनक हाथी और अठारह  
 लडीवाले हारके सहित कृपा करके हमारे पास भेज दें । इसके बाद  
 वह दूत राजा कूणिकके द्वारा कहे हुए वचनोंको स्वीकारकर अपने

गृहसमाग्रा लघने - नाना आर्य चेटकनी पास लघने रह्यो छे आ द्वारस्थिता भारे भाटे  
 येव्य छे क दूत भोक्षणीने सेचनक गंध हाथी अने अठार सरना द्वार भगावी लठि  
 जेवो विचार करी दूतन भोलावी आभ तेने कहे छे- हे देवानुप्रिय ! वैशाली  
 नगरीमा मारा नाना चेटकनी पास तु न तेनी पास लघ हाथ जेडीने जय-विजय  
 शब्दथी - नानने बधावीने आ प्रकारे कहे जे-हे स्वामिन् ! राजा कूणिक आ प्रकारे  
 विज्ञाप्ति करे छे-अने कछ कछा वगरज कुमार वैहल्ल्य सेचनक गंध हाथी अने  
 अठार सरनाजा द्वार लघन आपनी पास लघीथा याव्यो आवयो छे भाटे आप  
 वैहल्ल्य कुमारने सेचनक गंध हाथी अने अठार सरना द्वार सहित कृपा करीने  
 मारी पसे भोक्षणी आवो त्यार पछी ते दूत राजा कूणिक द्वारा कहेला वचनानो

यस्स रन्नो पुत्ते चेच्छणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए, सेणिएणं  
रत्ता जीवतेणं चैव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्टार-  
सवके हारे पुव्वदिन्ने, त जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज  
स्स य रट्टस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो ण सेयणं  
गंधहत्थि अट्टारसवकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि,  
वेहल्लं च कुमारं पेसेमि । त दूय सक्कारेइ समाणेइ पडिविसज्जेइ ।

तएण से दूए चेडएण रन्ना पडिविसज्जिए समाणे जेणेव  
चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट  
आसरह दूरुहइ, दूरुहित्ता वेसालिं नगरिं मज्झं-मज्झेण निग्ग-  
च्छइ, निग्गच्छित्ता सुहेहि वसहिपायरासेहिं जाव वद्धावित्ता  
एवं वयासी-एव खल्लु सामी । चेडए राया आणवेइ-जह चैव  
ण कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेच्छणाए देवीए अत्तए  
मम नत्तुए त चैव भाणियव्व जाव वेहल्ल च कुमार पेसेमि,  
त न देइ सामी । चेडए राया सेयणग गंधहत्थि अट्टारसवक  
च हार, वेहल्लं नो पेसेइ ॥ ४१ ॥

छाया—ततः खल्लु स कूणिको राजा अस्था' कथाया लब्धार्थ' सन  
'एव खल्लु वैहल्लयः कुमारी मम असविदितेन सेचनक गन्धहस्तिनमष्टादशशतक  
च हारं गृहीत्वा अन्त पुरपरिवारसपरिवृतो यावद् आर्यक चेटक राजानमुप-

‘तएण से कूणिए’ इत्यादि—

उसके बाद जब यह समाचार राजा कूणिकको ज्ञात हुआ  
तो उसने विचार किया कि वैहल्लयकुमार मुझसे बिना कुछ कहे-  
सुने अपने अन्तःपुर परिवारके सहित, सेचनक गंधहस्ती अठारह  
लड़ीवाला हार और सभी प्रकारकी गृहसामग्रियों को लेकर राजा

‘तएण से कूणिए’ इत्यादि

त्यार पछी ल्यारे आ समाचारनी राजा वुखिउने जणर पडी त्यारे तेहे  
विचार क्यो के वैहल्लय कुमार अने के छ पण केह्यो-साभल्या पञ्च-पोताना अते,  
पुर परिवार सहित सेचनक गंध हाथी, अठार सरने, हार अने तामाभ प्रकारनी,

सेचनक गन्धहस्तिनम् अष्टादशवक्रं च हार कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयामि, वैह-  
ल्यं च कुमार प्रेषयामि । त दूत सत्करोति सम्मानयति प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स दूतः चेटकेन राज्ञा प्रतिविसर्जितः सन् यत्रैव चतुर्घण्टः  
अश्वरथस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चतुर्घण्टमश्वरथ दूरोहति, दूरुह्य वैशालीं  
नगरीं मध्यमभ्येन निर्गच्छति, निर्गत्य शुभैर्वसतिप्रातराशौर्यावद् वर्धयित्वा एव-  
मवादीत्-एव खलु स्वामिन् । चेटको राजा आज्ञापयति-यथैव खलु कूणिको  
राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेलनाया देव्या आत्मजः मम नप्तकः, तदेव  
भणितव्यं यावद् वैहल्यं च कुमार प्रेषयामि । तन्न ददाति खलु स्वामिन् !

श्रेणिक राजाने अपनी जीवितावस्थामे ही कुमार वैहल्यको  
सेचनक गंधहाथी और अठारह लड़ीवाला हार दिया था । तो भी  
यदि राजा कूणिक हाथी और हार लेना चाहता है तो उसे चाहिए  
कि वह भी वैहल्यकुमारको राज्य राष्ट्र और जनपदका आधा भाग  
देदे । ऐसा होनेपर मैं हाथी और हारके साथ कुमार वैहल्यको  
भेज सकता हूँ । इस प्रकार कहनेके बाद राजा चेटकने उस दूतका  
आदर सत्कारकर उसे विसर्जित ( विदा ) किया । चेटक राजासे  
विसर्जित वह दूत जहाँपर चार घण्टावाला रथ था वहाँ आया, आकर  
उस रथपर चढ़ा और वैशाली नगरीके मध्यसे निकला । निकलकर  
अच्छी २ वस्तिर्योंमें विश्राम तथा प्रातःकालिक भोजन करता हुआ  
सुख-शांतिपूर्वक चम्पानगरीमें पहुँचा । पहुँचकर राजा कूणिकके पास जा  
हाथ जोड़ जय-विजय शब्दके साथ राजाको बधाकर इस प्रकार बोला-“

श्रेष्ठ राजाओ पोतानी जिवित अवस्थाभा न कुमार वैहल्यने सेचनक गंध  
हाथी तथा अठार सरने हार दीधी हतो छता पणु ने राजा कूणिक हाथी तथा  
हार लेवा थाहता होथ तो तेणु पणु वैहल्य कुमारने राज्य राष्ट्र अने जनपदभा  
अरधे भाग देवे नेछने अने ओम थाय तो हु हाथी तथा हारनी साथे कुमार  
वैहल्यने भोक्खी शुकु छु आ प्रकारे कब्बा पछी राजा चेटके ते हतने आहा  
सत्कार करी तेने विहाय आपी चेटक राजा पासेधी विहाय लछ ते हत तथा आ  
घटवाणे रथ हतो तथा आण्ये आवीने ते रथ उपर गडीने वैशाली नगरीनी  
मध्यभा थधने नीकण्ये सारी सारी वस्तीभा विश्राम तथा सवारनु भोजन करतो  
थके सुख शांतिपूर्वक चम्पानगरीभा पडोव्ये पछी राजा कूणिक पासे नर्छ पडोव्ये  
हाथ नेडी नय विजय शब्दनी साथे राजा कूणिकने बधावीने आ प्रकारे कब्बु —

एव खलु स्वामिन् ! कणिको राजा विज्ञापयति-एष खलु वैहल्ल्यः कुमार  
स्तथैव भणितव्य यावद् वैहल्ल्य कुमार प्रेषयत ।

ततः खलु स चेदको राजा त दूतमेवमवादीत् यत्रैव खलु देवानु-  
प्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेष्टनाया. देव्या आत्मजः,  
मम नप्तकः, तथैव खलु वैहल्ल्योऽपि कुमारः श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रः, चेष्टनाया  
देव्या' आत्मजो, मम नप्तकः, श्रेणिकेन राज्ञा जीवता चैव वैहल्ल्याय कुमाराय  
सेचनको गन्धहस्ती अष्टादशवक्रो हारः पूर्वविदत्तः, तद् यदि खलु कूणिको  
राजा वैहल्ल्याय राज्यस्य च राष्ट्रस्य च जनपदस्य चाद्रं ददाति तदा खलु

घर आया और चार घटावाले रथमें बैठ रवाना हुआ । वह वैशाली  
पहुँचकर आर्य चेटकको राथ जोड़ जय विजयके साथ बधाकर परदेशी  
राजाके चित्त प्रधानके समान इस प्रकार करता है-'

हे स्वामिन् ! राजा कूणिक इस प्रकार विज्ञप्ति करते हैं कि-  
मेरा छोटा भाई वैहल्ल्यकुमार मुझसे बिना कुछ कहे ही सेचनक  
गधहाथी और अठारह लड़ीवाला हार लेकर आपके पास चला आया  
है इसलिये आप इसे हाथी और हारके साथ मेरे पास भेज दें ।

यह सुनकर चेटक राजाने उस दूतको इस प्रकार उत्तर दिया  
हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार राजा कूणिक, श्रेणिक राजाका पुत्र, चेष्टना  
रानीका आत्मज और मेरा दौहित्र है वसी प्रकार कुमार वैहल्ल्य  
भी श्रेणिक राजाका पुत्र, रानी चेष्टनाका आत्मज और मेरा दौहित्र है ।

સ્વીકાર કરી પોતાને ઘેર આવ્યો અને ચાર ઘટાવાળા રથમાં બેસી રવાના થયો તે  
વૈશાલી પહોંચી ને આર્ય ચેટકને હાથ ભેટી જય-વિજય પૂર્વક બધાનીને પરદેશી  
રાજાના પ્રધાન ચિત્તની પેઠે આ પ્રકારે કહે છે -

હું સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિક આ પ્રકારે વિજ્ઞપ્તિ કરે છે કે-મારો નાનો ભાઈ  
વૈહલ્લ કુમાર મને કંઈ પણ કહ્યા વગર જ સેચનક ગધ હાથી અને અઠાર સર  
વાળો હાર લઈ આપની પાસે આવ્યો આવ્યો છે માટે આપ તેને હાથી અને હાર  
સાથે મારી પાસે મોકલી આપો

આ સાંભળી ચેટક રાજાએ તે દૂતને આ પ્રકારે ઉત્તર દીધો-હું દેવાનુપ્રિય !  
જે પ્રકારે રાજા કૂણિક શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર ચેટના ગણીનો આત્મજ તથા મારો  
દોહિત્ર છે તેજ પ્રકારે કુમાર વૈહલ્લ પણ શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર રાણી ચેષ્ટનાનો  
દોહિત્ર અને મારો દોહિત્ર છે

मलोपयन्तः सेचनक गन्धहस्तिनम्, अष्टादशवक्र च हार कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयत, वैहल्ल्य कुमार प्रेषयत ।

ततः खलु स दूतः कूणिकस्य राज्ञस्तस्तथैव यानद् वर्धयित्वा एवमवादीत्-एव खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञापयति-यानिकानीति यावत् वैहल्ल्य कुमार प्रेषयत ।

ततः खलु स चेटको राजा त दूतमेवमवादीत्-यथा चैव खलु देवानुमिय ! कूणिको राजा श्रेणिकम्य राज्ञः पुत्रः चेलनाया देव्या आत्मजः,

एक सेचनक गन्धहाथी, दूसरा अठारह लडोवाला हार । हे स्वामिन् ! राजकुलकी परम्परागत स्थितिका नाश जिससे न हो इसलिये आप हाथी और हार मुझे अर्पित कर दें और वैहल्ल्य कुमारको भेज दें ।

उसके बाद वह दूत कूणिक राजाकी इस विज्ञप्तिको स्वीकार कर अपने घर आया, और वहाँसे वैशालीनगरीमें जाकर राजा चेटकके सम्मुख उपस्थित हुआ । तथा उन्हें हाथ जोड़ जय विजय शब्दके साथ यथाकर, राजा कूणिककी विज्ञापना को इस प्रकार सुनायी-हे स्वामिन् ! राजा कूणिककी यह विज्ञापना है कि-जो कुछ भी रत्न उत्पन्न होता है उसपर राजकुलका अधिकार होता है । ये दोनों रत्न श्रेणिक राजाके राज्यकालमें उत्पन्न हुए हैं, इसलिये हे स्वामिन् ! जिससे राजकुलकी परम्परागत स्थिति विनष्ट न हो यह ध्यानमें लेकर हाथी और हारको दें तथा वैहल्ल्यकुमारको भी कूणिक राजाके पास भेज दें ।

अने पीणु अठारसरने हार, हे स्वामिन् ! राजकुलकी परम्परागत स्थितिना नाश जेथी न थाय ते भाटे आप हाथी अने हार भने अर्पित करे अने वैहल्ल्य कुमारने भेजवली हे ।

त्यार पछी ते दूत कूणिक राजाकी आ विज्ञप्तिने स्वीकार करी पोताने घर आय्ये अने त्याही वैशाली नगरीमा जेथे राजा चेटकनी समुप उपस्थित थिये अने तेभने हाथ जेडी जय विजय शब्दथी यथावी राजा कूणिकनी विज्ञापनाने आ प्रकारे सज्जणावी-हे स्वामिन् ! राजा कूणिकनी जेभ विज्ञापना छे ते जे कथ पणु रत्न उत्पन्न थाय ते तेना उपर राजकुलने अधिकार होय छे आ जे रत्ने श्रेणिक राजाका राज्य कालमा उत्पन्न थया छे भाटे हे स्वामिन् ! जेथी राजकुलकी परम्परागत स्थिति विनष्ट न थाय ते ध्यानमा लब्ध हाथी तथा हारने अर्पण करे अने भेजवली आये ।

જાવ મિસિમિસેમાણે તિવલિયં મિડર્ડિં નિડાલે સાહદુ છેડગ  
 રાયં એવ વદાહિ-હ મો છેડગરાયા ! અપત્થિયપત્થયા ! દુરત  
 જાવ-પરિવજિયા ! એસ ણં કૂણિએ રાયા આણવેઝ-પચ્છપ્પિનાહિ  
 ણં કૂણિયસ્સ રન્નો સેયણગ ગધહત્થિ અદ્ધારસવકં ચ હારં  
 વેહલ્લ ચ કુમાર પેસેહિ, અહત્થા જુહ્ધસજ્ઞા ત્વિદ્દાહિ, એસ ણ  
 કૂણિએ રાયા સવલે સવાહણે સખધાવારે ણં જુહ્ધસજ્ઞે ઇહ  
 હવ્વમાગચ્છઙ્ગ ॥ ૪૨ ॥

છાયા-તત્ત સ્વલ્લ સ કૂણિકો રાજા દ્વિતીયમપિ દત્ત શબ્દયિત્વા એવ-  
 મવાદીત્-ગચ્છ સ્વલ્લ ત્વ દેવાનુપ્રિયે ! વૈશાલ્લી નગરી, તત્ત સ્વલ્લ ત્વ મમ આર્યક  
 ચેટક રાજાન યાવદ્ એવ વદ-એવ સ્વલ્લ સ્વામિન્ ! કૂણિકો રાજા વિજ્ઞપયતિ-  
 યાનિ કાનિ રત્નાનિ સમુપ્પન્નંતે સર્વાણિ તાનિ રાજકુલભામીનિ, શ્રેણિકમ્પ  
 રાજો રાજ્યશ્રિય કુર્વત, પાલયતો દે રત્ને સમુપ્પન્ને, તત્તથા-સેવનકો ગન્ધ  
 હસ્તી, અષ્ટાદશવક્રો હાર, તત્તસ્વલ્લ યુય સ્વામિન્ ! રાજકુલપરમ્પરાગતા સ્થિતિ

‘ તણ સે કૂણે ’ इत्यादि-

इसके बाद कूणिक राजाने दूमरी बार फिर दूनको बुलाया  
 और कहा-हे देवानुप्रिय ! वैशालीनगरीमें जाओ, वहाँ जाकर मेरे  
 नाना राजा चेटकको हाथ जोड़ कर जय विजय शब्दके साथ उन्हें  
 बधाकर इस प्रकार कहा कि-हे स्वामिन् ! राजा कूणिक की यह  
 विज्ञापना है कि जो कुछ भी रत्न पैदा होता है उसपर राजकुलका  
 ही अधिकार है। श्रेणिक राजाके राज्यकालमें दो रत्न उत्पन्न हुए,

‘ તણ સે કૂણે ’ इत्यादि

આ પછી કૂણિક રાજાએ બીજી વાર પાછો ફરતે બોલાવ્યો અને કહ્યું-  
 હે દેવાનુપ્રિય ! વૈશાલી નગરીમાં જઈને મારા નાના રાજા ચેટકને હાથ ભેટીને જય  
 વિજય શબ્દો સાથે વધારી આ પ્રકારે કહેજે કે-હે સ્વામિન્ ! રાજા કૂણિકની એવી  
 વિજ્ઞાપના છે કે જે કંઈ પણ રત્ન પેદા થાય છે તેના ઉપર રાજકુલનો જ અધિકાર  
 છે એણિક રાજાના રાજ્ય કાલના બે રત્ન ઉત્પન્ન થયા છે-એક સેયનક ગધહાથી

मलोपयन्तः सेचनक गन्धहस्तिनम्, अष्टादशवक्र च हार कूणिकाय राज्ञे प्रत्य-  
र्पयत, वैहल्य कुमार प्रेषयत ।

ततः खलु त दूत कूणिकस्य राज्ञस्तस्तथैव यावद् वर्धयित्वा एव-  
मवादीत्-एव खलु स्वामिन् ! कूणिको राजा विज्ञापयति-यानिकानीति यावत्  
वैहल्य कुमार प्रेषयत ।

ततः खलु स चेटको राजा त दूतमवमवादीत्-यथा चैव खलु  
देवानुप्रिय ! कूणिको राजा श्रेणिकस्य राज्ञ पुत्रः चेलनाया देव्या आत्मजः,

एक सेचनक गन्धहाथी, दूसरा अठारह लडोवाला हार । हे स्वामिन् !  
राजकुलकी परम्परागत स्थिति का नाश जिससे न हो इसलिये आप  
हाथी और हार मुझे अर्पित करें और वैहल्य कुमार को भेज दें ।

उसके बाद वह दूत कूणिक राजा की इस विज्ञप्तिको स्वीकार  
कर अपने घर आया, और वहाँसे वैशालीनगरीमें जाकर राजा  
चेटकके सम्मुख उपस्थित हुआ । तथा उन्हें हाथ जोड़ जय विजय  
शब्दके साथ बधाकर, राजा कूणिककी विज्ञापना को इस प्रकार  
सुनायी-हे स्वामिन् ! राजा कूणिककी यह विज्ञापना है कि-जो कुछ  
भी रत्न उत्पन्न होता है उसपर राजकुलका अधिकार होता है । ये  
दोनों रत्न श्रेणिक राजाके राज्यकालमें उत्पन्न हुए हैं, इसलिये हे  
स्वामिन् ! जिससे राजकुलकी परम्परागत स्थिति विनष्ट न हो यह  
ध्यानमें लेकर हाथी और हारको दें तथा वैहल्यकुमारको भी कूणिक  
राजाके पास भेज दें ।

अने भीष्म अठारसरने हार, छे स्वामिन् ! राजकुलनी परंपरागत स्थितिने नाश  
नेथी न थाय ते भाटे आप हाथी अने हार अने अर्पित करे अने वैहल्य कुमार  
रने भेजवली हो ।

त्यार पछी ते हूत कूणिक राजानी आ विज्ञप्तिने स्वीकार करी पोताने घेर  
आव्यो अने त्याही वैशाही नगरीमा जई राजा चेटकनी समुप उपस्थित थयो  
अने तेमने हाथ जोडी जय विजय शब्दथी बधावी राजा कूणिकनी विज्ञापनाने आ  
प्रकारे सळणायी-छे स्वामिन् ! राजा कूणिकनी ओम विज्ञापना छे के के के कई पछु  
रत्न उत्पन्न थाय ते तेना उपर राजकुलने अधिकार होय छे आ के रत्ने श्रेणिक  
राजाना राज्य कालमा उत्पन्न थया छे भाटे छे स्वामिन् ! नेथी राजकुलनी पर  
परागत स्थिति विनष्ट न थाय ते ध्यानमा लई हाथी तथा हारने अर्पण करे अने  
वैहल्य कुमारने पछु कूणिक राजानी पास भेजवली आयो ।



યથા પ્રથમ યાવદ્ વૈહલ્ય ચ કુમાર પ્રેષયામિ । ત દૂત સત્કરોતિ સમ્માન-  
યતિ પ્રતિવિસર્જયતિ ।

તતઃ સ્વલ્પ સ દૂતો યાવત્ કૂણિકસ્ય રાજ્ઞો વર્ધયિત્વા એવમવાદીત્-  
ચેટકો રાજા આજ્ઞાપયતિ—યથા ચૈવ સ્વલ્પ દેવાનુપ્રિય ! કૂણિકો રાજા શ્રેણિ-  
કસ્ય રાજ્ઞઃ પુત્રઃ ચેલ્લનાયા દેવ્યા આત્મજઃ યાવદ્ વૈહલ્ય કુમાર પ્રેષયામિ,  
તન્ન દદાતિ સ્વલ્પ સ્વામિન્ ! ચેટકો રાજા સેચનક ગન્ધહસ્તિનમ્ અષ્ટાદશ  
વક્ષ ચ દાર, વૈહલ્ય કુમાર નો પ્રેષયતિ ।

દૂત દ્વારા રાજા કૂણિકની એવી વિજ્ઞાપિત સુનકર રાજા ચેટ  
કને દૂતસે હસ પ્રકાર કહના પ્રારંભ કિયા—હે દેવાનુપ્રિય ! જિસ  
પ્રકાર રાજા કૂણિક શ્રેણિક રાજાકા પુત્ર હૈ, ચેલ્લના દેવીકા આત્મજ  
હૈ ઓર મેરા દૌહિત્ર હૈ ઓસી પ્રકાર કુમાર વૈહલ્ય મી શ્રેણિક  
રાજાકા પુત્ર—ચેલ્લના દેવીકા આત્મજ ઓર મેરા દૌહિત્ર હૈ, રાજા  
શ્રેણિકને અપની જીવિતાવસ્થામૈં હી સેચનક ગન્ધહાથી ઓર અઠારહ  
લડીવાલા દાર કુમાર વૈહલ્યકો પ્રેમસે દિયા હૈ અતઃ. ઇનપર રાજ  
કુલકા અધિકાર નહીં હૈ તો મી યદિ રાજા કૂણિક હાથી ઓર  
દાર લેના યાહતા હૈ તો ઓસે યાહિયે કિ રાજ્ય રાષ્ટ્ર ઓર જનપદકા  
આધા ભાગ કુમાર વૈહલ્યકો દેદે । એસા કરનેપર મૈં હાથી ઓર  
દારકે સાથ વૈહલ્યકો મેજ દૂગા । એસા કહકર રાજા ચેટકને ઓસ  
દૂતકા આદર સત્કાર કિયા ઓર ઓસે વિસર્જિત કર દિયા । વહ  
દૂત વૈશાલીનગરીસે ચલકર રાજા કૂણિકકે પાસ આયા ઓર હાથ

હૈ દ્વારા રાજા કૂણિકની એવી વિજ્ઞાપિત સાભગી રાજા ચેટકે દૂતને આ પ્રકાર  
કહેવાનું શરૂ કર્યું—હે દેવાનુપ્રિય ! જેવી રીતે રાજા કૂણિક શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર છે  
ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ છે તથા મારો દૌહિત્ર છે તેજ પ્રકારે કુમાર વૈહલ્ય પણ  
શ્રેણિક રાજાનો પુત્ર છે ચેલ્લના દેવીનો આત્મજ તથા મારો દૌહિત્ર છે રાજા શ્રેણિકે  
પેતાની જીવિતાવસ્થામાજ સેચનક ગન્ધહાથી તથા અઠાર સરવાળો દાર કુમાર  
વૈહલ્યને પ્રેમથી દાધેલા હોવાથી તેના ઉપર રાજકુલનો અધિકાર નથી તેમ છતાં  
પણ જો રાજા કૂણિક હાથી અને દાર લેવા યાહતા હોય તો તેમણે પણ રાજ્ય  
રાષ્ટ્ર તથા જનપદમા અર્થે ભાગ કુમાર વૈહલ્યને આપવો જોઈએ એવું કરવાથી હું  
હાથી તથા દારની માથે કુમાર વૈહલ્યને મોકલી આપીશ એમ કહીને રાજા ચેટકે  
દૂતને આદર સત્કાર કર્યા તથા તેને વિદાય આપી આ દૂત વૈશાલી નગરીથી નીકળી

ततः खलु स कूणिको राजा तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय आश्रुतः यावन्मिसिमिसी-कुर्वन् तृतीयं दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं देवानुमिय ! वैशाल्या नगर्यां चेटकस्य राज्ञो वामेन पादेन पादपीठमाक्राम, आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेखं प्रणायय, प्रणाय्य

जोड़ जय विजय शब्दके साथ उन्हें बधाकर इस प्रकार कहना आरम्भ किया-हे स्वामिन् । राजा चेटकने इस प्रकार उत्तर दिया कि-जिस प्रकार राजा कूणिक राजा श्रेणिकके पुत्र चेल्लना देवीके आत्मज और मेरा दौहित्र है उसी प्रकार कुमार वैहल्लय भी है । राजा श्रेणिकने अपनी जीयितावस्थामें ही सेचनक गधहाथी ओर अठारह लड़ीवाला हार वैहल्लय कुमारको प्रेमसे दिया है अतः इसपर राजकुलका अधिकार नहीं है, फिर भी यदि वह कुमार वैहल्लयके लिये अपने राज्य राष्ट्र और जनपदका आधा भाग देदे तो मैं हाथी और हार उसको देदूंगा तथा वैहल्लय कुमारको भी भेज दूंगा । इसलिये हे स्वामिन् । राजा चेटकने न तो सेचनक गधहाथी और अठारह लड़ीवाला हार ही दिया और न कुमार वैहल्लयको भेजा ।

उस दूतके मुखसे इस प्रकारका वचन सुनकर राजा कूणिक सहसा क्रोधसे जलने लगा और उसने तीसरी बार दूतको बुलाकर

राजा कूणिकनी पासे आये। अने हाथ जोड़ी जय विजय शब्दही तेने बधावी आभ कहेवा लाग्ये। -

हे स्वामिन् ! राजा चेटके जेवा प्रकारने जवाण दीधो के जे प्रकारे राजा कूणिक राजा श्रेणिकने पुत्र सेदवना देवीने आत्मज तथा भारे दौहित्रे छे ते ज प्रकारे वैहल्लय पय छे राजा श्रेणिके पोतानी हैयातीभाज सेचनक गधहाथी अने अठार भरने छार वैहल्लय कुमारने प्रेमथी आपेव होवाथी तेना छपर राजकुवने अधिकार नवी तेम छन। पय जे कुमार वैहल्लय भाटे पोताना राज्य राष्ट्र तथा जनपदने अरधो भाग ते आपे तो हु सेचनक गधहाथी तथा अठार सरने छार तेने आपी दधश तथा वैहल्लय कुमारने पय भोक्त्री दधश भाटे हे स्वामिन् ! राजा चेटके नथी दीधो सेचनक गधहाथी के नथी दीधो अठार सरने छार अने नथी भोक्त्रिया कुमार वैहल्लयने

ते इतना भेदथी जेवा वचन साणणीने राजा कूणिक तरत कोधथी आगनी जेम गरम थप गये अने तेखे त्रीश बार इतने जोलावीने कहु-हे देवानुमिय !

स्सेहि, तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव  
खेणं सएहिंतो २ नयरेहितो पडिनिक्खमह, पडिनिक्खमिता  
ममं अतियं पाउब्भवह ।

तए ण ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रत्तो एयम  
सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेय २ ण्हायाजाव तिहि मणु  
स्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव खेण सएहिंतो २  
नयरेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता जेणेव अगा जण-  
वए जेणेव चपा नयरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागया  
करयल० जाव वच्चावेति ।

तएणं से कूणिए राया कोडुंन्नियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता  
एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभिसेक्क हत्थिरयण  
पडिकप्पेह हय गय-रह-चाउरगिणिं सेण सनाहेह, मम एय-  
माणत्तियं पच्चप्पिणह, जाव पच्चप्पिणति ।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवा-  
गच्छइ जाव पडिनिगच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला  
जाव नरवई दुरुढे ।

तए ण से कूणिए राया तिहि दतिसहस्सेहि जाव खेणं  
चंप नयरिं मज्झ-मज्झेण निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव  
कालादीया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काला-  
इएहिं दसहि कुमारेहिं सद्धिं एगओ मेलायति ।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दतिसहस्सेहि तेत्ती-  
साए आससहस्सेहिं, तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं, तेत्तीसाए मणु  
स्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव खेणं सुभेहिं  
वसहिपायरासेहिं नाइविप्पगिट्ठेहिं अंतरावासहिं वसमाणे २ अग-

जणवयस्स मज्झ-मज्झेणं जेणेव विदेहे जणवए जेणेव वेसाली  
नयरी तेणेव पहारित्थ गमणाए ॥ ४३ ॥

आया-ततः खलु स दूतः करतल० तथैव यावद् यत्रैव चेटको राजा  
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल० यावद् वर्धयति, वर्धयित्वा एवमवादीत्-  
एषा खलु स्वामिन् ! मम विनयप्रतिपत्तिः, इदानीं कूणिकस्य राज्ञः आज्ञप्तिः.  
चेटकस्य राज्ञो वामेन पादेन पादपीठमाक्रामति, आक्रम्य आश्रुक्तः कुन्ता-  
ग्रेण लेख प्रणाययति तदेव सबलस्कन्धावार खलु इह हव्यमागच्छति !

‘तएण से दूए’ इत्यादि-राजा कूणिकके ऐसा कहनेपर उस दूतने  
राजाकी आज्ञाको हाथ जोड़कर स्वीकार की और पहिलेके ही समान राजा  
चेटकके पास आया, आकर हाथ जोड़ जय विजय शब्दके साथ वधाकर  
इस प्रकार कहा कि-हे स्वामिन् ! यह मेरा विनय है, और अब  
जो राजा कूणिककी आज्ञा है वह कहता हूँ, ऐसा कहकर अपने  
पाये पैरसे राजा चेटकके सिंहासनके पादपीठको ठोकर लगाता है  
और कोपसे आरक्त हो भालेकी नोकसे पत्र देकर कूणिकका सन्देश  
सुनाता है ।

रे मृत्युको चाहनेवाले-निर्लज्ज ! घुरे परिणामवाले मूर्ख राजा  
चेटक ! वह कूणिक राजा तुझे आज्ञा देता है कि सेचनक गधहाथी  
और अठारह लड़ीवाला हार मुझे अर्पित करे, व कुमार वैहल्यका मेरे  
पास भेजदे, नहीं तो सग्रामके लिए तैयार होजा, राजा कूणिक सेना  
चाहन और शिबिरके साथ युद्धके लिए तत्पर होकर शीघ्र आरहा है ।

तएण से दूए’ इत्यादि

राजा कूणिकना छोड़वा पछी ते दूत राजानी आज्ञाने हाथ जोड़ी स्वीकार करी  
अने पड़ेरानी पड़ेर राजा चेटकनी पामे आव्यो आवीने हाथ जोड़ी जय विजय  
शब्दो वधवी आ प्रकारे कहु दे-हे स्वामिन् ! आ भारी तन्दने विनय छे अने हुवे  
ने राजा कूणिकनी आज्ञा छे ते कहु छु ओभ कहीने पोताना जणा पगथी राजा  
चेटकना सिंहासननी पामे रहेला पादपीठने ठोकर नारी दे छे तथा कोपथी वालबोण  
थर जर्ध लावानी आलीथी पत्र आपीने कूणिकने मदेशो सलजावे छे-रे मृत्युने  
आह्वाना निर्लज्ज, अराध परिणामवाणा भूर्ख राजा चेटक ! तने कूणिक राजा आज्ञा  
दे छे दे-सेचनक गधहाथी अने अठार सरवाणो हार मने आपीदे अने कुमार  
वैहल्यने भारी पामे भोक्कनी दे अगर ने तेम नहि तो सग्राम माटे तैयार थर न  
राजा कूणिक सेना, चाहन तथा शिबिरनी साथे युद्ध माटे तत्पर थर तुरत आवी रह्या छे

તતઃ સ્વલુ સ ચેટકો રાજા તસ્ય દૂતસ્યાન્તિકેણ તમર્થે શ્રુત્વા શિશ્ય આશ્રુત્તઃ યાવત્ સહત્ય એવમવાદીત્-નાર્પયામિ સ્વલુ કૂણિકસ્ય રાજ્ઞઃ સેચન-કમષ્ટાદશવક્ર દ્વાર વૈહલ્ય ચ કુમાર નો પ્રેષયામિ, એવ સ્વલુ શુદ્ધસજ્જસ્તિ ધ્રામિ । ત દૂતમસત્કારિતમસમ્માનિતમપદ્મારેણ નિષ્કાસયતિ ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂણિકો રાજા તસ્ય દૂતસ્યાન્તિકેણ તમર્થે શ્રુત્વા નિશ્ય આશ્રુત્તઃ કાલાદીન દશકુમારાન્ શન્દયિત્વા એવમવાદીત્-એવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! વૈહલ્યઃ કુમારો મમ અસન્નિદિત સ્વલુ સેચનક ગન્ધહસ્તિનમ્

વહ ચેટક રાજા ઉસ દૂતકે મુંહસે ઇસ પ્રકારકા સન્દેશ સુનકર કોપસે આરત્ત હો ઉઠા ઓર આંલે તઢેરકર ઇસ પ્રકાર કહને લગા-રે દૂત ! મેં કૂણિકકો ન તો સેચનક ગધહાથી ઓર અંઠારહ લડીવાલા દ્વાર હી દે સકતા હું, ઓર ન કુમાર વૈહલ્યકો હી મેજ સવતા હું, તૂ જા ઓર કહ દે જો કૂણિકકો કરના હો સો કરે, યુદ્ધકે લિએ મે તૈયાર હું । એસા કહકર વહ ઉસ દૂતકો અપમાનિત ( કાલા મુંહકર ગધેપર બેઠા ) કર નગરકે પિછલે દ્વારસે નિકાલ દેતા હૈ ।

દૂત વહાંસે ચલકર વાપસ અપને રાજા કૂણિકકે પાસ આયા ઓર ઉનકો સારા વૃત્તાન્ત સુનાયા ।

કૂણિક, દૂતકે મુલસે રાજા ચેટકકા સવાદ સુન કોપારત્ત હો કાલ આદિ દસ કુમારોંકો બુલવાતા હૈ ઓર ઉન્હેં બુલવાકર ઇસ પ્રકાર કહતા હૈ-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર મુદ્ધસે બિના કુછ

તે ચેટક રાજા તે દૂતના મોઢેથી આ પ્રકારનો સંદેશ સાલળીને ઠોપથી લાલચોળ થઈ ગયો તથા આખો કાઢી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો-રે દૂત ! હું કૂણિકને ન તો સેચનક ગધહાથી કે અંઠાર સરવાળો દ્વાર છંદ શકીશ કે ન તો કુમાર વૈહલ્યને પણ મોકલી શકીશ માટે તું જા અને કહી દે કૂણિકને જે કરવું હોય તે કરે યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છું એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી ( મોઢું ઠાણું કરી ગધેડા પર બેસાડી ) નગરના પાછલા દરવાજેથી કાઢી મૂકે છે

દૂત ત્યાંથી આંલીને પાછો પોતાના રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને તેને સર્વ હકીકત સંભળાવી

કૂણિક દૂતના મોઢેથી રાજા ચેટકને સવાદ સાલળી ઠોપથી રકત થઈ કાલ આદિ દશ કુમારોને બેલાવે છે તથા તેમને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર અને કાંઈ પણ કહ્યા નગરજ સેચનક ગધહાથી અને અંઠાર

अष्टादशवक्र हारम् अन्तपुर सभाण्ड च गृहीत्वा चम्पातो निष्कामति, निष्क्रम्य वैशालीम् आर्यक चेदकराजम् उपसपद्य विहरति । ततः खलु मया सेचनकस्य गन्धस्तिनः अष्टादशवक्रस्य हारस्य अर्थाय दूता प्रेषिताः, ते च चेदकेन राज्ञा अनेन कारणेन प्रतिषिद्धाः, अथोत्तर च खलु मम तृतीयो दूतः अस्तकारितः, तम् अपद्वारेण निष्कासयति, तन्त्रैयः खलु देवानुप्रियाः ! अगमाक चेदकस्य राज्ञ युक्तं व्रदीतुम् ।

ततः खलु मालाटिका दश कुमाराः कणिकस्य राज्ञ एतमर्थं विनयेन प्रतिगृण्वन्ति ।

ततः खलु स कृणिको राजा कालादीन् दश कुमारान् एवमवादीत्—

कहे ही सेचनक गंधवाही, अठारह लड़ीवाला हार, एव अपने अन्त.पुर परिवारके सहित सभी प्रकारकी गृहसामग्रियाँ लेकर चम्पानगरीसे निकल गया और निकलकर वैशालीनगरीमें राजा चेटकके पास जाकर रहेने लगा है। इस समाचारको पाकर मैंने हाथी और हारके लिए अपने दो दूतों को दो बार भेजे लेकिन राजा चेटकने हमारी बातको स्वीकार नहीं किया, फिर मैंने तीसरे दूतको भेजा, परन्तु राजा चेटकने उसका अपमान कर उसे अपठारसे निगल दिया। इसलिये हे-देवानुप्रियो ! हम लोगोंको चाहिये कि हम राजा चेटकका निग्रह करें।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमारोंने राजा कृणिककी इस बातको स्वीकार किया।

उसके बाद वह कृणिक राजा काल आदि दस कुमारोंको इस

नरने। हार अने पोताना अत पुर परिवार सहित तमाभ नतनी गृहसामग्री लधने अपानगरीथी नीकगी अथे अने लधने वैशाली नगरीमा राजा चेटकनी पासे रहेवा लाये। आ समाचार लधने हाथी तथा हार भाटे मे भासा मे हूतने मे वा भोक्तया पणु राजा चेटके मारी बातने स्वीकार कर्था नथी पछी मे त्रीन हूतने भोक्तलाये। पणु राजा चेटके तेनु अपमान करी तेने पाछवे दरवाजेथी ठाढी भूकये। भाटे हे देवानुप्रियो ! आपणु। भाटे आवश्यक हे के राजा चेटकने। निग्रह करवे।

आ सासणी ते काल आदि दश कुमारोको राजा कृणिकनी आ बातने स्वीकार कर्था

त्यार पछी ते कृणिक राजा काल आदि दश कुमारोंने आ प्रभाषे कहे छे—

તતઃ સ્વલુ સ ચેટકો રાજા તસ્ય દૂતસ્યાન્તિકે પતમર્થે શ્રુત્વા તિશમ્ય આશુરક્તઃ યાવત્ સહત્ય એવમવાદીત્-નાર્પયામિ સ્વલુ કૂણિકસ્ય રાજ્ઞ' સેચન-કમષ્ટાદશવક્ર હાર વૈહલ્ય ચ કુમાર નો પ્રેપયામિ, એપ સ્વલુ મુદસજ્જસ્તિ છામિ । ત દૂતમસત્કારિતમસમ્માનિતમપદારેણ નિષ્કાસયતિ ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂણિકો રાજા તસ્ય દૂતસ્યાન્તિકે પતમર્થે શ્રુત્વા નિશમ્ય આશુરક્તઃ કાલાદીન દશકુમારાન્ શન્દયિત્વા એવમવાદીત્-એવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! વૈહલ્યઃ કુમારો મમ અસવિદિત' સ્વલુ સેચનક ગન્ધહસ્તિનમ્

બહ ચેટક રાજા ઉસ દૂતકે મુંદસે હસ પ્રકારકા સન્દેશ સુનકર કોપસે આરક્ત હો ઉઠા ઓર ઑલે તહેરકર હસ પ્રકાર કહને લગા-રે દૂત ! મૈ કૂણિકકો ન તો સેચનક ગધહાથી ઓર અંઠારહ લડીવાલા હાર હી દે સકતા હૂં, ઓર ન કુમાર વૈહલ્યકો હી મેજ સકતા હૂં, તૂ જા ઓર કહ દે જો કૂણિકકો કરના હો સો કરે, યુદ્ધકે લિએ મૈ તૈયાર હૂં । એસા કહકર વહ ઉસ દૂતકો અપમાનિત ( કાલા મુંદકર ગધેપર બૈઠા ) કર નગરકે પિછલે દ્વારસે નિકાલ દેતા હૈ ।

દૂત વહાંસે ચલકર વાપસ અપને રાજા કૂણિકકે પાસ આયા ઓર ઉનકો સારા વૃત્તાન્ત સુનાયા ।

કૂણિક, દૂતકે મુલસે રાજા ચેટકકા સવાદ સુન કોપારક્ત હો કાલ આદિ દસ કુમારોંકો બુલવાતા હૈ ઓર ઉન્હેં બુલવાકર હસ પ્રકાર કહતા હૈ-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર મુશ્સે ચિના કુહ

તે ચેટક રાજા તે દૂતના મોઢેથી આ પ્રકારનો સંદેશ સાંભળીને કોપથી લાલચેળ થઈ ગયો તથા આખો કાદી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો-રે દૂત ! હું કૂણિકને ન તો સેચનક ગધહાથી કે અંઠાર સરવાળો હાર છં શકીશ કે ન તો કુમાર વૈહલ્યને પણ મોકલી શકીશ માટે તું જા અને કહી કે કૂણિકને જે કરવું હોય તે કરે યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છું એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી ( મોઢું ઠાણું કરી ગધેડા પર બેસાડી ) નગરના પાછલા દરવાજેથી માદી મૂકે છે

દૂત ત્યાંથી ચાલીને પાછો પોતાના રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને તેને સર્વ હકીકત સંભળાવી

કૂણિક દૂતના મોઢેથી રાજા ચેટકનો સવાદ સાંભળી કોપથી રક્ત થઈ કાલ આદિ દસ કુમારોને બેલાવે છે તથા તેમને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર અને કાંઈ પણ કહ્યા બગરજ સેચનક ગધહાથી અને અંઠાર

अष्टादशवक्र हारम् अन्तपुर सभाण्ड च गृहीत्वा चम्पातो निष्कामति, निष्क्रम्य वैशालीम् आर्यक चेदकराजम् उपसपद्य विहरति । ततः खलु मया सेचनकस्य गन्धहस्तिनः अष्टादशवक्रस्य हारस्य अर्थाय दूता प्रेषिता, ते च चेदकेन राज्ञा अनेन कारणेन प्रतिषिद्धा, अथोत्तर च खलु मम तृतीयो दूतः अस्माकारितः, तम् अपहारेण निष्कासयति, तन्त्रेयः खलु देवानुप्रियाः ! अस्माकं चेदकस्य राज्ञः युक्तं गृहीतुम् ।

ततः खलु कालादिका. दश कुमारा. कणिकस्य राज्ञः एतमर्थं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति ।

ततः खलु स कृणिको राजा कालादीन् दश कुमारान् एवमवादीत्—

कहे ही सेचनक गधहाथी, अठारह लड़ीवाला हार, एव अपने अन्त.पुर परिवारके सहित सभी प्रकारकी गृहसामग्रियाँ लेकर चम्पानगरीसे निकल गया और निकलकर वैशालीनगरीमें राजा चेदकके पास जाकर रहेने लगा है । इस समाचारको पाकर मैंने हाथी और हारके लिए अपने दो दूतों को दो बार भेजे लेकिन राजा चेदकने हमारी बातको स्वीकार नहीं किया, फिर मैंने तीसरे दूतको भेजा, परन्तु राजा चेदकने उसका अपमान कर उसे अपहारसे निकाल दिया । इसलिये हे-देवानुप्रियो ! हम लोगोंको चाहिये कि हम राजा चेदकका निग्रह करें ।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमारोंने राजा कृणिककी इस बातको स्वीकार किया ।

उसके बाद वह कृणिक राजा काल आदि दस कुमारोंको इस

नरने। हार अने पोताना अत पुर परिवार सहित तमाभ नतनी गृहसामग्री लधने अ.पातनगरीथी नीकणी गये अने लधने वैशाली नगरीमा राजा चेदकनी पास रहैवा लाये। आ समाचार नालीने हाथी तथा हा. भाटे मे मारा मे हूताने मे बार भेकट्या पक्ष राजा चेदके मारी बातने स्वीकार कर्था नथी पछी मे तीन हूताने भेकलाये। पक्ष राजा चेदके तेनु अपमान करी तेने पाछवे दरवाजेथी काढी भूकये। भाटे छे देवानुप्रियो ! आपक्ष भाटे आवश्यक छे के राजा चेदकने निग्रह करवे।

आ सासणी ते काल आदि दश कुमारोणे राजा कृणिकनी आ बातने स्वीकार कर्था

त्यार पछी ते कृणिक राजा काल आदि दश कुमारोंने आ प्रमाणे कहे छे—



તતઃ સ્વલ્પ સ ચેટકો રાજા તસ્ય દૂતસ્યાન્તિકેણ તત્ત્વમર્થં શ્રુત્વા તિશમ્ય આશુરક્તઃ યાવત્ સહત્ય એવમવાદીત-નાર્પયામિ સ્વલ્પ કૂણિકસ્ય રાજ્ઞઃ સેવન-કમષ્ટાદશવક્ત્ર હાર વૈહલ્ય ચ કુમાર નો પ્રેષયામિ, એવ સ્વલ્પ શુદ્ધસજ્જસ્તિ ઘ્રામિ । ત દૂતમસત્કારિતમસમ્માનિતમપદારેણ નિષ્કાસયતિ ।

તતઃ સ્વલ્પ સ કૂણિકો રાજા તસ્ય દૂતસ્યાન્તિકેણ તત્ત્વમર્થં શ્રુત્વા નિશમ્ય આશુરક્તઃ કાલાદીન દશકુમારાન્ શન્દયિત્વા એવમવાદીત-એવ સ્વલ્પ દેવાનુપ્રિયાઃ ! વૈહલ્યઃ કુમારો મમ અસન્નિદિતઃ સ્વલ્પ સેવનક ગન્ધહસ્તિનમ્

વહ ચેટક રાજા ઉસ દૂતકે મુંહસે હસ પ્રકારકા સન્દેશ સુનકર કોપસે આરક્ત હો ઉઠા ઓર ઝાલે તઢેરકર હસ પ્રકાર કહને લગા-રે દૂત ! મેં કૂણિકકો ન તો સેવનક ગધહાથી ઓર ઝંઠારહ લડીવાલા હાર હી દે સકતા હું, ઓર ન કુમાર વૈહલ્યકો હી મેજ સક્તા હું, તૂ જા ઓર કહ દે જો કૂણિકકો કરના હો સો કરે, યુદ્ધકે લિપે મેં તૈયાર હું । એસા કહકર વહ ઉસ દૂતકો અપમાનિત ( કાલા મુંહકર ગધેપર બૈઠા ) કર નગરકે પિછલે ઢારસે નિકાલ ઢેતા હૈ ।

દૂત વહાંસે ચલકર વાપસ અપને રાજા કૂણિકકે પાસ આયા ઓર ઉનકો સારા ઘુત્તાન્ત સુનાયા ।

કૂણિક, દૂતકે મુલસે રાજા ચેટકકા સવાદ સુન કોપારક્ત હો કાલ આદિ દસ કુમારોંકો બુલવાતા હૈ ઓર ઉન્હેં બુલવાકર હસ પ્રકાર કહતા હૈ-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર મુખસે બિના કુછ

તે ચિન્ક રાજા તે દૂતના મોઢેથી આ પ્રકારનો સંદેશ સાંભળીને કોપથી લાલચેળ થઈ ગયો તથા આખો કાદી આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યો-રે દૂત ! હું કૂણિકને ન તો સેવનક ગધહાથી કે ઝંઠાર સરવાળો હાર છં શકીશ કે ન તો કુમાર વૈહલ્યને પણ મોકલી શકીશ માટે તું જા અને કહી કે કૂણિકને જે કરવું હોય તે કરે યુદ્ધ માટે હું તૈયાર છું એમ કહીને તે દૂતને અપમાનિત કરી ( મોઢું કાઢી કરી ગયેકા પર બેસાડી ) નગરના પાછલા દરવાજાથી માઢી મૂકે છે

દૂત ત્યાંથી ચાલીને પાછો પોતાના રાજા કૂણિકની પાસે આવ્યો અને તેને સર્વ હકીકત સંભળાવી

કૂણિક દૂતના મોઢેથી રાજા ચેટકનો સવાદ સાંભળી કોપથી રક્ત થઈ કાલ આદિ દસ કુમારોને બેલાવે છે તથા તેમને બોલાવીને આ પ્રકારે કહે છે-હે દેવાનુપ્રિયો ! વૈહલ્ય કુમાર મને કાંઈ પણ કહ્યા વગરજ સેવનક ગધહાથી અને ઝંઠાર

ततः खलु स कूणिको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! आभिषेक्य इस्तिरत्नं प्रतिकल्पयत, हय-गज-रथ-चतुरङ्गिणीं सेनां सनह्यत ममैतामाङ्गिका प्रत्यर्पयत यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

ततः खलु स कूणिको राजा यत्रैव मञ्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति यावत् प्रतिनिर्गत्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यावत् नरपतिर्दृष्टः ।

ततः खलु स कूणिको राजा त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः यावत् रवेण चम्पा नगरी मय-मभ्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कालादिका दश कुमारास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कालादिकैश्चभिः कुमारैः सार्द्धमेकतो मिलति ।

काल आदि दस कुमारोंके आनेके बाद वह कूणिक राजा अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाता है और बुलाकर इस प्रकार कहना है-हे देवानुप्रियों ! शीघ्रातिशीघ्र आभिषेक्य (पट्ट) हाथीको सजाओ तथा घोड़े, हाथी, रथ और चतुरङ्गिणी सेनाको सनह्य करो । मेरी आज्ञानुसार तैयारी कर मुझे सूचित करो । राजा कूणिककी इस आज्ञाको सुनकर उन्होंने राजाके कथनानुसार सभी कार्य करके राजाको सूचित किया ।

उसके बाद वह कूणिक राजा जहाँ स्नानगृह था वहाँ आया, और स्नानादि कृत्योंसे निवृत्त हो, वहाँसे निकलकर जहाँ बाहरी सभामण्डप था वहाँ पहुँचा । और वहाँ आकर वह राजा सभी प्रकारसे सुसज्जित हो अपने आभिषेक्य हाथी पर चढ़ा ।

उसके बाद वह कूणिक राजा तीन २ हजार हाथी घोड़े रथ

आदि दश कुमारों आख्या पछी दृष्टिक रत्न पोताना कौटुम्बिक पुरुषोंने बोलावीने आ प्रमाणे कहेवा लाख्या-हे देवानुप्रियो ! अकस्मिन् जलदीही आभिषेक्य (पट्ट) हाथीने मण्यो तथा घोडा हाथी रथ अने चतुरङ्गिणी सेनाने तैयार करे भारी आज्ञा प्रमाणे तैयारी करी अने भणर आपो राजा दृष्टिकनी आ आज्ञाने साक्षणी तेजोअने राजनना कहेवा प्रमाणे जथा कार्य करी राजने भणर आपी

तयार पछी ते दृष्टिक राजा न्या स्नानगृह छतु त्या आख्या अने स्नान आदि कृत्योथी निवृत्त थछ त्याथी नीकणी न्या गडारने सभामण्डप छतो त्या पछोअ्या अने त्या आवीने ते राजा तभाम प्रकारे सुसज्जित थछने पोताना आभिषेक्य हाथी छपर गेआ

तयार पछी ते दृष्टिक राजा त्रय त्रय हजार हाथी घोडा रथ तथा त्रय करेके

गच्छत खलु यूय देवानुप्रियाः ! स्वकेषु राज्येषु प्रत्येक प्रत्येक स्नाता यावत् प्रायश्चिताः हस्तिस्कन्धवरगताः प्रत्येक प्रत्येक त्रिभिर्दन्तिसहस्रैः, एव त्रिभी रथसहस्रः, त्रिभिरश्वसहस्रः, तिसृभिर्मनुष्यकोटिभिः सार्द्धं सपरिवृताः सर्वद्वर्था यावद्-रवेण स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यः प्रतिनिष्क्रामत, प्रति निष्क्रम्य ममान्तिक प्रादुर्भवत ।

ततः खलु ते कालादिका दशकुमाराः कूणिकस्य राज्ञ एतमर्थं श्रुत्वा स्वकेषु स्वकेषु प्रत्येक प्रत्येक स्नाता यावत् तिसृभिर्मनुष्यकोटिभिः सार्द्धं सपरिवृताः सर्वद्वर्था यावद् रवेण स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्यः प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव अन्ना जनपदा, यत्रैव चम्पानगरी, यत्रैव कूणिको राजा तत्रैवोपागताः करतलं यावद् वर्धयन्ति ।

प्रकार कहता है-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग अपने २ राज्यमें जाओ । वहाँ जाकर स्नान और मागलिक कृत्यकर हाथीपर चढ़, तुममेंसे हरेक कुमार तीन २ हजार हाथी, तीन २ हजार रथ, तीन २ हजार घोड़े, एव तीन २ करोड़ सैनिकोंके सहित सभी प्रकारकी सामग्रियोंसे युक्त हो सज-धजकर बाजे-गाजे सहित अपने २ नगरोंसे निकलो और मेरे पास आओ ।

यह सुनकर वे काल आदि दस कुमार अपने २ राज्यमें गये वहाँ जाकर कूणिकके निर्देशानुसार सभी प्रकारकी सामग्रीयोंसे युक्त हो अपने २ नगरसे निकले । और अग देश चम्पानगरीमें राजा कूणिकके पास आए और हाथ जोड़ जय विजयके साथ राजाको वधाये ।

हे देवानुप्रियो ! तबे दोहा पोत-पोताना राजनमा गयो त्या जधने स्नान तथा मागलिक कर्म करी हाथी ठीक थकी तभारागाना दरेक कुमार त्रषु त्रषु हजार हाथी, त्रषु-त्रषु हजार रथ, त्रषु-त्रषु हजार घोडा अने त्रषु त्रषु करोड सैनिकों साथे तभार प्रकारनी सामग्री लछ तैयार थछ वाजने जायते पोतपोताना नगरभाथी नीकणी भारी पासे आया ।

आ सासणी ते काल आदि दश कुमार पोतपोताना राजनमा गया त्या जधने द्विषिकना छहा प्रभ षे तभार प्रकारनी तैयारी करी अने सर्वे प्रकारनी सामग्री लधने पोतपोताना नगरभाथी नीकल्या अने अग देशना थपा नगरीभा राजा द्विषिकनी पासे आय्या त्या आधीने हाथ जोडी जय विजय संबोधी राजने वधाया ।

अट्टारसवकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए, तए ण कूणिण्ण  
सेयणगस्स अट्टारसवकस्स य अट्टाए तओ दूया पेसिया, ते  
य मए इमेण कारणेण पडिसेहिया ।

तए णं से कूणिण्ण मम एयमइ अपडिसुणमाणे चाउ-  
रगिणीए सेणाए सट्ठि सपरिवुडे जुज्झसज्जे इह हव्वमाग-  
च्छइ, त किं नु देवाणुप्पिया । सेयणं अट्टारसवकं च कूणि-  
यस्स रत्तो पच्चप्पिणामो ? वेहल्ल कुमार पेसेमो ? उदाहु जु-  
ज्झित्था ? तए ण नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा अट्टा-  
रस वि गणरायाणो चेडग राय एव वयासी-न एय सामी ।  
जुत्त वा पत्त वा रायसरिस वा जन्न सेयणं अट्टारसवकं  
कणियस्स रत्तो पच्चप्पिणज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए  
पेसिज्जइ, न जइ णं कूणिण्ण राया चाउरगिणीए सेणाए सट्ठि  
संपरिवुडे जुज्झसज्जे इह हव्वमागच्छइ । तो णं अम्हे  
कूणिण्ण रण्णा सट्ठि जुज्झामो ।

तए ण से चेडए राया ते नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-  
कोसलगा अट्टारस वि गणरायाओ एव वयासी-जडण देवा-  
णुप्पिया । तुब्भे कूणिण्ण रत्ता सट्ठि जुज्झइ, त गच्छह  
ण देवाणुप्पिया । । सएसु रज्जेसु ण्हाया जहा कालादीया  
जाव जएण विजएण वद्वावेति ।

तए ण से चेडए राया कोडुवियपुरिसे सद्वावेइ सद्वावित्ता  
एव वयासी-आभिसेक्क जहा कूणिण्ण जाव दुरुढे ।

तएण से चेडए राया तिहि दतिसहस्सेहि जहा कूणिण्ण  
जाव वेसालि नयरि मज्झ-मज्झेण निगच्छइ निगच्छित्ता  
जेणेव ते नवमल्लइ-नवलेच्छइ-कासी-कोसलगा अट्टारस वि  
गणरायाणो तेणेव उवागच्छइ ।

તતઃ સ્વલુ સ કૂળિફો રાજા ત્રયસ્વિંશતાઃ દન્તિસહસ્રૈઃ, યત્ર સ્વિંશતા  
 ઽશ્વસહસ્રૈઃ, ત્રયસ્વિંશતા રથસહસ્રૈઃ, ત્રયસ્વિંશતા મનુષ્યકોટિભિઃ સાર્દ્ધં સપરિવૃત.  
 સર્વદર્શ્યા યાવદ્ રવેણ શુભૈર્સનિપ્રાતરાશીઃ=નાતિવિપ્રકૃષ્ટૈરન્તરાવાસૈઃ વસન્ ૨  
 અઙ્ગજનપદસ્ય મધ્યમખ્યેન યત્રૈવ વિદેહો જનપદ યત્રૈવ વૈશાલી નગરી તત્રૈવ  
 પ્રાધારયદ્ ગમનાય ॥ ૪૨ ॥

ટીકા—‘તણ સે દૂષ’ ઇત્યાદિ—અપદારેણ લઘુદ્વારેણ, ગુપ્તદ્વારેણ  
 વા ગૃહપથ્વાદ્વાગેનેત્યર્થઃ । દૂરુદ્=આરુદ્, યુક્તમ્=ઉચિત યોગ્યમિતિ યાવત્,  
 શેષ યુગમમ્ ॥ ૪૩ ॥

મૂલમ્—તણં સે ચેડણ રાયા ઇમીસે કહાણ લઢ્ઢેં સમાણે  
 નવમલ્હડ-નવલેચ્છડ-કાસી-કોસલગા અટ્ટારસ વિ ગણરાયાણો  
 સદાવેડ, સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । વેહલ્હે  
 કુમારે કૂળિયસ્સ રઘ્ઘો અસંવિદિત્તે ણં સેયણગ ગન્ધહત્થિ

और तीन करोड़ सैनिकोंके सहित सभी रणसामग्रीयोंके साथ चम्पा  
 नगरीके मयसे होकर निकला, निकलकर जहाँ काल आदि दस  
 कुमार थे वहाँ आया, और काल आदि दस कुमारोंसे मिला ।

उसके बाद वह कृणिक राजा तेतीस हजार घोड़े, तेतीस  
 हजार रथ और तेतीस करोड़ सैनिकोंसे घिरा हुआ सभी तरहकी  
 सामग्री युक्त बाजे-गाजिके साथ शुभ स्थानोंमें खान-पान करता  
 हुआ थोड़ी २ दूर पर डेरा डालकर विश्राम करता हुआ अङ्ग देशके  
 बीचो-बीचसे जहाँ विदेह देश था, जहाँ वैशाली नगरी थी वहीं पर  
 जानेका निश्चय किया ॥ ४३ ॥

સનિકો સહિત તમામ યુદ્ધની સામગ્રીઓ સાથે થયા નગરીના મધ્યભાગમાં થઈને  
 નીકળ્યા અને ત્યાંથી નીકળી જ્યાં કાલ આદિ દશ કુમારો હતા ત્યાં આવ્યા અને  
 કાલ આદિ દશ કુમારોને મળ્યા

ત્યાર પછી તે દૃષ્ટિક રાજા તેત્રીસ હજાર હાથી, તેત્રીસ હજાર ઘોડા તેત્રીસ  
 હજાર રથ તથા તેત્રીસ વરોડ તૈનિહોથી ઘેરાયલા અને તમામ જાતની યુદ્ધ સામગ્રી  
 યુક્ત થઈ વાજતે ગાજતે શુભ સ્થાનોમાં ખાન-પાન કરતા થોડે થોડે દૂર પર સુકામ  
 કરતા કરતા વિશ્રામ લેતા થકા અંગ દેશની વચ્ચે-વચ્ચે થઈને જ્યાં વિદેહ દેશ  
 હતો ત્યાં વૈશાલી નગરી હતી ત્યાં જાવાનો નિશ્ચય કર્યો (૪૩)

मागतः, ततः खलु कूणिकेन सेचकस्य अष्टादशवक्रस्य चार्थाय त्रयो दूताः  
प्रेषिताः, ते च मयाऽनेन कारणेन प्रतिपिद्धाः । ततः खलु स कूणिको मम  
एतमर्थमप्रतिशृण्वन् चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं सपरिवृतः युद्धसज्ज इदं द्रव्यमागच्छति  
तत् किं नु देवानुप्रिया । सेचनमष्टादशवक्रं च कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्पयामः,  
वैहल्लय कुमार प्रेषयामः, उत्तापो ! युध्यामहे ? ।

ततः खलु नवमलङ्घि-नवलेच्छकि-काशी-कोशलका अष्टादशापि गण-  
राजाश्चेष्टक राजानमेवमवादिषुः-नैतत् स्वामिन् ! युक्तं वा, प्राप्तं वा राजसदृशं  
वा यत्खलु सेचनमष्टादशवक्रं कूणिकाय राज्ञे प्रत्यर्प्यते, वैहल्लयश्च कुमार  
गणराजगतः प्रेष्यते, तद् यदि खलु कूणिको राजा चातुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं

आया । इसका समाचार पाकर कूणिकने मेरे पास तीन दूत भेजे,  
परन्तु मैंने उन दूतोंको कारण बताकर मना कर दिया । उसके बाद  
कूणिकने मेरी बातको न मानकर चतुरङ्गिणी सेनाके साथ लड़ाईके  
लिये तैयार होकर यहाँ आ रहा है । तो क्या है देवानुप्रियो !  
सेचनक गवहाथी और अठारह लड़ीवाला हार राजा कूणिककों देदे  
और वैहल्लयकुमारको उसके पास भेजदें अथवा उससे लड़े ?

उसके बाद वे अठारहों गणराजाओंने हाथ जोड़कर इस  
प्रकार कहा—हे स्वामिन् ! न यह युक्त है, न ऐसा कहनेकी आव-  
श्यकता है, न यह राजकुलको उचित ही है, जो आप सेचनक  
गन्धहाथी और अठारह लड़ीवाला हार राजा कूणिकको अर्पित करें  
और शरणमें आए हुए कुमार वैहल्लयको लौटा दें । हे स्वामिन् ! यदि

दूष्टिके भारी पासे त्रय दूत भेदक्या पक्ष मे ते दूतोने कारण जनायी ना पाडी दीधी  
त्या पक्षी दूष्टिके भारी बात ने नहि भानीने चतुरङ्गिणी सेना साथे लडाई भाटे तीया-  
थधने अर्द्धा आवी ग्दो छे तो तु हे देवानुप्रियो ! सेचनक गवहाथी अने अठार  
भरने छार राज दूष्टिके आवी देवे मन वैहल्लय कुमा-ने तेनी पाने भेदली देवे छे  
तेनी साथे लडाछे उस्वी ?

त्या पक्षी ते अठारे जण राजाओंछे हाथ जोडीने आ प्रभाछे उछु—हे  
स्वामिन् ! नहीं तो आ वाज्जणी छे नहीं आवी रीते करवानी आपश्यकता वणा  
आ प्रभाछे करवु राजकुलने उचित पक्ष रीती छे आप सेचनक गव हाथी तथा  
अठार सरवाणो छार राज दूष्टिके अर्पण करी दीओ अने श-छे, आवेला कुमा-  
वेंहल्लयने पाँठो भेदली दीओ हे स्वामिन् ! जो राज दूष्टिक चतुरङ्गिणी सेना लधन-

તણં સે ચેહણ રાયા સત્તાવન્નાણ દંતિસહસ્સેહિં, સત્તા  
વન્નાણ આસસહસ્સેહિં, સત્તાવન્નાણ મણુસ્સકોડોણહિ સદ્ધિં સં-  
પરિવુડે સવ્વિહીણ જાવ રવેણં સુમેહિ વસહિપાયરાસેહિં નાતિ  
વિપ્પગિદ્દેહિ અંતરેહિં વસમાણેર વિદેહં જણવયં મજ્ઞ-મજ્ઞેણં  
જેણેવ દેસપતે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા खंधावारनिवेसणं  
કરેહ, કૂણિય રાય પડિવાલેમાણે જુઝ્ઞસજ્જે ચિદ્દહ ।

તણં સે કૂણિય રાયા સવ્વિહીણ જાવ રવેણં જેણેવ  
દેસપતે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ચેહયસ્સ રત્નો જોય  
ળંતરિયં खंधावारनिवेसं કરેહ ।

તણ ણ સે દોન્નિ તિ રાયાણો રણભૂમિ સજ્જાવેતિ, સજ્જા-  
વિત્તા રણભૂમિં જયંતિ ॥ ૪૪ ॥

ઝાયા—તત\* खलु स चेदको राजा अस्या\* कथाया लब्धार्थः सन्  
नवमल्लकि-नवलेच्छकि-काशी-कौशलकान् अष्टादशापि गणराजान् शब्दयति,  
शब्दयित्वा एवमवादीत्—एव खलु देवानुमिया ! वैहल्य, कुमार, कूणिकस्य  
राज्ञ असविदितेन सेचनक गन्धहस्तिनमष्टादशवक्र च हार गृहीत्वा इह हव्य

‘તણ સે ચેહણ’ ઇત્યાદિ—

ઉમકે ઘાદ ઉસ ચેદક રાજાને કૂળકકી ચઢાઈકે સમાચાર  
સુનકર કાશી ઓર કોશલ દેશકે નૌ મલકી—નૌ લેચ્છકી इन अठा  
रहो गणराजाओंको बुलाकर उनसे इस प्रकार कहना आरम्भ किया—

હે દેવાનુમિયો ! વૈહલ્યકુમાર રાજા કૂળિકસે ડરકર  
સેચનક ગન્ધહાથી ઓર અઠારહ લડીવાલા હાર લેકર મેરે પાસ ચલા

‘તણ સે ચેહણ’ ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી તે ચેદક રાજાએ કૂળિકની ચઢાઈના સમાચાર સાંભળી તેણે કાશી  
તથા કોશલ દેશના નવ મલકી અને નવ લેચ્છકી એમ અઠાર ગણરાજાઓને બોલાવી  
તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા

હે દેવાનુમિયો ! વૈહલ્ય કુમાર રાજા કૂળિકથી ડરીને સેચનક ગન્ધહાથી તથા  
અઠાર મરવાળો હાર લઈને મારી પાસે આવ્યો

ततः खलु स चेटको राजा त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यथा कूणिको यावद् वैशालीं नगरीं मन्थ-मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते नवमल्लकी-नवलेच्छकी-काशी-कौशलका अष्टादशपि गणराजास्तत्रैवोपागच्छति ।

ततः खलु स चेटको राजा सप्तपञ्चाशता दन्तिसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता अभ्यसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता रथसहस्रैः, सप्तपञ्चाशता मनुस्यकोटिभिः, सार्द्धं सपरिवृतः सर्वद्वर्षा यावद् रवेण भुर्भर्वसतिप्रातराशैर्नतिविप्रकृष्टैरन्तरैर्वसन २ विदेह जनपदं मन्थ-मध्येन यत्रैव देशप्रान्तस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्कन्धावारनिवेशनं करोति, कृत्वा कूणिक राजानं प्रतिपालयन् युद्धसज्जं स्तिष्ठति ।

ततः खलु स कूणिको राजा सर्वद्वर्षा यावद् रवेण यत्रैव देशप्रान्तस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चेटरस्य राज्ञो योजनान्तरितं स्कन्धावारनिवेशं करोति ।

आज्ञा देता है । कूणिकके समान वह भी अपने पट्टहाधीपर चढता है ।

वहाँसे वह चेटक राजा तीन २ हजार हाथी, घोड़े, रथ और तीन करोड़ सैनिकोंके साथ कूणिकके समान ही अपनी वैशालीनगरीके बीचो-बीच होकर जहाँ वे अठारहों गणराजा थे वहाँ आया ।

और वहाँ चेटक राजा सत्तावन हजार हाथी, सत्तावन हजार घोड़े, सत्तावन हजार रथ, और सत्तावन कोटि सैनिकोंसे परिवेष्टित हो सभी प्रकारके साज-बाज और बाजे-गाजेके साथ अच्छे स्थानोंमें प्रातःकालिक भोजन करते हुए थोड़ी २ दूरपर डेरा डालकर विश्राम करते हुए विदेह देशके बीचो-बीचसे होते हुए जहाँ देशका प्रान्त-सीमाभाग था वहाँ आया । वहाँ आकर अपने शिबिर तैयार करवाया और लड़ाईके लिये राजा कूणिककी प्रतीक्षा करने लगा ।

त्याथी ते चेटक राजा त्रय त्रय ङ्गुल हाथी घोडा रथ अने त्रय करोड सैनिके साथे दुषिकनी पेटेन पोतानी वैशाली नगरीनी पयगा यधने न्या ते अठार गण राजाके हुता त्या आव्या

अने त्या ते चेटक राजा सत्तावन ङ्गुल हाथी सत्तावन ङ्गुल घोडा सत्तावन ङ्गुल रथ तथा सत्तावन करोड सैनिकेथी घेरामने तमाम प्रकारना साज भाज अने वाज गाजानी साथे साज सारा स्थानेमा प्रात कालिक खोजन करता थका, थोडे थोडे दूर मुकाम करता थका, विश्राम लेता थका, विदेह देशनी पय्या-पय्य यधने न्या देशनी सरहद हुती त्या आव्या त्या आवीने पोतानी छावणी तैयार करावी अने लडाई भाटे राजा दुषिकनी राह जेवा लाग्या



સપરિવૃત્તો યુદ્ધસજ્જ ડાઘ હવ્યમાગન્તિ તદા સ્વલ્પ વયઃ કૂળિકેન રાજા સાર્દ યુધ્યામહે ।

તતઃ સ્વલ્પ સ ચૈટકો રાજા તાન્ નવમહર્ષિ-નવલેચ્છત્તિ-કાશીકો શલકાન્ અષ્ટાદશાપિ ગણરાજાન્ એવમપ્રાદીત્-અર્થાત્ સ્વલ્પ દેવાનુપ્રિયાઃ ! યુવ કૂળિકેન રાજા સાર્દ યુ-અર્થાત્, તદ્વચ્છત સ્વલ્પ દેવાનુપ્રિયાઃ ! સ્વકેષુ સ્વકેષુ રાજ્યેષુ, સ્નાતા યથા કાલાદિકા યાવદ્ જયેન વિજયેન વર્દયન્તિ ।

તત સ્વલ્પ સ ચૈટકો રાજા કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમપ્રાદીત્-આમિષેક્ય યથા કૂળિકો યાવદ્ દૂરુઠઃ ।

રાજા કૂળિક ચતુરંગિણી સેનાકે સાથ લડાઈકે લિયે તૈયાર હો આ રહા હૈ તો હમ લોગ ભી લડનેકે લિયે તૈયાર હૈ ।

उन राजाओंकी ऐसी बातें सुनकर राजा चेटकने उन अठारहों राजाओंसे इस प्रकार कहा-यदि हे देवानुप्रियो ! तुम लोग कूणिकसे लड़ना चाहते हो तो अपने २ राज्यमें जाओ और वहाँ जाकर स्नान आदि क्रिया करके लड़नेके लिए काल आदि कुमारोंके समान तुम भी सेना आदिसे सज्ज हो यहाँ आओ । राजा चेटककी आज्ञा पाकर वे गणराजा अपने २ राज्यमें जाकर वहाँसे सभी प्रकारकी सैन्य सामग्रियोंसे युक्त हो राजा चेटककी सहायताके लिये वैशाली नगरीमें आते हैं और राजा चेटकको जय विजयके साथ बधाते हैं ।

उसके बाद वह चेटक राजा अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलवाता है और उनसे अपना आमिषेक्य हाथीको सज्जित करके लानेकी

લડાઈ માટે તૈયારી કરીને આવે છે તેા અને લોકો પણ લડવા માટે તૈયાર છીએ તે રાજાઓની એ પ્રમાણે વાર્તા સાંભળી રાજા ચેટકે તે અઢારે રાજાઓને આ પ્રકારે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયો ! જો તમે લોકો કૂણિક સાથે લડવા ચાહતા હો તે પોતપોતાના રાજ્યમાં જાઓ અને ત્યાં જઈ સ્નાન આદિ વગેરે ક્રિયા કરી લડવા માટે કાલ આદિ કુમારોની સમાન તમે પણ સેના આદિથી સજ્જ થઈ અહીં આવો રાજા ચેટકની આજ્ઞા સાંભળી તે ગણરાજાઓ પોતપોતાના રાજ્યમાં જઈ અને ત્યાંથી સર્વ પ્રકારની સૈન્ય સામગ્રીથી યુક્ત થઈ રાજા ચેટકને સહાયતા કરવા માટે વૈશાલી નગરીમાં આવે છે અને રાજા ચેટકને જય વિજયના શબ્દ સાથે વધ વે છે

ત્યાર પછી તે ચેટક રાજા પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવે છે અને તેમને પોતાનો આમિષેક્ય (પટ) હાથે સજ્જ કરી લાવવા આજ્ઞા આપે છે કૂણિકની પેઠે તે પણ પોતાના પટ હાથે યર બેસે છે

पायत्तिया पायत्तिएहिं, अन्नमन्नेहिं सङ्गिं सपलगा यावि होत्था ।

तएण ते दोण्ह वि रायाणं अणीया णियगसामीसास-  
णाणुरत्ता महत्तं जणक्खय जणवह जणप्पमद जणसवट्ठकप्प नच्चं-  
तकवधवारभीम सहिरकदमं करेमाणा अन्नमन्नेण सङ्गिं झुज्जति ।

तएण से काले कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहिं जाव मणु-  
स्सकोडीहिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं कूणियरहमुसल  
सगामं संगामेमाणे हयमहियजहा भगवया कालीए देवीए  
परिकहिय जाव जीवियाओ ववरोविण् ।

तं एय खलु गोयमा । काले कुमारे एरिसएहि आरभेहिं  
जाव एरिसएण असुभकडकम्मपञ्चारेण कालमासे काल किच्चा  
चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ता उववन्ने ।

काले ण भंते । कुमारे चउत्थीए पुढवीए अणतर उव-  
ट्ठित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? । गोयमा । महा-  
विदेहे वासे जाड कुलाइं भवति अड्डाड जहा द्ढप्पदन्तो  
जाव सिज्जिहिइ बुज्जिहिइ जाव अतं काहिइ । तं एव खलु  
जवू । समणेण भगवया जाव सपत्तेण निरयावलियाणं पढम-  
स्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि ॥ ४५ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्त ॥-१ ॥

आया-तत खलु स कृष्णिकस्रपञ्चशता दन्तिसहस्रैर्यावन्मनुष्यकोटिभिः  
गरुडव्यूह रचयति, रचयित्वा गरुडव्यूहेन रथमुशल सङ्ग्राममुपायात ।

तत खलु स चेटकी राजा सप्तपञ्चाशता दन्तिसहस्रैर्यावत् सप्तपञ्चा-  
शता मनुष्यकोटिभिः शकटव्यूह रचयति, रचयित्वा शकटव्यूहेन रथमुशल  
सङ्ग्राममुपायातः ।

ततः खलु तौ द्वावपि राजानौ रणभूमिं मज्जयत, सज्जयित्वा रणभूमिं यातः ॥ ४३ ॥

टीका—तएण से चेडए, इत्यादि—नवमल्लकिन.=माशीदेशस्थगणराजा, नवलेच्छकिन.=कोशलदेशस्थगणराजाः, तान् । युक्तम्=योग्यमिति, प्राप्तम्=अधिकारोचित, राजमदशम्=राजवशीयानुरूप यत्=यन्निश्चयेन । प्रतिपालयन्=प्रतीक्षमाणः । शेष सुगमम् ॥ ४४ ॥

मूलम्—तएण से कूणिण तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहि गरुलवूह रइए, रइत्ता गरुलवूहेण सगाम उवायाए । तएण से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं जाव सत्तावन्नाए मणुस्सकोडोहि सगडवूह रएइ, रइत्ता सगडवूहेण रहमुसल सगाम उवायाए । तएण ते दोण्ह वि राईणं अणीया सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा मगतिएहिं फलएहिं निक्कट्टाहिं असीहिं, असगएहिं तोणेहिं, सजीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरोह, समुल्लालिताहिं डावाहिं, ओसारियाहिं उरुघंटाहिं, छिप्पतूरेण वज्जमाणेण, महया उक्किट्टसीहनायबोलकल-कलरवेण समुद्धरवभूय पिव करेमाणा सव्विड्डीए जाव रवेण हयगया हयगएहिं, गयगया गयगएहिं, रहगया रहगएहिं,

उसके बाद वह कूणिके राजा भी उसी तरह वहाँ आया जहाँ देशका अंतिम भाग था । और महाराजा चेटकके शिविरसे एक योजन दूर अपना शिविर बनवाया ।

उसके बाद उन दोनों राजाओंने रणभूमिको सज्जित की और लड़ाईके लिए वहाँ आये । ॥ ४४ ॥

त्यार पछी ते कूणिक राजा पछु तेज सीते त्या आव्या ठे जया देशना प्रदेशने । अंतिम छेटी छेटी, अने महाराजा चेटकनी छावणीथी जेक योजन छेटी पोतानी छावणी नभावी ।

त्यार पछी ते जेठि राजाजो जे रणभूमि सज्जित करी अने युद्ध करवा त्या आव्या (४४)

टीका—‘तएण से कूणिए’ इत्यादि—ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोः  
अनीके=सैन्ये सन्नद्धं=सुसज्जितं यावत्—टूहीतायुधप्रहरणे=वृत्तशस्त्रास्त्रे मद्गतिकै=  
हस्तपाशिफलकविशेषैः ‘ढाल’ इति भाषाप्रसिद्धैः, अशगतै=म्कन्यस्थितैः तूणैः-  
शरधानीभिः ‘भाता’ इति भाषायाम् सजीवैः=ज्यासहितैः मप्रत्यञ्चै= अनुभिः=  
चापैः, ममुत्क्षिप्तैः=प्रक्षिप्तैः शरैः=बाणैः, समुल्लालिताभिः=आम्फालिताभिः  
डावाभिः=वामभुजाभिः, अवमारिताभिः=दूरीकृताभिः उरुण्टाभिः=विशाल-

चेटक राजा भी मत्तावन २ हजार हाथी, घोड़े, रथ गव  
मत्तावन करोड ( उस कालकी एक संख्या ) सैनिकोंका शकटव्यूह  
बनाया और उसके साथ रथमुशल मग्नममे आया ।

उसके बाद दोनों राजाओंकी सेना अस्त्र शस्त्रसे मज्जित  
हो अपने ० हाथोंमें धामी हुई ढालोंसे, खींची हुई तलवारोंसे,  
कंधोंपर रखे हुए तूणीरोंसे, चढे हुए धनुषोंसे, छोटे हुए बाणोंसे,  
अच्छी तरह फटकारते हुए डाबी भुजाओंसे, दूरपर दागी हुई विशाल  
घण्टाओंसे, अत्यन्त गीघ्रतासे बजाये जाते हुए भेरी आदि बाजोंसे,  
भयकर सिंह नादके सदृश कोलाहलसे, समुद्रकी बेलाकी आवाजके  
समान आवाज करती हुई, तथा सभी युद्ध सामग्रियोंसे युक्त थी,  
वहा भीषण हुड्कार करते हुए घुडसवार घुडसवारोंसे, हाथीवाले  
हाथीवालोंसे, रथ रथिकोंसे पैदल पैदलसे, इस प्रकार एक दूसरेके  
साथ युद्ध करनेके लिये सन्नद्ध हो गये ।

चेटक राजा पक्ष मत्तावन मत्तावन हजार हाथी, घोडा, रथ अने मत्तावन करोड  
( त समथना ओक मण्या ) सैनिकोंने शकटव्यूह बनायी तेनी साथे रथमुशल  
मग्नाममा आया

त्यार पछी भले राजाओंनी सेना अस्त्र शस्त्रथी मज्जित थध पोत येनाना  
हाथमा पकडेली ढालेथी, जेजेवी तलवारोथी, कंधेपर गजेवा तल्लीरोथी, अडावेला  
धनुष्योथी, छोडेला बाणोथी, सारी रीते इटकारता डाणी भुज्जोथी, छोटे गजेवी  
विशाल घटाओथी, अत्यंत शीघ्रताथी भज्जवाता भेरी आदि वाज्जओवी, सिंहाद  
जेवा कोलाहलथी ममुद्रनी छोणेना जेवा अवाज करती, तथा तमाम युद्धसामग्रीथी  
युक्त हती त्या भीषण हुड्कार करता घोडेस्वारो घोडेस्वारोनी साथे, हाथीवाजाओ  
हाथीवाजाओनी साथे, पायदल लश्कर पायदलनी साथे, आ प्रकार ओक भीज्ज साथे  
युद्ध करवा माटे तयार थध गया

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके सन्नद्ध-यावद्-गृहीतायुधप्रहरणे मङ्गतिकैः फलकैः' निष्कासितैरसिभिः' अशगतैस्तूणैः, सजीवैर्धनुर्भिः, समुत्क्षिप्तैः शरैः, समुलालिताभिः डावामि, अवसारिताभिः उरुघण्टाभिः, क्षिप्रतूरेण वाद्यमानेन महता उत्क्रष्टसिंहनादबोलकलकलरवेण समुद्ररवभूतमिव कुर्वाणे सर्वकृद्भया यावद् रवेण हयगता हयगतैः, गजगता गजगतैः, रथगता रथगतैः, पदातिका, पदातिकैः, अन्योन्यै सार्द्धं सप्रलग्नाश्चाऽप्यभूवन् ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके निजकस्वामिशासनानुरक्ते महान्त जनस्य जनवध जनप्रमर्द जनसर्वतर्कलप नृत्यत्कवन्वारभीम रुधिररुर्दम कुर्वाणे अन्योऽन्येन सार्द्धं युध्येते ।

ततः खलु स कालः कुमारस्त्रिभिर्दन्तिसहस्रयावन्मनुष्यकोटिभिर्गुरुद्व्यूहेन एकादशेन स्तब्धेन कृणिकरयमुञ्चल सग्राम सग्रामयन् हतमथितयथा भगवता काल्यै देव्यै परिकथित यावज्जीविताद् व्यपरोपित ।

तदेतत् खलु गौतम ! काल कुमार ईदृशैरारम्भै यावद् ईदृशेन अशुभकृतकर्मप्राग्भारेण कालमासे कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कजभाया पृथिव्या हे माझे नरके नैरयिकृतयोपपन्न ।

काल खलु भदन्त ! कुमारश्चतुर्थ्यां पृथिव्या अनन्तरमुद्धत्य कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? गौतम ! महाप्रदेहे येष यानि कुलानि भवन्ति आश्रयानि यथा दृढप्रतिज्ञो यावत् सेत्स्यति शोत्स्यते यावद् अन्त ररिष्यति ।

तदेव खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन निरयावलि काना प्रथमाभयनस्यायमर्थं प्रज्ञप्त । इति ब्रवीमि ॥ ४५ ॥

॥ प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥१॥

‘तएण से कूणिण’ इत्यादि—

उसके बाद वह कूणिक त्रेतीस २ हजार हाथी, घोड़े, और रथ तथा त्रेतीस करोड़ (उस समयकी एक सख्या) सैनिकोंका गरुडव्यूह बनाया और गरुडव्यूहके साथ रणभूमिमें रथमुञ्चल सग्राम करनेके लिए आया ।

‘तएण कूणिण’ इत्यादि

तयार पछी ते दृष्टिके तेतीस हजार हाथी, घोड़े और रथ तथा तेतीस करोड़ (ते समयकी एक संख्या) सैनिकोंको गरुडव्यूह बनाया और गरुडव्यूह साथ रणभूमिमें रथमुञ्चल सग्राम करने आये । १११ ई.पू.व

तत्कवचवारभीम=नटन्निष्ठोरद्वितगरीरसमूहमयानक रुधिरकर्दम=शोणितपङ्क कुर्वाणे  
अन्योऽन्येन=परम्परेण माद्वे=मह युध्येते सग्राम कुर्वाते स्म । अशुभकृतकर्म  
प्राग्भारेण=प्राणिसंहाररूपपापसम्पादितनरकयोग्यकर्मपुञ्जेन, शेष सुगमम् 'इति  
ब्रवीमि' इतिपूर्ववत् ॥ ४५ ॥

॥ इति निरयावलिकासूत्रे प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥

हे गौतम ! वह काल कुमार इस प्रकारके आरम्भोंसे तथा  
इस प्रकारके अशुभ कर्मोंके संचयसे कालमासमें काल परके चौथी  
पङ्कप्रभा नामक पृथ्वी ( नरक ) में हेमाभ नामक नरकावासमें नैऋ-  
यिक होकर उत्पन्न हुआ ।

हे भदन्त ! काल कुमार चौथी पृथ्वी ( नरक ) से निकलकर  
कहाँ जायगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ? हे गौतम ! काल कुमार  
महाविदेहक्षत्रमें जाकर आढ्य ( ऋद्धि-सम्पत्तिसे भरपूर ) कुलमें  
उत्पन्न होगा । और दृढप्रतिजके समान ही सिद्ध होगा, बुद्ध होगा,  
मुक्त होगा और सब दुःखोंका अन्त करेगा ।

हे जम्बू ! इस प्रकार सिद्धगति स्थानको प्राप्त श्रमण भग-  
वान महावीरने निरयावलिकाके प्रथम अध्ययनका यह भाव प्ररूपित  
किया है, अर्थात् भगवानके मुग्धसे जैसा मैंने सुना वैसा ही तुम्हें  
कहता हूँ ॥ ४६ ॥

॥ श्री निरयावलिका सूत्रका प्रथम अध्ययन समाप्त ॥८॥

हे गौतम ! ते कालकुमार आवा प्रकारना आरम्भोथी तथा आवा प्रकारना अशुभ  
कर्मोंना अत्यथी जावने वषते काल करीने थोथी पङ्कप्रभा नामनी पृथ्वी ( नरक ) भा  
हेमाभ नामे नरकावासभा नैऋयिक यजित्पन्न तथा

हे भदन्त ! कालकुमार थोथी पृथ्वी ( नरक ) भाया नीकणी क्या नथे ? अने  
क्या उत्पन्न थथे ? हे गौतम ! कालकुमार महाविदेह क्षेत्रभा नर्म आढ्य ( ऋद्धि-  
सम्पत्तिथी भरपूर ) कुलभा उत्पन्न थथे अने दृढप्रतिजनी पेंठे सिद्ध थथे, मुद्ध  
थथे, मुक्त थथे अने तमाभ हु जेनो अत कथे

हे जम्बू ! आ प्रकारे सिद्धगति स्थानने प्राप्त उदेला जेवा श्रमण भगवान  
महावीरे निरयावलिकाना प्रथम अध्ययनने आ साथ प्ररूपित कथे हे अर्थात् भग-  
वानना मुपेथी नम मे सावज्यु तेम मे तमने कथु ठे ( ४५ )

श्री निरयावलिका सूत्रनुप्रथम अध्ययन समाप्त ( १ )

घण्टाभिः सिप्रतूरेण=अतिशीघ्रेण वाद्यमानेन तूरेण महता=विशालेन उत्कृष्टसिंह-  
नाद=बोल-कलकल-रवेण उत्कृष्टः=भयङ्करः सिंहनादः=सिंहगर्जनवत् बोल=कोला-  
हल, कलकलः=व्याकुल, श्रोतुर्महामयजनको यो रवः=शब्दस्तेन समुद्ररवभूतमिव=  
वेलाकुलजलनिधिप्रचण्ड भूतसदृश शब्द कुर्वाणे सर्वक्रुद्धया=सकलयुद्धसामग्र्या  
युक्ते आस्ता, तत्र यावत् रवेण चीत्कारादिभयानरशब्देन हयगता=अश्वारूढाः  
हयगतैः=अश्वारूढैः सह, गजगताः=गजारूढाः गजगतैः=गजारूढैः सह रथगताः=  
रथारूढा रथगतैः=रथारूढैः सह, पदातिकाः=पादचारिणः पदातिकैः=पादचा-  
रिभिः सह, अन्योऽन्यैः=परस्परैः सार्द्धं=सह सप्रलम्बा=योद्धुः सम्मिलिता चकार  
शस्त्रादिजनितप्रहारादिसमुच्चायक' अपि=निश्चये अभूवन्=जाता ।

ततः खलु ते द्वयोरपि राज्ञोरनीके निजरुस्वामिशासनानुरक्ते=स्वस्वामि-  
निदेशपरायणे महान्त विशाल जनक्षय=जननाश जनवध=जनताडन मुशलादिना,  
जनप्रमर्द=गदादिना भटाना चूर्णीकरम् जनसर्वतकल्प=प्रजासंहारसदृश नृत्य

उसके बाद उन दोनों राजाओंके योद्धा अपने २ स्वामीकी  
आज्ञामें अनुरक्त हो अत्यधिक, मनुष्योंका क्षय, मनुष्योंका वध,  
मनुष्योंका मर्दन, एवं मनुष्योंका संहार करते हुए तथा नाचते हुए  
घड़ोंके समूहसे भयकर और शोणितसे भूमिको कीचड़मयी बनाते  
हुए एक दूसरेके साथ लड़ने लगे ।

उसके बाद वह काल कुमार तीन २ हजार हाथी, घोड़े और  
रथ, तथा तीन करोड़ मनुष्योंके साथ गरुडव्यूहके अपने ग्यारहवें  
स्कन्ध अर्थात् भागके द्वारा रथमुशल संग्राम करता हुआ सैनिकोंका  
संहार हो जानेके बाद जिस प्रकार भगवानने काली देवीको कहा  
है उन्ही प्रकार वह मारा गया ।

त्यार पछी ते जन्ने राजाज्योना योद्धाज्यो पोतपोताना स्वामीनी आज्ञाने  
अनुसरता यधने धण्डा मनुष्योना नाश, मनुष्योना वध, मनुष्योना मर्दन अर्थात्  
मनुष्योना नष्टार करता करता तथा नाचता यधे घड़ाना समूहधी लय कर आने दोहीधी  
रथभूमिने डीयडवाणी जनावता ज्येकधीना साथे लडवा लाग्या

त्यार पछी ता कलकुमार त्रल त्रलु हज्जर हाथी घोडा आने रथ तथा त्रलु करोड  
मनुष्योनी साथे गरुडव्यूहना पोताना अगीधारभा श्कध अर्थात् भाग द्वारा रथमुशल  
संग्राम करता करता सैनिकोना संहार यध गया पछी, जेवी रीते भगवाने काली  
देवीने कहु, ते प्रकारे ते मार्या गया

खलु सुकाल्या देव्या. पुत्र. सुकालो नाम कुमारोऽभूत्, सुकुमारः । ततः  
खलु स सुकालः कुमारः अन्यदा रुदाचित् त्रिभिर्दन्तिसहस्रैर्यथा कालः कुमारः,  
निरवशेष तदेव यावन्महाविदेहे वर्षेऽन्त रुरिष्यति ॥ १ ॥

॥ द्वितीयमध्ययन समाप्तम् ॥ २ ॥

निरयावलिका सूत्रका द्वितीय अध्ययन

‘जङ्ग भते’ इत्यादि—

हे भदन्त ! सिद्धि स्थानको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने  
निरयावलिकाके प्रथम अध्ययनका पूर्वोक्त अर्थ कहा है ।

तो हे भगवन् ! फिर द्वितीय अध्ययनमें उन्होंने किस भा  
वका निरूपण किया है ?

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें चम्पा नामकी नगरी थी । उस  
नगरीमें पूर्णभद्र नामका चैत्य था । और उस नगरीका राजा कूणिक  
था । उसकी रानी पद्मावती थी । उस चम्पानगरीमें श्रेणिक राजाकी  
पत्नी राजा कूणिककी छोटी माता सुकाली नामकी रानी थी जो  
अत्यन्त सुकुमार थी । उस सुकाली देवीका पुत्र सुकाल नामक कुमार  
था जो अत्यन्त सुकुमार था । उसके बाद वह सुकाल कुमार किमी  
एक समयमें तीन हजार हाथी, घोड़े, रथ तथा तीन करोड़ पैदल  
सैनिकोंके साथ राजा कूणिकके रथमुशल सग्राममें लड़नेके लिये  
गया और वह काल कुमारके समान ही अपनी सभी सेनाके नष्ट

निरयावलिका सूत्रनु द्वितीय अध्ययन

‘जङ्ग भते’ इत्यादि

हे भदन्त ! सिद्धि स्थानने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान महावीरने निरया-  
वविकाना प्रथम अध्ययननो, पूर्वोक्त अर्थ बताव्यो छे ता हे भगवन् ! पट्टी द्वितीय  
अध्ययनभा तेमखे क्या भावनु निरूपण कर्तुं छे ?

हे जम्बू ! ते काल ते समयमें अथा नामकी नगरी હતી તે નગરીમાં પૂર્ણભદ્ર  
નામનો ચૈત્ય હતા અને તે નગરનો રાજા કૂણિક હતો તેની રાણી પદ્માવતી હતી તે  
અથા નગરમાં શ્રેણિક રાજાની પત્ની રાજા કૂણિકનાં નાનાં માતા સુકાલી નામની  
રાણી હતી જે અત્યંત સુકુમાર હતી તે સુકાલા દેવીનો પુત્ર સુકાલ નામનો કુમાર  
હતો જે અત્યંત સુકુમાર હતો ત્યાર પછી તે સુકાલ કુમાર કોઈ એક સમયમાં ત્રણ  
ત્રણ હજાર હાથો ઘોડા રથ તથા ત્રણ કરોડ પાયાળ મૌનક સાથે રાજા કૂણિકના રથ-  
મુશલ સગ્રામમાં લડવા માટે ગયો અને તે કાલકુમારની સમાન જ પોતાની તમામ





एव खलु जम्बू । समणेण भगवया जाव संपत्तेणं कप्प-  
वडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तजहा—पउमे १ महापउमे  
२ भदे ३ सुभदे ४ पउमभदे ५ पउमसेणे ६ पउमगुम्मे ७  
नलिणिगुम्मे ८ आणंदे ९ नदणे १० । जइण भत्ते । समणेणं  
जाव सपत्तेण कप्पवडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स  
ण भत्ते । अज्झयणस्स कप्पवडिसियाण भगवया जाव सपत्तेणं  
के अट्ठे पन्नत्ते ? । एव खलु जंबू । तेण कालेण तेणं  
समएणं चंपा नाम नयरी होत्था । पुन्नभदे चेइए । कूणिए,  
राया । पउमावई देवी । तत्थ ण चपाए नयरीए सेणियस्स  
रत्तो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी  
होत्था, सुकुमाल० । तीसेण कालीए देवीए पुत्ते काले  
नाम कुमारे होत्था, सुकुमाल० । तस्स णं कालस्स पउमावई  
नामं देवी होत्था, सोमाल० जाव विहरइ ।

तए ण सा पउमावई देवी अन्नया कयाइ तसि तारि-  
सगसि वासघरसि अर्म्मितरओ सचित्तकम्मे जाव सीह सुमिणे  
पासित्ता ण पडिबुद्धा । एव जम्मण जहा महाबलस्स, जाव  
नामधिज्ज, जम्हाणं अम्ह इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते  
पउमावईए देवीए अत्तए त होउ णं अम्ह इमस्स दारगस्स  
नामधिज्ज पउमे सेस जहा महब्बलस्स अट्ठओ दाओ जाव  
उप्पिपासायवरगए विहरइ ॥ १ ॥

एव शेषाप्यप्यष्टाध्ययनानि ज्ञातव्यानि प्रथमसदृशानि । नवर मातरः सदृशनाम्न्यः ॥ १० ॥ निक्षेपः सर्वेषां भणितव्यस्तथा ॥

निरयावलिकाः समाप्ताः । ॥ प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

टीका—‘जड़ण भते’ इत्यादि । सदृशनाम्न्यः=पुत्रसदृशनाम्न्यः । शेष निगदसिद्धम् ॥

॥ इति निरयावलिकामूत्रे टीकाया प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ कल्पावतसिका नाम द्वितीयो वर्गः ॥

मूलम्—जड़णं भंते । समणेण भगवया जाव सपत्तेण उव-  
गाण पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाण अयमद्वे पन्नत्ते, दोच्च-  
स्स ण भंते । वग्गस्स कप्पवडिंसियाण समणेणं जाव सपत्तेण  
कइ अज्झयणा पन्नत्ता ? ।

हो जानेके बाद मारा गया । मरकर काल कुमारके समान ही नर-  
कमें गया और वहाँसे निकलकर महाविदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर काल  
कुमारके समान सिद्ध होगा यावत् सब दुःखोंका अन्त करेगा ।

। द्वितीय अध्ययन समाप्त हुआ ।

इसी प्रकार—प्रथम अध्ययनके सदृश शेष आठ अध्ययनोंको  
भी जानना चाहिये । विशेष इतना ही है कि माताओंका नाम  
कुमारोंके नामके समान हैं ॥ १० ॥

सभीका निक्षेप अर्थात् उपसहार पहिले अध्ययनके समान  
ही समझना चाहिये । इति । निरयावलिका समाप्त हुई ।

निरयावलिकानामक प्रथम वर्ग समाप्त ॥१॥

सेना नष्ट થઈ ગયા બાદ માર્યો-ગયો મરીને ઢાલકુમારની પેઠે જ નરકમાં ગયો અને  
ત્યાથી નાકળી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈ કાલકુમારની જેમ સિદ્ધ થશે અને તમામ  
દુઃખનો અંત કરશે

द्वितीय अध्ययन समाप्त થયું

આ પ્રકારે—પ્રથમ અધ્યયનના જેમ બાકીના આઠ અધ્યયનોને પણ બાણના  
બોધએ વિશેષ એટલું જ છે કે માતાઓના નામ કુમારોના નામના જેવાજ છે

બધાનો નિષેપ અર્થાત્ ઉપસહાર પહેલા અધ્યયનના સમાનજ સમજી લેવો  
બોધએ ઇતિ નિરયાવલિકા સમાપ્ત થઈ

નિરયાવલિકા નામક પ્રથમ વર્ગ સમાપ્ત (૧)

अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भटन्त ! अध्ययनस्य कल्पावतसिमाना श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एव खलु जम्बूः । तस्मिन् काले तस्मिन् ममये चम्पा नाम नगरी आसीत् । पूर्णभद्र चैत्य, कृणिको राजा, पद्मावती देवी । तत्र खलु चम्पाया नगर्या श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कृणिकस्य राज्ञो लघुमाता काली नाम देवी आसीत् । सुकुमार० । तस्या खलु देव्याः पुत्रः कालो नाम कुमार आसीत् । सुकुमार० । तस्य खलु कालस्य कुमारस्य पद्मावती नाम देवी अभवत् । सुकुमार० यावत् विहरति ।

तत खलु सा पद्मावती देवी अन्यदा नदाचित् तस्मिन् तादृशे वामगृहे अभ्यन्तरत सचित्रकर्मणि यावत् सिद्धं स्वप्ने दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धा । एव

अध्ययनोका निरूपण किया है । उसके प्रथम अध्ययनमें किस भावका निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें चम्पा नामकी नगरी थी । वहाँ पूर्णभद्र चैत्य था । उसनगरीमें कृणिक राजा राज्य करता था उसके पद्मावती नामकी रानी थी । उस चम्पानगरीमें राजा श्रेणिककी पत्नी महाराज कृणिककी छोटी माता काली नामकी रानी थी जो अत्यन्त सुकुमार थी । उस रानीके एक कालकुमार नामका पुत्र था । उस कालकुमारकी पत्नी पद्मावती देवी जो अत्यन्त सुखी थी, वह प्रबोधिजित पुण्यसे मिले हुए मनुष्य सुखका अनुभव करती रहती थी ।

उसके बाद एक दिन वह पद्मावती देवी अपने अत्युत्तम वासगृहमें सोयी हुई थी । उसके वामगृहकी दिवालें अत्यन्त मनो-

निर्दोष कथुं ठे तेना प्रथम अध्ययनमा व्याप्नु निर्दोष कथुं ठे ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! ते काले ते समये यथा नामनी नगरी હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય હતો તે નગરીમાં કૃષિક નાજી રાજ્ય કરતા હતા તેમને પદ્માવતી નામની ગણી હતી, તે ચાંપાનગરીમાં રાજા શ્રેણિકની પત્ની મહારાજ કૃષિકની નાની માતા કાલી નામની રાણી હતી જે અત્યંત સુકુમાર હતી તે રાણીને એક કાલકુમાર નામનો પુત્ર હતો, તે કાલકુમારની પત્ની પદ્માવતી દેવી જે બહુ સ્વરૂપવાન હતી તે, પૂર્વ ઉપાર્જિત પુણ્યથી મળેલા મનુષ્ય સુખનો અનુભવ કરતી રહેતી હતી

ત્યાર પછી એક દિવસ તે પદ્માવતી દેવી પોતાના અતિ ઉત્તમ વાસગૃહમાં સૂતી હતા તે વાસગૃહની બાંતો અત્યંત મનોહર બિંદીથી ચીનરાયેલી હતી તે

છાયા-યદિ સ્વલુ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા યાવત્ સપ્રાપ્તેન ઉપા  
જ્ઞાના પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય નિર્યાવલિકાનામયમર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ ભદન્ત !  
વર્ગસ્ય કલ્પાવતસિકાના શ્રમણેન યાવત્ સપ્રાપ્તેન કતિ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ ?

एव स्वलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता यावत् सप्राप्तेन कल्पावतसिकाना  
दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्वया-पद्म १ महापद्मः २ भद्र ३ सुभद्रः  
४ पद्मभद्रः ५ पद्मसेनः ६ पद्मगुल्म ७ नलिनीगुल्मः ८ आनन्दः ९ नन्दन  
१० । यदि स्वलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन कल्पावतसिकाना दश

कल्पावतसिका नामक द्वितीय वर्ग ।

‘જડણ મતે’ ઇત્યાદિ—

हे भदन्त ! यदि मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने निर-  
यावलिका नामक उपाङ्गके प्रथम वर्गमें पूर्वोक्त अभिप्रायका वर्णन  
किया है तो इसके बाद भगवानने द्वितीय वर्ग-कल्पावतसिकामें  
कितने अध्ययनोंका वर्णन किया है ?

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने कल्पावतसिकामें दस  
अध्ययनोंका निरूपण किया है उनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) पद्म (२) महापद्म (३) भद्र (४) सुभद्र (५) पद्मभद्र (६)  
पद्मसेन (७) पद्मगुल्म (८) नलिनीगुल्म (९) आनन्द और (१०) नन्दन ।

શ્રી જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં —

हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीरने कल्पावतसिकामें दस

कल्पावतसिका नामके द्वितीय वर्ग

‘જડણ મતે’ ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! જો મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણભગવાન મહાવીરે નિર્યાવલિકા નામે  
ઉપાંગના પ્રથમ વર્ગમાં પૂર્વોક્ત અભિપ્રાયનું વર્ણન કર્યું છે તો ત્યાર પછી તેમણે  
બીજા વર્ગ કલ્પાવતસિકામાં કેટલા અધ્યયનોનું વર્ણન કર્યું છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर कल्पावतसिकाया दश अध्ययनानां  
निर्दिष्टं कर्तुं छि तेभना नाम आ प्रभाष्ये छे—

(१) पद्म (२) महापद्म (३) भद्र (४) सुभद्र (५) पद्मभद्र (६) पद्मसेन  
(७) पद्मगुल्म (८) नलिनीगुल्म (९) आनन्द અને (१०) નન્દન

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर कल्पावतसिकाया दश अध्ययनानां

अहिज्झइ, अहिज्जित्ता वट्ठहिं चउत्थछट्टुम जाव विहरइ । तएणं  
से पउमे अणगारे तेण ओरालेणं जहा मेहो तहेव धम्म-  
जागरिया चिंता एव जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता  
विउले जाव पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अतिए  
सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइ, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइ  
सामन्नपरियाए, मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ० आणु-  
पुव्वीए कालगए । थेरा ओइन्ना भगव गोयमो पुच्छइ, सामी  
कहेइ जाव सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय० उड्ड  
चदिम० सौहेम्मि कप्पे देवत्ताए उववन्ने, दो सागराइ । से  
णं भत्ते पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण पुच्छा,  
गोयमा । महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अतं काहिइ ।  
त एव खलु जवू । समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं  
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते तिवेमि ॥ २ ॥

॥ पढममज्झयणं समत्त ॥

छाया-स्वामी समवसृतः । परिपत् निर्गता । कूणिको निर्गतः ।  
पद्मोऽपि यथा महाबलो निर्गतस्तथैव अम्बापित्रा वृच्छना यावत् प्रव्रजितोऽनगारो  
जातो यावत् गुप्तरक्षचारी ।

‘सामी समोसरिण’ इत्यादि—

भगवान् महावीर प्रभु पधारि, परिपद वर्म श्रवण करनेके लिये  
निकली । कूणिक राजा भी धर्मोपदेश सुननेके लिए निकला, कुमार  
पद्म भी महाबलके समान भगवान् के पास गया । वहाँ भगवान् के

‘सामी समोसरिण’ इत्यादि

भगवान् महावीर प्रभु पधारि परिपद वर्म श्रवण करवा भाटे निकला कूणिक  
राजा पद्म धर्मोपदेश मागणवा भाटे निकला कुमार पद्म पद्म महाबलानी पडे भग

जन्म यथा महाबलस्य यावत् नामधेय, यस्मात् खलु अस्माकमय दारक, कालस्य कुमारस्य पुत्रः पद्मावत्या देव्या आत्मजः तद् भवतु खलु अस्माकम् अस्य दारकस्य नामधेय पद्मः । शेष यथा महाबलस्य अष्ट दायाः यावत् उपरि मासादप्रगतो विहरति ॥ १ ॥

टीका—‘जङ्घ भते’ इत्यादि—कूणिकराजलघुभ्रातुः कालकुमारस्य पद्मावती नाम भार्या अन्यदा कदाचित् अभ्यन्तरत अभ्यन्तरभागे सचित्रकर्मणि=विविचित्रचित्रकर्मयुक्ते तस्मिन् तादृशे वासगृहे=निजमासादे मुत्तजाग्रदवस्थाया तन्द्राया स्वप्ने सिंह दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता । शेष सुगमम् ॥ १ ॥

मूलम्—सामी समोसरिण । कूणिण निग्गण । पउमेवि जहा महब्बले निग्गण तहेव अम्मापिडि—आपुच्छणा जाव पव्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तवंभयारी ।

तएणं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइ एकारस अंगाइ

हर चित्रोंसे चित्रित थी । उस घरमें अपनी कोमल शय्यापर सोती हुई उस रानीने स्वप्नमें सिंहको, देखा । स्वप्न देखनेके बाद जाग गयी । बादमें उसे स्वप्न दर्शनके अनुसार शुभ लक्षणवाला पुत्र हुआ । उसका जन्मसे लेकर नामकरण पर्यन्त सभी कृत्य महाबल कुमारके सदृश जानना । वह काल कुमारका पुत्र और पद्मावती देवीका अङ्गजात होनेसे उसका नाम पद्म रखा गया । इसके बादका सभी वृत्तान्त महाबलके सदृश जानना चाहिये । उसे आठ २ दहेज मिला । वह अपने ऊपरी महलमें सभी प्रकारके मनुष्यसम्बन्धी सुखोंका अनुभव करता हुआ निवास करता था ॥ १ ॥

धरमा पोतानी ठामल शय्यामा सुतेवी ते राष्ठांमे स्वप्नामा सिद्धने ज्ञेये। स्वप्न दीक्षा पछी ते नग्री गर्ध पछी तेने स्वप्नदर्शनने अनुसरीने शुभ लक्षणवाणे। पुत्र थये। तेना जन्मधी माडी नमिडरुष सुधीना कर्था मङ्गल कुमारना नेवाज नष्टुवा ते कालकुमा ने। पुत्र तथा पद्मावती देवीनी कूणे जन्मेवे। होवाथी तेनु नाम पद्म राभवामा आबु त्थार छीने। सर्व वृत्तान्त मङ्गलानी पेठे नष्टुवे। ज्ञेयमे तेने आठ आठ दहेज मल्ल्या अने त पोताना उपमा मङ्गलमा तमाम प्रकारना मनुष्यसम्बन्धी सुखे। भोगवती तेमा रडेतो। इतो ॥ १ ॥

अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थछट्टुम जाव विहरइ । तएणं  
से पउमे अणगारे तेण ओरालेण जहा मेहो तहेव धम्म-  
जागरिया चिंता एव जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता  
विउले जाव पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अतिए  
सामाइयमाइयाइं एकारस्स अगाड, बहुपडिपुण्णाइ पच वासाइ  
सामन्नपरियाए, मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ० आणु-  
पुव्वीए कालगए । थेरा ओइन्ना भगव गोयमो पुच्छइ, सामी  
कहेइ जाव सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय० उड्डु  
चंदिम० सौहंम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, दो सागराइ । से  
णं भत्ते पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण पुच्छा,  
गोयमा । महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अतं काहिइ ।  
त एव खल्लु जव्व । समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिसियाणं  
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि ॥ २ ॥

॥ पढममज्झयणं समत्त ॥

छाया-स्वामी समवस्रतः । परिपत् निर्गता । कूणिको निर्गतः ।  
पद्मोऽपि यथा महाबलो निर्गतस्तथैव अद्यापिनामृच्छना यावत् प्रव्रजितोऽनगारो  
जातो यावत् गुप्तरक्षचारी ।

‘सामी समोसरिण’ इत्यादि—

भगवान् महावीर प्रभु पधारे, परिपद वर्म श्रवण करनेके लिये  
निकली । कूणिक राजा भी धर्मोपदेश सुननेके लिए निकला, कुमार  
पद्म भी महाबलके समान भगवान् के पास गया । वहाँ भगवान् के

‘सामी समोसरिण’ इत्यादि

भगवान् महावीर प्रभु पधार्थ परिपद धर्म श्रवण करना भाटे निकली कूणिक  
राजा पद्म धर्मोपदेश आलापना भाटे निकला कुमार पद्म पद्म महाबलानी पडे भग-



॥१॥ - ततः खलु स, पद्मोऽनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते । अधीत्य बहुभिः चतुर्थपष्ठाष्टमं यावद् विहरति । ततः स पद्मोऽनगारो तेन उदारेण यथा मेघस्तथैव धर्मजागरिका, चिन्ता, एव यथैव मेघस्तथैव श्रमण भगवन्तमापृच्छय विपुले यावत् पादमोगतः सन् तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि, बहुप्रतिपूर्णानि पञ्च वर्षाणि श्राम

उपदेशसे उसे वैराग्य हो गया । उसने महाबलके समान ही माता पितासे प्रव्रज्याकी अनुमति मांगी । तथा अन्तमें उसने प्रव्रज्या लेली और अनगार हो गया यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हो गया ।

उसके बाद वे पद्म अनगारने श्रमण भगवान् महावीरके तथारूप स्थविरोंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया । और बहुत सी चतुर्थ पष्ठ आदि तपस्या की । अनन्तर वे पद्म अनगार उदार-कठिन तपश्चर्या करनेसे तपः कर्मके आराधनके कारण उनका शरीर शुष्क-रूक्ष हो गया । मांस शोणितके सूख जानेके कारण इतने कृश हो गये कि उनके शरीरमें 'हड्डी और चमड़ा मात्र रह गया और उनकी सभी नसें दिखाई देने लगी । इसका विशेष वर्णन मेघकुमारके समान जानना । मेघ कुमारके समान ही इनने धर्म जागरणा की और विपुल गिरि पर जाने आदिका विचार किया और मेघकुमारके समान ही विपुल गिरिपर जानेके

वानना पास गना त्या भगवानना उपदेशथा तन वैराग्य यध गये। तेखे महाबलनी पेटेन माता पिता पास प्रव्रज्यानी रज मागी तथा छवटे तेखे प्रव्रज्या (हीक्षा) लीधी अने अनगार (गृहत्यागी) यध शुभ्र ब्रह्मचारी यध गया।

त्यार पछी ते पद्म अनगारे (गृहत्यागी) श्रमण भगवान् महावीरना तथारूप स्थविराणां पास सामायिक आदि अंगीवार अंगोनु अध्ययन करुं अने बहुत सी चतुर्थ तथा छठ आदि (१-२ उपवास) तपस्या करी पछी ते पद्म अनगार उदार कठिन तपस्या करवाथी तपः कर्मोनु आराधन करवाना कारणे तमनु शरीर सूकाय गयु, रूक्ष यध गयु। दोही भाम सूकाय जवाना कारणे कोटला कृश (नयना) यध गया के तेमना शरीरमा छडका तथा याम । मात्र रही गया अने तेमनी अधी नसें दिखावा लागी आनु। विशेष वर्णन मेघकुमारना जयु जणवु मेघकुमारनी पेटेन तेमखे धर्म जागरण करी तथा विपुलगिरि उपर जवा आदिने विचार करी तथा मेघकुमारनी पेटेन

प्यपर्याय' । मासिक्या सलेखनया पष्टि भक्तानि० त्रानुपूर्व्या कालगतः ।  
स्थविरा अवतीर्णा भगवान् गौतमः पृच्छति, म्यामी ऋषति यावत् पष्टि  
भक्तानि अनगनेन छित्वा आलोचित० उर्वं चन्द्रमः० सौम्ये रूपे देवत्वेन  
उपपन्नः । द्वौ मागरी । स खलु भन्त ! पद्मो देवस्ततो देवलोकाद् आयु'  
क्षयेण पृच्छा गौतम ! महाविदेहे वर्षे यथा दृढप्रनिज्ञो यावन्त करिष्यति ।'

लिये भगवानसे पूछा । पृच्छकर स्वयं पुनः पञ्च महाव्रत ग्रहण किया ।  
गौतम आदि भ्रमण निर्ग्रन्थोको स्वमाकर स्थविरोके साथ वीरे ० विपुल  
गिरि पर चढे । और वहाँ सवित्रि पादपोषगमन सथारा स्वीकारकर  
कालकी इच्छा नहीं करते हुए रहने लगे । और वे पद्म अनगारने  
स्थविरोंके समीप ग्यारह अद्रोका अभ्यगमन किया और प्रेरे पाँच  
वर्षकी दीक्षापर्याय पाली ।

एक मासकी सलेखनासे साठ भक्तका जेदनकर अनुक्रमसे  
कालको प्राप्त हो गये । उनके कालप्राप्त करनेके बाद स्थविर उन पद्म  
अनगारके भाण्डोपकरण लेकर भगवानके पान आये उनके आनेके  
बाद गौतमने भगवानसे पूछा-हे भगवन ! ये पद्म अनगार काल  
करके कहाँ गये ?

भगवानने कहा-हे गौतम ! पद्म अनगार प्रवोक्त प्रकारसे एक  
महीनेका सन्ध्या कर और आलोचित प्रतिका त होकर अर्थात् आत्म-

विपुन गिरिपर जवा भागे भगवानने पूछ्यु पूछाने पाने करीने पथ मङ्गाव्रत श्रद्धा  
क्या गौतम आदि भ्रमण निर्ग्रन्थोको तथा निर्ग्रन्थीकोने अभ्यासीने स्थविरेनी साथे  
धीरे धीरे विपुलगिरि पर चढ्या अने त्या विधीसन् पादपोषगमन सथारे स्वीकार  
करी म छुनी छच्छा वगैरे रडेवा लग्या तथा ते पद्म अनगार स्थविरेनी पासो अगीयार  
अ गोनो अभ्ययन कर्यु अने पूरा पाय वर्षनी दीक्षा पर्याय पाणी

एक महीनानी सलेखनाथी साठ भक्तानु जेवन करी अनुक्रमे कालने प्राप्त थया  
तमना काल प्राप्त कर्या पछा स्थविर लोक ते पद्म अनगारना लाडोपकरण लधने  
भगवाननी पाने आव्या तेना आव्या पछी गौतमे भगवानने पूछ्यु-हे भगवन ! आ  
पद्म अनगार काल करीने क्या गया ?

भगवाने कहु-हे गौतम ! पद्म अनगार प्रवोक्त प्रकारे एक महीनानो सथारे  
करी तथा अनोचित प्रतिक्रान्त यद्य अर्थात् आत्मशुद्धि करी कालने अपसरे काल प्राप्त

तदेव खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कल्पावतसिम्भाना प्रथमस्या  
अधयनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । इति ब्रवीमि ॥ २ ॥

॥ प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥

टीका—‘सामी’ इत्यादि-स्थविरा अवतीर्णा=विपुलगिरितोऽधस्तादा  
गताः । शेष सुगमम् ॥ २ ॥

॥ प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥

मूलम्—जड़ण भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेण कप्प-  
वडिसियाण पढसस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, दोच्चस्स  
णं भत्ते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जंबू !  
तेणं कालेण २ चण नाम नयरी होत्था, पुत्तभद्दे चेइए,  
कूणिए राया, पउमावईदेवी । तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणि-

शुद्धि करके काल अवसर काल प्राप्त होकर चन्द्रमासे उपर सौधर्म  
कल्पमे दो सागरकी स्थितिवाले देवपनेमे उत्पन्न हुए ।

हे भदन्त ! वह पद्म देव देवसम्बन्धी आयु भव स्थितिके  
क्षय होजानेके बाद, देवलोकसे चवकर कहा जायगा ।

हे गौतम वह देवलोकसे चवकर महाविदेह क्षेत्रमे दृढ प्रतिज्ञके  
समान समृद्ध कुलमे जन्म लेकर सिद्ध होगा और सब दुखोका  
अन्त करेगा ।

हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने  
कल्पावतसिकाके प्रथम अध्ययनका यह भाव निरूपण किया है । ॥२॥

। प्रथम अध्ययन समाप्त ।

अथ यद्रमानी उपर सौधर्म कल्पमा जे सागरानी स्थितिवाणा देवपण्णे उत्पन्न थया  
हे भदन्त ! ते पद्मदेव देव सणधी आयु, भव स्थितिने क्षय थय गया पछी  
देवलोकथी स्यवीने क्या जये ?

हे गौतम ! ते देवलोकथी स्यवीने महाविदेह क्षेत्रमा दृढप्रतिज्ञानी रीते समृद्ध  
कुलमा जन्म लई सिद्ध थये अने तमाम दुःखनो अंत करेये

हे जम्बू ! आ प्रकारे मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान महावीरने कल्पावतसिकाना प्रथम  
अध्ययननु आ भाव निरूपण कर्तुं छे ॥ २ ॥

प्रथम अध्ययन समाप्त

यस्स रत्तो भज्जा कूणियस्स रत्तो चुल्लमाउया सुकाली नाम  
देवी होत्था । तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नाम कुमारे ।  
तस्स ण सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था,  
सुकुमाला ।

तए णं सा महापउमा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारि-  
सगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारए, जाव सिज्झहिइ,  
नवर ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसट्ठिओ । त एव खल्लु  
जव्वु । समणेण भगवया जाव सपणत्ते० । एवं सेसा वि अट्ठ  
नेयव्वा । मायाओ सरिसनामाओ । कालादीण दसण्हं पुत्ताण  
आणुपुव्वीए—दोण्ह च पच चत्तारि, तिण्ह तिण्ह च होति  
तिन्नेव । दोण्ह च दोण्णि वासा, सेणियनत्तूण परियाओ ॥१॥

उववाओ आणुपुव्वीए, पढमो सोहम्मे वितिओ ईसाणे,  
तइओ सणकुमारे, चउत्थो माहिंदे, पचमओ वभलोए, छट्ठो  
लतए, सत्तमओ महासुक्के, अट्ठमओ सहस्सारे, नवमओ  
पाणए, दसमओ अच्चुए । सव्वत्थ उक्कोसट्ठिई भाणियव्वा,  
महाविदेहे सिज्झहिइ १० ॥ ३ ॥

ठाया—यदि खल्लु भन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् समाप्तेन कल्पा-  
वतसिकाना प्रथमस्याऽययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । द्वितीयस्य खल्लु भन्त !  
अययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः । एव खल्लु जम्मु ! तस्मिन् काले तस्मिन् ममये  
चम्पा नाम नगरी आसीत्, पूर्णभद्र चैत्य, मूणिओ राजा पद्मावती देवी ।  
तत्र खल्लु चम्पाया नगर्या श्रेणिस्स्य राज्ञो भार्या कूणिस्स्य राज्ञो लघुमाता  
सुकाली नाम देवी आसीत् । तस्याः खल्लु सुमाल्याः पुत्रः सुकालो नाम कुमारः,  
तस्य खल्लु सुमाल्य कुमारस्य महापद्मा नाम देवी आसीत्, सुकुमारा ।

તતઃ સ્વલુ સા મહાપદ્મા દેવી અન્યદા યદાચિન્ તસ્મિન્ તાદૃશે એવ  
તથૈવ મહાપદ્મો નામ દારમ્ યાવત્ સેત્સ્યતિ નગરમીશાનકલ્પે ઉપપાત  
ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિકઃ । એવ સ્વલુ જમ્બૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા યાવત્ સપ્રાપ્તેન ।  
એવ શોષાણ્યેપિ અઘૃતૌ જ્ઞાતવ્યાનિ, માતરઃ સન્જનામ્ન્યઃ કાલાદીના દેગાના  
પુત્રાણામાનુપૂર્વ્યા—(તતપર્યાયઃ)—

દ્વયોશ્ચ પશ્ચચત્વારિ, ત્રયાણા ત્રયાણા વ ભવન્તિ ત્રીર્ણ્યવ । દ્વયાશ્ચ  
દ્વે વર્ષે, શ્રેણિકુળપુત્રા પર્યાયઃ ॥ ૧ ॥

ઉપપાત આનુપૂર્વ્યા—પ્રથમ સાધર્મે, દ્વિતીય દેશાને, તૃતીય, સનત્કુમારે,  
ચતુર્થો માહેન્દ્રે, પશ્ચમો પ્રભલોકે, પછો લાન્તકે, મસપ્રમો મહાશુક્રે, અપ્રમ  
સદ્સારે, નવમઃ પ્રાણતે, દશમોઽચ્યુતે । સર્વત્ર ઉત્કૃષ્ટા સ્થિતિર્ભણિતવ્યા,  
મહાવિદેહે સેત્સ્યતિ ૧૦ ॥ ૩ ॥

ટીકા—‘જડણ મતે’ इत्यादि । માત્રનામસદગનામાન કાલાદીના દશાના  
પુત્રા શ્રેણિકુળોત્તર પદ્માદયઃ કિયન્તિ ૨ વર્ષાણિ સયમપર્યાય પાલયામાસુરિતિ  
ક્રમેણ વ્રતપર્યાયપ્રતિપાદિકા તદગાથા નિગદ્યતે—‘દ્વયોશ્ચ’—ત્યાદિ । અત્યા

દ્વિતીય અ યયન પ્રારમ્ભ ।

‘જડણ મતે’ इत्यादि—

જમ્બૂ સ્વામિ પૂછતે હે—

હે મદન્ત ! મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને કલ્પાવત  
સિકાકે પ્રથમ અધ્યયનકે માથોકો પ્રવેશિત પ્રકારસે નિરૂપણ કિયા હૈ  
તો ડસકે થાદ હૈ ભગવન્ ! દ્વિતિય અધ્યયનમે ભગવાન કિન માથોકો  
નિરૂપણ કિયા હૈ ।

સુધર્મા સ્વામિ કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમે ચમ્પા નામકી નગરી થી ।

જડણ-મતે इत्यादि

દ્વિતીય ( બીજી ) અધ્યયન પ્રારમ્ભ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે મદન્ત ! મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવત સિકાના પ્રથમ  
અધ્યયનના ભાવોને પૂર્વાકિત પ્રકારે નિરૂપણ કયો છે તો ત્યાર પછી હે ભગવન્ બીજા  
અધ્યયનના ભાવોને કયા ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે ચમ્પા નામે એક નગરી હતી તે નગરીના

अयमभिप्रायः-द्वयोः=काल-सुकाल-पुत्रयोः पद्म-महापद्मकुमारयोर्व्रतपर्या  
पञ्च पञ्च वर्षाणि, त्रयाणां=महाकाल-कृष्ण-सुकृष्णपुत्राणां-भद्र-सुभद्र-पद्म-  
कुमाराणां चत्वारि चत्वारि वर्षाणि व्रतपर्यायः, पुनस्त्रयाणां=महाकृष्ण-वीरकृष्ण-  
रामकृष्णपुत्राणां पद्मसेन-पद्मगुल्म-नलिनीगुल्मकुमाराणां त्रीणि त्रीणि वर्षा  
व्रतपर्यायः, पुनर्द्वयोः=पितृसेनकृष्ण-महासेनकृष्णपुत्रयोः आनन्द-नन्दनकुमार  
द्वे द्वे वर्षे । इत्य श्रेणिमनष्टणा=श्रेणिस्त्रीणां दशानामपि पर्यायः=सय

वहै पूर्णभद्र चैल या । वहैका राजा कूणिक या । उसकी रानी  
नाम पदमावती या । उस चम्पानगरीमे राजा श्रेणिककी रानी मा  
राजा कूणिककी छोटी माता सुकाली नामकी रानी थी । उस सुका  
रानीका पुत्र सुकाल कुमार या । उस सुकाल कुमारकी पत्नी  
नाम महापद्मा या, वह अत्यन्त सुकुमार थी ।

उसके बाद वह महापद्मा देवी किसी समय एक रातमे जा  
पर सोयी हुई थी । उसने स्वप्नमे मित्रको देखा । और नौ महीने  
बाद उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम महापद्म रखा गया  
उन महापद्म अनगारका उत्पत्तिसे लेकर सिद्धि तत्काल वृत्तान्त पद  
अनगारके समान ही जानना चाहिये । अर्थात् देवलोकसे च्यवन  
महाविदेह क्षेत्रमे सिद्ध होंगे । इतना विज्ञेय है कि ये महापद्  
अनगार ईशान देवलोकमे उत्कृष्ट स्थितिवाले देव हुए ।

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर प्रभुने इस प्रकार कथित

पूछेभद्र गौतम उतो, त्याने नाम दाखड उतो तेनी । श्वीनु नाम पद्मावती उतु  
चम्पानगरीमां सग श्रेणिकनी राणी-महा-न दृष्टिकनी नानी माता-सुकाली नामे न  
हती ते सुकाली राणीने पुत्र कुमा- सुजव उतो ते सुकाल कुमारनी पत्नीनु न  
महापद्मा उतु ते गहु सुकुमार हती

। त्यार पछी ते महापद्मा देवी कोठ भमये ओक रात्रिमा जयादे गय्या पर सु  
त्यादे तेणे स्वप्नामा निहने जेथे अने नव महिना पछी तेने ओक पुत्र उत्पन्न  
जेनु नाम महापद्म राजवामा आव्यु आ महापद्म अनगारनी उत्पत्तिथी मा  
मिद्धि सुधीनु वृत्तान्त पद्म अनगारना जेवुज जाली लेवु जेधजे अर्थात् देवलोक  
च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमा सिद्ध थये ओरहु विगण ठे के ते महापद्म अनगार धृ  
देवलोकमा उत्कृष्ट स्थितिवाला देव थया

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर प्रभुने आ प्रकारे णीज अध्ययननु निश्  
कृत्य छे ते जेवु भगवान पासेथी आशय्युं जे तेवुज मे तने छलु ठे (२) ।

પર્યાયો જ્ઞાતવ્યઃ । આનુપૂર્વ્યા=ક્રમેણ ઉપપાતઃ=દેવલોકેષુ જન્મ પ્રાપ્યતે-  
પ્રથમઃ=પદ્મઃ ૧ સૌધર્મે=સૌધર્માશ્રયપ્રથમદેવલોકે ઉત્કૃષ્ટદ્વિસાગરોપમસ્થિતિકો  
દેવો જાતઃ । એ દ્વિતીયઃ=મહાપદ્મઃ ૨ ઈશાને દ્વિતીયે દેવલોકે ઉત્કૃષ્ટેન  
કિંચિદધિકદ્વિસાગરોપમસ્થિતિકોઽભૂત । તૃતીય=મદ્રો મુનિઃ ૩ સનત્કુમારે

અધ્યયનકા નિરૂપણ કિયા હૈ । વહ જૈસા ભગવાનસે સુના હૈ વૈસા  
તુમ્હે કહા હૈ ॥ ૨ ॥

હે જમ્મ ! હસી પ્રકાર શેષ આઠ અધ્યયનોંકો જાનનાં વાહિયે ।  
કાલ આદિ દસ કુમારોંકે પુત્રોંકી માતાઓંકે નામ ઉન પુત્રોંકે સદૃશ  
હૈ । હન સવકા ચારિત્રપર્યાય અનુક્રમસે હસ પ્રકાર હૈ-કાલ સુકાલકે  
પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારને પાંચ ૨ વર્ષ દીક્ષા પ્રર્યાય પાલી ।

મહાકાલ, કૃષ્ણ ઓર સુકૃષ્ણકે પુત્ર મદ્ર, સુમદ્ર ઓર પદ્મ  
મદ્રને ચાર ૨ વર્ષ, મહાકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણકા પુત્ર પદ્મસેન પદ્મગુત્તમ  
ઓર નલિનીગુત્તમ અનગારોંને ત્રીન ૨ વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ મહાસેન  
કૃષ્ણકે પુત્ર આનન્દ ઓર નન્દને દો-દો વર્ષ સયમ પાલા । યે દસોં  
શ્રેણિક રાજાકે પોતે થે ।

અથ કૌન કિસ દેવલોકમેં ગયે યહ ક્રમસે કહતે હૈ ।

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામક પ્રથમ દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ દો સાગરો  
પમકી સ્થિતિવાલે, (૨) મહાપદ્મ-ઈશાન નામક દુસરે દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ  
દો સાગરોપમ જ્ઞાણેરી (કુછ અધિક) સ્થિતિવાલે, (૩) મદ્ર-સનત્કુમાર

હે જમ્મ ! આ પ્રકારે જાકીના આઠ અધ્યયનોને બાણી લેવા બેઠયે કાલ આદિ  
દશ કુમારોના પુત્રોની માતાઓના નામ તે પુત્રોના જેવા છે તે બધાના ચારિત્રપર્યાય  
અનુક્રમથી આ પ્રકાર છે —

કાલ સુકાલના પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારે પાંચ પાંચ વર્ષ દીક્ષાપર્યાય પાળા  
મહાકાલ કૃષ્ણ તથા સુકૃષ્ણના પુત્ર મદ્ર સુમદ્ર અને પદ્મલદ્રે ચાર ચાર વર્ષ, મહાકૃષ્ણ  
વીરકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણના પુત્ર પદ્મસેન પદ્મશુદ્ધ અને નલિનીગુત્તમ અનગારોએ ત્રણ ત્રણ  
વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ, અને મહાસેનકૃષ્ણના પુત્ર આનન્દ અને નન્દને બે બે વર્ષ સયમ  
પાળ્યે । આ દશેય શ્રાવિક રાજાના પોત્ર હતા

હવે કોણ કયા દેવલોકમા ગયા તે ક્રમથી બતાવીએ છીએ —

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામે પ્રથમ દેવલોકમા ગયા (૨) મહાપદ્મ-ઈશાન નામે બીજા  
દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૩) મદ્ર-સનત્કુમાર નામે ત્રીજા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૪)

તૃતીયે દેવલોકે ઉત્કૃષ્ટસપ્તસાગરોપમસ્થિતિક્, ચતુર્થઃ=સુભદ્રો મુનિઃ ૪ માહેન્દ્રે  
ચતુર્થે દેવલોકે ઉત્કૃષ્ટેન કિંચિદધિકસપ્તસાગરોપમસ્થિતિક્, પશ્ચમઃ=પદ્મમદ્રો  
મુનિઃ ૫ વ્રહ્મલોક પશ્ચમે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટદશસાગરોપમસ્થિતિક્, પૃષ્ઠઃ=પદ્મ-  
સેનો મુનિઃ ૬ લાન્તકે=તટાશ્યે પૃષ્ઠે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટચતુર્દશસાગરોપમસ્થિતિક્,  
સપ્તમઃ=પદ્મગુલ્મો મુનિઃ ૭ મહાશુક્રે સપ્તમે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટસપ્તદશસાગરોપમ  
સ્થિતિક્, અષ્ટમઃ=નલિનીગુલ્મો મુનિઃ ૮ સહસ્રારેષ્ટમે દેવલોકે, ઉત્કૃષ્ટદશ  
સાગરોપમસ્થિતિક્, નવમઃ=આનન્દો મુનિ ૯ પ્રાણતે દશમે દેવલોકે ઉત્કૃષ્ટ  
ત્રિંશતિસાગરોપમસ્થિતિક્, દશમ =નન્દનો મુનિ ૧૦ દ્વાદશેષ્યુતે દેવલોકે,

નામક ત્રીસરે દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ સાત સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૪)  
સુભદ્ર મુનિ-માહેન્દ્ર નામક ચતુર્થ દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ સાત સાગરોપમ  
જ્ઞાણરી સ્થિતિવાલે, (૫) પદ્મમદ્રમુનિ-વ્રહ્મ નામક પશ્ચમ દેવલોકમે  
ઉત્કૃષ્ટ દસ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૬) પદ્મસેન મુનિ-લાન્તક  
નામક છટે દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ ચૌદ્દ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૭)  
પદ્મગુલ્મ મુનિ મહાશુક્ર નામક સાતવે દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ મત્તરદ્  
૧૭ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે, (૮) નલિનીગુલ્મ મુનિ-સહસ્રાર નામક  
અષ્ટમ દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ ૧૫ સાગરોપમ સ્થિતિવાલે તથા (૯) આનન્દ  
મુનિ-પ્રાણત નામક નવમે દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ ૨૦ સાગરોપમ સ્થિતિવાલે  
દેવપને ઉત્પન્ન હુણ (૧૦) નન્દન મુનિ-ચારદ્વે અચ્યુત નામક દેવ-

સુભદ્રમુનિ મહેન્દ્ર નામે થોથા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૫) પદ્મભદ્ર મુનિ-વ્રહ્મ નામે  
પાચમા દેવલોકમા (૬) પદ્મસેન મુનિ-લાન્તક નામે છઠ્ઠા દેવલોકમા (૭) પદ્મગુલ્મ  
મુનિ-મહાશુક્ર નામે સાતમા દેવલોકની ઉત્કૃષ્ટથી સપ્તરમા સાગરોપમની સ્થિતિવાળા  
(૮) નલિનીગુલ્મ મુનિ-સહસ્રાર નામના આઠમા દેવલોકમા ૧૪ ઉત્કૃષ્ટ ૧૬ સાગરોપમ  
સ્થિતિવાળા દેવપણે ઉત્પન્ન થયા (૯) આનન્દ મુનિ પ્રાણુત નામે નવમા દેવલોકમા ઉત્કૃષ્ટ  
૨૦ સાગરોપમની સ્થિતિવાળા દેવપણે ઉત્પન્ન થયા (૧૦) નન્દન મુનિ-ચારદ્વે  
અચ્યુત નામે દેવલોકમા ૨૨ સાગરોપમ સ્થિતિવાળા દેવપણથી ઉત્પન્ન થયા

તેમની સ્થિતિ નીચે લખ્યા પ્રકારની છે —

પદ્મદેવની ઉત્કૃષ્ટ બે સાગરોપમ સ્થિતિ છે મહાપદ્મની બે સાગરોપમ ઝાઝેરી  
(કાષ્ઠકઅધિક છે ભદ્રની સાતસાગરોપમ, સુભદ્રની સાત સાગરોપમ ઝાઝેરી પદ્મભદ્રની  
દશ સાગરોપમ પદ્મસેનની ચૌદ સાગરોપમ પદ્મગુલ્મની મત્તર સાગરોપમ નલિની



પર્યાયો જ્ઞાતવ્યઃ । આનુપૂર્વ્યા=ક્રમેણ ઉપપાતઃ=દેવલોકેષુ જન્મ પ્રાપ્ન્યતે-  
પ્રથમઃ=પદ્મઃ ૧ સૌર્મ્યે=સૌધર્માશ્રયપ્રથમદેવલોકે ઉત્કૃષ્ટદ્વિસાગરોપમસ્થિતિકો  
દેવો જાતઃ । એવ દ્વિતીયઃ=મહાપદ્મઃ ૨ ઈશાને દ્વિતીયે દેવલોકે ઉત્કૃષ્ટેન  
ક્ષિતિદધિરુદ્ધિસાગરોપમસ્થિતિકોઽભૂત । તૃતીય=મદ્રો મુનિઃ ૩ સનત્કુમારે

અધ્યયનકા નિરૂપણ ક્રિયા છે । વહ જૈસા ભગવાનસે સુના છે વૈસા  
તુમ્હે કહા છે ॥ ૨ ॥

હે જમ્મ ! ઇસી પ્રકાર શોષ આઠ અધ્યયનોંકો જાનના ચાહિયે ।  
કાલ આદિ દસ કુમારોંકે પુત્રોંકી માતાઓંકે નામ ડન પુત્રોંકે સદૃષ  
છે । ઇન સનકા ચારિત્રપર્યાય અનુક્રમસે ઇસ પ્રકાર છે—કાલ સુકાલકે  
પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારને પાંચ ૨ વર્ષ દીક્ષા પર્યાય પાલી ।

મહાકાલ, કૃષ્ણ ઓર સુકૃષ્ણકે પુત્ર મદ્ર, સુમદ્ર ઓર પદ્મ  
મદ્રને ચાર ૨ વર્ષ, મહાકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણકા પુત્ર પદ્મસેન પદ્મગુલ્મ  
ઓર નલિનીગુલ્મ અનગારોંને ત્રીન ૨ વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ મહાસેન  
કૃષ્ણકે પુત્ર આનન્દ ઓર નન્દનને દો-દો વર્ષ સયમ પાલા । યે દસોં  
શ્રેણિક રાજાકે પોતે થે ।

અબ કૌન કિસ દેવલોકેંમેં ગયે યહ ક્રમસે કહતે હૈ ।

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામક પ્રથમ દેવલોકમે ઉત્કૃષ્ટ દો સાગરો-  
પમકી સ્થિતિવાલે, (૨) મહાપદ્મ-ઈશાન નામક દૂસરે દેવલોકમેં ઉત્કૃષ્ટ  
દો સાગરોપમ બ્રાહ્મેરી (કુછ અધિક) સ્થિતિવાલે, (૩) મદ્ર-સનત્કુમાર

હે જમ્મ ! આ પ્રકારે જાક્ષીના આઠ અધ્યયનોને જાણી લેવા જોઇએ કાલ આદિ  
દશ કુમારોના પુત્રોની માતાઓના નામ તે પુત્રોના જેવા છે તે બધાના ચારિત્રપર્યાય  
અનુક્રમથી આ પ્રકાર છે —

કાલ સુકાલના પુત્ર પદ્મ મહાપદ્મ અનગારે પાંચ પાંચ વર્ષ દીક્ષાપર્યાય પાળા  
મહાકાલ કૃષ્ણ તથા સુકૃષ્ણના પુત્ર મદ્ર સુમદ્ર અને પદ્મસેન ચાર ચાર વર્ષ, મહાકૃષ્ણ  
વીરકૃષ્ણ, રામકૃષ્ણના પુત્ર પદ્મસેન પદ્મગુલ્મ અને નલિનીગુલ્મ અનગારોએ ત્રણ ત્રણ  
વર્ષ, પિતૃસેનકૃષ્ણ, અને મહાસેનકૃષ્ણના પુત્ર આનન્દ અને નન્દને બે બે વર્ષ સયમ  
પાળ્યો । આ દશેય શ્રેણિક રાજાના પૌત્ર હતા

હવે કોણ કયા દેવલોકમા ગયા તે કમથી બતાવીએ છીએ —

(૧) પદ્મ-સૌધર્મ નામે પ્રથમ દેવલોકમા ગયા (૨) મહાપદ્મ-ઈશાન નામે બીજા  
દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૩) મદ્ર-સનત્કુમાર નામે ત્રીજા દેવલોકમા ઉત્પન્ન થયા (૪)

जोइसराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदसि सोहा-  
सणेसि चउहि सामाणियसोहस्सीहि जाव विहरइ । डम च  
णं केवलरूपं जवूदीव दीवं विउलेण ओहिणा आभोएमाणे  
२ पासड, पासित्ता समणं भगव महावीर जहा सूरियाभे आभि-  
ओगे देवे सदावित्ता जाव सुरिंदाभिगमणजोग्ग करेत्ता तमा-  
णत्तिय पच्चप्पिणइ । सूसरा घटा, जाव विउव्वणा, नवर  
(जाणविमाण) जोयणसहस्सवित्थिण्ण अद्धत्तेवट्ठिजोयणसमूसिय,  
महिदब्बओ पणुवीस जोयणमूसिओ, सेस जहा सूरियाभस्स  
जाव आगओ नट्टविही तहेव पडिगओ । भत्ते त्ति भगवं गोयमे  
समण भगव महावीर, पुच्छा कूडागारसाला, सरीर अणुपविट्ठा  
पव्वभवो ।

एव खलु गोयसा । तेण कालेणं २ ग्गवत्थी नाम नयरी  
होत्था, कोट्टए चेडए । तत्थण सावत्थीए नयरीए अगई नाम  
गाहावई होत्था, अड्ड जाव अपरिमूए । तएण से अगई गाहा-  
वई सावत्थीए नयरीए बहूण नयरनिगण० जहा आणदो ॥१॥

जाया-यदि खलु भदन्त ? श्रमणेन भगवता यावत् संप्राप्तेन उपा-  
ज्ञाना द्वितीयस्य वर्गस्य कल्पावतसिद्धानामयमर्थः प्रज्ञप्तः, तृतीयस्य खलु भदन्तः  
वर्गस्य उपाज्ञाना पुष्पिताना र्शयः प्रज्ञप्तः ?

एव गत्तु जम्मु । श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन उपाज्ञाना तृतीयस्य  
वर्गस्य पुष्पिताना दशा ययनानि प्रज्ञप्तानि, तथथा-चन्द्र (१) मर (२) भुक्  
(३) बहुपुत्तिर (४) पूर्ण. (५) मानभद्रश्च (६) दत्त (७) शिव (८) रत्ते  
परु (९) अनाहतः (१०) चैव रोज्ज्वला. ।

यदि खलु भदन्त ? श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन पुष्पिताना दशाध्यय-  
नानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्तः । अभ्ययनस्य पुष्पिताना श्रमणेन यावत्  
संप्राप्तेन र्शयः प्रज्ञप्तः ?

ઉત્કૃષ્ટદ્વાર્વિંશતિસાગરોપમસ્થિતિક્ષ્ણ દેવત્વેનોત્પન્ન' । સર્વત્ર=સર્વપુ દેવતાકેષુ  
સર્વેષા દેવતયોષપદ્માનામુત્કૃષ્ટસ્થિતિર્ભણિતત્ત્વા । સર્વે મહાવિદેહે સિદ્ધા મવિપ્સન્તિ ।

॥ ઇતિ કૃત્પાતતસિકા નામ દ્વિતીયો વર્ગ સમાપ્તઃ ॥

અથ પુષ્પિતાસ્યસ્તૃતીયો વર્ગઃ—

મૂળમ્—જડ ણ ભતે । સમણેણ ભગવયા જાવ સપત્તેણ ઉવ-  
ગાણ દોચ્ચસ્સ વગ્ગસ્સ કપ્પવહિસિયાણં અયમટ્ટે પન્નત્તે ? ।  
તચ્ચસ્સ ણ ભતે । વગ્ગસ્સ ઉવગાણ પુષ્પિયાણ કે અટ્ટે પળ્લત્તે ? ।  
एव खलु जवू ' समणेण जाव सपत्तेण उवगाण तच्चस्स  
वग्सस्स पुष्पियाण दस अज्झयणा पन्नता, तंजहा—

‘ ૧ ચદે ૨ સૂરે ૩ સુક્કે ૪ બહુપુત્તિય ૫ પુન્ન ૬  
માણભદ્રે ય । ૭ દત્ત ૮ સિવે ૯ વલેયા, ૧૦ અણાઢિય  
ચેજ બોદ્ધઘ્વે ॥ ૧ ॥

જડ ણ ભતે । સમણેણ જાવ સપત્તેણ પુષ્પિયાણ દસ  
અજ્ઞયણા પન્નત્તા પઢમસ્સ ણ ભતે । અજ્ઞયણસ્સ પુષ્પિયાણ  
સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ટે પન્નત્તે ? ।

एवं खलु जवू । तेण कालेण २ रायगिहे नाम नयरे,  
गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । तेण कालेण २ सामी  
समोसढे, परिसा निग्गया । तेण कालेण २ चदे जोइसिंदे

લોકમે ઉત્કૃષ્ટ ૨૦ સાગરોપમકી સ્થિતિવાલે દેવપને ઉત્પન્ન હુગ ।

ये सव उत्कृष्ट स्थितिवाले देव हैं और महाविदेह क्षेत्रमें सिद्ध होगे ।

। કૃત્પાતતસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ સમાપ્ત ।

ગુ-મની અઢાઠ સાગરોપમ આનન્ની વીમ સાગરોપમ અને નદનદેવની ગાવીમ  
સાગરોપમ નિધિતિ ટે

એ ગાધા ઉત્કૃષ્ટ નિધિતિવાળા દેવ છે અને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં નિધિ થશે

કૃત્પાતતસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ સમાપ્ત

जम्बूद्वीपम्=एतन्नामः द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप विपुलेन=विशालेन अवधिना=अव-  
यिज्ञानेन जाभोग्यमानः=अवलोक्यन् श्रमण भगवन्त महावीर पश्यति, दृष्ट्वा  
यथा मूर्त्याः आभियोग्यान्=अभि=मनोऽनुकूलं युज्यन्ते=प्रेष्यकार्ये व्यापार्यन्ते  
इत्याभियोग्यास्तान् देवान् शब्दयित्वा=आह्वय यावत् सुरेन्द्रादि गमनयोग्य कृत्वा  
तामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयन्ति । सुम्भरा ण्टा यावत् विकुर्षणा नवर (यानविमान)

किया है उसके बाद तृतीय वर्ग स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गमें  
भगवानने कौनसे भाव निरूपण किये हैं ?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने तृतीय वर्ग  
स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गके दस अध्ययन निरूपण किये हैं । वे  
इस प्रकार हैं—(१) चन्द्र (२) मूर (३) शुक्र (४) बहुपुत्रिक (५) पूर्ण  
(६) मानमद (७) दत्त (८) शिव (९) बलेपक और (१०) अनादृत  
ये दस अध्ययन हैं ।

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता नामक उपाङ्गमें  
दस अध्ययनाका जो निरूपण किया है उन अध्ययनोंमें प्रथम अध्य-  
यनके भावका भगवानने किस प्रकार वर्णन किया है ।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामका नगर था !  
उसमें गुणशिलक नामका चैत्य था । उस नगरका राजा श्रेणिक था ।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! मोक्षप्राप्त जेवा श्रमण भगवान महावीरने तृतीय वर्ग स्वरूप  
पुष्पिता नामे उपाङ्गना दस अध्ययन निरूपण किये हैं ते भा प्रकारे हैं— (१)  
चन्द्र (२) मूर (३) शुक्र (४) बहुपुत्रिका (५) पूर्ण (६) मानमद (७) दत्त (८) शिव  
(९) बलेपक और (१०) अनादृत जे दस अध्ययन हैं

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता नामे उपाङ्गना दस अध्यय-  
नोना जे निरूपण किये हैं ते अध्ययनोभा प्रथम अध्ययनना भावना तेमहे कथा  
प्रकारे वर्णन किये हैं ?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! ते काल समये राजगृह नामे नगर छत्ता तेभा गुणशिलक नामे  
चैत्य छत्ता ते नगरने राजा श्रेणिक छत्ता ते काले ते भगवने भगवान महावीर प्रभु

एव खलु जम्बू \* ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगर,  
गुणशिल चैत्य, श्रेणिको राजा । तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्वामी सम  
वसतः । परिपत् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रो ज्योतिष्केन्द्रः  
ज्योतीराज चन्द्रावतसके विमाने सभाया सुधर्माया चन्द्रे सिंहासने चतसृभिः  
सामानिस्साहस्रीभिः यावद् विहरति । इमं च खलु केवलरूप जम्बूद्वीप  
द्वीप विपुलेन अवधिना आभोगयमान\* २ पश्यति, श्रमण भगवन्त  
महावीर यथा सूर्याभ\* आभियोग्यान देवान् सन्दयित्वा यावत् सुरेन्द्रादिगम  
नयोग्य कृत्वा तामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयति । सुम्नरा घण्टा यावत् विकुर्वणा नगर  
(यानविमान) योजनसहस्रत्रिस्तीर्णम् अर्धत्रिषष्टियोजनसमुच्छ्रितम् , महेन्द्र\*वज.  
पञ्चविंशतियोजनमुच्छ्रितम्, शेष यथा सूर्याभस्य यावदागतो नाट्यविधित्तयैव  
प्रतिगतः । भदन्त इति भगवान् गौतम\* श्रमण भगवन्त महावीर, पृच्छा,  
कुटागारशाला, शरीरमनुमविष्टा, पूर्वभव ।

एव खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'श्रावस्ति,' नाम  
नगरी आसीत् , कोष्ठक चैत्यम् । तत्र खलु श्रावस्त्या नगर्याम् अन्नतिर्नाम  
गाथापतिरासीत् आढ्यो यावदपरिभूतः । तत\* खलु सः अन्नतिर्गाथापति\*  
श्रावस्त्या नगर्यां बहूना नगरनिगम० यथा आनन्द. ॥ १ ॥

टीका—' जङ्ग भते ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ज्योति  
ष्केन्द्र = ज्योतिर्देवाधिपति , ज्योतीराज चन्द्रे सिंहासने चतसृभिः सामानिक  
साहस्रीभिः यावत् विहरति = अवतिष्ठते । इमं = प्रत्यक्ष खलु केवलरूप = सम्पूर्ण

। अथ पुष्पिता नामક તૃતીય વર્ગ ।

‘ જડ્ઙ ભતે ’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂ સ્વામી પ્રજ્ઞતે હે—

હે ભદન્ત ! મોક્ષકો પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને કલ્પા  
વતસિકા નામક દ્વિતીય વર્ગ સ્વરૂપ ઉપાદ્રમે પૂર્વોક્ત ભાવોંકા નિરૂપણ

અથ પુષ્પિતા નામક તૃતીય વર્ગ

‘ જડ્ઙ ભતે ’ ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! મોક્ષ ગત્યેન જ્યેષ્ઠ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કલ્પાવતસિકા નામે  
દ્વિતીય વર્ગ સ્વરૂપ ઉપાગમા પૂર્વોક્ત ભાવોંકા નિરૂપણ કર્યું છે ત્યાર પછી તૃતીય  
વર્ગ સ્વરૂપ પુષ્પિતા નામના ઉપાગમા ભગવાને કયા કયા ભાવોં નિરૂપણ કર્યા છે ?

जम्बूद्वीपम्=एतन्नामक द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप त्रिपुलेन=विशालेन अवधिना=अव-  
प्रज्ञानेन आभोगयमानः=अवलोकयन् श्रमण भगवन्त महावीर पश्यति, दृष्ट्वा  
यथा सूर्याभः आभियोग्यान्=अभि=मनोऽनुकूल युज्यन्ते=प्रेष्यकार्ये व्यापार्यन्ते  
इत्याभियोग्यास्तान् देवान् शब्दयित्वा=आहूय यावत् सुरेन्द्रादि गमनयोग्य कृत्वा  
तामाज्ञप्तिं प्रत्यर्पयन्ति । सुम्बरा घण्टा यावत् विहर्षणा नवर (यानविमान)

किया है उसके बाद तृतीय वर्ग स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गमें  
भगवानने कौनसे भाव निरूपण किये हैं ?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने तृतीय वर्ग  
स्वरूप पुष्पिता नामक उपाङ्गके दस अध्ययन निरूपण किये हैं । वे  
इस प्रकार हैं—(१) चन्द्र (२) सूर (३) शुक (४) बहुपुत्रिक (५) पूर्ण  
(६) मानभद्र (७) दत्त (८) शिव (९) वल्लेपक और (१०) अनादृत्य  
ये दस अध्ययन हैं ।

जम्बू स्वामी पृच्छते है—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता नामक उपाङ्गमें  
दस अध्ययनाका जो निरूपण किया है उन अध्ययनोंमें प्रथम अध्य-  
यनके भावका भगवानने किस प्रकार वर्णन किया है ।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामका नगर था ।  
उसमें गुणशिलक नामका चैत्य था । उस नगरका राजा श्रेणिक था ।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! मोक्षप्राप्त भवेत् श्रमण भगवान महावीरने तृतीय वर्ग स्वरूप  
पुष्पिता नामे उपाङ्गना दश अध्ययन निरूपण कथा ७ ते आ प्रकारे ७— (१)  
चन्द्र (२) सूर (३) शुक (४) बहुपुत्रिका (५) पूर्ण (६) मानभद्र (७) दत्त (८) शिव  
(९) वल्लेपक आने (१०) अनादृत्य ये दश अध्ययन ७

जम्बू स्वामी पृच्छते ७—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिता नामे उपाङ्गना दश अध्यय-  
नोक्त ये निरूपण कथुं छे ते अध्ययनोभा प्रथम अध्ययनना लवणु तेमणे कथा  
प्रकारे वर्णन कथुं छे ?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! ते काल समये राजगृह नामे नगर छत्तु तेभा गुणशिलक नामे  
चैत्य छत्तु ते नगरना राजा श्रेणिक छत्तो ते काले ते समये भगवान महावीर प्रभु

योजनसहस्रविस्तीर्ण अर्धत्रिणष्टियोजनसमुच्छ्रितम्, महेन्द्रवज्रः पञ्चविंशतियाजन  
मुच्छ्रितः, शेष यथा-सूर्याभट्टेभ्य भगवदन्विते मणामण्यग्नून् तद्वत् यावत्-

उस काल उस समयमें भगवान महावीर प्रभु वहाँ पधारे। जनस  
मुदायरूप परिपद धर्मकथा सुननेके लिए निकली। उस काल उस  
समयमें ज्योतिष्कोके इन्द्र, ज्योतिषियोंके राजा चन्द्र चन्द्रावतमक  
विमानके अन्दर सुधर्मा समामे चन्द्र सिंहासनपर बैठे हुए चार  
हजार सामानिकोंके साथ यावत् विराजे हुए हैं।

ज्योतिषियोंके इन्द्र चन्द्रमाने, इस जम्बूद्वीप नामक सम्पूर्ण मध्य  
जम्बू द्वीपको विशाल अवधिज्ञानसे अग्रलोकन करते हुए भगवान  
महावीरका मध्य जम्बू द्वीपमें देखा और उनका दर्शन करनेके लिए  
जानेकी इच्छा की, और उन्होंने सूर्याभ, देवके-समान ही आभियोग्य  
(भूत्य) देवोंको बुलाये और उनसे कहा-के देवानुप्रियो ! तुम मध्य  
जम्बूद्वीपमें भगवानके समीप जाओ और वहाँ जाकर सर्वत्र-वात  
आदिकी विकुर्वणा करके कूडा कचड़ा आदि साफ कर सुगन्ध द्रव्योंसे  
सुगन्धित कर यावत् योजन परिमित भूमण्डलको सुरेन्द्र आदि देवोंके  
जाने आने बैठने आदिके योग्य बनाकर ग्वर दो। वे आभियोग्य  
देव उपरोक्त आज्ञानुसार भूमण्डल तैयार कर खबर देते हैं। फिर  
चन्द्रदेवने पदानिसेनानायक देवको कहा कि-जाओ और-सुखरा नामकी  
घण्टासे बजाकर सब देवी देवोंको भगवानके पास वन्दनार्थ चलनेके  
लिये भूचित करो। फिर उस देवने वैसे ही किया।

या पथाया जनसमुदायः परिपद धर्मकथा संलग्ना नीकणा ते कणे ते मगये  
ज्योतिष्माना इन्द्र, ज्योतिषिभ्यो राजा चन्द्र, चन्द्रावतसक विमानानी अहं सुधर्मा  
संलग्ना मन्त्रिणासन पर बैठेवा आर हजार सामानिकोंनी साथे गि गयेला छ

( ) ते ज्योतिष्माना इन्द्र चन्द्रमात्रे आ जम्बूद्वीप नामना संपूर्ण मध्य जम्बू  
द्वीपमा जेया अने तेमना दर्शन करवा गारे जवानी धर्मका करी अर्ध त्रिंशत् योजन  
सूर्याभेवनी पेटेज आभियोग्य (भूत्य) देवाने जेवाहीने कहु—हे देवानुप्रियो ! तमे  
मध्य जम्बूद्वीप भगवाननी पास ज्यो आने त्या जहाँ सर्वत्र के यवने आदिना  
विकुर्वणा करी केये पुजे वगेरे साइ करी सुगन्ध द्रव्येथी सुगन्धित करी यावत्  
योजनना विस्तारमा भूमंडलने सुरेन्द्र आदि देवाने आववा जेवा प्रसिवा आदि भो  
येज जनाहीने गणर आया ते आभियोग्य देव उपरोक्त आज्ञा अनुसार मंडल  
तैयार करी गणर हे छे पछी चन्द्रदेवे पदानिसेन नामक देवने कहु देवमात्रे आने  
सुखरा नामनी घण्टा अजलीने सब देवा देवीजने भगवाननी समे वंदना गारे  
प्रार्थना-स उ स्तूयन्त कदा पछी जे-देके ते-प्रभास्येव कथुं प्राप्ते । ॥ ॥

चन्द्रोऽप्यागतः, नाट्यविधिस्तथैव प्रतिगतः । तदनु भदन्त ! इति समोध्य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्तं प्रति-‘हे भगन्त ! इति प्राहेत्यादिना गौतमस्य पृच्छा । कूटारशाला=कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येव आकारो यस्याः शालायाः सा कूटारशाला, एतद्दृष्टान्तेन सा दिव्या देवर्द्धि शरीर=देवशरीरम् अनुप्रविष्टा=अन्तर्हिता । यथा कर्मिश्चिदुत्सवे जनसमुदायवामयोग्या गान्ता वृष्ट्यादिभयभीतो विज्ञाने जनमम्रहोऽनुप्रविशति तथैव वैक्रियक्रियया चन्द्रदेवेन विरचितो देवगणो नाट्यकार्यं दर्शयित्वा स्वकीय चन्द्रदेवशरीरमेवानुप्रविष्ट ।

१. सूर्याभके वर्णनसे विशेष केवल इतना ही इसका ध्यानविमान एक हजार योजन विस्तीर्ण था और माहे तीरसठ योजन ऊँचा था । तथा महेन्द्र भवज पचीस योजन ऊँचा था, और इसके अतिरिक्त सभी वर्णन सूर्याभके समान समझना चाहिये । जिस प्रकार सूर्याभ देव भगवानके समीप आये, नाट्यविधि की और वापस लौट गये, वैसे ही चन्द्र देवके विषयमें जानना चाहिये । उनके चले जानेके बाद गौतम-स्वामी प्रछते हैं—

हे भगन्त ! यह चन्द्र देव अपनी देवशक्ति देवप्रभावसे सभी देवताओंके छाग, नाट्य दिखाकर फिर सबको अन्तर्हित कर केवल अकेला ही रह गया यह उहे आश्चर्यकी बात है ।

भगवानने कहा-हे गौतम ! जैसे किसी उत्सवमें फैला हुआ जनसमूह वृष्टि आदि के भयसे किसी एक विशाल घरमें प्रवेश करता

मूर्खलता वृष्टिनी विशेष उवग आलु ७ छे व आने आनवमान अक डगर योजन चिन्ता कलु चतु आने साड त्रेवठ येवन छिनु डतु तथा भडे ६ ध्वज पचीस योजन छिन्ने डतो आन ते सिवाय प्रधु वृष्टि स लिता नेवु न समजतु लेधये

जैसे प्रकार सूर्याभ देव भगवाननी पसे आग्या, नाट्यविधि करी तथा पाछा अथा बोवी न दीते अन्द्रदेवना विषयमा लखेनु लेधये

तेमना आटफा जगा पछी गौतम देवानी पूछे छे —

छे सदस्त ! आ चन्द्रदेव पोतानी देवगडितना प्रभावथी सर्वे देवताये छे । न टक हेणोडीने पछी जधाने अ तर्हिनी करी देवण ओलाज नही गया ओ मोटा अश्रयणी वात छे ।

१. १. भगवान्ने कहु-हे गौतम ! जेभ जेछे उत्सवमा विषयसे जनसमूह परसोड आदिना अर्थथी जेछे ओक विशाल घरमा प्रवेश करे छे तेवी न दीते अन्द्रदेव



हे भद्रन्त ! पूर्वभयः=चन्द्रस्य प्राक्तन जन्म कीदृशम् आभूत् ?, इति गौतम पृच्छा श्रुत्वा भगवानाह-हे गौतम ! एव=उद्भूयमाणरीत्या खलु=निश्चयेन तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'श्रावस्ती' नाम नगर्यभयत्, कोष्ठक चैत्यम् । तत्र खलु श्रावस्तीया नगर्याम् अङ्गतिर्नाम गाथापतिरभयत्-आढयो=महान्, क्रुद्ध्यादिपूर्णो

है उसी प्रकार चन्द्रदेव अपनी वैक्रिय शक्तिसे देवताओंकी रचना कर नाटक दिखा उनको समेट कर अपने ही देवशरीरमें प्रविष्ट कर लिया ।

फिर गौतम स्वामीने पूछा हे भद्रन्त ! चन्द्रदेव पूर्वजन्ममे कौन थे ?

गौतमका ऐसा प्रश्न सुनकर भगवानने कहा-हे गौतम ! उस काल उस समयमे श्रावस्ती नामकी नगरी थी । उस नगरीमे कोष्ठक नामक चैत्य था । उस श्रावस्ती नगरीमे अङ्गति नामक एक गाथापति था । वह गाथापति बहुत बड़ी क्रुद्धि ओर्दिसे युक्त था । कीर्तिसे उज्ज्वल था । उसके पास बहुतसे घर, शम्पा, आसन, गाड़ी, घोड़े आदि थे । और वह बहुतसा धन तथा बहुत सोना चाँदी आदिका लेन देन करता था । उसके घरमें खाने बाद बहुतसा अन्न पान आदि खाने पीनेका सामान रहता था जो अनाथ-गरीब मनुष्योंको व पशु पक्षियोंको दिया जाता था । उसके यहाँ दास दासियाँ बहुतसी थी और बहुतसे गाय, भैंस, भेड़ें थी । तथा वह अपरिभूत-प्रभावशाली था, यानी उसका कोई पराभव नहीं कर सकता था ।

पोतानी वैक्रिय शक्तिथी देवताओंनी रचना करी नाटक देखाडी तेओने सकेही लख पोताना देवशरीरमा प्रवेश करी लीधे।

करी गौतम भवाभीओ पूछ्यु-हे भद्रन्त ! चन्द्रदेव पूर्व जन्ममा केओ हुता ?

गौतमने ओवो प्रश्न आलणी भगवाने कहु-हे गौतम ! ते काले ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हुता ते नगरीमा कोष्ठक नाम चैत्य हुत ते श्रावस्ती नगरीमा अङ्गति नामे ओक गाथापति हुने ते गाथापति गहु मोटी समृद्धिवाणे हुते कीर्तिथी उज्ज्वल हुते तेनी पासे धन, घर, शम्पा, आसन गाड़ी, घोडा आदि हुता अने ते गहु धन, तथा गहु से ना आनी आदिनु लख देल करते हुते तेना घरमा आवा पीना छी छु धन अ । पान अने धनो आवा पीवाने समान रहते हुते न अनाथ-गरीब मनुष्ये तथा पशु पक्षीओने आपी देवाते हुते तेने त्या दास दासीओ धन हुता तथा गाय बस घेडा पखु गहु हुता वणी ते अपरिभूत-प्रभावशाली हुते अर्थात् तेना केई पराभव करी सकते नहोने।

વા 'જાવ' યાવત્-‘અદૃ’ આદ્યઃ, ઇત્યારમ્ય ‘અપરિભૂષ’-અપરિભૂતઃ, ઇત્યે-  
તત્પર્યન્તોક્તમમસ્તવિશેષણવિશિષ્ટ ઇત્યર્થસ્તેન-‘દિત્તે, વિત્થિન્ન-વિહન્-મવળ-  
સયણા-SSસળજાળ-વાહણાહ્ણે, વહુધળ-વહુજાયસ્વ-રયણ, આઓગ-પઓગ-  
સપડને, વિન્હુઢિયવિહુલમત્તપાળે, વહુ-દાસી-દાસ-ગો મહિસ-ગવેલયપ્પભૂષ,   
વહુજળસ્સ’ ઇત્યેપા સમન્વય કર્તવ્યઃ । એતન્જાયા ચ-‘દીપ્તો વિસ્તીર્ણ-વિપુલ  
-મવન-ગયના-સન-યાન-વાહનાSSકીર્ણો વહુપન-વહુજાતરૂપ-રજત આયોગ  
પ્રયોગ સમયુક્તો વિન્હુર્ઠિતપ્રચુરમત્તપાનો વહુદાસી-દાસ-ગો-મહિપ-ગવેલ્ક-  
પ્રભૂનો વહુજનસ્ય’ ઇતિ ।

તત્ર દીપ્ત = કીર્ત્યાં ઉજ્જ્વલ\*, વિસ્તીર્ણાનિ=વિસ્તૃતાનિ વિપુલાનિ=વહુનિ,  
મવનાનિ=મેઢાનિ, ગયનાનિ=તલ્પાનિ, ગાઢિઢિતિ ‘માપા’ પ્રસિદ્ધાનિ આસનાનિ=  
પીઠકાઢીનિ, યાનાનિ=ગાઢીપ્રભૃતીનિ, વાહનાનિ=અશ્વાદીનિ, તૈરાકીર્ણ’=વ્યાસ. સમુ-  
પેતો વા । વહુ=વિપુલ ધન=મણિપ્રભૃતિ યસ્ય સ વહુધન., સ ચાસો, વહુ=વિપુલ જાત  
રૂપ=સુવર્ણ, રજત=રૂપ્ય યસ્ય સ વહુજાતરૂપરજતતથ । આ=સમન્તાદ્ યોજન=દ્વિગુ-

‘આદ્ય, દીપ્ત, ઓર અપરિભૂત’ ઇન ત્રીન વિશેષણોંસે અંગતિ  
ગાથાપતિકે લિયે દીપકકા દૃષ્ટાન્ત દિયા જાતા હૈ, વહ ઇસ પ્રકાર હૈ-જૈસે  
દીપક, તેલ, વત્તી ઓર શિખા (લૌ) સે યુક્ત હોકર વાયુરહિત સ્થાનમેં  
સુરક્ષિત રહકર પ્રકાશિત હોતા હૈ, વૈસે હી અગતિ ગાથાપતિ ખી  
તેલ ઓર વત્તીકે સમાન આદ્યતા અર્થાત્ કદિસે, શિખાકી જગહ  
ઉદારતા ગમ્ભીરતા આદિસે ઓર દીપ્તિસે યુક્ત હોકર, વાયુ રહિત  
સ્થાનકે સમાન મર્યાદાકા પાલન આદિ રૂપ સદાચારસે તથા પરામ  
વરહિતપનસે સયુક્ત હોકર તેજસ્વિતા ધારણ કરતા થા । અન્. આદ્યતા  
દીપ્તિ ઓર અપરિભૂતતા, ઇન તોનોમે રહનેવાલા હેતુતાવચ્છેદક ધર્મ

‘આદ્ય, દીપ્ત અને અપરિભૂત’ એ ત્રણ વિશેષણોથી અગતિ ગાથાપતિને  
માટે દીપકનુ દૃષ્ટાત કહે ુ, તે આ પ્રમાણે -એમ દીપક, તેન, દીપેટ અને શિખા  
(આળ) થી યુક્ત થઈને વાયુરહિત સ્થાનમા સુરક્ષિત રહી પ્રકાશિત થાય છે તેમ  
અગતિ ગાથાપતિ પણ તેલ અને દીપેટની પેઠે આદ્યતા અર્થાત્ કદિથી, શિખાની  
જગ્યાએ ઉદારતા ગમ્ભીરતા આદિથી અને દીપ્તિથી યુક્ત થઈને વાયુરહિત સ્થાનની  
મમાન મર્યાદાના પાલન આદિ રૂપ સદાચારથી તથા પરામવરહિત પણાથી સયુક્ત  
થઈને તેજસ્વિતા ધારણ કરતો હોતો એ રીતે આદ્યતા દીપ્તિ અને અપરિભૂતતા,  
એ ત્રણેમા રહેલો હેતુતાવચ્છેદક ધર્મ એક છે, તે કારણથી તૃણારણિમણિ ન્યાયે

णादिला भार्थ'रूप्यादीनामधर्मणो नियोजनमायोगस्तस्य. प्र=प्रत्येकं योज  
नम्=उपायचिन्तन प्रयोगः, यद्वा-आयोगेन द्विगुणादिलिख्यया प्रयोगः=अधर्मणा  
सप्रिये, द्रव्यस्य पितरणमायोगप्रयोगः, स सप्रयुक्तः=प्रतिष्ठितो यत्नः, तस्मिन् वा  
सप्रयुक्तः=सलग्नो यः स आयोगप्रयोगसप्रयुक्तः=नीत्या द्रव्योपाजनप्रवृत्त इत्यर्थः।  
भक्त च पान च भक्तपाने, विपुले च ते भक्तपाने विपुलभक्तपाने, वि-  
शेषेण उद्दिष्टे=भोजनाशिशटे भक्तपाने यस्य-स विउद्दिष्टविपुलभक्तपानः,  
दीनेभ्यो दीयमानविपुलभक्तपान इत्यर्थः। दास्यश्च दासाश्च गावश्च महिषाश्च  
गवेलकाः=उरभ्राथेति दासीदामगोमहिषगवेलकाः, गवश्च ते दासीनासगोमहि  
षगवेलका इति गृह्यामादासगोमहिषगवेलकास्ते प्रभूताः=प्रचुरा यस्य स गृह्य  
दासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतः, अत्र गवांस्पिद स्त्रीगवांस्तीनामप्युपलब्धः, यद्वा  
गोपदस्य=स्त्रीपुगवयोरविशेषेण वाचस्त्वादपिरोर एव, महिष-गवेलक-शब्द-  
योश्च 'पुमान् स्त्रिया' इत्येकशेषान्महिष्यादीनामपि ग्रहणम्। गृहजनस्येति  
जातिविवक्षैरुच्यते, सगन्ध सामान्ये च पृष्ठी, तेन 'गृहजनैः'-इत्यर्थो  
बोद्धव्यः, अत्र 'अपी' इत्यस्ययोजनात् गृहजनैरपीति तत्त्वम्, अपरिभूतः=  
तत्पराभवरहितः, यद्वा-क्त प्रत्ययार्थस्याऽविवक्षितत्वादपरिभयनीय-गृहजनैरपि  
पापमवितुमशक्य इत्यर्थः। एषुक्तविशेषणेषु "अङ्के, दिक्ते अपरिभूतः"  
एभिर्लिभिर्विशेषणैरङ्कतिगाथापतो प्रदीपदृष्टान्तोऽभिप्रेतस्तथाहि-यथा प्रदीपस्तै  
लवर्तिभ्यां शिखया च सपञ्चा निर्वात स्थाने सुरक्षितः प्रकाशमाप्नोति,  
एवमयमपि तैलवर्तिस्थानीयया आद्यताऽपरपर्यायद्वयां शिखास्थानीययोद्वारता-  
गम्भीरतादिरूपया दीप्त्या च सपञ्चो निर्वातस्थानस्थानीयया सदाचारमर्यादा

एक ही है, इस कारण तृणारणिमणि-न्यायसे प्रत्यक्ष, अनुमान और  
आगम शब्दोंमें प्रमाणताके समान प्रत्येक (सिर्फ आद्यता, सिर्फ दीप्ति,  
या सिर्फ अपरिभूतता) को हेतु नहीं मानना चाहिए।

जिस प्रकार आनन्द गाथापति धन धान्य आदिसे युक्त वाणिज्य  
ग्राममें निवास करता था। उसी प्रकार अङ्कति गाथापति भी आवस्ती  
नगरीमें निवास करता था।

प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम शब्दोंमें प्रमाणताकी पक्षे प्रत्येकने (मान आद्यता,  
मान दीप्ति, अथवा मान अपरिभूतता-अथ अङ्कने) हेतु मानना नहीं

कैसे प्रकार आनन्द गाथापति धनधान्य आदिसे युक्त वाणिज्य ग्राममें निवास  
करता था तत्परीक्षा हीन अथवाति गाथापति अङ्कति गाथापति नगरीमें निवास करता था

पालनान्तरूपयाऽपरिभूततया च सपन्न, समुज्ज्वलति-जगत्प्रमिदो भवतीति हेतुताऽवच्छेत्कर्मस्याऽऽदृश्यता - गीत्यपरिभूततैतन्नितयसमुदायनिष्ठस्यैकर्मस्य सत्त्वान्न तणारणिमणि-न्यायेन प्रत्यक्षानुमानाऽऽगमशब्देषु प्रत्येक प्रमाजनर त्वमिव प्रत्येकमादृशतादीना त्रयाणा समुज्ज्वलनहेतुता, किन्तु प्रकाश प्रति तैवत्वर्पादिसमुदाययत् समुज्ज्वलन प्रति आदृशतादिसमुदायस्यैव हेतुतेति बो-यम् ।

ततः खलु सोऽङ्गतिर्गाथापतिः श्रावस्या नगर्या यथा त्राणिज्यग्रामे आनन्दो नाम गाथापति पग्निसति तथैवायमपीत्यर्थ ।

तदेव स्पष्टयति-“नगर-निगम-राट्-सर-नल्लवर-माडनिय-कोडुनिय-डम्भ-सेट्टि-मणाव-सत्यवाहाग उहुगु रत्नेसु य कारणेसु य मतेसु य कुट्टेसु य गुज्जेसु य रहस्यसु य निच्छणसु य खहार सु य आपुच्छणिज्जे पल्लपुच्छणिज्जे मगरम नि य ण कुडुवस्स मेढी पनाग भागारे, आनवग, चक्खु, मेढीभूए जाय मन्वरत्नवद्भावाए यारि होत्था” एतच्छाया-नगर निगम राज्ञे च तत्वर-माण्डनिर-कोटुनिके-य. श्रेष्ठि-सेनापति-सार्धवापाना बहुषु कार्येषु च कारणेषु च मन्त्रेषु च कुटुम्बेषु च गुणेषु च रहस्येषु च निश्चयेषु च व्यवहारेषु च आपुच्छनीय प्रतिपुच्छनीय, स्वस्यापि च खलु कुटुम्बस्य मेरि, प्रमाणम्, जागर, आलम्बन, चक्षु मेरिभूत, यावत् सर्वकार्यवर्द्धन चापि अभवत् । तत्र-नगरम्=

“पुण्यपापक्रियाविही, -दयादानप्रवर्तकै ।

कलाकलापकुलै, सर्ववर्ण समाकुलम् ॥

भाषाभिर्विविधाभिश्च, युक्त नगरमुच्यते ।

वह अङ्गति गाथापति राजा ईश्वर यावत् सार्धवाहोके द्वारा उद्भूतसे कार्योमे, कारणो (उपायो) में, मन्त्र (सलाह) में, कुटुम्बोमें, गुह्योमें, रहस्योमें, निश्चयोमें और व्यवहारोमें एक चार पृष्ठा जाता था । और वह अपने कुटुम्बरका भी मेरि, प्रमाण, आधार आलम्बन चक्षु, मेधीभूत यावत् समस्त कार्योको बढ़ाने वाला था । यहाँ यावत्

ये अङ्गति गाथापतिने, नाम, धर्म यावत् सार्धवाहे तरकथी धृष्टा कार्योमा, कच्छो (उपायो) मा, मन्त्र (सलाह) मा, कुटुम्बोमा, गुह्योमा रहस्योमा, निश्च योमा अने व्यवहारोमा ओके, वा पृष्ठवाभा आनतु लुतु, वरवार लु पृष्ठवाभा आपतु लुतु अने त पाताना कुटुम्बोमा पञ्च मेधि प्रमाण, आधार, आलम्बन, चक्षु, मेधीभूत, यावत् यथा कार्योने आजग वधारनाजे हतो

નિગમો=વ્યાપારમધ્યમસ્થાનમ્, ડમ્બરા:=ऐश्वर्यसम्पन्ना, તલવરા:=सन्तुष्ट  
 भूपालदत्तपट्टनन्धपरिभूषितराजकल्पाः माण्डविका = छिन्नभिन्नजनाश्रयविशेषो  
 मण्डवस्तत्राधिकृताः, 'માડમ્બિકા:' इति त्रयापक्षे तु ग्रामपञ्चशतीपतय  
 इत्यर्थः, यद्वा-सार्धक्रोशद्वयपरिमितप्रान्तरैर्विन्ध्य विन्ध्य स्थिताना ग्रामाणा  
 मधिपतयः, कौटुम्बिकाः=कुटुम्बप्रतिपालकाः, डम्बा=इमो=हस्ती तत्प्रमाप  
 द्रव्यमर्हन्तीति, तथा ते च-जघन्य-मध्यमो-उत्कृष्टभेदात् त्रिपकाराः तत्र दृष्टि

શબ્દસે રાજા, ईश्वर, તલવર, માણડવિકા, કૌટુમ્બિકા, ડમ્બ, શ્રેષ્ઠી  
 सेनापति और सार्धचाहका ग्रहण होता हैं। माण्डलिक नरेशको राजा,  
 और ऐश्वर्य वालोको ईश्वर कहते हैं। राजा सन्तुष्ट होकर जिन्हें पट्टवन्ध  
 देता है, वे राजाके समान पट्टवन्धसे विभूषित लोग तलवर कहलाते  
 हैं। जो वस्ती छिन्न भिन्न हो उसे मण्डव और उसके अधिकारीको  
 माण्डविक कहते हैं। 'माडम्बिक' की छाया यदि 'माडम्बिक' की जाय  
 तो माडम्बिकका अर्थ 'पाँच सौ गाँवोंका स्वामी' होता है। अथवा  
 ढाई ढाई कोसकि दूरीपर जो अलग गाँव वसे हो, उनके स्वामीको  
 'माडम्बिक' कहते हैं। जो कुटुम्बका पालन पोषण करते हैं, या  
 जिनके द्वारा बहुतसे कुटुम्बोंका पालन होता है, उन्हें 'कौटुम्बिक'  
 कहते हैं। इमका अर्थ है हाथी, और हाथीके चराचर द्रव्य जिमके  
 पास हो उसे 'इम्य कहते हैं। जघन्य मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे

અહીં 'જાત' શબ્દથી રાજા, ઈશ્વર, તલવર, માડવિકા અથવા માડલિકા,  
 કૌટુમ્બિકા, હથ, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાર્થવાહક, એટલા શબ્દોનું અહલ થાય છે  
 માડલિક નરેશને રાજા અને એશ્વર્યવાળાઓને ઈશ્વર કહે છે નાના સન્તુષ્ટ થઈને  
 જેને પટ્ટવંધ આપે છે તે નામોના જેના પટ્ટવંધથી વિભૂષિત લોકો તલવર કહે  
 વાય છે જેની વસતી છિન્ન ભિન્ન હોય તેને મડવ અને તેના અધિકારને માડવિક  
 કહે છે 'માડવિક' ની છાયાને 'માડમ્બિક' કરવામાં આવે તો 'માડમ્બિક'  
 નો 'પાંચસો ગામોની ધણી' એનો અર્થ થાય છે અથવા અઢી અઢી ગાઉને  
 અતરે જુ। જુદા ગામો વચ્ચે હોય તેના ધણીને 'માડમ્બિક' કહે છે જે કુટુ  
 મ્બનું પાલન-પોષણ કરે છે અથવા જેના દ્વારા ઘણા કુટુમ્બોનું પાલન થાય છે, તેને  
 કૌટુમ્બિક કહે છે 'ઇમ' નો અર્થ 'હાથી' છે, અને હાથીના જેટલું દ્રવ્ય જેની  
 પાસે હોય, તેને 'ઇમ્ય' કહે છે જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટના ભેદ કરીને હથ



તત્ર ગણિમમ્=૬૬-દ્વિ-ત્રિ-ચતુરાનિ સમ્યાક્રમેણ યદીયતે, યથા-નાલિકેર-  
પ્રગીફલ-મદલીફલાદિમમ્, ધરિમ્=તુલાશ્વત્રેણોત્તોલ્ય યદીયતે, યથા-ત્રીદ્વિ-  
યવ-લવણ-સિતાદિ, મેય=શરાવ-લઘુભાષ્ટાદિનોત્તોલ્ય યદીયતે, યથા-દુગ્ધ-  
ઘૃત-તૈલ-પ્રમૃતિ, પરિચ્છેય ચ પ્રત્યક્ષતો નિકૃપાદિપરીક્ષયા યદીયતે, યથા-  
મણિ-મુક્તા-પ્રચાલા-ડડમરણાદિ ।

‘સાર્થવાદાના’ મિત્યેત્ર ‘કૃત્યાના કર્તરિ વે’ તિ કર્તરિ પઠી, અગ્રે  
તનમ્ય ‘આપચ્છનીયઃ, પરિપચ્છનીયઃ’ ઇત્યનીયર પ્રત્યયસ્ય યોગાત્, સાર્થ  
વાહૈરિત્યપિ તૃતીયાન્તેન કર્ત્રાં વ્યાખ્યેયમ્ ।

વહુપુ=પ્રચુરેષુ, અસ્ય સર્વેરેવ સમ્પ્રત્યનૈઃ સમ્પ્રત્યઃ । કાર્યેષુ=કર્તવ્યેષુ  
પ્રયોજનેષ્વિતિ યાવત્, કારણેષુ=કાર્યજાતસમ્પાદકહેતુષુ ચ, મન્ત્રેષુ=કર્તવ્ય  
નિશ્ચયાર્થ ગુપ્તવિચારેષુ । કુડુમ્બેષુ=વાન્ધવેષુ, ગુહ્યેષુ=લજ્જયા ગોપનીયેષુ વ્યવ

રરતે હૈં । ૬૬, ૬૦, ૩૦, ૪૦ આદિ સંખ્યાકે હિસાબસે જિનકા લેન  
દેન હોતા હૈ, ‘ગણિમ’ કહતે હૈં, જૈસે-નારિયલ, સુપારી, કેલા આદિ ।  
તરાજુ પર તોલકર જિસમા લેન દેન હો, ઉસે ‘ધરિમ’ કહતે હૈં, જૈસે  
ધાન, જૌ, નમ્મક, શાકર આનિ । સરાવા ઝોટે ૨ વર્તન આદિસે નાપ  
કર જિસકા લેન દેન હોતા હૈ, ઉસે મેય કહતે હૈ, જૈસે-દૂધ, ઘી,  
તૈલ આદિ । સામને કસોટી આદિ પર પરીક્ષા કરકે જિસકા લેન દેન  
હોતા હૈ, ઉસે પરિચ્છેય કહતે હૈ । જૈસે મણિ, મોતી, મુંગા, ગરના આદિ ।

વહ અગ્નિતિ ગાથાપતિ, હન રાજા, ઈશ્વર આદિકે દ્વારા વહુતસે  
કાર્યોમૈં કાર્યકો સિદ્ધ કરનેકે ઉપાયોમે, કર્તવ્યકો નિશ્ચિત કરનેકે ગુપ્ત  
વિચારોમે, વાન્ધવોમે, લજ્જાકે કારણ ગુપ્ત રહે જાને વાલે વિષયોમે,

એ ૬૬, ૬૦, ૩૦, ૪૦ આદિ સંખ્યાના હિસાબે જેની લેણુ-દેણુ થાય છે તેને ગણિમ કહે છે  
જેમકે નાળીએર, સોપારી વત્યાદિ, ત્રાજપાથી તોલીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે  
છે તેને ધરિમ કહે છે, જેમકે ધાન્ય, જવ, મીઠું, સાકર વત્યાદિ, પાલી કે પવાણ  
જેવા માપના વાસણથી માપીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને મેય કહે છે,  
જેમકે દૂધ, ઘી, તૈલ વગેરે કસોટી આદિથી પરીક્ષા કરીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં  
આવે છે તેને પરિચ્છેય કહે છે, જેમકે મણિ, મોતી, પરવાણા, ઘરણુ વગેરે

અગતિ ગાથાપતિને, એ રાજા, ઇશ્વર, આદિ તરફથી ઘણા કાર્યોમાં કાર્યોને સિદ્ધ  
કરવા માટેના ઉપાયોમાં, કર્તવ્યને નિશ્ચિત કરવાના ગુપ્ત વિચારોમાં આધેશોમાં,  
અને જાને કારણે ગુપ્ત રહેવાનાં વાન્ધવોમાં, જોશાતમાં કરવામાં આવતાં કાર્યોમાં,

हारेषु, रक्ष्येषु=रक्षसि=एकान्ते मवा रक्षस्यास्तेषु प्रच्छन्नव्यवहारेष्विति यावत् ।  
निश्चयेषु=पूर्णनिर्णयेषु, व्यवहारेषु=व्यवहारप्रण्येषु, यद्वा-यान्यवादिसमाचरि-  
तलोकविपरीतादिक्रियाप्रायश्चित्तेषु, विषयसम्पत्त्या 'एतेषु विषये' इत्यर्थः ।  
आ=ईषत् सकृदिति यावत्, प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, परि=सर्वतोभावेन असकृदिति  
यावत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, मस्यापि=स्वकीयस्यापि, च-मारा विषयान्तरप-  
रिग्रहार्थः । खलु=निश्चयेन कुटुम्बस्य=परिवारजनस्य मेघि=प्रीहि-यय-गो-मू-  
मादिमणमर्दनार्थं खले निम्वाय स्थापितो दार्वादिमयः पशुपन्ननस्तम्भः, यत्र  
पडिगोवद्धा वलीवर्दादयो व्रीह्यादिमणमर्दनाय परितो भ्राम्यन्ति तस्माद्

एकान्तये होने वाले कार्योमे, पूर्ण निश्चयोमे, व्यवहारके लिये पूछे जाने  
योग्य कार्योमे, अथवा यान्यवो द्वारा किये गये लोकाचारसे विरुद्ध  
कार्योके प्रायश्चित्तो (दंडो) मे, अर्थात् उल्लिखित सब मामलोमे एकवार  
और बार-बार पूछा जाता या-इन सब बातोमे राजा आदि समस्त  
पडे बडे आदमी अङ्गतिकी सम्मति लेते थे ।

इन मन विशेषणोसे सूत्रकारने यह प्रकट किया है कि अगति  
गाथापतिको सभी लोग मानते थे, वह अत्यन्त विश्वासपात्र था,  
विशालबुद्धिशाली था और सबको उचित सम्मति देता था ।

धान जौ गेहूँ आदिकी ढाँच करने (लाटा-दाने-निकालने) के  
लिये गढा खोदकर एक लकड़ी या बाँसका स्तम्भ गाडा जाता है,  
उसके चारों ओर एक पक्तिमे लाक (गान) को कुचलनेके लिये बैल  
घूमते हैं उस स्तम्भको मेघि-मेढी-कहते हैं । बैल आदि उस समय

पूर्व निश्चयोभा व्यवहारे मेघे पूछवा योग्य कार्योभा अथवा बाधवो तरक्षी करवाभा  
आवता लाटायावर्था विषयीत कार्योभा प्रायश्चित्तो (दंडो) भा अर्थात् ओवा अधा  
प्रकरणाभा ओकवा तथा वागवा पूछवाना आवतु हुतु-ओ अधी वादोभा राज  
वगेरे भोग भोटा भाषतो पछ अजतिनी भमति लेता हुता

ओ अधा विशेषणोपडे सूत्रकारे ओम प्रकट-कथुं छे उ अगति गाथापतिने  
(अधा बोडो मानता हुता, त अत्यत विरामगात्र भूतो, विशाल बुद्धिशाली सुगत हुतो  
अन अधाने वागणीज मल हु-अमति आपतो हुते

धीन्य, जय, धेडो वगेरेने उल्लुसवाभागी छटा करवाने ओक भाडो भोही तेभा  
ओक लाकडाने भाषो 'भोडवाना आमे-छे अने पछी तेनी आरे गान्तुओ ओक साथे  
उल्लुसवाने करवाना भाडे जगद वगेरे दया करे छे, ओ भावाने मेघि कडि छे अगद



તત્ર ગણિમમ્=અક-દ્વિ-ત્રિ-ચતુરાનિસખ્યાક્રમેણ યદીયતે, યથા-નાલિકેર-પ્રગીફલ-મદલીફલાદિમ્, ધરિમ્=તુલાશ્રુતેણોત્તોત્ય યદીયતે, યથા-ત્રીદિ-યમ-લવણ-સિતાદિ, મેયમ્=સરાવ-લઘુભાષ્ટાદિનોત્તોત્ય યદીયતે, યથા-દુગ્ધ-ઘૃત-તૈલ-પ્રમૃતિ, પરિચ્છેય ચ પ્રત્યક્ષતો નિરુપાદિપરીક્ષયા યદીયતે, યથા-મણિ-મુક્તા-પ્રવાલા-ડડમરણાદિ ।

‘સાર્થવાહાના’ મિત્યત્ર ‘કૃત્યાના કર્તરિ વે’ તિ કર્તરિ પઠી, અગ્રે તનમ્ય ‘આપચ્છનીયઃ, પરિપચ્છનીય’ ઇત્યનીયર પ્રત્યયસ્ય યોગાત્, સાર્થ વાદૈરિત્યપિ તૃતીયાન્તેન કર્ત્રા વ્યાખ્યેયમ્ ।

વહુધુ=પ્રચુરેષુ, અસ્ય સર્વેરેવ સમ્પ્રત્યનૈઃ સમ્વન્ધઃ । કાર્યેષુ=કર્તવ્યેષુ પ્રયોજનેષ્વિતિ યાવત્, કારણેષુ=કાર્યજાતસમ્પાદકહેતુષુ ચ, મન્ત્રેષુ=કર્તવ્ય નિશ્ચયાર્થ ગુપ્તવિચારેષુ । કુદુમ્બેષુ=વાન્ધવેષુ, ગુણેષુ=લજ્જયા ગોપનીયેષુ વ્યવ

ચરતે હેં । એક, દો, ત્રીન, ચાર આદિ સખ્યાકે હિસાબસે જિનકા લેન દેન હોતા હૈ, ‘ગણિમ’ કહતે હેં, જૈસે-નારિયલ, સુપારી, કેલા આદિ । તરાજૂ પર તોલમર જિમમ્ લેન દેન હો, ઉસે ‘ધરિમ’ કહતે હેં, જૈસે ધાન, જૌ, નમક, શાકર આદિ । સરાવા જોડે ૨ વર્તન આદિસે નાપ કર જિસકા લેન તેન હોતા હૈ, ઉસે મેય કહતે હૈ, જૈસે-દૂધ, ઘી, તૈલ આદિ । સામને કસૌટી આદિ પર પરીક્ષા કરકે જિસકા લેન દેન હોતા હૈ, ઉસે પરિચ્છેય કહતે હેં । જૈસે મણિ, મોતી, મૂંગા, મરના આદિ ।

વહ અગ્રતિ ગાયાપતિ, હન રાજા, રૂશ્વર આદિકે દ્વારા વહુતસે કાર્યોમેં કાર્યકો સિદ્ધ કરનેકે ઉપાયોમે, કર્તવ્યકો નિશ્ચિત કરનેકે ગુપ્ત વિચારોમે, વાન્ધવોમે, લજ્જાકે કારણ ગુપ્ત રહે જાને વાલે વિષયમેં,

એ, ગણ, ચાર આદિ સખ્યાના હિસાબે જેની લેણુ-દેણુ થાય છે તેને ગણિમ કહે છે જેમકે નાળીએર, સુપારી ઉત્યાદિ, ત્રાજુપાથી તોલીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને ધરિમ કહે છે, જેમકે ધાન્ય, જવ, મીઠું, સાકર ઉત્યાદિ, પાલી કે પવાણ જેવા માધના વાસણથી માપીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને, મેય કહે છે, જેમકે દૂધ, ઘી, તૈલ વગેરે કસૌટી આદિથી પરીક્ષા કરીને જેની લેણુ-દેણુ કરવામાં આવે છે તેને પરિચ્છેય કહે છે જેમકે મણિ, મોતી, પરવાળા, ધરણુ વગેરે

અગતિ ગાયાપતિને, એ રાજા, ધર્મવદ, આદિ તરફથી ઘણા કાર્યોમાં માર્ગોને સિદ્ધ કરવા માટેના ઉપાયોમાં, કર્તવ્યને નિશ્ચિત કરવાના ગુપ્ત વિચારોમાં માધવોમાં, લજ્જાને કારણે ગુપ્ત થયેલા આર્થિક વ્યવસ્થામાં, એકાંતમાં કરવામાં આવતા કાર્યોમાં,

रञ्जुस्तम्भादिचद्विपत्कृपपतजनोद्धारकृतयाऽलम्बनम्, आगारो नाम-यमधिष्ठाय जन उन्नतिं गच्छति, स्वल्पाऽवस्थो वा वर्तते मं, यदप्रवनेन च विपदो विनिवर्तन्ते तत्तलम्बनमिति तयोर्भेदः, चक्षुः=नेत्र तद्वत् सर्वेषां सकलार्थप्रदर्शकः, यदुक्त-मेधिः, प्रमाणम्, आगारः, आलम्बन, चक्षुरिति । तदेव स्पष्टप्रतिपत्तये आपस्यवाचिभूतशब्दसम्मेलनेन-पुनरावर्तयति-मेघीभूत इत्यादि, यावदिति याव-ल्लब्धेन 'प्रमाणभूत, आहारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत' इत्येषा सग्रहो बोध्यस्तत्र-प्रमाणभूत, आगारभूत, आलम्बनभूत चक्षुर्भूतः, इति-ज्ञाया, पौनरुक्त्यवारणं तु मेघिरर्थान्मेघीभूतो मेघिमदृश इति यावत् । प्रमाणमर्थात् प्रमाणभूत प्रमाण' मदृश इति यावत् । आगारोऽर्थादागारभूत आगारमदृश इति यावत् । आल-म्बनमदृश इति यावत् । चक्षुरर्थाच्चक्षुर्भूतवक्षु मदृश इति यावत् इति रीत्या

तथा अङ्गति गाथापति अपने कुटुम्बके भी आधार (आश्रय) थे, तथा आलम्बन थे, अर्थात् विपत्तिमें पड़नेवाले मनुष्यको रस्मी या स्तम्भके समान सहारे थे ।

अङ्गति अपने कुटुम्बके चक्षु थे, अर्थात् जैसे चक्षु मार्गको प्रकाशित करना है वैसे ही अङ्गति कुटुम्बियोंके भी समस्त अर्थोंके प्रदर्शक (सन्मार्गदर्शक) थे ।

दूसरी बार मेघिभूत आदि विशेषण स्पष्ट बोधके लिये हैं । 'जाव' शब्दसे प्रमाणभूत, आगारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत, इनका सग्रह होता है । यहाँ स्पष्टनाके लिये 'भूत' शब्द अधिक दिया है, इसका तात्पर्य यह है कि अङ्गति गाथापति मेढी अर्थात् मेढीके सदृश थे, प्रमाण अर्थात् प्रमाणके सदृश थे, आगार अर्थात् आगारके सदृश

अङ्गति जानाना कुटुम्बनो पञ्च आधार (आश्रय) हुतो, तथा आलम्बन हुतो, अर्थात् विपत्तिमा पडेला मनुष्यने होवु अथवा आलम्बन जेवा आधार हो हुतो

अङ्गति जानाना कुटुम्बनो चक्षु उप हुतो, अर्थात् जेभ चक्षु मार्गने प्रकाशित करे छे तेभ अङ्गति चक्षुर्भूतजोना पञ्च अधा अर्थाना प्रकाशन (सन्मार्गदर्शक) हुतो

भीलवार मेघिभूत आदि विशेषण स्पष्ट बोधने भाटे आपेला छे 'जाव' शब्दही प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत, जे अधानो अथाग थाय छे, अर्थात् स्पष्टताने भाटे 'भूत' शब्द ववारे आये छे जेनु तात्पर्य जे छे छे अङ्गति मेघि अर्थात् मेघिनी समान हुतो, प्रमाण अर्थात् प्रमाणनी समान हुतो, आधार

શ્યાદયમપિ મેધિઃ, અર્થાદેતદ્વલમ્બનેનૈવ સર્વસ્યાપિ કુટુમ્બસ્થાપન્યાનમિતિ ।  
 કુટુમ્બસ્થાપીત્યપિશબ્દલાઙ્ગા કેવલ કુટુમ્બસ્યૈવ, અપિતુ સર્વસ્યાપિ જનસ્યે  
 ત્યવધેયમ્ । પ્રમાણ=પ્રત્યક્ષાદિપ્રમાણરૂઢેયોપાદેયપ્રવૃત્તિનિવૃત્તિરૂપતયા સમયરાહિ  
 ત્યેન પદાર્થસાર્થપરિચ્છેદક, આધારઃ=આધારસ્વ સર્વેપામાત્રયભૂતઃ, આલમ્બન=

વસીપર નિર્ભર રહતે છે । યદિ વહ સ્તમ્ભ ન હો તો કોઈ બૈલ ઈત્દી  
 ચલા જાય, કોઈ કહી-સવ વ્યવસ્થા મળી જાય । ગાથાપતિ અજ્ઞતિ  
 અપને કુટુમ્બકો મેધિ-મેઢીકે સમાન થે, અર્થાત્ કુટુમ્બ ડન્નીકે સહારે  
 થા-વેલી ઉસકે વ્યવસ્થાપક થે । મૂલ-પાઠમે 'વિ' (અપિ) શબ્દ  
 હૈ, ડમકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ વે કેવલ કુટુમ્બકે હી આશ્રય નહીં થે,  
 અપિતુ સમસ્ત લોગોકે મો આશ્રય થે, જૈસા કી ઉપર બતાયા જા  
 ચુકા હૈ । આગે જહાં-જહાં 'વિ' (અપિ-મી) આયા હૈ વહાં સર્વત્ર  
 યહી તાત્પર્ય સમજના ચાહિય । અજ્ઞતિ ગાથાપતિ અપને કુટુમ્બકે મી  
 પ્રમાણ થે । અર્થાત્ જૈસે પ્રત્યક્ષ અનુમાન આદિ પ્રમાણ સદેહ આદિકો  
 દૂર કરકે હેય (ત્યાગ કરને યોગ્ય) પદાર્થોસે નિવૃત્તિ ઓર ઉપાદેય  
 (ગ્રહણ કરને યોગ્ય) પદાર્થોકો જનાતે હૈ, ડસી પ્રકાર અજ્ઞતિ મી  
 અપને કુટુમ્બિકોકો બતાતે થે કિ-અમુક કાર્ય કરને યોગ્ય હૈ, અમુક  
 કાર્ય કરને યોગ્ય નહીં હૈ યહ પદાર્થ ગ્રાહ્ય-હૈ, યહ આગ્રાહ્ય હૈ ।

વગેરે એ વખતે એ ખાસાને અધારે જ દર્શાવે છે તે એ ખાસો ન હોય તો  
 એક બળદ એક ખાણુએ ચાલે જાય અને બીજો બીજી ખાણુએ ફરે, એ રીતે  
 વ્યવસ્થા ભગ થઈ જાય ગાથાપતિ અગતિ પોતાના કુટુમ્બગી મેધિ-મધ્યસ્થ સ્તભ  
 જેવો હતો, અર્થાત્ કુટુમ્બ એને આધારે હતુ, તંજ કુટુમ્બને વ્યવસ્થાપક હતો  
 મૂળ પાઠમા 'વિ' (અપિ) શબ્દ છે, તાત્પર્ય એ છે કે તે કેવળ કુટુમ્બનાજ આધાર  
 ઉપ નહોતો, પરંતુ બધા લોકોના પણ આશ્રય ઉપ હતો, કે જેમ ઉપર દર્શાવવામા  
 આવેલ છે આગળ પણ જના જ્યાં 'વિ' અપિ-પદ) આવ્યુ છે, ત્યાં ત્યાં બધે એજ  
 તાત્પર્ય સમજવનું છે

અગતિ ગાથાપતિ પોતાના કુટુમ્બમા પણ પ્રમાણુ ઉપ હતો, અર્થાત્ જેમ  
 પ્રત્યક્ષ અનુમાન આદિ પ્રમાણુ, સદેહ આદિને દૂર કરીને હેય (ત્યાગવા યોગ્ય)  
 પદાર્થોની નિવૃત્તિ અને ઉપાદેય (ગ્રહણ કરના યોગ્ય) પદાર્થોમા પ્રવૃત્તિ કરાવતા  
 તે પદાર્થોને દર્શાવે છે, તે । અગતિ પણ પોતાના કુટુમ્બિકોને બતાવતો હતો કે-  
 અમુક કાર્ય કરવુ યોગ્ય છે, અમુક કાર્ય કરવુ યોગ્ય નથી, અમુક પદાર્થ ગ્રાહ્ય છે,  
 અમુક પદાર્થ અગ્રાહ્ય છે, ઇત્યાદિ

रज्जुस्तम्भादिवद्विपत्कृपपतज्जनोद्धारकतयाऽवलम्बनम्, आगारो नाम-यमधिष्ठाय जन उन्नतिं गच्छति, स्वरूपाऽवस्थो वा वर्तते सः, यदवलम्बनेन च विपदो विनिवर्तन्ते तदालम्बनमिति तयोर्भेदः, चक्षुः=नेत्र तद्वत् सर्वेषा सकलार्थप्रदर्शकः, यदुक्त-मेधिः, प्रमाणम्, आधारः, आलम्बन, चक्षुरिति । तदेव स्पष्टप्रतिपत्तये औपम्यवाचिभूतशब्दसम्बन्धेन पुनरावर्तयति-मेधीभूत इत्यादि, यावदिति यावच्छब्देन 'प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत' इत्येषा समग्रो योग्यस्तत्र-प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत चक्षुर्भूतः, इतिज्ञाया, पौनस्त्यवारण तु मेधिरर्थान्मेधीभूतो मेधिमदृश इति यावत् । प्रमाणमर्थात् प्रमाणभूत प्रमाण' सदृश इति यावत् । आधारोऽर्थादाधारभूत आधारसदृश इति यावत् । आलम्बनसदृश इति यावत् । चक्षुरर्थाच्चक्षुर्भूतश्चक्षुःसदृश इति यावत् इति रीत्या

तथा अङ्गति गाथापति अपने कुटुम्बके भी आधार (आश्रय) थे, तथा आलम्बन थे, अर्थात् विपत्तिमे पडनेवाले मनुष्यको रस्सी या स्तम्भके समान सहारे थे ।

अङ्गति अपने कुटुम्बके चक्षु थे, अर्थात् जैसे चक्षु मार्गको प्रकाशित करना है वैसे ही अङ्गति कुटुम्बियोंके भी समस्त अर्थोंके प्रदर्शक (सन्मार्गदर्शक) थे ।

दूसरी बार मेधिभूत आदि विशेषण स्पष्ट बोधके लिये ह । "जाव" शब्दसे प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत, इनका समग्र होता है । यहाँ स्पष्टनाके लिये 'भूत' शब्द अधिक दिया है, इसका तात्पर्य यह है कि अङ्गति गाथापति मेढी अर्थात् मेढीके सदृश थे, प्रमाण अर्थात् प्रमाणके सदृश थे, आधार अर्थात् आगारके सदृश

अङ्गति पोताना कुटुम्बको पणु आधार (आश्रय) इतो, तथा आलम्बन इतो, अर्थात् विपत्तिभा पडला मनुष्यने होरहु अथवा थासलाना जेवा आधार हुन इतो

अङ्गति पोताना कुटुम्बको चक्षुहुन इतो, अर्थात् जेभ चक्षु मार्गने प्रकाशित करे छे तेभ अङ्गति चक्षुहुनको पणु गधा अर्थाना प्रकाशन (सन्मार्गदर्शक) हुने

भीलवार मेधिलूत आदि विशेषण स्पष्ट बोधने भाटे आपेला छे 'जाव' शब्दसे प्रमाणभूत, आधारभूत, आलम्बनभूत, चक्षुर्भूत, जे गधाने सत्राग थाय छे, अर्थात् स्पष्टताने भाटे 'भूत' शब्द वधारे आयो छे जेनु तात्पर्य जे छे के अङ्गति मेधि अर्थात् मेधिनी समान इतो, प्रमाण अर्थात् प्रमाणनी समान इतो, आधार

समन्वयाद्भवतीति मृक्षमचभुपाऽवेक्षणीयम्, च=चमारो मिश्रित्यर्थे सर्वकार्यार्थक'  
=सर्वेषां कार्याणां सम्पादकोऽपि, (एतादृशोऽङ्गतिर्गाथापतिः) अभवत्=आसीत् ॥१॥

मूलम्—तेण कालेणं २ पासेण अरहा पुरिसा दाणीए आदि  
गरे जहा महावीरो, नवुस्सेहे सोलसेहि समणसाहस्सीहि, अट्ट-  
तीसा जाव कोट्टए समोसढे, परिसा निग्गया ।

तए णं से अगई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे  
हट्टे जहा कत्तिओ सेट्टी तहा निग्गच्छड जाव पज्जुवासइ,  
धम्म सोच्चा निसम्म० ज नवर देवाणुप्पिया । जेट्टपुत्ते कुडुबे  
ठावेमि, तए ण अह देवाणुप्पियाण जाव पव्वयामि, जहा  
गगदत्तो तहा पव्वइए जाव गुत्तवभयारी । तए णं से अगई  
अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अतिए सामाइय  
माइयाइ एक्कारस अगाड अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वट्ठहि चउत्थ  
जाव भावेमाणे वट्ठइ वासाइ सामन्नपरियाग पाउणड, पाउणित्ता  
अद्धमासियाए सलेहणाए तीस भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता  
विराहियसामन्ने कालमासे काल किच्चा चदवडिसए विमाणे  
उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए चदे जोइसिंदत्ताए  
उववन्ने ।

तए ण से चदे जोइसिंदे जोइसराया अहुणोववन्ने स-  
माणे पच विहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छड, तजहा—आहार-  
पज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इदियपज्जत्तीए सांसोसासपज्जत्तीए भासा  
मणपज्जत्तीए ।

ये, आलम्बनके मग्ग थे, चक्षु अर्थात् चक्षुके मद्देग थे । अङ्गति  
समस्त कार्योके सम्पादन करनेवाले भी थे ॥ १ ॥

अर्थात् आधार ॥ सगान भूतो, आलणन अर्थात् आलणनी सगान भूतो अने  
अनु अर्थात् अनुनी सगान भूतो अगति तथा कार्योनु म गाढ । करन दे पण हने (१)

चंदस्स ण भत्ते । जोडसिंदस्स जोडसरन्नो केवइय काल  
ठिई पन्नत्ता ? गोयमा । पलिओवम वाससयसहस्समव्वभहिय ।  
एव खलु गोयमा । चदस्स जाव जोडसरन्नो सा दिव्वा  
देविड्ढी० । चंदेणं भत्ते । जोडसिंदे जोडसराया ताओ देव-  
लोगाओ आउक्खएण ३ चइत्ता कहि गच्छिहिइ २ ? गोयमा ।  
महाविदेहे वासे सिज्जिहिइ ५ एव खलु जम्बू । समणेणं०  
निम्बेवओ ॥ २ ॥

॥ पढमं अज्झायण समत्त ॥ १ ॥

छाया-तस्मिन् गाले तस्मिन् समये पार्श्वे, खलु अर्हन् पुरुषादानीय  
आदिरूरो यथा महावीर\*, नवहस्तोन्मूत्रायः पौडशभिः श्रमणमाहसीभिः, अष्टा-  
त्रिंशद् यावत् शोष्ठके समवस्यत, परिपत् निर्गता ।

तत\* खलु सः अङ्गतिर्गाथापति अस्या कथाया लब्धार्थः सन् दृष्टो  
यथा कार्तिश्रेष्ठो तथा निर्गच्छति यावत् पर्युपास्ते, धर्म श्रुत्वा निश्चयः  
यत् नवर देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्र कुटुम्बे स्थापयामि, ततः खलु अह देवानु-  
प्रियाणा यावत् प्रव्रजामि यथा गङ्गदत्तस्तथा प्रव्रजितो यावद् गुप्तव्रजचारी ।  
तत खलु स अङ्गतिः अनगर\* पार्श्वस्य अर्हतं तथारूपाणा स्थविराणाम्  
अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अरीते, अरीत्य बहुमिश्रतुर्थं० यावद्  
भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति पालयित्वा अर्धमासिक्या सले  
खनया त्रिंशद् भक्तानि जनशनया छित्वा विराधितश्रामण्य कालमासे काल  
कृत्वा चन्द्रावतसके विमाने उपपातसभाया देवशयनोये देवदूष्यान्तरिते चन्द्रो  
ज्योतिरिन्द्रतया उपपन्न ।

तत खलु स चन्द्रो ज्योतिरिन्द्रो ज्योतिराजः अधुनोपपन्न सन् पञ्च-  
विधया पर्याप्त्या पर्याप्तिमाव गच्छति, तदयथा-आहारपर्याप्त्या शरीरपर्याप्त्या  
इन्द्रियपर्याप्त्या श्वासोच्छ्वासपर्याप्त्या भाषामनःपर्याप्त्या ।

चन्द्रस्य खलु मद्दन्त ! ज्योतिरिन्द्रस्य ज्योतीराजस्य कियत्काल स्थितिः  
पञ्चसा ? गौतम ! पर्योपम वर्षशतसहस्राभ्यधिकम् । एव खलु गौतम ! चन्द्रस्य  
यावत् ज्योतीराजस्य सा दिव्या देवक्रद्धि० । चन्द्र\* खलु मद्दन्त ! ज्योति

रिन्द्रो ज्योतीराजस्तस्मादेतलोकादायुःक्षयेण ३ च्युत्वा कुत्र गमिष्यति २ ?  
गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति ५ । एव न्वलु जम्बू ! श्रमणेन निक्षेपकः ॥२॥

॥ इति प्रथमाध्यायनम् ॥

टीका-‘तेण कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वः  
=त्रिविंश. पार्श्वनामा तीर्थङ्करः, अर्हन्-चतुर्विंशति कर्मनिवारकः केवलज्ञानकेवल  
दर्शनसम्पन्नः, पुरुषादानीयः=पुरुषैः=मुमुक्षुभिर्जनैः स्वस्वत्याणायमादीयत इति  
पुरुषादानीयः, यद्वा-पुरुषाणां मध्ये आदेयवचनत्वात् पुरुषादानीयः, आदिकर=  
धर्मस्य आदिकर, यथा-महावीरः=चतुर्विंशस्तीर्थङ्करः, तथैव सर्वगुणसम्पन्नः,  
किन्तु पार्श्वप्रभु. नवहस्तोच्छ्राय. नवहस्तपरिमितशरीर. षोडशभिः श्रमणैसाह  
स्त्रीभिः, अष्टात्रिंशद्भिः श्रमणीसहस्रैश्च युक्तः यावद् ग्रामानुग्राम विहरन् कोष्ठके=  
कोष्ठनामोद्याने समवस्यत =समागतः, परिपत् निर्गता, पार्श्वतीर्थङ्करस्य धर्म  
देशना श्रुत्वा स्वस्थानं गता ।

‘तेण कालेण’ इत्यादि—उस काल उस समयमें पार्श्व प्रभु  
तेवीसवें तीर्थङ्कर ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय  
इन चार घाति कर्मों के निवारक केवलज्ञान, केवलदर्शनसे युक्त,  
मुमुक्षुजनोंसे सेव्य अथवा पुरुषोंके बीचमें उनका वचन आदानीय=ग्राह्य  
था इसलिये पुरुषादानीय, धर्मके आदिकर भगवान् महावीरके समान  
सभी गुणोंसे युक्त नौ हाथ उंचे शरीरवाले सोलह हजार श्रमण  
और अड़तीस हजार श्रमणियोंसे युक्त एक ग्रामसे दूसरे ग्राम  
तीर्थङ्कर परम्परासे विचरते हुए कोष्ठक नामक उद्यानमें पधारे । जन  
समुदायरूप परिपद अपने २ स्थानसे धर्मश्रवणके लिये निकली ।  
पार्श्वनाथ भगवानकी धर्मदेशना सुनकर अपने २ स्थान गयी ।

‘तेण कालेण’ इत्यादि ते काले ते समये पार्श्व प्रभु तेवीसवा तीर्थंकर  
ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय, मोहनीय तथा अन्तराय के चार घाती कर्मोंना निवारक,  
केवलज्ञान केवलदर्शनशी युक्त, मुमुक्षु जनोशी सेव्य, अथवा पुद्गेनी पथमा तेमन्  
पथम आदानीय=ग्राह्य चतुः आशी पुरुषादानीय, धर्मना आदि करवावाणा भगवान्  
महावीर समान सर्वे शुद्धोशी युक्त, नव हाथ उंचा शरीरवाणा, सोलह हजार श्रमण  
तथा आठतीस हजार श्रमणियोंशी युक्त एक ग्रामशी भीले ग्राम तीर्थंकर पर पराशी  
विचरता विचरता ठोठक-नामना उद्यान (जाग)मा पधार्या जन समुदायरूप परिपद  
पोत पोताना स्थायी धर्म साक्षणवा भाटे, नीकणी, पार्श्वनाथ भगवान्नी धर्म-  
देशना साक्षणी पोतपोताने स्थाने गय

ततः खलु सोऽङ्गतिगाथापतिः अस्या कथायाः=पुरुषादानीय पार्श्व  
नाथः प्रभुश्च कोष्ठके समसृज ' इति गार्तायाः व्याय=ज्ञातृनान्त सन्  
हृष्टः प्रमुदितः यथा कार्तिकश्रेष्ठी तथा निर्गच्छति, यावत् पथुपास्ते=पार्श्वनाथ  
प्रभु सेवते स्म । धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्या=कर्णपथे कृत्वा, निश्चय=हृदि  
समवधार्य देवानुमिय ' = हे भगवन् ! यत् नवर=केवल ज्येष्ठपुत्र रक्षकतया  
कुटुम्बे स्थापयामि, ततः खलु अहं देवानुमियाणामन्तिके यावत् प्रजामि=  
सयम गृह्णामि, यथा भगवत्यङ्गोक्तो गङ्गदत्तस्तथा प्रजितो यारच्छन्देन=स  
हि- ' किंपाफलोपम मुणियविसयसोक्ख जलबुद्बुयसमाण कुसगग्निदुचचल जी-  
विय नाऊणमधुव चड्ढा हिरण्ण विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवा-  
ल्लरत्तरयणमाडय पिच्छड्डत्ता दाण दाडयाण परिभाडत्ता अगाराओ अणगारिय  
पव्वइओ जहा तहा अगईमि गिहनागो परिच्चडय सव्व पव्वइओ जाओ य  
पचसमिओ तिगुत्तो अममो अकिंचणो गुत्तिदिक्को ' इत्येव सग्राहम् । एतच्छाया  
च=स किंपाफलोपम ज्ञात्वा विषयसारय जलबुद्बुसमान कुशाग्रिन्दुवञ्चल

उसके बाद वह अङ्गति गाथापति भगवान् पार्श्वनाथके आनेका  
वृत्तात् सुनकर हृष्ट होकर कार्तिक सेठके समान निकला । पार्श्वनाथ  
प्रभुके पास जाकर उसने उनकी सेवा की, और भगवान् पार्श्वनाथके  
द्वारा उपदिष्ट श्रुत चारित्र लक्षण धर्मको सुना, और उसे अपने  
हृदयमे अवधारित किया । उसके बाद उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना  
की-हे भगवन् ! मैं अपने बड़े लडकेको कुटुम्बका भार देकर बादमे  
आपके पास सयम ग्रहण करना चाहता हूँ । अनन्तर वह भगवती  
अङ्गमे उक्त गङ्गदत्तके समान ही विषय सुखकों किंपाक फलके सदृश  
जानकर जीवनको जल बुद्बुद तथा कुशके अग्र भागमे स्थित जल-

त्यार पछी ते अङ्गति गाथापति भगवान् पार्श्वनाथना अवताना वृत्तान्त  
नासणी हुष्ट धरु कार्तिक सेठनी पठे नीकएथे पार्श्वनाथ प्रभुनी पासे नरु तेछे  
तेभनी सेवा करी तथा भगवान् पार्श्वनाथ द्वारा उपदिष्ट श्रुतचारित्र लक्षण धर्म  
भासएथे, अने ते पोतना हुदयमा धारण कर्ये त्यार पछी तेछे हाथ जेडीने प्रार्थना  
करी-हे भगवन् ! हुं भारा मोटा पीडरने कुटुणने बार सोपी दधने आपनी पासे  
सयम ग्रहण क वा धरु राधु छु त्यार पछी ते भगवतासूत्रमा कडेल गङ्गदत्तनी  
पठेन विषय सुणने किंपाक फलनी जेम समल एवने पाणीना परमोटा तथा  
कुशना अथ भागमा रुडेवा जलगिदु, ममान यथल अने अनित्य, समलने तथा



रिन्द्रो ज्योतीराजस्तस्मादेतलोमादायुःक्षयेण ३ च्युत्या कुत्र गमिष्यति २ ?  
गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति ५ । एव न्वलु जम्बूः ! श्रमणेन निक्षेपकः ॥२॥

॥ इति प्रथमाभ्ययनम् ॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वः  
=त्रिविंशः पार्श्वनामा तीर्थङ्करः, अर्हत्=चतुर्विंशत्यातिकर्मनिवारकः केवलज्ञानकेवल  
दर्शनसम्पन्नः, पुरुषादानीयः=पुरुषैः=मुमुक्षुभिर्जनैः स्वकल्याणार्थमादीयत इति  
पुरुषादानीयः, यद्वा-पुरुषाणां मये आदेयवचनत्वात् पुरुषादानीयः, आदिकरः=  
धर्मस्य आदिकरः, यथा-महावीरः=चतुर्विंशस्तीर्थङ्करः, तथैव सर्वगुणसम्पन्नः,  
किन्तु पार्श्वप्रभुः नगहस्तोच्छ्रायः=नवहस्तपरिमितशरीरः षोडशभिः श्रमणैः सह  
स्त्रीभिः, अष्टाविंशद्भिः श्रमणीसहस्रैश्च युक्तः यागदः ग्रामानुग्राम विहरन् कोष्ठके=  
कोष्ठनामोद्याने समवस्यत=समागतः, परिपत् निर्गता, पार्श्वतीर्थङ्करस्य धर्म  
देशना श्रुत्वा स्वस्थानं गता ।

‘तेण कालेण’ इत्यादि—उस काल उस समयमें पार्श्व प्रभु  
तेवीसवें तीर्थङ्कर ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय  
इन चार घाति कर्मों के निवारक केवलज्ञान, केवलदर्शनसे युक्त,  
मुमुक्षुजनोंसे सेव्य अथवा पुरुषोंके बीचमें उनका वचन आदानीय=ग्राह्य  
या इसलिये पुरुषादानीय, धर्मके आदिकर भगवान् महावीरके समान  
सभी गुणोंसे युक्त नौ हाथ उँचे शरीरवाले सोलह हजार श्रमण  
और अड़तीस हजार श्रमणियोंसे युक्त एक ग्रामसे दूसरे ग्राम  
तीर्थङ्कर परम्परासे विचरते हुए कोष्ठक नामक उद्यानमें पधारे । जन  
समुदायरूप परिषद् अपने २ स्थानसे धर्मश्रवणके लिये निकली ।  
पार्श्वनाथ भगवानकी धर्मदेशना सुनकर अपने २ स्थान गयी ।

‘तेण कालेण’ इत्यादि ते काले ते समये पार्श्व प्रभु तेवीसवा तीर्थङ्कर  
ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय, मोहनीय तथा अन्तराय के चार घाती कर्मोंका निवारक,  
केवलज्ञान केवलदर्शनसे युक्त, मुमुक्षु जनोत्थी सेव्य, अथवा पुद्गलोत्थी वयम्मा तेभन्तु  
वचन आदानीय=ग्राह्य इति अथवा पुद्गलादानीय, धर्मना आदि करवावाणा भगवान्  
महावीर समान सर्वे गुणोत्थी युक्त, नव हाथ उँचा शरीरवाला, सोलह हजार श्रमण  
तथा अड़तीस हजार श्रमणियोंसे युक्त केक गावोत्थी जीने गाव तीर्थङ्कर परम्परासे  
विचरता विचरता कोष्ठक नामका उद्यान (गाव)मा पधारे जन समुदाय रूप परिषद्  
पेता पोताना स्थायेथी धर्म साधना भाटे, नीकणी, पार्श्वनाथ भगवानकी धर्म-  
देशना साधणी पेतापोताने स्थाने गथ

विराधना द्विग-मूलगुणविषया उत्तरगुणविषया च, अत्रोत्तरगुणविषया विराधना पिण्डविशुद्ध्यादयो विज्ञेयाः, न तु प्रथमा, तत्र कदाचित् द्विचत्वारिंश-शोपविशुद्धाहारस्य न ग्रहण कृतम्, कदाचित् ईर्ग्याममित्यादिममाराग्नेऽनादग्-कृतः, कदाचित् अभिग्रहाश्च गृहीता अपि न सम्यक् पाठिताः, विभूपाथमङ्ग-पादक्षालनादि च कृतम्, इत्यादिरूपेण प्रतविराधना कृता, सा च न गुरु

पालन किया । परन्तु उत्तरगुणकी विराधनाके कारण विराधितचारित्र्य हो, अर्धमासिकी सलेखनासे अनशनद्वारा तीस भक्तोंका छेदन कर काल मासमें काल करके चन्द्रावतमक विमानमें उपपात मभामें देव-दृष्य बन्धोंसे आच्छादिन देवशय्यामें वह अङ्गति अनगार [१] आहार-पर्याप्ति [२] शरीर-पर्याप्ति [३] इन्द्रिय-पर्याप्ति [४] श्वासेच्छ्वास-पर्याप्ति भाषामन पर्याप्ति भाषको प्राप्त करके ज्योतिषियोंके इन्द्र चन्द्र होकर उत्पन्न हुए ।

विराधना दो प्रकारकी है-मूलगुणविराधना और उत्तरगुण-विराधना । उनमें पाच महाव्रतमें दोष लगाना मूलगुणविराधना है । और पिण्डविशुद्धि आदिमें दोष लगाना जैसे-कभी ब्यालीम दोष सहित आहार पानीका ग्रहण करना कभी ईर्ग्या आदि समितियोंके आराधनमें प्रमाद करना कभी अभिग्रह लेना किन्तु सम्यक् नहीं पालना नया विभूपाके लिये शरीर चरण आदिका क्षालन करना, आदि २ उत्तरगुण विषयक विराधना देशविराधना है । अङ्गति

विराधनाने शरुषे विनाधितचारित्रवाणा यथ अर्धभानिडी सलेखनामा अनशन द्वारा नीय लकतनु छेदन करी काल भाषमा काल करीने चन्द्रावतमक विमानमा उपपात मभामा देवदृष्य बन्धोंसी आच्छादित (ढकायेदी) देवशय्यामा ते अङ्गति अनगार (१) आहार-पर्याप्ति (२) शरीर-पर्याप्ति [३] इन्द्रिय-पर्याप्ति (४) श्वासेच्छ्वास-पर्याप्ति-भाषामन-पर्याप्ति भाषन प्राप्त करीने ज्योतिषीना इन्द्र चन्द्र जनीने उत्पन्न थया

विगधना जे प्रजानी छे-मूलगुणविराधना अने उत्तरगुणविराधना तेमा पाच महाव्रतमा लगाउवे जे मूलगुणविराधना छे अने पिंड विशुद्ध आदिमा दोष लगाउवे जेभडे-डोछवार जेतावीर दोष सहित आहार पाणी लेवा, डोछवार धर्या वगेरे समितिजोना आनधनमा प्रमाद करवे, डोछवार अभिग्रह लेवे परन्तु सम्यक् (सारी नीति) न पाणवे, तथा विभूषा भाटे शरीर चरुष आदि धोवा आदि आदि उत्तरगुण विषयक विराधना देशविराधना छे अङ्गति अनगारे मूल गुणनी विराधना करी नहे ती

जीवितं च ज्ञात्वाऽष्टुव स्यक्त्वा हिरण्यं विपुलं-धनं-वनकं-रत्नं-मणिं-मौक्तिकं-  
शङ्खं-शिलां-प्रवालं-रक्तरत्नादिकं विमुच्य दानं दायिकानां परिभाज्य अनगरतः  
अनगरितां प्रव्रजितः यथा तथा अङ्गतिरपि गृहनायकः परित्यज्य सर्वं प्र-  
व्रजितो जातश्च पञ्चसमितः, त्रिगुप्तः, अममः, अकिञ्चनं गुप्तेन्द्रियः, इति ।  
गुप्तब्रह्मचारी बभूव, नतः खलु अङ्गतिरनगरः पार्श्वस्थाईतस्तथारूपाणां स्थवि-  
राणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीत्य च बहुभिः चतुष्षष्टाऽ-  
ष्टमं-दशमं-द्वादशमासार्धमासक्षपणैरात्मानं भावयन्=वासयन् तद्द्विनि वर्षाणि त्रा-  
मण्यपर्याय=मुनिव्रतं पालयति पालयित्वा विराधितश्रामण्यः=विराधितमुनिव्रतः,

विन्दुके समान चचल एव अनित्य समझकर और बहुतसा चादी  
धन कनक रत्न मणि मौक्तिक शङ्ख रत्न शिला प्रवाल रक्तरत्न  
आदिको छोड़कर और दान देकर तथा सम्पत्तिके भागियोंको सम्प-  
त्तिका भाग देकर घरसे निकल गङ्गदत्तके समान प्रव्रजित हो गये ।  
प्रव्रज्या लेनेपर वे अङ्गति अनगर ईर्या आदि पाँच समितियोंसे  
समित मन आदि तीन गुप्तसे गुप्त और ममत्व रहित एव अकिञ्चन-  
यक्षाभ्यन्तर परिग्रहसे रहित और पाँचो इन्द्रियोंको दमन करनेवाले  
अनगर हो गये, और गुप्त ब्रह्मचारी बने । उसके बाद अङ्गति  
अनगरने अर्हत् पार्व प्रभुके तथारूप-बहुश्रुत-स्थविरोंके समीप  
सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया । अध्ययनके बाद  
बहुतसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्ध मास क्षपण रूप  
तपसे अपनी आत्माको भाविक करते हुए बहुत वर्षों तक चारित्र्य

धनु थाही, धन, सेतु, रत्न, मणि (जवे १०), मोती, शङ्ख, शिला, प्रवाल, रक्त  
(माणिक्य) आदि छोड़ी छोड़ने अने दान छोड़ने तथा संपत्तिना भागीदाराने संपत्तिना  
भाग आपी पानाना घरथी नीकणां गङ्गदत्तनी पेटे प्रव्रजित थई गया प्रव्रज्या  
छोड़ने ते अंगति अनगर ईर्या आदि पांच समितिओथी समित मन आदि नथु  
गुप्तथी गुप्त तथा ममत्व रहित अने अकिञ्चनग्राह्य-अभ्यन्तर परिग्रहथी रहित तथा  
पांचे इन्द्रियोनु दमन करवावाणा अनगर थई गया तथा गुप्त ब्रह्मचारी बन्या  
त्यार पछी अंगति अनगरने अर्हत् पार्व प्रभुना तथारूप-बहुश्रुत-स्थविरानी पास  
सामायिक आदि अगीयार अंगोनु अध्ययन कथु अध्ययन पछी धनु चतुर्थ, षष्ठ,  
अष्टम, दशम, द्वादश, मासार्ध (०११ मास) मास क्षपण रूप अनेक तपथी पानाना  
आत्माने भावित करत धनु वर्षो सुधी चारित्र्य पालन कथु पछु उत्तर शुभनी

मूलम्—जडण भंते । समणेणं भगवया जाव पुप्फियाण  
पढमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ।  
अज्झयणस्स पुप्फियाण समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं के  
अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जवू । तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं  
नयरे, गुणसिलए चेडए, सेणिये राया, समोसरण जहा चंदो  
तहा सूरुओवि आगओ जाव नट्टविहि उवदसित्ता पडिगओ ।  
पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी नगरी, सुपडट्ठे नाम गाहावड होत्था,  
अडं, जहेव अगती जाव विहरति, पासो समोसडे, जहा अगती  
तहेव पव्वइए, तहेव विराहियसामन्ने जाव महाविदेहे वासे  
सिज्झिहिति जाव अंतकाहिति, एव खलु जवू । समणेणं,  
निक्खेवओ ॥ २ ॥

॥ वीय अज्झयणं समत्त ॥ २ ॥

उाया—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् पुष्पिताना प्रथमस्य

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्भू ! इस प्रकार मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने  
पुष्पिताके प्रथम अध्ययनका निरूपण किया है ।

इति प्रथम अध्ययन समाप्त हुआ ।

द्वितीय अ ययन.

‘जडण भंते’ इत्यादि—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताके प्रथम अ

सुधर्मा स्वामी कहें हैं—

हे जम्भू ! आ प्रकारे मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान महावीर पुष्पिताना प्रथम  
अध्ययननु निरूपण कर्युं छे

इति पुष्पितानु प्रथम अध्ययन समाप्त

द्वितीयअध्ययन.

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पिताना प्रथम अध्ययनमा पूर्वेकत

સમીપે સમાલોચિતા, દત્તુક્તરૂપેનાર્નાલોચિતાતિચાર. સન્ કૃતાનશનોઽપિ અર્થ  
માસિમ્યા સહેસનોયામનશનયા ત્રિશદ્ ભક્તાનિ છિત્ત્યા કાલાસરે કાલ કૃત્વા=  
મૃત્વા ચન્દ્રાવતમકે પ્રિમાને ઉપપાતસમાયા દેવશયનીયે=દેશશય્યાયા દેવદૃષ્ટ્યા  
ન્તરિતે દેવદૃષ્ટ્યવત્ત્વાચ્છાદિતેઽય ચન્દ્રો જ્યોતિરિન્દ્રતયોપપન્નઃ=સમુદ્પદ્યત-તસ્ય  
જ્યોતિર્દેવે જન્મ જાતમિત્યર્થ । નિષ્કેપો=નિગમનમ્ । શેષ સુગમમ્ ॥ ૨ ॥

॥ ઇતિ પ્રથમમન્થન સમાપ્તમ્ ॥ ૧ ॥

અનગારને મૂલગુણકી વિરાધના નહીં કી, કિન્તુ ઉત્તરગુણકી વિરા-  
ધનાકર આલોચના નહી કી । હસલિયે યહ જ્યોતિષી દેવ હુઆ ।

ગૌતમ સ્વામી પૂછતે હૈ-

હે મદન્ત ! જ્યોતિષિયોંકે ઇન્દ્ર, જ્યોતિષિયોંકે રાજા ચન્દ્રકી  
સ્થિતિ કિતને કાલકી હૈ ?

ભગવાન કહતે હૈ—

હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોંકે ઇન્દ્ર ચન્દ્રકી સ્થિતિ એક પચ્ચોપમ  
ઔર એક લાખ વર્ષકી હૈ । હે ગૌતમ ! જ્યોતિષોંકે ઇન્દ્ર જ્યોતિષોંકે  
રાજા ચન્દ્રકો યહ દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિ પૂર્વ ભવમે ઉપાર્જિત તપ સયમકે  
કારણ મીલી હૈ ।

હે મદન્ત ! ચન્દ્ર દેવ અપના આયુષ્યભવ તથા અપની સ્થિતિકે  
ક્ષય હોજાનેકે યાદ ચ્ચક્રકર કહાં જાયગા ?

હે ગૌતમ આયુ આદિ ક્ષયકે યાદ યહ ચન્દ્ર દેવ મહાવિદેહ  
ક્ષેત્રમેં જન્મ લેકર સિદ્ધ હૈંગે ।

પછુ ઉત્તર ગુણની વિરાધના કરી આલોચના કરી નહોતી તે માટે તે જ્યોતિષી દેવ થયા  
ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે—

હે મદન્ત ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર જ્યોતિષોના રાજા ચન્દ્રની સ્થિતિ કેટલા કાલની છે  
ભગવાન કહે છે—

હે ગૌતમ ! ઇન્દ્ર ચન્દ્રની સ્થિતિ એક પચ્ચોપમ અને એક લાખ વર્ષની છે હે  
ગૌતમ ! જ્યોતિષોના ઇન્દ્ર જ્યોતિષોના રાજા ચન્દ્રને આ દિવ્ય દેવઋદ્ધિ પૂર્વભવમા  
ઉપાર્જિત તપ અને મયમના કારણથી મળી છે

હે મદન્ત ! ચન્દ્ર દેવ પોતાનું આયુષ્ય ભવ તથા પોતાની સ્થિતિના ક્ષય થઈ  
ગયા પછી ચ્ચવીને કયા જશે

હે ગૌતમ ! આયુ આદિ ક્ષય થઈ ગયા પછી આ ચન્દ્ર દેવ મહા વિદેહ ક્ષેત્રમા  
જન્મ લઈને સિદ્ધ થશે

रोए वहिया वहवे अवारामा रोवावित्तए, एव माउलिगा,  
विह्ला, कविट्टा, चिचा, गुप्फारामा रोवावित्तए । एव संपेहेड  
सपेहिन्ता कल्ल जाव जलते वाणारसीए, नयरीए वहिया अवा-  
रामे य जाव पुप्फारामे य रोवावेड । तएण वहवे अवारामा  
य जाव पुप्फारामा य अगुपुब्बेण सारक्खिज्जमाणा सगोविज्ज-  
माणा सबड्डियमाणा आरामा जाया, किण्हा किण्होभासा जाव  
रम्मा महामेहनिकुरवभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरे-  
रिज्जमाणसिरीया अईव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति ॥३॥

त्राया-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता यावत् सम्प्राप्तेन उत्क्षे-  
पको भणितव्य । राजगृहं नगरम् । गुणशिल्प चैत्यम् । श्रेणिको राजा । स्वामी  
समवसतः । परिपत् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुक्रो महाग्रह  
शुक्रावतसके विमाने शुक्रे सिंहासने चतसृभि सामानिस्साम्नीभि, यथैव  
चन्द्रस्तथैवागत, नाट्यविधिमुपदर्शय प्रणिगत । भदन्त ! इति कृटानारशाला ।  
पूर्वभवपृच्छा ।

एव खलु गोतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये वाराणसी नाम  
नगरी अभवत् । तत्र खलु वाराणस्या नगर्या सोमिलो नाम ब्राह्मण परि-  
वसति, आहूया यावत् अपरिभूत क्रुद्धवेद० यावत् सुप्रतिष्ठित । पार्श्व  
समवसतः । परिपत् पर्युपास्ते । तत खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य अस्या  
कथाया लब्धार्थस्य सत अयमेतद्रूप आ यात्स्मिन् ४, यावत् सपुटपत्रत-  
एव खलु पार्श्व अर्हन् पुरुषादानीय पूर्वानुपूर्व्या यावत् आम्रशालवने विह-  
रति, तद् गच्छामि खलु पार्श्वस्य अर्हतोऽन्तिके प्रादुर्भवामि, इमान च खलु  
एतद्रूपान् अर्थान् हेतून् यथा प्रज्ञप्स्याम् ।

सोमिलो निगत खण्डिभविनीनो यावत् एवमवादीत्-यात्रा ते भदन्त !  
यापनीय च ते ? पृच्छा, मन्त्रायम, मापा, कुल्ल्या, एको भवान्, यावत्  
समुद्रं श्राव्यमर्षं प्रातपय प्रतिगत । तत खलु पार्श्व अर्हन् अन्यदा रुदा-  
चित् वाराणसीतो नगरीत आम्रशालवनाच्चैत्यात् प्रतिनिष्कामति, प्रतिनिष्काम्य  
यन्निर्जनपदविहारं विहरति ।

पासे समोसदे । परिसा पज्जुवासइ । तएण तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए० जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु पासे अरहा पुरिसा-दाणीए पुत्ताणुपुत्ति जाव अवसालवणे विहरइ, त गच्छामि ण पासस्स अरहओ अतिए पाउब्भवामि । इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेऊइं जहा पण्णत्तीए ।

सोमिलो निग्गओ खडियविहुणो जाव एव वयासी—जत्ता ते भते । ? जवणिज्ज च ते ? पुच्छा, सरिसवया, मासा, कुलत्था, एगे भव, जाव संबुद्धे सावगधम्म पडिवज्जित्ता पडिगए । तए णं पासे अरहा अण्णया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ।

तएण से सोमिले माहणे अण्णया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवर्द्धमाणेहि २, सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहि २, मिच्छत्तं च पडिवन्ने ।

तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णया कयाइ पुत्त रत्तावरत्तकालसमयसि कुडुबजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चतमाहणकुलप्पसूए । तएण मए वयाइ चिण्णाइ, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इड्डीओ समाणीयाओ, पसुवधा कया, जन्ना जेट्ठा, दक्खिणा दिन्ना, अतिही पूजिया, अग्गी हूया, जूपा निक्खिता, त सेय खलु मम इयानि कल्ल जाव जलते वाणारसीए नय-

तच्चस्सण भते ! अङ्गयणस्स पुष्कियाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्टे प-  
घत्ते ? । एव खलु जवु ! तेण णालेण २ रायगिहे' इत्यादि । प्रादुर्भवामि=  
उपस्थितो भवामि, अर्थान्=आत्ममल्याणरूपान् हेतून्=कारणानि, यद्वा-हेतून्=  
अनुमानस्य पञ्चास्यववाप्त्यरूपान्, यथा प्रज्ञप्त्या=व्याख्या प्रज्ञप्त्या भगवती-  
सूत्रे तथा विज्ञेयम् । खण्डिभविटीनः=शिष्यरहितः, सोमिलो ब्राह्मणः पार्श्व

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें राजगृह नामक नगर था ।  
गुणशिलक नामका चैत्य था । उस नगरीमें श्रेणिक नामके राजा थे ।  
वहाँ भगवान महावीर प्रभु पधारे । परिपद धर्म कथा श्रवण  
करनेको निकली ।

उस काल उस समयमें शुक्र महाग्रह शुक्रावतमरु विमानमे  
शुक्रमिहासन पर चार हजार सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए थे । वह  
शुक्र महाग्रह चन्द्र ग्रह समान भगवानके पास आये और नाट्यविधि  
दिखाकर वैसे ही चले गये । गौतमको जिज्ञासा हुई कि हे भदन्त !  
यह शुक्र महाग्रह इस प्रकार देवताओंके द्वारा नाट्यविधि दिखाकर  
मनको अन्तर्हित करके अकेले रह गये यह उड़े आश्चर्यकी बात है ।

भगवानने कहा-हे गौतम ! कटाकारशाला-पर्वत शिखरके  
समान ऊँचे विशाल भूकानमे वर्षा आदिके भयसे विपराहृष्टा जन समूह  
जिस प्रकार अन्तर्हित होजाता है उसी प्रकार शुक्रकी वैक्रयिकशक्तिसे  
उत्पन्न देवगण नाटक दिखाकर उनकी देहमे प्रविष्ट हो गये ।

हे जम्बू ! त काले ते समये राजगृह नामे नगर उत्तु गुणशिलक नामे  
तेमा चैत्य उत्तु ते नगरमा व्रष्टि नामे राजा उता त्या भगवान महावीर प्रभु  
पधार्था पन्निद धर्म कथानु श्रवणु करवा ठीकणी

त काले ते समये शुक्र महाग्रह शुक्रावतमरु विमानमा शुक्र मिहासन उपर  
चार हजार नार निद होये ॥ नाथे गेठा उता ते शुक्र महाग्रह चन्द्रग्रहणी पठे  
भगवाननी पासो आव्वा अने नाट्य विधि देण डीने ओगज आटा गथा

गौतमने उज्जना थछ डे डे भदन्त ! आ शुक्र महाग्रह आ प्रकारे देवताओ  
द्वारा नाट्य विधि देण डी गधाने अन्तर्हित करी ओकेला न्ही गथा आ जहु आश्च  
र्यनी बात छे

भगवाने कहु —हे गौतम ! कटाकारशाला-पर्वत शिखरनी पठे जथा विशाल  
भूकानमा परमाटना लथथी विपराहृष्ट गयेला जन समूह जेवी रीते अन्तर्हित थछ नथ  
छे तेवी ज रीते शुक्रनी वैक्रयिक शक्तिथी उत्पन्न थयेन देवगण नाटक देण डी  
तनाज डेडमा समाछ गथा



તતઃ સ સોમિલો વ્રાહ્મણઃ અન્યદા કદાચિત્ અસાધુદર્શનેન ચ અપ  
ર્યુપાસનતયા ચ મિન્યાત્વપર્યવૈ પરિવર્તમાનૈઃ ૨, સમ્યક્ત્વપર્યવૈ પરિહીયમાનૈઃ  
૨ મિન્યાત્વચ પ્રતિપન્ન ।

તત્ત્વ ચલુ તમ્ય સોમિલસ્ય વ્રાહ્મણસ્ય અન્યદા કદાચિત્ પૂર્વરાત્રા  
પરરાત્રકાલસમયે કુદુમાજાગરિત્તા જાગ્રતોડ્યમેતદ્રપ આત્મિકઃ યાવત્ સમુ-  
દપદ્યત-એવ ચલુ અહ વારાણસ્યા નગર્યા સોમિલો નામ વ્રાહ્મણોડત્યન્ત્રાહ્મણ  
કુત્રપદ્યત' । તત્ત્વ ચલુ મયા વ્રતાનિ ચીર્ગાનિ વેદાશ્ચાગ્રીતા', દારા જાહૂતા,  
પુત્રા જગિતા, કુદ્રય સમાનીતા, પશુપદ્યા. ક્રુતા, યજ્ઞા ઇષ્ટા, દક્ષિણા  
દત્તા, અતિથય પૂજિતા, અગ્નયો દુતા, ગ્રુપા નિશ્ચિન્તા, તન્ત્રેયઃ ચલુ મમે  
દાની કલ્યે યાવત્ જ્વલતિ વારાણસ્યા નગર્યા પર્હિર્મહન્ આમ્નારામાન્ રોપ  
યિતુમ્, એવ માતુલિદ્વાન્, ચિલ્વાન્, રપિત્યાન્, ચિચ્ચા, પુત્પારામાન્ રોપયિતુમ્ ।  
એવ સપ્રેક્ષતે, સપ્રેક્ષય નત્યે યાવત્ જ્વલતિ વારાણસ્યા નગર્યા પર્હિ આમ્ના-  
રામાશ્ચ યાવત્ પુત્પારામાશ્ચ રોપયતિ । તત્ત્વ ચલુ પદ્મ આમ્નારામાશ્ચ યાવત્  
પુત્પારામાશ્ચ અનુપૂર્વેણ સરક્ષ્યમાણા, મગોપ્યમાના, સવર્ધ્યમાના આરામા  
જાતા કૃષ્ણા કૃષ્ણાચભાસા યાવત્ રમ્યા મહામેગ્નકુરમ્બિભૂતા પત્રિતા  
પુષ્પિતાઃ ફલિતા. હરિતકુરારાજ્યમાનશ્રીફા' અતીત્રાતીત્ર ઉપશોભમાના ઉપ  
શાભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ ॥ ૩ ॥

ટીકા-‘જડળ મતે’ ઇત્યાદિ । ઉત્કેષેપક =પારમ્મવાક્ય યથા-‘જડળ  
મતે । સમણેણ જાવ સવત્તેણ દોચ્ચસ્સ અજ્ઞયણસ્સ પુત્તિયાણ અયમદ્દે પક્કત્તે,

### તૃતીય અધ્યયન

‘જડળ મતે’ ઇત્યાદિ--

હે મદન્ત ! યાવત્ સિદ્ધિગતિસ્થાનકો પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન  
મહાવીરને પુષ્પિતાકે દ્વિતીય અધ્યયનમે પૂર્વોક્ત અર્થોકા નિરૂપણ કિયા  
હે તો હે મદન્ત ! તૃતીય અધ્યયનમે ઉન્હોને કિન અર્થોકા નિરૂપણ  
કિયા હે ?

### અથ ત્રીજી અધ્યયન

‘જડળ મતે’ ઇત્યાદિ

હે મદન્ત ! એ પ્રમાણે મિદ્ધિ ગતિ સ્થાનને પ્રાપ્ત એવા શ્રમણ ભગવાન  
મહાવીરે પુષ્પિતાના દ્વિતીય અધ્યયનમા પૂર્વોક્ત અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો હે  
મદન્ત ! ત્રીજા અધ્યયનમા તેણે કયા અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

यत्पृष्टवान् तच्छलेनोपहोसार्थम् । 'यात्रा' इत्यस्य संयममार्गेषु प्रवृत्तिरिति ।  
 'यापनीयम्' इत्यस्य मोक्षमार्गे गच्छता प्रयोजक इन्द्रियवश्यत्वलक्षणो धर्म  
 इति । 'सरिसवया' इत्यस्य सदृशवयसः सर्पपाश भक्ष्या वा अभक्ष्या इति ।  
 'मासा' इत्यस्य मासा पञ्चगुञ्जामानविशेषाः, धान्यविशेषाः 'उडद' इति  
 प्रसिद्धा, मासा = कालविशेषाश्चेति । 'एको भवान्' इत्यस्य 'एको भवान्' इत्ये-  
 कत्वाभ्युपगमे आत्मनः कृते श्रोत्रादिज्ञानानामवयवानां आत्मनोऽनेकत्वोपलब्ध्या  
 एकत्वं दूषयिष्यामीत्यभिप्रायकस्य, 'द्वौ भव' इत्यस्य द्वौ भवन्ताविति द्वित्व

भगवानसे प्रश्न किया-है मद्दत ! आपके यात्रा है ? आपके यापनीय  
 है ? 'सरिसवया, मास और कुलत्थ' भक्ष्य हैं या अभक्ष्य ? आप  
 एक है या दो ? इत्यादि प्रश्न किया ।

यहाँ 'यात्रा' का अर्थ है संयममार्गमें प्रवृत्ति ।

'यापनीय' का अर्थ है-मोक्षमार्गमें जानेवालोंके प्रयोजक  
 इन्द्रिय और मनका वश करने रूप धर्म ।

'सरिसवया' का अर्थ है-समान अवस्थावाला और मरसो ।

'मास' का अर्थ है-मास=काल विशेष, माप=उडद, माप=  
 प्राचीन रीतिसे पाँच गुञ्जावाला मान विशेष ।

'एको भवान्' इसका अभिप्राय है-यदि भगवान् पार्श्वनाथ  
 आत्माकी एकता मान लेंगे तो मैं श्रोत्र आदिके ज्ञान और अवय-  
 वोंसे आत्माकी अनेकता सिद्ध करूँगा ।

'द्वौ भवन्तौ' इससे यदि दो आत्मा मानेंगे तो मैं उसका

डे लदन्त ! आपने यात्रा छ थरी ? आपने यापनीय छे ? 'सरिसवया मास,  
 अने कुलत्थ' लदन् छे के अभक्ष्य ? आप जेक ठो डे जे ? इत्यादि प्रश्नो कथा

अहाँ 'यात्रा' नो अर्थ छे संयम मार्गमा प्रवृत्ति

'यापनीय' नो अर्थ छे मोक्षमार्गमा लवावाणाओना प्रयोजक इन्द्रिय अने  
 मनने वश करवाइपी धर्म

'सरिसवया' नो अर्थ छे समान अवस्थावाणा अने मरसो

'मास' नो अर्थ छे मास=कालविशेष, मास=अडद, मास=प्राचीन रीत  
 प्रमाणे पाच रती-अष्टोद्धीवाला मानविशेष

'एको भवान्' आनो जेवो मतलब छे के जे भगवान् पार्श्वनाथ आत्मान्नी  
 जेकता भानी देखे हु श्रोत्र आदिनु ज्ञान तथा अवयवोथी आत्मान्नी अनेकता सिद्ध करीश

'द्वौ भवन्तौ' आथी जे आत्मा जे मानथे तो हु तेनु पक्ष थान करीश

નાથમુપેતઃ एव=वक्ष्यमाणम् अयादीत्-हे भद्रन्त ! ते=तव यात्रा वर्त्तते ?, ते यापनीय वर्त्तते स्मि ? इति, तथा 'सरिसयया मामा कुलत्वा एए भस्त्रेया वा अभक्त्रेया' इति, तथा 'एगे भव, दुवे मर' इत्यादि च सोमिलो

ગૌતમ સ્વામીને પૂછા-હે ભગવન્ ! તારુ શુક્ર મહાગ્રહ અપને પૂર્વ જન્મમે કોન થે ?

હે ગૌતમ ! ઉમ કાલ ઉમ સમયમે વાગણસી નામકી નગરી થી । ઉસ નગરીમે સોમિલ નામકા બ્રાહ્મણ રહતા થા । વહ બ્રાહ્મણ આદ્ય યાવત્ અપરિભૂત થા । વહ ઋગ્વેદ આદિ વેદ તથા ઉનકે અદ્ધ ઉપાદ્યમે પરિનિષ્ઠિત થા । ઉસ નગરીમે ભગવાન પાર્શ્વનાથ તીર્થહ્રુર પધારે । પરિપદ્ ધર્મકથા સુનનેકે લિયે ભગવાનકે પાસ ગયી ।

ભગવાનકે આનેકા વૃત્તાન્ત સુનકર ઉમ વારાણસી નગરીમે રહનેવાલે સોમિલ બ્રાહ્મણકે હૃદયમે ઇસ પ્રકાર આધ્યાત્મિક-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ મુમુક્ષુ જનોંકે આશ્રયણીય અર્હત્ પાર્શ્વનાથ તીર્થહ્રુર તીર્થહ્રુરોકી મર્યાદાકો પાલન કરતે હુણ યાવત્ આગ્રશાલ વનમે પધારે હૈં ।

ઇસ લિયે જાઁઁ ઓર ભગવાન પાર્શ્વનાથકે સમીપ ઉપસ્થિત હોઁઁ । ઓર ઉનસે અનેકાર્થક શબ્દોકા અર્થ તથા હેતુ=કારણ અથવા અનુમાનકે પચ્ચાવયવ વાક્યોંકો પૂઁઁ । ણેસા વિચાર કર શિષ્યોંકો સાચલિયે વિના અકેલા હી ભગવાનકે પાસ આયા ઓર ઇસ પ્રકાર

ગૌતમે પૂછ્યુ —

હે ભગવન્ ! આ શુક્રમહાગ્રહ તેના પૂર્વજન્મમા કેાણ હતો ?

હે ગૌતમ તે કાલે તે સમયે એક વારાણસી નામની નગરી હતી તે નગરીમા સોમિલ નામે બ્રાહ્મણ રહેતો હતો તે બ્રાહ્મણ આદ્ય યાવત અપરિભૂત હતો તે ઋગ્વેદ વગેરે વેદ તથા તેના અગ અને ઉગાગમા પરિનિષ્ઠિત હતો તે નગરીમા ભગવાન પાર્શ્વનાથ તીર્થહ્રુર પધાર્યા પરિપદ્ ધર્મકથા સાંભળવા માટે ભગવાન પાસે ગઈ

ભગવાનના આચવાના અમાચાર સાંભળી તે વારાણસી નગરીમા રહેવાવાળા સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા આ પ્રકારનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે મુમુક્ષુજનોના આશ્રયણીય અર્હત્ પાર્શ્વનાથ તીર્થહ્રુર તીર્થહ્રુરોની મર્યાદાનું પાલન કરતા અહીં આગ્રશાલ વનમા પધાર્યા છે

આ માટે હું ઋઈને ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે ઉપસ્થિત વાઉ અને તેમને અનેક અર્થવાળા શબ્દોના અર્થ તથા હેતુ=કારણ અથવા અનુમાનના પચ્ચાવયવ વાક્યો પૂછુ આવો વિચાર કરી શિષ્યોને પોતાની માથે લીધા વગર-એકલાજ-ભગવાનની પાસે આવ્યો અને આ પ્રકારે ભગવાનને પ્રશ્ન કર્યો —

तीर्णाः । यृपाः=यज्ञस्तम्भाः निक्षिप्ताः=भूमौ निखाताः । हरितकराराज्यमान-  
श्रीकाः=हरितको नीलवर्णो दूर्वादिवनस्पतिः तेन राराज्यमाना=शोशुभ्यमाना  
श्रीः=छटा येषां ते हरितकराराज्यमानश्रीकाः अत एव अतीवातीव=अत्यन्त  
भृशम् उपशोभमाना उपशोभमानाः, तिष्ठन्ति=सन्ति, शेष सुगमम् ॥३॥

एक समय मध्यरात्रिमें कुटुम्बजागरणा करते हुए उस  
सोमिल ब्राह्मणके हृदयमें इस प्रकारका आध्यात्मिक यावत् मनमें  
सकलप उत्पन्न हुआ कि मैं वाराणसी नगरीका रहेनेवाला अत्यन्त  
उच्च कुलमें पैदा हुआ ब्राह्मण हूँ । मैंने व्रत ग्रहण किये वेद पढ़े,  
विवाह किया, पुत्रवान बना, समृद्धियोंको एकत्रित किया, पशुवध  
किया, यज्ञ किया, दक्षिणा दी, अतिथिोंकी पूजा की, अग्निमें हवन  
किया यूप=यज्ञीय स्तम्भ रोपा, इन सभी कार्योंको किया । अब मुझे  
उचित है कि मैं रात बीतने पर प्रातःकालमें वाराणसी नगरीके बाहर  
बहुतसे आमके बगीचे लगाऊँ, एवं मातुलिङ्ग=मिजोरा, बेल, कपित्थ,  
( कनिष्ठ ), चिञ्चा=इमली और फूलोंका बगीचा लगाऊँ, इस प्रकार  
विचार करता है ।

रात बीतने पर सूर्योदय होते ही उसने वाराणसी नगरीके  
बाहर आमके बगीचेसे लेकर फूलके बगीचा तक लगवाया । और  
वे बगीचे क्रमसे सरक्षित हो मगोपित हो पूर्णरूपसे बगीचे हो  
गये । हरे और हरी भरी कातिवाले, तथा परसने वाले नीले मेघ

आनी पर्युपासना न करवाथी अने मिथ्यात्व पर्यायिना वधवाथी तथा अभ्यस्तव पर्या-  
यिना घटवाथी मिथ्यात्वासी यथ गये।

अथ व्रत मध्यरात्रिमा कुटुम्ब जागरणा करता करता ते सोमिल ब्राह्मणना  
हृदयमा आवा प्रकारना आध्यात्मिक अटले मनमा सत्त्वा उत्पन्न तथा ठे-हुं वाराणसी  
नगरीमा रहैवावाडो बहुत किया कुगमा पैदा थयेयो ब्राह्मण छु, मे मन अकल्य कर्ण  
छे, वे भल्लेयो छु, लग्न करी पुत्रवान बन्यो, समृद्धि अकली करी, पशुवध कर्ण यज्ञ  
कर्ण, दक्षिणा आपी, अतिथिनी पूजा करी, अग्निमा हवन कर्ण, यूप=यज्ञीय काष्ठने  
पौड्यु, आ गंधा कर्णो कर्णो हवे भारे भारे योग्य छे ठे हुं रात्रि पुरी यथ न्याये  
सवार पडे त्यारे वाराणसी नगरीनी गडार भूम आमाना वृक्षानो गणीयो गनानु  
तथा मातुलिङ्ग=मिजोरा, बेल, कपित्थ, चिञ्चा=आमली तथा कुवैली वाडी गनानु आ  
प्रकाशे विचार करे छे

रात्रि बीती सूर्यो य तथा न तेछे वाराणसी नगरीना गडार आमाना गणीयाथी  
भाडीने कुलना वाडी सुधी गंधु गनानु अने ते गणीया हणवे हणवे सरक्षित अने

स्वीकारे एकत्वविशिष्टम्यार्थस्य द्वित्वेन सहात्यन्तरिरोधाद् द्वित्व दूषयिष्या-  
मीत्यभिप्रायकस्य च एतत्प्रभृतिमश्रमस्य तत्तदर्थं भगवानभ्यर्थं निखिलदोषरहितं  
स्याद्वादपक्षमाधित्योत्तरमदात् । एतद्विषय विशेषजिज्ञासाया भगवतीसूत्रस्य-  
अष्टादशगतरुदशमोद्देशकादवगन्तव्यम् । 'अत्यन्तब्राह्मणकृतप्रभृत' = अत्यन्त = नि-  
रतिशयित यद् ब्राह्मणकुल तत्र प्रभृतः = उत्पन्नः त्रिशुद्धब्राह्मणकुलोत्पन्न इति  
यावत् । दारा = स्त्रिय' आहुता = परिणयविधिना स्वीकृता, यज्ञा इष्टा = कृता,  
दक्षिणा = यज्ञसमाप्तौ र्मण साद्रतासिद्धयर्थं देय द्रव्य, दत्ता = ब्राह्मणेभ्यो वि-  
भी खण्डन करुंगा । क्यो कि जो एक है वह दो कभी हो ही  
नहीं सकता ।

इत्यादि सोमिल ब्राह्मणका प्रश्न सुनकर उन प्रश्नोंका उत्तर  
भगवानने सभी दोषोंसे रहित स्याद्वाद मतका आश्रयण करके दिया ।

इसका विस्तृत वर्णन भगवती सूत्र के अठारहवें शतकके दशव  
उद्देशमे देव लेना चाहिये ।

इस प्रकार उलपूर्वक प्रश्न करनेके बाद वह उचित उत्तर  
पाकर बोध युक्त हो श्रावक धर्मको स्वीकार कर भगवान पार्श्वप्रभुके  
समीपसे अपने स्थानपर गया ।

एक समय भगवान पार्श्वप्रभु अर्हत् वाराणसी नगरीके आत्र-  
शाल वन नामक चैत्यसे निकलकर देशमे विहार करने लगे ।

उसके रात्रि वह सोमिल ब्राह्मण एक समय असाधुओंके दर्शनसे  
तथा सुसाधुओंकी पर्युपासना नहीं करनेसे एवं मिथ्यात्वपर्यायोंके  
बढ़ने और सम्यक्त्व पर्यायोंके घटनेके कारण मिथ्यात्वी हो गया ।

हेमक ने एक छे ते डी गधु के थर न राके

इत्यादि सोमिल ब्राह्मणका प्रश्न साधनों के लिये भगवानने सर्व दोषरही  
रहित स्याद्वादमतनु आश्रयण करके आश्रय ।

आनु विस्तारपूर्वकनु वर्णन भगवती सूत्रना आठारमा शतकना दशमा उद्देशमा  
ने लवु लेधय

आ प्रकार छलपूर्वक प्रश्न क्यों पछी ते उचित उत्तर पायी जोधयुक्त थर  
श्रावक धर्मने स्वीकारिने भगवान पार्श्वनाथ प्रभुनी पासिथी पोताने स्थाने गये ।

एक पक्षत भगवान पार्श्वप्रभु अर्हत् वाराणसी नगरीना आत्रशाल वन नामे  
चैत्यमाथी नीकाना देशमा विहार करवा लाया

त्यार पछी ते सोमिल ब्राह्मण एक पक्षत असाधुओंना दर्शनथी तथा सुसाधु

तीर्णाः । युषाः=यज्ञस्तम्भाः निक्षिप्ताः=भूमौ निखाताः । हरितकराराज्यमान  
श्रीकाः=हरितको नीलवर्णीं दूर्वादिवनस्पतिः तेन राराज्यमाना=शोशुभ्यमाना  
श्रीः=छटा येपा ते हरितकराराज्यमानश्रीकाः अत एव अतीवातीव=अत्यन्त  
भृशम् उपशोभमाना उपशोभमानाः, तिष्ठन्ति=सन्ति, शेष सुगमम् ॥३॥

एक समय मध्यरात्रिमें कुटुम्बजागरणा करते हुए उस  
सोमिल ब्राह्मणके हृदयमें इस प्रकारका आयात्मिक यावत् मनमें  
सकल उत्पन्न हुआ कि मैं वाराणसी नगरीका रहेनेवाला अत्यन्त  
उच्च कुलमें पैदा हुआ ब्राह्मण हूँ । मैंने व्रत ग्रहण किये वेद पढ़े,  
विवाह किया, पुत्रवान बना, समृद्धियोंको एकत्रित किया, पशुवध  
किया, यज्ञ किया, दक्षिणा दी, अतिथिकी पूजा की, अग्निमें हवन  
किया शूप-यजीय स्तम्भ रोपा, इन सभी कार्योंको किया । अब मुझे  
उचित है कि मैं रात बीतने पर प्रातःकालमें वाराणसी नगरीके बाहर  
बहुतसे आमके बगीचे लगाऊँ, एवं मातुलिङ्ग=मिजोरा, बेल, कपित्थ,  
( कथिठ ), चित्रा=डमली और फूलोका बगीचा लगाऊँ, इस प्रकार  
विचार करता है ।

रात बीतने पर सूर्योदय होते ही उसने वाराणसी नगरीके  
बाहर आमके बगीचेसे लेकर फूलके बगीचा तक लगवाया । और  
वे बगीचे क्रमसे सरक्षित हो सगोपित हो पूर्णरूपसे बगीचे हो  
गये । हरे और हरी भरी कानिवाले, तथा परसने वाले नीले मेघ

झोली चरुयासना न करवाथी अने मिथ्यात्व पर्यायना वधवाथी तथा सम्यग्त्व पर्या-  
यना धटवाथी मिथ्यात्नी यथ गये।

એક વખત મધ્યરાત્રિમાં કુટુંબ જાગરણ કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના  
હૃદયમાં આવા પ્રકારના આધ્યાત્મિક એટલે મનમાં મહત્તર ઉત્પન્ન થયા કે—હું વારાણસી  
નગરીમાં રહેવાવાહો બહુ જિજ્ઞાસુ થયેલો બ્રાહ્મણ છું, મેં મન પ્રકરણ કર્યા  
છે, વે ભણેલો છું, લગ્ન કરી પુત્રવાન બન્યો, સમૃદ્ધિ એકઠી કરી, પશુવધ કર્યા યજ્ઞ  
કર્યા, દક્ષિણા આપી, અતિથીની પૂજા કરી, અગ્નિમાં હવન કર્યા, શૂપ=યજીય કાષ્ટને  
ખોદ્યુ, આ બધા કાર્યો કર્યા હવે મારે મારે યોગ્ય છે કે હું રાત્રિ પુરી થઇ બન્યારે  
સવાર પડે ત્યારે વારાણસી નગરીની બહાર ખૂબ આમાના વૃક્ષોના બગીચો બનાવુ  
તથા માતુલિંગ=મિજોરા, વેલ, કપિત્થ, ચિત્ર=આમલી તથા ફૂલોની વાડી બનાવુ આ  
પ્રકારે વિચાર કરે છે

રાત્રિ પીતી સૂર્યો યથા જ તેણે વારાણસી નગરીના બહાર આમાના બગીચાથી  
માડીને કુલના વાડી સુધી બધું બનાવ્યું અને તે બગીચા હળવે હળવે અરક્ષિત અને

मूलम्—तएणं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अणया कयाड  
 पुच्चरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणस्स अय-  
 मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था—एव खलु अह वाणा  
 रसीए णयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चतमाहणकुलप्पसूए,  
 तए ण मए वयाड चिण्णाइ जाव जूवा णिम्बित्ता, तए ण  
 मए वाणारसीए नयरीए वहिया वहवे अवारामा जाव पुप्फा  
 रामा य रोवाविया, त सेय खलु मम इयाणि कल्ल जाव  
 जलते सुवहु लोहकडाहकडुच्छुय तविय तावसभंड घडावित्ता  
 विउलं असण पाण खाडम साडम मित्तनाइ० आमत्तित्ता त  
 मित्तनाइणियग० विउलेणं असण० जाव समाणित्ता तस्सेव  
 मित्त जाव जेट्ठपुत्तं कुडुवे ठावेत्ता त मित्तनाइ जाव आपुच्छित्ता  
 सुवहु लोहकडाहकडुच्छुय तविय तावसभंडग गहाय जे इमे  
 गगाकूला वाणपत्था तावसा भवति—त जहा होत्तिया पोत्तिया  
 कोत्तिया जन्नई सट्ठई थालई हुवउट्ठा दत्तुक्खलियां उम्मज्जगां  
 समज्जगा निमज्जगा सपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला सख  
 धमा कलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उहडा दिसापेम्बिणो  
 वक्खवासिणो विलवासिणो जलवासिणो रूक्खमूलिया अचुभम्बिणो  
 वायुभम्बिणो सेवालभम्बिणो मूलाहारा कदाहारा तयाहारा  
 पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा वीयाहारा परिसडियकदमूलतय-  
 पत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकडिणगायभूया आयावणाहि पच-

वृन्दोके समान नीलिमा युक्त, एवं पत्रित, पुष्पित, और फलित होकर  
 वे हरे मरे होनेके कारण अत्यन्त जोभायमान देखने लगे ॥ ३ ॥

स गोपित यथं पूर्ण इयमा अगीया यथं गया वीवा, वीवीछम कान्तिवागा, पाणीथी  
 अरेला मेधवृन्दा (वाहणा) होय तेवा धनीभूत गवाणा, पत्रो तथा पुष्पोवाणा अने  
 इणोवाणा होवाथी तथा हरियाणा होवाथी अलु गोभायमान देखावा लाया

गितावेहि डगालसोल्लिय कंदुसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा  
विहरति । तत्थ ण जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसि अंतिए  
दिसापोक्खियत्ताए पव्वडत्ताए । पव्वडए वि य ण समाणे डम  
एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हस्सामि कप्पड मे जावजीवाए  
छट्ट-छट्टेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्रवालेणं तवोकम्मेण उट्ठ  
वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आया-  
वेमाणस्स विहरित्तएत्ति कट्टु एवं सपेहेड, सपेहित्ता कल्ल जाव  
जलते सुवहु लोह जाव दिसापोक्खियत्तावसत्ताए पव्वडए ।  
पव्वडए वि य णं समाणे डम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता  
पढमं छट्टक्खमण उवसपज्जित्ताणं विहरड ॥ ४ ॥

श्रया-तत गल्ल तस्य मोमिम्भ ब्राह्मणस्याऽन्यथा क्वाचित् पूर्व-  
रागादरात्रमात्रमये कृदुम्भजागरिता जाग्रतोऽयमतद्रूप आयात्मिक यावत्  
समुत्पन्न-एव गल्लवह वाराणस्या नगर्या मोमिओ नाम ब्राह्मणः अयन्त-  
ब्राह्मणकुम्भमत, तत गल्ल मया प्रतानि चीर्णानि यावद् त्रया निक्षिप्ता ।  
तत 'वहु मया वाराणस्या नगर्या वर्द्धित्वा आभारामा यावत् पुष्पारामाश्च  
रोपितास्तच्छ्रेय ल्लु ममेतानीं मत्प्रे यावज्जायति मुखं लाहकटाहकुन्दुरु  
ताम्रीय तापमण्डकं प्रयित्वा त्रिपुत्ररत्न पानं त्वाय स्वाय भित्ति जातिः  
आमन्त्र्य तं । मत्र-ज्ञाति निजः त्रिपुत्रेण अशनः यावत् सम्मान्य तस्यैव  
मित्रः यावत् ज्येष्ठपुत्र कुटुम्बे स्थापयित्वा तं मित्रानि यावत् आपृच्छ्य मुखं  
लाहकटाहकुन्दुरु ताम्रीय तापमण्डकं प्रयित्वा तं द्यौ गद्गारं वा वानप-  
स्थास्थापना भवन्ति तत्रथा-हासिका, हासिका, यज्ञयाजिन, श्राद्धकिन,  
स्थालकिन = तृतीयाण्डा, दण्डिकाश्रमणा, दन्ताचक्रिका, उन्मत्तिका, सम्म-  
जिका, निमज्जिका, यप्रलालिका, दक्षिणकला, उत्तरकला, शङ्ख मा, कण्ट मा,  
मृगलुप्तिका, हस्तितापमा, उदण्डा, दिशाप्रोविण, उल्लुकायम, विल्लुगामिन,  
जलवासिन, वृक्षमूलिका, अम्बुभणिण, राशुभणिण, शेवालमणिग, मूला-  
हारा, सन्दाहारा, त्रमाहारा, पत्राहारा, पुष्पाहारा, फलाहारा, बीजाहारा,  
परिशदितसन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलाहारा, जलाभिषेकस्नानमात्रभृता, आताप-



નાભિઃ પશ્ચામિતાપૈઃ અદ્વારગૌલ્યક, કન્દુશૌલ્યકમિત્ર આત્માન કુર્વાણા વિહ  
રન્તિ । તત્ર खलु ये ते दिशामोक्षकास्तापसास्तेषामन्तिके दिशामोक्षवत्या  
प्रव्रजितुम् । प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् इममेतद्रूपमभिग्रहमभिग्रहीष्यामि-इत्यपे  
मे यावज्जीव पठ-पठेनानिक्षिप्तेन दिक्चक्रागलेन तप-कर्मणा ऊर्ध्वं गतुं प्रशुभ  
२ मूराभिमुखस्याऽऽतापनभूम्यामातापयतो विहर्तुम् ।

इति कृत्वा एव सप्रसूते, संप्रेक्ष्य कल्पे यावज्ज्वलति सुबहु लोह०  
यावत् दिशामोक्षरुतापसतया प्रव्रजितः । प्रव्रजितोऽपि च खलु सन् इममेत  
द्रूपमभिग्रहमभिग्रह्य प्रथम पठक्षपणमुपसपद्य खलु विहरति ॥ ४ ॥

टीका-‘तएण तस्स’ इत्यादि । लौહकटाहरुदुल्लુક લૌહ=લોહનિર્મિતમ્  
કટાહો=ભાજનવિશેષઃ, રુદુલ્લુકો=દરી=પરિવેષણાદ્યર્થભાજનવિશેષ’, કટાહરુદુ  
લ્લુકયો. સમાહાર., કટાહરુદુલ્લુક લૌહ ચ તત્ इति कर्मधारये कृते तथा,  
गङ्गाकुलाः=गङ्गाकुलस्था. गङ्गातीरवासिन इति यावत् ‘मश्वाः क्रोशन्ति’ इत्य

‘તણ તસ્સ’ ઇત્યાદિ—

उसके बाद किसी दूसरे समय कूटुम्बजागरणा करते हुए  
ऊस सोमिल ब्राह्मणके हृदयमे इस प्रकार आध्यात्मिक-आत्म सम्बन्धी  
विचार उत्पन्न हुए कि मैने व्रत आदि किये यावत् स्तम्भ गाढे और  
मैं वाराणसी नगरीका अत्यन्त उच्च कुल प्रसूत ब्राह्मण हूँ, मैने वारा-  
णसी नगरीके बाहर बहुतसे आमके बगीचेसे लेकर फूल तकके  
बगीचे लगवाये अथ मुझे उचित है कि रात बीतनेके बाद प्रातःकाल  
होते ही बहुतसी लोहेकी कड़ाहियाँ तथा कलछ एव तापसोंके लिये  
ताँबेके बर्तन बनवाकर विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्य बनवाकर  
अपने मित्र ज्ञाति आदियों को आमन्त्रित करू ।

‘તણ તસ્સ’ ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી કે. ધીરે વખતે કુટુંબ જાગરણ કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના  
હૃદયમા આ પ્રકારનો આધ્યાત્મિક-આત્મ વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે મેં વ્રત આદિ કર્યા,  
ચન્સ્ત બ જોડયો અને હું વારાણસી નગરીના ગણુ ઊંચા કુળમા જ મેલો બ્રાહ્મણ છું  
મેં વારાણસી નગરીની ગહાર ઘણા આબાના બગીચાથી માડીને પુલવાડી સહિત  
બનાવ્યા છે હવે મારે માટે યોગ્ય છે કે રાત વીતી ગયા પછી પ્રાત કાલ થતાજ ઘણીજ  
લોહાની કડાઈઓ, કડછીઓ આદિ તથા તાપસોને માટે તાબાના વાસણ બનાવીને ખૂણ  
ખાવાપીવાના ખાવ-સ્વાદ્ય થાયે બનાવવાની મારા મિત્ર અને જ્ઞાતિબધુઓ આદિને  
આમત્રણ આપું

त्रेवात्र गङ्गाकुलपदस्य तत्स्ये लक्षणा गो या । यद्वा-गङ्गाकुल वासत्वेनाऽस्या-  
ऽस्तीति 'अर्श आदित्वादचप्रत्यये निष्पन्नोऽय' तेन रूल्शब्दस्य नपु सकृत्वेऽपि  
नेह पुस्त्यानुपपत्तिः । होत्रिकाः=अग्निहोत्रिकाः, पोत्रिकाः=वस्त्रधारिणी वान  
प्रस्थाः, कौत्रिकाः=भूमिशायिनी वानप्रस्थाः, यज्ञयाजिनः=याज्ञिका, श्राद्धग्नि-  
श्राद्धाः, स्थालग्निः=भोजनपात्रधारिणः, हुण्डिकाश्रमणाः=वानप्रस्थतापसविशेषा-  
दन्तोदूखलिकाः=दशैश्वर्ययित्वा भोजनशीलाः, उन्मज्जकाः=उन्मज्जनमात्रेण ये  
स्नान्ति-उपरिष्ठादेव स्नानं कुर्वन्ति ते तथा, सम्मज्जकाः=उन्मज्जनस्यैवासकृत्

अनन्तर वह ब्राह्मण उन वर्तनोको वनवाकर विपुल अशन  
पान खाद्य स्वाद्य तैयार कराकर अपने मित्र ज्ञाति वन्धुओंको आम  
त्रित कर और उन्हें जिमाकर तथा उन्हें सम्मानित कर और उन्हीं  
मित्र-ज्ञाति-स्वजन वन्धुओंके सामने अपने ज्येष्ठपुत्रको कुटुम्बका  
भार देकर, अपने उन सभी मित्र-ज्ञाति-वन्धुओं से पूजकर मैं  
बहुतसी लोहेकी कड़ाहियों, कलछ और ताम्बेके बने हुए पात्रोंको  
लेकर जो गंगा तीरवामी वानप्रस्थ तापस हैं जैसे-होत्रिक=अग्निहोत्री,  
पोत्रिक=वस्त्रधारी वानप्रस्थ, कौत्रिक=भूमिशायी वानप्रस्थ, यज्ञयाजी=यज्ञ  
करनेवाले, श्राद्धकी=श्राद्ध करनेवाले वानप्रस्थ, स्थालग्नि=पात्र धारण  
करनेवाले, हुण्डिकाश्रमण=वानप्रस्थ तापस विशेष, दन्तोदूखलिक=दातसे  
केवल चबाकर खानेवाले, उन्मज्जक=उन्मज्जन मात्रसे स्नान करनेवाले,  
अर्थात् पानी डालकर स्नान करनेवाले, सम्मज्जक=बार बार हाथसे

पछी ते ब्राह्मणे ते प्रभाणे वामणे जनावराची भूषण भानपान भात्र-स्वाद्य  
तैयार करावी पोताना मित्र अने ज्ञातिज धुव्जोने आम नष्ट आभ्यु ने जभाडया तथा  
तेमनु सन्मान करी ते मित्र-ज्ञाति-स्वजन वधुव्जोनी सामे पोताना मोटा पुत्रने  
मोढाची कुटुम्बोने भार तेना उपर नाणी, पोताना ते सधणा मित्र-ज्ञाति वधुव्जोने  
पूछी हूं धळी दोढाना कडधळो, कडधळो तथा ताणाना अनेवेला वामणे लधने जे  
गंगा तीरे वननारा वानप्रस्थ तापस ते जेवाटे-होत्रिक=अग्निहोत्री, पोत्रिक= वस्त्र  
धारी वानप्रस्थ, कौत्रिक=भूमिशायी वानप्रस्थ, यज्ञयाजी=यज्ञ करवावाणा, श्राद्धकी=  
श्राद्ध उ वावाणा वानप्रस्थ स्थालकी=पात्र धारण करवावाणा, हुण्डिका=श्रमण वान  
प्रस्थ तापस विशेष दन्तोदूखलिक=दातवटे डेवण आवीने भावावाणा, उन्मज्जक=  
उन्मज्जन मात्राची स्नान क वावाणा अर्थात् पाणी नाणीने स्नान करवावाणा, सम्मज्जक=  
बारबार हाथेची पाणीने छेछाणीने नहावावाणा, निमज्जक=पाणीभा डूणकी भारी नाह

करणेन ये स्नान्तिहस्तैः पुनः पुनर्जल मृद्वीत्या स्नानं कुर्वन्ति ते तथा, नम  
ज्जका'='स्नानार्थं निमग्ना एव जले क्षणमात्र तिष्ठति ते तथा, सप्रक्षालनाः=  
ये मात्र मृत्तिमाघर्षणपूर्वक जलेन प्रक्षालयन्ति ते तथा, दक्षिणकृन्वाः=य गङ्गाया  
दक्षिणतटवासिनस्ते तथा, उत्तरकृन्वाः=य गङ्गाया उत्तरतटवासिनस्ते तथा,  
शङ्खमाः=शङ्ख भ्रमात्या=नादयित्वा ये शुद्धते ते तथा, मूत्रमा=मूत्रे=तटे  
स्थित्वा शङ्ख कृत्वा ये शुद्धते ते मूत्रमा, मृगलुब्धमाः=मृग मृत्वा तेनैव  
ये अनेकदिवस भोजनतो यापयन्ति त तथा, हस्तितापसाः=हस्तिन मारयित्वा  
तेनैव चिरमाल भोजनतो यापयन्ति ते तथा, उदण्डा=ऊर्ध्वतटण्डा एव ये  
सचरन्ति त तथा, दिशामोक्षिण=उत्तरेण दिशामोक्ष्य ये फलपुष्पादिकं समु  
च्चिन्वन्ति ते तथा, वल्गुवासस=वृक्षत्वग्रस्त्रधारिण, त्रिलवासीन=भूमिच्छिद्र  
वासिनः, जलवासीन=जले निपण्णा एव ये तिष्ठन्ति ते तथा, वृक्षमूलका=  
तस्तले य निवसन्ति त तथा, अम्बुभविण=जलाधारा, वायुभविण=पाना-

पानीको उछालकर नहानेवाले, निमज्जक=पानीमें डूबकर नहानेवाले,  
सप्रक्षालन=मिट्टीसे शरीरको मलकर नहानेवाले, दक्षिणकृन्व=गङ्गाके  
दक्षिण तटपर रहनेवाले, उत्तरकृन्व=गङ्गाके उत्तर तटपर रहनेवाले, और  
शङ्ख मा=शंख बजाकर भोजन करनेवाले, कृन्व मा=तटपर स्थित होकर  
आवाज करते हुए भोजन करनेवाले मृगलुब्ध=मृगको मारकर  
उसीके मांससे जीवन चिंतानेवाले, हस्तितापस=हाथीको मारकर उसके  
मांससे जीवन चिंतानेवाले, उदण्ड=उदण्डको ऊँचा उठाकर चलनेवाले,  
दिशामोक्षी=दिशाको जलसे सींचकर उसपर पुष्प फल आदिको चून  
कर रहनेवाले, वल्गुवासस=वृक्षकी छालको धारण करनेवाले, त्रिलवासी=  
भूमिके नीचेकी खादमें रहनेवाले, जलवासी=जलमें ही रहनेवाले, वृक्ष-

पावाण, सप्रक्षालन=नादीथी गरीरने धोएगीने नहावावाण, दक्षिणकृन्व=गंगा नदीना  
दक्षिण किनारे रहेवावाण, उत्तरकृन्व=गंगा नदीने उत्तर किनारे रहेवावाण तथा  
शङ्ख मा=शंख बजाने भोजन करावावाण मूत्र मा=किना । उपर जैसी रहीने  
अपवाण करता भोजन करावावाण, मृगलुब्ध=मृगने मारीने तेना मांसथी खवन  
चीताउवावाण, हस्तितापस=हाथीने मारीने तेना मांसथी खवन चीताउनारा, उदण्ड=  
उठने जैसा उपाडी खालना ।, दिशामोक्षी=दिशाओने पछीथी मार्जन करीने (पाछी  
छाटीने) तेना उप-पुष्पफल चीछीने राखनारा, वल्गुवासस=वृक्षनी छालने धा धु  
करवावाण, त्रिलवासी=भूमिनी नीचेनी शुद्धां रहनारा, जलवासी=जलभाण रहनारा

हाराः, शैवालभक्षिणः=जठोपरिस्थितहरितवनस्पतिविशेषभोजिनः, मृदाहाराः=  
मूलरुभक्षिणः, रुन्दाहाराः=प्ररणादिरुन्दभक्षिणः, त्वगाहारः=निम्बादित्वग्भक्षिणः,  
पत्राहाराः=तिलवादिपत्रभक्षिण , पुष्पाहाराः=कुन्दगोमाञ्जनादिपुष्पभक्षिणः, फल-  
हारा =कूलीफलवादिभोजिनः राजाहारा =कूमाण्डादिमीनभोजिन , परिगट्टि-  
तरुन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलाहारा =त्रिनष्टरुन्दमूलत्वक्पत्रपुष्पफलभोजिनः, जराभि  
षेककठिनगात्रधृता =स्नात्वा २ जलाभिषेकरुण्डोरगरीरा आतापनाभि पश्चाद्भि  
तापैश्च अङ्गारगोलेय=अङ्गारे=वह्नौ श्ले मास निषज्य पक्व, रुन्दुगोलेय=रुन्दु=  
तण्डुलादि भर्जनपात्रमात्र गूल च ताभ्या तत्र वा घृतादिना वह्नौ पक्व रुन्दु-  
गोलेयम् इव=तद्वद् आत्मानं कुर्वाणा विहरन्ति=अवतिष्ठन्ति । 'तत्थण जे'

मूलर=वृक्षके मूलमें रहनेवाले, अग्निमयी=जल मात्रका आहार करने-  
वाले, वायुमयी=वायु मात्रसे जीवित रहनेवाले, शेवालभाजी=जलमें  
उत्पन्न शेवाल=सेमारको-खानेवाले, मृदाग्र=मूल खानेवाले, रन्दाग्र=  
सूरन आदि कन्दका आहार करनेवाले, त्वगाहार=नीम आदिकी त्वचा  
खानेवाले, पत्राहार=शीला आदिके पत्तेका आहार करनेवाले, पुष्पाहार=  
कुन्द सोडजन, गुलाब आदि पुष्पका आहार करनेवाले, फलाहार=केला  
आदि फल खानेवाले, बीजाहार=कुम्हडा आदिका बीज खानेवाले, मडे  
हुण कन्द मूल त्वचा, पत्ते फल और फल खानेवाले, जलके अमि-  
पेकसे कठिन शरीरवाले, मृर्षकी अतापना और पञ्चाग्नितापसे अगार  
शौल्य=(अगरेमें शूलपर रखकर पकाये हुण मांस) एव कन्दुशौल्य=  
(चावल आदि भुजनेका पान्न=कन्दु, उसमें घृत डालकर शूलपर पकाये

દ્રવમૂલક=વૃક્ષના મૂળમા રહેનાવાળા, અમ્બુમવી=જલમાત્રનો જ આહાર લેનારા, ત્રાયુ  
 મવી=ત્રાયુ માત્રથી જ જીવન જીવનારા, શેવાલમોજી=જલના ઉપરના ભાગમા રહેવ  
 લીની વનસ્પતિ (નેનાળ) ખવાવાળા, મૂલાહારા=મૂળ ખાવાવાળા, કન્દાહારા=સૂચ્ય  
 વગેરે કદના આહાર કરનારા, ત્વગાદારા=ત્વીળા આદિના છાલ ખાવાવાળા, પંચાહારા=  
 બિંદીપત્ર આદિ પંચોના આહાર કરવાવાળા, ફલ્લાહારા=ફેળા વગેરે ફળ ખાવાવાળા,  
 પુષ્પાહારા=પુષ્પ-ફલ સંગના શુભાળ આદિ કુયોનેા આહાર કરવાવાળા, મીઝાહારા=  
 જેણું વગેરેના બી ખાવાવાળા, સડી ગયેલા કદમૂળ, છાલ, પાન, ફૂલ તથા રૂળ  
 ખાવાવાળા, જલના અભિષેકથી કઠલ શરીરવાળા, સૂર્યની આતાપના અને પચાગ્નિના  
 તાપથી અગાર-સૌંદર્ય=દેવતામા શૂળ ઉપર રાખીને પકાવેલા માંસ અને કદુસૌંદર્ય-  
 ચોખા વગેરે તાપવાના પાત્ર=કદુ તેમા ઘી નાખીને શૂલ પર પકાવેલા માંસની પેઠે

इत्यादि-अनिक्षिप्तेन=अविच्छिन्नेन दिक्चक्रचालेन=तन्नामकेन तथाहि-एकत्र पारणके पूर्वस्या दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुङ्क्ते, द्वितीये पारणे दक्षिणस्या दिशि स्थितानि फलादीनि चाहृत्याश्नातीत्येव दिक्चक्रचालेन दिङ् मण्डलेन यत्र तपःकर्मणि पारणकरण भवति तत् तपःकर्म 'दिक्चक्रवाल' कथ्यते तेन तपःकर्मणेति ॥ ४ ॥

हुए मास) के समान अपने शरीरको ऋष्ट देते हुए विचरते हैं। उनमें जो दिशाप्रोक्षक हैं उनमें प्रव्रजित होनेकी इच्छा रखता हूँ, और प्रव्रजित होकर भी इस प्रकारका अभिग्रह (प्रतिज्ञा) लूंगा कि याव जिज्व अन्तर रहित पष्ट पष्ट (बेला-बेलारूप) दिक्चक्रवाल तपस्या करता हुआ सूर्यके अभिमुख भुजा उठाकर आतापनभूमिमें आनापना लेता रहूंगा।

इस प्रकार मनमें सोचकर विचार करता है, और विचार करके सूर्योदय होनेपर बहुतसी लोहेकी कड़ाहियाँ यावत लेकर दिशा-प्रोक्षक तापसके पास आया ओर दिशा-प्रोक्षक तापस हो गया। तापस होकर वह सोमिल पूर्वोक्त अभिग्रह ग्रहण करके पहला पष्ट-क्षपण तप स्वीकार कर विचरने लगा।

यहाँ 'दिक्चक्रवाल' शब्द आया है, इसका अभिप्राय है-तपस्वी तपस्याकी पारणाके लिये अपनी तपोभूमिकी चारों दिशाओंमें फलको इकट्ठा करके रखे। बादमें तपस्याकी पहली पारणामें पूर्व-

पोताना शरीरने ऋष्ट देना के विचारे छ तमा के दिशाप्रोक्षक छ तेओनी पासे प्रम-  
लत गनवानी छच्छा राधु छु तथा प्रमलत यधन पधु आ प्रकारना अभिग्रह  
(प्रतिज्ञा) यधन के-क्या सुधी छु तमा सुधी अन्तर रहित छठ-छठ (बेला-  
बेलारूप) दिक्चक्रवाल तपस्या करतो सूर्यनी नाये छाय छिया राणीने आतापन  
भूमिगा आतापना लेतो रहीश

आम विचार करे ॥ विचार करीने सूर्योदय यता धली लोढानी कडाछोओ  
कडछीओ, तामाना तपस पात्रो आदि लहने दिश प्रोक्षक तापमनी पासे आव्यो अने  
दिशाप्रोक्षक तापस य' गये। तापस यधने पधु ते सोमिल पूर्वोक्त अभिग्रह पारणार  
लहने पछेला पष्टक्षपण स्वीकार करीने विचरवा लाग्यो

अने-“दिक्-चक्रवाल” शब्द आव्यो छ तेनो अभिप्राय ओयो छ के तपस्वी  
तपस्यानां पारणा भाटे पोतानी तपोभूमिनी आरे दिशाभा इल लेगा करीने राये।

मूलम्—तएण से सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठकखमण-  
 पारणसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता वागलवत्थ  
 नियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 किट्ठिणसकाइय गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसि पुक्खेइ,  
 पुक्खित्ता—‘पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थिय  
 अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसि, जाणि य तत्थ कदाणि य  
 मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य  
 वीयाणि य हरियाणि ताणि अणुजायउ’—त्ति कट्ट पुरत्थिम  
 दिस पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कदाणि य जाव हरियाणि  
 ण ताडं गिण्हइ, गिण्हित्ता किट्ठिणसकाइय भरेइ, भरित्ता  
 दब्भे य कुसे य पत्तामोड च समिहाकट्ठाणि य गिण्हइ, गि-  
 ण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 किट्ठिणसंकाइयग ठवेइ, ठवित्ता वेदि वड्डुइ वड्डित्ता उवलेवण-  
 समज्जण करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गगा महानडं  
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गग महानइ ओगाहइ, ओ-  
 गाहित्ता जलमज्जण करेइ, करित्ता जलकिडुं करेइ, करित्ता  
 जलामिसेय करेइ, करित्ता आयते चोक्खे परमसुडभूए देव-

दिशामे स्थित फलसे पारणा करे । दूसरा पारणा आनेपर दक्षिण  
 दिशामें स्थित फलसे पारणा करे । इसी प्रकार अन्य पारणा आनेपर  
 पश्चिम उत्तर दिशाओंमें स्थित फलका आहार करे । इस प्रकारकी  
 पारणा वाली तपस्याको ‘दिक्चक्रवाल’ कहते हैं ॥ ४ ॥

पछी तपस्याना पडेला पारणाभा पूर्व दिशाये राखेला इण्ठी पारणु करे भीणु पा पु  
 करणानु आवे त्यारे दक्षिण दिशाभा राखेला इण्ठी पा पु करे आपी रीते भीण  
 पारणा आवे त्यारे पश्चिम-उत्तर दिशाभा राखेला इण्ठो आहार करे आ प्रकारना  
 पारणावाणी तप्याने ‘दिक् चक्रवाल’ कहे छे (४)

पिउकयकज्जे दव्वभकलसहत्थगए गंगाओ महानईओ पच्चुत्तरइ,  
 पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 दव्वभेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदि रएइ, रइत्ता सरयं  
 करेइ, करित्ता अरणिं करेइ, करित्ता सरएण अरणिं महेइ,  
 महित्ता अग्निं पाडेइ, पाडित्ता अग्निं संधुक्खेइ, समिहाकट्ठाइ  
 पम्बिखवइ, पम्बिखवित्ता अग्निं उज्जालेइ, उज्जालित्ता अग्निस्स  
 दाहिणे पासे सत्तगाइ समादहे । त जहा—“ सकत्थ वक्कलं  
 ठाणं, सिज्ज भडं कमडल्लु । दड दारु तहप्पाण, अह ताइ  
 समादहे । ” महुणा य घएण य तदूलेहि य अग्निं हुणइ,  
 चरु साहेइ, साहित्ता वलिवइस्सदेव करेइ, करित्ता अतिहिप्पय  
 करेइ, करित्ता तओ पच्छा अप्पणा आहार आहारेइ ॥५॥

छाया—तत खलु सोमिलो ब्राह्मण ऋषिः प्रथमपट्टक्षपणपारणे आता-  
 पनभूम्या प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य बल्लवस्त्रनिवसितं यत्रैव स्वक उटजस्त  
 त्रैवोपागच्छति, उपागत्य त्रिदिणसाङ्कायिकं गृह्णाति, गृहीत्वा पौरस्त्या विश-  
 प्रोक्षति, प्रोक्ष्य “ पौरस्त्याया दिशः सोमो महाराज प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु  
 सोमिलब्राह्मणर्षिम्, यानि च ता रुन्दानि च मूलानि च त्वचश्च पत्राणि च  
 पुष्पाणि च फलानि च बीजानि च हरितानि च तानि अनुजानातु, ” इति  
 कृत्वा पौरस्त्या दिशः प्रसरति, प्रसृत्य यानि च तान् रुन्दानि च यावत्  
 हरितानि च तानि गृह्णाति किंदिणसाङ्कायिकं भरति, भृत्वा दर्भाश्च कुशाश्च  
 पत्रामौढ च समित्काष्ठानि च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वक उटजस्तत्रैवोपा-  
 गच्छति, उपागत्य त्रिदिणसाङ्कायिकं स्थापयति, स्थापयित्वा वेदीं वर्धयति, वर्ध-  
 यित्वा उपलेपनसम्पार्जनं करोति, कृत्वा दर्भकञ्जशङ्खगतो यत्रैव गङ्गा महानदीमव-  
 गाहते, अवगाह्य जलमज्जनं करोति, कृत्वा जलक्रीडां करोति, कृत्वा जला-  
 भिषेकं करोति, कृत्वा आचान्तं स्वच्छं परमशुचिभूतं देवपितृकृतकार्यं, दर्भ-  
 कञ्जशङ्खगतो गङ्गातो महानदीतः प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यत्रैव स्वक उट-  
 जस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च वालुकया च वेदिं रचयति, रच-

यित्वा शररु करोति, कृत्वा अरणिं करोति, कृत्वा शरकेणारणिं मथ्नाति मथित्वा अग्निं पातयति, पातयित्वा अग्निं सधुक्षते, सधुक्ष्य समित्काष्ठानि प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य अग्निमुज्ज्वालयति, उज्ज्वालय, अग्नेर्दक्षिणे पार्श्वे सप्ताङ्गानि समादधाति, तद्यथा “सकृत् १ वल्कल २ स्थान ३ शय्याभाण्ड ४ कमण्डलुम् ५ ॥, दारुदण्ड ६ तथाऽऽत्मानम् ७ अथ तानि समादधीत ॥१॥”

ततो मधुना च घृतेन च तण्डुलैश्चाग्निं जुहोति, चरु साधयति, साधयित्वा बलिष्वैवदेव करोति, कृत्वाऽतिथिपूजा करोति, कृत्वा ततः पश्चात् भात्मना आन्तरमाहारयति ॥ ५ ॥

टीका—‘तएण से सोमिले’ इत्यादि । ‘वागलवत्थ नियत्ये’ इति, वालकलवत्थनिवसितः=वलकल=रुक्षत्वक् तस्येद वालकल तच्च वत्त वालकलवत्त, तत् निवसित=परिहित येन स तथा परिहितवालकलवत्त इति तदर्थ । आर्पत्वात् निवसितेति निष्ठान्तस्य पूर्वप्रयोगाभावाः । उदजः=उदः=तृणपर्णादिस्त-

‘तएण से सोमिले’ इत्यादि ।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि पहला पष्ठ-क्षपण पारणेके दिन आतापन भूमि पर आता है । वहाँ आकर वह वल्कल-वस्त्रधारी तापस जहाँ उसकी कुटी थी वहाँ आया । और आकर किडिणसकायिक (कावड) लेता है । तथा पूर्व दिशाको जलसे प्रोक्षण (सिंचन) करता है और कहता है—‘हे पूर्व दिशाके अधिपति सोम देव’ मैं सोमिल ब्राह्मण ऋषि परलोक साधन मार्गमें चलनेके लिये प्रस्थित हूँ, मेरी रक्षा करो, तथा वहाँ जो कुछ कन्द, मूल, त्वचा, पत्र, पुष्प, फल, बीज और हरित वनस्पति हैं उन्हें लेनेकी आज्ञा दो’ ऐसा कह कर पूर्व दिशामें जाता है । वहाँ जाकर जो कुछ

‘तएण से सोमिले’ इत्यादि

यार पछी ते सोमिल ब्राह्मण ऋषि पहिला पष्ठक्षपणना पा एवा आवाता आतापन भूमिपर आवे छे त्या आवीने ते वल्कलवत्त धारण करी रहैव तापस न्या पोतनी पष्ठकुटी छती त्या आव्यो त्या आवीने पोतानी कावड छीधी अन ते लघने पूर्व दिशामा जलथी सिंचन करे छे अने कहे छे—‘हे पूर्व दिशामा अधिपति सोम भक्षाराज ! परलोकसाधन मार्गमा जवा भाटे प्रस्थित सोमिल ब्राह्मण ऋषिनी रक्षा करे अने त्या जे काष्ठ कंद, मूल, छाल, पादरा पुष्प, फल, बी तथा बीजोतरी पशु आदि छे ते लेवानी आज्ञा आयो’ जेभ कहीने पूर्व दिशामा जा छे त्या जघने



સ્માજ્જાત ઉત્તજઃ=તાપસાના પર્ણશાલા, કિઢિળમાકાયિક=કિઢિળ=વશમયસ્તા  
 પસમાજનનિશેષઃ, સાઢ્ઢાયિક=મારોઢ્ઢનયન્ત્ર કિઢિળસાઢ્ઢાયિક=કાવટ 'કાવડ'  
 ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્, પ્રસ્થાને=પરલોકસાધનમાર્ગપ્રયાણે, પ્રસ્થિત=પ્રયાતમ્ ફલાઘાદ  
 રણાર્થે પ્રવૃત્તિમિતિ યાવત્, પત્રાઽઽમોટ=તરુશાખામોટિતપત્રસમૂહ, વેદિ=અગ્નિ  
 હોત્રપૂજાદિસ્થાન ઝર્ધયતિ=પ્રમાર્જયતિ, ઉપલેપનસમ્માર્જનમ્=મૃત્તિકાગોમયાદિના  
 ભૂમિસસ્ફાર ઉપલેપનમ્ સમ્માર્જન=ઠણાદિનિર્મિતસમ્માર્જન્યા ભૂમિત' પિપીલિ  
 નાદિફાના લઘુકાય-જીરાનામપસારણમ્, દેવપિતૃકૃતકાર્યં, દેવાશ્ચ પિતરશ્ચ  
 દેવપિતરસ્તેષા કૃત=સમ્પાદિત કાર્યં પૂજનજલાઞ્જલિદાનમમૃતિકૃત્ય યેન સ તથા,  
 દર્મકલશઃસ્તગતઃ=દર્ભાઃ=કુશ. કઠશઃ=પટશ્ચ હસ્તે ગતા. પ્રાપ્તા. યસ્ય સ

વહાં કન્દ મ્ત્રલ આદિ થે ઉનકા ગ્રહણ કરતા હૈં ઓર અપના કાવડ  
 ખરતા હૈં । યાદ હસકે દર્મ, કુશ પત્રામોટ તોડે જુપ પત્તે ઓર  
 સમિત્કાઠ ( હવનકે લિયે છોટી ૨ લકડિયા ) કો લેકર જેહાં અપની  
 કુટી થી વહા આયા ઓર અપની કાવડ રક્ષી । કાવડ રંગ્વકર વેદી  
 કો વઢાયા અર્થાત્ વેદી બનાવેકા સ્થાન નિશ્ચય કિયા । યાદ ઉપલે  
 પન ઓર પિપીલિકા ( કીડી મકોડી ) આદિ લઘુકાય જીવોકી રક્ષાકે  
 લિયે સમાર્જન કરને લગા । અનન્તર દર્મ ઓર કલશકો હાથમે લેકર  
 ગઢ્ઢાકે તટપર આયા ઓર ગઢ્ઢામે પ્રવેશ કર સ્નાન કરને લગા ।  
 ઓર જલમજ્જન-કુન્કી લગાના, જલક્રીડા=તૈરના, તથા જલાભિષેક  
 કરને લગા । યાદ આચમન કરકે સ્વચ્છ ઓર અત્યન્ત શુદ્ધ હો દેવતા  
 ઓર પિતરોકા કૃત્ય કરકે દર્મ ઓર કલશ હાથમે લેકર ગઢ્ઢા  
 મહાનદીસે યાહર નિકલા, ઓર અપની કુટીમે આયા । વહાં આકર

જે કાઈ કદ મૂલ આઈ હતા તે ગ્રહણ કરે છે અને પોતાનો કાવડ ભરે છે પછી  
 તેના દર્ભ, કુશ, પાદડા અને સમિધ ( હોમના કાઠ ) એ બધું લઈ જ્યા પોતાની  
 પર્ણકુટી હતી ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે પોતાની કાવડ રાખી કાવડ રાખીને  
 વેદીને મેટી ઠરી અર્થાત્ વેદી બનાવવાનું વિગૃત સ્થાન નિશ્ચિત કર્યું પછી ઉપલેપન  
 ( લીપણ ) તથા કીડી આદિ લઘુકાય જીવોની ક્ષાને માટે સમાર્જન કરવા લાગ્યો  
 પછી દર્ભ તથા કલશને હાથમા લઈને ગગાને કાઠે આવ્યો અને તેમા પ્રવેશીને  
 સ્નાન કરવા લાગ્યો, તથા જલમજ્જન=કુન્કી લગાવયુ, અને જલાભિષેક કરવા લાગ્યો  
 પછી આચમન ઠરીને સ્વચ્છ અને અત્યંત શુદ્ધ કરીને, દેવતા તથા પિતૃઓના કર્મો  
 કરીને, દર્ભ તથા કલશ હાથમા લઈને, ગગા મહાનદીમાંથી બહાર નીકળ્યો અને  
 પોતાની કુટીમા આવ્યો ત્યા આવીને દર્ભ અને કુશને એક તરફ રાખે છે તથા રેતીથી

तथा कुशकञ्जशस्त इति, शरकेण=निर्मन्थनकाष्ठेन अरणि=उपणीयकाष्ठ मन्थाति=घर्षयति, अग्निं सधुक्षते=फूत्करोति । 'समादहे'=समादधाति=स्थापयति, अत्र लोटोऽय लिङ् साप्तत्वात्, तथा=तानि अङ्गानि यथा, चरु=हवनार्थं दुग्धेन सह तण्डुलादिहविर्वृताभिघारित साधयति=सम्पादयति, रन्धयतीति यावत् ॥५॥

दर्भ और कुश एक तरफ रखता है और चालूसे वेदी बनाता है । बादमें शरक=निर्मन्थन काष्ठ, जो अग्निके लिए धिसा जाता है, अरणि=निर्मन्थमान काष्ठ, जिसपर अग्नि उत्पन्न करनेके लिए शरक धिसा जाता है, उन्हे तैयार करता है । अनन्तर शरक के द्वारा अरणि का मन्थन करता है, और मन्थन कर उससे अग्नि निकालता है फिर फूकर उसे सुलगाना है । उसमे समिध काष्ठ डालकर उसे प्रज्वलित कर अग्निके दाहिने पार्श्व (जीमणी बाजू) में सात अङ्गो (वस्तुओ) का स्थापन करता है, वे ये हैं—

(१) सकत्य तापसोंका एक उपकरण विशेष, (२) वल्कल, (३) स्थान, (४) शय्या भाण्ड, (५) कमण्डल, (६) लकड़ीका टण्डा तथा (७) आत्मा अर्थात् अपनेको अग्निके दाहिनी तरफ रखे ।

इसके अनुसार सब वस्तुओंको यथास्थान रखकर वह मधु घृत और तण्डुलसे हवन करता है । चरु=(घीसे चुपड़कर हवनके लिये पकाने योग्य चावल) को सिझाता है । त्रि-वैवदेव (नित्य यज्ञ) करता है । बादमे अतिथिको भोजन कराकर स्वयं भोजन करता है ॥५॥

वेदी बनावे छे पछी शरक=निर्मन्थन कष्ठ, जे अग्नि माटे घमवाभा आवे छे, ते तथा अरणि=निर्मन्थमान कष्ठ, जे ॥ उपर अग्नि उत्पन्न करवा माटे 'शरक' धमाय छे ते तयार करे छे अने शरक द्वारा अरणीनुं मन्थन करे छे मन्थन करी तेमाथी अग्नि प्रगट करे छे अने कुश भागी तेने मणगावे छे तेमा समाधीना कष्ठ नाणीने प्रज्वलित करे छे अग्नि प्रज्वलित करीने अग्निनी जमछी पाबुमा सात अंगो (वस्तुओ) नु स्थापन करे छे—

(१) सकत्य-तापसेनु ओक उदकरण विशेष, (२) वल्कल, (३) स्थान, (४) शय्याभांड, (५) कमण्डल, (६) लकड़ीना टंड तथा (७) आत्मा अर्थात् पोताने अग्निनी जमछी पाबुमे रहे

आ प्रमाणे पछी वस्तुओने यथास्थान राखी गध, वी तथा योपाथी अग्निमा हवन करे छे चरु=घीथी योपधिने हवनने माटे राधवाना आवल सीखावे छे यहुने सिखावी बलि वैवदेव (नित्य यज्ञ) करे छे पछी अतिथिने जमाडी पोते भोजन करे छे (५)

मूलम्—तए णं से सोमिले माहणरिसी दोच्चंसि छट्ठख-  
मणपारणगंसि तं चेव सव्व भाणियव्व जाव आहारं आहारेइ,  
नवर इम नाणत्त—दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे  
पत्थिय अभिरक्खउ सोमिल माहणरिसि जाणि य तत्थ कदाणि  
य जाव अणुजाणउ त्ति कट्ठु दाहिण दिसिं पसरइ । एव  
पच्चत्थिमे णं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिम दिसिं पसरइ ।  
उत्तरेण वेसमणे महाराया जाव उत्तर दिसिं पसरइ । पुव्व  
दिसागमेणं चत्तारि विदिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहार  
आहारेइ ।

तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अण्णया कयाइ पु  
व्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरिय जागरमाणस्स अय-  
मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अह वाणा  
रसीए नयरीए सोमिले नाम माहणरिसी अच्चंनमाहणकुलव्वसूए,  
तएण मए वयाइं चिण्णाइ जाव जूवा निक्खित्ता । तएण  
मए वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविआ । तएण  
मए सुवहु लोह० जाव घडावित्ता जाव जेट्ठपुन कुडुवे ठावित्ता  
जाव जेट्ठपुत्त आपुच्छित्ता सुवहु लोह० जाव गहाय मुडे जाव  
पव्वडए वि य ण समाने छट्ठ छट्ठेण जाव विहरामि, त सेय  
खलु मम इयाणि कल्ल पाउ जाव जलते बहवे तावसे दिट्ठा-  
भट्ठे य पुव्वसगइए य परियाय सगइए य आपुच्छित्ता आ-  
समससियाणि य वहुइ सत्तसयाइ अणुमाणइत्ता वागलवत्थ-

नियत्थस्स किट्ठिणसकाडयगहियसभंडोवगरणस्स कट्टमुद्दाए मुह  
वधिता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाण पत्थावेत्तए ।  
एव सपेहेड, सपेहिता कल्ल जाव जलते वहवे तावसे य  
दिट्ठाभट्टे य पुव्वसगडए य तं चेव जाव कट्टमुद्दाए मुह वंधइ,  
वधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हइ, जत्थेव णं अह  
जलसि वा एव थलसि वा दुग्गसि वा निन्नसि वा पव्व-  
यंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पम्बलिज्ज वा  
पवडिज्ज वा, नो खल्ल मे कप्पड पच्चुट्ठित्तए त्ति कट्ट अय  
मेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता उतराए दिसाए  
उत्तराभिमुहमहपत्थाणं पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वा-  
वरण्हकालसमयसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए,  
असोगवरपायवस्स अहे किट्ठिणसकाडय ठवेइ, ठवित्ता वेदिं  
वड्डइ, वड्डित्ता उवलेवणसमज्जण करेइ, करित्ता दव्वभकलसहत्थ-  
गए जेणेव गंगा महानई जहा सिवो जाव गंगाओ महानईओ  
पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता दव्वभेहि य कुसेहिं य वालुयाए य वेदि रएइ,  
रइत्ता सरग करेइ, करित्ता जाव वलिवइस्सदेव करेइ, करित्ता  
कट्टमुद्दाए मुह वधइ, तुसिणीए सचिट्ठइ ॥ ६ ॥

आया-तत खल्ल स सोमिलो ब्राह्मणऋषिर्द्वितीये पण्डितपणपारणके  
तदेव सर्वं भणितव्यं यावद् आहारमाहारयति । नवरमिदं नानात्वम्-दक्षिणस्या

‘तएण से सोमिले’ इत्यादि—

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण ऋषिने द्वितीय छट्ट (वेला)

तएण से सोमिले इत्यादि

‘तएण’ पछी ते सोमिल ब्राह्मण ऋषिणे द्वितीय पण्ड (वेला) नू पाण्डु  
आवेतां पूर्वोक्त प्रकटि जथा कथं कथा तथा छेत्ते आहार कथो विशेष ओ छे ३

દિશિ યમો મહારાજઃ પ્રસ્થાને પ્રસ્થિતમભિરક્તુ સોમિલ બ્રાહ્મણર્ષિ, યાશ્ચ તત્ર કન્દાશ્ચ યાવદ્ અનુજાનાતુ, ઇતિ કૃત્વા દક્ષિણા દિશ પ્રસરતિ । એવ પશ્ચિમે સ્વલુ ચરુગો મહારાજો યાત્ પશ્ચિમા દિશ પ્રસરતિ । ઉત્તરે સ્વલુ વૈશ્રવણો મહારાજો યાવદ્ ઉત્તરા દિશ પ્રસરતિ । પૂર્વદિગ્ગમેન ચતસ્રો વિદિશો મણિ તન્વા યાવદ્ આહારમાહારયતિ ।

તતઃસ્વલુ તસ્ય સોમિલબ્રાહ્મણર્ષેરન્યદા કદાચિત્ પૂર્વરાત્રાપરરાત્રમાલ સમયે અનિત્યજાગરિકા જાગ્રતોડયમેતદ્રૂપ યા-યાત્મિકો યાવત્ સમુદપદ્યત એવ

કા પારણા આનેપર પૂર્વોક્ત પ્રકારસે સમો કાર્ય ક્રિયે ઔર અન્તમેં આહાર ક્રિયા । વિશેષ યહ હે કિ યહ યમકી પ્રાર્થના કરતા હૈ-દક્ષિણ દિશામે મહારાજ યમ પરલોક સાધક માર્ગમે પ્રસ્થિત મુક્ત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિકી રક્ષા કરે, ઉસ દિશામે જો કન્દ, મ્લ, ફલ ફૂલ આદિ હૌં ઉન્હે લેનેકી મુક્તે આજા દે । એસા કહ કર દક્ષિણ દિશામે જાતા હૈ । હસી પ્રકાર પશ્ચિમ દિશામે મહારાજા ચરુણ દેવ પરલોક સાધક માર્ગમે પ્રસ્થિત મુક્ત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિકી રક્ષા કરે, હત્યાદિ પૂર્વોક્ત વિધિસે પશ્ચિમ દિશા મે જાના હૈ । યાદ ઉત્તર દિશામે જાનેકે લિયે ઉસી પ્રકાર મહારાજ વૈશ્રવણ (કુબેર)-કી પ્રાર્થના કી ઔર ઉત્તર દિશામે ગયા । હસી પ્રકાર હસને ચારો-પૂર્વ આદિ દિશાકે સમાન ચારોં વિદિશાઓં (કોણો) મે સી પૂર્વોક્ત વિધિકા આચરણ ક્રિયા, ઔર આહાર ક્રિયા ।

ઉસકે યાદ એક સમય અનિત્ય જાગરણા કરતે હુએ ઉસ સોસિલ બ્રાહ્મણ કે હૃદયમે હસ પ્રકારકા આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન

‘દક્ષિણ દિશામા મહારાજ યમ, પરલોક સાધક માર્ગમા પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણની રક્ષા કરે । તે દિશામા જે કદ, મ્લ, ફલ, ફૂલ વગેરે હોય તે લેવાની આજ્ઞા આપે’ એમ કહીને દક્ષિણ દિશામા જાય છે એજ પ્રકારે પશ્ચિમ દિશામા મહારાજ વરુણ, પરલોક સાધક માર્ગમા પ્રસ્થિત સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિકી રક્ષા કરે વગેરે પૂર્વોક્ત વિધિથી પશ્ચિમ દિશામા જાય છે પછી ઉત્તર દિશામા જવા માટે એજ પ્રકારે મહારાજ વશવણ (કુબેર) ની પ્રાર્થના કરી અને ઉત્તર દિશામા ગયો આવી રીતે તેણે પૂર્વ આદિ ચારે દિશાઓની પેઠે ચારે દિશાઓ (ખુણા) મા પણ પૂર્વોક્ત વિધિનું આચરણ કર્યું અને પછી આહાર કર્યો

ત્યાર પછી એક વખત અનિત્ય જાગરણ કરતા કરતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણના હૃદયમા એવા પ્રકારનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે હું વારાણસી નગરીનો

खलु अह वाराणस्या नगर्था सोमिलो नाम ब्राह्मणऋषिस्त्यन्तब्राह्मणकूलप्रसूतः,  
तत खलु मया प्रताति चीर्णानि यावत् ग्रथा निविष्टा, ततः खलु मया  
वाराणस्या यावत् पुष्पारामाश्च यावद् रोपिताः, ततः खलु मया सुवह्लोह०  
यावद् घटयित्वा यावत् ज्येष्ठपुत्र कुटुम्ब म्यापयित्वा यावद् ज्येष्ठपुत्रमाप-  
च्छ्व सुवह्लोह० यावद् गृहीत्वा मुण्डो यावत् प्रव्रजितोऽपि च खलु सन्  
पण्डपण्ठेन यावत् विहरामि, तच्छ्रेय खलु ममेगानी अन्ये पाटुर्यावज्ज्वलति  
गहन तापसान दृष्ट-भ्रष्टाश्च पूर्वसङ्गतिकैश्च पर्यायसगतिर्काश्च आपृच्छ्य आश्र-

हृआ कि-म वाराणसी नगरीका रहनेवाला अत्यन्त उच्च कुलमें  
उत्पन्न सोमिल नामका ब्राह्मण ऋषि हैं। मैंने बहुतसे व्रत किये,  
नया यज्ञ आदि करनेसे लेकर यज्ञस्तम्भ तक गाढा। अनन्तर मैंने  
वाराणसी नगरीके बाहर आमके बगीचेसे लेकर फल तकके बगीचे  
लगवाये। बाद मैंने गहनसी लोहेकी कढाहियाँ कलछू और तापसके  
लिये उपयुक्त बहुतसे ताम्बेके पात्र बनवाकर और अपने सभी  
मित्र-जाति-स्वजन-बन्धुओंको बुलाकर उन्हें भोजन आदिके द्वारा  
सम्मानित कर उन जाति बन्धुओंके समक्ष अपने पुत्रको कुटुम्बकी  
रक्षाके लिये स्थापित कर यावत् उससे सम्मति लेकर उन लोहेकी  
कढाहियाँ आदि लेकर मुण्ड होकर प्रव्रजित हुआ। और अनन्तर  
रहित पण्ड-पण्ड दिस्चक्रवाल तप करता हुआ विचरण कर रहा  
हूँ अब मुझे उचित है कि सूर्योदय होते ही बहुतसे दृष्टभ्रष्ट दृष्ट=जो  
कभी देखे हुए यथार्थ भाव है उनसे भ्रष्ट स्वलित हैं तथा पूर्वसगनिक-

• छेवावाणी। अत्यन्त छिया दुःखमा न भव। से। भव। मन। ब्राह्मण। ऋषि। छु। मे  
धरा। धरा। व्रत। कर्मा। तथा। यज्ञ। वज्रेदी। माडी। यज्ञस्तम्भ। जोडना। सुधी। कर्म। कर्मा।  
त्यन्त। पछी। मे। वानप्रस्थी। नगरीकी। गहन। आमाना। गणीयायी। माडी। दुलवागा। भाग  
सुधी। गना। न। पछी। मे। धणी। लोडानी। कडाधयो, उच्छी। तथा। तापसने। भाटे। छियेगी।  
ओवा। धरा। ताणाना। पत्रा। वज्रेद। वस्तु। गनावरायी। अने। भाग। पाताना। सवगा। मित्र-  
जाति-स्वजन-गधुओने। मे। ला। नीने। ते। ने। लो। जन। वज्रे। दन। सम्मानित। कर्मा। त  
जाति। गधुओनी। नमक्ष। गान। पे। ताना। पुत्रने। कुटुम्ब। स्थान। भाटे। स्थपित। करीने।  
तनी। सर्भात। लछने। ते। लोडानी। उच्छ। वज्रे। गधु। लछ। मुडित। थछ। प्रव्रजित। थये।  
अने। अतन्त्रडित। छ०-छ०। दृक्ष। कडाल। ता। कन्तो। कन्तो। विथड। छु। आ। भाटे। गने।  
ओ। यो। न। ते। क। भूयो। व्य। यना। न। धण। दृष्ट। भ्रष्ट=५=५ कन्तरेक। ओवा। आ। वे। ला।

दिशि यमो महाराजः प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु सोमिल ब्राह्मणं, याश्च तत्र कन्दाश्च यावद् अनुजानातु, इति कृत्वा दक्षिणा दिश प्रसरति । एव पश्चिमे खलु वरुणो महाराजो यावत् पश्चिमा दिश प्रसरति । उत्तरे खलु वैश्रवणो महाराजो यावद् उत्तरा दिश प्रसरति । पूर्वदिग्गमेन चतस्रो विदिशो भणि तव्या यावद् आहारमाहारयति ।

ततःखलु तस्य सोमिलब्राह्मणपर्यन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाल समये अनित्यजागरिका जाग्रतोऽयमेतद्रूप गा यात्मिको यावत् समुदपद्यत एव

का पारणा आनेपर पूर्वोक्त प्रकारसे सभी कार्य किये और अन्तमे आहार किया । विशेष यह है कि यहा यमकी प्रार्थना करता है-दक्षिण दिशामे महाराज यम परलोक साधक मार्गमें प्रस्थित मुझ सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करें, उस दिशामे जो कन्द, मूल, फल फूल आदि हैं उन्हे लेनेकी मुझे आज्ञा दें । ऐसा कह कर दक्षिण दिशामें जाता है । इसी प्रकार पश्चिम दिशामे महाराज वरुण देव परलोक साधक मार्गमे प्रस्थित मुझ सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करें, इत्यादि पूर्वोक्त विधिसे पश्चिम दिशा मे जाना है । चाद उत्तर दिशामे जानेके लिये उसी प्रकार महाराज वैश्रवण (कुबेर)-की प्रार्थना की और उत्तर दिशामे गया । इसी प्रकार इसने चारो-पूर्व आदि दिशाके समान चारो विदिशाओं ( कोणों ) मे भी पूर्वोक्त विधिका आचरण किया, और आहार किया ।

उसके बाद एक समय अनित्य जागरणा करते हुए उस सोमिल ब्राह्मण के हृदयमे इस प्रकारका आध्यात्मिक विचार उत्पन्न

‘दक्षिण दिशामा महाराज यम, परलोक साधक मार्गमा प्रस्थित सोमिल ब्राह्मणकी रक्षा करो ते दिशामा मे कन्द, मूल, फल वगैरे होय ते लेवानी आज्ञा आपो ।’  
 ओम कहीने दक्षिण दिशामा नय छे ओम प्रकारे पश्चिम दिशामा महाराज वरुण, परलोक साधक मार्गमा प्रस्थित सोमिल ब्राह्मण ऋषिकी रक्षा करो वगैरे पूर्वोक्त विधिगी पश्चिम दिशामा नय छे पछी उत्तर दिशामा मेवा माटे ओम प्रकारे महाराज वैश्रवण ( कुबेर ) ॥ प्रार्थना करी अने उत्तर दिशामा गये । आवी रीते तेणे पूर्व आदि चारे दिशाओनी चेटे चारे दिशाओ ( भूषा ) मा पव्य पूर्वोक्त विधिनु आचरण कथुं अने पछी आहार कथे ।

त्यार पछी ओके वधत अनित्य जागरण करता करता ते सोमिल ब्राह्मण हृदयमा मेवा प्रकारेना आध्यात्मिक विचार उत्पन्न थये के हु वाराक्षसी नगरीना

प्रपतेय वा नो खलु ये ऋषते प्रत्युत्थातुम्, इति कृत्वा इममेतद्रूपमभिग्रह-  
मभिगृह्णाति, उत्तरस्या दिशि उत्तराभिसुखमहाप्रस्थान प्रस्थित । स सोमिलो  
ब्राह्मण ऋषिः पूर्वापराह्णकालसमये यत्रैव अशोकवरपादपस्तत्रैवोपागतः । अशो-  
कवरपादपस्यायः क्रिदिणसाङ्कायिक स्थापयति, स्थापयित्वा वेदिं वर्धयति,  
उपलेपनसम्प्राजनं करोति, कृत्वा दर्भमलशङ्खस्तगतो यत्रैव गङ्गा महानदी यथा  
गिबो यावद् गङ्गातो महानदीतः प्रत्युत्तरति, प्रत्युत्तोर्य यत्रैव अशोकवरपाद-  
पस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च बालुण्या च वेदी रचयति, रच-  
यित्वा शरकं करोति, कृत्वा यावद् बलिबैश्वदेव करोति, कृत्वा काष्ठमुद्रया  
मुखं ग्रन्थति, तूष्णीकः सतिष्ठते ॥ ६ ॥

टीका-‘तण्ण से सोमिले’ इत्यादि । पूर्वदिशागमनेन=कन्दमूलाद्यर्थपूर्व  
दिशागमनेन चतस्रो विन्निगो भणितव्या, अयं भावः चतुर्दिक्षु या क्रिया कृता  
सा क्रिया विदिच्छति । दृष्टभ्रष्टान्=सम्यक्त्वस्वलितान् पूर्वसङ्गतिकान्=पूर्वस्मिन्  
तो मुझे बहासे उठना नहीं कल्पता’ ऐसा विचार करके इस प्रकारका  
अभिग्रह लेता है । तथा उत्तर दिशाकी ओर महाप्रस्थानके लिए  
प्रस्थित होता है । फिर वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि अपराह्ण काल  
(दिनके निमरे प्रहर) में जहा सुन्दर अशोक वृक्ष था वहा आया ।  
और उस अशोक वृक्षके नीचे अपना कावड रखा । अनन्तर वेदि=  
पैठनेकी जगहको साफ किया, साफ करके जहाँ गङ्गा महानदी थी  
वहा आया । और शिवराजऋषिके समान उस गङ्गा महानदीसे  
स्नान आदि कृत्यकर वहासे ऊपर आया और जहा अशोक वृक्ष था  
वहा आकर दर्भ कुश ओर बालुकासे यज्ञ वेदीकी रचना की । यज्ञ  
वेदीकी रचना करके शरक और अरणिसे अग्निको प्रज्वलित कर

प्र-भलित था उठे पड़ी लठ तो गाते त्यागी उठे छि कटये’ ऐसा विचारी ओरो  
गलित छे छे अने उत्तर दिशा तरङ्ग महाप्रस्थान भाटे प्रस्थित थाय छे पछी ते  
सोमिल ब्राह्मण ऋषि अपराह्ण काल (दिवसना त्रानप्रहर) मा गया सुन्दर अशोक  
वृक्ष छतु त्या आये अने ते अशोक वृक्षनी नीचे पोतानी कावड गापी अनन्तर  
वेदि-वेसवनी बग्याने साई करी, ते साई करीने बना गंगा महानदी छती त्या  
आये अने शिवराज ऋषिनी पठे ते गंगा महानदीमा स्नान आदि कर्म करी  
त्यागी उपर आये तथा गया अशोक वृक्ष छतु त्या आपीने-दर्भ, कुश तथा  
बालुगी यज्ञ वेदीनी रचना करी यज्ञ वेदीना रचना करीने शरक तथा अरणी



મસશ્રિતાનિ ચ વહૂનિ સત્ત્વશતાનિ અનુમાન્ય ચાલકલગ્નનિરસિતસ્ય મિથિણ સઠાધિકૃત્વીતસમાણ્ડોપકરણસ્ય કાષ્ઠમુદ્રયા મુલ્ક વ યા ઉત્તરદિશિ ઉત્તરાભિમુલ્કસ્ય મહાપ્રસ્થાન પ્રસ્થાપયિતુમ્, ઇત્થ સમેક્ષ્ય કલ્પ્યે યાવત્ જલતિ વહૂન તાપસાશ્ચ દૃષ્ટ-શ્રષ્ટાશ્ચ પૂર્વસદ્ગતિકાશ્ચ તત્ત્વે યાવત્ કાષ્ઠમુદ્રયા મુલ્ક વચ્ચાતિ, યથા ઇમમેતદ્રૂપમભિગ્રહમભિગૃહ્ણતિ-યથૈવ સ્વલુ એક જાલે વા, એક સ્થાલે વા દુર્ગે વા નિમ્ને વા પર્વતે વા વિષમે વા ગર્ભાયા વા દર્યા વા પ્રસ્થાલેય વા

પૂર્વકાલમે જિનસે સગતિ=મિત્રના હુઈ યી એસે, પર્યાયસગતિક=સમાન તાપસ પર્યાયવાલોંકો પૂઝકર, આશ્રમ સશ્રિત = આશ્રમમે રહ્નેવાલે અનેક શત પ્રાણિયાકો વચન આદિસે સન્તુષ્ટ કર વલ્કલ વલ્લ પદના હુઆ કાવડમે અપને માણ્ડોપકરણકો લેકર તથા કાષ્ઠમુદ્રાસે બાંધકર ઉત્તરાભિમુલ્ક હોકર ઉત્તર દિશામે મહાપ્રસ્થાન (મરણકે લિયે જાના) કહ્ન.

વહ સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ ઇમ પ્રકાર વિચાર કરતા હૈ ઔર સૂર્યોદય હોને પર, અપને વિચારકે અનુસાર સમી દૃષ્ટશ્રષ્ટ આદિ તાપસ પર્યાયવાલોંકો પૂઝકર તથા આશ્રમસ્થ અનેક શત પ્રાણિયોકો વચન આદિસે સન્તુષ્ટકર અન્તમે કાષ્ઠ મુદ્રાસે અપના મુલ્ક બાંધતા હૈ, ઔર ઇસ પ્રકારકા અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લેતા હૈ કિ-જહાં કહી મી-ચાહે વહ જલ હો યા સ્થલ હો વા દુર્ગ (વિકટ સ્થાન) હો, અથવા નીચા પ્રદેશ હો વા પર્વત હો, વિષમ ભૂમિ હો, વા ગર્હા હો, વા શુષ્ક હો, ઇન સર્વોમેસે કહી મી પ્રસ્થાલિત હોઈ યા ગિર પહૂં,

યથાર્થ ભાવોથી બ્રહ્મ-સ્થાપિત છે તે તથા પૂર્વ સગતિક=સમાન તાપસ પર્યાય વર્તિ એને પૂછીને, આશ્રમ સશ્રિત=આશ્રમમા રહેવાવાળા અનેક સેકડા પ્રાણિઓને વચન આદિથી સતુષ્ટ કરી વ કન વસ્ત્ર ધારી કાવડમા પોતાના ભાડોપદરણુ લઈ તથા કાષ્ઠ મુદ્રાથી બેઠાને બાધી ઉત્તર દિશામા ઉત્તરાભિમુલ્ક થઈને મહાપ્રસ્થાન (મરણને માટે જગુ) કરે.

તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિ આવો વિચાર કરે છે અને સૂર્યોદય થતા પોતાના વિચાર પ્રમાણે બધા દૃષ્ટ-બ્રહ્મ આદિ સમાન તાપસ પર્યાયવર્તિઓને પૂછીને તથા આશ્રમમા રહેનારા અનેક સેકડા પ્રાણિઓને સતુષ્ટ કરી કાષ્ઠમુદ્રા વડે પોતાનું મોઢુ બાંધે છે અને એવો અભિગ્રહ (પ્રતિજ્ઞા) લે છે કે-જ્યાં જ્યાં પણ તે જલ હોય કે સ્થલ હોય કે દુર્ગ (વિકટ સ્થાન) હોય, નીચો પ્રદેશ હોય કે પર્વત હોય, વિષમ ભૂમિ હોય કે ખાડો હોય કે શુષ્ક હોય એ બધામાથી એને તે હોય ત્યાં

गिण्हित्ता कट्टमुद्दाए मुहं वधइ, उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहे सपत्तिण ।

तएण से सोमिले तइयदिवसम्मि पच्छावरणहकालसमयसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असो-  
गवरपायवस्स अहे किट्ठिणसंकाइय ठवेइ, वेइ वड्डेइ जाव गंगं  
मंहानइ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरिता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेइं रएइं जाव कट्टमुद्दाए मुह वधइ,  
वधित्ता तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तएणं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्ता-  
वरत्तकाले एगे देवे अतिय पाउब्भूए तचेव भणइ जाव  
पडिगए । तएणं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे  
किट्ठिण संकाइय जाव कट्टमुद्दाए मुह वधित्ता उत्तराए दिसाए  
उत्तराभिमुहे सपत्तिण ।

तएण से सोमिले चउत्थे दिवसे पच्छावरणहकालसमयसि  
जेणेव वडपायवे तेणेव उवागए, वडपायवस्स अहे किट्ठिणस-  
काइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइ वड्डेइ, उवलेवणणसमज्जणं करेइ जाव  
कट्टमुद्दाए मुह वधइ, तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तइण तस्स सोमिल-  
स्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतिय पाउब्भूए त चेव भणइ  
जाव पडिगए । तएण से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थ  
नियत्थे किट्ठिणसंकाइय जाव कट्टमुद्दाए मुह वधइ, वधित्ता  
उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे सपत्तिण ।

तएण से सोमिले पचमदिवसम्मि पच्छावरणहकालसम  
यसि जेणेव उवरपायवे तेणेव उवागच्छेइ, उवरपायवस्स अहे  
किट्ठिणसंकाइय ठवेइ, वेइं वड्डेइ जाव कट्टमुद्दाए मुह वधइ  
जाव तुमिणीए सच्चिट्ठइ ।

કાલે સદ્ગતિઃ=મિત્રત્વ યેઃ સદ્ તાન્ નયા પૂર્વમિત્રાણિ. પર્યાયસદ્ગતિકાન્=તાપસપર્યાયપતિન્ઃ, કાષ્ઠદ્વયા=કાષ્ઠમયમુલખન્યનેન । મર્તાયા=મહત્ત્યા સ્ત્રીયામ્, દર્યા=ચન્દ્રારાયામ્, શેષ સ્પષ્ટમ્ ॥ ૬ ॥

મૂલમ્-તદ્દેવ તસ્સ સોમિલમાહ્નરિસિસ્સ પુવ્વરત્તાવરત્ત કાલસમયંસિ એગે દેવે અતિયં પાઉવ્ભૂણ્ણ । તદ્દેવે સોમિલ માહ્નં એવ વયાસી-હમ્મો સોમિલમાહ્નના । પવ્વડયા । દુપ્પવ્વડયં તે । તદ્દેવે સોમિલે તસ્સ દેવસ્સ દોઘપિ તદ્ધપિ એયમદ્ધં નો આઢાઢ નો પરિજાણં જાવ તુસિણીણ સંચિટ્ઢ । તદ્દેવે સોમિલેણ માહ્નરિસિણા અણાઢાઈજ્જમાણે જામેવ દિસિં પાઉવ્ભૂણ્ણ તામેવ દિસ પઢિગણ્ણ । તદ્દેવે સોમિલે કલ્હં જાવ જલતે વાગલવત્થનિયત્થે કિઢિણસકાઢય ગહાય ગહિયમ્મહો વગરણે કટ્ટમુદ્દાણ મુહ વધં વધિત્તા ઉત્તરાભિમુહે સપત્થિણ્ણ । તદ્દેવે સોમિલે વિઢયદિસમ્મિ પચ્છાવરણ્ણકાલસમયસિ જેણેવ સત્તવન્ને તેણેવ ઉવાગચ્છંદ્ધ ઉવાગચ્છિત્તો સત્તવણ્ણસ્સ અહે કિઢિણ-સકાઢય ઠવેઢ, ઠવિત્તા વેઢ વડ્ઢેઢ, વડ્ઢિત્તા જહા અસોગવરપાયવે જાવ અગ્ગિં હુણં, કટ્ટમુદ્દાણ મુહ વધં, તુસિણીણ સંચિટ્ઢ ।

તદ્દેવ તસ્સ સોમિલસ્સ પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસમયસિ એગે દેવે અતિયં પાઉવ્ભૂણ્ણ । તદ્દેવે સોમિલે અતલિલ્લપ્પઢિવન્ને જહા અસોગવરપાયવે જાવ પઢિગણ્ણ । તદ્દેવે સોમિલે કલ્હં જાવ જલતે વાગલવત્થનિયત્થે કિઢિણસકાઢય ગિણ્ણં, યાવત્ત્વં ચિત્તેશ્વરેવ (નિત્ય યજ્ઞ કરતા છે, કાષ્ઠ મુદ્રાસે મુખ બાધતા છે, ઓર મૌન હોઈ રહતા છે ॥ ૬ ॥

અગિને પ્રત્યક્ષવલિન કરીને પગે બાલિ-વૈશ્વદેવ (નિત્ય યજ્ઞ) કરે તે અગિને કષ્ટ મુદ્રાથી મુખ બાધે છે અને મૌન વાચ્ય કરી એથી બચે છે (૬)

वदड नमसइ, वंदिता नमसित्ता जामेव दिसि पाउव्भूए  
जाव पडिगए ।

तएण से सोमिले माहणरिसी तेणं ठेवेणं एव वुत्ते  
समाणे पुव्वपडिवन्नाइ पन्न अणुव्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताणं  
विहरइ ।

तएण से सोमिले वहुहि चउत्थ छट्ठम जाव मासङ्क-  
मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहि अप्पाण भावेमाणे वहुइ  
वासाइ समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अङ्गमासियाए  
सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइं अणसणाए  
छेदेइ, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोडयपडिक्कते विराहियसम्मत्ते  
कालमासे काल किच्चा सुक्खडिंसए विमाणे उववायसभाए  
देवसयणिज्जसि जावतोगाहणाए सुक्खमहग्गहत्ताए उववन्ने ।  
तएण से सुक्के महग्गए अहुणोववन्ने समाणे जाव भासा-  
मणपज्जत्तीए० ।

एव खलु गोयमा । सुक्केण महग्गहेण सा दिव्वा जाव  
अभिसमन्नागया, एगं पलिओवम ठिई । सुक्के ण भत्ते ।  
महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ कहि गच्छिहिइ ?  
२ गोयमा । महाविदेहे वासे सिज्जिहिइ ५ । एवं खलु  
जवू । समणेण निक्खेवओ ॥ ७ ॥

॥ तइय अज्झयण समत्त ॥ ३ ॥

छाया-तत खलु तस्य सोमिल ब्राह्मणकृपे पूर्वरात्रापररात्रकालसमये  
एनो देवोऽन्तिकं प्रादर्भत. । तत खलु म देव सोमिल ब्राह्मणमैवमवादीत्-  
ह भो सोमिलब्राह्मण ! प्रजित ! दुर्प्रवर्जितं ते । तत खलु स सोमिल  
स्तस्य देवस्य द्वितीयमपि तृतीयमपि एतमर्थं नो जाद्वियते नो परिजानाति

तएणं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे  
जाव एव वयासी-हंभो सोमिला । पव्वडया । दुप्पव्वडय  
ते पढम भणइ, तहेव तुसिणीए सचिट्ठ । देवो दोच्चपि  
तच्चपि वदइ सोमिला । पव्वडया दुप्पव्वडय ते । तएण से  
सोमिले तेण देवेणं दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाने त देव  
एवं वयासी-कहण्ण देवाणुप्पिया । मम दुप्पव्वडयं ? । तएण  
से देवे सोमिलं माहण एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया ।  
तुम पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिय पचाणुव्वए  
सत्तसिक्खावए दुवालसविहे सावगधम्मो पडिवन्ने, तएणं तव  
अणण्या कयाइ असाहुदंसणेण पुव्वरत्ता० कुडुव० जाव पुव्वचि  
तिय देवो उच्चाण्णै जाव जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा  
गच्छसि, उवागच्छित्ता किट्ठिणसंकाइय जाव तुसिणीए सचिट्ठ ।  
तएण पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अतिय पाउव्वमामि ह भो सोमिला ।  
पव्वडया । दुप्पव्वडय ते तह चेव देवो नियवयण भणइ जाव  
पंचमदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयसि जेणेव उवरवरपायवे  
तेणेव उवागए किट्ठिणसंकाइय ठवेसि, वेइ वड्ढेसि, उवलेव्वण  
समज्जण करेसि, करित्ता कट्टमुद्दाए मुहं वधेसि, वधित्ता तुसि-  
णीए सचिट्ठसि, त चेव खल्ल देवाणुप्पिया । तव पव्वडय दुप्प-  
व्वडय । तएण से सोमिले त देव एव वयासी-कहण्ण देवा  
नुप्पिया । मम सुप्पव्वडयं ? तएण से देवे सोमिलं एव वयासी  
जइण तुम देवाणुप्पिया । इयारिणं पुव्वपडिवण्णाइ पच अणु  
व्वयाइं सत्तसिक्खावयाड सममेव उवसपज्जित्ताण विहरसि,  
त्तोणं तुज्झ इदरिणं सुपव्वडय भविज्जा । तइण से देवे सोमिल

यित्वा चेदं वर्धयति, वर्धयित्वा यथा अशोकवरपादपे यावत् अग्निं जुहोति,  
काष्ठमुद्रया मुखं वप्राति, तूष्णीं सतिष्ठते ।

ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकालसमय एवो देवोऽन्तिक  
सादुर्भूतः । ततः खलु ॥ देवाऽन्तरिक्षमतिपन्नं यथा अशोकवरपादपे यावत्  
सतिगतः । ततः खलु स सोमिलः स्तूपे यावत् उज्ज्वलति बालकलवस्तुनिवसितः  
हृदिगसाङ्गायिषं वृह्णाति, गृहीत्या काष्ठमुद्रया मुखं वप्राति, यद् वा उत्तरा  
भिमुखः सप्रस्थितः

नीचे अपना कावड रखता है, कावड रखकर वेदी बनाता है, और  
जैसे अशोक वृक्षके नीचे उमने किया वैसे ही सभी कार्य किये ।  
अतमे उसने हवन किया और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बाधकर  
मौन होकर बैठ गया । उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मणके रुमक्ष  
मध्यरात्रिके समय एक देव प्रकट हुआ । और आकाशमे खड़ा होकर  
अशोक वृक्षके नीचे जिस प्रकार पहले उस सोमिल ब्राह्मणको देवता  
ने कहा था उसी प्रकार फिर भी कहा, परन्तु उस सोमिल ब्राह्मण-  
को देवताने कहा था उसी प्रकार फिर भी कहा, परन्तु उस सोमिल  
ब्राह्मणने उस देवताकी आज्ञापर कुछ भी ध्यान नहीं दिया । सुनी  
अनसुनी करके केवल चुप रह गया । वह देवता अन्तर्हित हो गया ।  
उसके बाद बलकलवन्धारी वह सोमिल ब्राह्मण अपना कावड ग्रहण  
करता है और काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बाधता है । अगन्तर वह  
उत्तर दिशामें उत्तराभिमुख होकर प्रस्थित हुआ ।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण तीनों दिन चौथे पहरमे जहाँ

वेदी बनाये थे अने जहाँ रीते अशोक वृक्षनी नीचे तेछे ठहरा होता तपान्ज जथा  
कभी श्री अन्त तेछे हवन कये अने काष्ठमुद्राथी पोतानु भाहु जाधे मौन थर  
रहेवा लाग्ये । पछां त सोमिल ब्राह्मणुनी समस्त मध्यरात्रिन वधते ओठ देव प्रगल्  
यये अने आकाशमा उभे रह्यो अशोकवृक्षनी नीचे जेभ पड़ेवा ते सोमिल ब्राह्मणने  
देवताओ उछु हुतु तेवी न रीत वणी इरीने उछु परन्तु ते सोमिल ब्राह्मणने ते देवतानी  
जात छिन्न कछ पछु ध्यान न आप्थु साधन्यु न मलयु इरीने जिलकुल चुप थर  
रह्यो ते देवता अतर्धान थर गये । पछी बलकलवन्धारी ते सोमिल ब्राह्मणने पोतानी  
कावड धीधी अने काष्ठमुद्राथी पोतानु भाहु जाधे थे त्याग पछी उत्तर दिशागा  
उत्तराभिमुख थरने आश्रवा भाउथु

યાવત્ તૂષ્ણીઃ સતિષ્ઠને । તતઃ સલુ સ દેવઃ સોમિલેન બ્રાહ્મણર્ષિણા અનાદિ  
યમાણઃ યસ્યા દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશઃ પ્રતિગતઃ । તત્ સલુ સ સોમિલ,  
સ્વયે યાવત્ જ્વલતિ ચાન્નલ્લવસ્ત્રનિવસિત મિદિણસાદ્દશાયિય ગૃહીત્વા ગૃહીત  
માણ્ડોપવરણઃ । માઠ્ઠમુદ્રયા મુગ્ધ વત્તાતિ, યદ્ વા ઉત્તગમિમુલઃ સમસ્થિત' ।  
તત્ સલુ સ સોમિલો દ્વિતીયદિવસ પશ્ચાદપરાહ્ણકાલસમયે યત્રૈવ સસપર્ણ,  
તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સસપર્ણમ્ય અથ, મિદિણસાદ્દશાયિક સ્થાપયતિ, સ્થા

‘તણ તસ્સ’ इत्यादि—

उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मण ऋषिके सामने मध्य रात्रिके समय एक देवता प्रकट हुआ । उसके बाद वह देव सोमिल ब्राह्मण-को इस प्रकार कहा-हैं प्रजित सोमिल ब्राह्मण । तेरी यह दुष्प्रव्रज्या है । इस प्रकार उस देवके द्वारा दो तीन बार कहे जानेपर भी वह सोमिल उस देवताकी बातका आदर नहीं करता है न उसकी तरफ ध्यान ही देता है, किंतु मौन होकर रहता है उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मणसे अनादन वह देव जिस दिशासे आया उसी दिशामें चला गया ।

उसके बाद चरकलवस्त्रधारी वह सोमिल सूर्योदर होनेपर कावडको उठाकर अपना माण्ड-उपकरण लेकर काष्ठमुद्रासे अपना मुँह बाधकर उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान करता है ।

अनन्तर वह सोमिल ब्राह्मण दूसरे दिन अपराह्न कालके अतिम प्रहारमें जहां ससपर्ण वृक्ष था वहां आया । और ससपर्ण वृक्षके

तણ તસ્સ इत्यादि

ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ઋષિની નામે મધ્યરાત્રિન વખતે એક દેવતા પ્રગટ થયો । પછી તે દેવે સોમિલ બ્રાહ્મણને આમ કહ્યું,—હે પ્રમજ્જીત સોમિલ બ્રાહ્મણ તારી આ પ્રમજ્જ્યા દુષ્પ્રમજ્જ્યા (દોષવાળી) છે એ પ્રકારે તે દેવની દ્વારા બે ત્રણ વાર કહેવામાં આવતા છતાં પણ તે સોમિલ તે દેવનાની વાતનો આદર કરતો નથી કે નથી તેના તરફ નાન પણ દેતો । પણ એકદમ મૌન થઈ જાય છે ત્યાર પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણથી અનાદર પામેલો દેવ જે બાબુથી આવ્યો હતો તે બાબુએ આપ્યો ગયો ।

ત્યાર પછી ચરકલવસ્ત્રધારી તે સોમિલ સૂર્યોદય થતા કાવડ ઉપાડી પોતાના બડ ઉપરથી લઇને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોઢું બાંધીને ઉત્તર તરફ પ્રસ્થાન કરે છે ।

પછી તે સોમિલ બ્રાહ્મણ બીજે દિવસે અપરાહ્ણ કાલના ઝેવા પહેલમાં (સાન્) ત્યાં સસપર્ણ વૃક્ષ હતું ત્યાં આવ્યો અને સસપર્ણની નીચે પોતાની કાવડ રાખીને

यित्वा वेदिं वर्धयति, उपलेपनसमार्जनं करोति यावत् साण्डमुद्रया मुखं न नाति  
तृष्णीक सतिष्ठते । ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको  
देवोऽन्तिमं प्रादुर्भूतः । तदेव भणति यावत् प्रतिगतः । ततः खलु स  
सोमिलो यावज्ज्वलति चातुर्यवस्त्रनिवमितः सिद्धिगसाङ्कायिक यावत् साण्ड-  
मुद्रया मुखं यन्मात्रं उद्भूया उत्तरस्या दिशि उत्तं अभिमुखः सप्रस्थितः ।

ततः खलु स सोमिलः पञ्चमदिनसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव उदु-  
म्बरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उदुम्बरपादपस्यायं सिद्धिगसाङ्कायिकं स्थापयति,  
वेदिं वर्धयति यावत् साण्डमुद्रया मुखं यन्मात्रं यावत् तृष्णीकः सतिष्ठते ।

ततः खलु तस्य सोमिलब्राह्मणस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले एको देवः  
यावत् एवमवादीत्—हं भो सोमिल ! प्रव्रजितः ? दुःप्रव्रजितः ते प्रथमं भणति  
तथैव तृष्णीकः सतिष्ठते, देवो द्वितीयमपि तृतीयमपि यन्ति सोमिल ! प्रव्र-

कावड रग्वत् । अनन्तर वेदनेकी वेदीको बनाया और उसको गोबर  
मिट्टीसे लीपा और माफ किया चार में मौन हाकर बैठ गया, उसके  
बाद मध्य रात्रिके समय उस सोमिल ब्राह्मणक समीप एक देव  
प्रगट हुआ । और उसने वैसे ही कहा यावत् अन्तर्हित हो गया ।

उसके बाद वह सोमिल पाचवे दिनके चौथे पहरमें जहां  
उदुम्बर (गुडर) का वृक्ष था वहां आता है और उदुम्बर वृक्षके नीचे  
अपना कावड रग्वत् है और वेदी बनाता है, यावत् साण्डमुद्रासे  
मुख धारता है और मौन होकर रहता है । उसके बाद मध्य  
रात्रिमें उस सोमिल ब्राह्मणके पास एक देव प्रकट हुआ और यावत्  
हम प्रहार कहा—हे सोमिल प्रव्रजित ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुःप्रव्रज्या  
है, इस प्रकार पहली बार उस देवताके मुखसे बाणी सुनकर वह

वेदी बनानी त छापु भाटाथा लापी અને માફ કરી પછી મૌન યજ્ઞન બેઠો ત્યાર પછી  
મધ્યરાત્રિન વખતે તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને તેણે એમજ  
અગાઉ પ્રમાણે કહ્યું અને અતર્ધાન થઈ ગયો

ત્યાર પછી તે સોમિલ પાચમા દિવસે ચોથા પહેરે ત્યાં ઉદુમ્બર (ઉગર) નું  
વૃક્ષ હતું ત્યાં આવે છે અને તે ઉદુમ્બર વૃક્ષની નીચે પાનાની કાવડ રાખી વેદી  
બનાવે છે પહેલાની માફક બધા કૃત્યો કરી પછી કાષ્ઠમુદ્રાથી મોઢું બાંધી મૌન રહે  
છે ત્યાર પછી મધ્યરાત્રિમા તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે એક દેવ પ્રગટ થયો અને આ  
પ્રકારે કહ્યું —હે સોમિલ પ્રવ્રજિત ! તારી આ પ્રવ્રજ્યા દુઃપ્રવ્રજ્યા છે આ પ્રકારની  
પહેલીવારની વાણી તે દેવતાન મુખેથી આજણી તે સોમિલ માન રહ્યો છે પછી તે દેવ



ततः खलु स सोमिलस्तृतीयदिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैवाशो  
 रुवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जगोरुवरपादपस्याधः त्रिद्विणसाङ्कायिक  
 स्थापयति, वेदिं चर्चयति, यावद् गङ्गा महानग्नी प्रत्युत्तरति, प्रत्युत्तीर्य यत्रैवा  
 शोरुवरपादपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वेदिं रचयति, यावत् माण्डमुद्रया  
 मुखं प्लवति, वद्भवा तूष्णीकः सतिष्ठते । ततः खलु तस्य सोमिलस्य पूर्व  
 रानापररात्रकाले एको देवोऽन्तिकं प्रादुर्भूत तदेव भणति यावत् प्रतिगत ।  
 ततः खलु स सोमिलो यावत् ज्वलति गन्धर्ववस्त्रनिवरित त्रिद्विणसाङ्कायिक  
 यावत् माण्डमुद्रया मुखं प्लवति, वद्भवा उत्तरस्या दिशि उत्तराभिमुख  
 समस्थितः ।

ततः खलु स सोमिलः चतुर्थे दिवसे पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव  
 वटपादपस्तत्रैवोपागतः, वटपादपस्याधः त्रिद्विणसाङ्कायिक स्थापयति, स्थाप

अशोक वृक्ष या वहाँ आया । वहाँ आकर कावड रखता है, ओर  
 बैठनेके लिये वेदी बनाता है ओर पहलेऊ ही तरह सभी कार्य करके  
 काण्डमुद्रासे मुद्र बाधता है, अनन्तर मौन होकर बैठ जाता है ।  
 उसके बाद मध्यरात्रिमे उस सोमिल ब्राह्मणके समीप एक देव प्रगट  
 हुआ और फिर उसने उसी प्रकार कहा और यावत् चला गया ।  
 उसके बाद सूर्योदय होनेपर बल्कल वस्त्रधारी वह सोमिल ब्राह्मण  
 अपना कावड उठाता है और काण्डमुद्रासे अपना मुख बाधता है  
 और उत्तराभिमुख हो उत्तर दिशामें प्रस्थान करता है ।

उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण चौथे दिवसके चौथे पहरमे  
 जहाँ उडका वृक्ष या वहाँ आया । और उस वट वृक्षके नीचे अपना

पछी ते सोमिल ब्राह्मण नीचे दिवसे आया पहिलेभा नया अशोक वृक्ष छेले  
 त्या आनी कावड भूरीने मेसवा माटे वेदी बनाने छे । पहिलेनी प्रमाणे पछा कर्मो करी  
 काण्डमुद्राथी मोडु पाछी पछी मौन थछ मेसी नय छे । त्यार पछी मध्यरात्रिमा ते  
 सोमिल ब्राह्मणनी पासो ओड देव प्रगट थयो । अने पछी तेणे तज प्रकाशे कछु अने  
 पछी आटयो गयो । त्यार पछी सूर्योदय थता बल्कलवस्त्र धारी ते सोमिल ब्राह्मण  
 पोतानी कावड उठाडे छे अने काण्डमुद्राथी पोतानु मोडु पावे छे अने पछी उत्तर  
 दिशामा उत्तराभिमुख थछने आलवा माटे छे ।

त्यार पछी ते सोमिल ब्राह्मण चौथे दिवसे आया पहिलेभा नया वडनु वृक्ष  
 छेले त्या आ यो अने ते वटना ओडनी नीचे पोतानी कावड राखी पछी मेसवानी

वर्षादपस्तत्रैवोपागच्छसि, उपागत्य मिठिणमाङ्कायिक यावत् तूष्णीक. सति-  
ष्ठसे । ततः पूर्वरात्रापररात्रकाले त्वान्तिष्ठ प्रादुर्भवामि-इ भो सोमिल !  
प्रव्रजित ? दृप्प्रव्रजित ते तथैव देवो निजवचनं मणति यावत् पञ्चमदिवसे  
पश्चादपराह्णकालसमये यत्रैव उदुम्बरपादपस्तत्रैवोपागतः मिठिणमाङ्कायिक स्या  
पयसि, वेदीं वर्धयसि, उपलेपनं समार्जनं करोषि, कृत्वा काष्ठमुद्रया मुखं  
रुद्रामि, उद्वा नूष्णीकं मतिष्ठसे, तदेव खलु देवानुप्रिय ! तत्र प्रव्रजित  
दृप्प्रव्रजितम् ।

लेकर जाऊँ और दिशाप्रोक्षक तापस बन । इत्यादि सोमिल ब्राह्मणके  
द्वारा पूर्व चिन्तित विचारोंको देवताने उससे कहा । और फिर उसने  
कहा कि-‘ बादमे तुमने दिशाप्रोक्षक तापसके समीप दिक्षा ली और  
अभिग्रह लिया यावत् जहाँ अशोक वृक्ष या वहाँ आये और वहाँ  
कावड रग्व अपना सभो कृत्य किया बाद मेरे द्वारा प्रतिशोधित  
होनेपर भी तुमने उसपर ध्यान नहीं दिया और मौन होकर रह  
गये । इस प्रकार मैंने चार दिन तक तुम्हें समझाया पर तुमने ध्यान  
नहीं दिया । बाद आज पाँचवें दिवस चौथे पहरमे यहाँ उदुम्बर  
वृक्षके नीचे तुमने अपना कावड रगवा, बैठनेकी जगहको साफ किया,  
अनन्तर उपलेपन और सम्मार्जन किया और काष्ठमुद्रासे अपना  
मुँह बाँधकर तुम मौन होकर बैठे । हे देवानुप्रिय ! इस प्रकार  
तुम्हारी यह प्रव्रज्या दृप्प्रव्रज्या है ।

अनापजयी ते वर्जितं जलं अनं दिशाप्रोक्षक तापसं गतुं’ वगेरे सोमिल ब्राह्मणना  
भनभा पूर्व स्थित न देखा वे विचारो होता ते देवताओं तेने कहा इसी तेले कुछ  
हे त्याग जाह नमे दिशाप्रोक्ष तापसनी पासे दीक्षा लीधी अने अभिग्रह लीधी त्यागथी  
ज्या अशोक वृक्ष હતુ તના આગ્યા અને त्या કાવડ ગાળી તમે તમાણ મર્ચે કર્મો કર્યા  
પછી માન્ય હા । પ્રતિશોધિત કરાયા છતાં પણ તમે તે ઉપર ધ્યાન ન આપ્યું અને  
મૌન ગયા આ પ્રકારે મે તાર દિવસ મુધી તમને સમજાવ્યા પણ તમે ધ્યાન ન  
આપ્યું જાહ આજે પાંચમા દિવસના ચોથા પહોળમા અહીં ઉદુમ્બર વૃક્ષની નીચે તમે  
તમારી કાવડ રાખી બેઠવાની જગ્યાને સાફ કરી પછી તે લીટી અને ન માર્ગન કર્યું  
અને કાષ્ઠમુદ્રાથી પોતાનું મોહું બાંધી મૌન થઈ બેઠા હો દેવાનુપ્રિય ! આ પ્રકારની  
તમારી આ પ્રવ્રજ્યા દૃષ્ટવ્રજ્યા છે

જિત ? દુષ્પ્રવ્રજિત તે । તતઃ સ્વલુ સ સોમિલમ્તેન દેવેન દ્વિતીયમપિ તૃતીય  
મપ્યેવમુક્તઃ સન્ ત દેવમેવાદીત્-રુથ સલુ દેવાનુપ્રિય ! મમ દુષ્પ્રવ્રજિતમ્  
તતઃ સ્વલુ સ દેવઃ સોમિલ પ્રાત્નપ્રમેયમવાદીત્-એવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિય !  
ત્વ પાર્શ્વસ્પર્શતઃ પુરુષાદાનીયસ્યાન્તિઃ પશ્ચાનુવ્રતાનિ સપ્તશિશ્વાવ્રતાનિ દ્વાન્  
વિધ શ્રાવક્યમ્ પ્રતિપન્નઃ, તતઃ સ્વલુ તયાઽન્યદા મદાચિત્ અસાધુદર્શનેન  
પૂર્વરાગાઁ કુદુમ્બઁ યાવત્ પૂર્વચિન્તિત દેવ ઉચ્ચારયતિ યાવત્ યથૈવાઽગોક

સોમિલ મૌન રહતા હૈ । અનન્તર ઉસ સોમિલને ઉસ દેવતાસે  
દુવારા નિવારા કહે જાનેપર ઇસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! મેરી  
પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રજ્યા ક્યોં હૈ ?

સોમિલકે ઇસ પ્રકાર પૂછનેપર ઉસ દેવતાને ઇસ પ્રકાર કહના  
પ્રારમ્ભ કિયા—

સોમિલકે ઇસ પ્રકાર પૂછનેપર ઉસ દેવતાને ઇસ પ્રકાર કહના  
આરમ્ભ કિયા—

હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ મુમુક્ષુ જનોંસે સેવ્ય પાઠર્થ અર્હતકે  
મમીપ પૌંચ અનુવ્રત ઇસ પ્રકાર શિક્ષાવ્રત, ઇસ પ્રકાર વારહ વ્રતરુપ  
શ્રાવક ધર્મકો સ્વીકાર કિયા । ઉસકે બાદ અસાધુઓકે દર્શનસે  
તુમને ઇસ ધર્મકા પરિત્યાગ કર દિયા । અનન્તર એક સમય મધ્ય  
રાત્રિમે કુદુમ્બ જાગરણા કરતે હુળ તુમ્હાર મનમે વિચાર પૈદા હુઆ  
કિ-‘ગદ્ગાકે કિનારમે તપસ્યા કરનેવાલે વિવિધ પ્રકારકે વાનપ્રસ્થ  
તાપસ હૈ, ડન તાપસોમેં જો દિશાપ્રોક્ષક તાપસ હૈ ડનકે પામ  
લોહેકી કઢાલિયોં કલહુ ઓર તામ્બેકા તાપમપાત્ર બનવાકર ઉસે

દેવ ળીલવા, ત્રીલવા પા । સોમિલને તેજ પ્રમદે કહે ં સોમિલે તે દેવતાની વહી  
માલગી આ પ્રકારે બધુ —

હે દેવાનુપ્રિય ! મારી પ્રવ્રજ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા કેમ છે ?

સોમિલના આ પ્રકારે પૂછવાથી તે દેવના આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યે —

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મુમુક્ષુનોથી સેવાતા પાર્શ્વ અર્હતની પાસે પાત્ર અણુ  
ત્રન, નાત શિક્ષા નત એમ કુવ મળી ઓર વ્રત અથ ત્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો  
ત્યા પછા અસાધુઓના દર્શનથી તમે આ ધર્મનો પરિત્યાગ કર્યો પછા એક સમય  
મધ્યરાત્રિમા કુદુમ્બ જાગરણુ કરતા કરતા તમારા મનમા એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે  
ગગાને કાઠે તપસ્યા કરવાવાળા બુદ્ધ બુદ્ધા પ્રકારના વાનપ્રથ તાપસ છે તે તાપસોમા  
ને દિશાપ્રોક્ષક તાપસ છે તેની પામે, લોહાની કઢાઈઓ કરછા તથા તાળાના તાપસપાત્ર

मासिक्या सलेखनया आत्मान जोषयति, जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि अनश-  
नेन छिनत्ति, उद्भिवा तस्य म्यानस्यागालोचिताऽप्रतिक्रान्तो विरापितसम्यक्त्वः  
कालमासे काल कृत्वा शुक्रावतसके विमाने उपपातसभाया देवशयनीये याव-  
ताऽवगाहनया शुक्रमहाग्रहतया उपपन्न । तत खलु स शुक्रमग्राह अधु  
नोपपन्न मन पावद् भाषामन पर्याप्त्या० ।

एव खलु गौतम ! शुक्रेण महाग्रहेण सा दिव्या यावत् अभिममन्वा-  
गता । एव पर्योपम स्थितिः । शुक्रः खलु भन्त ! महाग्रहस्ततो ढवलोकात्  
आयुःक्षयेण ३ कुत्र गमिष्यति, २ ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेम्यति ५ ।  
एव खलु जम्बू ! श्रमणेन० निक्षेप ॥ ७ ॥

विचित्र तप उपधानोंसे अपनी आत्माको भावित करता हुआ बहुत  
वर्षों तक श्रमणोपासक (आचक) पर्यायका पालन करता है । अन्तमे  
अर्धमासिकी मलेखना द्वारा आत्माको भावित कर तथा तीस भक्त  
(आहार) को अनशनसे छेदित कर उस प्रवृत्त पापस्थानकी  
आलोचना और प्रतिक्रमण नहीं करता हुआ सम्यक्त्वकी विराधनासे  
काल माममे कालकर शुक्रावतमक विमानमे उपपात सभाके अन्दर  
देवशयनीय शय्यामे जिस प्रमाणकी अवगाहनासे ज्योतिष देवोकी  
उत्पत्ति होती है, उस प्रमाणवाली अवगाहना अर्थात् जघन्य-अङ्गु-  
लके असत्प्रातर्वे भाग और उत्कृष्ट-सात हाथ परिमाणवाली अव-  
गाहनासे शुक्र महाग्रहपने उत्पन्न हुआ । उसके बाद वह शुक्र महा-  
ग्रह उत्पन्न होकर भाषापर्यासि मन पर्यासि आदि पाँचो प्रकारकी  
पर्यासिसे पर्यासिभावको प्राप्त हुआ ।

तथा मासक्षयपत्र । विचित्रतप उपधानेऽथी पोताना आत्माने भावित कर्ता धृष्ट।  
वर्षो सुधी श्रमणोपासक (आचक) पर्यायिनु पालन करे छे अतमा अर्ध मासिकी  
मलेखना द्वारा आत्माने भावित करी तथा त्रौस लकत (आहार) नू अनशनथी  
छेदित करी ते पूर्वकृत पापस्थाननी आवेयना अने प्रतिक्रमण नहीं करता सम्यक्  
त्वने विराधित करी कालमासमा काल करीने शुक्रावतमक विमानमा उपपात सभानी  
अहं देवशयनीय शय्यामा जे प्रमाणनी अवगाहनाथी ज्योतिष देवोनी उत्पत्ति  
थाय छे ते प्रमाणवाली अवगाहना अर्थात्-जघन्य-अङ्गुलना असत्प्रातमा भाग  
अने उत्कृष्ट सात हाथ परिमाणवाली अवगाहनाथी शुक्रमहाग्रहपन्नामा उत्पन्न थया-  
पछी ते शुक्रमहाग्रह उत्पन्न थय भाषापर्यासि मन पर्यासि आदि पांचे प्रकारनी  
पर्यासिथी पर्यासि भावने प्राप्त थया

ततः खलु स सोमिलस्त देवमेवमवादीत्—इथ खलु देवानुप्रिय ! मम सुप्रव्रजितः । ततः खलु स देव सोमिलमेवमवादीत्—यदि खलु त्व देवानुप्रिय ! इदानीं पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चानुव्रतानि भग्नशिक्षाव्रतानि स्वयमेव उपसपद्य खलु विहरामि तर्हि खलु तवेगानीं सुप्रव्रजित भवेत् । ततः खलु स देव सोमिल वन्दते नमस्यति, गन्धित्वा नमस्थिता यस्या दिश प्रादुर्भूतः यावत् प्रतिगतः ।

ततः खलु सोमिलो ब्राह्मण ऋषिस्तेन देवेन एवमुक्तः सन् पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चानुव्रतानि भग्नशिक्षाव्रतानि स्वयमेव उपसपद्य खलु विहरति । ततः खलु स सोमिलो बहुभिश्चतुर्थपञ्चाष्टमयावन्मामार्द्धमामक्षपणैर्विचित्रैस्त्रयसुपरात्रै रात्मन भावयन् गृह्णीन् वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयति, पात्रयित्वा अर्चयति ।

उसके बाद सोमिलने कहा—हे देवानुप्रिय ! अब आप ही बताओ कि मैं कैसे सुप्रव्रजित बनूँ । उसके बाद उस देवने सोमिल ब्राह्मणसे इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! यदि तुम पहले ग्रहण किया हुआ पाँच अनुव्रत और सात शिक्षाव्रतको स्वयमेव स्वीकार कर विचरण करो तो यह तुम्हारी प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या हो जाय । उसके बाद उस देव सोमिल ब्राह्मणको वन्दन और नमस्कार कर जिस दिशासे प्रादुर्भूत हुआ उसी दिशामें अन्तर्हित हो गया ।

उस देवके अन्तर्हित होजानेपर उसके कथनानुसार वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि प्रथम स्वीकृत पाँच अनुव्रत और सात शिक्षाव्रत अपने हीसे स्वीकार कर विचरण करता है । उसके बाद वह सोमिल बहुतसे चतुर्थ पञ्च अष्टम यावत् मामार्ध मासक्षपणरूप

त्यार पाह सोमिले कछु —हे देवानुप्रिय ! तो हुवे आपका बतावो के हु केवी शीते सुप्रव्रजित बनूँ ? त्याग पत्रा ते देवनाछे से भिन्न ब्राह्मणने मा प्रकारे कछु —हे देवानुप्रिय ने तम डमछा अगाडि अकछु करवा पाय अनुव्रत अने सात शिक्षाव्रतानो पोतानी भेजे न्हीकरा उरीने विचरण करी तो आ तमारी प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या थछु नय त्याग पछी ते देव सोमिल ब्राह्मणने वन्दन अने नमस्कार कर छे पछी ने दिशाभाथी ते प्रादुर्भूत थये हुता तेज दिशाभा अतर्हित थछु थये ।

ते देव अतर्हित थछु गया पछी तेना कथन अनुसार ते सोमिल ब्राह्मण ऋषिने अगाडि स्वीकारेवा पाय अनुव्रत अने सात शिक्षाव्रत पोतानी जते स्वीकारे विचरण करे छे पछी ते सोमिल थछा अतुर् पञ्च अष्टमशी भाडी यावत् मामार्ध

॥ अथ बहुपुत्रिकाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

मूलम्—जडण भते । उम्खेवओ । एव खलु जवू ' तेण  
 कालेणं २ रायगिहे नाम नयरे, गुणसिलए चेडए, सेगिए  
 राया, सामी समोसडे, परिसा निग्गया । तेण कालेण २ बहु  
 पुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे वहपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए  
 वहपुत्तियसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि  
 महत्तरियाहि जहा सूरियाभे जाव भुजमाणी विहरड, डम च  
 ण केवलरुप्प जवूदीव दीव विउलेण ओहिणा आभोएमाणी  
 २ पासड, पासित्ता समण भगव महावीरं जहा सूरियाभो जाव  
 णमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिसहा सन्निसन्ना । आभियोगा  
 जहा सूरियाभस्स, सूमरा घटा, आभिओगियं देव सद्दावेइ  
 जाणविमाण जोयणसहस्सवित्थिण्ण, जाणविमाणवणओ, जाव  
 उत्तरिल्लेण निजाणमग्गेण जोयणसाहस्सिएहि विग्गहेहि आगया  
 जहा सूरियाभे । धम्मकहा समत्ता । तएण सा बहुपुत्तिया  
 देवी दाहिण भुय पसारेड देवकुमाराणा अट्टसय, देवकुमारियाण  
 य वामाओ भुयाओ अट्टसय, तयाणतर च ण वहवे दारगा  
 दारियाओ य डिभए य डिभियाओ य विउव्वइ, नट्टविहि  
 जहा सूरियाभो उवदसित्ता पडिगया भतेत्ति भगव गोयमे  
 समण भगव महावीर वदइ नमसड, कूडागारसाला० । वह-  
 पुत्तियाए ण भते । देवीए सा दिव्वा देविट्ठी पुच्छा जाव  
 अभिसमण्णागया ॥ १ ॥

टीका—‘तएण तस्स’ इत्यादि । असाधुदर्शनेन=साधुदर्शनाभावात् साधु दर्शनाच्च विराधितसम्यक्त्व सोमिलस्तम्य स्थानस्याऽनालोचितताऽप्रतिक्रान्ततया भुक्तावतसके विमाने देवशयनीये यात्रयाऽवगाहनया—यात्रया=यत्परिमितत याऽवगाहनया ज्योतिर्देवस्योपपातो भवति तावत्या जघन्यतोऽङ्गुलासङ्गयेय भागया उत्कृष्टतः सप्तहस्तपरिमाणया अयगाहनया शुक्रमहाग्रहतया समुत्पन्न । जेष स्पष्टम् ॥ ७ ॥

॥ इति पुष्पिताया तृतीयमध्ययन समाप्तम् ॥ ३ ॥

हे गौतम ! शुक्र महाग्रहने इस कारण ऐसी दिव्य देव ऋद्धिको प्राप्त की है । शुक्र महाग्रहकी स्थिति एक पल्योपमकी है ।

गौतम स्वामी प्रश्नते हैं—

—हे भटन्न ! वह शुक्र महाग्रह आयु भव स्थिति क्षय होनेके बाद उस देवलोकसे व्यवकर कहा जायगा ?

हे गौतम ! यह शुक्र महाग्रह महाविदेहक्षत्रमें जन्म लेकर यावत् सिद्ध होगा ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

इस प्रकार हे जम्भ ! श्रमण भगवान महावीर प्रभुने पुष्पिताके तृतीय अध्ययनमें इस भावका निरूपण किया है ॥ ७ ॥

। पुष्पिताका तृतीय अध्ययन समाप्त हुआ ।

हे गौतम ! शुक्रमहाग्रह आ का पृथ्वी पोटाना आवी देव ऋद्धिको प्राप्त करी छे, शुक्रमहाग्रहना स्थिति ओके प पल्योपमनी छे

गौतम स्वामी पूछे छः—

‘हे भटत्ता ! ते शुक्रमहाग्रह आयुलन स्थितिक्षय यत्ता त देवलोकस्थी भव्यीने क्या नये ?

हे गौतम ! आ शुक्रमहाग्रह महाविदेह क्षत्रमा जन्म लय सिद्ध यये

सुधर्मा स्वामी कह छे—

आ भटत्ता छे जम्भ ! श्रमण भगवान महावीर प्रभुके पुष्पिताना त्रीम अध्ययनमा आ सावनु निरूपण करुं-छे (७)

पुष्पितानु तृतीय अध्ययन समाप्त

सुजाना विहरति, इमं च खलु केवलरूप जम्बूद्वीप द्वीप त्रिपुलेन अवधिना  
आभोगयन्ती २ पश्यति, दृष्ट्वा श्रमण भगवन्त महावीर यथामूर्यामो यावद्  
नमस्वित्वा सिंहामनवरे पौरस्त्याऽभिमुखी सनिषण्णा । आभियोगा यथा मूर्या  
भस्य सुम्बरा घण्टा आभियोगिक देव शब्दयति यानविमान योजनसहस्रविस्तीर्ण,  
यानविमानवर्णनं, यावत् उत्तरीयेण निर्याणमार्गेण योजनसाहस्रिकै विग्रहे-  
रगता यथा मूर्याः । रमयथा समाप्ता । तत खलु सा बहुपुत्रिकादेवी

वचन उल्लङ्घित नहीं किया जा सकता एसी, प्रथमतः चार दिशा  
कुमारिकाओंसे परिवृत्त सूर्याभदेवके समान गीतवादित्रादि नानाविध  
दिव्य भोगोंको भोगती हुई विचर रही है, और वह इस सम्पूर्ण  
जम्बूद्वीपको विशाल अवधिज्ञानसे उपयोगपूर्वक देखती हुई राजगृहमें  
समवसुत भगवान महावीर स्वामीको देखती है । और उनको देख-  
कर सूर्याभदेवके समान यावत् नमस्कार करके अपने श्रेष्ठ मिहासन-  
पर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठी । सूर्याभदेवके समान आभि-  
योगिक (भृत्य) देवको बुल्हाकर उमने सुस्वरा घण्टा बजानेकी आज्ञा  
दी । अनन्तर सुस्वरा घण्टा बजवाकर भगवान महावीरके दर्शन  
करनेको जाके लिए सभी देवताओंको सूचित किया । उसका यान-  
विमान हजार योजन विस्तीर्ण या साठे वासठ योजन उँचा या ।  
उसमे लगा हुआ महेन्द्रभवन पचीस योजन उँचा या । अन्तमे वह  
बहुपुत्रिका देवी यावत् उत्तर दिशाके मार्गसे सूर्याभ देवके समान  
हजार योजनका वैक्रयिक शरीर बनाकर उतरी । बादमे भगवानके

आरे दिशा कुमारीओ सहित सूर्याभदेव समान गीत वादित्र आदि नाना विध दिव्य  
भोगोने भोगवती विचरत करती હતી અને તે આ ૧૫૦૦ જમ્બૂદ્વીપને વિગલ  
અવધિજ્ઞાન વડે ઉપયોગપૂર્વક ભેટી ભેટી રાજગૃહના પધારેલ ભગવાન મહાવીર  
સ્વામીને જુએ કે, તેમને ભેઠને સૂચિત્વે પેઠે યાવત્ નમસ્કાર કરીને પોતાના  
શ્રેષ્ઠ મિહાસન ઉપર પૂર્વ દિશાની તરફ મોઢું તાપીને બેઠી સૂર્યાભદેવની પેઠે જ  
આભિયોગિક ( ભૃત્ય ) દેવને બોલાવીને તેણે સુન્દરા ઘટા વગાડવાની આજ્ઞા આપી  
પછી સુસ્વરા ઘટા વગડીને ભગવાન મહાવીરના દર્શન કરવાને જવા માટે સર્વે  
દેવતાઓને સૂચના આપી તેનું યાન વિમાન હજાર યોજનના વિસ્તારવાળું હતુ  
સાઠા વાસઠ યોજન ઊંચું હતુ તેમા ચક્રવૈદ્ય મહેન્દ્રધ્વજ પચીસ યોજન ઊંચો હતો  
છવટે તે બહુપુત્રિકા દેવી યાવત્ ઉત્તર દિશાના માર્ગથી સૂર્યાભદેવની પેઠે હજાર યોજનનુ  
વૈક્રયિક શરીર બનાવીને ઉતરી પછી ભગવાનની પાસે આવી અને ધર્મકથા સાંભળી



जाया-यदि खलु भदन्त ! उत्क्षेपकः । एव सखु जम्बूः ! तस्मिन् माले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगर, गुणशिशु चैत्य, श्रेणिको राजा, स्वामी समप्रसूतः । परिपत् निर्गता । तस्मिन् माले तस्मिन् समये बहुपुत्रिका देवी सौर्ग्ये कल्पे बहुपुत्रिके विमाने सभाया मुग्धमाया बहुपुत्रिके सिंहासने चतसृभिः सामानिस्सास्त्रीभि चतसृभि महत्तरिकाभि यथा सूर्याभो यावद्

### चौथा अध्ययन

‘ जङ्ग भते ’ इत्यादि—

जम्बूस्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! यदि पुष्पिता ( पुष्पिका ) के तृतीय अध्ययनमें भगवानने पूर्वोक्त भावका वर्णन किया है तो फिर उसके बाद चतुर्थ अध्ययनक भावको उन्होंने किम प्रकार निरूपण किया है ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! उस काल उस समयमा राजगृह नामक नगर या उस नगरका राजा श्रेणिक या । उस नगरमें महावीर स्वामी पधारे ! परिपद् उनके दर्शनके लिये निकली । उस काल उस समयमें बहुपुत्रिका देवी सौर्ग्यकल्पके बहुपुत्रिक विमानमें सुधर्मा मभाके अन्दर बहुपुत्रिक सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवियों तथा चार महत्तरिकाओं=तुल्य विभववाली कुमारियोंसे, जिनका

### चौथा अध्ययन

जङ्ग भते इत्यादि

जम्बू स्वामी पूछते हैं—

हे भदन्त ! जो पुष्पिता नाम तृतीय अध्ययनमें भगवानने पूर्वोक्त भावको वर्णन किया है तो पछी तेना छी चौथा अध्ययनमें भगवानने तेमछे क्या प्रकारे निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! ते काल ते समयमें राजगृह नाम नगरमें तु ते नगरमा गुणशिशु चैत्य, जे ते नगरमा महावीर स्वामी पधारे परिपदस्तिभेना दर्शन भाटे । ते काल ते समयमें बहुपुत्रिका देवी सौर्ग्यकल्पके बहुपुत्रिक विमानमें सुधर्मा मभाके अन्दर बहुपुत्रिक सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवियों तथा चार महत्तरिकाओं=ममान वैभववाली कुमारियोंसे, जेनु वयन उद्वयन के करी श्रेष्ठ मन्त्रेरी प्रधानमन्त्र

टीका—‘जग्ण भते’ इत्यादि—महत्तरिकाभिः=प्रधानतमाभिः तुल्यवि-  
भवानि कुमारिकागामनतिक्रमणीयवचनाभि दिशाकुमारिकाभिः, उत्तरीयेण=उ-  
त्तरदिग्भवेन, विषहै=शरीरैः, देवकुमाराणाम्=देवानां=सुराणां कुमाराः=इह र-  
मालिका पुत्रा तेषाम् । नारमान्=इहामालिमान् मालमान्, दारिकाः=मालिका ,  
पुत्रा तेषाम् । नारमान्=इहामालिमान् मालमान्, नारिकाः=मालिका , डिम्भान्  
=अलमालिमान् मालमान्, शेष निगन्सिद्धम् ॥

एतया ‘त्रिणा देविदु पुच्छे’ चि, ‘त्रिणा लद्धा’=केन हेतुनो-  
पार्जिता ? ‘त्रिणा पत्ता’=केन हेतुना प्राप्ता=प्रायत्तीकृता ? ‘त्रिणा जमिमम  
न्नागया’=प्रायत्तीकृताऽपि केन हेतुनाऽऽभिमुख्यन सागन्त्येन च उपार्जनरूप  
पश्चाद् भोग्यतामुपगतेति ? ॥ १ ॥

गौतम स्वामीने प्रश्न -

हे भगवन् ! वह विशाल देवकृद्धि उसमे कैसे बिलीन हो गयी ?

भगवानने कहा--

हे गौतम ! जिस प्रकार किमी उत्तमव आदिके कारण फैला  
हुआ जन समूह वर्षा आदिके कारण पर्वत शिखरके समान उँचा  
और विशाल घग्ग समझा जाता है, उसी प्रकार ये देवकुमार और  
देवकुमारिया आदि देवकृद्धि बहूपुत्रिकाके शरीरमे अन्तर्हित हो गयी ।

गौतमने फिर प्रश्न--

हे भदन्त ! उस बहूपुत्रिकादेवीको इस प्रकारकी दिव्य देव  
कृद्धि किस प्रकार मिली ? और किस प्रकार उसको प्राप्त हुई ?  
और किस पुण्यसे उपभोगमे आई है ? और उन कृद्धियोंके भोग  
नेमें कैसे समर्थ हुई ? ॥ १ ॥

गौतमे प्रश्न -

हे भगवन् ! ते त्रिणा देवकृद्धि तेमा डेवी रीते विनीन यध गध ?

त्यारे भगवान कहे छे -

हे गौतम ! जेही गीने उत्तम प्रत्यये ओकठो थयेवो जनसमूह वसन्त पगेरेना  
दारपुथी पर्वत शिखरना पडे जिया जन निखान घ मा ममाथ जिय छे तेज नक रे  
आ देवकुमार अने देवकुमारीओ पगेरे देवकृद्धि बहूपुत्रिकाना शरीरमा अन्तर्हित  
थध गध

गौतमे प्रश्न प्रश्न - हे भदन्त ! आ बहूपुत्रिका देवीने आ प्रकारनी दिव्य  
देवकृद्धि डेवी रीते भली ? अने डेवी रीते प्राप्त यध अने डेवा पुण्यथी तेना  
उपभोगमे आनी उनी कशी ते कृद्धिओने भोगववाभा डेवी रीते सगथ भध ? (१)

દક્ષિણ મુખ પ્રસાર્યતિ દેવકુમારાણામણ્ણતમ્, દેવકુમારિંગાગા ચ વામતો મુખ-  
તોઽણ્ણતમ્, તદનન્તર ચ સ્વલુ મહન દારકાંશ્ચ દારિકાશ્ચ હિમ્મકાંશ્ચ હિમ્મ-  
કાશ્ચ વિકુરુતે, નાટ્યવિધિં યથા સૂર્યામઃ, ઉપન્દર્ય પ્રતિગતા । મદન્ત ।  
इति भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर उन्दते नमस्यति, कृपागार  
શાલા૦ । મહુપુત્રિકયા સ્વલુ મદન્ત ! દેવ્યા સા દિવ્યા દેવદિઃ', પૃઝા  
યાવત્ અભિમમન્વાગતા ॥ ૧ ॥

સમીપ આદ, ઓર ધર્મકયા સુની । ઉમકે વાન વહ વટ્ટપુત્રિકા દેવો  
અપની દાહિની મુજાકો ફેલાતી હૈ । ઓર ઉસસે ઠક મૌ આઠ દેવ  
કુમારોકો નિકાલતી હૈ । ફિર યાગો મુજાકો ફેલાતી હૈ, ઉસસે  
ઁકસૌ આઠ દેવકુમારિયોકો નિકાલતી હૈ । ઉસકે યા મહનસે દારક  
દારિકા=વહી ઉમરવાલે યચ્છેયચ્છિયોકો તયા દિમ્મક હિમ્મકા=અરપ  
ઉમરવાલે યચ્છેયચ્છિયોકો અપની વૈકથિક શક્તિસે વનાતી હૈ । ઓર  
સૂર્યામદેવકે સમાન નાટ્યવિધિ ણિવાકર ચલી જાતી હૈ । ઉમકે  
જાનેકે વાદ મગવાન્ ગૌતમને 'હે મદન્ત' ઇમ પ્રજાર સમ્બોધન કર  
મગવાન્ મહાવીરકો વન્ન ઓર નમસ્કાર કિયા ઓર પ્રજા કી-હે  
મગવાન્ ! રસ વટ્ટપુત્રિકા દેવકી દિવ્ય ક્રદ્ધિ દિવ્ય બુતિ ઓર  
દિવ્ય દેવાનુભાવ કહૈા ગયા ઓર કિસમે સમા ગયા ।

મગવાનને કહા-

હે ગૌતમ ! વહ દેવક્રદ્ધિ ઉસીકે શરીરસે નિકલી ઓર  
ઉસીમે વિલીન હો ગયી ।

ત્યાર પછી તે મહુપુત્રિકાદેવી પોતાની જમણી ભુજા ( હથ ) - ને દેવાવે છે અને  
તેમાથી ઁકસો આઠદેવકુમારને કહે છે પછી ડાબીભુજાને દેવાવે છે તેમાથી ઁકસો  
આઠ દેવકુમારિએને કહે છે પણ ધયા દારક અને દારિકાઓ ( મેટી ઉમરવાળા  
છોકરા છોકરીઓ ) તયા ડિમ્મક હિમ્મકા (નાના બાળકો અને બાળિકાઓ ) ને પોતાની  
વૈકથિક શક્તિથી બતાવે છ અને સૂ લિદેવની પેઠે નાટ્યવિધિ બતાવીને આની બા  
છે તેના યાયા પછી મગવાન્ ગૌતમે 'મદન્ત' એવુ સમ્બોધન કરી મગવાન્ મહાવીરને  
પદન તથા નમસ્કાર કર્યા અને પૂછ્યુ કે હે મગવાન્ ! આ મહુપુત્રિકાદેવીની દિવ્ય  
ક્રદ્ધિ અને દિવ્ય બુતિ તથા દિવ્ય દેવાનુભાવ કયા ગયા અને શમા મમાઇ ગયા ?

મગવાનને કહ્યું-

હે ગૌતમ ! તે દેવક્રદ્ધિ તેને શરીરમાથી નીકળી અને તેમાજ વિલીન થઇઁ

बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुत्राणुपुत्रिं चरमाणीओ गामाणुगाम  
दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागया, उवा-  
गच्छित्ता अहायडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ताणं सजमेण तवसा  
अप्पाण भावेमाणीओ विहरति ।

तएण तासि सुवचाण अज्जाण एगे सघाडए वाणारसी-  
नयरोए उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए  
अडमाणे भइस्स सत्थवाहस्स गिह अणुपविट्ठे ।

तएण सुभदा सत्थवाही तओ अज्जाओ एज्जमाणीओ  
पासड, पासित्ता हट्ठ जाव खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ  
अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वदइ नमसइ  
वदित्ता नमसित्ता विउलेण असणपाणखाटमसाइमेण पडिला-  
मित्ता एव वयासी-एव खलु अह अज्जाओ । भइेण सत्थ-  
वाहेण सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरामि, नो  
चेव ण अह दारग दारिय वा पयामि, त धन्नाओ ण ताओ  
अम्मगाओ जाव एत्तो एगमवि न पत्ता, त तुब्भे अज्जाओ ।  
बहुणायाओ बहुपडियाओ बहूणि गामागरनगरं जाव सण्णि  
वेसाइ आहिडह, बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईण  
गिहाइ अणुपविसह, अत्थि से केइ कहि चि विजापओए वा  
मतप्पओए वा वमण वा विरेयण वा वत्थिकम्म वा ओसहे  
वा भेसजे वा उवलद्धे, जेण अह दारग वा दारिय वा  
पयाएज्जा ॥ ३ ॥

एव पृष्टे सति भगवानाह—‘एवं खलु’ इत्यादि ।

मूलम्—एव खलु गोयसा । तेण कालेण २ वाणारसी नामं नयरी, अवसालवणे चेडए । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए भदे नाम सत्थवाहे होत्था, अड्डे अपरिभूए । तस्स णं भदस्स य सुभदा नाम भारिया सुकुमाल० वज्रा अविघाउरी जाणु कोप्परमाता यावि होत्था । तए ण तीसे सुभदाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुवरत्ताअरत्तकाले कुडुवजागरिय जागरमाणीए इमेयारूवे जाव सकप्पे समुप्पजित्था—एव खलु अह भदेण सत्थवाहेण सद्धिं विउलाड भोगभोगाइ भुजमाणी विहरामि, नो चेव ण अह दारग वा दारिय वा पयामि, त धन्नाओ ण ताओ अम्मगाओ जाव सुलद्धे ण तासि अम्मगाण मणुयज-म्मजीवियफले, जासि मन्ने नियकुच्छिसभूयगाइ थणदुद्धलु-द्धगाइ महुसमुल्लावगाणि मजुल (मम्मण) प्पजपियाणि थण-मूलकखदेसभाग अभिसरमाणगाणि पण्हयति, पुणो य कोमल-कमलो वमेहि हत्थेहि गिण्हऊण उच्छगनिवेसियाणि देति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मण (मंजुल) प्पभणिए अह ण अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता ओहय० जाव झियाइ ।

तेण कालेण २ सुवयाओ णं अज्जाओ इरियासमियाओ भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाणभडमत्तनिकखेवणास-मियाओ उच्चारपासवणखेलजुसिंघाणपारिट्ठावणासमियाओ मणु-गुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तवभयारिणीओ

बहुसुयाओ बहुपरिवाराओ पुत्राणुपुर्वि चरमाणीओ गामाणुगाम  
दूइजमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागया, उवा-  
गच्छिता अहापडिरूव ओगगह ओगिण्हित्ताणं राजमेणं तवसा  
अप्पाण भावेमाणीओ विहरति ।

तएण तासि सुवयाण अज्जाण एगे संघाडए वाणारसी-  
नयरोए उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए  
अडमाणे भइस्स सत्थवाहस्स गिह अणुपविट्ठे ।

तएण सुभदा सत्थवाही तओ अज्जाओ एज्जमाणीओ  
पासड, पासित्ता हट्ठ जाव खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेड  
अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छड, अणुगच्छित्ता वदड नमसड  
वदित्ता नमसित्ता विउलेण असणपाणखाडमसाडमेण पडिला-  
भित्ता एव वपासी-एव खलु अह अज्जाओ । भइेण सत्थ-  
वाहेण सद्धि विउलाइ भोगभोगाड भुजमाणी विहरामि, नो  
चेव ण अह दारग दारिय वा पयामि, त धन्नाओ ण ताओ  
अम्मगाओ जाव एत्तो एगमवि न पत्ता, त तुब्भे अज्जाओ ।  
चट्ठणायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागरनगरं जाव सण्णि  
वेसाइ आहिडह, बहूण राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईण  
गिहाइ अणुपविसह, अत्थि से केइ कहि चि विज्जापओए वा  
मतप्पओए वा वमण वा विरेयणं वा वत्थिकम्म वा ओसहे  
वा भेसजे वा उवल्ले, जेण अह दारग वा दारिय वा  
पयाएज्जा ॥ ३ ॥

छाया-एष खलु गौतम ! तस्मिन् काठे तस्मिन् समये चारागमी  
 नाम नगरी अन्नशालयन चैत्यम् । तत्र खलु चारागस्था नगर्या भद्रो नाम  
 सार्थवाहोऽभवत्, आढ्योऽपरिभूतः । तस्य खलु भद्रस्य च सुभद्रा नाम भार्या  
 सुकुमारपाणिपादा उन् या अविजनयित्री जानुर्भरमाता चापि अववत् । ततः  
 खलु तस्या सुभद्रायाः सार्थवाहिनाया अन्यथा कदाचिन् पूर्वरात्रापररात्रकोले  
 कुटुम्बगागरिणा जाग्रत्या अयमेतद्गुहो यावत् सख्यः समुत्पन्नत-एव खलु  
 अह भद्रेण सार्थवाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरामि, नो चेन्न  
 खलु अह दारक वा दारिणा वा प्रजनयामि, तद् धन्याः खलु ता अस्मिन्ना-  
 (मानरा) यावत् सुखम् खलु तासाम् अस्मिन्ना (मातृणां) मनुमज्जन्मजीवित  
 फलम् याना मन्ये निजकुक्षिमभूतराः स्तनदुग्धलुब्धका मधुरसमुदापरा  
 मञ्जुल (मम्मण) प्रजल्पिताः स्तनमूलम्भदेशभागम् अभिसरन्त प्रस्तुवन्ति ।  
 पुनश्च रामकमलोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गनिवेशिता (मन्त) ददति  
 समुदापरान् सुमयुरान् पुन पुनर्मम्मण (मञ्जुल) प्रभणितान्, अह खलु  
 अन्या अपुण्या अकृतपुण्या (अस्मि यदह) एतत्. (एतेषा मध्यान्) एरुमपि  
 न प्राप्ता । (ए) अपहतमन-सकृदा यावत् यायति ।

तस्मिन् काठे २ सुव्रता. खलु आर्या. ईर्यासमिता, भाषासमिता,  
 एषणासमिता, आदानभाण्डामन्निक्षेपणासमिता, उच्चारणस्त्रवणश्लेषमलसिंघा  
 णपरिष्ठापनासमिता, मनोगुप्तिना, वचोगुप्तिना. कायगुप्तिना, गुपेन्द्रिया, गुप्त  
 रत्नचारिण्य, गृहश्रुता, गृहपरिवारा पूर्वानुपूर्व चरन्त्य ग्रामानुग्राम द्रवन्त्य  
 यत्रैव चाराणसी नगरी तत्रैवोपागता, उपागत्य यथाशक्तिरूपम् अवग्रहम् अव  
 गृह्य सयमेन तपसा आत्मान भावयन्त्यो विहरन्ति ॥

ततः खलु तासा सुव्रतानामार्याणाम् एक सङ्घाटको चाराणमीनगर्या  
 उच्चनीचमभ्यमानि कुलानि गृहसमुदानस्य भिक्षाचर्यायै अटन् भद्रस्य सार्थवा  
 हस्य गृहमनुमविष्ट ।

ततः खलु सुभद्रा सार्थवाहिना ता आरा एजमाना पश्यति, दृष्ट्वा  
 हृष्ट यावत् क्षिप्रमेव आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदानि अनुग-  
 च्छति, अनुगत्य वन्दते नमस्यति, गन्धित्वा नमस्थित्वा विबुलेन अशनपात्र  
 खाद्यम्वागेन प्रतिलम्ब्य एवमत्रादीन्-एव खलु अहम् आर्या ! भद्रेण सार्थ-  
 वाहेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरामि नो चेन्न खलु अह  
 दारक दारिणा वा प्रजनयामि, तद् धन्याः खलु ता अस्मिन्ना (मातरः)

यावत्-एततः एकमपि न प्राप्ता, तद् यूयम् आर्याः । बहुज्ञाभ्यः बहुपठिताः  
बहून् ग्रामाऽऽकान्तनगरं यावत् सन्निवेशान् आण्डि-वे गृह्णा राजेश्वरतल  
वरं यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां गृहान् अनुप्रविश्य, अस्ति स श्वित् क्वचित्  
विद्याप्रयोगो वा मन्त्रप्रयोगो वा वमन वा विरेचन वा उस्तिर्कर्म वा आपध  
वा भैषज्य वा उपलब्ध येनाह दारक वा दारिद्र्य वा प्रजनयामि ॥ २ ॥

टीका-‘एव खलु गोयमा’ इत्यादि-हे गौतम ! एव खलु तस्मिन्  
काले तस्मिन् समये ‘वाराणसी’ नाम नगरी ‘आम्रशालवन’ चैत्य चासीत्  
तत्र=वाराणस्या नगर्यां खलु भद्रो नाम सार्थवाहाऽभूत् आढ्यः अपरिभूतः,  
एतद्व्याख्या प्रागेवोक्ता । तस्य खलु भद्रस्य च सुभद्रा नाम भार्या सुकुमार-  
पाणिपादाऽन्या अविजनयित्री=पुत्रादिभ्यानामप्रसवशीला, अत एव ‘जानु-  
कूर्परमाता’-जानुकूर्पराणामेव माता=जननी या सा तथा, यद्वा-जानुकूर्परण्येव  
नत्वपत्य मिमते=स्पृशन्ति तस्या स्तना इति अथवा-जानुकूर्परमात्रेतिच्छाया-

ऐसे पृष्ठनेपर भगवान कहते हैं—

‘एव खलु’ इत्यादि—

हे गौतम ! उस काल उस समयमे वाराणसी नामकी नगरी  
थी । उस वाराणसी नामकी नगरीमे आम्रशालवन नामक उद्यान  
था । उस नगरीमे भद्र नामका सार्थवाह रहता था जो धनवान्यादिसे  
समृद्ध और दूसरोंसे अपरिभूत था । उस भद्र सार्थवाहकी पत्नीका  
नाम सुभद्रा था, जो सुकुमार हाथ पैरवाली थी । परन्तु वह अन्या  
थी । अतएव उसने एक भी सन्तानको जन्म नहीं दिया था ।  
केवल जानु और कूर्परकी माता थी । यहाँ “जानुकूर्परमाता” का यह  
भी अर्थ होता है=जिसके स्तनोंको केवल छुटने और कोहनियाँ स्पर्श

गौतम स्वामीय आवा प्रश्नो पूछाथी भगवान कहु —

‘एव खलु’ इत्यादि

हे गौतम ! ते काल ते समये वाराणसी नामे नगरी હતી તે વારાણસી નગરીમા  
આમ્રશાલવન નામનો ઉદ્યાન (બાગ) હતો તે નગરીમા ભદ્ર નામનો સાર્થવાહ રહેતો  
હતો કે જે ધનધાન્યાદિથી સમૃદ્ધ અને બીજાઓથી અપરિભૂત (અછત) હતો તે ભદ્ર  
સાર્થવાહની સાનુ નામ સુભદ્રા હતી જે સુકુમાર હાથપગવાળી હતી પરંતુ તે વાળણી  
હતી એટલે તેણે એક પણ સંતાનને જન્મ આપ્યો નહોતો કેવળ બાનુ અને કૂર્પરની  
માતા હતી અહીં “જાનુકૂર્પરમાતા” નો એવો અર્થ થાય છે કે જેના સ્તનોને કેવળ



जानुर्गर्पराण्येव मात्रा=परिकरः=कोडनिवेशनीयः, परकीर्य=पुत्रादिसहायतासमर्थ  
 रूपो यस्याः न तु स्वपुत्रलक्षण उत्सङ्गनिवेशनीयः परिकरः, इति जानुर्गर्प  
 मात्रा च अपि अभवत् । ततः=तदनन्तर-तस्याः=पूर्वोक्तायाः खलु सुभद्रायाः  
 सार्थवाहिकायाः अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाले रात्रिपूर्वपरभागसमये  
 कुटुम्बजागरिणा जाग्रत्या=कुटुम्बार्थं जागरणा कुर्वत्या अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमा  
 णलक्षणः 'यावत्' शब्देन आयात्मिकः, चिन्तित, प्रार्थितः, मनोगतः समुत्प  
 -समुदपद्यत=जातः, आयात्मिकादिसकल्पान्तानां पदानां व्याख्या प्रागेव कृता ।  
 सुभद्रायाः सकल्पस्वरूपमाह- 'एव खल्वि' त्यादिना-अह=सुभद्रा सार्थवाहिका  
 भद्रेण=तन्नामकेन सार्थवाहेन स्वपतिना सार्द्धे=सह विपुलान्=बहुन् भोगभोगान्=  
 शब्दादीन्-विषयान् शुद्धानां विहरामि, किन्तु नो-चैव खलु अहं दारक=पुत्र  
 -दारिद्र्य=मन्या वा प्रजनयामि=प्रसूये, तत्=तस्मात् हेतोः खलु ता-अम्बिका=  
 -मातरो धन्या वन=प्रशमारूपमर्हन्तीति धन्या=कृतार्थाः, यावन्-उद्देन-पुण्या,

करती थी, नकि सन्तान । अथवा यहाँ "जानुर्गर्परात्रा" यह भी  
 छाया होती है । इसका अर्थ होता-है-जिसके जानु और गूर्पर  
 , अर्थात् गोदी और हाथ दूसरोंके पुत्रोंके लाड प्यारमें ही समर्थ थे,  
 नकि अपने पुत्रोंके लाड प्यारमें । क्योंकि उसको अपनी कोई  
 , सन्तान, नहीं थी ।

उसके बाद एक समय पिछली रातमें कुटुम्बजागरणा करती  
 हुई, उस सुभद्रा सार्थवाहीके हृदयमें यह इस प्रकारका आध्यात्मिक,  
 चिन्तन प्रार्थित और मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ कि-मैं भद्रसार्थवाहके  
 -साथ-अनेक-प्रकारके शब्दादि विपुल भोगोंको भोगती हुई विचरण  
 कर रही हूँ । परांजातक मेरे एक भी सन्तान-नहीं हुई । वे माताएँ

गोष्ठि अने काष्ठीओ कृ २५३ करती होती नहि कि सन्तान अथवा अर्द्धी 'जानुर्गर्प  
 -रात्रा' ओवी पक्ष छाया थाय छे-ओनी अर्थ ओवी थाय छे के ओना ओतु अने दूर्पर  
 ओदे-ओओ अने होथ बीजना पुत्रने लाड प्यारभाज समर्थ होता, नहि के पोताना  
 , पुत्रने लाड प्यारभा करण के तेन पोताना सन्तान नहोतु ।  
 , त्यार पथी ओव पथी-आछी-रात्रिभा-कुटुम्बजागरणोकरता ते सुभद्रा सार्थ-  
 वाहीना हृदयभा आ ओक ओवा प्रकरने आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, अने मनोगत  
 सिकल्प उत्पन्न थयो के हु-सक सार्थवाही-साथ-अने प्रकरना शब्द आदि विपुल  
 , भोगने, भोगवर्त विचर छु-पक्ष आओओओ अने अर्द्धी सन्तान वधु नथी ते

कृतपुण्याः, कृतलक्षणाः, इत्येवा सङ्गृहो विधेयः, तत्र पुण्याः=पवित्राः कृत-  
पुण्याः=विहितसुकृताः, कृतलक्षणाः=सफलीकृतलक्षणाः, पुनस्तासाम् अभिसरणाः=  
मातृणा मनुजजन्म, जीवितफलम्=जीवनफलम् च सुलब्धम्=सम्पत्प्राप्तम् सफल-  
मिति यावत् मन्ये=स्वीकुर्वे, यामा मातृणा निजकुक्षिसम्भूता =स्वकीयोदरजाता  
शिशवः, अत्र सूत्रे नपुंसकत्व प्राकृतत्वात् । स्तनदुग्धलुब्धमा=स्तनयोर्दुग्ध तस्मिन्  
लुब्धमा=प्रसक्ता, त एव दुग्धमा, मधुरसमुद्रापकाः मधुरा= श्रवणरमणीया,  
समुद्रापकाः=सम्पगुचैः शब्दाः येषां ते तथा, मञ्जुल (मम्मण) प्रजल्पिता=  
मञ्जुल=रचिर हृद्यम्पूहणीयमिति यावत्, प्रजल्पित (मा-मा प्रभृति)-  
शब्दोच्चारण येषां ते तथा, स्तनमृत्प्रदेशभागम्=स्तनयोर्मूलम् स्तनमूलम्  
तस्मात् कक्षावेव देशे 'मातृमूले उभे कक्षा' इत्यमरात्, मातृमूत्रप्रदेशौ  
तयोर्भाग =प्रान्तस्तम् अभिसरन्तः सम्भुत्वाभिसरण कर्त्राणः प्रस्तुवन्ति=मातृ-  
स्तन्य प्रसारयन्तीत्यन्तर्भावितव्यर्थः । तथा पुनश्च कामलरुमलोपमाभ्या=कोम-

धन्य है, पुण्यशील है, उन्होंने पुण्योंका अर्जन किया है, उनका  
स्त्रीत्व सकल है और उन माताओंने अपने मनुष्य जन्म और जीवनका  
फल अच्छीतरह पाया है, जिन माताओंकी अपने उदरसे उत्पन्न,  
स्तनके दूधकी लोभो, कानोंको लुभानेवाली वाणीको उच्चारण करनेवाली  
माँ ! माँ ! ! इस हृदयस्पर्शी शब्दको बोलनेवाली, तथा स्तनमूल  
और कक्षके बीच भागमें अभिसरण करनेवाली सन्तान उन माताओंके  
स्तनोको दूधसे परिपूर्ण करती है अर्थात् सन्तानके वात्सल्यसे माताके  
स्तनोमें दूधभर आता है । फिर वे सन्तान कोमल कमल मद्दश-  
हाथोंके द्वारा गोदमें बैठायी जानेपर उच्च स्वरसे उच्चारित कानोंको  
अच्छे लगनेवाले मधुर शब्दोंको सुनाकर माताओंको प्रसन्न करती है ।

माताने धन्य ठे-ते पुण्यशील छे-तेमझे पुण्य भेज थु ठे तेमनु स्त्रीपणु नदण छे  
अने ते माताओंके, पोतानो मनुष्य जन्म अने जीवननु कण सारी गीते भेजण्यु छे  
४ ते माताओंके, पोताना उदरथी उत्पन्न, स्तनना दूधना लोभवाणा, जानोने ललचाव-  
नागी वाणी भोलता मा मा ओवा हृदय स्पर्शी शब्द भोलता तथा स्तनमूल अने  
कामल वयला भागमा अभिसरण करवावाला सन्तान ते माताओंना स्तनन दूधथी  
परिपूर्ण करे ठे अर्थात् सन्तानना नेहथी माताना स्तनोमा दूध सराध नय छे  
पछा ते सन्तान कामल कमल नैवा हाथो पडे भोजानां भेमाडवाभो आवे त्यादे  
उया स्वरथी भोतीने जानोने साइ लागे ओवा मधुर शब्दोने साकणीने माताओंने  
प्रसन्न करे छे

લપદ્મજસદશાભ્યા દસ્તાભ્યા વૃદ્ધીત્વા ઉત્સદ્ગનિવેશિતાઃ=ઉત્સદ્ગઃ ક્રોડઃ (અક્રૂ)  
તત્ર નિવેશિતાઃ=સ્થાપિતાઃ મત્ત. સમુદ્ધાપકાન્=સમ્યગુચ્ચૈઃ શબ્દાન્ સુમધુરાન્  
પુનઃ પુનઃ=ધૂયો ધૂયઃ મમ્મણ (મઞ્જુલ) પ્રમણિતાન્=મા મા ઇતિ શ્રવણરમણી  
યમાપિતાન્ દદતિ=માતૃપૃથ્વીત્રિશ્રવણાય ચિતરન્તિ તાદૃશાન્ શબ્દાન્ કુર્વન્તીતિ ભાવઃ ।

અહ=સુમદ્રા સલુ = નિશ્ચયન શરન્યા, અપુણ્યા=અપવિત્રા યદ્વા એન  
સ્મિન્ જન્મનિ પુણ્યરહિતા, અકૃતપુણ્યા=અસંશ્ચિતમુકૃતા પૂર્વજન્મન્યપિ અસ  
મ્યાદિતદાનાદિસુ કર્મફળાપેતિ તાત્પર્યમ્, અસ્મિ, યદ્ એતતઃ=એતન્મ યાત્  
પૂર્વોક્તિવિશેષણવિશિષ્ટાના પુત્રાણા મમ્યાત્ એમપિ સન્તાન ન પ્રાપ્તા=ન લગ-  
તી, ઇત્યેવ પ્રકારેણ અપદ્મતમન'મફલવા=ચિન્ટમનોઽભિચ્છિપિતમમના 'યાવદ્'  
શબ્દેન અધોમુખીત્યાદીના પ્રાગુક્તાના સગ્રહો યો ય, ધ્યાયતિ=આર્ત યાન

મે માગ્યહીન છું, પુણ્યહીન છું ઓર મેને પૂર્વજન્મમે કમી  
પુણ્યોપાર્જન નહી ક્રિયા ઇસી લિયે ઇનમેસે સન્તાન સમ્બન્ધી એક  
મી સુખકો ન પાસકી ક્યોંકી મુદ્દે એક મી સતાન નહીં હુઈ ।  
ઇસ પ્રકાર સોચ-ચિચાર કરતી હુઈ વહ અત્યન્ત દીન તથા મલીન  
હો નીચા મુલ્લ કરકે આર્તધ્યાન કરને લગી ।

ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં ઈર્યાસમિતિ, ભાષાસમિતિ, વ્યવહારસમિતિ  
તથા આદાન, માણ્ડ ઓર અમત્રકે નિશ્ચેષણાકી સમિતિ, ઓર ઉચ્ચાર  
પ્રસવણ-શ્લેષ્મ-નિદ્ધાણ-પરિષ્ઠાપના સમિતિ, ઇન સમિતિયોસે તથા  
મનોગુપ્તિ, વચોગુપ્તિ ઓર કાયગુપ્તિ, ઇન તીનો ગુપ્તિયોસે યુક્ત,  
ઇન્દ્રિયોંકો દમન કરનેવાલી, ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી, ગૃહ્યશ્રુતા=ગૃહ્ય શાસ્ત્રોંકો  
જાનનેવાલી, ઓર ગૃહ્ય પરિવારો ઉક્ત, સુવ્રતા નામકી આર્યોં,

હું માગ્યહીન છું-પુણ્યહીન છું-અને મે પૂર્વજન્મમા કરી પુણ્યનું ઉપાર્જન  
નથી કર્યું તેથી સતાન સળધી આ સુખેમાનું એક પણ સુખ મેમવી શકી નથી કેમકે  
અને એક પણ સતાન થયું થી આ પ્રધારે સોચ વિચાર કે તી તે અત્યન્ત દીન તથા  
મલીન થઈ નીચે સુખ કરી આર્તધ્યાન કરવા લગી

ત કાલ તે સમયે ઈર્યાસમિતિ, ભાષાસમિતિ એવહ્યુનમિતિ તથા આદાન ભાડ  
અને અમત્રની નિશ્ચેષણાકી સમિતિ તથા ઉચ્ચારણ પ્રસવણ, ૧૦૮ પ્રિધાણ પરિષ્ઠાપના  
સમિતિ આ બધી સમિતિએથી તથા મનોગુપ્તિ વચોગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ આ ત્રણ  
ગુપ્તિએથી યુક્ત ઇન્દ્રિયોને દમન કરવાવાળા, ગુપ્તબ્રહ્મચારિણી ગૃહ્યશ્રુતા=ગૃહ્યશાસ્ત્રોન  
જાણવાવાળી અને ગૃહ્ય પરિવારથી યુક્ત, સુવ્રતા નામની આર્યો તીર્થ કર્મ પર પરાધી.

मरोति । सुव्रताः=तन्नामिका आर्यिका । 'सद्वाटक'='साध्वी समूहः, गृहसमु-  
दानस्य=गृहेषु=अनेकेषु गेहेषु समुदान=मिक्षाटन, गृहसमुदानम् अनेकगृहगृहीत  
भैक्ष तस्य तथा, शेष मुगमम् ॥ २ ॥

तीर्थङ्कर परम्परासे विचरण करती हुई ग्रामानुग्राम विहार करती हुई  
वाराणसी नगरीमें आयी । वहाँ आकर कल्पानुमार अवग्रह=आज्ञा  
लेकर उपाश्रयमें उतरी और समय तपके द्वारा अपनी आत्माको  
भावित करती हुई विचरने लगी ।

उसके बाद उन सुव्रता आर्याओंका एक सघाडा वाराणसी  
नगरीके उच्च नीच मध्यम कुलोमें गृहसमुदानी भिक्षा ( अनेक घरोंसे  
लीजानेवाली भिक्षा ) के लिये फिरता हुआ भद्रासार्थवाहके घरमें  
आया । उसके बाद सुभद्रा सार्थवाही आती हुई उन आर्याओंको  
देखा और उनको देखकर उसका हृदय हृष्ट और तुष्ट हो गया,  
और विनयके लिये शीघ्र ही आमनके उठी । उठकर सात आठ  
पग सामने गई । सामने जाकर उनको वन्दन नमस्कार किया । बाद,  
विपुल अशन पान स्वाद्य स्वाद्यका प्रतिलाभ कराकर इस प्रकार बोली

हे देवानुप्रिये । मैं भद्रासार्थवाहके साथ अनेक प्रकारके विपुल  
भोगोंको भोगती हुई विचरती हूँ । परन्तु आज तक मेरे एक भी  
मन्तान नहीं हुई । वे माताएँ भ्रम्य हैं, पुण्यशीला हैं उन्होंने पूर्व

विचरती एक गाभथी भीने गाभ विहर करती व ती वाञ्छुभी नगरीमा आयी थी  
आयीने ववानुमार अवग्रह=अज्ञा लधने उपाश्रयमा उतरी अने मध्यम तथा तपद्वारा  
पोगाना आत्मने भावित करती व ती विचरवा लागी

त्या पछा ते सुव्रता आर्याओने ओठ म गाढा वाराणसी नगरीमा उच्च नीच  
अने मध्यम कुलमा गृहसमुदानी भिक्षा ( अनेक घरमाथी लेवानी भिक्षा ) ने मागे  
देरता देरता भद्रासार्थवाहना घरमा आव्यो । त्थार पछी सुभद्रा सार्थवाहीओ ते आर्याओना  
आवनी ओछ अने तेभने ओछने ते सार्थवाहीनु हृदय हृष्ट अने तुष्ट थछ ७ यु अने  
तेभनु स्वागत पित्त करवा भेटे तुरत पोताने आसनेथी छी छीन माग आठ  
पगना सामे गछ अने तेभने वन्दन नमस्कार कर्था त्थार पछी विपुल अशन (पान)  
पान भाद्य ७ भक्षना प्रतिलाभ करावी आ प्रकारे बोली

हे देवानुप्रिये ! हु भद्र सार्थवाहनी साथे अनेक प्रकारका विपुल भोग ।  
भोगवीने विचरि छु परन्तु आजपर्यन्त मन ओछ पछा सतान थ्यु नथी ते  
माताओने भ्रम्य छे-ते-पुण्यशीला छे-तेभने पूर्व-जन्मा पुण्य उपाज्जन कर्छु छे

જન્મમે પુણ્ય-ઉપાર્જન ક્રિયા, હૈં ઓર ઉને માતાઓને હો અપને મનુષ્ય-જન્મ-ઓર જીવનકા ફલ અચ્છી તરહ-પાયા હૈં - જિન માતાઓકી અપને ઉદરસે ઉત્પન્ન, સ્તનકે દૂધકી લોભી, કાનોકો લુભાનેવાલી, ઘાળીકો ઉચારણ કરનેવાલી, માં ! માં !! - ઇમ હૃદયસ્પર્શી, ગાંઠકો પોલનેવાલી, તથા સ્તન, મૂલ ઓર કશ્કકે વીચ માગમે-અમિસરણ કરનેવાલી સન્તાન, ઉને માતાઓકે-સ્તનોકો, દૂધસે-પરિપૂર્ણ કરતી-હૈં ફિર વે કોમલ કમલ સદૃશ ત્રાયોકે દ્વારા ગોદીમે બેઠાયે જાનેપર ઉચ્ચ, સ્વરોસે, ઉચારિત, કાનોકો-અચ્છે લગનેવાલે, મધુર-શબ્દોકો બોલકર માતાઓકો-પ્રમદ્ધ કરતી, હૈં । મેં ભાગ્યહીન-હૂં, પુણ્યહીન-હૂં, મૈને કમી પુણ્યાચરણ નહીં ક્રિયા ઇમી, લિયે ઇન સમી સુખોમેસે ઇક-મી, સુખકો- ન-પા, સકો, ।, કયો કિ મુઝે ઇક-મી સતાન નહીં-હુઈ- ।

... હૈં-દેવાનુપ્રિયો !, આપ લોગ, ગહન-જ્ઞાનવાલી હ, વહુતસી વાતોકો જ્ઞાનતી-હૈં ઓર, ગહુતસે-ગ્રામ, નગર યાવત્ સન્નિવેશોમે વિ, ચરતી હૈં, વહુતસે રાજા, ઈશ્વર, તલવર-આદિસે, લેકર માર્થવાહીકે ઘરોમે, ભિક્ષાર્થ આપકા જ્ઞાન-હોતા-હૈં- । કયા કહી-કોઈ-વિદ્યા-પ્રયોગ-વા-મુત્ર-પ્રયોગ, યમન અથવા વિરેચન, વસ્તિકર્મ વા ઔપધ

અને તે માતાઓએ જ પીતાના મનુષ્યજન્મ અને જીવનનું રંગ સારી રીતે મેળવ્યું છે કે જે માતાઓના પિતાના ઉત્પન્ન, સ્તનના દૂધ માટે લોભી કાનોને લલચાવનારી વાણી બોલતા, મા-મા એવા હૃદયસ્પર્શી-શબ્દને બોલવાવાળા તથા સ્તનમૂલ અને કૂખની વચલા લોગમા અભિસરણ કરવાંવાળા સતાન તે માતાઓનાં અનેને દૂધથી પરિપૂર્ણ કરે ઇ ધણી તે કોમલ કમળ જેવા હાથો વડે બોળામા બેસાડતો ઉચ્ચ સ્વરથી બોલી કાનોને સોડે લોગ તેવી મધુર ગંદે બોલીને માતાઓને પ્રમદ્ધ કરે છે હું ભાગ્યહીન છું, પુણ્યહીન છું, મેં કંઠી પુણ્યનું આચરણ ક્યું, નહીં તેથી આવા પ્રકારનો સુખોમોથી હું એક પણ સુખને મેળવી શકી, નહિ કમકે અને એક પણ સુતાન થયું નથી

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ લોક ગહ, શાવાળા છે, ઘણીએ વાતોને બોલો છે અને ઘણા ગામ નગર યાવત્ સન્નિવેશોમા વિચરો છે ઘણા ઘણા રાજા, ઈશ્વર, તલવર આદિથી માડીને માર્થવાહીના ઘરામા ભિક્ષાર્થ આપને બવાનુ-પણ આપ છે તે શુ કયાય છેઈ વિદ્યાપ્રયોગ અથવા મુત્રપ્રયોગ, યમન અથવા વિરેચન, વસ્તિકર્મ

मूलम्-तएण ताओ अज्जाओ सुभदं सत्थवाहि एव वयासी  
-अम्हे ण देहाणुप्पिए । समणीओ, निग्गथीओ इरियासमियाओ  
जाव गुत्तवभयारीओ, नो खलु कप्पड अम्ह एयमद कण्णेहि  
वि णिसामित्तए, किमंग । पुण उदिसित्तए वा समायुरित्तए वा,  
अम्हे ण देवाणुप्पिये । णवर तव विवित्त केवल्लिपणत्त धम्मं  
परिकहेमो ।

तए ण सुभदा सत्थवाही तासि अज्जाण अतिए धम्मं  
सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठा ताओ अज्जाओ तिखुत्तो वदड नमंसड,  
वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-सद्धहामिणं अज्जाओ । निग्गथं  
पावयेण, पत्तियामिण रोएमिण अज्जाओ । निग्गथ पावयेण ।  
एवमेय, तहमेय, अवितहमेय, जाव सावगधेम्म पडिवज्जए ।  
अहासुह देवाणुप्पिए । मा पडिवध करेह । तएण सा सुभदा  
सत्थवाही तासि अज्जाण अतिए जाव पडिवज्जड, पडिवज्जित्ता  
ताओ-अज्जाओ वदड नमसड पडिविसज्जड ।

तएणं सुभदा सत्थवाही समणोवासिया जाया जाव विह-  
रड् । तएणं तीसे सुभदाए समणोवासियाए अण्णया कयाड  
पुव्वरत्तावरत्तकालसमए कुडुवजागरियं जागरमाणीए समाणीए  
अयमेयारूवे अज्झित्थिए जाव सकप्पे समुपज्जित्या-एव खलु  
अह भद्रेण सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाडं भोगेभोगाडं भुज्जमाणी  
जाव विहरामि, नो चेव ण अह दारग वा दारिग वा पयामि,

अथवा मैपज्य आपको मिला है ? जिससे मेरे लडका या लडकी  
हो सके ॥ २-॥

दे, जो १५-अथवा दोषज्य तमने २०५ छ ? जथा भने पुन दे पुत्री छु शडे ? (२)

त सेय खलु ममं कल्ल पाउप्पभायाए जाव जलंते भइस्स  
 आपुच्छित्ता सुवयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ  
 जाव पव्वइत्तए, एव सपेहेइ, सपेहित्ता, कल्ले जेणेव भइ  
 सत्थवाहे तेणेव उवागया, करतल-जाव एव वयासी-एव खलु  
 अह देवाणुप्पिया । तुब्भेहि सद्धिं बहुइ वासाइ विउलाइ  
 भोगभोगाइ भुजमाणी जाव त्रिहरामि, नो चेव णं दारगं वा  
 दारिय वा पयामि, त इच्छामि णं देवाणुप्पिया । तुब्भेहि  
 अब्भणुण्णाया समाणी सुवयाण अज्जाणं जाव पव्वइत्तए ।  
 तएण से भइ सत्थवाहे सुभइ सत्थवाही एव वयासी-मा  
 ण तुम देवाणुप्पिया । इदाणि मुडा जाव पव्वयाहि, भुजाहि  
 ताव देवाणुप्पिए । मए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ, ततो  
 पच्छा भुत्तभेइ सुवयाणं अज्जाण जाव पव्वयाहि । तए णं  
 सुभइ सत्थवाही भइस्स० एयमइ नो आढाइ नो परिजाणइ  
 दोच्च पि तच्चपि भइ सत्थवाही एव वयासी-इच्छामि णं  
 देवाणुप्पिया । तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी जाव पव्वइत्तए ।  
 तए ण से भइ सत्थवाहे जाहे नो सचाएइ बहूहि आघयणाहिय  
 एव पन्नवणाय सन्नवणाहिय विण्णवणाहिय आघवित्तए वा  
 जाव विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव सुभइए नि-  
 कखमण अणुसग्गित्था ॥ ३ ॥

त्राया—तत्र खलु ता आर्यानां सुभद्रा सार्थवाहीमेवमवादिषु—वयं  
 खलु देवानुप्रिये ! भ्रमण्यो निर्ग्रन्थ ईर्णसमिता यावत् एतद्वत्सवारिण्य,

नो खलु कल्पते अम्मारुप् एतमर्थं कर्णाभ्यामपि निशामयितुं किमङ्ग ! पुनरु-  
पदेष्टुं वा सनाचरितुं वा, यय खलु देवानुप्रिये ! नवर तव विविध केवल-  
प्रज्ञप्त धर्मं परिकथयामः ।

ततः खलु सुभद्रा सार्ववाही तासामार्याणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य  
हृष्टनुष्टा ता आर्यास्त्रिकुन्वो वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—  
श्रद्धामि खलु आर्याः । निर्ग्रन्थं प्रवचनं, प्रत्येभि खलु, रोचयामि खलु  
आर्याः । निर्ग्रन्थं प्रवचनम् एवमेतत्, तत्त्वमेतत्, अत्रितयमेतत्, यावत् श्राव-  
-

‘तएण ताओ’ इत्यादि—

उसके बाद वह साध्वी उस सुभद्रा सार्ववाहीसे इस प्रकार  
बोली—

हे देवानुप्रिये ! हम लोग ईर्यासमिनि आदि समितिगोसे  
तथा तीन गुप्तियोंसे युक्त, इन्द्रियो वशमे रखनेवाली गुप्तब्रह्मचारिणी  
निर्ग्रन्थ श्रमणी हैं ? हमको इन बातोंका जानोसे सुनना भी नहीं  
कल्पता, तो फिर हम लोग इनका उपदेश या आचरण कैसे कर  
सकती ह । हे देवानुप्रिये ! विशेष यह है कि हम लोग केवल  
प्ररूपित दानशील आदि नाना प्रकारके धर्मका ही उपदेश करती  
हैं । उसके बाद वह सुभद्रा सार्ववाही उन आर्याओंसे धर्म सुनकर  
उसे हृदयमे धारण कर हृष्ट-नुष्ट हृदयसे उनको तीनचार वन्दन  
और नमस्कार कर इस प्रकार बोली—हे देवानुप्रिये ! मैं निर्ग्रन्थ प्रव-  
चनपर श्रद्धा करती हूँ, विश्वास करती हूँ । निर्ग्रन्थ प्रवचनपर मेरी

‘तएण ताओ’ इत्यादि—

त्यार बाद ते साध्वी (आर्या) ते सुभद्रा सार्ववाहीने आ-प्रज्ञादे बोली —

हे देवानुप्रिये ! अमे लोक धर्मा भविति आदि समितिगो तथा त्रय  
शुक्तिगोथी युक्त इन्द्रियाने वशमा गुप्तावाणां, गुप्त ब्रह्मचारिणी त्रय य श्रमणी  
छीये अमा । लोडोने आवी आणत कानोथी सावणणी पणु कल्पनी नथी ता पछा तेना  
उपदेश अथवा आथ छ डेवी रीने करी शक्कीये ? हे देवानुप्रिये ! विशेष ये छे के  
अमे लोडो डेवली प्रज्ञपित दान शील आदि नाना प्रकारना धर्मनाज उपदेश करीये  
छीये त्यार बाद ते सुभद्रासार्ववाही ते आर्याओ पासेथी धर्म सावणीने ते हृदयमा  
धरणी करी हृष्ट-नुष्ट हृदयथा तेमने त्रय बार वदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे  
बोली — हे देवानुप्रिये ! हे निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करे छु-विश्वास करे छु



ધર્મે પ્રતિપત્તે । યથામુલ્લ દેવાનુપ્રિયે ! મા પ્રતિવન્ધ કુરુ । તતઃ સ્વલુ સા  
સુભદ્રા સાર્થવાહી તાસામાર્યાણામન્તિકે યાત્ પ્રતિપદ્યતે, પ્રતિપત્ત યા આર્યાઃ  
ચન્દતે નમસ્યતિ પ્રતિવિસર્જયતિ ।

તતઃ સ્વલુ સુભદ્રા સાર્થવાહી શ્રમણોપાસિકા જાતા યાત્ વિહરતિ ।  
તતઃ સ્વલુ તસ્યા સુભદ્રાયાઃ શ્રમણોપાસિકાયા અન્યદા કદાચિત્ પૂર્વરાત્રાપર  
રાત્રકાલે કુદુમ્બજાગરિકા જાગ્રત્યા સત્યાઃ અયમેતદ્રૂપો યાત્ સમુત્પદ્યત-  
૯૪ સ્વલુ અહ મદ્રેણ સાર્થવાહેન સાર્દ વિપુલાન્ ભોગભોગાન્ શુજ્ઞાના યાત્  
વિહરામિ, નોત્રે સ્વલુ અહ દારુક યા દારિકા યા મજનયામિ, તત શ્રેયઃ સ્વલુ  
મમ કલ્પે પ્રાદુર્યાવત્ ઝલતિ મદ્રમાપૃચ્છય સુત્રતાનામાર્યાણામન્તિકે આર્યા

રુચિ હુઈ હૈ । આપને જો ઉપદેશ દિયા હૈ વહ સત્ય હૈ,-સર્વથા સત્ય  
હૈ, મૈ યાવત્ શ્રાવક ધર્મકો સ્વીકાર કરતી હૈ । ઉન આર્યાઓને  
કહા-હે દેવાનુપ્રિયે ! જિસ પ્રકાર તુમ્હે સુખ હો વૈસા હી કરો ધર્મ  
ચરણમે પ્રમાદ મત કરના । ઉસકે બાદ ઉસ સુભદ્રા સાર્થવાહીને ઉન  
આર્યાઓકે સમીપ નિર્ગન્થ ધર્મકો સ્વીકાર કિયા । અનન્તર ઉન  
આર્યાઓકા વન્દન ઓર નમસ્કારકે સાથ વિસર્જન કિયા ।

ઉસકે બાદ વહ સુભદ્રા સાર્થવાહી શ્રમણોપાસિકા હો ગયી,  
યાવત્ શ્રાવકધર્મ પાલતી હુઈ વિચરને લગી । ઉસકે બાદ એક સમય  
પિછલી રાતમે કુદુમ્બજાગરણા કરતી હુઈ ઉસ સુભદ્રા સાર્થવાહીકે  
હૃદયમે હસ પ્રકારકા આધ્યાત્મિક યાવત્ વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ-  
મૈ મદ્ર સાર્થવાહકે સાથ વિપુલ ભોગોકો ભોગતી હુઈ યાવત્ વિચર  
રહી હૈ । પર આજતક મેરે એક બી સન્તાન નહીં હુઈ । હસલિયે  
સુજ્ઞે ઉચિત હૈ કિ સૂર્યોદય હોનેપર મદ્ર સાર્થવાહકો પૂછકર મુવ્રતા

નિર્ઞય પ્રવચન પર મને રૂચી થઈ છે આપે જે ઉદ્દેશ આપ્યો છે તે સત્ય છે-સર્વથા  
સત્ય છે હું યાવત્ શ્રવક ધર્મનો સ્વીકાર કરૂ છું તે આર્યાઓએ કહ્યું —

હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જે પ્રકારે સુખ થાય તેમજ કર ધર્મચિરણમા પ્રમાદ ન  
કરવે ત્યાર પછી તે સુલક્ષણ થવાહીએ આર્યાઓની પસે નિર્ઞય ધર્મનો સ્વીકાર  
કર્યો ને પછી તે આર્યાઓને વન્દન અને નમસ્કાર કરીને વિસર્જન કર્યું (વિદાય આપી)

ત્યાર પછી તે સુલક્ષણ સાર્થવાહી શ્રમણ ઉપાસિકા થઈ અર્થ તમામ શ્રાવક-  
ધર્મનું પાલન કરતી વિચરવા લાગી ત્યાર પછી એક નમયે પાછલી રાત્રિએ કુદુળ  
જાગરણ કરતી કરતી તે સુલક્ષણ સાર્થવાહીના હું થમા આ પ્રકારનો આધ્યાત્મિક-  
વિચાર આપ્યો કે હું ભદ્ર સાર્થવાહીની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવતી વિચરણ કરૂ  
છું પણ આજ પર્યન્ત મને એક પણ મતાન થયું નથી આજ મને એ યોગ્ય છે  
કે સૂર્યોદય થતાજ ભદ્ર સાર્થવાહીને પૂછાને સુવ્રતા નાચાંએ ની પાને આર્યા ઇધર

भूत्वा अगाराद् यावत् प्रव्रजितुम् । एव समेक्षते, समेक्ष्य कल्ये यत्रैव भद्रः  
सार्थवाहस्तत्रैवोपागता, करतल-यावत् एवमवादीत्-एव खलु अह देवानुप्रियाः !  
युष्माभिः सार्द्धं वह्नि वर्षाणि विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानां यावद् विहरामि,  
नो चैव खलु दारक वा दारिका वा प्रजनयामि, तद् इच्छामि खलु देवानु-  
प्रिया' । युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती सुव्रतानामार्याणामन्तिके यावत् प्रव्रजितुम् ।  
ततः खलु स भद्र' सार्थवाहः सुभद्रा सार्थवाहीम् एवमवादीत्-मा खलु त्व  
देवानुप्रिये ! इदानीं मुण्डा यावत् प्रव्रज । शुद्धं तावद् देवानुप्रिये ! मया  
सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् ततः पश्चात् भुक्तभोगिनी सुव्रतानामार्याणामन्तिके  
यावत् प्रव्रज । ततः खलु सुभद्रा सार्थवाही भद्रस्य० एतमर्थं नो आद्रियते  
नो परिजानाति द्वितीयमपि तृतीयमपि भद्रा सार्थवाही एवमवादीत्-इच्छामि

आर्याओंके समीप आर्या हो घर छोड़कर प्रव्रजित बनू । ऐसा विचार  
कर भद्रसार्थवाहके पास आयी और हाथ जोड़ कर इस प्रकार बोली  
हे देवानुप्रिय ! मैं तुम्हारे साथ बहुत वर्षों तक विपुल भोगों को  
भोगती हुई विचार रही हूँ, पर आजतक मेरे एक भी सन्तान नहीं  
हुई । इसलिये मैं चाहती हूँ कि तुमसे आज्ञा लेकर सुव्रता आर्या-  
ओंके समीप दीक्षा लेकर प्रव्रजित हो जाऊँ । उसके बाद वह भद्र  
सार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीसे इस प्रकार कहने लगा:-

हे देवानुप्रिये ! तुम अभी दीक्षा मत लो । तुम अभी ससार-  
में ही रहो । विपुल भोग भोगनेके बाद सुव्रता आर्याओंके समीप  
दीक्षा लेकर प्रव्रजित होना । भद्र सार्थवाहके द्वारा इस प्रकार कहे  
जानेपर भी उस सुभद्रा सार्थवाहीने भद्रके वचनोंका आदर नहीं

गंधु छोड़ी दधने प्रव्रजत गन्धु ओषो विचार करीनि भद्रसार्थवाहनी पासे आयी  
अने हाथ जोड़ी आ प्रकारे बोली — हे देवानुप्रिय । हे तमारी साथे धन्य वर्षों  
भुधी विपुल भोगविलास भोगवती इह छु पणु आजभुधी भने ओक पणु सतान  
नथी थयु नाटे हु नाहु छु के तमारी आज्ञा लई सुव्रता आर्याओंनी पासे दीक्षा  
लधने प्रव्रजत दधं नाउ तार पछी ते भद्रसार्थवाह सुभद्रा सार्थवाहीने आ प्रभाषे  
कहेवा लाग्यो —

हे देवानुप्रिये ! तमे डभणु दीक्षा न लो तमे डभणु ससारभा न रहो ।  
विपुलभोग भोगवी वीधा पछी सुव्रता आर्याओंनी पासे दीक्षा लधने प्रव्रजित थने  
भद्र सार्थवाहे आ प्रभाषे कहेवाथी ते सुभद्रासार्थवाहीओ भद्रना वचनो मान्या

खलु देवानुप्रियाः । युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती यावन् प्रव्रजितुम् । ततः खलु स भद्रः सार्थवाहो यदा नो शक्नोति-यदीमिराख्यापनाभिश्च एव प्रज्ञापनाभिश्च सज्ञापनाभिश्च, विज्ञापनाभिश्च, आख्यापयितुम् वा, यावत् विज्ञापयितुं वा, तदा अकामतश्चैव सुभद्राया निष्क्रमणमन्त्रमन्यत ॥ ३ ॥

टीका-‘तएण ताओ’ इत्यादि-रोजयामि=रुचिप्रियीर्रोमि, प्रतिपये=अङ्गीकरोमि, भोगभोगान्-भोगा=शब्दादयस्तेषां भोगा=आसेवनानि तान् । आख्यापनाभि=‘गृहवासः श्रेयान्’ इति तत्परीक्षार्थं सामान्यतः कथनैः, प्रज्ञापनाभि=‘एव मा परिव्रज’ ‘सयमाऽऽचरणं दुष्करम्’ इतिविशेषतः कथनैः, ‘सज्ञापनाभि=सयमाऽऽराधनं शुक्तभोगाऽस्थायां सुकरम्’ इति समोधनाभिः, विज्ञापनाभि=मयमग्रंणे तदन्तःकरणद्रव्यमपरीक्षार्थं सप्रेमप्रतिपादनैः, अकामतः=सयममार्गे तां सुभद्रां निरोद्धुमक्षमं सन्ननिष्ठमपि सुभद्रायाः निष्क्रमणं परिव्रजनम् अन्त्रमन्यत=स्वीचकार । शेषं सुसोधम् ॥ ३ ॥

किया, और न उसके वचनों पर विचार ही किया । दूसरी बार तासरी बार जी सुभद्रा सार्थवाहीने इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! तुमसे आज्ञा पाकर प्रव्रज्या लेनेकी इच्छा करती हूँ ।

उसके बाद वह भद्र सार्थवाह बहुत प्रकारकी ‘आख्यापना’=‘घरमें रहना ही श्रेयस्कर है’ इस प्रकार उसकी परीक्षाके लिये जो सामान्य कथन, तत्स्वरूप आख्यापनाओंसे एवं ‘प्रज्ञापना’=‘तुम प्रव्रजित मत होओ, सयमका आचरण दुष्कर है’ इस प्रकार विशेष रूपसे कथन स्वरूप प्रज्ञापनाओंसे, और ‘सज्ञापना’=‘भोगोंको भोग लेनेके बाद ही सयमका आराधन सुकर है’ इस प्रकारका समझना रूप सज्ञापनाओंसे, ‘विज्ञापना’=सयन ग्रहणमें उसके अन्तःकरणकी

नहि तेन तेना वचनेन उपर विचार पश्य न कथं श्रीशुवार श्रीशुवार पश्य सुभद्रा-सार्थवाहीमे आ प्रभाषे कलु —हे देवानुप्रिय ! तमारी आज्ञा लपने प्रव्रज्या लेवानी इच्छा हू ३३ छु

त्यं पात्रं ते बद्रसार्थवाहं धृष्टा प्रदिरे आभ्यसना=‘धर्मा रहुँछु मेरा श्रयन्कर छे’ अथ प्रदिरे तेनी परीक्षाने भाटे न सामान्य कथन हे तेना जेपी आभ्यापनामे थी, तथा प्रज्ञापन=‘तमे प्रव्रजित मत होओ सयमका आचरण दुष्कर छे’ आ प्रव्रजित विशेषरूपे कथन-‘तपी कथनवत्प्रव्रज प्रज्ञापनामेथी तथा सज्ञापनामे लेगे। लेवानी इच्छा पछी न सार्थवाह, आराधन सुकर (अक्षय) छे’ अथ प्रज्ञा, सामान्यवचन उपी ‘सज्ञापना’ थी, तथा विज्ञापन=‘सयमग्रंणे कथन तेना प्रव्रजितवनी हुँवता ॥

मृगम्—तएण से भदे सत्थवाहे विउल असण ४ उव-  
 कखडावेइ, मित्तनाइ जाव आमतेइ, पच्छा भोयणवेलाए जाव  
 मित्तनाइ० सकारेइ सम्माणेइ, सुभद सत्थवाहि ण्हाय जाव  
 पायच्छित्त सवालकारविभूसिय पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरु-  
 हेइ । तओ सा सुभदा सत्थवाही मित्तनाइ जाव सवधि-  
 सपरिवुडा सद्धिद्वीए जाव रवेण वाणारसीनयरीए मज्झ मज्झेणं  
 जेणेव सुवयाणं अज्जाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
 गच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, सुभदं सत्थवाहि  
 सीयाओ पच्चोरुहेइ । तएण भदे सत्थवाहे सुभद सत्थवाहि  
 पुरओ काउं जेणेव सुवया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवाग-  
 च्छित्ता सुवयाओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता  
 एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । सुभदा सत्थवाही ममं  
 भारिया इट्ठा कता जाव मा ण वाइया पित्तिया सिंभिया  
 सन्निवाइया विविहा रोगातका फुसतु, एसणं देवाणुप्पिया ।  
 ससारभउव्विगा, भीया जम्मणमरणाणं, देवाणुप्पियाण अतिए  
 मुडा भवित्ता जाव पवयाइ, त एय अह देवाणुप्पियाण सीसि-  
 णीभिकख दलयाणि, पडिच्छंतु ण देवणुप्पिया । सीसिणीभि-  
 कख । अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबध ।

दृढताकी परीक्षाके लिये युक्ति प्रतिपादनरूप विज्ञापनाओंसे समझा  
 नेमे समर्थ नहीं हो सका तब उसने अनिच्छापूर्वक सुभद्राको दीक्षा  
 लेनेकी आज्ञा दी ॥ ३ ॥

परीक्षाने भाटे युक्ति प्रतिपादनरूप विज्ञापनाओंसे समर्थ न था  
 युक्त्ये त्यागते अन्निच्छापूर्वक सुभद्राने दीक्षा लेवानी आज्ञा आयी (३)

खलु देवानुमियाः । युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती यावत् प्रव्रजितुम् । ततः खलु  
स भद्र सार्थवाहो यदा नो शम्नोति-परीभिराख्यापनाभिश्च एव प्रज्ञापनाभिश्च  
सज्ञापनाभिश्च, विज्ञापनाभिश्च, आख्यापयितुम् वा, यावत् विज्ञापयितुं वा, तदा  
अक्रामतश्चैव सुभद्राया निष्क्रमणमन्यमन्यत ॥ ३ ॥

टीका-‘तएण ताओ’ इत्यादि-रोचयामि=रुचिप्रियीर्रोमि, प्रतिपद्ये=  
अद्वीकरोमि, भोगभोगान्-भोगाः=शब्दादयस्तेषां भोगाः=आसेवनानि तान् ।  
आख्यापनाभिः=‘गृहवास’ श्रेयान्’ इति तत्परीक्षायां सामान्यतः रथनैः, प्रज्ञा  
पनाभिः=‘तव मा परित्रज’ ‘सयमाऽऽचरणं दृष्टम्’ इतिविशेषतः रथनैः,  
‘सज्ञापनाभिः=सयमाऽऽराधनं भुक्तभोगाऽस्थाया सुकरम्’ इति सयोगनाभिः,  
विज्ञापनाभिः=सयमग्रंणे तदन्तः करणद्रष्टिपरिभार्य सधेमप्रतिपादनैः, अक्रामतः=  
सयममार्गे ता सुभद्रा निरोद्धुमक्षमं सन्ननिष्ठवपि सुभद्रायाः निष्क्रमणं  
परित्रजनम् अन्यमन्यत=स्वीचकार । शेषं सुशोधम् ॥ ३ ॥

क्रिया, और न उसके वचनां पर विचार ही क्रिया । दूसरी बार  
तासरी बार जी सुभद्रा सार्थवाहीने इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय !  
तुमसे आज्ञा पाकर प्रव्रज्या लेनेकी इच्छा करती हूँ ।

उसके बाद वह भद्र सार्थवाह बहुत प्रकारकी ‘आख्यापना’=  
‘घरमें रहना ही श्रेयस्कर है’ इस प्रकार उसकी परीक्षाके लिये जो  
सामान्य कथन, तत्स्वरूप आख्यापनाओंसे एव ‘प्रज्ञापना’=‘तुम  
प्रव्रजित मत होओ, सयमका आचरण दृष्टकर है’ इस प्रकार विशेष  
रूपसे कथन स्वरूप प्रज्ञापनाओंसे, और ‘सज्ञापना’=‘भोगोंको भोग  
लेनेके बाद ही सयमका आराधन सुकर है’ इस प्रकारका समझना  
रूप सज्ञापनाओंसे, ‘विज्ञापना’=सयन ग्रहणमें उसके अन्तःकरणकी

नहि तेग तेना वयनेो उपर विचार पय न क्यो भीष्टवार त्रीष्टवार पय सुभद्रा-  
सार्थवाहीओ आ प्रमाष्टे कहु —हे देवानुप्रिय ! तमारी आज्ञा लधने प्रव्रज्या लेवानी  
इच्छा हु कइ छु

त्य-पछा ते भद्रसार्थवाह धरुआ प्रभारे आख्यापना=‘घ मा रहैषु ओअ  
अय-कर छे’ ओ प्रभारे तेनी परीक्षाने माटे अ सामान्य कथन उ तेना जेपी आख्या-  
पनाओ थी, तथा प्रज्ञापन=‘तमे प्रव्रजित १ थाओ सयानु आचरण मुशेल छे’  
आ प्रकरनु विशेषरूपे कर-नपी कथन वरुप प्रज्ञापनाओथी तथा सनापनाओसेगो  
जेगनी लीधा पछो अ सयम-अराधन सुकर (गहज) छे’ ओ प्रभारे, समग्रववा  
इपी सज्ञापनाथी, तथा विज्ञापन=‘सयमग्रंणे करता तेना आत् कर ॥ दृष्टता ॥

स्वेण वाराणसीनगर्या मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपा-  
गच्छति, उपागत्य पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां स्थापयति, सुभद्रा सार्धवाही  
शिविकां प्रत्यवरोहति । ततः खलु भद्रः सार्धवाहः सुभद्रा सार्धवाही पुरतः  
कृत्वा यत्रैव सूता आर्याः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुव्रता आर्या वन्दते  
नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—एव खलु देवानुप्रियाः । सुभद्रा  
सार्धवाही मम भार्या इष्टा कान्ता यावत् मा खलु गतिः पौत्रिका श्लैष्मिकाः  
साक्षिपातिका विविधा रोगातङ्काः स्पृशन्तु, एषा खलु देवानुप्रियाः । ससार-  
भयोद्विग्ना, भीता जन्ममरणाभ्यां, देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा भूत्वा यावत्  
प्रव्रजति ! तद् एतामह देवानुप्रियभ्यो शिष्याभिक्षां ददामि, प्रतीच्छन्तु खलु  
देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । यथासुखं देवानुप्रियाः मा प्रतिवन्द्यम् ।

बाजोंके स्वरके साथ वाराणसी नगरीके बीचोबीचसे होती हुई सुव्रता  
आर्याओके उपाश्रयमें आई, और हजार पुरुषोंसे वाहित उस शिवि-  
कासे उतरी । बादमें वह भद्र सार्धवाह सुभद्रा सार्धवाहीको आगे  
कर सुव्रता आर्याके पास आया, और वन्दन नमस्कार किया । बाद  
उसको उसने इस प्रकार कहा.—

हे देवानुप्रियों ! यह मेरी भार्या सुभद्रा सार्धवाही मेरी अ-  
त्यन्त इष्ट और कान्त है । इसको बात पित्त कफ आदि रोग तथा शीत-  
उष्ण आदिके दुःख स्पर्श न कर सके इसके लिए सर्वदा यत्न करता  
आ रहा हूँ, सो यह सार्धवाही ससारके भयसे उद्विग्न हो तथा जन्म  
मरणसे डरकर आप लोगोंके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित हो रही  
है, इसलिये मैं आप लोगोंको यह शिष्यारूप भिक्षा दे रहा हूँ ।  
हे देवानुप्रियों ! इसको आप लोग स्वीकार करें ।

वन्द्योवन्द्य यधने सुव्रता आर्याभिना उपाश्रयमा अवी अने इन्दर पुत्रोअ उपाठकी  
ते शिषिकाभाथी उतरी पछी ते भद्रसार्धवाह सुभद्रा सार्धवाहीने आगण करीने सुव्रता  
आर्यानी पासे आल्यो अने वन्दन नमस्कार कर्यो पछी तेखे आ प्रकारे कहु—

हे देवानुप्रियो ! आ भारी स्त्री सुभद्रा सार्धवाही भारी घलीज छै अने कान्त  
( प्रिय ) छै तेने बात पित्त कफ वगेरे रोग ठी गरभी वगेरेना दुःख स्पर्श करी न  
शेडे ते भाटे हुँ इमेशा यत्न करतो आयु छु ते आ सार्धवाही ससारना भयथी  
बितातुर जनीने तथा जन्ममरणना डरथी आप बोधनी पासे मुडित धध प्रव्रजित  
धाय छै भाटे हुँ आप बोडोने आ शिष्याइप भिक्षा आयु छु हे देवानुप्रियो, आना  
आप बोडो स्वीकार करे

तएणं सा सुभदा सत्थवाही तुट्ठा सुवयाहिं अज्जाहिं  
एव वुत्ता समाणी हट्ठं सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ,  
ओमुइत्ता, सयमेव पचमुट्ठियं लोयं कग्गेइ, करित्ता जेणेव सुव-  
याओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवयाओ  
अज्जाओ तिमबुत्तो आयाहिणपयाहिणेणं वदइ नमंसइ, वदित्ता  
नमंसित्ता एव वयासी-आलिजेणं भते । जहा देवाणंदा तहा  
पवइया जाव अज्जा जाया जाव युत्त वंभयारिणी ॥ ४ ॥

छाया-ततः खलु स भद्र सार्थवाहो विपुलम् अशन पान खाद्य स्वा-  
द्यम् उपस्कारयति मित्रज्ञाति यावदामन्त्रयति । ततः पश्चात् भोजनवेलाया  
यावत् मित्रज्ञातिः सत्करोति सम्मानयति, सुभद्रा सार्थवाही स्नाता यावत्  
कृतमायश्चित्ता सर्वालङ्कारविभूषिता पुरुषसहस्रवादिनीं शिपिना दूरोढयति । ततः  
सा सुभद्रा सार्थवाही मित्रज्ञातिः यावत् सम्बन्धिसपरिटृता सर्वकद्रया यावत्

‘तएण से भहे’ इत्यादि—

उसके बाद उस भद्र सार्थवाहने विपुल अशन पान खाद्य स्वाद्यको  
तैयार करवाया और अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको बुलाया  
और आदर सत्कार के साथ सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको  
भोजन कराया । बादमे स्नानको हुई यावत् मसीतिलक आदिसे युक्त,  
सभी अलङ्कारोंसे विभूषित सुभद्र हजार मनुष्योंके द्वारा वाहित शिबिका  
पर बैठायी गई । उसके बाद वह सुभद्रा सार्थवाही मित्र ज्ञाति स्वजन-  
बन्धु और सम्बन्धियोंसे युक्त सभी प्रकारकी ऋद्धि यावत् भेरी आदि

‘तएण से भहे’ इत्यादि

त्यार पछी ते भद्रसार्थवाहें विपुल अशनपान आद्य स्वाद्य तैयार कराव्यु अने  
पोताना अधा मित्रे ज्ञाति-स्वजन बन्धुओंने बोलाव्या अने अदर सत्कार करीने ते  
अधाने भोजन कराव्यु पछी सुभद्राने नपरावी यावत् भसी तिलक (यादलो) अदि  
करावी तमाभ अलङ्कार (घड़ेछा) शङ्खगारी हजार मनुष्योंके उपाडेवी शिबिका (पालणी)  
ऊपर भेसाडवाभा-आयी—

त्यार पछी ते सुभद्रासार्थवाही मित्र, ज्ञाति, स्वजन-बन्धु तथा सम्बन्धियोंने  
साथे तमाभ प्रकारकी ऋद्धि, लेगी आदि वाजना अवर साथे वारं वार नगरीनी

टीका-‘तएग से भरे’ इत्यादि-एतस्य व्याख्या निगदविद्धेति बोध्यम् ॥४॥

मृत्म्-तएणं सा सुभदा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स  
चेडरूवे समुच्छिया नाव अज्जोववण्णा अवभगण च उव्वट्ठणं  
फासुयपाण च अलत्तग च ककणाणि य अजण च वण्णगं  
च चुण्णग च खेह्णगाणि य खज्जह्णगाणि य खीर च पुप्फाणि  
य गवेसड, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारियाए वा  
कुमारे य कुमारियाए य डिभए य डिभियाओ य अप्पेगड-  
याओ अवभगेड, अप्पेगडयाओ उव्वट्ठेड, एव अप्पेगडयाओ  
फासुयपाणएण णहवेड, अप्पेगडयाण पाए रयड, अप्पेगडयाण  
उं रयड, अप्पेगडयाणं अच्छीणि अंजेड, अप्पेगडयाण उसुए  
करेड, अप्पेगडयाण तिलए करेड, अप्पेगडयाओ दिगिदलए  
करेड, अप्पेगडयाण पतियाओ करेड, अप्पेगडयाइ छिज्जाड

मच्छर तथा वात पित्त कफ आदि रोग परीपह उपसर्ग कोई नुरु-  
सान न पहुँचा सकें तथा मेरी आत्मा परलोकमें हित रूप, सुख-  
रूप कुशल रूप और परम्परासे कल्याण रूप रहे । इस लिये मे  
आपके पास सुण्डित होकर प्रजित होती हूँ । मैं प्रनिलेखना आदि  
क्रियाको मीम्वूंगी । आपकी आज्ञासे सयमकी सत्र क्रियाको पालूँगी ।  
इस प्रकार वह सार्थवाही देवानन्दाके समान प्रजित हुई और  
आर्या हो गई तथा पंचममिति और तीन गुणियोंसे युक्त हो सकल  
इन्द्रियोंका दमन कर वह सुखव्रह्मचाहिणी हो गयी ॥ ४ ॥

४६ पण्डे देव, परीपह, उपमर्ग कार्य नुकसान पहुँचाही न शकें तथा भागे आत्मा  
परलोकमा हितरूप, सुखरूप, कुशलरूप तथा परम्पराशी कल्याणरूप रहे ते भाटे तमारी  
पाये सुडित यजे प्रनिलेखन गनु छु हूँ प्रतिलेखना आदि ज्ञाने शीघ्रीश आपनी  
आज्ञाशी सयमनी गभी क्रियाओनु पालन करीश आ प्रकाते ते सार्थवाही देवानन्दाना  
पठे प्रनिलेखन गनी अने आर्या यथ गज तथा पाथ समिति अने त्रय गुणित्योशी  
युक्त यधने गभी इन्द्रियोनु दमन करीने ते शुभ प्रवृत्त्यारणी यथ गध (४)



તતઃ સ્વલ સા સુમદ્રા સાર્થવાહી સુવ્રતાભિરાર્યાભિરેવમુક્તા સતી સ્વ  
યમેવ આમરણમાલ્યાલઙ્કારમમુશ્ચતિ, અવમુચ્ય સ્વયમેવ પશ્ચમુષ્ટિક લોચ ક્રોતિ,  
કૃત્વા યત્રૈવ સુવ્રતા આર્યાસ્તૈત્રોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુવ્રતા આર્યાસ્ત્રિકૃત્વ  
આદક્ષિણપ્રદક્ષિણેન વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા, ઇમવાદીત્-અદીપ્તઃ  
સ્વલ ભદન્ત ! યથા દેવાનન્દા તથા પ્રવ્રજિતા યાત્ આર્યા જાતા યાવદ્  
ગુપ્તવ્રજ્યચારિણી ॥ ૪ ॥

મદ્ર સાર્થવાહકે ઇસ પ્રકાર કહને પર ડસ મહાસતીને ડસ  
સાર્થવાહીસે કહા-હે દેવાનુપ્રિયે ! જૈસી તુમ્હારી યુગી હો, શુભ  
કામમે પ્રમાદ મન કરો । સુવ્રતા મહાસતી ઠારા ઇમ પ્રકાર કહે  
જાનેપર વહ સુમદ્રા સાર્થવાહી અપને હાથોસે માલા ઓર આભૂષણોકો  
ડનાર દિયા, ઓર ડસને અપને હાથસે પશ્ચમુષ્ટિક લુચ્ચન કિયા ।  
ઘાદમે વહ સુવ્રતા આર્યાકે સમીપ આકર તોન ઘાર આદક્ષિણ-પ્રદ-  
ક્ષિણા પૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરકે ઘોલી—

હે મહાસતી ! યહ સસાર જરા-મરણ રૂપ આગસે જલ રહા  
હે, -અત્યન્ત જલ રહા હૈ । જિસ તરહ કોઈ ગૃહસ્થ ઘરમે આગ  
લગનેપર જલતી હુઈ વસ્તુઓસે ઘટમૂલ્ય ઓર યોડે વજનવાલી વસ્તુકો  
નિકાલ લેતા હૈ ઓર ડસે સુરક્ષિત રચતા હૈ ડસી પ્રકાર મૈ અપની  
આત્માકો જો મેરી ઇષ્ટ હૈ, કાન્ત હૈ, પ્રિય હૈ, સમત=સમ્માનિત હૈ  
અનુમત-વડે પ્રેમસે સુરક્ષિત હૈ, વહુમત હૈ અનેક પ્રકારસે લાલિત  
પાલિત હૈ, ડસકો ડીત, ડળ્ળ, ભૂખ, તૃષા, ચોર, સિંહ, સર્પ, ડાસ,

મદ્ર સાર્થવાહના આ પ્રકાર કહેવાથી તે મહાસતીએ તે સાર્થવાહને કહ્યું—  
હે દેવાનુપ્રિયે ! જવી તમારી ખુશી ડોષ શુભ કાંમમા પ્રમદ ન કરો સુવ્રતા મહા-  
સતીએ આ પ્રમાણે કહેવાથી તે સુમદ્રાસાર્થવાહીએ પોતાના હાથેથી માવા અને ઘરેણા  
ડતાની નાખના અને તેણે પોતાના હાથેથી પચ મુષ્ટિક લુચ્ચન કર્યું પછી તે સુવ્રતા  
આ ની પાસે આવીને ત્રણ વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વદન નમસ્કાર કરીને યાલી —

હે મહાસતી ! આ નમાર જરા-મ ભૂદર અગ્નિ વડે બળી રહ્યો હે-ખૂન બળે  
છે જેમ કોઈ ગૃહસ્થ ઘરમા આગ લાગે ત્યારે બગા જતી વસ્તુઓમાથી બહુ કિમવાળી  
અને ઓછા વજનના ગાં વસ્તુને કઢી લે છે અને તેન સુરક્ષિત રાખે છે તેવીજ રીતે  
હુ મારો આત્મા-કે જે મારો ઇષ્ટ છે-કાન્ત છે પ્રિય છે-સમત=સમ્માનિત છે, અનુમત  
=બહુ ગેમથી સુરક્ષિત છે, બહુમત છે, બહુમતદે=અનેક પ્રકારથી લાલિત પાલિત છે,  
તેન ડી ગરમી, ભૂખ, તરસ, ચોર, મિઠ સર્પ, ડાસ, મચ્છર, તથા વાત, પિત્ત,

टीका—‘तएण से भदे’ इत्यादि—एतस्य व्याख्या निगदमिद्वेति गोभयम् ॥४॥

मूलम्—तएण सा सुभदा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स  
चेडरुवे समुच्छिया ज्ञाव अज्जोववण्णा अवभगण च उव्वट्ठणं  
फासुयपाण च अलत्तगं च ककणाणि य अजण च वणणग  
च चुणणग च खेह्णगाणि य खज्जह्णगाणि य खीर च पुप्फाणि  
य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारियाए वा  
कुमारे य कुमारियाए य डिभए य डिभियाओ य अप्पेगड-  
याओ अवभगेड, अप्पेगडयाओ उव्वट्ठेड, एव अप्पेगडयाओ  
फासुयपाणएण पहावेड, अप्पेगडयाण पाए रयड, अप्पेगडयाण  
उं रयइ, अप्पेगडयाणं अच्छीणि अजेड, अप्पेगडयाण उसुए  
करेड, अप्पेगडयाणं तिलए करेड, अप्पेगडयाओ दिगिदलए  
करेइ, अप्पेगडयाण पतियाओ करेइ, अप्पेगडयाड छिज्जाइ

मच्छर तथा वात पित्त कफ आदि रोग परीपह उपसर्ग कोई नुरु-  
सान न पहुँचा संक तथा मेरी आत्मा परलोकमे हित रूप, सुख-  
रूप कुशल रूप और परम्परासे कल्याण रूप रहे । इस लिये मैं  
आपके पास सुण्डित होकर प्ररजित होती हूँ । मैं प्रतिलेखना आदि  
क्रियाको सीखूँगी । आपकी आज्ञासे सयमक्री सब क्रियाको पालूँगी ।  
इस प्रकार वह सार्थवाही देवानन्दाके समान प्ररजित हुई और  
आर्या हो गई तथा पँचसमिति और तीन गुप्तियाँसे युक्त हो सकल  
इन्द्रियोंका दमन कर वह गुप्तवह्यचारिणी हो गयी ॥ ४ ॥

वद भगेरे रोग, परीपह, उपमर्ज काष्ठ नुकथान पडोयाडी न थके तथा भारे आत्मा  
परयोडमा छितइ, सुणइ, कुशलइ तथा परम्पराथी उत्याणइ रहे ते भाटे तभारी  
पासे सुजित थजे प्ररजित भनु छ हूँ प्रतिलेखना आदि उद्याने शीपीश आपनी  
आनाथी मयभनी भधी क्रियाओनु पालन करीश आ प्रकरे ते सार्थवाही देवानन्दाना  
पडे प्ररजित भनी अने आर्या थय गज तथा पाय समिति अने त्रलु गुप्तियोथी  
युक्त थयने भधी उन्द्रियोनु दमन करीने ते गुप्त ब्रह्मचारिणी थय गय (४)

करेइ, अप्पेगइया वन्नएणं समालभइ, अप्पेगइया चुन्नएणं समालभइ, अप्पेगइयाणं खेळणगाइ दलयइ, अप्पेगइयाणं खञ्जुल्लगाइ दलयइ, अप्पेगइयाओ खीरभोयण भुंजावेइ, अप्पे गइयाणं पुप्फाइ ओमुयइ, अप्पेगइयाओ पाएसु ठवेइ, अप्पे गइयाओ जघासु करेइ, एव ऊरुसु, उच्छगे, कढीए, पिट्ठे, उरसि, खधे, सीसे य करतलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी २ आगायमाणी २ परिगायमाणी २ पुत्तपिवास च धूयपिवास च नत्तयपिवास च नत्तिपिवास च पच्चणुवभवमाणी विहरइ ।

तएण ताओ सुवयाओ अज्जाओ सुभदे अज्ज एव वयासी-अम्हे ण देवाणुप्पिए । समणीओ निग्गथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ जातककम्म करित्थिए, तुम च णं देवाणुप्पिया । बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना अब्भगण जाव नत्तिपिवास वा पच्चणुवभवमाणी विहरसि, त ण तुम देवाणुप्पिया एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि । तएण सा सुभदा अज्जा सुवयाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ ।

तएणं ताओ समणीओ निग्गथीओ सुभद अज्ज हीलेति निंदति खिसति गरहति अभिक्खण २ एयमट्ठ निवारंति । तएण तीसे सुभदाए अज्जाए समणीहिं निग्गथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खण २ एयमट्ठ निवारिज्जमाणीए अय मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था-जयाणं अह अगार-

वास वसामि तयाणं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अह  
मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पवडत्ता, तप्पभिडं च ण  
अह परवसा, पुर्विं च समणीओ निग्गथीओ आढेति परिजाणेति,  
इणाणि नो आढाडति नो परिजाणंति, त सेयं खलु मे कल्लं  
जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाण अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता  
पाडियक्क उवस्सय उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए । एव संपेहेड,  
सपेहित्ता कल्ल जाव जलते सेव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ  
पडिनिक्खमेइ, पडिनिक्खमित्ता पाडियक्क उवस्सय उवसपज्जि-  
त्ता णं विहरड । तए णं सा सुभदा अज्जा अज्जाहि अणो-  
हट्ठिया अणिवारिया सच्छदमई बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छित्ता  
जाव अव्वभगणं जाव नत्तिपिवास च पच्चणुव्वभवमाणी विहरड ।

तएण सा सुभदा अज्जा पासत्था पासत्थविहारी एव  
ओसण्णा० ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी ससत्ता सस-  
त्तविहारी अहाच्छदा अहाच्छदविहारी वडूड वासाइ सामन्नपरि-  
याग पाउण्ड, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताणं  
झुसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणा-  
लोइयप्पडिक्कत कालमासे काल किच्चा सोहम्ममे कप्पे बहुपुत्ति-  
याविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरियाए अगु-  
लस्स असखेज्जमागमेताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए  
उववण्णा ।

तए ण सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववन्नमित्ता समाणी  
पचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए० । एव खलु

गोयमा । बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्डी जाव अमि  
समण्णागया । से केणट्ठेण भत्ते । एव बुच्चइ बहुपुत्तिया  
देवी २ ? गोयमा बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सक्कस्स  
देविदस्स देवरण्णो उवत्थाणियण करेइ, ताहे २ वहवे दारए  
य दारियाए य डिभए य डिभिडाओ य विउवइ, विउवित्ता  
जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो दिव्व देविड्डी दिव्व देवज्जुइ दिव्वं  
देवाणुभाग उवदसेइ, से तेणट्ठेण गोयमा । एव बुच्चइ बहु-  
पुत्तिया देवी ॥ ५ ॥

उाया—तत खलु सा सुभद्रा आर्या अन्यदा नृदाचित् बहुजनस्य  
चेटरूपे समर्चिता यावद् अयुषपन्ना अभ्यञ्जनं च उद्वर्त्तनं च प्रासुरूपानं च  
अप्येकं च रङ्गणानि च अञ्जनं च स्पर्शकं च चूर्णकं खेडकानि च खज्जल-  
कानि च क्षीरं च पुष्पाणि च गवेषयति, गवेषयित्वा बहुजनस्य दारकान्  
दारिका वा कुमारान् कुमारिकाश्च डिम्भाश्च डिम्भिकाश्च अप्येकान् अभ्यङ्गयति  
अप्येकान् उद्वर्त्तयति, एवम् अप्येकान् प्रासुरूपानकेन स्नपयति, अप्येकानां  
पादौ रञ्जयति, अप्येकानाम् ओष्ठौ रञ्जयति, अप्येकानाम् अक्षिणी अञ्जयति  
अप्येकानाम् इपुकान् करोति, अप्येकानां तिलान् करोति, अप्येकान्  
दिलिन्लके करोति, अप्येकानां पदकी करोति, अप्येकान् डेवान् (डिम्भान्)  
करोति, अप्येकान् वर्णकेन समालभते, अप्येकान् चूर्णकेन समालभते,  
अप्येककेभ्यः खेलकानि ददाति, अप्येककेभ्यः गज्जुलकानि ददाति, अप्येकान्  
क्षीरभोजनं भोजयति, अप्येकानां पुष्पाणि अवमुञ्चति, अप्येकान् पादयो-  
स्थापयति, अप्येकान् जङ्गयो मरति, एव ऊर्ध्वं, उत्सङ्गे, मटया, पृष्ठे,  
उरसि, स्त्रोत्रे, शीर्षे च मरतलपुटेन गृहीत्वा गच्छन्ती २ आगच्छन्ती २  
परिगच्छन्ती २ पुत्रपिपासा च दुष्टपिपासा च नष्टपिपासा च नष्टपि-  
पासा च प्रत्यनुभवन्ती विहरति ।

ततः खलु ता युवता आर्या सुभद्रामार्यामेवमवादीत्—वयं खलु  
देवानुमित्रे । अमृत्योर्निर्ग्रन्थं दयासमिता यावद् शुद्धवत्तवारिण्यो नो खलु

अस्माकं कल्पते जातकर्म मृतम्, त्वं च खलु देवानुप्रिये ! बहुजनस्य चेटरूपेषु मूर्च्छिता यावत् अध्युपपन्ना अभ्यञ्जनं च यावत् नष्ट्रीपिपासा वा प्रत्यनुभवन्ती विहरसि, तत् खलु देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य अलोचय यावत् प्रायश्चित्तं प्रतिपद्यस्व । ततः खलु सा सुभद्रा आर्या सुव्रतानामार्याणामेतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, अनाद्रियमाणा अपरिजानन्ती विहरति ।

ततः खलु ता श्रमण्यो निर्ग्रन्थः सुभद्रामार्या हीलन्ति निन्दन्ति खिसन्ति गर्हन्ते अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवारयन्ति । ततः खलु तस्याः सुभद्राया आर्याया श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिर्हील्यमानाया यावत् अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवारयन्त्या अयमेतद्रूपं जात्यात्मिनो यावत् समुदपद्यत-यदा खलु अहम् अगारवासं वसामि तदा खलु अहम् आत्मवशा, यतः प्रभृति च खलु अहं मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारता प्रजिता ततः प्रभृति च खलु अहं परवशा, पूर्वं च श्रमण्यो निर्ग्रन्थ आद्रियन्ते, परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, तत् श्रेयः खलु मे कल्ये यावत् ज्वलति सुव्रतानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रम्य प्रत्येकम् उपाश्रयम् उपसपद्य खलु विहर्तुम्, एव समेक्षते, समेक्ष्य कल्ये यावत् ज्वलति सुव्रतानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य प्रत्येकमुपाश्रयमुपसपद्य खलु विहरति । ततः खलु सा सुभद्रा आर्या आर्याभिः अनपत्रट्टिका अनिवारिता स्वच्छन्दमतिः बहुजनस्य चेटरूपेषु मूर्च्छिता यावत् अभ्यञ्जनं च यावत् नष्ट्रीपिपासा च प्रत्यनुभवन्ती विहरति ।

ततः खलु सा सुभद्रा आर्या पार्श्वस्था पार्श्वस्थविहारिणी एवमसन्ना अवसन्नविहारिणी कुशीला कुशीलविहारिणी ससक्ता ससक्तविहारिणी यथान्छन्दा यथान्छन्दविहारिणी नृहनि वर्षाणि श्रमण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या सष्टेखनया जात्मन जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि अनशनेन छित्त्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिष्ठा ता मालमासे मालं कृत्वा सोम्ये रूपे बहुपुत्रिकाविमाने उपपातसभाया देवशयनीये देवदूयान्तरिता अङ्गलस्य असुरययभागमात्रया अवगाहनया नृपुत्रिकादनीतया उपपन्ना ।

ततः खलु सा नृपुत्रिका देवी अधुनोपपन्नमात्रा सती पञ्चविधया पर्याप्त्या यावद् भाषामनं पर्याप्त्या ० । एव खलु गौतम ! नृपुत्रिकाया देव्या दिव्या देवर्द्धि यावत् अभिममन्वागता । अथ सा केनार्थेन भदन्त ! अथ मुच्यते नृपुत्रिका देवी २ गौतम ! नृपुत्रिका खलु देवी यदा यदा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य उपस्थानं ( प्रत्यासत्तिगमनं ) करोति । तदा

तदा गृह्णन् दारकाश्च दारिमाश्च डिम्माश्च डिम्मिकाश्च विकुरुते, विकृत्य यत्रैव शक्नो देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य दिव्या देवर्द्धि दिव्य देवज्योति' दिव्य देवानुभागमुपदर्शयति । तत्तेनाऽर्थेन गौतम ! एवमुच्यते बहुपुत्रिमा देवी ॥ ७ ॥

टीका-‘तएण सा’ इत्यादि-तत्=तस्मिन्तर खलु इति वाक्यालङ्कारे सा=पूर्वोक्ता प्रसिद्धा या आर्या=माया सुभद्रानाम्नी, अन्यथा=भन्यस्मिन् समये उदाचित्=भनिश्चितकाले गृह्णन्त्यस्य=गृह्णन्त्यस्य चैटरूपे=कुमारम्बरूपे समर्चिता=समोहिता यावद् अयुपपन्ना=गन्धप्रेमासक्ता सजाता अत एव अभ्यङ्गन=तैलादिमर्दनम्, चकार सर्वत्र वाक्यालङ्कारार्थकः, उद्धर्तन=गात्रमलापनयनाय पिष्टादिसुगन्धिद्रव्यविशेषम्, प्रासुरूपान=प्रगता असवः उन्मृष्टासनिन्मृष्टा सात्मना प्रागा यतस्तत् प्रासुर, पीयते यत् तत् पान, प्रासुर च तत्पान प्रासुरूपान सकलजीवोपाधिरहितमचित्तजलम् अलक्तकम्=हस्तचरणादिरञ्जक मेहघादिद्रव्यविशेषम्, कङ्कणानि=वलयानि करभूषणविशेषान्, अञ्जन=फलजम्, वर्णक=चन्दनादिविशेषम्, चूर्णक=गन्धद्रव्यसम्बन्धिरजः, खेलकानि=शालभञ्जिकादीनि (‘खिलौना’ इति भाषायाम्) खजलकानि=खाद्यद्रव्यविशेषान्

‘तएण सा’ इत्यादि—

उसके बाद वह सुभद्रा आर्या एक समय गृहस्थके बालबच्चों पर प्रेम करने लगी और प्रेमके आवेशमें उन बच्चोंके लिये वह आर्या लगानेके लिये तेल, शरीरका मेल दूर करनेके लिये उबटन, पीनेके लिये प्रासुरक जल, उन बच्चोंके हाथ पैर रगनेके लिए मेहदी आदि रञ्जक द्रव्य, कङ्कण=हाथोंमें पहननेका कड़ा, अञ्जन=काजल, वर्णक=चन्दन आदि, चूर्णक=सुगन्धित द्रव्य, खेलक=खेलनेके लिये शालभञ्जिका (पुतली) आदि खिलौने, लिये खाजे, पीनेके लिये दूध और

‘तएण सा’ इत्यादि

त्या पछी ते सुभद्रा आर्या केक पणत गृहस्थना बालबच्चों पर प्रेम करवा लागी अने प्रेमना आवेशमा ते बच्चयाने माटे ते आर्या, खोजवा माटे तेल, शरीरको मेन दूर करवा माटे उबटन (पीडी), पीवा माटे प्रासुरक पाणी ते बच्चयना हाथ पैर रगवा माटे मेही पगेरे रञ्जक द्रव्य, कङ्कण=हाथमा पडेरवा माटे कडी, गजडी, अञ्जन=काजल पक्षुड=उबटन आदि, खेलक=सुगन्धित द्रव्य, जेवक=रगवा माटे पुतलीको आदि रमकडा आवा माटे खान्न पीवा माटे दूध तथा

(खाजा इति भाषायाम्) क्षीर=दुग्ध पुष्पाणि=कुसुमानि च गवेपयति=अन्वेपयति, गवेपयित्वा=अभ्यङ्गनादिपुष्पान्तर्वस्तुनि अन्वेप्य गृहजनस्य त्रिपुल्लोम्स्य दारकान् = बहुकालिकापालकान् दारिकाः = बहुकालिका बालिका वा=अथवा कुमारान्=अत्रिक्तरवर्षकान् बालकान् कुमारिकाः=बहुतरवार्षिका बालिका, डिम्भान्=अल्पकालिकजिरान् डिम्भिकाः=अल्पकालिका बालिकाश्च, अप्येरुकान्=कौश्वन अभ्यङ्गयति=तैलेन गात्र मर्दयति, अपीति समुच्चयार्थकः, तेन एकमपि तदतिरिक्तञ्च अनेकमित्यर्थः । एकान् उद्धृतयति=गात्रमलापनयनाय पिष्टादिसुगन्धिद्रव्य लेपयति, एवम्=अनेन प्रकारेण एकान् प्रासुकपानीयेन स्नपयति, एकाना पादौ=चरणौ रञ्जयति=अलक्तमादिन रक्तवर्णौ करोति, एकानाम् औष्ठौ=अवरौ रञ्जयति=रक्तवर्णौ विदधाति एकानाम् अक्षिणी=नेत्रे अञ्जयति=अञ्जनेन भूषिते करोति, एकानाम् इपुकान्=ललाटे देशे बाणाकारान् तिलकविशेषान् करोति, एकाना तिलकान्=केशशृङ्खलादिना ललाटे विन्यासविशेषान् करोति, एकान् दिगिन्दलके देशीशब्दो

माला आदिके लिये अचित्त फूल, इन सभी वस्तुओंका अन्वेपण करती थी । बादमें उन गृहस्थोके लडके लडकियों में से, कुमार कुमारियों में से बच्चे बच्चियों में से, किसी एक को तेलक मालिश करती थी, किसीकी देहमे उबटन लगातीथी, किसी एकको प्रासुक जलसे स्नान कराती थी, किसी एकके पैरोंको रगती थी एकके ओठोंको रगती थी, किसीकी आँखोंमें अंजन लगाती थी किसीके ललाट पर बाण आदिके आकारका तिलक लगाती थी किमीके ललाटपर केशर आदिके द्वारा तिलक विशेषका विन्यास करती थी, किसी एक बच्चेको हिण्डोलेमें रक्कर झुलाने की थी, और कुछ बच्चोंको एक कतार (पक्ति) में खड़ा करती थी

माला (हार) ने भाटे अचित्त फूल, आ गयी वस्तुओं में गवपानी शोध करने लगी पक्षी ते गृहस्थोना छोकरा, छोडरीओभाथी, कुमार कुमारिकाओभाथी, गाण्डे ओने गाणाओभाथी केधने तेव भावीस क ती हती, डेधने शरीरे उभटन (पीडी) लगाडती हती, केधने प्रासुक पाणीथी स्नान करावती हती, केधना पग रगी हेट हती केडना छोठ रगती हती, डेधने आगणु आगती हती तो केधना कमा उपर गाणु आदिना आकारने आडवे आडती हती, केधना कपाणे देशर आदिह शुद्ध शुद्ध प्रकारना तिलक आदिना विन्यास करती हती, केध ओक गाणकने ह्रींय नाभती हती तथा डेटेवाक गाणकनी ओक हार डरी उला राभती हती ओने



य तेन-‘हिन्दोलके’ इत्यर्थः करोति, एककाना पदकीः=त्रेणी करोति, एककान् छिन्नान्=छिन्नभिन्नान् एवमस्वितान् पृथक् पृथक् करोति, एककान् वर्षकेन=चन्दनविशेषेण समालभते=अनुलेपयति, एककान् चूर्णकेन=सुगन्धिद्रव्यविशेषेण समालभते=सुवासयति, एककेभ्यः खेलमानि=शालभज्जिकादीनि ददाति, एककेभ्यः सज्जुलकानि=खाद्यद्रव्यविशेषान् ‘खाजा’ इति भाषाप्रसिद्धान् ददाति, एककान् क्षीरभोजन=दुग्धपानं भोजयति=मारयति, एककाना पुष्पाणि=कुसुमानि अवमोचयति=मण्डादितोऽधस्ताद्विसर्जयति, एककान् पादयो=चरणयोः स्थापयति, एककान् जङ्घयो करोति, एवम्=अनेन प्रकारेण ऊर्वो, उत्सगे=क्रोडे, कटवा=श्रोण्या, पृष्ठे=पृष्ठभागे, उरसि=वक्षसि, मन्त्रे=असे शीर्षे=शिरसि, मरतलपुटेन=पाणितलपुटेन गृहीत्या दलउल्लयन्ती=गान् रज्जनाय मधुरालाप ‘हलरावा’ इति भाषाप्रसिद्धं कुर्वती, आगायन्ती=गालरज्जनाय मन्द मन्द गायन्ती, परिगायन्ती=गान् रुदता विलोक्य उच्चस्वरेण

तथा पक्तिमें खडे हुए चन्चोको अलग २ खडा करती थी, एकके शरीरमें चन्दन लगाती थी, तो एकके शरीर को सुगन्धित चूर्णक (पाउडर) से सुवासित करती थी, एकको खेलनेके लिये त्रिलौना देती थी, तथा किसीको खानेके लिये खाजे देती थी, और किसीको दूध पीलानी थी, किसीके कण्ठमें पड़ी हुई अचिच्छ (कागदके) फूलोंकी माला उतार लेती थी, किसीको अपने पैरोपर बैठाती थी तो किसीको अपनी जङ्घापर रखती थी और इसी प्रकार किसीको ऊपर, किसीको अपनी गोदीमें किसीको अपनी कमरपर, किसीको पीठपर किसीको अपनी छातीपर किसीको कन्धेपर किसीको अपने शिरपर रखती थी, किसीको हाथसे पकड़कर हलराती हुई और बालकोंके मनोरजनके लिये मन्द स्वरसे गाती हुई, बालकोंको

हारमा छेलाभाया डेटलाक जाणडोने जुल जुल छेला राखती हुती ओकना शरीरने अदन लगावती हुती तो ओकने सुगन्धित पाउडरथी सुवासित करती हुती ओकने रमभा माटे रमकडा देनी तो ओकने भवा माटे भवा देती हुती अने ओधने दूध पाती हुती डेध ॥ ओकभया अचिच्छ (कागदना) फूलनी भाणा उतारी लेती ओधने पोताना पग उरर जेनाडती तो ओधने पाताना ओणाभा राखती ओधने घेट उपर तो ओधने साथण उपर अने ओधने डेडे तो ओधने पीठ उपर, ओधने छाती उपर तो ओधने काध उरर ओधने भाया उपर राखती तो ओधने हाथेथी पकडीने हलरावती ओणकने आनद माटे धीमा धीमा स्वरथी गाती अने दाता ओणकने ओधने ताछीने

गायन्ती, पुत्रपिपासा=पुत्रलालसा दुहितृपिपासा=पुत्रीवाञ्छा नष्टृपिपासा=  
पोत्रदौहित्रालसा नष्ट्रीपिपासा=पौत्री दौहित्री स्पृहा च प्रत्यनुभवन्ती=एतत्मा  
र्येण सन्तोष मन्यमाना विहरति=आस्ते । ततः खलु ताः=त्रीसादाव्यः सुवृता  
आर्याः=माव्य सुभद्रायेव=वक्ष्यमाणम् अत्रादिषु.-हे देवानुप्रिये ! वयं श्रमण्यः  
समारविषयविरक्ता. मा न्य. निर्ग्रन्थ. =ग्रन्थिविरहिता धर्मासमिता यावत् शब्देन  
भाव्यासमिता, इत्यादीनां सङ्ग्रहः, गुप्तब्रह्मचारिण्य. =सुगन्धितब्रह्मचर्या, नो खलु  
अम्भार=श्रमणीनां निर्ग्रन्थीनाम् जातकर्म=निशुक्लीडनान्क्रिया कर्तुम्=अनुष्ठानं  
रूपते=युज्यते, हे देवानुप्रिये ! सुभद्रे ! त्वं गृहजनस्य चेटरूपेषु=कुमार-  
स्वरूपेषु मूर्च्छिता=समोहिता यावत् अ युषपक्षा दत्तचित्ता अन्धङ्गन यावच्छ-  
ब्देन र्णकादीनां सङ्ग्रहः, नष्ट्रीपिपासा=पौत्रीदौहित्रीस्पृहा प्रत्यनुभवन्ती

रोते ह्य देवकर उच्च स्वरसे गाती हुई पुत्रकी लालसा, पुत्रीकी  
वाञ्छा, पोते और दौहित्रीकी वाञ्छा, पौत्री और दौहित्रीकी उन्त्राका  
अनुभव करती हुई, अपने उक्त कार्योंसे सन्तुष्ट होना हुई विच-  
रण कर रही थी ।

उमके ऐसे आचरणको देवकर सुवृता आर्या सुभद्रा आर्यासे  
इस प्रकार बोली-हे देवानुप्रिये ! अपने लोग समारिक विषयोसे  
विरक्त, ईर्ष्यासमिति आदिसे युक्त यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ  
श्रमणी है, उमलिये हम लोगोको घालक्रीडा करना कराना आदि  
नहीं कल्पता है । हे देवानुप्रिये ! तुम गृहस्थाके वच्चोसे प्रेम करने  
लग गयी हो उच्चोको तेल आदि लगानेकी क्रिया आदि अकल्प-  
नीय कार्य कर रही हो । तथा पुत्र पुत्री, पौत्र पौत्री और दौहित्र

गाती, पुत्र की लालसा, पुत्री की वाञ्छा, पौत्र और दौहित्र की वाञ्छा, तथा पौत्री  
अनं दौहित्री की वाञ्छा का अनुभव करीने योगाना के कार्यों की सत्ताप मानी वियष्ट  
करती छती

तेना आवा आचरणे नोछने सुनता आर्या सुभद्रा आर्याने आ प्रकाडे कहेवा  
लागी छे देवानुप्रिये ! आपणु लेके आसारिक विषयो की विन्कत धर्मासमिति आदि की  
युक्त यावत् शुभ्र पक्षयानिणी निर्ग्रन्थ श्रमणी छीजे भाटे आपणु जाणउने रमाउवु  
आदि कटवानु नहीं छे देवानुप्रिये ! तमे गृहस्थे ना जन्थाने प्रेम करना लागी गया  
छे जन्थाने तेल आदि लगाउवानी क्रिया की भाडीने बधा अकल्पनीय कार्य करी रह्या  
छे तथा पुत्र-पुत्री पौत्र-पौत्री अने दौहित्र-दौहित्रांनी वाञ्छना अनुभव करता

५५ तेन-‘हिन्दोलके’ इत्यर्थः करोति, एकमाना पद्धतीः=श्रेणीः करोति, एकमान् विघ्नान्=विघ्नविघ्नान् एवमस्ति पृथक् पृथक् करोति, एकमान् वर्षकेन=चन्दनविशेषेण समालभते=अनुलेपयति, एकमान् चूर्णकेन=मुगन्धिद्रव्यविशेषेण समालभते=सुवासयति, एककेभ्यः खेलकानि=शालभञ्जिकादीनि ददाति, एककेभ्यः सञ्जुलमानि=खाद्यद्रव्यविशेषान् ‘साजा’ इति भाषा प्रसिद्धान् ददाति, एकमान् क्षीरभोजन=दुग्धपानं भोजयति=पारयति, एकमाना पुष्पाणि=कुसुमानि अवमोचयति=मृष्टादितोऽधस्ताद्विसर्जयति, एकमान् पादयोः=चरणयोः स्थापयति, एकमान् जङ्घयोः करोति, एवम्=अनेन प्रकारेण ऊर्वो, उत्सर्गे=क्रोडे, कटगा=श्रोण्या, पृष्ठे=पृष्ठभागे, उरसि=वक्षसि, म्रये=असे शीर्षे=शिरसि, म्रतलपुटेन=पाणितलपुटेन गृहीत्या हलउल्लगन्ती=गान् रञ्जनाय मधुरालाप ‘हुलरावा’ इति भाषाप्रसिद्धं कुर्वती, आगायन्ती=वाल्सरञ्जनाय मन्द मन्द गायन्ती, परिगायन्ती=गानान् कृत्वा विलोक्य उच्चस्वरेण

तथा पक्तिर्मे खडे हृणन्चीको अलग २ खडा करती थी, एकके शरीरमे चन्दन लगाती थी, तो एकके शरीर को सुगन्धित चूर्णक (पाउडर) से सुवासित करती थी, एकको खेलनेके लिये खिलौना देती थी, तथा किसीको खानेके लिये खाजे देती थी, और किसीको दूध पीलाती थी, किसीके कण्ठमे पड़ी हुई अचिन्त (कागदके) फूलोंकी माला उतार लेती थी, किसीको अपने पैरोपर बैठाती थी तो किसीको अपनी जङ्घापर रखती थी और इसी प्रकार किसीको ऊपर, किसीको अपनी गोदीमे किसीको अपनी कमरपर, किसीको पीठपर किसीको अपनी छातीपर किसीको कन्धेपर किसीको अपने शिरपर रखती थी, किसीको हाथसे पकड़कर नुलराती हुई और बालकाके मनोरञ्जनके लिये मन्द स्वरसे गाती हुई, बालकोको

हारमा डोलैवाभाया डेटवाक गाणजोने गुण गुहा विभा राणना जता ओकना शरीरने अदन लगावती હતી તેા એકને સુગંધિત પાઉડરથી સુવાસિત કરતી હતી એકને રમવા માટે રમકડા દેતી તેા કાકને ખવા માટે ખાખ દેતી હતી અને ડોઢને દૂધ પાતો હતી કે ઇ ॥ કાકમાથી અચિન્ત (કાગળના) ફૂલની માળા ઉતારી દેતી ડોઢને પોતાના પગ ઉપર બેનાડતી તેા કાઢને પોતાના બોળામા રાખતી કાઢને પેટ ઉપર તેા ડોઢને સાથળ ઉપર અને ડોઢને ડેડે તેા કાઢને પીઠ ઉપર, કાઢને છાતી ઉપર તેા કાઢને કાધ ઉપર ડોઢને માથા ઉપર રાખતી તેા કાઢને હાથેથી પકડીને હુલનાવતી બાળકને આનંદ માટે ધીમા ધીમા સ્વરથી ગાતી અને શાલા બાળકને બોધને તાણીને

ऽऽविष्करणपूर्वकं तिरस्कुर्वन्ति, अभीक्ष्णं २=वारवारम् एतमर्थं=पुत्रादिलालनादि-  
विषयं निवारयन्ति=अवमन्यन्ति । ततः खलु तस्याः सुभद्राया आर्यायाः  
श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिः हित्यमानाया यावत् अभीक्ष्णम् २ एतमर्थं निवार्यमाणायै  
अयमेतद्वृत्तिः=वक्ष्यमाणलक्षणं आयात्मिकः=अन्तःकरणगतः सम्बन्धो यावत् समुद्र-  
पद्मत् । अनपघट्टिका=अविद्यमानोऽपघट्टकोयदृच्छया प्रवर्त्तमानाया हस्तग्रहणादिना

स्कार रूप 'गर्हणा' करती है और वे बालक बालिकाओं आदिना लालन विषय का बार बार निवारण करती हैं ।

उमके बाद उन सुव्रता आदि आर्याओंके द्वारा पूर्वोक्त प्रकारसे हीलना निन्दना आदि करनेपर तथा वारम्बार निवारण करनेपर उस सुभद्रा आर्याके अन्तःकरणमें इस प्रकारका विचार उत्पन्न हुआ कि 'जब मैं अपने घरमें थी तो स्वतन्त्र थी, जब मैं घर छोड़कर मुण्डित हो प्रव्रजित हो गई तबसे मैं पराधीन हूँ । पहले ये श्रमण निर्ग्रन्थियाँ मेरा आदर करती थी और मेरे साथ प्रेमका वर्ताव करती थी, पर आज ये न मेरा आदर ही करती हैं और न प्रेमका वर्ताव ही करती हैं, अपितु ये सर्वदा मेरी निन्दा करती रहती हैं । इसलिये मुझे उचित है कि प्रातःकाल होते ही इन सुव्रता आर्याओंको छोड़कर अलग उपाश्रयमें जाकर उतरूँ । ऐसा विचार कर सूर्योदय होते ही सुव्रता आर्याओंको छोड़कर वह सुभद्रा आर्या निकल गयी और अलग उपाश्रयमें जाकर अकेली ही रहने लगी । उमके बाद वह सुभद्रा आर्या गुरुणी आदिके द्वारा

पुत्रा कर्त्तुं तिरस्कारये गर्हणां करती बार बार पुत्र आदिना लालन विषयनु निवारण करे छे

ते सुव्रता आदि आर्याओंना उपदेशन प्रगरे हीलना निन्दना आदि करवाथी अने निवारण (मनाई) करवाभा आचता ते सुभद्रा आर्याना अतः करणभा अवे विचार ऐत न थये के 'जबसे हूँ भारे घेर हुती त्थारे अतन्त्र हुती हुने न्थारे घर छोडी मुडित थछ प्रव्रजित थछ, त्थारथी हूँ पराधीन छ पडेला आ श्रमण निर्ग्रन्थिओ भारे आदर करती हुती अने मारा साथे प्रेमनो वर्ताव करती हुती थछ आज ते नथी भारे आदर करती के नथी भारी साथे प्रेमनो वर्ताव करती उलटी ते दुमेशा भारी निन्दा कर्था करे छे भारे सवार पडना न आ सुव्रता आर्याओंने छोडी दछ कोछ जुदा उपाश्रयभा उतरि ओ मारा माटे उचित छ ओम विचार करी सूर्योदय थता न सुव्रता आर्याओंने छोडीने ते सुभद्रा आर्या नीकणी पडी अने जुदा उपाश्रयभा नछ

विहरसि, तत्=तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानस्य एतत्कर्तव्यस्य आलोचय=आलोचना कुरु यावत् प्रायश्चित्त=पापापनोदनरूपम् क्रिया प्रतिपद्यस्व स्वीकुरु । ततः खलु सुभद्रा आर्या सुव्रतानामार्याणामेतम्=अव्यवहितोक्तम् अर्थम्=निर्दिष्टमिषयम् नो आद्रियते=न सत्करोति नो परिजानाति=कर्तव्यत्वेन नो स्वीकरोति, अनाद्रियमाणा=उपेक्षमाणा, अपरिजानन्ती=कर्तव्यत्वेन तदुत्तमस्वीकुर्वाणा विहरति ।

ततः खलु ता श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य सुभद्रामार्यं हिलन्ति=जन्मकर्ममर्मादाटनपूर्वकं निर्भर्त्सयन्ति, निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्णं दोषोद्घाटनेन अनाद्रियन्ते, खिसन्ति=हस्तमुखादिप्रसारपूर्वकमवन्यन्ते, गर्हन्ते=गुर्वादिसमक्ष दोषा

दौहित्रीकी चाठ्ठाका अनुभव करती हुई विचर रही हो, सो हे देवानुप्रिये ! तुम अपने इस कार्यपर विचार करो और इस पापकी विशुद्धिके लिये आलोचना करो और प्रायश्चित्त लो ।

उन आर्याओके द्वारा इस प्रकार अकल्पनीय बातोंका निषेध करनेपर भी उस सुभद्रा आर्याने न उन बातोंका कुछ आदर किया और न उन बातोंपर कुछ ध्यान ही दिया अपितु उन्हीं प्रकारका व्यवहार करती हुई विचरने लगी ।

उसके बाद वे आर्याय सुभद्रा आर्याकी 'तुम उत्तम कुलमे जन्म लेकर और उत्तम समय अवस्थामे आकर ऐसे तुच्छ कर्म करती हो' इस प्रकारकी 'हीलना' करती है, और वे कुत्सित शब्द बोलकर उसका दोष प्रकट करती हुई 'निन्दना' करती हैं । हाथ मुग्व आदिको विकृत करके अपमान करती हुई 'खिसना' करती हैं । गुरु जनाके समीप उसके दोषोंका उद्घाटन करती हुई तिर

विचरते छे । भाटे छे देवानुप्रिये ! तमे तमारा आ कार्यो भाटे विचार करे अने आ पारणी निशुद्धिने भाटे आलोचना करे अने प्रायश्चित्त ले ।

ते आर्याओना आ प्रजारे अकल्पनीय बातोंना निषेध करवा छता यणु ते सुभद्रा आर्याओ न तो ते बातोंने आनी के न तेना उतर काठ ध्यान आभ्यु यणु तज प्रकारना व्यवहार करती विचरवा लागी ।

त्यार यही ते आर्याओ कहेंती के — 'तमे उत्तम ज्ञानभाज भीने उत्तम समय अवस्थामे आपी आवा तुच्छ उर्भ करे छे' आवा प्रकारनी हीलना करती, कुत्सित शण्डे ( भेजू ) मोलीने तेना दोष जहरे करती करती निन्दना करवा लागी यथ मे आदिथी आणा पाडी अपमान करती खिसना करवा लागी, शुङ्गनोनी पाने तेना दोषे

સામાચારી શિથિલીકરણપૂર્વક પ્રવૃત્તા યથાચ્છન્દાસ્વામિપ્રાયપૂર્વકસ્વમતિકલ્પિતમાર્ગે પ્રવૃત્તા । શેષ સુગમમ્ ॥૫॥

પુત્રિકા વિમાનમે ઉપપાત સભાકે અન્દર દેવશયનીય શય્યામેં દેવદૂષ્ય વસ્ત્રોંસે આન્ઝાદિત જઘન્ય અગુલકે અસર્યાતવેં ભાગમાત્ર અવગાહ નાવાલી વહુપુત્રિકા દેવી હોકર ઉત્પન્ન હૃઈ । ઉસકે વાદ યહ વહુપુત્રિકા દેવી ભાપાપર્યાસિ મન.પર્યાસિ આદિ પાંચ પ્રકારકી પર્યાસિસે પર્યાસ અવસ્થાકો પ્રાપ્ત કર ઉત્કૃષ્ટ સાત દાયકી અવગાહનાવાલી દેવી હોકર દેવઅવસ્થામેં વિચરને લગી ।

હે ગૌતમ ! વહુપુત્રિકાદેવી ઇસ પ્રકાર અપની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિ આદિસે યાવત્ સમન્વિત હૃઈ હૈ ।

હે ભદ્રન્ત ! કિસ કારણસે ઇસકા નામ વહુપુત્રિકા હુઆ ?

હે ગૌતમ ! વહુપુત્રિકાદેવી જન-જ્ય દેવરાજ ઇન્દ્રકે પાસ જાતી હૈ તન-તન વહ વહુતસે લડકે લડકિયોકી ઓર વન્વે વન્ચિ યોંકી વિકુર્વણા કરતી હૈ । વિકુર્વણા કરનેકે થાદ જહાં દેવતાઓકે રાજા ઇન્દ્ર હૈ વહાં આતી હૈ, ઓર દેવતાઓકે રાજા ઇન્દ્રકો અપની દિવ્ય ઋદ્ધિ, દિવ્ય દેવ ઝ્યોતિ ઓર દિવ્ય તેજકો દિગ્વલાતી હૈ । હે ગૌતમ ! ઇસલિયે યહ વહુપુત્રિકા દેવી કહલાતી હૈ ॥ ૫ ॥

ઉપપાત સભાની અન્દર દેવશયનીય શય્યામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રોંથી આન્છાદિત જઘન્ય અગુલના અસર્યાતમા ભાગ માત્ર (અવગાહના) વાળી ગહુપુત્રિકા દેવી થઈને ઉત્પન્ન થઈ ત્યાર પછી જન્મતી વખતે આ ગહુપુત્રિકા દેવી ભાપાપર્યાસે મનપર્યાસિ આદિ પાંચ પ્રકારેની પર્યાપ્તિથી પર્યાપ્તિ અવસ્થાને પામી ઉત્કૃષ્ટ-સાત દાયકી અવગાહનાવાળી દેવી થઈ દેવ અવસ્થામા વિચરવા લાગી

હે ગૌતમ ! ગહુપુત્રિકા દેવી આ પ્રકારે પોતાની દિવ્ય દેવ ઋદ્ધિથી સમન્વિત (પરિપૂર્ણ) થઈ છે

હે ભદ્રન્ત ! કયા કારણથી તેનું નામ ગહુપુત્રિકા પડયું ?

હે ગૌતમ ! ગહુપુત્રિકા દેવી જનારે જ્યારે દેવો ॥ ગન્ધર્વની પાસે જાય છે ત્યારે ત્યારે તે ઘણા છેકરા-ઝેકરી તથા બાળકો અને બાળાઓની વિકુર્વણા કર્યા પછી જ્યાં દેવતાઓ ના રાજા હ'ં દ્ર છે ત્યાં આવે છે અને તે દેવતાઓના રાજા ઇન્દ્રને પોતાની દિવ્ય ઋદ્ધિ-દિવ્ય દેવજ્યોતિ તથા દિવ્ય તેજ દેખાડે છે હે ગૌતમ ! આ માટે તે ગહુપુત્રિકા દેવી કહેવાય છે (૫)

निर्जर्तको यस्याः सा तथा, स्वच्छन्दप्रवृत्ता, पार्श्वस्था पार्श्वे=साधुगुणानामेव तत्=साधुगुणेभ्यः पृथगित्यर्थः, तिष्ठतीति तथा, अवसन्ना=सामाचारीपालने अवसीदति=खेदमनुभवतीति तथा, कुशीला=कु=कृतिसत् उत्तरगुणप्रतिसेवनया सज्जलनरूपा योदयेन वा दूषितत्वात् शील यस्याः सा तथा, ससक्ता=गृहस्थादिप्रेममग्नयेन

रूकावट न होनेके कारण स्वच्छन्द मति हो गृहस्थोंके उच्चासे पूर्ववत् व्यवहार करने लगी।

उसके बाद वह सुभद्रा आर्या पार्श्वस्था=साधुके गुणोंसे दूर हो, पार्श्वस्थ-विहारिणी हो गयी, इसी प्रकार अवसन्न=सामाचारी पालनमें खिन्न हो अवसन्न विहारिणी हो गयी। और उत्तर गुणमें दोष लगानेसे तथा सज्जलन रूपायके उदयसे कुशीला हो कुशील विहारिणी हो गई और समस्ता=गृहस्थ आदिके साथ प्रेम बन्धन करनेके कारण सामाचारीमें शिथिलतासे प्रवृत्त हो ससक्तविहारिणी हो गयी, यथाच्छन्दा=अपने अभिप्रायसे कल्पित मार्गमें प्रवृत्त हो यथाच्छन्दविहारिणी हो गयी। इस प्रकार बहुत वर्षों तक उसने श्रामण्य पर्यायका पालन किया। अन्तमें अर्धमासिकी सलेखना द्वारा अपनी आत्माको सेवित कर तीस भक्तोंको अनसन द्वारा छेदन कर अपने उत्तगुण प्रतिसेवनरूप पापस्थानकी आलोचना और प्रतिक्रमण नहीं करके काल अवसरमें कालकर सौधर्म कल्पके बहु-

भोक्त्री न रहैवा लागी त्थार पछी ते सुभद्रा आर्या शुद्धी आदिना अ कुश न रहैवाथी स्वच्छन्दविहारिणी थथ गृहस्थेना पाणो। आथे आगणना जेवो व्यवहार करवा लागी

त्थार पछी ते सुभद्रा आर्या पार्श्वस्थ थथ=साधुना गुणोत्थी दूर थथ पार्श्वस्थ विहारिणी थथ आ प्रदरे अवसन्न थथ सामाचारी पालनमा भिन्न थथ अवसन्न विहारिणी भनी कुशील थथ अने उत्तरगुणमा दोष लागवाना कारखे तथा सज्जलन कपायेना उदयथी कुशीला थथ कुशील विहारिणी थथ, अने ससक्ता=गृहस्थ वगेरेनी साथे प्रेम बन्धन उरवाना उरखुथी सामाचारीमा शिथिल प्रवृत्तिवाणी थथ=समकत विहारिणी थथ गथ यथाच्छन्दा=पोतानी भरलुमा आने ते कल्पित मार्गमा प्रवृत्त थथ =यथाच्छन्द विहारिणी थथ आ प्रकारे धरा वर्षा सुधी तेल्ले दीक्षा पर्यायनु पालन उर्यु आभरे अर्धमासिकी सलेखनाथी पोताना आत्माने सेवित करीने त्रीश लकतानु अनशन द्वारा छेदन करी पोताना उत्तरगुण प्रतिसेवनइ। पापस्थाननी आवोचनना तथा प्रति, कमाषु न करता, कालअवसरमा काल करी सौधर्म कल्पना गहुपुत्रिका नामे विमानमा-

सामाचारी शिथिलीकरणपूर्वक प्रवृत्ता यथाञ्जन्ता=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमतिकल्पितमार्गे प्रवृत्ता । शेष सुगमम् ॥५॥

पुत्रिका विमानमे उपपात सभाके अन्दर देवशयनीय शय्यामे देवदूष्य वस्त्रोंसे आञ्छादित जघन्य अशुलके असख्यातवें भागमात्र अवगाह नावाली बहुपुत्रिका देवी होकर उत्पन्न हुई । उसके बाद यह बहुपुत्रिका देवी भाषापर्याप्ति मनःपर्याप्ति आदि पांच प्रकारकी पर्याप्तिसे पर्याप्त अवस्थाको प्राप्त कर उत्कृष्ट सात हाथकी अवगाहनावाली देवी होकर देवअवस्थामें विचरने लगी ।

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवी इस प्रकार अपनी दिव्य देव ऋद्धि आदिसे यावत् समन्वित हुई है ।

हे भदन्त ! किस कारणसे इसका नाम बहुपुत्रिका हुआ ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवी जय-जय देवराज इन्द्रके पास जाती है तब-तब वह बहुतसे लड़के लड़कियोंकी और बच्चे बच्चियोंकी विकुर्वणा करती है । विकुर्वणा करनेके बाद जहाँ देवताआके राजा इन्द्र है वहाँ आती है, और देवताओके राजा इन्द्रको अपनी दिव्य ऋद्धि, दिव्य देव ज्योति और दिव्य तेजको दिग्बलाती है । हे गौतम ! इसलिये यह बहुपुत्रिका देवी कहलाती है ॥ ५ ॥

उत्पात सभानी अंदर देवशयनीय शय्यामा देवदूष्य वस्त्रोथी आञ्छादित जघन्य अशुलना असख्यातमा भाग मात्र (अवगाहना) वाणी गहुपुत्रिका देवी यधने उत्पन्न थ' त्पार पत्नी जन्मती वपने आ गहुपुत्रिका देवी भाषापर्याप्ति मनपर्याप्ति आदि पांच प्रकारानी पर्याप्तिथी पर्याप्ति अवस्थाने पासी उत्कृष्ट-सात हाथनी अवगाहनावाणी देवी यध देव अवस्थाभा विचरवा लागी

हे गौतम ! गहुपुत्रिका देवी आ प्रकारे पोतानी दिव्य देव ऋद्धिथी समन्वित (परिपूष्य) यध छे

हे भदन्त ! क्या कारणथी तेनु नाम गहुपुत्रिका पड्यु ?

हे गौतम ! गहुपुत्रिका देवी ज्यारे ज्यारे देवे ॥ राजा इन्द्रनी पासे जाय छे त्पारे त्पारे ते घषा छोकरी-छोदरी तथा भाणके अने भाजाओ नी विकुर्वण्य कथा पछी ज्यो देवताओ ना राजा इन्द्र छे त्या आवे छे अने ते देवताओना राजा इन्द्रने पोतानी दिव्य ऋद्धि-दिव्य देवज्योति तथा दिव्य तेज देवाडे छे हे गौतम ! आ भाटे ते गहुपुत्रिका देवी कहेवाय ॥ (५)



मल्ल-वहुपुत्तियाए णं भंते । देवीए केवडयं कालं ठिड  
 पणत्ता ? गोयमा । चत्तारि पलिओवमाड ठिड पणत्ता ।  
 बहुपुत्तिया ण भंते । देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं  
 ठिडक्खएण भवक्खएण अणंतर चय चइत्ता कहिं गच्छिहिड ?  
 कहिं उववज्जिहिड ? गोयमा । इहेव जव्वदीवे दीवे भारहे वासे  
 विज्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलसि दारियत्ताए  
 पच्चायाहिड । तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे  
 दिवसे वितिक्रते जाव वारसेहि दिवसेहि वितिभक्तेहि अय-  
 मेयारूव नामधिज करेंति, होउ ण अम्ह डमीसे दारियाए  
 नामधिज सोमा । तएण सोमा उम्मुक्कवालभवा विणयपरिण-  
 यमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लायण्णे य  
 उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सइ । तएण त सोम दारिय  
 अम्मापियरो उम्मुक्कवालभाव विणयपरिणयमित्त जोव्वणगमणु-  
 प्पत्त पडिक्खएण सुक्कण पडिरूवएण नियगस्स भायणिजस्स  
 रट्ठकूडयस्स भारियत्ताए दलइस्सइ । सा णं तस्स भारिया  
 भविस्सइ इट्ठा कता जाव भडकरडगसमाणा तेह्णकेला इव  
 सुसगोविआ चेलपेला (डा) इव सुसपरिग्गहिया रणकरडगओ  
 विवसुसारम्बिया सुसगोविया मा णं सीय जाव मा ण विविहा  
 रोगातका फुसतु ।

तए ण सा सोमा माहिणी रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइ  
 भोगभोगाड भुजमाणी सवच्छरे २ जुयलग पयायमाणी सोलसे-  
 हिं संवच्छरेहिं वत्तीसं दारणरूवे पयाइ । तए ण सा सोमा

माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहि य दारियाहि य कुमारएहि य  
कुमारियाहि य डिभएहि य डिभियाहि य अप्पेगडएहि उत्ता-  
णसेजएहि य अप्पेगडएहि थणियाएहि य अप्पेगडएहि पीह-  
गपाएहिं अप्पेगडएहिं परगणएहिं अप्पेगडएहिं परक्रममाणेहिं,  
अप्पेगडएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगडएहिं थणं मग्गमाणेहिं  
अप्पेगडएहि खीर मग्गमाणेहिं अप्पेगडएहि खिल्लणय मग्ग-  
माणेहिं अप्पेगडएहिं खज्जग मग्गमाणेहि अप्पेगडएहि क्रूर  
मग्गमाणेहि पाणिय मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोस्स-  
माणेहि अम्भुस्समाणेह हणमाणेहि विप्लायमाणेहिं अणुगम्भमा  
णेहिं रोवमाणेहि कदमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं  
निट्ठायमाणेहिं पलवमाणेहिं दहमाणेहिं दसमाणेहिं वममाणेहि  
छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता मइलवस-  
णपुच्चडा जाव असुडवीभच्छा परमदुग्गधा नो सचाएड रटुकूडेण  
सद्धिं विउलाड भोगभोगाइ भुजमाणी विहरित्तए ॥ ६ ॥

त्राया-षड्पुत्रिकाया भदन्त ! देव्याः स्थितिः प्रज्ञप्ता ?  
गौतम ! चतु पत्न्योपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । षड्पुत्रिका खलु भदन्त ! देवी  
तस्मात्पुत्रलोकादायुःश्रेण स्थितिक्षयेण भवक्षयेण अनन्तरं च यं न्युत्तरा क  
गमिष्यति क उत्पत्स्यते ? गौतम ! अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे  
विं यगिरिपादमूले विभेलसन्निवेशे ब्राह्मणकुले दारिमातया प्रत्यायास्यति ।  
ततः खलु तस्या दारिमाया अम्भापितरौ एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते यावद्  
द्वादशभेदिर्वसैर्व्यतिक्रान्तैरिदमेतद्रूपं नामग्रेयं कुरुतः, भवतु अस्माकमस्या दारि-  
माया नामग्रेयं सोमा । ततः खलु सोमा उन्मुक्तकालभावा विज्ञरूपरिणतमात्रा  
शोचनमनुप्राप्ता रूपेण च योवनेन च लावण्येन च उत्कृष्टा उत्कृष्टशरीरा यावद्  
भविष्यति । ततः खलु ता सोमा दारिमा अम्भापितरौ उन्मुक्तकालभावा

विद्वरुपरिणतमात्रा यौनमनुप्राप्ता प्रतिवृजितेन शुल्केन प्रतिरूपेण निजमाय  
भागिनेयाय राष्ट्रकूटमाय भार्यातया दास्यति । सा खलु तस्य भार्या भवि  
ष्यति इष्टा कान्ता यावद् भाण्डकरण्डसमाना तैरुक्तेषा इव सुसगोपिता  
चेलपेटा इव सुसपरिगृहीता रत्नरुडक इव सुसरक्षिता सुसगोपिता मा खलु  
शीत यावत् मा विविधा. रोगातङ्काः स्पृशन्तु । ततः खलु सा सोमा  
ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् शुद्धाना सप्तसरे युगल प्रज  
नयन्ती पोडशभिः सवत्सरैः द्वारिणद् दाररूपाणि प्रजनयति । ततः खलु  
सा सोमा ब्राह्मणी तैर्बहुभिर्नारकश्च दारिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च  
डिम्बैश्च डिम्बिकाभिश्च अप्येकैः. उत्तानगयकैश्च, अप्येकैः. स्तनितैश्च अप्येकैः  
स्पृहस्पदादैः, अप्येकैः. पराङ्गणकैः, अप्येकैः पराक्रममाणैः, अप्येकैः, प्रस्व  
लनकैः, अप्येकैः. स्तन मृग्यमाणैः, अप्येकैः, क्षीर मृग्यमाणैः, अप्येकैः,  
खेलनक मृग्यमाणैः, अप्येकैः खाद्यक मृग्यमाणैः, अप्येकैः. क्रूर (भक्त)  
मृग्यमाणैः, पानीय मृग्यमाणैः, असङ्गिः, रूप्यङ्गिः, आक्रोशङ्गिः, आकुश्यङ्गिः,  
व्रङ्गिः, हन्यमानैः, विमलपङ्गिः, अनुगम्यमानैः, रुद्रङ्गिः, क्रन्दङ्गिः, विलपङ्गिः,  
रूजङ्गिः, उत्कूजङ्गिः, निर्धावङ्गिः, प्रलम्भमानैः, दहङ्गिः दशङ्गिः, वमङ्गिः,  
छेरङ्गिः, मूनयङ्गिः, मूनपुरीपवान्तसुलिप्तोपलिप्ता मलिनवमनपुचडा यावद्  
अशुचिरीभत्मा परमदुर्गन्धा नो शक्नोति राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्  
शुद्धाना विवर्तुम् ॥ ६ ॥

टीका-‘बहुपुत्रियाण इत्यादि-हे भदन्त ! बहुपुत्रियाया देव्याः स्थित  
काल स्थिति. प्रज्ञप्ता ? हे गौतम ! चतुःपल्योपमा स्थिति प्रज्ञप्ता । हे  
भदन्त ! बहुपुत्रिका देवी तस्माद् देवलोकान् आयु क्षयेण=आयुर्दक्षिण  
निर्जरणेन देवलोकवासोचितावधिव्यतिगमेन स्थितिक्षयेण=आयु र्भरण

‘बहुपुत्रियाण’ इत्यादि—

हे भदन्त ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति कितने कालकी है ?  
हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति चार पल्योपमकी है !  
हे भदन्त ! वह बहुपुत्रिकादेवी आयुक्षय अवक्षय और स्थिति

‘बहुपुत्रियाण’ धृत्यादि

हे भदन्त ! बहुपुत्रिका देवीकी स्थिति कितनी समझनी है ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिका देवीकी स्थिति चार पल्योपम है

हे भदन्त ! तो बहुपुत्रिका देवी आयुक्षय, अवक्षय तथा स्थितिक्षय पछी  
देवलोकभागी स्थितीने क्या ज्ञेय ? क्या ज्ञेय देखे ?

સ્થિતિર્નિર્જરણેન ભવક્ષયેણ=દેવભવકારણભૂતર્મણા મત્યાદીના નિર્જરણેન ક=  
કુત્ર ઉત્પત્યતે ?=જનિષ્યતે ? ગૌતમ ! અસ્મિન્નેવ જમ્બૂદ્વીપે=તન્નામકે દ્વીપે=  
મ યજમ્બૂદ્વીપે ભારતે=તન્નામકે વર્ષે વિન્ યગિરિષાદમૂલે=વિન્ યાચલાધસ્તલે  
વિભેલસનિવેશે=વિભેલનામકગ્રામવિશેષે બ્રાહ્મણકુલે=બ્રાહ્મણવંશે દારિકાતયા=  
પુત્રીત્વેન પ્રજનિષ્યતે=સમુત્પત્યતે । તત્=જનનાનન્તરં સ્વલુ તસ્યા દારિકાયા  
અમ્પાપિતરો=માતાપિતરૌ દ્વાદશે દિવસે=દિને વ્યતિક્રાન્તે=ગ્યતીતે યાવત્  
દ્વાદશમિર્દિવસૈ ડહમેતદ્રપ=૧૬૫માણઠક્ષણ નામગ્રેય કુરુત, અસ્માકમમ્યા.  
દારિકાયા.=પુત્ર્યા ' સોમા ' ઇતિ નામગ્રેય=નામ ભવતુ । તત્=તદનન્તરમ્  
સ્વલુ=નિશ્ચયેન સોમા ઉન્નુક્તગાલભાવા=ગ્યતીતગાલયાવસ્થા, વિદ્વન્પરિણતમાના=  
વિષયસુખાભિજ્ઞા યૌવનમ્=યુવતિદગામ્ અનુપાસા=અનુ=ગાલ્યાન્ પશ્ચાત્ પાસા,  
રૂપેણ=આકૃત્યા, ચ=પુન, યૌવનેન=તારૂપ્યેન, ચ=પુન લાવણ્યેન=મુક્તાફલ-  
ગતન્ઝાયાતરલતાસદૃશગીરાવયપાન્ત પ્રવિષ્ટવાકુચિચ્ચેન, ઉક્ત ચ—

“ મુક્તાફલેપુન્ઝાયાયાન્તરલત્વમિવાન્તરે ।

પ્રતિભાતિ યદ્દેપુ તલાવણ્યમિહોન્ન્યતે ॥ ૧ ॥

ક્ષયકે વાદ દેવલોકસે ન્યવકર કહાં જાયગી ? કહાં ઉત્પન્ન હોગી ?

હે ગૌતમ ! યહ બહુપુત્રિકાદેવી જમ્બૂદ્વીપ નામક દ્વીપકે અન્દર ભરત ક્ષેત્રમે વિન્ધ્યપર્વતકે સમીપ વિભેલ સનિવેશ (ગામ) મે બ્રાહ્મણકી કન્યા હોકર જન્મ લેગી । ઉમકે વાદ ઉમકે માતા પિતા ગ્યારહ દીન પીતનેપર પારહવે દિન અપની લડકીકા નામ સોમા રલ્લેગે । વહ સોમા ગાલભાવ ડોહતી હુઈ વિષય સુખકે પરિજ્ઞાનકે સાથ યૌવનાવસ્થામે પ્રવેશકર રૂપ-યૌવન-લાવણ્યસે ઉત્કૃષ્ટ ઔર ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાલી હોગી ।

ગૌર આદિ સુન્દર વર્ણવાલે આકારકો 'રૂપ' કહતે હૈ ।

હે ગૌતમ ! આ બહુપુત્રિકા દેવી જમ્બૂદ્વીપનો અંદર ભરત ક્ષેત્રમા વિન્ધ્ય પર્વતની પાસે વિભેલ (નિવેશ) ગામમા બ્રહ્મણની કન્યા થઈને જન્મ લેશે ત્યાર પછી તેના માતાપિતા અગીયાર દિવસ પીતી ગયા પછી બારમે દિવસે પિતાની છોકરીનું નામ સોમા રાખશે તે સોમા બાલભાવ ડોહી વિષય સુખના પરિજ્ઞાનવાળી યૌવન અવસ્થામા પ્રવેશ કરશે ત્યારે રૂપયૌવન-લાવણ્યથી ઉત્કૃષ્ટ અને ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી થશે

ગૌર અદિ સુન્દરવર્ણવાળા આકારને 'રૂપ' કહે છે એ માત્રની અંદરની અમકના

विज्ञरूपरिणतमात्रा यौनमनुमाप्ता प्रतिभूजितेन शुल्केन प्रतिरूपेण निजराय भागिनेयाय राष्ट्रकूटमाय भार्यातया दास्यति । सा खलु तस्य भार्या भविष्यति इष्टा कान्ता यावद् भाण्डकरण्डकसमाना तैर्केला इय सुसगोपिता चेलपेटा इय सुसपरिदृहीता रत्नररण्डक इय सुसरक्षिता सुसगोपिता मा खलु शीत यावत् मा विविधाः रोगातङ्काः स्पृशन्तु । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना सत्सरे घुगल प्रजनयन्ती पोडशभिः सत्सरे द्वाविंशद् दाररूपाणि प्रजनयति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैर्बहुभिर्दारैश्च दारिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च डिम्बैश्च डिम्बिकाभिश्च अप्येकैः उत्तानशयकैश्च, अप्येकैः स्तनितैश्च अप्येकैः स्पृहस्पृहैः, अप्येकैः पराङ्गणकैः, अप्येकैः पराकममाणैः, अप्येकैः, प्रसवलनैः, अप्येकैः स्तन मृग्यमाणैः अप्येकैः, क्षीर मृग्यमाणैः, अप्येकैः, खेलनक मृग्यमाणैः, अप्येकैः स्वाद्यक मृग्यमाणैः, अप्येकैः कूर (भक्त) मृग्यमाणैः, पानीय मृग्यमाणैः, दसङ्गि, रण्यङ्गिः, आगोशङ्गिः, आकुशङ्गिः, गङ्गि, हन्यमानैः, विप्रलपङ्गिः, अनुगम्यमानैः, रुद्रङ्गि, क्रन्दङ्गि, विलपङ्गिः, रूजङ्गि, उत्कूजङ्गि, निर्धात्रङ्गिः, प्रलम्भमानैः, दहङ्गि दशङ्गि, वमङ्गिः, छेरङ्गिः, मूत्रयङ्गिः, मूत्रपुरीषवान्तमुल्लिप्तोपलिप्ता मलिनवमनपुच्छा यावद् अशुचिरीभत्मा परमदुर्गन्धा नो शक्नोति राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहर्तुम् ॥ ६ ॥

टीका—‘बहुपुत्रियाण इत्यादि—हे भदन्त ! बहुपुत्रिकाया देव्या’ कियन्त काल स्थिति. प्रज्ञप्ता ? हे गौतम ! चतुःपल्योपमा स्थिति प्रज्ञप्ता । हे भदन्त ! बहुपुत्रिका देवी तस्माद् देवलोमाद् आयु क्षयेण=आयुर्दलिक निर्जरणेन देवलोम्बासोचितावधिव्यतिगमेन स्थितिक्षयेण=आयु कर्मण.

‘बहुपुत्रियाण ’ इत्यादि—

हे भदन्त ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति कितने कालकी है ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिकादेवीकी स्थिति चार पल्योपमकी है !

हे भदन्त ! वह बहुपुत्रिकादेवी आयुक्षय अवक्षय और स्थिति

‘बहुपुत्रियाण ’ इत्यादि

हे भदन्त ! बहुपुत्रिका देवीकी स्थिति कितनी अवधनी है ?

हे गौतम ! बहुपुत्रिका देवीकी स्थिति चार पल्योपम है

हे भदन्त ! ते बहुपुत्रिका देवी आयुक्षय, अवक्षय तथा स्थितिक्षय पछी

देवलोकाभागी स्थितीने क्या ज्ये ? क्या जन्म लेये ?

नाना प्रकाराः रोगातङ्काः=रोगाः=चिरयातिनः, ज्वराभ्यः जातङ्काः सद्योयातिनः,  
मस्तक रूलादयः । उमा मा खलु=नैव स्पृशन्तु=आश्रयन्तु । ततः खलु सा सोमा  
ब्राह्मणी राष्ट्रकूटेन सार्द्धं विपुलान् बहून् भोगभोगान्=विषयभोगान् भुञ्जाना  
सर्वत्सरे सर्वत्सरे=प्रतिवर्षं युगलं=सन्तानयुग्मं प्रजनयती=प्रसूयमाना षोडशभि  
सर्वत्सरेः वर्षैः द्वात्रिंशद्=द्वयधिमर्त्रिंशद् दारकरूपान्=पालकलक्षणान् अत्र दारिकाश्च  
दारकाद्येत्यर्थे एकशेषेण दारिका शब्दस्य लोपे रूपगन्धेन समासे पुत्रीपुत्ररूपान्  
इति तदर्थः, प्रजनयति=उत्पादयति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तैः गृहिभिः =  
अनेकैः दारकैः=पुत्रैः दारकाभिः=पुत्रीभिः गृहालिनीभिः, कुमारैः=बहुतर-  
कालिभिः, पुत्रैः, कुमारिकाभिः=गृहतरकालिकीभिः पुत्रीभिः, डिम्बैः=अल्पका-  
लिकपुत्रैः डिम्बिकाभिः=अल्पकालिकीभिः पुत्रीभिश्च, अप्येकैः उत्तानशयकैः=  
ऊर्ध्वमुखशयननीलैः, अप्येकैः स्तनितैः=चीत्कारशब्दितैः, अप्येकैः स्पृह-  
रूपादैः=स्पृहन्ति= गमनं चाञ्छन्ति, इति स्पृहरूपा पादाः=चरणा येषामिति  
ते तथा गमनेच्छुचरणा, गमनोत्सुकपादा इत्यर्थः अत्र गमनेच्छायाश्चेतन-  
वृत्तित्वेऽपि पादेष्वारोपात् 'स्थाली पचति' स्थाल्या पच्यते, इत्यादिवत्  
सायुता मोया । उक्तञ्च—

करण्डकके समान प्राणोंसे अधिक महत्व देकर रक्षा करेगा, और  
उसको वात पित्त आदि रोग और आतङ्क न स्पर्श कर सके इस  
प्रकार सचदा रक्षाकी चेष्टा करता रहेगा । उसके बाद वह सोमा  
दारिका राष्ट्रकूटके साथ विपुल भोगोको भोगती हुई प्रत्येक वर्षमें  
एक २ सन्तान-युगलको जन्म देगी । और वह सोलह वर्षमें बत्तीस  
बच्चोंकी माँ होजायगी बाद उसके वह सामा ब्राह्मणी अपने उन  
छोटे बड़े बच्चे बरुचयोसे तग आजायगी । उसके उन बच्चोंमे  
कोई अल्पकालका जन्मा हुआ बच्चा उत्तान होकर सोता रहेगा,  
कोई चीत्कार भार कर रोता रहेगा, कोई चलनेकी इच्छा करगा, कोई

छिने तेनी रक्षा करये तथा तने वात पित्त आदि रोग तथा आतङ्क पणु स्पर्श न  
करी शके ऐयी रीते हुभेशा रक्षा करवानी व्यवस्था करतो रहये तयार पछी ते सोमा  
दारिका राष्ट्रकूटनी साथे विपुल लेगेने भोगवती हर वर्ने ऐक ऐक सन्तानना  
जेठवाने जन्म देये अने ते सोण वर्षमा गनीस पाण्डक पाण्ड्रीओनी मा थपु जये  
पछी नाना भेटा पाण्डेथी ते सोमा ब्राह्मणी तग थपु जये तेना ऐ गय्याओमा  
केठ थोडाज काजमा जन्मेला गय्या उत्तान थपुने सुठ रहये, केठ गेटा पाडीने देवा  
लागये, केठ खालपानी रक्षा करये केठ गीतना क्षीयामा जतु रहये, अथना

उत्कृष्टा=उत्कृष्टशरीरा=मनोहरकाया यावद् भविष्यति, ततः=परिणययोग्यता  
 प्राप्त्यनन्तर खलु ता सोमा दारिकाम् अम्बपितरौ=उन्मुक्तगलभावा विज्ञ  
 रूपरिणतमात्रा यौवनमनुप्राप्तम् एतेषा व्याख्याऽत्रैव मुत्रे प्रागुपपादिता, प्रति-  
 कृजितेन=स्त्रीकृतितया प्रतिभाषितेन श्लेकेन देयद्रव्येण प्रचुराभरणादिना  
 विभूषिता कृत्वेति शेष, प्रतिरूपेण=अनुकूलेन प्रियवचनेन 'भवद्योग्येय'  
 मितिप्रभृतिना वचसा, निजकाय=स्वमीयाय भागिनेयाय = भगिनीपुत्राय  
 राष्ट्रकूटाय भार्यातया=स्त्रीत्वेन दास्यति । सा=सोमा खलु तस्य=राष्ट्रकूटस्य  
 भार्या भविष्यति, दृष्टा=वल्लभा कान्ता उमनीयत्वात्, यावच्छब्देन, प्रिया  
 सदाप्रेमविषयत्वात्, मनोज्ञा सुन्दरत्वात् एव 'मणामा समया अणुमया'  
 इत्यादि दृश्यम् । एतद्व्याख्या पूर्व प्रतिपादिता । भाण्डकरण्डकसमाना=भूषणा-  
 दिकरण्डकवत्, तैलकेला=तैलगानी सौराष्ट्रदेशप्रसिद्धो मृन्मयतैलपात्रविशेषः  
 तद्वत् सुसरक्षिता=अनितरा परिपालिता, सुसगोपिता=यत्नेन रक्षिता चेलपेटा  
 इव=वल्लभमञ्जूपावत् सुसपरिगृहीता=सुष्ठु परिग्रहत्वेन सरक्षिता । रत्नकरण्डकवत्=  
 इन्द्रनीलादिरत्नमञ्जूपावत् सुसगोपिता च, शीत=शीतगन्धाः यावत् विविधा=

मोतीके अन्दरकी चमकके समान जो शरीरकी चमक हो उसे  
 'लावण्य' कहते हैं ।

उसके बाद माता पिता, बाल्यावस्था पारकर यौवनावस्थामें  
 प्रविष्ट उस सोमा बालिकाको विषय सुखसे अभिज्ञ जानकर निश्चित  
 देने योग्य द्रव्य और प्रियवचनके माध्य अपने मानजे राष्ट्रकूटके  
 साथ उसका विवाह कर देंगे । वह सोमा उसकी इष्टा कान्ता और  
 वल्लभा होगी, और वह उस सोमाकी आभूषणके करण्डकके समान,  
 तैलके सुन्दर वर्तनके समान यत्नपूर्वक रक्षा करेगा, वस्त्रोंकी पेटी  
 के समान उसको अच्छी तरह रखेगा और इन्द्रनील आदि रत्न

जैसी शरीरना चमक थाय तेने लावण्य कहें छे

त्यार पछी मातापिता, गाल्यावस्था बीती गया पछी यौवन अवस्थामा आवेबी  
 ते सोमा गालिकाने विषय सुखशी अलिज्ञ (अच्छीती) थयेबी गाली निश्चित देवायोग्य  
 द्रव्य तथा प्रिय वचन साथै पोताना बाछेज राष्ट्रकूटनी साथे तेना विवाह करये ते  
 सोमा तेनी धन्य काना अने वल्लभा थये अने ते, सोमाना आभूषणना करज  
 पठे, तेलना सुंदर वासणुनी पठे यत्नपूर्वक रक्षा करये वस्त्रोनी पेटीना पठे तेने सारी  
 रीते राखये अने इन्द्र नील आदि रत्नकरुणना पठे प्राप्ति पद्य वधाके गडल्य

ङि' = चीत्कुर्वङि, विल्पङि = आर्तस्वर कुर्वणै, कृजङि = स्फुटदधरपूर्वक-  
मप्रकटशब्द कुर्वङि, उक्कजङि = उच्चै शब्द कुर्वणै पूत्कुर्वङि, निद्राङि =  
निद्रा सेवमानै, (स्वपङि) प्रलम्भमानै = वस्त्राञ्चल समालम्बमानै दहङि =  
ज्वलङि, दशङि = दन्तै कृन्तङि वमङि = उद्विलङि (प्रच्छर्दयङि)  
छेरङि = वारवार हृदमानै, मूत्रयङि = मूत्र कुर्वङिः मूत्रपुपीपवान्तसुलि-  
प्तोपलिप्ता प्रस्त्रावविष्टोद्रीणोतपोता, मलिनवसनपुच्छा = मलयुस्तस्यै पुच्छा =  
निश्शोभा कान्तिहीनेत्यर्थ, यावद् अशुचिरीभत्सा = अशुचित्वेन नितरा दुर्नि-  
रीयणीया (घृणिता) परमदुर्गन्धा = अतिदुर्गन्धयुक्ता, राष्ट्रकृदेन स्वपतिना  
सार्द्धं विपुलान् = गृह्णन् भोगभोगान् भुज्यन्ते = भोगविषयीक्रियन्त इति भोगा  
शब्दादयो विषयास्तेषां भागाः = सेवनानि तान् तथा भुञ्जाना = सेवमाना  
विहर्तुम् = अवस्थातु नो शक्नोति = न प्रभवति ॥ ६ ॥

मलम्-तृण तीसे सोमाए माहणीए अणया ऋयाड  
पुवरत्तावरत्तकालसमयासि कुडुवजागरिय जागरमाणीए अयमेया-  
रूवे जाव समुपजित्था-एव खलु अह इमेहि वहूहि दारगेहि  
य जाव डिभियाहि य अप्पेगडएहि उत्ताणसेज्जएहि य जाव

र्तस्वरसे रोयेगा, रोड बन्चा कृजता-अव्यक्त शब्द करता रहेगा,  
कोड जोरसे अव्यक्त शब्द करता रहेगा, कोड सोता रहेगा, कोड  
कपडेरु आचल पकडकर लटकता रहेगा, कोई आगसे जल जायगा,  
कोई दानसे काटता रहेगा, कोई वमन करता रहेगा, कोई पाखाना  
करता रहेगा, कोई मूत्र करता रहेगा। इसलिये उन बच्चोंका पेजान  
पाखाना वमनसे मरी हुई तथा मैले कपडोसे कान्तिहीन, यावत्  
अशुचि, विभत्स, अत्यन्त दुर्गन्धित हो राष्ट्रकृटके साथ अपने विपुल  
भोगोंको भोगनेमें समर्थ न हो सकेगी ॥ ६ ॥

इत्यन्ता (टीका करता) अव्यक्त न समझय तेषां राष्ट्र केत्या क्रशे डोऽ जेरथी  
अव्यक्त राष्ट्र कथां उरशे डोऽ सुता रडेथे, डोऽ कपडाना डोऽ पकडीने लटकया क्रशे  
डोऽ अग्निग जणी जशे, डोऽ दात पडे करडया लाजशे, डोऽ उल्लरी उरशे, डोऽ  
अडे इत्या रडेथे, डोऽ भूतरथा क्रशे आ भाटे ते जय्याना पेशाण-रायप्पान-उ टीथी  
अदेवी मेला उपडथी कान्तिहीन अथे अशुचि, पीलान् अत्यन्त दुर्गन्धित थप्पे  
राष्ट्रकृटनी साथे पानाना विपुल भोग से जयवा समर्थ नहि थऽ शकशे (६)



“वस्तुतस्तदनिर्देश्य नहि वस्तु व्यवस्थितम् ।

स्थाल्या पच्यत इत्येषा, प्रियक्षा दृश्यते यतः ॥” इति

अप्येकैः पराङ्गणैः = पर = स्त्रीयादन्यत् अङ्गण = गम्यत्वेन येषा ते  
तथा, अन्याङ्गणगमनशीलैः, अथवा पराञ्चनैरिति च जाया, परम् = उत्कृष्टम् अञ्चन =  
गमन येषा ते तथा, सम्यग्गमनवद्भिः, अप्येकैः पराक्रममाणैः = उत्सहमानैः,  
अप्येकैः प्रस्खलनकैः = प्रकृष्टनिपतनवद्भिः, अप्येकैः स्तन = पानाय मातुः  
कुच मृग्यमाणैः = अन्वेपयद्भिः, अप्येकैः क्षीर = दुग्ध मृग्यमाणैः, अप्येकैः  
खेलनक = खेलत्यनेनेति खेलन तदेव खेलनक = क्रीडासाधन रुन्दुरु-ल्लगुडा  
दिक मृग्यमाणैः, अप्येकैः खाद्यक स्वाद्यमेव खाद्यक स्वाद्यवस्तु 'ल्पन  
श्रीमोदकप्रभृति मृग्यमाणैः, अप्येकैः कूर = भग्नम् ( जोदन ) मृग्यमाणैः,  
पानीय = जल मृग्यमाणैः, हसद्भिः, रुष्यद्भिः, = रोष कुर्वद्भिः, आक्रोशद्भिः =  
क्रु यद्भिः आक्रुशयद्भिः, स्वस्ववस्तु ग्रहीतु गृह कुर्वद्भिः, तद्भिः = ताडय  
द्भिः, हन्यमानैः = अन्येन ताडयमानैः, विपलपद्भिः = विरुद्ध वदद्भिः, अनु  
गम्यमानैः = पलायनादिकाले पथाद् गम्यमान', रुदद्भिः = शब्दायमानैः, क्रन्द-

दूसरोके आङ्गनमें चला जायेगा अथवा कोई बच्चा अच्छी तरह चलेगा,  
कोई बच्चा उत्साह करेगा, कोई गिरेगा, कोई बच्चा स्तनको दूढ़ेगा,  
कोई दूध चाहेगा, कोई बच्चा खाना मागेगा। कोई भातके लिये  
हठ करेगा, कोई पानीका हठ करेगा, कोई हसता रहेगा, कोई रुष्ट  
होता रहेगा, कोई क्रोध करता रहेगा और कुछ बच्चे अपनी  
वस्तुके लिए लड़ते रहेगे, कोई कीसीको मारता मारता रहेगा।  
कोई किसीकी मार खाता रहेगा कोई बच्चा अण्डबण्ड बकेगा अर्थात्  
व्यर्थका बकवाद-शोर गुल करेगा। कोई किसीके पोछे २ दौड़ता  
रहेगा, कोई रोता रहेगा, कोई बच्चा प्रलाप करता रहेगा, कोई आ

डोष जन्म्यु सारी रीने आनये डोष जाणक उत्साह करये, डोष पडये, डोष जन्म्यु  
तनने शोधवा लागये, डोष दूध मागये, डोष जन्म्यु पावानु मागये, डोष खातन  
भाटे हठ करये, डोष पाणी भाटे हठ करये, डोष हसतु रहये, डोष गु से थतु रहये,  
डोष रीसध जये, डोष जन्म्या तो घानपोतानी नीज भाटे लडतान रहये, जने डोष  
डोषने मारता रहये डोष तो डोषने मार खाता रहये, तो डोष जन्म्या जेम तेम  
जकये अर्थात् व्यर्थ जकवाद-शोर-जधर करी भूकये, डोष डोषनी पाछण दोडया करये,  
डोष रोता रहये, डोष प्रलाप करता रहये, डोष आर्त-ज्वरथी ज्जन करये, डोष जन्म्या

ङि=चीत्कुर्वङिः, विलपङिः=जार्तस्वर कुर्वाणै, क्रजङिः=स्फुटदधरपूर्वक-  
मप्रकटशब्द कुर्वङिः, उत्क्रजङिः=उच्चै शब्द कुर्वाणै पूत्कुर्वङिः, निद्राङिः=  
निद्रा सेवमानैः, (स्वपङि) प्रलम्पमानै=वस्त्राञ्चल समालम्पमानै ददङिः=  
द्वयङिः, दशङिः=दन्तै कृन्तङिः वमङिः=उद्विङ्गि (मन्उर्दयङि)  
त्रेरङिः=सारसार ह्ममानै, मृत्रयङि=मृत्र कुर्वङिः मृत्रपुत्रीपवान्तमुलि  
सोपलिप्ता प्रस्त्रावविष्टोद्गीर्णोत्तमोता, मलिनवमनपुच्छा=मलयुस्तवस्त्रै. पुच्छा=  
निष्शोभा शान्तिहीनेत्यर्थ, यावद् अशुचिरीभत्सा=अशुचित्वेन नितरा दुर्नि  
रीक्षणीया (घृणिता) परमदुर्गन्धा=अतिदुर्गन्धयुक्ता, राष्ट्रकृटेन स्वपतिना  
सार्द्धं विपुलान्=यन्म भोगभोगान् भुज्यन्ते=भोगविषयीक्रियन्त इति भोगा  
शब्दादयो विषयास्तेषा भागाः=सेवनानि तान तथा भुञ्जाना=सेवमाना  
विहर्तुम्=अवस्थातु नो शक्नोति=न प्रभवति ॥ ६ ॥

मलम्-तएण तीसे सोमाए माहणीए अपणया कयाड  
पुवरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणीए अयमेया-  
रूवे जाव समुपजित्था-एवं खलु अह इमेहि वहूहि दारगेहि  
य जाव डिंभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य जाव

तस्वरसे रोयेगा, कोट वच्चा क्रजता-अव्यक्त शब्द करता रहेगा,  
कोट जोरसे अव्यक्त शब्द करता रहेगा, कोट सोता रहेगा, कोट  
रूपरेका अचल पकडकर लटकता रहेगा, कोई आगसे जल जायगा,  
कोई दानसे काटता रहेगा, कोई वमन करता रहेगा, कोई पाग्वाना  
करता रहेगा, कोई मृत्र करता रहेगा। इसलिये उन पक्षोंका पेडाव  
पाग्वाना वमनसे भरी हुई तथा मैले रूपोंसे शान्तिहीन, यावत्  
अशुचि, निभत्तम, अत्यन्त दुर्गन्धित हो राष्ट्रकृटके साथ अपने विपुल  
भोगोंको भोगनेमें समर्थ न हो सकेगी ॥ ६ ॥

दूयता (टीका करता) अव्यक्त न समर्थय सेवा राष्ट्र के साथ करे डोह जेरथी  
अव्यक्त राष्ट्र कथा करे डोह सुता रहेथे, डोह कपडाना डोह पकडीने लटकता करे  
डोह अग्निगा जणी जथे, डोह दात वडे करडवा ल जथे, डोह उवटी करेथे, डोह  
अडे इरता रहेथे, डोह भूतया करेथे अ भाटे ते जन्थाना पशाण-पायथान-उ टीथी  
लनेटी मेला कपडथी कानिहीन जेथे अशुचि, पीलत्त अत्यन्त दुर्गन्धित यन्ने  
राष्ट्रकृटनी साथे पानाना निपुन भोग भोजनवा समर्थ नहि थु शकथे (६)

अप्पेगइहि मुत्तमाणेहि दुज्जाएहि दुज्जम्मएहि हयविप्पहयभग्गेहि  
 एगप्पहारपडिएहि जाण मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता जाव  
 परमदुब्बिभगधा नो सचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं जाव भुंजमाणी  
 विहरित्तए । त धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीविय-  
 फले जाओण वज्जाओ अवियाउरीओ जाणुक्कोप्परमायाओ  
 सुरभिसुगधगधियाओ विउलाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइ भुज-  
 माणीओ विहरति, अह ण अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो  
 सचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्तए ।

तेण कालेण २ सुवयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ  
 जाव बहुपरिवाराओ पुद्वाणुपुद्बि जेणेव विभेले सनिवेसे तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह जाव विहरति ।  
 तएण तासि सुवयाणं अज्जाण एगे सघाडए विभेले सन्नि-  
 वेसे उच्चनीय जाव अडमाणे रट्ठकडस्स गिह अणुपविट्ठे ।  
 तएण सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ,  
 पासित्ता हट्ठुट्ठा० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता  
 सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वदइ नमसइ, विउलेण  
 असण ४ पडिलाभेइ, पडिलमित्ता एव वयासी-एव खलु अह  
 अज्जाओ रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइ जाव सवच्छरे २ जुगल  
 पयामि, सोलसहि संवच्छरेहि वत्तीस दारगरूवे पयाया ।  
 तएण अह तेहि वहूहि दारएहि य जाव डिंभियाहिअ अप्पेगइ-  
 एहि उत्ताणसिज्जएहि जाव मुत्तमाणेहि दुज्जाएहि जाव नो  
 सचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी  
 विहरित्तए, त इच्छामि ण अज्जाओ । तुम्ह अतिए धम्म  
 निसामित्तए । तएण ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए

विचित्त जाव केवलपणत्तं धम्मं परिकहेड । तएणं सा सोमा  
माहणी तासिं अज्जाणं अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठा  
जाव हियया ताओ अज्जाओ वदड नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता  
एव वयासी सदहामि णं अज्जाओ । निग्गथं पावयणं जाव  
अवमुट्ठेमि ण अज्जाओ जाव से जहेय तुव्भे वयह, जं नवर  
अज्जाओ । गृकूड आपुच्छामि । तएणं अहं देवाणुप्पियाण  
अतिए मुडा जाव पवयामि । अहासुह देवाणुत्पिए । मा पडि-  
वथं । तएणं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ वदड नमंसइ,  
वदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेड ॥ ७ ॥

जया—ततः खलु तस्याः सोमाया ब्राह्मण्या अन्यदा रुदाचित्  
पूर्वरात्रापररात्रकालसमये कुटुम्बजागरिका जाग्रत्या अयमेतद्रूपो यावत् समुत्-  
पन्नत—एव खलु अहमेभिर्गृहभिर्दारैश्च यावद् डिम्भिराभिश्च अप्येभ्यै उत्तान  
गयैश्च यावद् अप्येभ्यैर्मृत्यद्भिः दुर्जातैः दुर्जन्मभिः इतविमहत्भाग्यैश्च  
एभ्यः प्राप्यति तैः या खलु मृतपुरीषवमितसुलिप्तोपलिप्ता यावत् परमदुरभिमन्या  
नो शक्नोमि राष्ट्रकृतेन सार्द्धं यावद् भुञ्जाना विहर्तुम् । तद् ग्रन्थाः खलु

‘तएण तीसे’ इत्यादि—

उमके घाट एक समय पिठली रातमे कुटुम्बजागरणा करती  
हुई उस सोमा ब्राह्मणीके आत्मामे इस प्रकारका विचार उत्पन्न  
होगा—कि अहो ! मैं मलमूत्र करनेवाले इन बहुतसे अभागे दुःख  
दायी गेहे ० दिनोंमे उत्पन्न होनेवाले, दुर्जन्मा गेहे घटे और नव  
जात शिशुओंके द्वारा मलमूत्र और वमनसे लिपी-पुती अत्यन्त  
दुर्गन्धमयी होकर राष्ट्रकृटके साथ सुखका अनुभव नहीं कर पाती हूँ ।

‘तएण तीसे’ इत्यादि

त्यान पछी ओउ समय पाछली राते कुटुण जगरणु उ ता ते सोमा ब्राह्मणीना  
मनमा ओयो विचार उत्पन्न थये उ —अहो ! हुँ भणभूत्र जन्मावाणा धरुा कमनशील  
उ भदाथी योडा हियमोभा ~ न्न लेवावाणा उन्मा नाना मोटा अने नवा जन्मेला  
माण्डोना भणभूत्र तथा वमनवी लीपायेल, भरडायेल अत्यंत दुर्गन्धिभयी पनी होय थी  
नष्टदुर्गन्धी साथे सुखनो अनुभव कथं गडती नथी

તા અમ્મિયા યાવદ્ જીવિતફલ યાઃ સ્વલુ વન્ યા અમિજનનશીલા જાનુકર્પર માતર. સુગમિસુગન્ધગન્ધિયા વિપુલ્યાન માનુષ્યાકાન ભોગભોગાન્ શુદ્ધાના વિહરન્તિ, અદ્ ગ્વલુ અન્યા અપુણ્યા નો જાનોમિ રાષ્ટ્રકૂટેન સાર્દ્ધે વિપુલ્યાન યાવદ્ વિહર્તુમ્ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે સુવ્રતા નામ આર્યા ઈર્યાસમિતા યાવદ્ વહુપરિવારાઃ પૂર્વાનુપૂર્વી યત્ર વેમેલઃ સન્નિવેશસ્તત્રૈવોપાગન્ઠન્તિ, ઉપાગત્ય યથાપતિરૂપમમ્ અવગ્રહ યાવદ્ વિહરન્તિ । તત સલુ તાસા સુવ્રતાનામાર્યા ણામ્ એક' સપાટસો વેમેલે સન્નિવેશે ઉચ્ચનીચ૦ યાત્ત અટન્ રાષ્ટ્રકૂટસ્ય ગૃહમનુપ્રવિષ્ટઃ । તત. સ્વલુ સા સોમા બ્રાહ્મણી તા આર્યા એજમાના' પશ્યતિ દૃષ્ટા દૃષ્ટુષ્ટા૦ ક્ષિપમેવ૦ આસનાદ્ભ્યુત્થિષ્ઠતિ અભ્યુત્થાય સપ્તાષ્ટપદાનિ અનુ

વે માતાએ ધન્ય હું ઓર ઉનકા જીવન સફલ છે, જો મ્મ યા છે, જિન્હે, જિન્હે થવા નહીં હોતા, જો જાનુકર્પરમાતા છે જો સુગન્ધ દ્રવ્યોસે સુવાસિત હો મનુષ્ય સમ્બન્ધી ભોગોંકો ભોગતી હુઈ વિચર રહી છે, મેં અધન્ય છું, અપુણ્ય છું, જો કિ મેં રાષ્ટ્રકૂટકે સાથ વિપુલ ભોગોંકો નહીં ભોગ સકતી છું ।

ઉસ કાલ ઉસ સમયમે સુવ્રતા નામકી આર્યાએ ઈર્યાસમિતિ આદિસે યુક્ત વહુત સી સાધ્વિયોકે સાથ તીથેકર પરમ્પરાસે વિચરતી હુઈ વેમેલ સન્નિવેશમે આવેંગી ઓર યયોચિત અવગ્રહ લેકર વહાં રહેને લગંગી । બાદ ઉસકે એક દિન ઉન સુવ્રતા આર્યાઓકા એક સપાટક વેમેલ સન્નિવેશકે ઉચ્ચ નીચ મધ્યમ કુલમે ફિરતા હુઆ રાષ્ટ્રકૂટકે ઘરમે આવેગા । ઉસકે બાદ વહ સોમા બ્રાહ્મણી આતી હુઈ ઉન આર્યાઓકો દેલેંગી દેલકર હૃદય તુષ્ટ હૃદય હો

તે માતાઓને ધન્ય છે અને તેમના જીવન સફળ છે કે જે વાઝણી છે-જેને છેલ્લે યતુ નથી, જે જાનુકર્પરમાતા છે, જે સુગંધી દ્રવ્યોથી સુવાસિત થઈને મનુષ્ય મનુષ્યી ભોગો ભોગવતી વિચરે છે હું અધન્ય છું, અપુણ્ય છું જેથી હું રાષ્ટ્રકૂટની સાથે વિપુલ ભોગોને ભોગવી શકતી નથી

તે કાળે તે સમયે સુવ્રતા નામની આર્યાઓ ઈર્યાસમિતિ આદિ યુક્ત ઘણી સાધ્વીઓની સાથે તીથ કર પરપરાથી વિચરતી બિલેન સન્નિવેશમા આવશે અને યથોચિત અવગ્રહ લઈને ત્યાં રહેવા લાગશે પછી એક દિવસ તે સુવ્રતા આર્યાઓનું એક સપાટું બિલેન સન્નિવેશમાં બેસા નીચા અને મધ્યમ કુલમા ફરતા ફરતા રાષ્ટ્રકૂટના ઘરમા આવશે ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને આવતી જશે અને તેમને જોઈને

गच्छति, अनुगत्य वन्दते नमस्यति विपुलेन अशन० ४ प्रतिवन्दयति, प्रति-  
वन्द्य एवमादीत्-एवं खलु अहमार्या ? राष्ट्रभूतेन सार्द्धं विपुलान् यावत्  
सर्वत्सरैर्द्वाविंशद् दारस्वरूपान् प्रजाता । ततः खलु अह तैर्वहुभिदारैश्च  
यावद् द्विम्बिकाभिश्च अण्येकैः उत्तानशयैः यावत् मृगयद्भिर्दुर्जातैः यावद्  
नो गन्तोमि राष्ट्रभूतेन सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विदुर्तुम्, तदि-  
च्छामि खलु आर्याः ! युष्माकमन्तिके र्म निशामयितुम् । तत खलु ता  
आर्याः सोमायै ब्राह्मण्यै विचित्र यावत् केवलप्रज्ञप्त धर्मं परिस्थयन्ति ।  
ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी तासामार्याणामन्तिके र्म श्रुत्वा निशम्य  
हृष्टतुष्टा० यावद् हृदया ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यत्या

श्रीघातिश्रीघ अपने आमनसे उठ कर खड़ी होगी । और उन आ-  
र्याओंका आन्तर मत्कार करनेके लिए मान आठ पग आगे जायेगी ।  
अनन्तर वन्दन नमस्कार कर विपुल अशन पान आदिसे प्रतिला-  
भित करेगी । और उनसे इस प्रकार कहेगी-हे देवानुप्रिये । राष्ट्र-  
भूतेके साथ विपुल भोगोको भोगती हुई हमने प्रत्येक वर्षमे शुगल  
बच्चोको जन्म देकर सोलह वर्षोमे बत्तीस बच्चोको जन्म दिया है ।  
मैं दुर्जन्मा उन बच्चोका मल-मूत्र और वमन आदिसे सनी-पुनी  
दुर्गन्धित शरीर हो अपने पतिके साथ कुछ भी आनन्द भोग नहीं  
कर पाती । हे आर्या ! मैं आप लोगोंके समीप धर्म सुनना चाहती  
हूँ । उसके बाद वे साध्वियाँ सोमा ब्राह्मणीको विचित्र यावत् केनली  
प्ररूपित धर्मका उपदेश देंगी ।

हृष्टतुष्टा अत उत्पुष्टी जलनी जलही पानाने आम्नेथी उहीने उही थशे आने ते  
आर्याओने आहर मत्कार कवा भाटे मान आ० पगला सामे नरो त्थार पछी वन्दन  
आने नमस्कार करीने मारी रीते अशनपान आदिथी प्रतिवाक्षित उरशे ( पडोरावगे )  
आने तेनने आ प्रकाटे कहेथे —

हे देवानुप्रिये ! राष्ट्रभूनी साथे विपुल भोगोने भोगवनी मे प्रत्येक वर्षे ओ-  
नेउडा गणकने जन्म आपता माग वर्षमा गत्रीग गन्थाने जन्म आयो है हु  
दुर्जन्मा ते गन्थाना भगभूत आने उनरी आदिथी वीपायेती दुर्गन्धवाणा शरीर मान  
पतिनी साथे ठोछ नतने आनद बोजा करी सकती नथी हे आर्याओ ! हु आप  
बोडोनी फासे धर्म साधणवा माशु छु त्थार पछी ते साव्वीओ सोमा ब्राह्मणीने विधि  
ओरसे देवनी प्ररूपित धर्मने उपदेश आपथे

एवमवादीत्-ब्रह्मधामि खलु आर्याः ! निर्गन्ध प्रवचनम्, उदमेतद् आर्या !  
यावत् यद् यथेदं यूयं वदथ, यद् नरमार्या ! राष्ट्रकूटमापृच्छामि । ततः  
खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रजामि । यथासुखं देवानुप्रिये !  
मा प्रतिबन्धम् । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता आर्या वन्दते नमस्यति,  
उन्दिता नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति ॥ ७ ॥

टीका-‘तएण सीसे’ इत्यादि-‘दुर्जातै’-दुष्ट जात=प्रादुर्भावो येषां ते  
तथा तैः, अन एव-दुर्जन्मभि = दुष्ट=कुत्सित येषां मम दुःखदायित्वात् ते  
तथा तैः, हतविप्रहतभाग्यैः=सर्वथा भाग्यहीनैः । एवमद्वारपतितैः=अल्पकाले-  
नैव मम कुक्ष्यपतीर्णैः । शेषं सुगमम् ॥ ७ ॥

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंसे धर्म सुनकर  
उसे हृदयमे अवधारित कर हृष्ट तुष्ट हो अत्यन्त हर्षयुक्त हृदयसे  
उन आर्याओंका वन्दन और नमस्कार करके इस प्रकार कहेगी-  
हे आर्याओ ! मैं निर्गन्ध प्रवचनपर श्रद्धा रखती हूँ, और  
निर्गन्ध प्रवचन को सम्मानित करती हूँ ।

हे देवानुप्रिये ! जो आप कहती हैं वही सत्य है । मैं राष्ट्र-  
कूटको पूज्ती हूँ, बादमें आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होऊँगी ।

उसके बाद आर्याने कहा-जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा  
करो । शुभ काममें प्रमाद मत करो । उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी  
उन आर्याओंको वन्दन और नमस्कार कर विसर्जन करेगी ॥ ७ ॥

त्यार पछी ते सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओ। पासेथी धर्म काभणीने ते हृदयमा  
धारण करीने हृष्ट तुष्ट यथेने अत्यन्त हर्षयुक्त हृदयथी ते आर्याओने वन्दन अने  
नमस्कार करीने आ प्रभारे कहेथे —

हे आर्याओ ! हूँ निर्गन्ध प्रवचन उपर श्रद्धा राखु छु अने निर्गन्ध  
प्रवचनने सम्मानित करु छु

हे देवानुप्रिये ! जे आप कहे छे तेज सत्य छे हु राष्ट्रकूटने पूछु छु पछी  
आपनी पासे मुण्डित यथेने प्रव्रजित यथे

त्यार पछी आर्याओ कहे छे —जेवी रीते तने सुभ थाय तेभ कर शुभ  
काभमा प्रमाद न कर त्यार पछी ते सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओने वन्दन अने  
नमस्कार करी विसर्जन करथे (७)

मृत्म्-तएण सा सोमा माहणी जेणेव रट्टकडे तेणेव उवागया करतल० एव वयासी-एव खलु मए देवाणुप्पिया । अज्जाण अतिए धम्मे निसते, से वि य ण धम्मे इच्छिए जाव अभिरुचिए, तएण अह देवाणुप्पिया । तुव्भेहिं अब्भ-  
णुन्नाया सुव्वयाण अज्जाणं जाव पव्वडत्तए । तए ण से रट्टकडे सोम माहणि एव वयासी-मा णं तुम देवाणुप्पिए । इदाणि मुंडा भवित्ता जाव पव्वयाहि । भुजाहि ताव देवाणुप्पिए । मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ, ततो पच्छा भुत्त भोई सुव्वयाण अज्जाण अतिए मुंडा जाव पव्वयाहि । तएण सा सोमा माहणी ण्हाया जाव सरीरा चेडियाचक्कवालपरि किण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमड, पडिनिक्खमित्ता विभेल सनिवेस मज्झमज्जेण जेणेव सुव्वयाण अज्जाण उवस्सए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वदड नमसड, पज्जुवासड । तएण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्त केवलपण्णत्त धम्म करिकहेड जहा जीवा वज्झति । तएण सा सोमा माहणी सुव्वयाण अज्जाण अतिए जाव दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जड, पडिवज्जिता सुव्वयाओ अज्जाओ वदड नमसड, धट्ठित्ता नमसित्ता जामेव दिसिं पाउव्वभूया तामेव दिस पडिगया । तएण सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगत० जाव अप्पाण भावे माणी विहरड ।

तएण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णया कयाड विभेलाओ सनिवेसाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, वहिया जणवयविहार विहरति ॥ ८ ॥



एवमवादीत्-श्रद्धाभि खलु आर्याः ! निर्गन्ध प्रवचनम्, इत्मेतद् आर्या !  
यावत् यद् यथेद यूय वदथ, यद् नवरमार्याः ! राष्ट्रकूटमापृच्छामि । ततः  
खलु अह देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रजामि । यथासुख देवानुप्रिये !  
मा प्रतिगन्धम् । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी ता आर्या वन्दते नमस्यति,  
वन्दिता नमस्यत्वा प्रतिविसर्जयति ॥ ७ ॥

टीका-‘तएण तीसे’ इत्यादि-दुर्जातैः-दुष्ट जात=मादुर्भावो येपा ते  
तथा तैः, अन एव-दुर्जनमभि = दुष्ट=कुत्सित येपा मम दु खदायित्वात् ते  
तथा तैः, इतविप्रहतभाग्यैः=सर्वथा भाग्यहीनैः । एप्रहारपतितैः=अल्पकाले-  
नैव मम कुक्ष्यरतीर्णै । शेष सुगमम् ॥ ७ ॥

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंसे धर्म सुनकर  
उसे हृदयमे अवधारित कर हृष्ट तुष्ट हो अत्यन्त हर्षयुक्त हृदयसे  
उन आर्याओंका वन्दन और नमस्कार करके इस प्रकार कहेगी-  
हे आर्याओ ! मैं निर्गन्ध प्रवचनपर श्रद्धा रखती हूँ, और  
निर्गन्ध प्रवचन को सम्मानित करती हूँ ।

हे देवानुप्रिये ! जो आप कहती है वही सत्य है । मैं राष्ट्र-  
कूटको पूछती हूँ, बादमें आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होऊँगी ।  
उसके बाद आर्याने कहा-जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा  
करो । शुभ काममे प्रमाद मत करो । उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी  
उन आर्याओको वन्दन और नमस्कार कर विसर्जन करेगी ॥ ७ ॥

ત્યાર પછી તે સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓ પાસેથી-ધર્મ કામળીને તે હૃદયમા  
ધારણ કરીને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઈને અત્યંત હર્ષયુક્ત હૃદયથી તે આર્યાઓને વદન અને  
નમસ્કાર કરીને આ પ્રકારે કહેશે —

હે આર્યાઓ ! હું નિર્ગન્ધ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખુ છું અને નિર્ગન્ધ  
પ્રવચનને સન્માનિત કરૂં છું

હે દેવાનુપ્રિયે ! જે આપ કહે છે તેજ સત્ય છે હું રાષ્ટ્રકૂટને પૂછુ છું પછી  
આપની પાસે મુકિત થઈને પ્રવ્રજિત થઈશ

ત્યાર પછી આર્યાઓ કહે છે —જેવી રીતે તને સુખ થાય તેમ કર શુભ  
કામમા પ્રમાદ ન કર ત્યાર પછી તે, સોમા બ્રાહ્મણી તે આર્યાઓને વદન અને  
નમસ્કાર કરી વસર્જન કરશે (૭)

शरीरा चेष्टिकाचक्रवाल्परिकीर्णा स्वस्माद् पृढात् प्रतिनिष्क्रामतिः, प्रतिनिष्क्रम्य विभेल सन्निवेश म यमयेन यत्रैव सुप्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुप्रता आर्या वन्दते नमस्यति पर्युषाम्ते । तत खलु ता' सुव्रताः आर्या' सोमायै ब्राह्मण्य विचित्र केवलप्रवृत्त र्म परित्यज्यन्ति, यथा जीवा पश्यन्ते । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुप्रतानामार्याणामन्तिके यावद् द्वादशविंश श्रावकर्म प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य सुप्रता आर्या वन्दते नमस्यति, पन्दित्रा नमस्यित्वा यस्या एव दिश प्रादुर्भूता तामेवदिश प्रतिगता । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका जाता अभिगत० यावत् आत्मान भावयन्ती विहरति ।

हो दामिनीके समूहसे गिरी हुई अपने घरसे निकल कर विभेल सन्निवेशके मध्य भागसे होती हुई सुव्रता आर्याओंके उपाश्रयमें आयेगी । आकर वह सुव्रता आर्याको वन्दन और नमस्कार कर सेवा करेगी । उसके बाद वे सुव्रता आर्या उस सोमा ब्राह्मणीको अनेक प्रकारसे विचित्र केवली प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करेगी—'जिम प्रकार जीव कर्मसे बद्ध होते हैं और मुक्त होते हैं' । इस प्रकार केवल प्ररूपित र्म सुनकर वह सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्याके पास यावत् धारक प्रकारका श्रावक र्मको स्वीकार करेगी । बाद उन आर्याओंको वन्दन नमस्कार कर जिन दिशासे आयेगी उसी दिशामें लौट जायगी ।

तदन्तर वह सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका बनेगी । और सभी जीव अजीव आदि तत्त्वोंको जानकर श्रावकव्रतसे आत्माका

मंडलीमा वेगधने पोताना घरभाथी नीकगी विभेव मन्निनेयना मध्य लागभाथी धधने सुप्रता आर्याओना डिवायभा आवशे आनीने ते सुप्रता आर्याने वदन नमस्कार करी नेवा करणे त्या पछी ते सुप्रता आर्याओ ते नेमा प्राक्षाणीने निमित्त देवली प्रज्ञप्त धर्मने अनेक प्रकारे उद्देश करणे ते प्रकारे उन कर्मथी लपाथ ठे अने मुक्त याय छे धत्यादि देवली प्रज्ञप्त धर्म साक्षातीने ते सोमा प्राक्षाणी सुप्रता आर्याओनी पाने गार प्रज्ञप्ता श्रावकधर्मने स्वीकार करणे पछी ते आर्याओने वदन-नमस्कार करीने छे दिशाथी तेओ आनी छे ते दिशाभा पाछी जेणे त्या पछी ते नेमा प्राक्षाणी श्रमण उपासिका बनणे अने लपा छे अथवा आदि तत्त्वने लक्ष्मी श्रावक व्रतथी आत्माने लापित करती विचरणे त्या

जाया—ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी यत्रैव राष्ट्रकूटस्तत्रैव उपागता  
 स्ततल० एवमवादीत—एव खलु मया देवानुप्रिया ! आर्याणामन्तिके उर्मो  
 निशान्तः (श्रुतः) सोऽपि च खलु धर्म इष्टो यावद् अभिरुचित , ततः खलु  
 अहं देवानुप्रिया ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सुप्रतानामार्याणां यावत् प्रव्रजितम् ।  
 ततः खलु स राष्ट्रकूटः सोमा ब्राह्मणीमेवमवादीत—मा खलु देवानुप्रिये !  
 इदानीं मुण्डा भूत्वा यावत् प्रव्रज, भुङ्क्ष्य तावद् देवानुप्रिये ! मया सार्द्धं  
 विपुला भोगभोगान्, ततः पश्चाद् भुक्तभोगा सुप्रतानामार्याणामन्तिके मुण्डा  
 यावत् प्रव्रज । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटस्य एतमर्थं प्रति  
 शृणोति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी स्नाता यावत् सर्वान्द्वारभूषित

‘तएण सा’ इत्यादि—

उसके बाद वह सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटके पास आवेगी  
 और हाथ जोड़कर इस प्रकार कहेगी—हे देवानुप्रिय ! मैंने आर्या-  
 ओके समीप धर्म सुना । वह धर्म भी मुझे इष्टप्रिय और हितकारक  
 जान पड़ा और अच्छा लगा, इसलिये हे देवानुप्रिय ! मेरी इच्छा है  
 कि तुमसे आज्ञा लेकर मैं उन आर्याओके पास जाऊँ, और दीक्षा ग्रहण  
 करूँ । सोमा ब्राह्मणीका ऐसा वचन सुनकर राष्ट्रकूट उससे कहेगा—  
 हे देवानुप्रिये ! अभी तुम मुण्डित होकर प्रव्रजित मत होओ ।  
 हे देवानुप्रिये ! अभी तुम मेरे साथ विपुल भोगोंका भोग करो ।  
 उसके बाद भुक्तभोगा होकर सुव्रता आर्याके पास प्रव्रजित होना ।  
 सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटकी इस सलाहको मान जायगी । बादमें वह  
 सोमा ब्राह्मणी स्नान करके नभी प्रकारोंके अलङ्कारोंसे अलङ्कृत

‘तएण सा’ इत्यादि

तत्पश्चात् ते सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटनी पास आवेशे अने हाथ जोड़ने आ  
 प्रकारे कहेथे—हे देवानुप्रिय ! मैं आर्याओं पासैथी धर्मनु श्रवण कर्तुं ते धर्म  
 पणु मने इष्ट प्रिय अने हितकारक लाग्यो ने सारे पणु नष्टायो छे भाए हे देवानु  
 प्रिय ! भारी इच्छा छे के तभारी आज्ञा लधने । ते आर्याओं पासै जाऊँ अने दीक्षा  
 अकण्ठ कर्तुं सोमा ब्राह्मणीना जेना वचन सालणी राष्ट्रकूट तेने कहेथे—

हे देवानुप्रिये ! हाल तु मुण्डित यः प्रव्रजित न था हे देवानुप्रिय ! हाल  
 तो भारी साथे विपुल भोगों लोखव त्पश्चात् पछी भुक्तभोगा यः सुव्रता आर्यानी  
 पासै प्रव्रजित यः सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूटनी आ सलाहने मानी नथे पछा ते  
 सोमा ब्राह्मणी स्नान करीने तभाम जतना धर्षणा—गादीथी अलङ्कृत यः द्युमीयेनी

शरीरा चेष्टिकाचक्रवाल्परिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामतिः, प्रतिनिष्क्रम्य त्रिभेल सन्निवेश मयमयेन यत्रैव सुप्रतानामार्याणामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुप्रता आर्या वन्दते नमस्यति पर्युपास्ते । ततः खलु ताः सुव्रताः आर्याः सोमायै ब्राह्मण्य विचित्र केवलिप्रज्ञप्न मं परिश्रययन्ति, यथा जीवा नश्यन्ते । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुप्रतानामार्याणामन्तिके यावद् द्वादशविध श्रावककर्म प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य सुप्रता आर्या वन्दते नमस्यति, गन्तिवा नमस्यित्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेवदिश प्रतिगता । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका जाता अभिगत० यावत् आत्मान भावयन्ती विहरति ।

हो दामियोके समझसे घिरी हुई अपने घरसे निकल कर विभेल सन्निवेशके मध्य भागसे होती हुई सुव्रता आर्याओके उपाश्रयमे आयेगी । आकर वह सुप्रता आर्याको वन्दन और नमस्कार कर सेवा करेगी । उसके बाद वे सुव्रता आर्या उस सोमा ब्राह्मणीको अनेक प्रकारसे विचित्र केवली प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करेगी—‘जिम प्रकार जीव कर्मसे बद्ध होते हैं और मुक्त होते हैं’ । इस प्रकार केवलि प्ररूपित धर्म सुनकर वह सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्याके पास यावत् वारह प्रकारका श्रावक कर्मको स्वीकार करेगी । बाद उन आर्याओंको वन्दन नमस्कार कर जिम दिशासे आयेगी उसी दिशामे लौट जायगी ।

तदन्तर वह सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिका बनेगी । और सभी जीव अजीव आदि तत्वोको जानकर श्रावकव्रतसे आत्माका

भङ्गणीमा घेराधने पोताना घरभाथी नीकणी विभेल सन्निवेशना मध्य भागभाथी धर्धने सुप्रता आर्याओना उपाश्रयमा आवशे आनीने ते सुप्रता आर्याने वन्दन नमस्कार करी सेवा करशे त्तिार पछी ते सुप्रता आर्याओ ते सोमा ब्राह्मणीने विचित्र केवली प्रज्ञप्त धर्मना अनेक प्रकारे उपादेश करशे ते प्रकारे एव कर्मवी गधाय छे अने मुक्त थाय छे भत्यादि केवली प्ररूपित धर्म साधणीने ते सोमा ब्राह्मणी सुप्रता आर्याओनी पाने गार प्रकारना श्रावकधर्मना स्वीकार करशे पछी ते आर्याओने वन्दन-नमस्कार करीने ते दिशाथी तेओ आवी हुने ते दिशाभा पाछी गशे,

त्या पछी ते सोमा ब्राह्मणी श्रमण उपासिका बनशे अने गधा एव अणुव आदि तत्वोने जलणी श्रावक व्रतथी आत्माने साधिन करती विहरशे त्तिार

तत खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा मन्त्राचिन् वेभलात् सन्निवेशात्  
प्रतिनिष्कामन्ति, ग्रहिर्नपद्विद्वार विरन्ति ॥ ८ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—व्याख्या पठितसिद्धा ॥ ८ ॥

मूलम्—तएण ताओ सुव्रयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ  
पुव्वाणुपुवि जाव विहरइ । तएण सा सोमा माहणी इमीसे  
कहाए लद्धट्टा समाणी हट्टुत्तुट्टा णहाया तहेव निग्गया जाव  
वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता धम्म सोच्चा जाव नवर  
रट्टुकड आपुच्छामि, तएण पव्वयामि । अहासुह । तएण सा  
सोमा माहणी सुव्रयं अज्ज वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता  
सुव्रयाणं अतियाओ पडिनिम्बखमइ, पडिनिम्बसमित्ता जेणेव सए  
गिहे जेणेव रट्टुकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करतल  
परिग्गहिय० तहेव आपुच्छइ जाव पव्वडत्तए । अहासुह देवा-  
णुप्पिए । मा पडिवध । तएण से रट्टुकूडे विउल असण  
तहेव जाव पुव्वभवे सुभदा जाव अज्जा जाता, इरियासमिया  
जाव गुत्तवभयारिणी । तएण सा सोमा अज्जा सुव्रयाण अज्जाणं  
अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाद अहिज्जइ, अहिज्जित्ता  
वहूहिं छट्टुट्टम दसम दुवालस० जाव भावेमाणी वहुड वासाइ  
सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए  
सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कता समाहि-  
पत्ता कालमासे काल किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सा

भावित करती हुई विचरेगी उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय  
विमेल सन्निवेश ले निकलकर बाहर देशमें विहार करती हुई विचरेगी । ८ ।

पछी सुव्रता आर्याओ कोई समय जेनेव सन्निवेशथी लिक्याने भीजा देयमा  
पिकार करती विचरेथी (८)

माणियदेवत्ताए उववन्ना । तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दोसा-  
गरोवमाडं ठिई पणत्ता, तत्थ ण सोमस्स वि देवस्स दोसा-  
गरोवमाडं ठिई पणत्ता ।

से ण भत्ते । सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं  
जाव चय चडत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?  
गोयसा । महाविदेहे वासे जाव अत काहिइ । एव खल्ल  
जवू । समणेणं जाव सपत्तेण चउत्थस्स अज्जयणस्स अयमट्ठे  
पणत्ते ॥ ९ ॥

॥ पुप्फियाए चउत्थ अज्जयणं समत्त ॥ ४ ॥

उाया—ततः खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा नृदाचित् पूर्वानुपूर्वा  
यावद् विहरन्ति । ततः खलु सा सोमा ब्राह्मणी अस्या कथाया लब्धार्था  
सती दृष्टतुष्टा० स्नाता तथैव निर्गता यावद् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा  
नमस्यित्वा उमं श्रुत्वा यावद् नवर राष्ट्रकूटमापृच्छामि, यथासुखम्० । ततः

‘तएण ताओ’ इत्यादि—

उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय पूर्वानुपूर्वी  
विचरती हुई फिर विभेल सन्निवेशमे आएगी और वसतिकी आज्ञा  
लेकर वहाँ तप सयमसे आत्मको भावित करती हुई रहेगी । बाद  
वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओके आनेका समाचार पाकर दृष्ट  
तुष्ट हृदय हो स्नान कर तथा सभी अलङ्कारोसे विभूषित हो  
पूर्ववत् उन आर्याओके पास जाकर यावत् वन्दन और नमस्कार  
करेगी । वन्दन नमस्कार करके धर्म सुनकर उस आर्यासे

‘तएण ताओ’ इत्यादि

त्यार पछी ते सुव्रता आर्याओ कोछ समये पूर्वानुपूर्वी विचरल्लु करता करता  
पाछी गिलेस सन्निवेशमा आवथे अने वस्तीनी आज्ञा लछ त्या तपसयमधी  
आत्माने भावित करती रहथे त्यार पछी ते सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओना आवधाना  
समाचार भजता दृष्ट तुष्ट हृदयथी स्नान करी तथा धरेल्लु आलूषल्लुथी विभूषित थछ  
अगाउनी जेम ते आर्याओनी पासो बधने वदन नमस्कार करथे अने वदन नमस्कार

तत खलु ताः सुव्रता आर्या अन्यदा मन्त्रानि वेधेलात् सन्निवेशात्  
प्रतिनिष्क्रामन्ति, पठिर्ननपन्त्रिणार विरन्ति ॥ ८ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि-व्याख्या पठित्तासद्वा ॥ ८ ॥

मूलम्—तएण ताओ सुव्रयाओ अज्जाओ अन्नया कयाड  
पुवाणुपुवि जाव विहरुड् । तएणं सा सोमा माहणी इमीसे  
कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठुट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया जाव  
वदड नमसड्, वदित्ता नमसित्ता धम्म सोच्चा जाव नवर  
रट्ठकूड आपुच्छामि, तएण पवयामि । अहासुह । तएण सा  
सोमा माहणी सुव्रयं अज्ज वदड नमसड्, वदित्ता नमंसित्ता  
सुव्रयाणं अतियाओ पडिनिम्बमड्, पडिनिम्बसमित्ता जेणेव सए  
गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छड्, उवागच्छित्ता करतल  
परिग्गहिय० तहेव आपुच्छड् जाव पवइत्तए । अहासुह देवा  
णुप्पिए । मा पडिवध । तएणं से रट्ठकूडे विउल असण  
तहेव जाव पुवभवे सुभदा जाव अज्जा जाता, इरियासमिया  
जाव गुत्तवभयारिणी । तएण सा सोमा अज्जा सुव्रयाण अज्जाण  
अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाड अहिज्जड्, अहिजित्ता  
वड्ढहिं छट्ठम दसम दुवालस० जाव भावेमाणी वहुड् वासाड  
सामण्णपरियाग पाउणड्, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए  
सट्ठि भत्ताड अणसणाए उदित्ता आलोइयपडिकता समाहि-  
पत्ता कालमासे काल किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सा

भावित करती हुई विचरेगी उसके बाद वह सुव्रता आर्या किसी समय  
विमेल सन्निवेश से निकलकर बाहर देशमें विहार करती हुई विचरेगी । ८ ।

पछी सुव्रता आर्याजि। ठाई समये निखेव सन्निवेशथी ॥८॥ गीने थान्ना देसमा  
विहार करती विचरथे (८)

सामायिकादिनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य गृह्णतिः पष्ठाष्टमदशमद्वादश०  
यावद् भावयन्ती बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या  
सलेखनया पट्टिं भक्तानि अनगनेन छित्त्वा आलोचितप्रतिक्रान्ता समाधिप्राप्ता  
शालमासे कालं कृत्वा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सामानिकदेवतया उदपद्यत।  
तत्र खलु अस्त्येकैकेषां देवानां द्विसागरोपमा स्थितिः प्रवृत्ता, तत्र खलु  
सोमस्यापि देवस्य द्विसागरोपमा स्थितिः प्रवृत्ता।

स खलु भदन्त ! सोमो देवः तस्माद् देवल्लोकाद् आयुःक्षयेण यावत्  
चयं न्युत्वा क्व गमिष्यति ? क्व उत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे उपै यावद्

होकर ईर्याममिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी होवेगी।  
उसके बाद वह सोमा आर्या उन सुव्रता आर्याओंके समीप सामा-  
यिक आदि ग्यारह अदोंका अध्ययन करेगी, और गृह्णतसे पष्ठ,  
अष्टम, दशम, द्वादश आदि तपोंके द्वारा आत्माको भावित करती  
हुई बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्यायका पालन कर मासिकी सले  
खनासे साठ भक्तोंको अनशनसे छेदन कर अपने पाप स्थानोंका  
आलोचन और प्रतिक्रमण कर समाधिको प्राप्त हो काल मासमें काल  
कर देवेन्द्र शक्रके सामानिक देव होकर उत्पन्न होगी। वहाँ एक  
२ देवकी स्थिति दो सागरोपम है। उस देवलोकमें सोमदेवकी भी  
स्थिति दो सागरोपम होगी।

गौतम स्वामी पूछते हैं—हे भदन्त ! वह सोमदेव आयु भव  
स्थिति क्षयके बाद उस देवलोकसे च्यवकर कहाँ जायगा ? और  
कहाँ उत्पन्न होगा।

युक्तं यच्च यावत्तुभ्यं ब्रह्मचारिण्यु। यथे त्थार पटी ते सोमा आर्या ते सुव्रता  
आर्याभ्यानी पासे मासायिक आदि अगीत्यार अ गोनु अव्ययन करशे अने धराभ्ये  
तप-पष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादशम आदि तपोथी आत्माने भावित करती धरा वर्षों  
सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करी पछे मासिकी स ज्येवनाथी आठ लक्ष्मणे अशन  
द्वारा (उपवासथी) छेदन करी पोताना पापस्थानाना आव्ययन अने प्रतिक्रमण करी  
समाधिने प्राप्त यत्र काव मासमा जल करी देवेन्द्र शक्रनी सामानिक देव यधने  
उत्पन्न यथे त्या अेक अेक देवनी स्थिति वे सागरोपम छे ते देवलोकांसा सोमदेवनी  
पल्लु स्थिति वे सागरोपमनी यथे

गौतम स्वामी पूछे छे—हे भदन्त ! ते सोमदेव आयुभव अने स्थितिक्षय  
पछे ते देवलोकमाथी न्यवीने क्या जथे ? अने क्या उत्पन्न यथे ?



खलु सा सोमा ब्राह्मणी सुव्रतामार्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सुव्रतानामन्तिमात् प्रतिनिश्रामति, प्रतिनिश्राम्य यत्रैव स्यत् गृह यत्रैव राष्ट्र कूटस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं तथैव आपृच्छति यावत् प्रजितुम् । यथासुखं देवानुप्रिये ! मा प्रतिवन्द्यम् । ततः खलु स राष्ट्र कूटो विपुलमग्नं तथैव यावत् पूर्वभवे सुमद्रा यावद् आर्या जाता, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा सोमा आर्या सुव्रतानामार्याणामन्तिके

कहेगी-हे देवानुप्रिये ! मैं राष्ट्रकूटसे पूछकर आपके समीप मुण्डित होकर प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ । वह आर्या उससे कहेगी-हे देवानुप्रिये ! तुम्हें जिस प्रकार सुख हो वैसा करो । प्रमाद मत करो । उसके बाद सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओंको वन्दन और नमस्कार कर उनके पाससे अपने घरमें राष्ट्रकूटके पास आयेगी । आकर हाथ जोड़ राष्ट्रकूटसे पूर्ववत् पूछेगी कि हे देवानुप्रिय ! मेरी इच्छा है कि मैं तुमसे आज्ञा लेकर सुव्रता आर्याओंके पास प्रव्रजित होऊँ । इस बातको सुनकर राष्ट्रकूट कहेगा-हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो । इस कार्यको करनेमें प्रमाद मत करो । उसके बाद वह राष्ट्रकूट विपुल अशन पान स्वाद्य चार प्रकारके भोजन बनवाकर अपने मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंको आमन्त्रित करेगा । और आदर सत्कारके साथ उनको भोजन करावेगा । जिस प्रकार पूर्वभवमें सुमद्रा आर्या हुई थी उसी प्रकार वह भी आर्या

करी धर्म साधनीने ते आर्याओने कहेथे-हे देवानुप्रिये ! हे राष्ट्रकूटने पूछीने आपनी पासे मुण्डित यधने प्रव्रज्या लेवा याहु छु ते आर्या तेने कहेथे-हे देवानुप्रिये ! तने ने प्रकारे सुभ थाय तेम कर प्रमाद न कर त्मार पछी सोमा ब्राह्मणी ते आर्याओने वदन नमस्कार करी तेमनी-पामेशी-पोताने-घेर राष्ट्रकूटनी पासे आवशे आवीने हाथ ब्झी राष्ट्रकूटने अगाठिनी नेम पूछथे ते-हे देवानुप्रिय ! मारी-धच्छा ऐ के छु तमारी आज्ञा वधने सुव्रता आर्याओनी पासे प्रव्रजिता थाउ आ वान साधणी राष्ट्रकूट कहेथे-हे देवानुप्रिये ! नेम तने सुभ थाय तेम कर कार्य करवामा प्रमाद न कर त्मार पछी ते राष्ट्रकूट विपुल (धन्य) अन्नपान, पाद्य स्वाद्य चार प्रकारना भोजन बनवावशी पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजन बन्धुओने आमन्त्रण आपसे अने आर मत्कार सहित तेमने भोजन करावशे ने प्रकारे आगवा वानमा सुमद्रा आर्या यध हुती तेज प्रकारे आ पणु आर्या यधने धर्मानर्मात आदिथा

सामायिकानि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहुभिः पष्ठाष्टमदशमद्वादश० यावद् भावयन्ती नृनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या सलेखनया पट्टि भक्तानि अनशननेन त्रिंश्व आलोचितप्रतिक्रान्ता समाधिप्राप्ता कालमासे काल कृत्वा शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सामानिन्द्रदेवतया उदपद्यत । तत्र खलु अस्त्येकैकेषा देवाना द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र खलु सोमस्यापि देवस्य द्विसागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता ।

स खलु भदन्त ! सोमो देवः तस्माद् देवल्लोकाद् आयुःक्षयेण यावद् चयं न्युत्वा नृव गमिष्यति ? नृव उत्पत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे उर्षे यावद्

होकर ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी होवेगी । उसके बाद वह सोमा आर्या उन सुत्रता आर्याओंके समीप सामागिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन करेगी, और बहुतसे पष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश आदि तपोऊँ द्वारा आत्माको भावित करती हुई बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्यायका पालन कर मासिकी सलेखनासे साठ भक्तोंको अनशनसे त्रेदन कर अपने पाप स्थानोंका आलोचन और प्रतिक्रमण कर समाधिको प्राप्त हो काल मासमें काल कर देवेन्द्र शक्रके सामानिक देव होकर उत्पन्न होगी । वहाँ एक २ देवकी स्थिति दो सागरोपम है । उस देवलोकमें सोमदेवकी भी स्थिति दो सागरोपम होगी ।

गौतम स्वामी पूछते हैं—हे भदन्त ! वह सोमदेव आयु भव स्थिति क्षयके बाद उस देवलोकसे च्यवकर कहाँ जायगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ।

शुक्त यद्य यावत्शुभं प्रवृत्त्यारिणः यथे त्वा पृथी ते सोमा आर्या ते सुमता आर्याभ्यानी पासे सामायिक आदि अग्यारह अङ्गानु अव्ययन करेगे अने धर्मात्मे तप-पठ, अष्टम, दशम, द्वादशम आदि तपोधी आत्माने भावित करती धर्मा वर्षों सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करी पछे मासिकी सजेवनाथी आठ सक्तोने अनशन द्वारा (उपवासधी) छेदन करी पोताना पापस्थानाना आध्यायन अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त यद्य काव मासमा काल करी देवेन्द्र शक्रनी सामानिक देव यद्यने उत्पन्न थगे त्या ओक ओक देवनी स्थिति जे सागरोपम छे ते देवलोकमा सोमदेवनी पणु स्थिति जे सागरोपमनी थगे

गौतम स्वामी पूछे छ—हे भदन्त ते सोमदेव आयुभव अने स्थितिक्षय पछी ते देवलोकसे कहाँ जायगा ? और कहाँ उत्पन्न थगे ?

અન્ત કરિણ્યતિ । એવ સ્વલુ જમ્બૂ । શ્રમણેન યાવત્ સમ્પ્રાપ્તેન ચતુર્થસ્યાધ્ય  
યસ્ય અયમર્થઃ પ્રજ્ઞતઃ ॥ ૯ ॥

॥ પુષ્પિતાયા ચતુર્થમધ્યયન સમાપ્તમ્ ॥ ૪ ॥

ટીકા-‘તણ તાઓ’ ઇત્યાદિ-વ્યાખ્યા નિગદસિદ્ધા ॥ ૯ ॥

### પશ્ચમમધ્યયનમ્

મૂલમ્-જહ્ણ ભતે । સમણેણં ભગવયા ઉક્તેવઓ૦ । એવ  
સ્વલુ જંબૂ । તેણ કાલેણ ૨ રાયગિહે નામ નયરે ગુણસિલણ  
ચેહણ, સેણિયરાયા, સાર્મી સમોસરિણ, પરિસા નિગ્ગયા ।  
તેણં કાલેણ ૨ પુણ્ણભદ્દે દેવે સોહમ્મે કપ્પે પુણ્ણભદ્દે વિમાણે  
સમાણ સુહમ્માણ પુણ્ણભદ્દસિ સીહાસણસિ ચહિં સામાણિય-  
સાહસ્સીહિં જહ્ણા સૂરિયામો જાવ વત્તીસવિહ નદ્ધવિહિ ઉવ-  
દસિત્તા જામેવ દિસિં પાઉઁભૂણ તામેવ દિસિ પહિગણ । કૂડા-  
ગારસાલા૦ પુઁવભવપુચ્છા । એવ ગોયમા । તેણ કાલેણ ૨  
હહેવ જમ્બૂદીવે દીવે ભારહે વાસે મણિવહ્ણયા નામ નયરી  
હોત્થા રિદ્ધ૦, ચંદો રાયા, તારાહ્ણણે ચેહણ । તત્થણ મણિ-  
વહ્ણયાણ નયરીણ પુણ્ણભદ્દે નામ ગાહાવહ્ણ પરિવસહ્ણ અહ્ણે ।  
તેણ કાલેણં ૨ થેરા ભગવતો જાતિસપ્પણા જાવ જીવિયાસ-

ભગવાન કહેતે હૈં-હે ગૌતમ ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થોકર  
યાવત્ સિદ્ધ હોગા, ઓર સવ દુઃખોકા અન્ત કરેગા ।

સુધર્મા સ્વામી કહેતે હૈં-હે જમ્બૂ ! ઇસ પ્રકાર શ્રમણ ભગ-  
વાન મહાવીરને પુષ્પિતાકે ચતુર્થ અધ્યયનકે ભાવોંકા નિરૂપણ  
કિયા હૈ ॥ ૯ ॥

। પુષ્પિતાકા ચૌથા અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ ।

ભગવાન કહે છે —હે ગૌતમ ! મહા વિદેહક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થઈને તે સિદ્ધ  
સ્થાને અને તમામ દુ ખોનો અન્ત કરશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે-હે જમ્બૂ ! આ પ્રકારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે  
પુષ્પિતાના ચતુર્થ અધ્યયનના ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે (૯) ।

। પુષ્પિતાનુ ચોથુ અધ્યયન સમાપ્ત ।

मरणभयविष्णुमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुद्वाणुपुद्दिं जाव  
समोसढा, परिसा निग्गया । तएण से पुण्णभदे गाहावइ  
इमीसे कहाए लद्धडे समाणे हट्ट० जाव पण्णत्तीए गगदत्ते  
तहेव निग्गच्छड जाव निक्खंतो जाव गुत्तवभयारी । तएणं  
से पुण्णभदे अणगारे भगवताण अतिए सामाडयमादियाइं  
एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिज्जिता बहुहि चउत्थछट्टुम  
जाव भावित्ता बहुड वासाइ सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउ-  
णित्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठि भत्ताइं अणसणाए  
छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा  
सोहम्मे कप्पे पुण्णभदे विमाणे उववायसभाए दवसयणिज्जसि  
जाव भापामणपज्जत्तीए । एवं खलु गोयमा । पुण्णभदेणं  
देवेण सा दिव्वा देविडी जाव अभिसमण्णागया । पुण्णभदस्स  
ण भत्ते । देवस्स केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ।  
दोसागरीवमा ठिई पण्णत्ता । पुण्णभदे ण भत्ते । देवे ताओ  
देवलोगाओ जाव कहि गच्छिहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ?  
गोयमा । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अत काहिइ ?  
एव खलु जवू । समणेण भगवया जाव सपत्तेण निम्मेवओ । १।

॥ पचम अज्झयणं समत्त ॥ ५ ॥

छाया—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता उत्क्षेपकः । एव खलु  
जम्बू : ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं गुणशिलं नाम चैत्यम्,  
श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः, परिषद् निर्गता । तस्मिन् काले २ पूर्ण-

મદ્રો દેવઃ સૌધર્મે કલ્પે પૂર્ણમદ્રે વિમાને સમાયા સુધર્માયા પૂર્ણમદ્રે સિંહાસને ચતુર્ભિઃ સામાનિકસદૃશૈઃ યથા સૂર્યામો યાતદ્ દ્વાત્રિંશદ્વિધ નાટ્યવિધિમુપ-  
દર્શ્ય યસ્યા દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશ પ્રતિગતઃ, કૂટાગારશાલા, પૂર્વમવપૃચ્છા।

પાંચવૉ અધ્યયન ।

‘જડ્ઞ મતે’ ઇત્યાદિ—

હે મદન્ત ! શ્રમણ મગવાન મહાવીરને પુષ્પિતાકે ચતુર્થ અધ્ય-  
યનમે પૂર્વોક્ત ભાવોંકા વર્ણન કિયા હૈ, તો હે મગવન્ ! પશ્ચમ  
અધ્યયનમે મગવાનને કિસ અભિપ્રાય કા નિરૂપણ કિયા હૈ ।

આર્ય સુધર્માને કહા—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમેં રાજગૃહ નામક નગર થા ।  
વહ્ન ગુણશિલક નામક ચૈલ યા । ઉસ નગરકા રાજા ઐણિક યા ।  
ઉસ કાલમે શ્રમણ મગવાન મહાવીર સ્વામી ઉસ નગરીમેં પધારે ।  
મગવાનકે દર્શનકે લિયે પરિષદ નિકલી । ઉસ કાલ ઉસ સમયમે  
પૂર્ણમદ્ર દેવ સૌધર્મ કલ્પકે પૂર્ણમદ્ર વિમાનમે સુધર્મા સમાકે અન્દર  
પૂર્ણમદ્ર સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવોંકે સાથ બેઠે હુણ  
થે વહ્ન પૂર્ણમદ્ર દેવ સૂર્યામ દેવકે સમાન મગવાનકો યાવત્ બસીસ  
પ્રકારકી નાટ્યવિધિ દિશ્વાકર જિસ દિશાસે આયે ઉસી દિશામેં  
ચલે ગયે । ગૌતમને મગવાનસે પૂર્ણમદ્ર દેવકી દેવ કદ્દિકે વિષયમેં

‘અધ્યયન પાચમુ’

‘જડ્ઞ મતે’ ઇત્યાદિ

હે મદન્ત ! શ્રમણ મગવાન મહાવીરે પુષ્પિતાના ચૈલા અધ્યયનમા પૂર્વોક્ત  
ભાવોંનુ વર્ણન કર્યું છે તો હે મગવન્ ! પાચમા અધ્યયનમા મગવાને કયા અભિ  
પ્રાયસુ નિરૂપણ કર્યું છે ?

આર્ય સુધર્માએ કહ્યું —

હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું ત્યાં ગુણશિલક  
નામનું ચૈલ હતું તે નગરનો રાજા ઐણિક હતો, તે કાળે શ્રમણ મગવાન મહાવીર  
સ્વામી તે નગરીમા પધાર્યા મગવાના દર્શન માટે પરિષદ નીકળી તે કાળે તે  
સમયે પૂર્ણમદ્ર દેવ સૌધર્મક પના પૂર્ણમદ્ર વિમાનમા સુધર્મા સમાની અદર પૂર્ણમદ્ર  
સિંહાસન ઉપર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે બેઠેલા હતા તે પૂર્ણમદ્ર દેવ,  
સૂર્યામદેવના જેવા મગવાનને બીસીસ પ્રકારની નાટ્યવિધિ બતાવી જે દિશામાથી આવ્યા  
તે દિશામા પાછા ગયા ગૌતમે મગવાનને પૂર્ણમદ્ર દેવની દેવસંહિના વિષયમા

एव गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये अत्रैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते  
ये मणिपदिका नाम नगरी अभवत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, चन्द्रो राजा,  
ताराकीर्ण चैत्यम् । तत्र सल्लु मणिपदिकाया नगर्या पूर्णभद्रो नाम गाथापतिः  
परिवसति, आढ्य । तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरा भगवन्तो जाति-  
सम्पन्नाः, यावत् जीविताशामरणभयविप्रमुक्ता गृहश्रुता गृहपरिवारा, पूर्वानुपूर्वी  
यावत् समवसृताः । परिपत् निर्गता । ततः सल्लु स पूर्णभद्रो गाथापतिः अम्याः  
कथाया लब्धार्थं सन् हृष्टतुष्टो यावत् प्रज्ञप्त्या गङ्गदत्तस्तयैव निर्गच्छति

प्रजा भगवानने पूर्ववत् कूटागार जालाके दृष्टान्तसे उन्हें प्रतिबोधित  
किया । फिर गौतमको उस देवके पूर्वभव जाननेकी जिज्ञासा होने  
पर, भगवानने कहा-उस काल उस समय इसी मध्य जम्बूद्वीपके  
भरतक्षेत्रमे मणिपदिका नामकी नगरी थी, जो बड़ी २ अट्टालिका  
ओसे युक्त तथा बाहरी भीतरी शत्रुओसे रहित एवं धनधान्य  
आदिसे सम्पन्न थी । उस नगरीके राजाका नाम चन्द्र था । उसमे  
ताराकीर्ण नामक एक उद्यान था । उस नगरीमें पूर्णभद्र नामक  
धनधान्यसम्पन्न गाथापति रहता था । उस काल उस समयमे जाति  
सम्पन्न कुल सम्पन्न स्थविरपदभूषित मुनिराज यावत् जीवनकी आशा  
और मरणभयसे रहित, गृहश्रुत तथा बहुत मुनि परिवारसे युक्त  
तीर्थंकर परम्परासे विचरते हुए मणिपदिका नगरीमे पधारे । जन-  
समुदायरूप परिपद उनके दर्शनार्थ निकली । उसके बाद वह पूर्ण-  
भद्र गाथापति उन स्थविरोके आनेका वृत्तान्त जानकर हृष्ट तुष्ट

पूछ्यु, भगवाने पूर्ववत् कूटागारशालाना दृष्टान्त्या तेने प्रतिबोधित कथा पछी  
गौतमने ते देनना पूर्वस्य जालुवा ॥ जिज्ञासा थावाथी भगवाने कछु —ते कण ते  
समय आ मध्य जम्बूद्वीपना भरत क्षेत्रमा मणिपदिका नामे नगरी હતી જેમા  
મોટી મોટી અટ્ટાલિકોનાળી હોલીઓ હતી તથા બહાર તેમજ અંદર શત્રુઓથી  
રહિત અને ધનધાન્ય આદિથી સંપન્ન હતી તે નગરીના રાજાનું નામ ચન્દ્ર હતું  
તેમા તારાકીર્ણ નામે એક ઉદ્યાન હતો તે નગરીમા પૂજ્યભદ્ર નામે ધનધાન્ય સંપન્ન  
ગાથાપતિ રહેતા હતા તે કાળ તે સમયે જાતિસંપન્ન-કુળસંપન્ન સ્થવિર પદથી  
ભૂષિત એવા મુનિરાજ જે જીવનની આશા અને મરણના ભયથી રહિત તથા બહુ  
શ્રુત અને બહુમુનિ પરિવારથી યુક્ત તીર્થંકર પરંપરાથી વિચરણ કરતા મણિપદિકા  
નગરીમા પધાર્યા જનસમુદાયરૂપ પરિપદ તેમના દર્શન માટે નીકળ્યા ત્યાં પછી તે  
પૂજ્યભદ્ર ગાથાપતિ તે સ્થવિરોના આવવાના ખબર જાણી હૃષ્ટ તુષ્ટ હૃદયથી ભગ-

भद्रो देवः सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने सभाया सुधर्माया पूर्णभद्रे सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसहस्रैः यथा सूर्याभो यावद् द्वाविंशद्विध नाट्यविधिमुप-  
दर्श्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशः प्रतिगत', कूटागारशाला, पूर्वभवपृच्छा।

पाँचवाँ अध्ययन ।

‘जङ्ग भते’ इत्यादि—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान् महावीरने पुष्पिताके चतुर्थ अध्य-  
यनमे पूर्वोक्त भावोंका वर्णन किया है, तो हे भगवन् ! पञ्चम  
अध्ययनमे भगवानने किस अभिप्राय का निरूपण किया है ।

आर्य सुधर्माने कहा—

हे जम्भू ! उस काल उस समयमे राजगृह नामक नगर था ।  
वहाँ गुणशिलक नामक चैल था । उस नगरका राजा श्रेणिक था ।  
उस कालमे श्रमण भगवान् महावीर स्वामी उस नगरीमें पधारे ।  
भगवानके दर्शनके लिये परिपद निकली । उस काल उस समयमे  
पूर्णभद्र देव सौधर्मे कल्पके पूर्णभद्र विमानमे सुधर्मा सभाके अन्दर  
पूर्णभद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए  
थे वह पूर्णभद्र देव सूर्याभ देवके समान भगवानको यावत् बत्तीस  
प्रकारकी नाट्यविधि दिखाकर जिस दिशासे आये उसी दिशामे  
चले गये । गौतमने भगवानसे पूर्णभद्र देवकी देव ऋद्धिके विषयमें

‘अध्ययन पायथु’

‘जङ्ग भते’ इत्यादि

हे भदन्त ! श्रमण भगवान् महावीर पुष्पिताका योथा अध्ययनमा पूर्वोक्त  
भावोनु वर्णन कथुं छे तो हे भगवन् ! पायथमा अध्ययनमा भगवाने कथा आसि  
प्रायतु निरूपण कथुं छे ?

आर्य सुधर्माके कथुं —

हे जम्भू ! ते काणे ते समये राजगृह नामे नगर હતુ ત્યા ગુણશિલક  
નામનુ અત્ય હતુ તે નગરનો રાજા શ્રેણિક હતો, તે કાળે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર  
સ્વામી તે નગરીમા પધાર્યા ભગવાનના દર્શન માટે પરિપદ નીકળી તે કાળે તે  
સમયે પૂર્ણભદ્ર દેવ સૌધર્મક પના પૂર્ણભદ્ર વિમાનમા સુધર્મા સમાની અદર પૂર્ણભદ્ર  
સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની માથે બેઠેલા હતા તે પૂર્ણભદ્ર દેવ,  
સૂર્યાભદ્રેવના લેવા ભગવાનને બત્તીસ પ્રકારની નાટ્યવિધિ બતાવી જે દિશામાંથી આવ્યા  
તે દિશામાં પાછા ગયા ગૌતમે ભગવાનને પૂર્ણભદ્ર દેવની દેવ-ઋદ્ધિના વિષયમાં

કિયન્ત કાલ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞા ? ગૌતમ ! દ્વિસાગરોપમા સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞા । પૂર્ણ-  
ભદ્રઃ સ્વલ્લ ભદન્ત ! દેવસ્તસ્માદ્ દેવલોકાદ્ યાવત્ ક્વ ગમિષ્યતિ ? ક્વ ઉત્પ-  
ત્સ્યતે ? ગૌતમ ! મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સ્યતિ યાવદન્ત કરિષ્યતિ । એ સ્વલ્લ  
જમ્બૂઃ શ્રમણેન ભગવતા યાવત્ મમ્પ્રાપ્તેન નિક્ષેપકઃ ॥ ૧ ॥

॥ પશ્ચમમભ્યયન સમાપ્તમ્ ॥ ૫ ॥

ટીકા-‘જડણ ભતે’ ઇત્યાદિ વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા ॥ ૧ ॥

॥ ઇતિ પશ્ચમાભ્યયન સમાપ્તમ્ ॥ ૬ ॥

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે—

હે ભદન્ત ! પૂર્ણભદ્ર દેવકી સ્થિતિ કિતને કાલકી છે ?

ભગવાન કહે છે—હે ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્ર દેવકી સ્થિતિ દો  
સાગરોપમકી છે ।

ગૌતમને ફિર પૂછા—હે ભદન્ત ! યદ્ પૂર્ણભદ્ર દેવ દેવલોકસે  
વ્યવકર કહાં જાયગા તથા કહાં ઉત્પન્ન હોગા ।

ભગવાનને કહા—

હે ગૌતમ ! યદ્ પૂર્ણભદ્ર દેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમે ઉત્પન્ન હોકર  
સિદ્ધ હોગા ઓર યાવત્ સર્વ દુઃસ્વોકા અન્ત કરેગા ।

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બૂ ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ઇસ પ્રકાર  
પુષ્પિતાકે પાંચવે અધ્યયનકા ભાવ કહા છે મો મેને તુમ્હે કહા ॥૧॥

। પુષ્પિતાકા પાંચવો અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ ।

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! પૂર્ણભદ્ર દેવની સ્થિતિ કેટલા ઝાળની છે ?

ભગવાન કહે છે —હે ગૌતમ ! પૂર્ણભદ્ર દેવની સ્થિતિ બે સાગરોપમની છે

ગૌતમે વળી પૂછ્યું —હે ભદન્ત આ પૂર્ણભદ્રદેવ દેવલોકથી ચ્યુત થઈને કયા બશે  
અને કયા ઉત્પન્ન થશે ?

ભગવાને કહ્યું —

હે ગૌતમ ! આ પૂર્ણભદ્રદેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થઈ સિદ્ધ થશે અને  
તમામ દુઃખોનો અંત આણશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે હે જમ્બૂ ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ  
પ્રકારે પુષ્પિતાના પાંચમા અધ્યયનનો ભાવ કહ્યો છે તે મેં તને કહ્યો છે

પુષ્પિતાના પાંચમા અધ્યયન સમાપ્ત



यावद् निष्क्रान्तो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । ततः खलु स पूर्णभद्रोऽनगारो भग-  
वतामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य चतुर्थ पष्ठाष्टम-  
यावद् भावयित्वा वज्रनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासि-  
क्या सलेखनया पट्टिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा आलोचित-प्रतिक्रान्तः समा-  
विमाप्तः कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे पूर्णभद्रे विमाने उपपातसभाया  
देवशयनीये यावद् भाषामन'पर्याप्त्या । एव खलु गौतम ! पूर्णभद्रेण देवेन  
सा दिव्या देवर्द्धि' यावद् अभिसमन्वागता । पूर्णभद्रस्य खलु भदन्त ! देवस्य

हृदयसे भगवती सूत्रमें उक्त गङ्गदत्तके समान उनके दर्शनके लिये  
गया और धर्मरूपा सुनकर यावत् प्रव्रजित होगया । तथा ईर्यासमिति  
आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी हो गया । उसके बाद उस  
पूर्णभद्र अनगारने उन स्थविरोके पास सामायिक आदि ग्यारह  
अंगोका अध्ययन किया और बहुतसे चतुर्थ पष्ठ अष्टम आदि  
तपसे आत्मा को भावित करके बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्याय पाला ।  
बादमे मासिक सलेखनासे साठ भक्तोंको अनशनसे छेदकर अपने  
पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमणकर समाधि प्राप्त की । तथा  
काल अवसरमें कालकर सौधर्म कल्पके पूर्णभद्र विमानमें उपपात  
सभाके अन्दर देवशयनीय शय्यामे यावत् पूर्णभद्र देवपनेमें उत्पन्न  
होकर भाषापर्यासि मन पर्यासि आदि पर्यासिभावको प्राप्त किया । हे  
गौतम ! पूर्णभद्र देवने इस प्रकारसे इस दिव्य देव ऋद्धिको प्राप्त किया ।

पत्नीसूत्रमा छेले गगदत्तनी पेठे तेभना दर्शनने भाटे गया अने धर्मरूपा साक्ष-  
णीने यावत् प्रव्रजित थछे गया तथा ईर्यासमिति आदिथी युक्त थछेने गुप्तब्रह्म-  
चारी थछे गया तयार पछी ते पूर्णभद्र अनगारे ते स्थविरेतनी पासे सामायिक  
आदि अगीयार अगेनु अध्ययन कथुं अने अगु अतुर्थपष्ठ अष्टम आदि तपोधी  
आत्माने भावित करीने अहु वर्षो सुखी दीक्षा पर्यायनु पलन कथुं पछी मासिकी  
सलेखनाधी साठ शक्तोनु अनशन पेठे छेदन करी पोताना पापस्थानोनी आवे  
थना तथा प्रतिक्रमण करी समाधि प्राप्ति करी तथा काल अवसर आवता काल करी  
सौधर्म उत्पन्ना पूर्णभद्र विमानमा उपात भक्तानी अदर देवशयनीय शय्यामा ते  
पूर्णभद्र देवपण्यामा उत्पन्न थछेने भाषापर्यासि मन पर्याप्ति आदि पर्याप्तिभावोनी  
पर्याप्तिभावोने प्राप्त कथा छे गौतम ! पूर्णभद्रदेवे आ प्रकारे आ दिव्य देवनी  
ऋद्धिने प्राप्त करी

राजा, स्वामी समवसुतः तस्मिन् काले तस्मिन् समये माणिभद्रो देव.  
मभाया मुधर्माया माणिभद्रे मिदामने चतुर्भिः सामानिस्मदसैर्भावत् पूर्णभद्र-  
स्तैवाऽऽगमन, नाट्यविधि, पूर्वभवपृच्छा, मणिपदा नगरी, माणिभद्रो गाथा-  
पति, स्वपिराणामन्तिके प्रव्रज्या, एसादशाद्धानि जगीते, बहूनि वर्षाणि पर्याय,  
मामिरी मलेखना, पष्टि भक्तानि०, माणिभद्रे विमाने उपपात, द्विमागरोपमा

राज्य करते थे । भगवान महावीर स्वामी उस नगरमें पधारे ।  
परिप भगवानके बन्दनके निमित्त गई । उस काल उस समयमें  
माणिभद्र देव सुधर्मा मभाये माणिभद्र मिदामन पर चार हजार  
सामानिक देवोंके साथ बैठे हुए थे । वे माणिभद्र देव पूर्णभद्रके  
समान भगवानके पास आये और नाट्यविधि दिखाकर चले गये ।  
गौनमने माणिभद्रको दिव्य देवकृद्विके बारेमें पूर्ववत् प्रश्न किया ।  
भगवानने कूटागारशालाके दृष्टान्तसे उसका उत्तर दिया । गौनमने  
माणिभद्र देवके पूर्व जन्मके बारेमें प्रश्न किया ।

भगवानने कहा—

उस काल उस समयमें मणिपदिका नामकी नगरी थी, उसमें  
माणिभद्र नामका एक गाथापति था । जिमने स्थविरोके समीप प्रव्र-  
ज्या ग्रहणकर ग्यारह अंगो का अध्ययन किया । बहुत वर्षों तक  
श्रावण पर्यायका पालन किया और मासिक सलेखना की, अनशन  
छाग साठ भक्तोंको छेदनकर पापस्थानोंका आलोचन प्रतिक्रमण

नाम था । हुता श्रेष्ठ नामका राजा तेमा राज्य करता हुता लगवान भुवानी स्वामी  
ते नगरेमा पधारा परिपद् भगवानने वदन करवा गध ते काल ते समये भाषिभद्र  
देव सुधर्मा मभाया भाषिभद्र मिदामन उपमा साग हुता सामानिक देवानी साथे  
जेठवा हुता भाषिभद्र देव पूर्णभद्रनी पेठे लगवाननी पाये आया अने नाट्य विधि  
देखाडी अनर्धान यथ गया-पाछा जाता नहा गीतये भाषिभद्रनी दिव्य देव कृदिना  
भावन आगुनी पेठे प्रश्न कथीं लगवाने कूटाग-शालाना दृष्टातथी तेना उत्तर आये।  
गौनमे भाषिभद्र देवना पूर्वजन्म विषे प्रश्न कथीं

भगवाने कहु —

ते काल ते समये भाषिपदिका नामनी नगरी हुती तेमा भाषिभद्र नामे जेठ  
जेठ गाथापति हुता जेहे स्थविरीनी पाये प्रव्रज्या ग्रहण कजी अगीयार अंगोतु  
अध्ययन कयु धरु वर्षों सुधी दीक्षा पर्याय, आग्रि पर्यायनु पालन कयु मासिक  
सलेखनाथी अनशन द्वारा साठ भक्तोंनु छेदन करी पाप स्थानोंनी आलोचना प्रतिक्रमण

મૂલમ્-જઇળં મંતે ! સમણેળં મગવયા જાવ સપત્તેળં  
 ઉક્ખેવઓ, એવં યલુ જંબૂ ! તેળ કાલેળં ૨ રાયગિહે નયરે,  
 ગુણસિલણ ચેડણ, સેણિણ રાયા, સામી સમોસરિણ । તેળં  
 કાલેળ ૨ માણિમહે દેવે સમાણ સુહમ્માણ માણિમદ્દસિ  
 સીહાસણસિ ચહિ સામાણિયસાહસસીહિ જહા પુણ્ણમદ્દો, તહેવ  
 આગમણ, નદ્દવિહી, પુવ્વમવપુચ્છા, મણિવયા નયરી, માણિમહે  
 ગાહાવડે, થેરાળ અંતિણ પવ્વજ્ઞા, ઇકારસ અગાહ અહિજ્ઞહ,  
 વહૂહ વાસાહ પરિયાઓ, માસિયા સંલેહણા, સદ્ધિ મત્તાહં,  
 માણિમહે વિમાણે ઉવવાઓ, દોસાગરોવમા ઠિહં, મહાવિદેહે  
 વાસે સિજ્ઞિહિહં । એવં યલુ જંબૂ ! નિક્કલેવઓ ॥

॥ છટ્ટ અઙ્ગયણ સમત્ત ॥ ૬ ॥

છાયા-યદિ યલુ મદન્ત ! શ્રમણેન મગવતા યાવત્ સમ્પાપ્તેન ઉત્તક્ષેપકઃ ।  
 એવં યલુ જમ્બૂ ! તસ્મિન્ કાલે ૨ રાજગૃહ નગર, ગુણશિલ ચૈત્ય, શ્રેણિકો

છટ્ટા અઙ્ગયન

‘જઇળ મંતે’ ઇત્યાદિ-  
 જમ્બૂ સ્વામી પૂઠતે હૈ—

હે મદન્ત ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ મગવાન મહાવીરને પાંચવેં  
 અઙ્ગયનકા પૂર્વોક્ત ભાવ બતલાયા હૈ, તો ફિર હઠે અઙ્ગયનમેં  
 ઉન્હોને કિસ ભાવકા નિરૂપણ કિયા હૈ ?

મગવાન કહતે હૈ—

હે જમ્બૂ ! ઉસ કાલ ઉસ સમયમે રાજગૃહ નામકા નગર યા ।  
 ઉસ નગરમે ગુણશિલક ચૈત્ય થા । શ્રેણિક નામકે રાજા ઉસમેં

છટ્ટ અઙ્ગયન

‘જઇળ મંતે’ ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂઠે છે —

હે મદન્ત ! મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ મગવાન મહાવીરે પાંચમા અઙ્ગયનમે પૂર્વોક્ત  
 ભાવ બતાવ્યો છે તો પછી છટ્ટા અઙ્ગયનમા તેમણે કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું  
 બતાવ્યું કહે છે —  
 હે જમ્બૂ ! તે કાળે તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તે નગરમા ગુણશિલક

अथ पुष्पचूलिकाख्यश्चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

मूलम्—जड़ण भंते । समणेण भगवया उक्खेवओ जाव  
दस अज्झयणा पणत्ता । त जहा—

“सिरि—हिरि—घिड—कित्तीओ, बुद्धी लच्छी य होइ बोधव्वा ।  
इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गधदेवी य ॥ १ ॥”

जड़ण भंते । समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवंगाण  
चउत्थस्स वग्गस्स पुष्पचूलाणं दस अज्झयणा पणत्ता ।  
पढमस्स णं भत्ते । उक्खेवओ, एव खल्लु जंजू । तेणं कालेणं  
२ रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी

दत्तः चन्दनायाम्, शिवो मिथिलाया, बलो हस्तिनापुरे नगरे, अनादृत  
कारुन्धा, चैत्यानि यथा सग्रहण्याम् ॥ १ ॥

॥ इति पुष्पिताया सप्तमाष्टमनवमदशमान्यभ्ययनानि समाप्तानि ॥  
७ । ८ । ९ । १० ॥

॥ इति तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥

टीका— ‘एव’ इत्यादि—व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

पुष्पिताख्यस्तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

विमानोक्ता नाम है ! ‘दत्त’ अपने पूर्व जन्ममें चन्दना नगरीमें,  
‘शिव’ मिथिलामें, ‘बल’ हस्तिनापुरमें, ‘अनादृत’ काकन्दीमें  
जन्मे थे । सग्रहणी गाथाके अनुसार उद्यान जानना चाहिये ।  
॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ पुष्पिताका मानवाँ, आठवाँ, नववाँ,  
और दसवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ।

पुष्पिता नामका तृतीय वर्ग समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

देवाना नामना जेवाज तेमना विमानना नाम छे दत्त पोताना पूर्वजन्ममा  
चन्दना नगरीमा, शिव मिथिलाभा, बल हस्तिनापुरमा अनादृत काकन्दीमा जन्ममा  
इता सग्रहणी गाथा अनुसार उद्यान जाणी देवा लेखिअ ॥ ७ ॥ ८ । ९ ॥ १० ॥  
पुष्पितानु सातमु—आठमु—नवमु—दशमु अध्ययन समाप्त

पुष्पिता नामे तृतीय वर्ग समाप्त

मूलम्—एव दत्ते ७ सिवे ८ बले ९ अणाढिए १० सव्वे जहा पुण्णभदे देवे । सव्वेसि दोसागरोवमाइ ठिई । विमाणा देवसरिसनामा । पुव्वभवे दत्ते चदणाए, सिवे मिहिलाए बला हत्थिणपुरनयरे, अणाढिए काकदीए, चेइयाड जहा सगहणीए ॥

॥ तइओ वग्गो सम्मत्तो ॥

स्थितिः, महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति । एव खलु जम्बूः ! निक्षेपकः ॥ १ ॥

॥ इति षष्ठाभ्ययन समाप्तम् ॥ ६ ॥

टीका— 'जदण भत्ते' इत्यादि-व्याख्या स्पष्टा ॥ १ ॥

छाया—एव दत्तः ७ शिवः ८ बलः ९ अनादृतः १० सर्वे यथा पूर्णभद्रो देवः ! सर्वेषां द्विसागरोपमा स्थितिः, विमानानि देवसदृशनानि, पूर्वभवे

करके काल अवसरमें कालकर माणिभद्र विमानमें उत्पन्न हुआ । यहाँ उसकी स्थिति दो सागरोपम है । अन्तमें देवलोकसे च्यव कर महा विदेह क्षेत्रमें जन्म लेकर सिद्ध होगा और सब दुःखोंका अन्त करेगा ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! इस प्रकार श्रमण भगवान् महावीरने पुष्पिताके छठे अध्ययनके भावका प्रतिपादन किया ।

। पुष्पिताया उठा अ ययन समाप्त हुआ ।

इसी प्रकार ७ दत्त, ८ शिव, ९ बल, १० अनादृत, इन सभी देवोंका वर्णन पूर्णभद्र देव के समान जानना चाहिये । सभीकी स्थिति दो दो सागरोपम है । इन देवोंके नामके समान ही इनके

करी कण अवसरमा कण करीने आबुल्लद विमानमा उत्पन्न थ्या त्या तेनी स्थिति मे आगरोपम छे आणरे देवोक्थी चरणी महाविदेह क्षेत्रमा जन्म लध सिद्ध थये अने सर्वे दु ओनेो अत लावथे

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! आ प्रकारे श्रमण भगवान् महावीरने पुष्पिताका छठा अध्ययनका भावना प्रतिपादन कयुं

पुष्पितानु छठु अध्ययन समाप्त

आ प्रकारे ७ दत्त, ८ शिव, ९ बल, १० अनादृत आ गधा देवानु वर्णन पूरुवा देवना रेपु लक्ष्मी छपु लेधये गधानी स्थिति जणे सागरोपम छे ते

नियपरिवापरिवुडा रायगिह नयर मज्झंमज्जेण निग्गच्छड  
 निग्गच्छत्ता जेणेव गुणसिलए चेडए तेणेव उवागच्छड, उवा-  
 गच्छत्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए० पासड, धम्मियाओ जाण-  
 प्पवराओ पच्चोरुहड, पच्चोरुहा चेडीचक्कवालपरिकिण्णत्ता जेणेव  
 पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छत्ता  
 तिम्वुत्तो जाव पज्जुवासड । तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए  
 भूयाए दारियाए तीसे महड० धम्मकहा, धम्म सोच्चा णिसम्म  
 हट्ट० वदड, वदित्ता एव वयासी सदहामि णं भते । निग्गथ  
 पावयण जाव अब्भुट्टेमिण भते । निग्गथ पावयणं, से जहे  
 त तुच्चे वदेह, जं नवर देवाणुप्पिया । अम्मापियरो आपु-  
 च्छामि, तएणं अह जाव पवडत्तए । अहासुह देवाणुप्पिया ।  
 तएण सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवर जाव दुरु-  
 हड, दुरुहित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागया, रायगिह  
 नयर मज्झ मज्जेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया, रहाओ  
 पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागया, करत्तल० जहा  
 जमाली आपुच्छड । अहासुह देवाणुप्पिए । तएण से सुदसणे  
 गाहावडं विउल असण ४ उवक्खडावेड, मित्तनाड० जाव  
 जिमियभुत्तत्तरकाले सुडंभूए निम्बखमणमाणित्ता कोडुवियपुरिसे  
 सदावेड, सदावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ।  
 भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीं सीय उवट्टवेह, उवट्टवित्ता  
 जाव पच्चप्पिणह । तएण ते जाव पच्चप्पिणति ॥ १ ॥

— उाया— यदि खलु भवन्त ! श्रमणेन भगवता उदक्षेपको यावद् दश  
 अ गायनानि प्रज्ञप्तानि । तद् यथा—

समोसढे, परिसा निगया । तेणं कालेण २ सिरि देवी सोहम्मे  
 कण्णे सिरिवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिसि सीहा  
 सणंसि चउहि सामाणियसाहस्सेहि चउहि महत्तरियाहि सप  
 रिवाराहि जहा बहुपुत्तिया जाव नट्टविहि उवदसित्ता पडिगया ।  
 नवर [दारय] दारियाओ नत्थि । पुवभवपच्छा । एव खलु  
 गोयमो । तेणं कालेण २ रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए  
 जियसत्तु राया । तत्थ ण रायगिहे नयरे सुदसणे नाम गाहा  
 वड परिवसड अड्ढे । तस्स ण सुदसणस्स गाहावडस्स भूया  
 पियाए गाहावडणीए अत्तया भूया नाम दारिया होत्था बुढा  
 बुढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी वरगपरिवज्जिया  
 यावि होत्था । तेण कालेण २ पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव  
 नवरयणिए, वण्णओ सो चेव, समोसरण, परिसा निगया ।  
 तएण सा भूया दारिया इमीसे कहाए लंछट्टा समाणी हट्ट-  
 तुट्टा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव  
 वयासी-एव खलु अस्मताओ । पासे अरहा पुरिसादाणीए  
 पुवाणुपुवि चरमाणे जाव देवगणपरिवुडे विहरइ, त इच्छामि  
 ण अस्मयाओ । तुव्भेहि अव्वजुण्णाया समाणी पासस्स  
 अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिद्या गमित्तए । 'अहासुह  
 देवाणुप्पिया । मा पडिचध ।

तए ण सा भूया दारिया पहाया० जाव सरीरा चेडी-  
 चक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिस्खमइ, पडिनिस्ख-  
 मित्ता जेणेवे 'वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
 गच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरुढा । तएण सा भूया दारिया

गुणाशिल चैत्य, श्रेणिको राजा, स्वामी समवसुतः, परिपद् निर्गता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रीदेवी सोऽर्मे कल्पे श्यवतसके विमाने सभाया सुधर्माया श्रियि सिंहासने चतुर्भिः सामानिकसद्वै. चतसृभिर्महत्तरिकाभिः सपरिवाराभिः यथा बहुपुत्रिका यावद् नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता । नवर [ दारक ] दारिका न सन्ति । पूर्वभवपृच्छा । एव खलु गौतम ! तस्मिन् काले

जम्बू स्वामी पूजते हैं—

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पचूलिका नामक चतुर्थवर्ग रूप उपाङ्गमे दस अध्ययनोंका निरूपण किया है, तो प्रथम अध्ययनका उन्होंने क्या भाव फरमाया है ।

सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! प्रथम अध्ययनके भावको भगवानने इस प्रकार निरूपण किया है—उस काल उस समयमे राजगृह नामक नगर था । उस नगरमें गुणालिक नामक चैत्य था । उस नगरीके राजा श्रेणिक थे, वहाँ श्रमण भगवान महावीर पधारे । परिपद् उनके दर्शनके लिये निकली । उस काल उस समयमे श्री-देवी मौधर्म कल्पके श्री-अवतसक विमानमें सुधर्मा सभाके अन्दर श्री-सिंहासनपर चार हजार सामानिक देवोंके साथ तथा सपरिवार चार महत्तरिकाओंके साथ बैठी हुई थी । वह श्री-देवी बहुपुत्रिका देवीके समान भगवानके लिये आई और नाट्यविधि दिखाकर वापस गयी । बहुपुत्रि

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने पुष्पचूलिका नामे चौथा वर्गइय उपाङ्गमा दस अध्ययनोनु निरूपण कर्तुं छे तो प्रथम अध्ययनमा तेभण्णु कथे भावणताण्ये छे ? सुधर्मा स्वामी कहे छे —

हे जम्बू ! प्रथम अध्ययनमा भावने आवी दीते निरूपण कर्तुं छे —  
ते काल ते समये राजगृह नामे नगर હતુ તે નગરમા શુભશિલક નામે ચૈત્ય હતુ તે નગરીને રાજા શ્રેણિક હતો ત્યા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પધાર્યા પરિપદ્ તેમના દર્શન માટે નીકળી તે કાળ તે સમયે શ્રી દેવી સૌધર્મકલ્પના શ્રી અવતસક વિમાનમા સુધર્માસભાની અદર શ્રી સિંહાસન પર ચાર હજાર સામાનિક દેવોની સાથે તથા સપરિવાર ચાર મહત્તરિકાઓના સાથે બેઠી હતી તે શ્રીદેવી બહુપુત્રિકા દેવીની પેઠે ભગવાનના દર્શન માટે આવી અને નાટ્યવિધિ દેખાડી પાછી ચાલી ગઈ



“શ્રી-હી-ધૃતિ-કીર્ત્યો બુદ્ધિલક્ષ્મીશ્ચ ભવતિ ચોદ્ધવ્યા ।

હલાદેવી સુરાદેવી, રસદેવી ગન્ધદેવી ચ ॥ ૧ ॥ ”

યદિ સ્વલ્પ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા યાત્રત્ સપ્રાપ્તેન ઉપાદ્વાના  
ચતુર્થસ્ય ધર્મસ્ય પુષ્પચૂલાના દશાઽયયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, પ્રથમસ્ય સ્વલ્પ ભદન્ત ।  
ઉત્ક્રેષ્ટક, એ સ્વલ્પ ગૌતમ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નામ નગર,

ચતુર્થ વર્ગ ( ૪ )

પુષ્પચૂલિકા.

‘જઙ્ગણ’ મતે ઇત્યાદિ-

જમ્બુ સ્વામી પૂછતે હૈ-

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પિતા વર્ગમેં હસ  
અધ્યયનોકા નિરૂપણ કિયા હૈ । ઉસકે બાદ ઉન્હોંને ક્યા કહા હૈ ?  
સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—

હે જમ્બુ ! ઉસકે પાદ ભગવાનને પુષ્પચૂલિકા ધર્મકા નિરૂપણ  
કિયા હૈ । ઉસમે ઉન્હોંને દસ અધ્યયન વતલાયે હૈ । જોકિ હસ  
પ્રકાર હૈ—(૧) શ્રી, (૨) હી, (૩) ધી, (૪) કીર્તિ, (૫) બુદ્ધિ, (૬)  
લક્ષ્મી, (૭) હલાદેવી, (૮) સુરાદેવી, (૯) રસદેવી (૧૦) ગન્ધદેવી ॥

હે જમ્બુ ! હસ પ્રકાર ભગવાનને દસ અધ્યયનોકા નિરૂપણ  
કિયા હૈ ।

ચતુર્થ વર્ગ ( ૪ )

પુષ્પચૂલિકા

‘જઙ્ગણ મતે’ ઇત્યાદિ

જમ્બુ સ્વામી પૂછે છે —

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પિતા વર્ગમા દશ અધ્યયનનુ નિરૂપણ  
કર્યું છે ત્યાર પછી તેમણે શુ કહ્યું છે ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે—

હે જમ્બુ ! ત્યાર પછી ભગવાને પુષ્પચૂલિકા વર્ગનું નિરૂપણ કર્યું છે તેમ  
તેઓએ દશ અધ્યયન બતાવ્યા છે જેના નામ આવા પ્રકારના છે—(૧) શ્રી, (૨) હી,  
(૩) ધી, (૪) કીર્તિ, (૫) બુદ્ધિ, (૬) લક્ષ્મી, (૭) હલાદેવી, (૮) સુરાદેવી,  
(૯) રસદેવી, (૧૦) ગન્ધદેવી

હે જમ્બુ ! આ પ્રમાણે ભગવાને દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે —

જમ્બુ સ્વામી પૂછે છે —

वर्जिता चापि अभवत् । तस्मिन् माले तस्मिन् समये पार्श्वोर्ध्वेन पुरुषा दानीयो यावद् नवरत्नको वर्णक सएव, समवसरण, परिपद् निर्गता । ततः खलु सा भूता दारिका अस्याः कथाया लङ्गार्था सती हृष्टतुष्टा० यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एव खलु अम्बातातो ! पार्श्वोर्ध्वेन पुरुषादानीयः पूर्वानुपूर्वी चरन् यावद् देवगणपरिवृतो विहरति, तद् इच्छामि खलु अम्बातातो ! युवाभ्यामभ्यनुवाता सती पार्श्वस्यार्धेन पुरुषादानीयस्य पादवन्दनाय गन्तुम्, ययामुख देवानुमिये ! मा प्रतिगन्तुम् । ततः खलु सा भूता दारिका स्नाता यावत् सर्वालङ्कारविभूषितगरीरा चेटीचक्रवालपरिरीणा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति,

अर्हत पार्श्व प्रभु उस नगरीमें पधारे । भगवानके दर्शनके लिये परिपद् अपने २ घरसे निकली । उसके बाद वह भूता दारिका भगवान पार्श्व प्रभुके आनेका वृत्तान्त सुनकर हृष्ट तुष्ट हृदयसे माता पिताके समीप आयी, और उनसे इस प्रकार कहा हे माता पिता ! पुरुषादानीय भगवान पार्श्व प्रभु तीर्थकरपरम्परासे विचरते हुए देवगणोंसे परिवृत हो इस राजगृह नगरमें पधारे हैं, इस लिये मेरी इच्छा है कि पुरुषादानीय उन पार्श्व प्रभुकी चरण वन्दनाके लिये जाऊँ । पुत्रीकी ऐसी इच्छा जानकर उन्होंने कहा-जाओ वेटी ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो । प्रमाद मन करो ।

उसके बाद वह भूता दारिका स्नान कर सभी प्रकारोंके अलङ्कारोंसे अपने को अलङ्कृतकर दासियोंसे परिवेष्टित हो अपने घरसे निकलकर

अर्हत पार्श्व प्रभु ते नगरीमा पधारा । भगवानना दर्शन कन्वा भाटे परिपद् पोतपोताना धनमाथी नीकगी त्थार पछी ते भूता दारिका भगवान पार्श्व प्रभुना आवधानु वृत्तन्त नाभणीने हृष्ट तुष्ट हृदयथी मातापितानी पने अवी अने तेमने आ प्रकाटे कहु — हे मातापिता ! पुरुषादानीय भगवान पार्श्व प्रभु तीर्थकर परपराथी विचरता देवगण्णुथी परिवृत आ राजगृह नगरमा पधाय ते आ भाटे भारी भिच्छा छे के पुरुषादानीय ते प्रभुनी चरण वन्दनाने भाटे नउ पुत्रीनी ऐरी भिच्छा नहणीने तेआओ कहु — नओ दीकरी ! जे प्रकाटे तमने सुण थाय तेम करे केअ प्रकारने प्रमाद न करे ।

तार पछी ते भूता दारिका स्नान करी अथा प्रकरना अवकादे ( धरेणु ) थी विभूषित थध दासीआथी परिवेष्टित ( घिरायेदी ) थधने पोताना घेरथी नीकगी जाहार



वर्जिता चापि अभवत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोर्ध्वं पुरुषा-  
दानीयो यावद् नवरत्निको वर्णक सप्त, समवसरण, परिपद् निर्गता ।  
ततः खलु सा भूता दारिका अस्याः कथाया लब्धार्था सती हृष्टुष्टा०  
यैव अम्बापितरी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एव खलु  
अम्बातातौ ! पार्श्वोर्ध्वं पुरुषादानीयः पूर्वानुपूर्वी चरन् यावद् देवगणपरि-  
वृतो विहरति, तद् इच्छामि खलु अम्बातातौ ! युवाभ्यामभ्यनुज्ञाता सती  
पार्श्वस्याऽर्धतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दनाय गन्तुम्, यथासुख देवानुम्रिये !  
मा प्रतिगन्तुम् । ततः खलु सा भूता दारिका स्नाता यावत् सर्वालङ्कार-  
विभूषितशरीरा चेटीचक्रवालपरिकीर्णा स्वस्माद् गृहात् प्रतिनिष्कामति,

अर्हत पार्श्व प्रभु उस नगरीमें पधारे । भगवानके दर्शनके लिये परिपद्  
अपने २ घरसे निकली । उसके बाद वह भूता दारिका भगवान पार्श्व  
प्रभुके आनेका वृत्तान्त सुनकर हृष्ट तुष्ट हृदयसे माता पिताके समीप  
आयी, और उनसे इस प्रकार कहाहे माता पिता । पुरुषादानीय भगवान  
पार्श्व प्रभु तीर्थकरपरम्परासे विचरते हुए देवगणोंसे परिवृत हो इस  
राजगृह नगरमें पधारे हैं, इस लिये मेरी इच्छा है कि पुरुषादानीय  
उन पार्श्व प्रभुकी चरण वन्दनाके लिये जाऊँ । पुत्रीकी ऐसी इच्छा  
जानकर उन्होंने कहा-जाओ बेटी । जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा  
करो । प्रमाद मत करो ।

उसके बाद वह भूता दारिका स्नान कर सभी प्रकारके अलङ्कारोंसे  
अपने को अलङ्कृतकर दासियोंसे परिवेष्टित हो अपने घरसे निकलकर

अर्हत पार्श्व प्रभु ते नगरीमा पधाय भगवानना दर्शन क वा भाटे परिपद्  
पोतपोताना ध माथी नीकणी तार पछी ते भूता दारिका भगवान पार्श्व प्रभुना  
आववानु वृत्तान्त गावणीने हृष्ट तुष्ट हृदयथी मातापितानी पने आवी अने  
तेमने आ प्रकारे कहु — छ मातापिता । पुरुषादानीय भगवान पार्श्व प्रभु तीर्थकर  
पर पराथी विचरता देवगात्रेथी परिवृत आ राजगृह नगरमा पधाय छे आ भाटे  
भारी छिछा छे के पुरुषादानीय ते प्रभुनी चरण वन्दनाने भाटे जउ पुत्रीनी ओरी  
छिछा जवणीने तेओओ कहु — जओ हीकरी । जे प्रकारे तेमने सुख थाय तेम करे  
कैछ प्रकारेने प्रमाद न करे

तार पछी ते भूता दारिका स्नान करी मधा प्रकारेना अवकादे ( धरेछा ) थी  
विभूषित थध दासीओथी परिवेष्टित ( घरायेछी ) थधने पोताना घेरथी नीकणी गाढार

પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્રૈવ વાહોપસ્થાનશાલા તત્રૈવોપાગન્ઞતિ, ઉપાગત્ય ધાર્મિક  
યાનપ્રવર દરુઢા । તતઃ સ્વલુ સા ભૂતા દારિકા નિજપરિવારપરિચિતા  
રાજગૃહ નગર મધ્યમયેન નિર્ગન્ઞતિ, નિર્ગત્ય યત્રૈવ ગુણશિલ ચૈત્ય  
તત્રૈવોપાગન્ઞતિ, ઉપાગત્ય છત્રાદીન્ તીર્થક્રાતિશયાન્ પઞ્ચતિ । ધાર્મિકાત્  
યાનપ્રવરાત્ પ્રત્યવરુહ્ય ચેટીચક્રાવાલપરિકીર્ણા યત્રૈવ પાર્શ્વોર્ધ્વેન પુરુષાદાનીય  
સ્તત્રૈવોપાગન્ઞતિ, ઉપાગત્ય ત્રિકૃત્વો યાવત્ પર્યુપાસ્તે । તતઃ સ્વલુ  
પાર્શ્વોર્ધ્વેન પુરુષાદાનીયો ભૂતાયૈ દારિકાયૈ તમ્યા મહાતિમહત્યાં ધર્મસ્થા ।  
ધર્મે શ્રુત્વા નિશમ્ય હૃદયુષ્ઠાં વન્દતે, વન્દિત્યા ઇયમવાદીત્-બ્રહ્મામિ સ્વલુ  
મદન્ત ! નિર્ગન્થ પ્રવચન યારદ્ અશ્રુતિષ્ઠામિ સ્વલુ મદન્ત ! નિર્ગન્થ

બાહર ઉપવેશન શાલામે આવી । વહાં અપને ધાર્મિક રથપર ચઢો ।  
ઉસકે બાદ વહ ભૂતા દારિકા અપની દાસિયોંસે પરિવેષ્ટિત હો રાજગૃહ  
નગરકે મધ્યસે હોતી હુઈ ગુણશિલક ચૈત્યમે પહુંચી । વહાં ઉસને  
તીર્થકરોંસે પરિવેષ્ટિત હો પુરુષાદાનીય ભગવાન પશ્વ પ્રભુકે પાસ ગયી  
ઔર ત્રીન ઘાર પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરકે ઉપાસના કરને  
લગી । ઉસકે બાદ પુરુષાદાનીય અર્હત્ ભગવાન પાશ્વ પ્રભુને ઉસ મહતી  
સભામે ભૂતા દારીકાકો ધર્મોપદેશ ક્રિયા । અનન્તર ભૂતા દારિકા ધર્મ  
સ્તુનકર ઉસે હૃદયમે અવધારણ કર હૃદય તુષ્ટ હૃદય હો ભગવાનકો  
વન્દન ઔર નમસ્કાર ક્રિયા । પશ્ચાત્ ઉસને હસ પ્રકાર કહા-હે ભગવન્ !  
આપને જિસ નિર્ગન્થ પ્રવચનકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ઉસ નિર્ગન્થ પ્રવચન પર  
મેં અદ્વા રખતી હૈ ઔર ઉસકે આરાધનકે લિયે મૈં ઉગ્યન હૈ । હે મદન્ત !

બેસવાની ગાતામા અવી ત્યા પાતાના ધાર્મિક રથ ઉપર ચઢી ત્યાર પછી તે ભૂતા  
દારિકા પોતાની દાસીઓની પરિવેષ્ટિત થઈ નગર ની વચ્ચે થઈને ગુણશિલક  
ચૈત્યમા પહોંચી ત્યાં તેણે તીર્થ ડાંગના અતિશયક છત્ર આદિ જોયા ત્યાં પોતાના  
ધાર્મિક રથમાથી નીચે ઉતરી પછાં પોતાની દાસીઓથી ઘેરાઈને પુરુષાદાનીય ભગવાન  
પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે યજ્ઞ અને ત્રણુવાર પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરી ઉપાસના  
વરવા લાગી ત્યાર પછી પુનઃ દાનીય અર્હત્ ભગવાન પાર્શ્વ પ્રભુએ તે ઘોડી સભામા  
ભૂતા દારિકાને ધર્મોપદેશ કર્યો પછી ભૂતા દારિકાએ ધર્મનુ શ્રવણ કરી તેને હૃદયમા  
અવધારણ કરી હૃદય તુષ્ટ હૃદયથી ભગવાનને વન તથા નમસ્કાર કર્યા પછી આ  
પ્રકારે કહ્યું —હે ભગવન્ ! જે પ્રકારે આપે નિર્ગન્થ પ્રવચનનું નિરૂપણ કર્યું છે તે  
નિર્ગન્થ પ્રવચનમા હું અદ્વા તાપ્ત છું અને તેના આરાધન માટે હું યત્નશીલ છું

प्रवचनम्, तद् ययैतद् युय वदय, यद् नवर देवानुमिय । अम्बापितरौ  
 आपृञ्जमि । ततः खलु अहम् यावत् प्रजितुम् । यथासुख देवानुमिये ।  
 तत खलु सा भूता दारिका तदेव धार्मिक यानपदर यावद् दरोहति,  
 नृक्ष यत्रैव राजगृह नगर तत्रैवोपागता, राजगृह नगर मन्त्रम येन यत्रैव  
 स्व गृह तत्रैवोपागता, रथात् प्रत्ययन्त्य यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागता,  
 परतल० यथा जामालिः आपृञ्जति । यथासुख देवानुमिये । तत स  
 सुदर्शने गाथापतिः विपुलमगनम् ४ उपम्वारयति, मित्रनाति० आमन्त्रयति,  
 आमन्त्रय यावत् जिमितमुत्तरफाले शुचिभूतो निष्क्रमणमानाप्य कौटुम्बिक-  
 पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवाप्ति-विषमेव भो देवानुमिया ।

मैं अपने माता पिताको पृष्ठकर आपके समीप प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ ।

भगवानने कहा—हे देवानुमिये ! जिस प्रकार तुझे सुख हो  
 वैसा करो ।

उसके बाद वह भूता दारिका उसी धार्मिक रथपर चढ़ी और  
 वहाँसे राजगृहकी ओर आयी । राजगृह नगरमें जहाँ उसका घर था  
 वहाँ गयी । अपने घर जाकर रथसे उतरी, अनन्तर अपने माता  
 पिताके समीप पहुँची । जमालीके तरह हाथ जोड़कर अपने माता  
 पितासे प्रव्रज्याके लिये आज्ञा माँगी । उन लोगोंने आज्ञा दी हे पुत्री !  
 जैसी तुम्हारी इच्छा हो ।

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने विपुल अशन पान खाद्य  
 इन चारों प्रकारके आहारको तैयार करवाया, तथा मित्र जाति स्वजन  
 वन्धुओंको निमन्त्रित किया और आदर सत्कार पूर्वक भोजन कराया ।  
 खाने पीनेके बाद पवित्र हो कौटुम्बिक ( आज्ञाकारी ) पुरुषोंको

हे भक्त ! हे भक्त ! हे भक्त ! हे भक्त ! हे भक्त ! हे भक्त ! हे भक्त ! हे भक्त !  
 भगवाने कहे — हे देवानुमिये । २ प्रकाशे तने शुभ थाय तेम क० त्तर पछी  
 ते भूतादारिका तेन धार्मिक रथ उपर चडी अने त्यान्थी राजगृह तरङ्ग आयी राजगृह  
 नगरमा गया तेनु घर हतु तना गर्भ पोताने घर नथ रथमाथी उतरी पछी पोताना  
 मातापितानी पास पहुँच्यो जमालीनी पेठे हाथ जोडीने पोताना मातापिता पास प्रव्रज्या  
 लेवा माटे आज्ञा मागी तेज्जेजे आज्ञा आयी — हे पुत्री ! जेवी नारी भ्रिच्छा

त्यार पछी ते सुदर्शन गाथापतिजे विपुल (भूम) अशनपान—आद्यभवाद्य जेवा  
 आरे प्रकारना आहार तैयार केल्या तथा मित्र, जाति स्वजन वन्धुज्जेने निमन्त्रण  
 आय्यु अने आदर सत्कारपूर्वक भोजन कराय्यु भावापीनानु थर्ग रह्या पछी पवित्र  
 थर्ग कौटुम्बिक (आज्ञाकारी) पुरुषोंने बोलावी दीक्षानी तैयारी करवानी आज्ञा देता तेज्जेने

ભૂતાદારિકાચૈ પુરુષસશ્ત્રવાહિનીં શિષિકામુસ્થાપયત, ઉપસ્થાપ્ય૦ પ્રત્યર્પયત !  
તતઃ સ્વલુ તે યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ ॥ ૧ ॥

ટીકા—‘જઈળ મતે’ ઇત્યાદિ ગ્યાસ્યા સુગમા ॥ ૧ ॥

મૂલમ્—તણ સે સુદસણે ગાહાવઈ મૂયં દારિય ણહાયં  
જાવ વિમૂસિયસરીર પુરિસસહસ્સવાહિર્ણિ સીય દુરુહહ, દુરુહિત્તા  
મિત્તનાઈ૦ જાવ રવેળં રાયગિહ નયર મજ્ઝા મજ્ઝેળ જેણેવ  
ગુણસિલણ ચેઈણ તેણેવ ઉવાગણ, છત્તાઈણ તિત્થયરાઈસણ  
પાસઈ, પાસિત્તા સીય ઠાવેદ, ઠાવિત્તા મૂય દારિય સીયાઓ  
પચ્છોરુહેઈ । તણ ત મૂય દારિય અમ્માપિયરો પુરઓ કાઠ  
જેણેવ પાસે અરહા પુરિસાદાળીણ-તેણેવ ઉવગયા, તિયુત્તો  
વદતિ નમંસતિ, વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ  
દેવાણપ્પિયા । મૂયા દારિયા અમ્હ ઇગા મૂયા ઇદ્ધા૦, ઇસ ણ  
દેવાણપ્પિયા । સસારમહઘ્વિંગા મીયા જાવ દેવાણપ્પિયાણં  
અતિણ મુઢા જાવ પઘ્વયઈ । ત ઇય ણદેવાણપ્પિયા । સિસ્સિ-  
ણિમિક્કલ્લ દલયામો, પઢિચ્છતુ ણ દેવાણપ્પિયા । સિસ્સિણી-  
મિક્કલ્લ । અહાસુહ દેવાણપ્પિય૦ । તણં સા મૂયા દારિયા  
પાસેળ અરહયા૦ એવ વુત્તા સમાળી હટ્ટુટ્ટા૦ ઉત્તરપુરત્થિમ

બુલવાકર દીક્ષાકી તૈયારી કી આજ્ઞા દેતે હુએ હસ પ્રકાર કહા-હે  
દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ હજાર પુરુષોસે ઉઠાયી જાનેવાલી શિષિકાકો  
મૂતા દારિકાકે લિયે તૈયાર કરો ઓર લે આઓ । ડસકે બાદ વે  
લોગ શિષિકાકો સજાકર લે આયે ॥ ૧ ॥

આ પ્રકારે કહ્યું —હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હજાર પુરુષોથી ઉપાસાય એવી શિષિકા  
(પાલખી) ને ભૂતા દારિકા માટે તૈયાર કરો અને લઈ આવો ત્યાર પછી તે લોકો તે  
પાલખીને સજાવીને લાવ્યા (૧)

सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, जहा देवाणदा पुफ-  
चूलाण अतिए जाव गुत्तवभयारिणी तएण सा भूया अज्जा  
अणया कयाइं सरीरवाओसिया जाया यावि होत्था हत्थे  
धोवइ, पाये धोवइ, एव सीस धोवइ, मुह धोवइ, थणगतराइ  
धोवइ, कक्खतराइ धोवइ, गुज्झतराइ धोवइ, जत्थ जत्थ वि  
य णं ठाणं वा सिज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, तत्थ तत्थ  
वि य ण पुद्दामेव पाणएण अवमुक्खेइ । तओ पच्छा ठाण  
वा सिज्ज वा निसीहिय वा चेएइ । तएण ताओ पुफचूलाओ  
अज्जाओ भूय अज्ज एव वयासी अम्हे ण देवाणुप्पिए ।  
समणीओ निग्गंथीओ इरियाममियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ,  
नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरवाओसियाण होत्तए, तुम च ण  
देवाणुप्पिए । सरीरवाओसिया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव  
निसीहिय चेएसि, त ण तुम देवाणुप्पिए । एयस्स ठाणस्स  
आलोएहि त्ति, सेस जहा सुभदाए जाव पाडिय उवस्सय  
उवसपज्जिता ण विहरइ । तएण सा भूया अज्जा अणोहट्ठिया  
अणिवारिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवइ जाव चेएइ ।  
तएण सा भूया अज्जा बहूहि चउत्थछट्ठं बहूइ वासाइ  
सामण्णपरियाग पाउणिता तस्स ठाणस्स अणालोडयपडिक्कता  
कालमासे काल किच्चा मोहम्मे कप्पे सिरिवडिसए विमाणे  
उववायसभाए देवसगणिज्जसि जावतोगाहणाए सिरिदेवित्ताए  
उववण्णा पचविहाए पज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता । एव



खलु गोयमा । सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्डी लद्धा पत्ता ।  
 ठिई एगं पलिओवम । सिरी णं भंते । देवी जाव कहिं  
 गच्छिहिइ ? महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । एव खलु जव्व ।  
 निक्खेवओ । एव सेसाणं वि नवण्ह भाणियव्व, सरिसनामा  
 विमाणा, सोहम्मे कप्पे, पुवभवे नयरचेडयपियमाईण अप्पणो  
 य नामादी जहा सगहणीए, सव्वा पासस्स अतिए निक्खता ।  
 ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणियाओ सरीरवाओसियाओ सव्वाओ  
 अणतर चइं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ २ ॥

॥ पुप्फचुलिया णाम चतुत्थवग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥

छाया-तत. खलु स सुदर्शनो गाथापति. भूता दारिका स्नाता यावद्  
 विभूषितशरीरा पुरुषसदृशवाहिनी शिपिरा दूरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिं  
 यावद् रवेण राजगृहनगर मध्यमध्येन तत्रैव गुणशिल चैत्य तत्रैवोपागत,  
 छायादीन् तीर्थकरातिगयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिविका स्थापयति, स्थापयित्वा  
 भूता दारिका शिविकातः प्रत्यवरोहयति । तत खलु ता भूता दारिका

‘तएण से’ इत्यादि—

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने स्नान की हुई तथा सभी  
 अलङ्कारोंसे अलङ्कृत उस भूता दारिकाको शिविकामे बैठाया । अनन्तर  
 वह अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंके साथ भेरी आदि  
 बाजोंकी ध्वनिसे दिशाको मुखरित करता हुआ राजगृह नगरीके  
 बीचोबीचसे होता हुआ गुणशिलरू चैत्यके पास पहुँचा । वहाँ उसने  
 तीर्थकरोंके अतिशयको देखा और शिविकाको ठहराया । तथा भूता

‘तएण से’ इत्यादि

त्या-पछी ते सुदर्शन गाथापतिजे भूता दारिका के ले स्नान करीने तथा तभाम  
 अलङ्कारेथी विभूषित कनी तेने ते शिपिकामा जेसाडी पछी ते पोताना सवे मित्र,  
 ज्ञाति, स्वजन बंधुओंनी साथे बेरी, शरणाध आदी वाज्जोना ध्वनिथी दिशाओंने  
 मुअरत करता राजगृह नगरीनी मध्योमय यधने आपता गुणशिलरू चैत्यनी पास  
 पहुँचिया त्या ते पलभीने थोकारी तथा भूता दारिका शिविकेभाथी नीचे उतरी तयार

मन्वापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागतौ,  
त्रि कृत्वो वन्देते नमम्यत्, उन्दित्वा नमस्यित्वा एवमशदिष्टाम्-एव खलु  
देवानुप्रियाः ! भूता दारिद्र्या अस्माकमेका दुहिता इष्टा, एषा खलु देवानु  
प्रिया । ससारभयोद्धिग्रा भीता यावद् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत्  
प्रजति, तद् एता खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षा दत्ता, प्रतिच्छन्तु  
खलु देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । यथासुखं देवानुप्रिया ! तत खलु  
सा भूता दारिद्र्या पार्श्वनार्त्ता० एवमुक्ता सती हृष्टा उत्तरपौरस्त्या स्वयमेव

दारिका शिविकासे उतरी । उसके बाद माता पिता भूता दारिकाको  
आगे कर जहाँ पर पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु थे वहाँ आये, और  
तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिण करके वन्दन और नमस्कार किया  
अनन्तर उन्होंने कहा-हे देवानुप्रिय ! यह भूता दारिका हमारी एका-  
एक (इकलौती) पुत्री है, यह हमलोगोंकी अत्यन्त प्यारी है । यह  
दारिका ससारके भयसे अत्यन्त उद्विग्न है, तथा इसको जन्म और  
मरणका भय लगा हुआ है, इसलिये यह आपके समीप मुण्डित  
होकर प्रजित होना चाहती है । हे भदन्त ! इसलिये हम आपको  
यह शिष्यारूप भिक्षा देते हैं । हे देवानुप्रिय ! इस शिष्यारूप  
भिक्षाको आप स्वीकार करे ।

भगवानने कहा-हे देवानुप्रिये ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो ।

उसके पश्चात् अर्हत् पार्श्व प्रभुके इस प्रकार कहने पर वह  
भूता दारिका हृष्टमुष्टहृदयसे ईशान कोणमे जाकर अपने ही हाथोंसे

पछी भागारिता भूता दारिका ने आगम करीने यावत् नय पुत्रादानीय अर्हत् पार्श्व  
प्रभु के तत्वा आगम अन त्रयुवार अदक्षिण प्रक्षिप्य करीने वन्द तथा नमस्कार  
कर्या पछी तेओअ कछु - हे देवानुप्रिय ! आ भूता दारिका अमारी ओकनी ओठ पुत्री छे  
त अमन गहुँज पचावी छे आ दारिका ससारना लयवी घलीज उद्विग्न छे अने  
तेने जन्म तथा मरणनो लय लाग्ना ठरे छे ते भाटे ते आपनी पासे मुण्डित यधने  
प्रजित तथा आछे छे हे भदन्त ! ते भाटे अमे आपने आ शिष्याउप भिक्षा दछअ  
छीअे हे देवानुप्रिय ! आ शिष्यारूप भिक्षानो आप स्वीकार करा

भगवान कछु - हे देवानुप्रिये ! जैसी तमारी इच्छा

त्यार पछी अर्हत् पार्श्व प्रभुना ओ प्रकार उछेवाथी ते भूता दारिका हृष्टमुष्ट  
हृदयथी ईशान कोणमा नछने पाताना न छेवाथी आभूअु आने पाताना शरीर

खलु गोयमा । सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्डी लद्धा पत्ता ।  
 ठिई एग पलिओवम । सिरी णं भंते । देवी जाव कहिं  
 गच्छिहिइ ? महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । एव खलु जंबू ।  
 निक्खेवओ । एव सेसाणं वि नवण्ह भाणियव्व, सरिसनामा  
 विमाणा, सोहम्मे कप्पे, पुव्वभवे नयरचेडयपियमाईण अप्पणो  
 य नामादी जहा सगहणीए, सव्वा पासस्स अतिए निक्खता ।  
 ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणियाओ सरीरवाओसियाओ सव्वाओ  
 अणतर चइं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ २ ॥

॥ पुप्फचुलिया णाम चतुत्थवग्गो सम्मत्तो ॥ ४ ॥

छाया-तत. खलु स सुदर्शनो गाथापतिः भूता दारिका स्नाता यावद्  
 विभूषितशरीरा पुरुषसहस्रवाहिनी शिविका दूरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिः  
 यावद् रवेण राजगृहनगर मध्यमध्येन तत्रैव गुणशिल चैत्य तत्रैवोपागत,  
 छत्रादीन् तीर्थकरातिशयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिविका स्थापयति, स्थापयित्वा  
 भूता दारिका शिविकात् प्रत्यवरोहयति । तत खलु ता भूता दारिका

‘तएण से’ इत्यादि—

उसके बाद उस सुदर्शन गाथापतिने स्नान की हुई तथा सभी  
 अलङ्कारोंसे अलङ्कृत उस भूता दारिकाको शिविकामे बैठाया । अनन्तर  
 वह अपने सभी मित्र ज्ञाति स्वजन बन्धुओंके साथ भेरी आदि  
 बाजोंकी ध्वनिसे दिशाको सुग्वरित करता हुआ राजगृह नगरीके  
 बीचोबीचसे होता हुआ गुणशिलक चैत्यके पास पहुँचा । वहाँ उसने  
 तीर्थकरोंके अतिशयको देखा और शिविकाको ठहराया । तथा भूता

‘तएण से’ इत्यादि

त्या. पछी ते सुदर्शन गाथापतिजे भूता दारिका डे जे स्नान करीने तथा तमाम  
 अलङ्कारेथी विभूषित हुनी तेने ते शिविकामा बैसाडी पछी ते पोताना सवे मित्र,  
 ज्ञाति, स्वजन मधुज्योनी साथे भेरी, शरणाध आदी वाण्ठज्योना ध्वनिथी दिशाज्योने  
 सुग्वरित करता राजगृह नगरीनी मध्यमध्ये यधने आपता गुणशिलक चैत्यनी पासे  
 पहुँच्या त्या ते पलणीने थोकारी तथा भूता दारिका शिविकामाथी नीचे उतरी त्या

सलु कल्पते अस्माक शरीरमाकुशिकाः सलु भवितुम्, त्व च सलु देवानुप्रिये । शरीरमाकुशिकाः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावसि यावद् नैपेधिसीं चेतयसि, तत् सलु त्व देवानुप्रिये । एतस्य स्थानम्य आलोचयेति, जेप यथा सुभद्रायाः यावत् प्रत्येकमुपाश्रयमुपसपद्य सलु विहरति । ततः सलु मा भूता आर्या अनपप्रट्टिका अनिहारिता स्वच्छन्दमति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत् चेतयते । ततः सलु सा भूता आर्या गूढभिः चतुर्षु पष्ठाष्टमं गृह्णति उर्पाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा तस्य स्थानम्य अनालोचनप्रतिक्रान्ता सायमात्रे कालं कृत्वा सौगर्मे कल्पे श्रमपतमके विमाने उपपातमभाया देवशयनीये यावत् तदगान्नया श्रीदेवी-तयोपपन्ना पञ्चविंशत्या पर्याप्त्या मापामन पर्याप्त्या पर्याप्ता । एव सलु

उचित नहीं है । हे देवानुप्रिये ! तुम शरीर माकुशिका हो गयी हो, उससे सर्वदा-चार २ हाथ पर आदि अंगोको घेतो हो, बैठने सोने तथा स्वाध्याय करनेकी जगहको पानीसे छिड़का करती हो । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस पाप स्थानकी आलोचना करो । उसके बाद पुण्यचूलाकी बात न मानकर वह भूता आर्या सुभद्रा आर्याके समान अकेली ही अलग उपाश्रयमें उतरी और पूर्ववत् क्रिया करती हुई स्वतन्त्र होकर रहने लगी । उसके बाद वह भूता आर्या गृह्तसे चतुर्षु पष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्माको भावित करती हुई अपने पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना काल अवसरमें कालकर सौगर्मे कल्पके श्री-अवतसक विमानमें उपपात समाके अन्दर देव-शयनीय शय्यामें उस देव सम्मन्त्री

यद्यु उचित नहीं है देवानुप्रिये । तु शरीरमाकुशिका यद्यपि गच्छते तेथी बुभेक्षा क्षात्र, पद्म आदि अंगोने बारवार धुओ छ भेनवा, सूत्रा तथा स्वाध्याय उपायानी जगत् उतर पाणी छोटे छे भागे छे देवानुप्रिये । तु आ पापस्थाननी आलोचना कर त्पार पछी ते पुण्यचूलाकी बात न मानाने ते भूता आर्या सुभद्रा आर्यानी पेछे कोइती ज बुद्धि उपाश्रयमा-उत्तरी अने पूर्ववत् वर्तती स्वतन्त्र यद्यने उदेवा लागी त्याग पछी ते भूता आर्या ध्याय अतुय, पद्म अष्टम आदि तपोथी आत्माने भावित करती अने ध्याय वर्यो सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करती तेछे पोताना पापस्थानोनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्था वगर पछी ज्ञान अवसरमा ज्ञान करीने सोधर्म छापना श्री अवतसक विमानमा उपपात समानी अदर देवशयनीय शय्यामा ते देव समधी अव-

आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, यथा देवानन्दा पुष्पचूलानामन्तिके यावद्  
गुप्तब्रह्मचारिणी । ततः खलु सा भूता आर्या अन्यदा रुदाचित् शरीरवा  
कुशिरा जाता चापि अभवत् । अमीक्षणममीक्षण दृष्टौ धावति, पादौ धावति,  
एव शीर्षं धावति, मुखं धावति, स्तनान्तराणि कक्षान्तराणि धावति,  
गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु स्थानं वा शय्या वा नैपेथिकी  
(स्वाध्यायभूमिं) चेतयते (करोति) तत्र तत्रापि च खलु पूर्वमेव पानीयेन  
अभ्युपमति । ततः पश्चात् स्थानं वा शय्या वा नैपेथिकी वा चेतयते ।  
ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्या भूतामार्यामेवमवादिषु -वयं खलु  
देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थः, ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यं, नो

आभूषण आदिको अपने शरीरसे उतारती है । बादमे वह देवान्दाके  
समान पुष्पचूला आर्याके समीप प्रजित हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी  
होती है । उसके बाद वह भूता आर्या किसी समय शरीर बाकु  
शिका हो गयी, जिससे वह अपने हाथोंको, पैरोंको, शिरको, मुँहका  
तथा स्तनके अन्तर भागोको, एव कँखके अन्तरको और गुह्यके  
अन्तरको बार बार धोने लगी । जहाँ कहीं भी सोनेके लिये, बैठनेके  
लिये, स्वाध्याय करनेके लिये उपयुक्त स्थान निश्चित करती थी उसे  
पहलेसे ही पानीसे छिडकती थी, बाद वहाँ बैठती थी, सोती थी,  
स्वाध्याय करती थी । अनन्तर उस भूता आर्या के इस प्रकारके  
व्यवहारको देखकर पुष्पचूला आर्याने उससे इस प्रकार कहा-हे  
देवानुप्रिये ! हमलोग ईर्यासमिति आदि समितियोंसे युक्त यावत्  
गुप्तब्रह्मचारिणी श्रमणी निर्ग्रन्थी हैं । हमे शरीर बाकुशिका होना

उपर्यु उतारे छे पछी ते देवानन्दांनी पेठे पुष्पचूला आर्यांनी पासो प्रजित थछ  
गुप्तब्रह्मचारिणी जने छे त्याग पछी ते भूता आर्या कछ ओक वणते शरीर बाकुशिका  
थछ गछ नथी ते पोताना हाथ, पां, माथु, भो तथा स्तनना अदरना लागोने अने  
काभना अदरना लागो तथा गुह्यनी अदरना लागो बारवार धोवा लागी न्या त्या  
पणु भुवा भाटे, भेसवा भाटे स्वाध्याय करवा भाटे उपयुक्त स्थानने निश्चय करती  
हनी ते पडेवा न त्या पाणी छान्ती हती, पछी त्या भेसती हती, सूती हती,  
स्वाध्याय करती हनी पछी ते भूता आर्याने आ प्रकारने व्यवहार नेधने पुष्पचूला  
आर्याने तने आ प्रकारे कछु —हे देवानुप्रिये ! आपणे ईर्यासमिता आदि समिति  
ओ थी कुडा राने गुप्तब्रह्मचारिणी श्रमणी निर्ग्रन्थी छोओ आपणुने शरीर बाकुशिका

खलु कल्पते अस्माकं शरीराकुशिकाः खलु भवितुम्, त्व च खलु देवानुप्रिये ! शरीराकुशिकाः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावसि यावद् नैपेक्षिमी चेत्तयसि, तत् खलु त्व देवानुप्रिये ! एतस्य स्थानम्य आलोचयेति, ज्ञेयं यथा सुभद्राया यावत् प्रत्येकमुपाश्रयमुपसपद्य खलु विहरति । ततः खलु सा भूता आर्या अनपगृष्टिका अनिवारिता म्वच्छन्दमति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत् चेत्तयते । ततः खलु सा भूता आर्या उद्गमिः चतुर्थं पष्ठाष्टमं वहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा तस्य स्थानम्य अनालोचितप्रतिक्रान्ता कालमामे कालं कृत्वा सौम्ये म्लये श्यवतसके विमाने उपपातसभाया देवशयनीये यावत् तद्गाहनया श्रीदेवी-तयोपपन्ना पञ्चविधया पर्याप्त्या भाषामनःपर्याप्त्या पर्याप्ता । एव खलु

उचित नहीं है । हे देवानुप्रिये ! तुम शरीर बाकुशिका हो गयी हो, उससे सर्वत्र-गार २ हाथ पैर आदि अगोको धोतो हो, बैठने सोने तथा स्वा-याय करनेकी जगहको पानीसे छिडका करती हो । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस पाप स्थानकी आलोचना करो । उसके बाद पुष्पचूलाकी बात न मानकर वह भूता आर्या सुभद्रा आर्याके समान अकेली ही अलग उपाश्रयमे उतरी और पूर्ववत् क्रिया करती हुई स्वतन्त्र होकर रहने लगी । उसके बाद वह भूता आर्या बहुतसे चतुर्थ पष्ठ अष्टम आदि तपसे आत्माको भावित करती हुई अपने पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना काल अवसरमे कालकर मौधर्म कल्पके श्री-अवतसक विमानमे उपपात सभाके अन्दर देव-शयनीय शय्यामे उस देव सम्मन्त्री

यद्यु उचित नहीं है देवानुप्रिये । तु शरीरम कुशिका यद्य गद्य हे तेथी इमेशा हाथ, पग आनि अगोने वारवार धुओ छे जेमवा, सूवा तथा स्वाध्याय करवानी जगा उतर पाछी छोटे हे भागे हे देवानुप्रिये । तु आ पापस्थाननी आवेत्यना कर तयार पछी ते पुष्पचूलानी वात न मानीने ते भूता आर्या सुभद्रा आर्यानी पेछे ओकरी न बुद्धा उपाश्रयमा उतरी अने पूर्ववत् वर्तती स्वतन्त्र थधने रहेवा लागी त्याग पछी ते भूता आर्या घडा चतुर्थ, पष्ठ अष्टम आनि तपोथी आत्माने लाजित करती अने घडा वर्षो सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करती तेषे पोताना पापस्थानोनी आवेत्यना अने प्रतिक्रमण ज्या वगर पछी जाण अवसरमा जाण करीने मोधर्म कल्पना श्री अवतसक विमानमा उपपात सभानी अंदर देवशयनीय शय्यामा ते देव सम्मन्त्री अव-

આમરણમાલ્યાલદ્વારમગ્નુચ્ચતિ, યથા દેવાનન્દા પુષ્પચૂળાનામન્તિકે યાવદ્  
 ગુપ્તવ્રહ્મચારિણી । તતઃ સ્વલુ સા ભૂતા આર્યા અન્યદા ક્ષદાચિત્ શરીરવા  
 કુશિમા જાતા ચાપિ અમવત્ । અમીક્ષ્ણમમીક્ષ્ણ દસ્તો ધાવતિ, પાદો ધાવતિ,  
 એ શીર્ષ ધાવતિ, મુખ ધાવતિ, સ્તનાન્તરાણિ ક્ષાન્તરાણિ ધાવતિ,  
 ગુહ્યાન્તરાણિ ધાવતિ, યત્ર યત્રાપિ ચ સ્વલુ સ્થાન વા શય્યા વા નૈવેધિકી  
 (સ્વાધ્યાયભૂમિ) ચેતયતે (કુરોતિ) તત્ર તત્રાપિ ચ સ્વલુ પૂર્વમેવ પાનીયેન  
 અભ્યુક્ષતિ । તત પશ્ચાત્ સ્થાન યા શય્યા વા નૈવેધિકી વા ચેતયતે ।  
 તતઃ સ્વલુ તાઃ પુષ્પચૂલા આર્યા ભૂતામાર્યામેવમવાદિષુ -વય સ્વલુ  
 દેવાનુપ્રિયે ! શ્રમણ્યો નિર્ગ્રન્થઃ, ઈર્યાસમિતા યાવદ્ ગુપ્તવ્રહ્મચારિણ્ય, નો

આભૂષણ આદિકો અપને શરીરસે ઉતારતી છે । બાદમે વહ દેવાનન્દાકે  
 સમાન પુષ્પચૂલા આર્યાકે સમીપ પ્રવ્રજિત હો યાવત્ ગુપ્તવ્રહ્મચારિણી  
 હોતી છે । ઉસકે બાદ વહ ભૂતા આર્યા કિસી સમય શરીર બાકુ  
 શિકા હો ગયી, જિસસે વહ અપને હાથોકો, પૈરોકો, શિરકો, મુંહકા  
 તથા સ્તનકે અન્તર ભાગોકો, એવ કૌંસકે અન્તરકો ઓર ગુહ્યકે  
 અન્તરકો બાર બાર ધોને લગી । જહાં કહી મી સોનેકે લિયે, બેઠનેકે  
 લિયે, સ્વાધ્યાય કરનેકે લિયે ઉપયુક્ત સ્થાન નિશ્ચિત કરતી થી ઉસે  
 પહેલેસે હી પાનીસે છિડકતી થી, બાદ વહાં બેઠતી થી, સોતી થી,  
 સ્વાધ્યાય કરતી થી । અનન્તર ઉસ ભૂતા આર્યા કે હસ પ્રકારકે  
 વ્યવહારકો દેવકર પુષ્પચૂલા આર્યાને ઉસસે હસ પ્રકાર કહા-હે  
 દેવાનુપ્રિયે ! હમલોગ ઈર્યાસમિતિ આદિ સમિતિયોસે યુક્ત યાવત્  
 ગુપ્તવ્રહ્મચારિણી શ્રમણી નિર્ગ્રન્થી હે । હમે શરીર બાકુશિકા હોના

ઉપરથી ઉતારે છે પછી તે દેવાન દાની પેઠે પુષ્પચૂલા આર્યાની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ  
 ગુપ્તવ્રહ્મચારિણી બને છે ત્યાં પછી તે ભૂતા આર્યા કંઈ એક વખતે શરીર બાકુશિકા  
 થઈ ગઈ જતી તે પોતાના હાથ, પગ, માથુ, મો તથા સ્તનના અદરના ભાગોને અને  
 કાપના અદરના ભાગો તથા ગુહ્યની અદરના ભાગો વારવાર ધોવા લાગી જ્યા ત્યા  
 પણ સુવા માટે, બેસવા માટે સ્વાધ્યાય કરવા માટે ઉપયુક્ત સ્થાનને નિશ્ચય કરતી  
 હતી ત પહેલાં જ ત્યાં પાછી છાટતી હતી, પછી ત્યાં બેસતી હતી, સૂતી હતી,  
 સ્વાધ્યાય કરતી હતી પછી તે ભૂતા આર્યાનો આ પ્રકારનો વ્યવહાર બોધને પુષ્પચૂલા  
 આર્યાએ તને આ પ્રકારે કહ્યું —હે દેવાનુપ્રિયે ! આપણે ઈર્યાસમિતિ આદિ સમિતિ  
 એ થી યુક્ત અને ગુપ્તવ્રહ્મચારિણી શ્રમણી નિર્ગ્રન્થી છાએ આપણને શરીર બાકુશિકા

आत्मनश्च नामादिर्यथा सग्रहण्याम्, सर्वा पार्श्वस्यान्तिके निष्क्रान्ताः । ताः पुष्पचूलानां शिष्याः शरीरवाकुशिमाः सर्वा अनन्तरं च न्युत्वा महाविदेहे वर्षे सेतस्यन्ति ॥ २ ॥

टीका—‘तएण से सुदसणे’ इत्यादि । ‘अभुक्खइ’=अभ्युक्षति=अभिविञ्चति । ‘चेण्ड’ चेतयति=उपविशति । शेष स्पष्टम् ॥

पुष्पचूलिकाख्यश्चतुर्थो वर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥

इसी प्रकार शेष नौ अभ्ययनोंका भी भाव जानना चाहिये । इन नवोंके विमानोंका नाम इनके समान है । सौधर्म कल्पमे ये सब देवीपनमे उत्पन्न हुई । इनके पूर्वभवमे नगर उद्यान पिता आदि तथा इनका अपना नाम आदि सग्रहणीगाथामे आये हुए नामके समान जानना चाहिये । ये सभी पार्श्व प्रभुके समीपमे प्रव्रजित होकर पुष्पचूलाकी शिष्या हुई तथा सभी शरीरवाकुशिमा हो गयी । और ये सभी देवलोकसे च्यवकर महाविदेह क्षेत्रमे जन्म लेकर सिद्ध होगी । और सब दुःखोका अन्त करेगी ॥ २ ॥

पुष्पचूलिका नामका चतुर्थ वर्ग समाप्त हुआ

आ प्रकादे शेष (गाङ्गीना) नव अभ्ययनोनो पञ्च भाव जलणी लेयो जेधओ आ नवभा विमानना नाम तेना नामना जेवा ज छे सौधर्म उरभा ओ अधीनो देवी पञ्चामा जन्म थये तेमना पूर्वभवभा नगर, उद्यान, पिता आदि तथा तेना पोताना नाम आदि सग्रहणी गाथामा आवेला नामना जेवा जलुना आ अधी पार्श्व प्रभुनी पासो प्रव्रजित थध अने ते अधी पुष्पचूलानी शिष्याओ थध हुती तथा अधी शरीर-वाकुशिका थध गध हुती ते पछी अधी देवलोकभाथी व्यपीने महाविदेह क्षेत्रमा जन्म लध सिद्ध थये अने सर्वे दुःखनो अत लावथे (२)

पुष्पचूलिका नामनो चौथो वर्ग समाप्त



ગૌતમ ! શ્રિયા દેવ્યા એવા દિવ્યા દેવઋદિર્લઘ્યા પ્રાપ્તાઃ સ્થિતિરેક પલ્લો  
પમમ્ । શ્રી. સ્વલુ ભદન્ત ! દેવી યાત્ ક્વ ગમિષ્યતિ ? મહાવિદેહે વર્ષે  
સેત્સ્યતિ । એ સ્વલુ જન્મ્ : ! નિષ્કેપક' । એ શેપાણામપિ નવાના ભણિતવ્ય  
સદ્શાનામાનિ વિમાનાનિ, સોધર્મે પલ્પે, પ્રમ્ભે નગરૈચૈત્યપિત્રાદીનામ્

અવગાહનાસે શ્રી દેવી પને ઉત્પન્ન હુઈં ઓર ભાષાપર્યાસિ મન પર્યાસિ  
આદિ પાંચ પર્યાસિયોસે યુક્ત હો ગયી । દેવગતિમે ભાષા ઓર મન-  
પર્યાસિ એક સાથ ચાંપનેકે કારણ પાંચ પર્યાસિ કહી ગયી હે ।

હે ગૌતમ ! શ્રી-દેવીને હસ પ્રકાર હસ દિવ્ય દેવઋદિકો  
પાયા હૈ । દેવલોકમે હસકી સ્થિતિ એક પલ્લોપમકી હૈ ।

ગૌતમ સ્વામીને પૂછા—

હે ભદન્ત । યદ શ્રી-દેવી યહાંસે ચ્યવકર કહાં જાયગા ।

ભગવાન કહેતે હૈ—

હે ગૌતમ ! વદ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમે જન્મ લેકર સિદ્ધ હોગી  
ઓર સબ દુઃલોકા અન્ત કરેગો ।

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ—

હે જન્મ્ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને પુષ્પચૂલિકાકે પ્રથમ  
અધ્યયનકા ભાવ ઉક્ત પ્રકાર નિરૂપિત કિયા હૈ ।

ગાહના દ્વારા શ્રી-દેવી પશુમા જન્મ લીધો અને ભાષાપર્યાપ્તિ, મન પર્યાપ્તિ આદિ  
પાંચ પર્યાપ્તિઓથી યુક્ત થઈ ગઈ દેવગતિમા ભાષા અને મન પર્યાપ્તિ એક સાથે  
ખાતવાના કારણે પાંચ પર્યાપ્તિ કહી છે

હે ગૌતમ ! શ્રી-દેવીએ આ પ્રકારે આ દિવ્ય દેવઋદિને ભેગવી છે દેવલોકમા  
તેના સ્થિતિ એક પલ્લોપમના છે

ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે -

હે ભદત ! આ શ્રી-દેવી અહીંથી સ્થિતિને કયા જશે

ભગવાન કહે છે -

હે ગૌતમ ! તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લઈ સિદ્ધ થશે અને બધા દુઃખને

અત લાવશે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે -

હે જન્મ્ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પુષ્પચૂલિકાના પ્રથમ અધ્યયનનો ભાવ

ઉપર પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે

जाव दरिसणिजे । तत्थण नदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स  
जक्खस्स जक्खाययणे होत्था चिराइए जाव बहुजणो आगम्म  
अच्चेइ सुरप्पिय जक्खाययण । से णं सुरप्पिए जक्खाययणे  
एगेण महया वणसडेणं सुवओ समत्ता सपरिक्खित्ते जहा  
पुण्णभद्दे जाव सिलावट्टए । तत्थण वारवर्डए नयरीए कण्हे  
नाम वासुदेवे राया होत्था जाव पसासेमाणे विहरइ । से ण  
तत्थ समुद्विजयपामोक्खाण दसण्हं दसाराणं, वलदेवपामो-  
क्खाणं पच्चण्ह महावीराण, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्ह  
रायसहस्साण पज्जुण्णपामोक्खाण अट्ठधुट्ठाण कुमारकोडीण,  
सवपामोक्खाण सट्ठीए दुइदसाहस्सीण, वीरसेणपामोक्खाणं  
एक्कवीसीए वीरसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाण छप्पन्नाए वल-  
वगसाहस्सीणं रुपिणिपामोक्खाणं सोलसण्ह देवीसाहस्सीण,  
अणगसेणापामोक्खाण अणेगाणं गणियासाहस्सीण, अण्णेसि  
च बहूण राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईण वेयड्ढगिरिसागरमेरा-  
गस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्च जाव विहरइ । तत्थण वार-  
वर्डए नयरीए वलदेवे नामं राया होत्था, महया जाव रज्ज  
पसासेमाणे विहरइ । तस्स ण वलदेवस्स रण्णो रेवर्ड नाम  
देवी होत्था, सोमाला जाव विहरइ । तएण सा रेवर्ड देवी  
अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि सयणिज्जसि जाव सीह  
सुमिणे पासित्ता ण पडिवद्दा०, एव सुमिण दसणपरिकहण,  
निसडे नाम कुमारं जाए जाव कलाओ जहा महाबले, पना-  
सओ दाओ, पण्णासरायकण्णगाण एगदिवसेण पाणिं गिण्हा-  
वेइ, नवर निसडे नाम जाव उप्पिपासाए विहरइ ॥ १ ॥

## वृष्णिदशा ५

मूलम्—जइणं भंते । उक्खेवओ० उवगाणं चउत्थस्स पुप्फचुलाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स णं भंते । वग्गस्स उवगाणं वह्निदसाणं भगवया जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

“ निसिडे १ मायनि २ वह ३ वहे ४, पगता ५ जुत्ती ६ दसरहे ७ दढरहे ८ य । महाधणू ९ सत्तधणू १०, दसधणू ११ नामे सयधणु १२ य ॥ १ ॥

जइण भंते । समणेण जाव दुवालस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते । उक्खेवओ । एव खलु जंबू । तेणं कालेण २ बारवई नामं नयरी होत्था दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तीसे ण बारवईए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण रेवए नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगण-तलमणुविहतसिहरे नाणाविहस्क्खगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगताभि-रामे हस—मिय—मयूर कोच—सारस चक्काग मयणसाला कोइलकु-लोववेए अणेग तडकडगवियरओज्झरपवायपुब्भारसिहरपउरे अ-च्छरगणदेवसगचारणविज्जाहरमिट्ठुणसनिविन्ने निच्चच्छणए दसा खत्तीपुरिसतेलोककलथगाण सोमे सुभए पियदसणे सुरूवे पासाईए जाव पडिरूवे । तत्थ ण रेवयगस्स पव्वयस्स अदूर-सामते एत्थ णं नदणवणे नाम उज्जाणे होत्था, सवोउयपुप्फ

भदन्त ! उत्क्षेपकः । एव खलु जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारा-  
वती नाम नगरी अभवत् द्वादशयाजनायामा यावत् प्रत्यक्ष देवलोकभूता प्रासा-  
दीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा । तस्या खलु द्वारावत्या' नगर्या षड्वि-  
ंशत्तरपारम्ये दिग्भागे, अत्र खलु रैवतो नाम पर्वतोऽभवत्, तुङ्गो गगनतल-  
मनुलिङ्गिष्वरः नानाविधवृक्षगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगताभिरामः ह्रममृगमयूरकौ-  
ञ्चसारसचक्रवाकमदनशालाकोकिलकुलोपपेत', अनेकतटकटकविवरावन्नरपपातप्रा-

जम्बू स्वामी पूछते हैं-

हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीरने वृष्णिदशामें बारह  
अध्ययनोक्ता निरूपण किया है तो उन अध्ययनोमें प्रथम अध्ययनका  
क्या भाव कहा है ?

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-

हे जम्बू ! उस काल उस समयमें द्वारावती नामकी नगरी  
थी । जो बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक सदृश 'प्रासादीया'  
=मनको प्रसन्न करने वाली तथा 'दर्शनीया'=देखने योग्य एवं 'अभिरूपा'  
=सुन्दर छटावाली और 'प्रतिरूपा'=अनुपम शिल्पकलासे सुशोभित  
थी । उस द्वारावती नगरीके बाहर ईशानकोणमें ऊँचा तथा आका-  
शको छूनेवाले शिखरोंसे युक्त रैवतक नामक पर्वत था । वह पर्वत  
अनेक प्रकारके वृक्ष गुच्छ गुल्म और लता वल्लियोंसे मनोहर था ।  
वह ह्रम, मृग, मयूर, कौञ्च (पक्षी विजोष) सारस, चक्रवाक, मदन-  
शाला (मैना) और कोकिल आदि पक्षिवृन्दसे सुशोभित था ।

जम्बू स्वामी पूछे छे -

हे भदन्त ! जे श्रमण भगवान् महावीरने वृष्णिदशामें बारह अध्ययनोक्त  
निरूपण कियुं छे तो ते अध्ययनोक्तोंमें प्रथम अध्ययनमें शु भाव कसो छे ?

सुधर्मा स्वामी कहे छे -

हे जम्बू ! ते काल ते समयमें द्वारावती नामकी नगरी छती, जे बारह  
योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष देवलोकना जेवी, प्रासादीया=मनमें प्रसन्न करवावाणी  
तथा दर्शनीया=देखना योग्य, अभिरूपा=सुन्दर छटावाणी अने प्रतिरूपा=अनुपम  
शिल्पकलाथी सुशोभित छती ते द्वारावती नगरीनी गच्छा ईशान कोणमा छिये तथा  
गगनथुणी शिखरोंवाणी रैवतक नामको पर्वत छतो ते पर्वत अनेके जातना वृक्ष,  
गुच्छ गुल्म अने लतावलीअथी मनोहर छतो वणी ते ह्रम, मृग मयूर,  
कौञ्च ( पक्षी ), सारस, चक्रवाक, मदनशाला ( मैना ) अने कोकिल आदि पक्षिवृन्दथी

છાયા—યદિ સ્વલ્લ ભદન્ત ! ઉત્કેષકઃ, ઉપાદ્વાના ચતુર્થસ્ય પુષ્પચૂડાના મયમર્થઃ પ્રજ્ઞસઃ, પશ્ચમસ્ય સ્વલ્લ ભદન્ત ! વર્ગસ્ય ઉપાદ્વાના વૃષ્ણિદશાના શ્રમ ણેન ભગવતા યાવત્સપ્રાપ્તેન મોક્ષર્થ પ્રજ્ઞસઃ ? એવ સ્વલ્લ જમ્બૂઃ ! શ્રમણેન ભગ વતા મહાવીરેણ યાવદ્ દ્વાદશાધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, તદ્ યથા—

નિપથ. ૧, માયની ૨ વહઃ ૩ વહઃ ૪ પગતા, ૫ જ્યોતિઃ ૬ દશરથ ૭ દ્વદરથ ૮ મહાધન્વા, ૯ સપ્તધન્વા, ૧૦ દશધન્વા, ૧૧ નામ શતધન્વાચ ૧૨ ॥ ૧ ॥

યદિ સ્વલ્લ ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવદ્ દ્વાદશા યયનાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, પ્રથ મસ્ય સ્વલ્લ ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવદ્ દ્વાદશાધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, પ્રથમસ્ય સ્વલ્લ

। વૃષ્ણિદશા વર્ગ ।

‘જડણ મતે’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં—હે ભદન્ત ! પુષ્પચૂલા નામકે ચતુર્થ ઉપાદ્વામે ભગવાને પૂર્વોક્ત પ્રકારસે દમ અધ્યયનોકા નિરૂપણ ક્રિયા તો હે ભદન્ત ! ઉસકે બાદ વૃષ્ણિદશા નામક પાંચવે ઉપાદ્વામે મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને કિન અર્થોકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ?

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં—

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વૃષ્ણિદશા નામક પાંચવે વર્ગમે ચારદ અધ્યયનોકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ।

ઉનકે નામ (૧) નિપથ, (૨) માયની, (૩) વહ, (૪) વહ, (૫) પગતા, (૬) જ્યોતિ, (૭) દશરથ, (૮) દ્વદરથ, (૯) મહાધન્વા, (૧૦) સપ્તધન્વા, (૧૧) દશધન્વા ઓર (૧૨) શતધન્વા હૈ ।

વૃષ્ણિદશા વર્ગ (૫) પાથ્યમે

‘જડણ મતે’ ઇત્યાદિ

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે હે ભદન્ત ! પુષ્પચૂલા નામના ચોથા ઉપાદ્વાના ભગવાને પૂર્વોક્ત પ્રકારથી દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો હે ભદન્ત ! ત્યાર પછી વૃષ્ણિદશા નામના પાથ્યમા ઉપાગમા મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કયા અર્થોનું નિરૂપણ કર્યું છે

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણિદશા નામના પાથ્યમા વર્ગમા ચાર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે

તેમના નામ—(૧) નિપથ (૨) માયની, (૩) વહ, (૪) વહ, (૫) પગતા (૬) જ્યોતિ, (૭) દશરથ, (૮) દ્વદરથ (૯) મહાધન્વા, (૧૦) સપ્તધન્વા (૧૧) દશધન્વા અને (૧૨) શતધન્વા ॥

મદન્ત ! ઉત્કેષક. । એવ સ્વલુ જમ્બૂ\* । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે દ્વારા-  
વતી નામ નગરી અભવત્ દ્વાદશયાજનાયામા યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોકભૂતા પ્રાસા-  
દીયા દર્શનીયા અભિરૂપા પ્રતિરૂપા । તસ્યા સ્વલુ દ્વારાવત્યાઃ નગર્યાં વદિ-  
રુત્તરપોરમ્ત્યે દિગ્ભાગે, અત્ર ન્દલુ રૈવતો નામ પર્વતોઽભવત્, તદ્વો ગગનતલ-  
મનુલિઢ્નિગ્ધવરઃ નાનાવિપટ્લગુન્ઠગુલ્મલતાશ્લીપરિગતાભિરામઃ હમમૃગમયૂરકૌ  
શ્વસારસચક્રવાકમદનશાલાકોકિઠ્ઠુલોપપેત, અનેકતટકટકવિવરાવગ્રમપાતમા-

જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં-

હે મન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ધૃષ્ણિદગામે બારહ  
અધ્યયનોંકા નિરૂપણ ક્રિયા હૈ તો ડન અ યયનોમે પ્રથમ અધ્યયનકા  
કયા નાવ કહા હૈ ?

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં-

હે જમ્બૂ ! ડમ કાલ ડસ સમયમે દ્વારાવતી નામકી નગરી  
યી । જો બારહ યોજન લમ્બી યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોક સદૃશ 'પ્રસાદીયા'  
=મનકો પ્રસન્ન કરને ચાલી તયા 'દર્શનીયા'=દેખને યોગ્ય ંવ 'અભિરૂપા'  
=સુન્દર છટાવાલી ંર 'પ્રતિરૂપા'=અનુપમ શિલ્પકલાસે સુશોભિત  
યી । ડમ દ્વારાવતી નગરીકે ઘાહર ંજાનકોણમે ંંચા તથા આકા-  
શકો છૂનેચાલે શિશ્વરોસે યુક્ત રૈવતક નામક પર્વત યા । વહ પર્વત  
અનેક પ્રકારકે ઘૃક્ષ ગુન્ઠ ગુલ્મ ંર લતા ઘણિયોસે મનોહર યા ।  
વહ હમ, મૃગ, મયૂર, કૌશ્વ (પક્ષી વિશેષ) સારસ, ચક્રવાક, મદન-  
શાલા (મૈના) ંર કોકિલ આદિ પક્ષિવૃન્દસે સુશોભિત યા ।

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે -

હે મન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધૃષ્ણિદશામા જાર અધ્યયનોનું  
નિરૂપણ કર્યું હૈ તો તે અધ્યયનોમા પ્રથમ અધ્યયનને શુ નાવ કહો છ ?

સુધર્મા સ્વામી કહે છે -

હે જમ્બૂ ! તે કાળ તે સમયે દ્વારાવતી નામની નગરી હતી, જે જાર  
યોજન લંબી યાવત્ પ્રત્યક્ષ દેવલોકના જેવી, પ્રસાદીયા=મનને પ્રસન્ન કરવાવાળી  
તથા દર્શનીયા=દેખવા યોગ્ય, અભિરૂપા=સુન્દર છટાવાળી અને પ્રતિરૂપા=અનુપમ  
શિલ્પકલાથી સુશોભિત હતી તે દ્વારાવતી નગરીની જહાન ંજાન કોણુમા ંચો તયા  
ગગનચુળી શિખરોવાળો રૈવતક નામનો પર્વત હતો તે પર્વત અનેક જાતના વૃક્ષો,  
ગુન્ઠ ગુલ્મ અને લતાવહાંઓથી મનોહર હતો વળી તે હસ, મૃગ મયૂર,  
કૌશ્વ ( પક્ષી ), સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલા ( મૈના ) અને કોકિલ આદિ પક્ષિવૃન્દથી

गमारशिखरप्रचुरः अप्सरोगणदेवमय-चारण विद्याधरमिथुनसन्निधीर्णः, नित्य  
क्षणक, दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यगलवता सोमः शुभ प्रियदर्शन सुरुप  
प्रासादीयो यावत् प्रतिरूपः । तस्य खलु रैवतकस्य पर्वतस्य अदूरसामन्ते,  
अत्र खलु नन्दनवन नाम उद्यानम् अभवत्, मरुत्तु पुष्प० यावद् दर्शनीयम् ।

तथा जिसमे अनेक तट=किनारे और रुटक=पर्वतका रमणीय भाग,  
तथा विवर=सुन्दर गुफाएँ और अवक्षर=सुन्दर झरने एवं प्रपात=जहाँ  
झरना गिरता है वह स्थान, तथा प्राग्भार=पर्वतका झुगा हुआ रम्य  
प्रदेश और अनेक सुन्दर शिखर विद्यमान थे । वहाँ अप्सरागण  
देवगण और विद्याधरोंके युगल आकर क्रीडा करते थे । और जहाँ  
जट्पाचरण विद्याचरण मुनि भी ध्यान मौनान्तिके लिये निवास करते  
थे । तथा वह पर्वत उत्सवका एक रमणीय स्थल था । और नेमि  
नाथ भगवानसे युक्त होनेके कारण तीनों लोकमें श्रेष्ठ बलवीर  
दशाहोंका वह पर्वत सोम=आहुति उत्पन्न करनेवाला था, शुभ=भगल-  
कारी या प्रियदर्शन=नेत्रोंको सुख देनेवाला था, सुरुप=सुहावना था,  
प्रासादीय=मनको प्रसन्न करनेवाला था, दर्शनीय=देखने योग्य था,  
अभिरूप=अपनी सुन्दरताके कारण चमकता था, प्रतिरूप=दर्शक जनोके  
हृदयमें प्रतिबिम्बित हो जाता था । उस रैवतक पर्वतके समीपमें  
नन्दनवन नामक उद्यान था, जो सभी ऋतुओंके फूलोंसे सम्पन्न

सुशोभित होता था । वहाँ अनेक तट=किनारे और रुटक=पर्वतका रमणीय भाग  
तथा विवर=सुन्दर गुफाएँ और अवक्षर=सुन्दर झरने एवं प्रपात=जहाँ  
झरना गिरता है वह स्थान, तथा प्राग्भार=पर्वतका झुगा हुआ रम्य  
प्रदेश और अनेक सुन्दर शिखर विद्यमान थे । वहाँ अप्सरागण, देवगण और  
विद्याधरोंके युगल आकर क्रीडा करते थे । और जहाँ जट्पाचरण, विद्याचरण  
मुनि भी ध्यान, मौन आदि भावों  
निवास करता होता था । तथा वह पर्वत उत्सवका एक रमणीय स्थान होता था  
और नेमिनाथ भगवानसे युक्त होनेके कारण तीनों लोकमें श्रेष्ठ बलवीर  
दशाहोंका वह पर्वत सोम=आहुति उत्पन्न करनेवाला होता था, शुभ=भगलकारी  
होता था, प्रियदर्शन=नेत्रोंके सुख देनेवाला होता था, सुरुप=सुहावना  
होता था, प्रासादीय=मनको प्रसन्न करनेवाला होता था, दर्शनीय=देखने  
योग्य होता था, अभिरूप=अपनी सुन्दरताके कारण चमकता था, प्रतिरूप=दर्शक  
जनोके हृदयमें प्रतिबिम्बित हो जाता था । उस रैवत पर्वतके समीपमें  
नन्दनवन नामक उद्यान था, जो सभी ऋतुओंके फूलोंसे सम्पन्न

तत खलु नन्दनवने उद्याने सुरप्रियस्य यशस्य यक्षायतनमभवत्, चिरातीत,  
यावद् बहुजन आगम्य अर्चयति सुरप्रिय यक्षायतनम् । तद् खलु सुरप्रिय  
यक्षायतनम् एकेन महता वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् सपरिक्षिप्तम् यथा पूर्ण-  
भद्रो यावत् शिलापट्टकः । तत्र खलु द्वारावत्या नगर्या कृष्णो नाम वासुदेवो  
राजाऽभवत् यावत् प्रशासद् विहरति । स खलु तत्र समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां  
दशार्हाणां, बलदेवप्रमुखानां पञ्चानां महावीराणाम्, उग्रसेनप्रमुखानां षोडशानां  
राजमहत्तानां, प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अभ्युष्टानां ( सार्द्धतृतीयानां ) कुमारकोटीनां,  
शाम्बप्रमुखानां षष्ठ्या दुर्दान्तमहत्तानां, वीरसेनप्रमुखानामेकविंशत्यां वीरसह-  
स्रानां, महासेनप्रमुखानां पट्पञ्चाशतोऽलवत्सहस्रानां, रुक्मिणीप्रमुखानां षोड-  
शानां देवीसाहस्रीणाम्, अनङ्गसेनाप्रमुखानामनेकांशं गणितासाहस्रीणाम्,

यावत् दर्शनीयं या । उम नन्दनवन उद्यानमे सुरप्रिय=यक्षका यक्षा-  
यतनं बहुत प्राचीनं या और लोक उसे मानते थे । वह सुरप्रिय  
यक्षायतन चारों तरफसे एक बड़ा वनपण्डसे घिरा हुआ या । जैसा  
पूर्णभद्र उद्यान या । उममे अशोक वृक्षके नीचे एक शिला पट्टक या ।  
उस द्वारावती नगरीमे कृष्ण वासुदेव राजा थे, जो उस नगरका  
यावत् शासन करते हुए विचरते थे । वह कृष्ण वासुदेव समुद्र-  
विजय प्रमुख दश दशार्होंके बलदेव प्रमुख पाँच महावीरोंके, उग्र-  
सेन प्रमुख सोलह हजार राजाओंके, प्रद्युम्न प्रमुख साढ़े तीन करोड़  
कुमारोंके, शाम्ब प्रमुख साठ हजार दुर्दान्त शूरोके, वीरसेन प्रमुख  
एकौस हजार वीरोंके, महासेन प्रमुख छप्पन हजार अलवानोंके,  
रुक्मिणी प्रमुख सोहल हजार देवियोंके तथा अनङ्गसेना प्रमुख

यक्षान् यक्षायतनं बहु प्राचीनं हतु अने बोडो तेने मानता हता ते सुरप्रिय  
यक्षायतन यात्रे त इत्ये ओक मोटा वनपण्डुधी घेरायेलु हतु ठे जेवु पूर्णभद्र उद्यान  
हतु तेभा अशोकवृक्षनी नीचे ओक शिलापट्टक हतु

ते द्वारावती नगरीभा कृष्ण वासुदेव नामे राजा हता जे ते नगरीभा राज्य  
करता विचारता हता ते कृष्ण वासुदेव समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होना, बलदेव  
प्रमुख पाँच महावीरोना, उग्रसेन प्रमुख सोण हज़ार राजाओना प्रद्युम्न प्रमुख  
साठ पण्ड करोड कुमाओना, शाम्ब प्रमुख साठ हज़ार दुर्दान्त शूरोना, वीरसेन  
प्रमुख ओकनीस हज़ार वीरोना, महासेन प्रमुख छप्पन हज़ार अलवानोना,  
रुक्मिणी प्रमुख सोण हज़ार देवीओना तथा अनङ्ग सेना प्रमुख अनेक हज़ार



મ્મારશિખરપ્રચુરઃ અપ્સરોગણદેવમઘ-ચારણ વિગાધરમિથુનસન્નિધીર્ણ, નિત્ય  
ક્ષણક, દશાર્દ્ધવરવીરપુરુષત્રૈલોક્યગ્લગતા સોમ. શુભ. પ્રિયદર્શનઃ સુરુપ  
પ્રાસાદીયો યાવત્ પ્રતિરૂપ. । તસ્ય સહુ રૈવતકમ્ય પર્વતન્ય અદૂરમાન્તે,  
અત્ર સ્વહુ નન્દનવન નામ ઉદ્યાનમ્ અમન્ત, સર્વઋતુ પુષ્પ૦ યાવદ્ દર્શનીયમ્ ।

તથા જિસમે અનેક તટ=કિનારે ઓર ઋટક=પર્વતકા રમણીય ભાગ,  
તથા વિવર=સુન્દર શુફાળં ઓર અવજ્જર=સુન્દર ઝરને ણવ પ્રપાત=જહા  
ઝરના ગિરતા હૈ વહ સ્થાન, તથા પ્રાગ્માર=પર્વતકા ઝુરા જુઆ રમ્ય  
પ્રદેશ ઓર અનેક સુન્દર શિખર વિગ્રમાન થે । વહાં અપ્સરાગણ  
દેવગણ ઓર વિદ્યાધરોંકે યુગલ આકર ક્રીડા કરતે યે । ઓર જહાં  
જદ્ગાચરણ વિદ્યાચરણ મુનિ મી ધ્યાન મૌનાદિકે લિધે નિવાસ કરતે  
થે । તથા વહ પર્વત ઉત્સવકા ણક રમણીય સ્થલ યા । ઓર નેમિ  
નાથ ભગવાનસે યુક્ત હોનેકે કારણ તોનોં લોકમે શ્રેષ્ઠ ચલવીર  
દશાહોંકા વહ પર્વત સોમ=આહ્વાદ ઉત્પન્ન કરનેવાલા યા, શુભ=મંગલ-  
કારી યા પ્રિયદર્શન=નેત્રોંકો સુખ દેનેવાલા યા, સુરુપ=લુહાવના યા,  
પ્રાસાદીય=મનકો પ્રસન્ન કરનેવાલા યા દર્શનીય=દેખને યોગ્ય યા,  
અમિરૂપ=અપની સુન્દરતાકે કારણ ચમકતા યા, પ્રતિરૂપ=દર્શક જનોંકે  
હૃદયમે પ્રતિબિમ્બિત હો જાતા યા । ઉસ રૈવતક પર્વતકે સમીપમે  
નન્દનવન નામક ઉદ્યાન યા, જો સમી ઋતુઓંકે ફૂલોંસે સમ્પન્ન

સુશોભિત હોતો । તથા જેમા અનેક તટ=કિનારા અને ઋટક=પર્વતના રમણીય ભાગ  
તથા વિવર=સુધર શુદ્ધિઓ અને અવજ્જર=સુદ ઝરના, પ્રપાત=જ્યા ઝરણા પડે  
છે તે સ્થાન, તથા પ્રાગ્માર=પર્વતના નમેલા રમણીય ભાગ અને સુદર શિખર  
વિદ્યમાન હોતા તથા અપ્સરાગણ, દેવગણ અને વિદ્યાધરોના જોડલા આવીને ક્રીડા  
કરતા હોતા અને જ્યા જ ધ્યાચરણ, વિદ્યાચરણ મુનિ પણ ધ્યાન, મૌન આદિ માટે  
નિવાસ કરતા હોતા તથા આ પર્વત હમેશા ઉત્તમનુ એક રમણીય સ્થાન હોતુ અને  
નેમીનાથ ભગવાનથી યુક્ત હોવાથી શ્રેષ્ઠ જાલવી નિશાહોને તે પર્વત  
સોમ= આહ્વાદ ઉત્પન્ન કરવાવાળો હોતો, શુભ=મંગળકારી હોતો પ્રિયદર્શન=નેત્રોને  
સુખ આપવાવાળો હોતો, સુરુપ=રૂપાળો ચોભાદાર હોતો, પ્રાસાદીય=માને પ્રસન્ન  
કરવાવાળો હોતો દર્શનીય=જોવા યોગ્ય હોતો, અમિરૂપ=પોતાની સુદરતાને લીધે  
ચમકતો હોતો, પ્રતિરૂપ=જોનારના હૃદયમા છાપ પાડે તેવો હોતો, (પ્રતિબિમ્બિત થઈ  
જતો હોતો) તે રૈવત પર્વતની પાસે નન્દનવન નામે એક જગીચો હોતો જે બધી  
ઋતુઓમા ફૂલોથી સંપન્ન હોવાથી દર્શનીય હોતો તે નન્દનવન જગીચામા મુરપ્રિય=

सम्प्राप्त' अभिरामः=शोभा यत्र स तथा अनेकप्रकारस्तत्कस्तम्बस्त्वलावली-  
सम्प्राप्तञ्चवि', हस-मृग-मयूर-क्रोञ्च-मारस-चक्रवाकमदनगाला कोकिलकुलो-  
पपेत. हमा.=प्रमिद्धा., मृगाः=हरिणाः, मयूरा, काञ्चाः, सारसा, चक्रवाका,  
मदनगालाः=सारिखाविशेषाः, कोकिलाश्च, तेषां यत् कुल=समूहस्तेन उपपेतः=  
युक्त । अनेकनटकटङ्गविवरावग्रप्रपातप्राग्भारगिखरप्रचुर-अनेकानि तटानि=  
तीराणि नट्याः=गण्डशैलाः पर्वतात्सन्नृत्य-पतिता महापापाणा, विवराणि=  
छिद्राणि, अवग्रराः=निर्झरविशेषा, प्रपाता=भ्रगवः=गर्जरूपाणि निर्झरणजल-  
पतनस्थानानि, प्राग्भारा=ईषदवनता पर्वतप्रदेशा, गिखराणि=शृङ्गाणि, एतानि  
प्रचुराणि यत्र स तथा, अप्मरोगणदेवस्यचारणविद्यागरमिथुनसनिचीर्ण'-जम्भ  
रसा गण'=समूहः, देवसङ्घः=देवसमूहः चारणा=जङ्घाचारणादयः साधुविशेषा,  
विद्याधरमिथुनानि, तैः सनिचीर्ण अधिष्ठित, नित्यक्षणक-नित्यम्=अनवरत  
क्षण एव लक्षण=उत्सवो यत्र सः, केषामय गिरि ? इत्याह-दशार्हवरवीर-  
पुष्पत्रैलोक्यपल्लवता-दशार्हा=समुद्राद्विजयादयो दश दशार्हा, तेषु वराः=श्रेष्ठा,  
वीरपुरुषाश्च ते, त्रैलोक्य=लोकत्रये पल्लवन्तश्च अतुल्यलशालिनेमिनाथयुक्तत्वात्,  
ये ते तथा तेनाम् । शेषं सुगमम् ॥ १ ॥

मूलम्-तेषां कालेण २ अरहा अरिद्विनेमी आदिकरे दस-  
धण्ड वण्णओ जाव समोसरिए, परिसा निग्गया । तएण से

देवका सुनाया । अनन्तर समय बीतने पर रेवतीके गर्भसे एक  
कुमार पैदा हुआ, जिसका नाम निपञ्च रखा गया । वह कुमार बड़ा  
होकर महाबलके समान बहत्तर कलाश्रोमे प्रवीण हो गया । पचास  
राजकन्याआके साथ एक दिनमे उसका विवाह हुआ तथा उसको  
पचास-पचास दहेज मिला । अनन्तर पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यसे मिले  
हुए पाँचो इन्द्रियोंके सुखोंका अनुभव करता हुआ अपने महलमे  
उत्सव आदिके साथ रहने लगा ॥ १ ॥

स लण व्यु पछी समय बीतता देवतीना गर्भथी अक कुमारना जन्म थये, जेनु नाम  
निपञ्च राखवाला आ खु ते कुमार भोटो थता महाबलना जेयो मोतर कगामोभा  
प्रवाळ धरि गये पचास राजकन्याओनी साथे ओक द्विपभा तेना लग्न थया अने  
पचास पयान दहेज मल्या पछी पूर्वजन्म उपार्जित पुण्यथी भजेता पाये धन्दिथेना  
सुखोने अनुभव करता ता पोताना भडेवभा आनंद उत्सवभा रहेवा लाग्यो (१)

અન્યેષાં ચ ગૃહના રાજેશ્વર૦ યાવત્ સાર્થવાદપ્રમૃતીના વૈતાંદ્યગિરિસાગરમર્યા-  
દસ્ય દક્ષિણાર્ધભરતસ્પાધિપત્ય યાવત્ વિહરતિ । તત્ર ચલુ દ્વારાત્યા નગર્થા  
ચલદેવો નામ રાજાઽભવત્ , મહતા યાવદ્ રાજ્ય પ્રશાસદ્ વિન્રતિ । તસ્ય  
ચલુ ચલદેવસ્ય રાજ્ઞો રેવતી નામ દેવ્યભવત્ સુકુમારપાણિપાદા યાવદ્ વિદ્  
રતિ । તત્ ચલુ સા રેવતી દેવી અન્યદા પદાચિત્ તાદૃશે શયનીય યાવત્  
સિંહ સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા ચલુ પ્રતિબુદ્ધા એવ સમ્પર્શનપરિકથન, નિપથો નામ કુમારા  
જાત , યાવત્ કલા યથા મહાયલસ્ય, પશ્ચાશ્વદ્ દાયા , પશ્ચાશ્વરાજકન્યકાના  
મેઘદિવસેન પાણિ ગ્રાહયતિ, નવર નિપથો નામ યાવદ્ ઉપરિપ્રાસાદે વિહરતિ ॥૧॥

ટીકા-‘યદિ ચલુ’ इत्यादि-नानाविधगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगताभिराम-  
नानाविधा. = अनेकप्रकारां वृक्षाश्च गुच्छा = स्तम्भाश्च गुल्मा = मृत्तमाश्च  
(स्मन्धरहितास्तरय) लताः = व्रततयश्च उल्लय = उताविशेषाश्च, ताभि परिगतः =

अनेक हजार गणिकाओंके और बहुतसे राजा ईश्वर तलवार माड  
म्विक कौटुम्बिक श्रेष्ठी सेनापति सार्थवाह प्रभृतिओंके तथा वैता  
द्वयगिरि और सागरसे मर्यादित दक्षिण अर्धभरतके, ऊपर आधि-  
पत्य करते हुए विचर रहे थे ।

उस द्वारावती नगरीमें बलदेव नामक राजा थे, जो महाबली  
थे और यावत् अपने राज्यका शासन करते हुए विचर रहे थे ।  
उस बलदेव राजाकी पत्नी का नाम रेवती देवी था, जो सुकुमार  
हाथ पैरवली और सर्वार्द्ध सुन्दर थी । तथा पँचो इन्द्रियोंके अनुभव  
करती हुई विचरती थी । अनन्तर किसी समय वह रेवती देवा  
पुण्यवानके सोने लायक अपनी सुकौमल शय्यामें सोयी हुई स्वप्नमें  
सिंहको देखा और जाग गयी । स्वप्नका वृत्तांत उसने राजा बल

ગણિકાઓના, વર્ણી ધણી રાજા ઇશ્વર તલવાર માડમ્બિક કૌટુમ્બિક શ્રેષ્ઠી સેનાપતી  
માર્થવાહ આદિના તથા વૈતાંદ્યગિરિ અને સાગરથી મર્યાદિત દક્ષિણ અર્ધભરતના  
ઉપર આધિપત્ય કરતા થકા રહેતા હતા

તે દ્વારાવતી નગરીમાં બલદેવ નામે નામ હતા જે મહાબલવાન હતા અને  
પોતાના રાજ્યનું શાસન કરતા વિચરતા હતા તે બલદેવ રાજાની પત્નીનું નામ  
રેવતી દેવી હતું, જે સુકુમાર હાથપગવાળી હતી અને સર્વાંગ સુંદર હતી અને  
[એ] ઇન્દ્રિયોના સુખ અનુભવ કરતી વિચરતી હતી પછી ઘણે સમયે તે રેવતી દેવી  
પુણ્યવાન વેદોને પાઠના યોગ્ય એવી પોતાની સુકૌમલ શય્યામાં સૂતી હતી ત્યાં  
સ્વપ્નમાં સિંહ જોયો અને બહોળી ગાંધારીનું વૃક્ષ ત તેણે નામ બલદેવને કહી

सोच्चा निसम्म वदड नमंसड, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी  
सदहामि ण भते । निग्गंथं पावयणं जहा चिन्नो जाव सावग-  
धम्म पडिवज्जड, पडिवज्जित्ता पडिगए । तेण कालेण २ अरहओ  
अरिट्टनेमिस्स अतेवासी वरदत्ते नाम अणगारे उराले  
जाव विहरड । तएण से वरदत्ते अणगारे निसट कुमार  
पासड, पासित्ता जायसडे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी अहो  
ण भते । निसडे कुमारे डट्टे डट्टरूवे कते कंतरूवे एव पिए०  
मणुन्नए० मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदसणे सुरूवे ।  
निसडेणं भते । कुमारेण अयमेयारूवे माणुवड्डी किण्णा लड्डा  
किण्णा पत्ता ? पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एव खलु वरदत्ता ।  
तेण कालेण २ इहेव जवूदीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नाम  
नयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे०, मेहवन्ने उज्जाणे, मणिदत्त-  
स्स जक्खस्स जक्खाययणे । तत्थ ण रोहीडए नयरे महव्वले  
नाम राया पउमावड् नाम देवी, अन्नया कयाड तसि तारि  
सगसि सयणिज्जसि सीह सुमिणे एव जम्मण भाणियव्व  
जहा महव्वलस्स, नवर वीरगओ नामं, वत्तीसओ दाओ,  
वत्तीसाए रायवरकन्नगाण पाणि जाव उवगिज्जमाणे २ पाउ-  
सवरिसारत्तसरयहेमतवसन्तगिम्हपज्जते छप्पि उऊ जहाविभवेण  
भुजमाणे २ काल गालेमाणे इड्ड सहे जाव विहरड । तेण  
कालेण २ सिद्धत्था नाम आयरिया जाडसपन्ना जहा केसी  
नवर वहुस्सुया वहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे जेणेव मेहन्ने  
उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवा-  
गया, अहापडिरूव जाव विहरति, परिसा निग्गया । तएण

कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लच्छट्टे समाने हट्टुट्टे० कोडु-  
 वियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी खिप्पामेव देवाणु-  
 प्पिया । सभाए सुहम्माए सामुदाणिय भेरि तालेह । तएणं  
 से कोडुवियपुरिसे जाव पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए  
 जेणेव सामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त  
 सामुदाणिय भेरी महया २ सद्देण तालेइ, तएण तीसे सामु-  
 दाणियाए भेरीए महया २ सद्देण तालियाए समाणीए समु-  
 द्दविजयपामोक्खा दस दसारा देवीओ उण भाणियद्वाओ जाव  
 अणगसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा, अन्ने य वहवे  
 राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ ण्हाया जाव पायच्छित्ता  
 सबालकारविभूसिया जहा विभवइड्डिसक्कारसमुदएण, अप्पेगइया  
 हयगया जाव पुरिसवग्गुरापरिक्रिखत्ता० जेणेव कण्हे वासुदेवे  
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करतल० कण्ह वासुदेव  
 जएण विजएण वद्धावेति । तएण से कण्हे वासुदेवे कोडुं-  
 वियपुरिसे एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभि-  
 सेक्क हत्थिरयण कप्पेह हयगयरहपवरजाव पच्चप्पिणति । तएण  
 से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे, अट्टट्टमगलगा, जहा  
 कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्वयमाणेहिं २ समुद्दविजयपामीम्मेहि  
 दसारेहि जाव सत्थवाहप्पभिईहि सट्ठिं सपरिवुडे सव्विड्डीए  
 जाव रवेण वारवईनयरीमज्ज मज्जेण सेस जहा कूणिओ जाव  
 पज्जुवासइ । तएण तस्स निसढस्स कुमारस्स उप्पिं पासाय-  
 वरगयस्स तं महया जणसद्द च जहा जमाली जाव धम्म

सोच्चा निसम्म वंदड नमंसड, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी  
सदहामि ण भंते । निग्गथं पावयणं जहा चित्तो जाव सावग-  
धम्म पडिवज्जड, पडिवज्जित्ता पडिगए । तेण कालेण २ अरहओ  
अरिट्टनेमिस्स अतेवासी वरदत्ते नाम अणगारे उराले  
जाव विहरड । तएणं से वरदत्ते अणगारे निसड कुमार  
पासड, पासित्ता जायसडे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी अहो  
णं भते । निसडे कुमारे डडे डट्टरूवे कते कंतरूवे एव पिए०  
मणुन्नए० मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदसणे सुरूवे ।  
निसडेणं भते । कुमारेण अयमेयारूवे माणुवड्डी किण्णा लद्धा  
किण्णा पत्ता ? पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एव खलु वरदत्ता ।  
तेण कालेण २ इहेव जवूदीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नाम  
नयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे०, मेहवन्ने उज्जाणे, मणिदत्त-  
स्स जक्खस्स जम्खाययणे । तत्थ ण रोहीडए नयरे महव्वले  
नाम राया पउमावड् नाम देवी, अन्नया कयाड तसि तारि  
सगसि सयणिज्जसि सीह सुमिणे, एव जम्मण भाणियव्व  
जहा महव्वलस्स, नवर वीरगओ नाम, वत्तीसओ दाओ,  
वत्तीसाए रायवरकन्नगाण पाणि जाव उवगिज्जमाणे २ पाउ-  
सवरिसारत्तसरयहेमतवसन्तगिम्हपज्जते छप्पि उऊ जहाविभवेण  
मुजमाणे २ काल गालेमाणे इट्ठ सदे जाव विहरड । तेण  
कालेण २ सिद्धत्था नाम आयरिया जाडसपन्ना जहा केसी  
नवर वहुस्सुया वहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे जेणेव मेहन्ने  
उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्स जक्खस्स जम्खाययणे तेणेव उवा-  
गया, अहापडिरूव जाव विहरति, परिसा निग्गया । तएण

तस्स वीरगणस्स कुमारस्स उप्पि पासायवरगतस्स त महया  
जणसदं च जहा जमाली निग्गओ धम्म सोच्चा ज नवर  
देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा जमाली तहेव  
निकखतो जाव अणगारे जाए जाव गुत्तवभयारी । तए ण  
से वीरगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अतिए सामाइ-  
यमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहइ जाव  
चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ पणयालीस-  
वात्ताइ सामन्नपरियायं पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए  
अत्ताण झूसित्ता, सवीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता आलो-  
इयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमात्ते काल किच्चा वभलोए कप्पे  
मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थण अत्थेगइयाण  
देवाण दससागरोवमा ठिई पणत्ता । तत्थण वीरगयस्स देव-  
स्स वि दस सागरोवमा ठिई पणत्ता, से ण वीरगए देवे  
ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव अणतर चय चइत्ता  
इहेव वारवईए नयरीए वलदेवस्स रत्तो रेवईए देवीए कुच्छिसि  
पुत्तत्ताए उववन्ने । तएण सा रेवई देवी तसि तारिसगसि  
सयणिज्जसि सुमिणदसण जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ ।  
त एव <sup>एव</sup> जलु वरदत्ता । निसडेण कुमारेण अयमेयारुवा ओराला  
मणुयइड्डी लद्धा ३ । पभू ण भत्ते । निसडे कुमारे देवाणु-  
प्पियाण अंतिए जाव पवइत्तए ? हत्ता पभू । से एव भत्ते ।  
२ इय वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ २ ॥

ठाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्टनेमि. आदिकुरो  
दशधनुष्क वर्णम् यावत् समवसृत, परिपत् निर्गता । ततः खलु स कृष्णो  
वासुदेवोऽस्या. कथाया लब्धार्थं मन हृष्टतुष्ट.० कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,  
शब्दयित्वा एवमादीत्—विप्रमेय देवानुप्रियाः ! सभाया मुखर्माया सामुदा  
निकी भेरी ताडयत । तत खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रतिश्रुत्य यत्रैव  
सभाया मुखर्माया सामुदानिकी भेरी तत्रैवोपास्तिष्ठन्ति, उपागत्य ता सामु  
दानिकी भेरी मङ्गता २ शब्देन ताडयन्ति । तत खलु तस्या सामुदानिक्या  
भेरी मङ्गता २ शब्देन ताडिताया सत्या समुद्रविजयप्रभुत्वा दरा दशाह्नी,

‘तेण कालेण’ इत्यादि—

उस काल उस समयमें दस धनुष प्रमाण शरीरवाले धर्मके  
आदिकर अर्हत् अरिष्टनेमि उस द्वारका नगरीमें पधारें। परिपद  
उनके दर्शन निमित्त अपने २ घरसे निकली। भगवानके आनेका  
समाचार सुनकर कृष्ण वासुदेवने हृष्टतुष्ट हृदयसे कौटुम्बिकपुरुषोंको  
बुलवाया और इस प्रकारकी आज्ञा दी—

हे देवानुप्रिय ! शीघ्र ही जाकर सुधर्मा सभाकी सामुदानिक  
भेरीको बजाओ। जिस भेरीके बजाये जानेपर जन समुदाय एक  
त्रित हो जाय, उसे सामुदानिक भेरी कहते हैं। वासुदेव कृष्णके  
द्वारा इस प्रकार आज्ञापित वे कौटुम्बिक पुरुष उनकी आज्ञाको  
स्वीकार कर जहाँ सामुदानिक भेरी थी उबर गये, और वहाँ जाकर  
सामुदानिक भेरीको खूब जोरसे बजाया। उसको अत्यधिक जोरसे  
बजाये जानेपर समुद्रविजय प्रभुत्व दस दशाह्नीसे लेकर यावत् रुक्मिणी

‘तेण कालेण’ इत्यादि

ते काल ते समये दश धनुषना शरीरवाला प्रमाण (माप) ना शरीरवाला धर्मना  
आदिकर अर्हत् अरिष्टनेमी त द्वारका नगरीमा पधार्या परिपद तेमना दर्शन  
निमित्त येतयेताने घेथी नीकणी भगवानना आव्याना सभाया साक्षणी कृष्णवासु  
देवे हृष्ट तुष्ट हृदयथी कौटुम्बिक पुत्रोने बोवाव्या अने आ प्रकारे आज्ञा आपी

हे देवानुप्रिय ! कटकी बंधने सुधर्मा सभाकी सामुदानिक भेरी (वाणु) बजाओ  
वे भेरीने बजावथी जनसमुदाय एकत्रित थई जय तेने सामुदानिक भेरी कडे हे  
कृष्णवासुदेव तरथी आ प्रकारे आज्ञा भगता ते कौटुम्बिक पुत्र तेमनी आज्ञाने स्वीकार  
करी जया सामुदानिक भेरी हुती त्या ग । जने त्या बंधने सामुदानिक भेरी थुण  
भेरीथी बजाडी ते बहुत भेरीथी बगडवाथी समुद्रविजय प्रभुण दस दशाह्नी भाडीने





चामरैरुद्धयमानैः २ ममुद्रविजयप्रमुखै दशभिर्दशार्द्धैर्वात् सार्थवाहप्रभृतिभिः  
सार्द्धं समरिष्ठतः सर्वैरुद्धया यावत् रणेन यावत् द्वारावतीनगरीमध्यम येन जेप  
यथा कृणिको यावत् पर्युपास्ते । तत खलु तस्य निपधम्य कुमारस्योपरि  
प्रासादवरागतस्य त महाजनस्य च यथा जमालिर्थावद् धर्मं श्रुत्वा निगम्य

रोसे अलङ्कृत हो अपने आभिषेक्य हाथी पर चढ़े । और उन्हें शुभ  
शकुनके लिये आठ-आठ माङ्गलिक वस्तुएँ दिखायी गई । इसके बाद  
वह कृष्ण वामुदेव कृणिकके समान डुलाए जाते हुए श्वेतचामरोसे  
सुशोभित तथा ममुद्रविजय प्रमुख दस दशार्द्धोंसे लेकर यावत्  
साथवाह प्रभृतियोंसे घिरे हुए तथा सभी प्रकारके विभवके साथ  
भेरी आदि बाजाके शब्दोंसे दिशाको मुखरित करते हुए द्वारावती  
नगरीके बीचोबीच चलते हुए भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमिके पास  
पहुँचे । और कृणिकके समान तीनवार आदक्षिण प्रदक्षिण करके  
चन्दन नमस्कार किया और सेवा करने लगे ।

उसके बाद वह निपय कुमारने अपने उपरी महलमें शब्दा  
भिविषयोका सुखानुभव करता हुआ मनुष्योंके महान कोलाहलको  
सुना । उसे जिज्ञासा हुई कि क्या बात है ? पूछने पर उसे ज्ञात  
हुआ कि भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि यहाँ प्यारे हैं । जनता उनकी  
चन्दनोंके लिये जा रही है इमीलिये वह कोलाहल हो रहा है । वह  
जानकर जमालिके समान वह भी भगवान्के दर्शनके लिये आये,

यथै पेतान् अभिषेक्य षट् हाथी विर अउय अने तेमने शुभ शुकने भाटे आठ  
आठ माङ्गलिक वस्तुओं देखाडवाभा आवी त्याग पछी कृष्णवामुदेव कृणिकनी पेटे  
देगाध देता श्वेत चामरैथी सुशोभित तथा ममुद्रविजय प्रमुख दशदशार्द्धों भाडीने  
यावत् सार्थवाह आवीथी घे तैल तथा भेरी प्रकारना वैभव आवे, भेरी वगेरे  
वागना शब्दोंथी दिशाओंने अभरित करता हू । वती नगरीनी चन्दों-चन्दोंथी आलता  
भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमीनी पास पहुँचा अने त्रयुवा आदक्षिण प्रदक्षिण  
करीने चन्दन नमस्कार करी अने सेवा करवा लाग्ना

त्यार पछी ते निपय कुमारे पण पेताना जिया गहलमा गण्ठादि विषयोंने  
सुखानुभव करता थमा मनुष्योंने भेरी के लाहल सामर्थ्ये तेमने श्रुतासा थर्ध के  
शु वात छे ? पूछवाथी भयर पडी के भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि अर्हो पधायी  
छे अने जनता तेमना चन्दन-दर्शन भाटे जाय छे तोथी केलाहल थाय छे आ  
लाहलीने जमालीनी पेटे ते पण भगवानना दर्शन भाटे आव्या अने आदक्षिण

देव्यः पुनर्भणितव्या, यावद् अनङ्गसेनाप्रभृति अनेकानि गणिकासहस्राणि, अन्ये च महो राजेश्वरः यावत् सार्धं वाहप्रभृतयः ज्ञाताः यावत् कृतप्रायश्चित्ता सर्वालकारविभूषिता यथाविभवऋद्धिमतस्कारसमुदयेन अण्येकके हयगताः यावत् पुरुषवायुरापरिक्षिप्ता यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ररतलं कृष्ण वासुदेव जयेन विजयेन उर्द्धयति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कौटुम्भिकपुरुषानेवमवादीत्-क्षिमेव भो देवानुप्रिया ! आभिषेक्य हस्तिारत्न कल्पय वम्, हय-गज-रथ प्रवरान् यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मज्जनगृहे यावद् दूरुढ अष्टाष्टमङ्गलकानि, यथा कृष्णिकः, श्वेतर

आदि देवियाँ तथा अनङ्गसेना प्रभृति अनेक सहस्र गणिकायें और दूसरे महतसे राजा ईश्वर तलवर माडम्भिक कौटुम्भिक यानत् सार्धं वाह आदि स्नान ओर दुःस्वप्न आदिके निवारणके लिये मपी तिलक आदि करके सभी अलङ्कारोसे अलङ्कृत हो अपने २ विभवके अनुसार मत्कार सामग्रियोंके साथ घोड़े आदि सवारियों पर बैठकर अपने ० अनुचर पुरुषोंके साथ जहाँ कृष्ण वासुदेव ये वहाँ आये । वहाँ आकर हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेवको जय विजय शब्दसे बधाया । उसके बाद कृष्ण वासुदेवने अपने कौटुम्भिक पुरुषोंको बुलाकर इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! आभिषेक्य ( पट ) हस्तिारत्नको और अन्य हाथी घोड़े रथ आदिसे सजाकर ले आओ । कृष्ण वासुदेवकी ऐसी आज्ञा सुनकर वे कौटुम्भिक पुरुष शीघ्र ही हाथी घोड़े रथ आदिको सजाकर ले आये । उसके बाद कृष्ण वासुदेव मज्जनगृहमें स्नान करनेके लिये गये, स्नान कर सभी अलङ्का

इतिमष्टी आदि देवियो तथा अनङ्गसेना आदि अनेक सहस्र गणिकायो तथा भीम रोग्य धृतर, तलवर, माडम्भिक कौटुम्भिक अने सार्धं वाह आदि स्नान तथा दुस्वप्नना निवारणने भाटे मपी तिलक करीने जथा धरेष्वथी विभूषित यधने पोत-पोताना वैभव प्रभाषे सत्कार सामग्रीयो लज्जे घोडा वगेरे ठाँ सवारी करीने पोताना नोकर-याकर साथै जया कृष्णवासुदेव उता त्या आवीने हाथ नेडी कृष्ण वासुदेवने जयविजय शब्दथी वध या त्थार पछी कृष्णवासुदेवे पोताना कौटुम्भिक पुत्रोने जोलावी आ प्रकारे कहु — हे देवानुप्रिय ! आभिषेक्य ( पट ) हाथीरत्नने तथा भीम हाथी घोडा रथ आदि तैयार करी लध आवे । कृष्णवासुदेवनी ओपी आज्ञा माभणीने हे कौटुम्भिक पुत्र जलदी हाथी रथ आदिने तैयार करी लध आन्या त्थार पछी कृष्णवासुदेव स्नानध भा न्हावा गया स्नान करी जथा धरेष्वथी विभूषित

एव खलु वरदत्त ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये डैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे रोहितक नाम नगरमासीत्, ऋद्धिस्तमितसमृद्धम्० मेघवर्णमुद्यान, मणिदत्तस्य यक्षस्य यक्षायतनम् । तत्र खलु रोहितके नगरे महाबल नाम राजा, पद्मावती नाम देवी, अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे शयनीये सिंह स्वप्ने०, एव जन्म भणितव्य यथा महाबलस्य, नवर वीरगतो नाम, द्वात्रिंशद्

हे भदन्त ! इस निषध कुमारको इस प्रकारकी मनुष्य स-  
म्बन्धी ऋद्धि कैसे मिली, कैसे प्राप्त हुई, और कैसे यह ऋद्धि इसके  
भोगमें आई ? इत्यादि- गौतमने सूर्याभकी देव ऋद्धिके बारेमें जिस  
प्रकार भगवानसे पूछा था उसी प्रकार-वरदत्तने पूछा ।

भगवान कहते हैं-

हे वरदत्त । उस काल उस समयमें इसी जम्बूद्वीप नामक  
द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमें रोहितक नामक नगर था, जो कि धन  
धान्यादि ऋद्धिसे समृद्ध था । उस नगरमें मेघवर्ण नामक उद्यान  
था । उस उद्यानमें मणिदत्त नामक यक्षका एक यक्षायतन था । उस  
रोहितक नगरका राजा महाबल था । उसकी रानीका नाम पद्मावती था ।

एक समय सुकोमल शय्यापर सोयी हुई उस पद्मावती  
रानीने स्वप्नमें सिंहको देखा । अनन्तर उसके गर्भसे एक बालक  
उत्पन्न हुआ । उसका जन्म आदिका वर्णन महाबलके समान जानना  
चाहिये । उस बालकका नाम गीरङ्गत रखा गया । जब वह कुमार

हे भदन्त ! आ निषधकुमार ने आ प्रकारनी मनुष्य सगंधी ऋद्धि देरी  
रीते भणी, डेम प्रश्न थ्य, अने देरी रीते ने ऋद्धि तेमना भोगमा आवी ?

गौतमे सूर्याभनी देवऋद्धि विषे जेवी रीते भगवानने पूछथु डतु रोवी  
रीते वरदत्ते पूछथु ?

भगवाने डतु — हे वरदत्त ! ते काल ते समये आ जम्बूद्वीप नामे द्वीपनी  
अंदर भरतक्षेत्रमा रोहितक नामे नगर डतु डे जे धनधान्य ऋद्धिथी समृद्ध डतु  
ते नगरमा मेघवर्ण नामे उद्यान डतु ते उद्यानमा मणिदत्त नामे यक्षनु यक्षायतन  
डतु ते रोहितकना राजा महाबल डतो तेनी राणीनु नाम पद्मावती डतु

ओक समय सुकोमल शय्या वपर सोयी ते पद्मावती राणीओ स्वप्नमा  
सिंहने जेयो पछी तेना गर्भथी महाबल ना जेयो ओक बालक उत्पन्न थयो तेना  
जन्म आदितु वर्णन महाबल जेथु समजथु तेनु नाम वीरगत राज्यु डतु न्यारे

વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવમવાદીત-શ્રદ્ધધામિ સ્વલુ ભદન્ત !  
નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન યથા ચિત્તોં યાવત્ ધાવકુધર્મ પ્રતિપદ્યતે, પ્રતિપદ્ય પ્રતિગતઃ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયેડર્હતોડરિષ્ટનેમેરન્તેવાસી વરદત્તો નામ  
અનગાર. ઉદારો યાવદ્ વિહરતિ । તતઃ ॥ વરદત્તોડનગારો નિપદ્ય કુમાર  
પશ્યતિ, દૃષ્ટા જાતશ્રદ્ધો યાવત્ પર્યુપાસીન એવમવાદીત-અહો ! સ્વલુ ભદન્ત !  
નિપદ્ય. કુમાર ઇષ્ટ ઇષ્ટરૂપઃ કાન્તઃ કાન્તરૂપઃ, એવ પ્રિયોં મનોજ્ઞોં મનોડમો  
મનોડમરૂપ. સોમઃ સામરૂપઃ પ્રિયદર્શન. સુરૂપ । નિપદ્યેન ભદન્ત ! કુમારેણ  
અયમેતદ્રૂપા માનુષ્યઋદ્ધિઃ કથ લબ્ધા ? કથ પ્રાપ્તા ? પૂન્નઞ યથા સૂર્યામસ્ય ।

और आदक्षिण प्रदक्षिण करके वन्दन नमस्कार किया । अनन्तर धर्म  
सुनकर उसे हृदयसे अवधारण कर वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार  
कहने लगा-हे भदन्न ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ ।  
इसके बाद वह चित्त प्रधानके समान यावत् आवक धर्मको स्वीकार  
कर अपने घर लौट आया ।

उस काल उस समयमें अर्हत् अरिष्टनेमिके अन्तेवासी उदार  
प्रधान ओजस्वी वरदत्त नामके अनगार धर्मध्यान करते हुए एका-  
न्तमें बैठे थे । भगवान्‌के समीप आवे हुए निपद्य कुमारको देखकर  
उन्हें श्रद्धा जिज्ञासा और कौतूहल उत्पन्न हुआ और उन्होंने भग-  
वानसे इस प्रकार पूछा—

हे भदन्त ! वह निपद्य कुमार इष्ट है, इष्टरूप है, कान्त है,  
कान्तरूप है । इसी तरह प्रिय है मनोज्ञ है मनोऽम (मनको अच्छा  
लगनेवाला) है, सोम है, सोमरूप है, प्रियदर्शन है, सुरूप है ।

પ્રદક્ષિણા કરીને વદન નમસ્કાર કર્યા પછી ધર્મનું શ્રવણ કરી તેને હૃદયમાં અવધારણ  
કરીને વદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે કહ્યું —

હે ભદ ત ! હું નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર શ્રદ્ધા રાખું છું ત્યાર પછી તે ચિત્ત  
પ્રધાનની પેઠે આવક ધર્મને સ્વીકાર કરીને પેતાને ઘેર પાછો આવ્યો.

તે કાળ તે મગધે અર્હત અરિષ્ટનેમિના આ તેવાસી ઉદાર પ્રધાન ઓજસ્વી  
વદત્ત નામે અનગાર ધર્મધ્યાન કરતા એકાન્તમાં બેઠા હતા ભગવાનની પાસે આવેલા  
નિપદ્યકુમાર ને જોઈને તેને જિજ્ઞાસા અને કૌતુહલ ઉત્પન્ન થયું અને ભગવાનને  
આ પ્રમાણે પૂછ્યું --હે ભદ ત ! નિપદ્યકુમાર ઇષ્ટ છે ઇષ્ટરૂપ છે, કાન્ત છે,  
કાન્તરૂપ છે, મનોજ્ઞ છે, મનોઽમ છે, મોમ છે, મોમરૂપ છે પ્રિયદર્શન છે, સુરૂપ છે

एव खलु वरदत्त ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे रोहितक नाम नगरमासीत्, ऋद्धिस्तमितसमृद्धम्० मेघवर्णमुद्यान, मणिदत्तस्य यक्षस्य यक्षायतनम् । तत्र खलु रोहितके नगरे महाबल नाम राजा, पद्मावती नाम देवी, अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशे शयनीये सिंह स्वप्ने०, एव जन्म भणितव्यं यथा महाबलस्य, नवर वीरगतो नाम, द्वार्त्रिशद्

हे भदन्त ! इस निपथ कुमारको इस प्रकारकी मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि कैसे मिली, कैसे प्राप्त हुई, और कैसे यह ऋद्धि इसके भोगमें आई ? इत्यादि— गौतमने सूर्याभकी देव ऋद्धिके बारेमें जिस प्रकार भगवानसे पूछा था उसी प्रकार—वरदत्तने पूछा ।

भगवान कहते हैं—

हे वरदत्त । उस काल उस समयमें इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर भरत क्षेत्रमें रोहितक नामक नगर था, जो कि धन धान्यादि ऋद्धिसे समृद्ध था । उस नगरमें मेघवर्ण नामक उद्यान था । उस उद्यानमें मणिदत्त नामक यक्षका एक यक्षायतन था । उस रोहितक नगरका राजा महाबल था । उसकी रानीका नाम पद्मावती था ।

एक समय सुकोमल शय्यापर सोयी हुई उस पद्मावती रानीने स्वप्नमें सिंहको देखा । अनन्तर उसके गर्भसे एक बालक उत्पन्न हुआ । उसका जन्म आदिका वर्णन महाबलके समान जानना चाहिये । उस बालकका नाम गीरदत्त रखा गया । जब वह कुमार

हे भदन्त ! आ निपथकुमार ने आ प्रकारनी मनुष्य सग वी ऋद्धि डेरी रीने भणी, डेम प्रश्न थर, अने डेरी रीते ते ऋद्धि तेभना भोगमा आवी ?

गौतमे सूर्याभनी देवऋद्धि विषे जेवी रीते भगवानने पूछ्यु छु तेवी रीते वरदत्ते पूछ्यु ?

भगवाने छु — हे वरदत्त ! ते काल ते समये आ जम्बूद्वीप नामे द्वीपनी अदर भरतक्षेत्रमा रोहितक नामे नगर छु डे जे धनधान्य ऋद्धिथी समृद्ध छु ते नगरमा मेघवर्ण नामे उद्यान छु ते उद्यानमा मणिदत्त नामे यक्षनु यक्षायतन छु ते रोहितकने राजा महाबल छुते तेनी राणीनु नाम पद्मावती छु

जेक समय सुकोमल शय्या उपर सोखी ते पद्मावती राणीजे स्वप्नमा सिंहने जेथे पछी तेना गर्भथी महाबल ना जेथे जेक बालक उत्पन्न थये तेना जन्म आदित् वरुन महाबल जेवु समज्जु तेनु नाम वीरगत राष्ट्र छु न्यादे

પ્રતિક્રાન્તઃ સમાધિપ્રાપ્તઃ કાલમાસે કાલકૃત્વા બ્રહ્મલોકે રૂપે મનૌરમે વિમાને  
 દેવતયા ઉપપન્ન. । તત્ર સ્વલુ અસ્ત્યેકેપા દેવાના દશસાગરોપમા સ્થિતિઃ  
 પ્રજ્ઞતા । તત્ર સ્વલુ વીરગતસ્થ દેવસ્યાપિ દશસાગરોપમા સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા । સ  
 સ્વલુ વીરગતો દેવસ્તસ્માદ્ દેવલોકાત્ આયુઃક્ષયેણ યાવદ્ અનન્તર ચય ન્યુત્વા  
 ઇદૈવ દ્વારાવત્યા નગર્યા પલદેવસ્ય રાજો રેવત્યા દેવ્યા કુક્ષૌ પુત્રતયોપપન્ન ।  
 તતઃ સ્વલુ સા રેવતી દેવી તસ્મિન્ તાદૃશે શયનીયે સ્વપ્નદર્શન યાવદ્ ઉપરિ  
 પ્રાસાદવરગતો વિહરતિ । તદેવ સ્વલુ વરદત્ત ! નિપથેન કુમારેણ હ્યમેતદ્રૂપા  
 ઉદારા મનુષ્ય-ઋદ્ધિર્લભ્યા ૩ । પ્રમુ' સ્વલુ મદન્ત ! નિપથઃ કુમારો દેવાનુ-  
 મિયાણામન્તિકે યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ ? ઇન્ત પ્રમુ' । સ એવ મદન્ત ! ૨ ઇતિ  
 વરદત્તોઽનગારો યાત્રાત્માન ભાવયન્ વિહરતિ ॥ ૨ ॥

ટીકા-‘તેણ કાલેણ’ ઇત્યાદિ । વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા ॥ ૨ ॥

નોંકી આલોચના ઔર પ્રતિક્રમણ કર સમાધિ પ્રાપ્ત હો કાલ અવ  
 સરમેં કાલ કર બ્રહ્મ નામક પાચવેં દેવલોકકે મનોરમ વિમાનમેં  
 દેવતા હોકર ઉત્પન્ન હુએ । વહેં કઈ એક દેવોંકી સ્થિતિ દસ સાગ-  
 રોપમ હૈ, વહેં હસ વીરજ્ઞત દેવકી મી સ્થિતિ દશ સાગરોપમ થી ।  
 વહ વીરજ્ઞત દેવ દેવસમ્યન્ધી આયુ મવ ઔર સ્થિતિકે ક્ષય હોનેપર  
 હસ બ્રહ્મલોકસે વ્યવકર હસ દ્વારાવતી નગરીમે રાજા બલદેવકી  
 પત્ની રેવતીકે ઉદરમે પુત્ર હોકર જન્મે । હસ રેવતી દેવીને સ્વપ્નમેં  
 સિદ્ધ દેખા । ઔર હસકે વાદ યહ નિપથ કુમાર ઉત્પન્ન હુએ યાવત્  
 શબ્દાદિ વિષયોંકા અનુભવ કરતે હુએ અપને ઊપરી મહલમે વિચર  
 રહે હે । હે વરદત્ત ! હસ પ્રકાર હસ નિપથ કુમારને હસ પ્રકારકી  
 ઉદાર મનુષ્યઋદ્ધિ પાધી હૈ ।

આલોચના તથા પ્રાતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત થતા કાળ અવસરમા કાળ કરીને  
 બ્રહ્મનામક પાચમા દેવલોકના મનોરમ વિમાનમા દેવતા થઇને ઉત્પન્ન થયા ત્યા કેટ-કે  
 દેવોની સ્થિતિ દશ સાગરોપમની છે ત્યા વીરગતદેવ ની પણ સ્થિતિ દશ સાગરોપમની  
 હતી તે વીરગતદેવ દેવ સમ્યન્ધી આયુષ્ય ભવ અને સ્થિતિ ક્ષય થવાથી તે બ્રહ્મ  
 લોકમાથી સ્વપ્નને આ દ્વારાવતી નગરીમા રાજા બલદેવની પત્ની રેવતીના ઉદરમા પુત્ર  
 થઇને જન્મ્યા તે રેવતી દેવીએ સ્વપ્નમા સિદ્ધને દીઠો અને ત્યાર પછી આ નિપથકુમાર  
 ઉત્પન્ન થયા અને યાવત શબ્દાદિ વિષયોને અનુભવ કરતા તે પોતાના મહેલના ઉપર  
 માળે રહેવા લાગ્યા હે વરદત્ત ! આ પ્રકારે આ નિપથકુમાર ને આવા પ્રકારની ઉદાર  
 મનુષ્ય ઋદ્ધિ મળેલી છે

मूलम्—तएणं अरहा अरिट्टिनेमी अण्णया कयाइ वारवईओ  
नयरीओ जाव वहिया जणवयविहारं विहरइ । निसढे कुमारे  
समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ । तएणं  
से निसढे कुमारे अण्णया कयाइं जेणेव पोसहसाला तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव दब्भसथारोवगए विहरइ । तएण  
निसढस्स कुमारस्य पुव्वरत्तावरत्तं० धम्मजागरिय जागरमाणस्स  
इमेयारूवे अज्झत्थिए० धन्ना णं ते गामागर जाव सनिवेसा  
जत्थणं अरहा अरिट्टिनेमी विहरइ । धन्ना णं ते राईसर जाव  
सत्थवाहपभईओ जे णं अरिट्टिनेमि वदति नमंसंति जाव  
पज्जुवासति, जइ ण अरहा अरिट्टिनेमी पुव्वाणुपुव्वि० नंदणवणे  
विहरेज्जा तोण अह अरह अरिट्टिनेमि वदिज्जा जाव पज्जुवा-

वरदत्त पूछते है—

हे भदन्त ! क्या यह निषधकुमार आपके समीप प्रव्रजित होगा ?

भगवान कहते हैं—

हाँ, वरदत्त ! यह निषधकुमार अनगर घन सकेगा ।

वरदत्त कहते हैं—

हे भदन्त ! आप जो कहते हैं वह सत्य ही है, ऐसा कह कर  
वरदत्त अनगर आत्माको तप समयसे भावित करते हुए विचरने  
लगे ॥ २ ॥

वरदत्त पूछे छे—

छे भदन्त ! आ निषधकुमार आपनी यासे प्रव्रजित थवामा समर्थ छे ?

भगवान कहे छे—

छे वरदत्त ! हाँ, आ निषधकुमार अनगर घनवामा समर्थ छे

वरदत्त कहे छे—

छे भदन्त ! आप कहे छे तेभज छे जेभ जहीने वरदत्त अनगर आत्माने



પ્રતિક્રાન્તઃ સમાધિપ્રાપ્તઃ કાલમાસે કાલકૃત્વા બ્રહ્મલોકે કલ્પે મનોરમે વિમાને  
 દેવતયા ઉપપન્નઃ । તત્ર સ્વલુ અસ્ત્યેકેષા દેવાના દશસાગરોપમા સ્થિતિઃ  
 પ્રજ્ઞપ્તા । તત્ર સ્વલુ વીરગતસ્ય દેવમ્યાપિ દશસાગરોપમા સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા । સ  
 સ્વલુ વીરગતો દેવસ્તસ્માદ્ દેવલોકાત્ આયુઃક્ષયેણ યાવદ્ અનન્તર ચય ન્યુત્વા  
 ઈદૈવ દ્વારાવત્યા નગર્યાં વલદેવસ્ય રાજ્ઞો રેવત્યા દેવ્યાઃ કુક્ષૌ પુત્રતયોપપન્ન ।  
 તતઃ સ્વલુ સા રેવતી દેવી તસ્મિન્ તાદૃશો જયનીયે સ્વપ્નદર્શન યાવદ્ ઉપરિ  
 પ્રાસાદવરગતો વિહરતિ । તદેવ સ્વલુ વરદત્ત ! નિપથેન કુમારેણ હ્યમેતદ્વૃષ્ણ  
 ઉદારા મનુષ્ય-ઋદ્ધિર્લભ્યા ૩ । પ્રશ્નઃ સ્વલુ મદન્ત ! નિપથઃ કુમારો દેવાનુ-  
 પ્રિયાણામન્તિકે યાવત્ મવ્રજિતુમ્ ? હન્ત પ્રશ્નઃ । સ એવ મદન્ત ! ૨ इति  
 વરદત્તોઽનગારો યાત્રદાત્માન ભાવયન્ વિહરતિ ॥ ૨ ॥

ટીકા-‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि । व्याख्या स्पष्टा ॥ २ ॥

નોકી આલોચના ઓર પ્રતિક્રમણ કર સમાધિ પ્રાપ્ત હો કાલ અવ  
 સરમેં કાલ કર બ્રહ્મ નામક પાચવેં દેવલોકકે મનોરમ વિમાનમેં  
 દેવતા હોકર ઉત્પન્ન હુણ । વહૈં કઈં એક દેવોકી સ્થિતિ દસ સાગ-  
 રોપમ હૈ, વહૈં હસ વીરજ્ઞત દેવકી ખી સ્થિતિ દશ સાગરોપમ થી ।  
 વહ વીરજ્ઞત દેવ દેવસમ્બન્ધી આયુ ભવ ઓર સ્થિતિકે ક્ષય હોનેપર  
 હસ બ્રહ્મલોકસે વ્યવકર હસ દ્વારાવતી નગરીમે રાજા વલદેવકી  
 પત્ની રેવતીકે ઉદરમે પુત્ર હોકર જન્મે । હસ રેવતી દેવીને સ્વપ્નમે  
 સિંહ દેખા । ઓર હસકે બાદ યહ નિપથ કુમાર ઉત્પન્ન હુણ યાવત્  
 શબ્દાદિ વિષયોકા અનુભવ કરતે હુણ અપને ઊપરી મહલમે વિચર  
 રહે હૈ । હે વરદત્ત ! હસ પ્રકાર હસ નિપથ કુમારને હસ પ્રકારકી  
 ઉદાર મનુષ્યઋદ્ધિ પાચી હૈ ।

આલોચના તથા પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિ પ્રાપ્ત થતા કાળ અવસરમા કાળ કરીને  
 બ્રહ્માનામક પાચમા દેવલોકના મનોરમ વિમાનમા દેવતા થઇને ઉત્પન્ન થયા ત્યા કેન્દ્ર-1ક  
 દેવોની સ્થિતિ દશ સાગરોપમની છે ત્યા વીરગતદેવ ની પણ સ્થિતિ દશ સાગરોપમની  
 હતી તે વીરગતદેવ દેવ સળખી આયુષ્ય ભવ અને સ્થિતિ ક્ષય થવાથી તે બ્રહ્મ  
 લોકમાથી સ્થવીને આ દ્વારાવતી નગરીમા રાજા વલદેવની પત્ની રેવતીના ઉદરમા પુત્ર  
 થઇને જન્મ્યા તે રેવતી દેવીએ સ્વપ્નમા સિંહને દીઠો અને ત્યાર પછી આ નિપથકુમાર  
 ઉત્પન્ન થયા અને યાવત શબ્દાદિ વિષયોનો અનુભવ કરતા તે પોતાના મહેલના ઉપલે  
 માળે નહિવા લાગ્યા હે વરદત્ત ! આ પ્રકારે આ નિપથકુમાર ને આવા પ્રકારની ઉદાર  
 મનુષ્ય ઋદ્ધિ મળેલી છે

कालमासे काल किञ्चा उड्डु चदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं  
 सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिण्णि य अट्टारसुत्तरे गेविज्जि-  
 माणावाससए वीहवयित्ता सब्बट्टसिद्धविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।  
 तत्थ ण देवाणं तेत्तीस सागरोवमा ठिडं पण्णत्ता । तत्थ णं  
 निसदस्स वि देवस्स तेत्तीस सागरोवमाडि ठिडं पन्नत्ता । से  
 ण भते । निसदे देवे ताओ देवलोगाओ आउम्भक्खणं भव-  
 क्खण्ण ठिडक्खण्णं अणतर चय चडत्ता कहिं गच्छिहिड ?  
 कहि उववज्जिहिड ? वरदत्ता । इहेव जंवूदीवे दीवे महाविदेहे  
 वासे उन्नाए नयरे विसुद्धपिडवसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिड  
 तएण से उम्मुक्कवालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते  
 तहारूवाण थेराण अतिए केवलवोहिं बुज्झिहिड, बुज्झित्ता  
 अगाराओ अणगारिय पव्वज्जिहिड । से ण तत्थ अणगारे भवि-  
 स्सडि इरियासमिए जाव गुत्तवभयारी । से णं तत्थ वहुड  
 चउत्थल्लट्टुमदसमदुवालसेहिं मासड्ढमासखमणेहिं विचित्तेहिं  
 तवोरुम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे वहुड वासाड सामण्णपरियाग  
 पाउणिस्सडि, पाउणित्ता मासियाए सलेट्ठणाए अत्ताण झूसि-  
 हिड, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताड अणसणाए छेदिहिड । जस्सट्ठाए  
 कीरड णगभावे मुडभावे अण्हाणए जाव अदत्तवणए अल्ल-  
 त्ताए अणोवाट्ठणए फलट्ठेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए वभचेरवासे  
 परघरपवेसे पिडवाओ लट्ठावलछे उच्चावया य गामकट्टया  
 अहियासिज्जडि, तमट्ट आराहिड, आराहित्ता, चरिमेहिं उस्सासनि-  
 स्सासेहिं सिज्झिहिड बुज्झिहिड जाव सव्वदुम्भवाणं अंत काहिड ।  
 एव खल्ल जव्व । समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण  
 जाव निम्मेवओ ॥ ३ ॥

सिजा । तएण अरहा अरिट्टिनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमे-  
 यारूव अज्झत्थिय जाव वियाणित्ता अट्टारसहि समणसहस्सेहि  
 जाव नदणवणे उज्जाणे समोसढे । परिसा निग्गया । तएण  
 निसढे कुमारे इमीसे कहाए लच्छढे सभाणे हट्ट० चाउग्घटेणं  
 आसरहेणं निग्गए, जहा जमाली, जाव अन्मापियरो आपु-  
 च्छित्ता पव्वडए, अणगारे जाते जाए गुत्तवभयारी । तएण से  
 निसढे अणगारे अरहतो अरिट्टिनेमिस्स तहारूवाण थेराण  
 अंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ अहिज्जित्ता  
 वट्टइ चउत्थछट्ट जाव विचिनेहि तवोरुम्मेहि अप्पाण भावे-  
 माणे बहुपडिपुण्णाइ नव वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ,  
 वायालीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, आलोइयपडिक्कते सामा-  
 हिपत्ते अणुपुवीए कालगए । तएण से वरदत्ते अणगारे निसढ  
 अणगार कालगत जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्टिनेमी तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव एव वयासी एव खल्लु देवाणु-  
 प्पियाण अतेवासी निसढे नाम अणगारे पगइभदए जाव  
 विणीए, से ण भते । निसढे अणगारे कालमासे काल किच्चा  
 कहि गए ? कहि उववन्ने ? वरदत्ताइ । अरहा अरिट्टिनेमी वर-  
 दत्त अणगारं एवं वयासी—एव खल्लु वरदत्ता । मम अंतेवासी  
 निसढे नाम अणगारे पगइभदे जाव विणीए मम तहारूवाणं  
 थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता  
 बहुपडिपुण्णाइ नववासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता वाया-  
 लीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कते सामाहिपत्ते

कालमासे काल किञ्चा उड्डु चदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं  
 सोहम्मीसाण जाव अञ्चुते तिण्णि य अट्टारसुत्तरे गेविज्जवि-  
 माणावाससए वीहवयित्ता सब्बट्टुसिद्धविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।  
 तत्थ ण देवाण तेत्तीस सागरोवमा ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं  
 निसदस्स वि देवस्स तेत्तीस सागरोवमाड ठिइ पन्नत्ता । से  
 ण भंते । निसदे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भव-  
 क्खएणं ठिइक्खएण अणत्तर चय चडत्ता कहिं गच्छिहिइ ?  
 कहि उववज्जिहिइ ? वरदत्ता । इहेव जंवूदीवे दीवे महाविदेहे  
 वासे उन्नाए नयरे विमुद्धपिडवसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ  
 तएण से उम्मुक्कवालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते  
 तहारूवाण थेराण अंतिए केवलवोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झित्ता  
 अगाराओ अणगारिय पव्वज्जिहिइ । से ण तत्थ अणगारे भवि-  
 स्सइ इरियासमिए जाव गुत्तवभयारी । से ण तत्थ वहुइ  
 चउत्थछट्टुमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहिं  
 तवोरुम्मेहि अप्पाण भावेमाणे वहुइ वासाड सामण्णपरियाग  
 पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसि-  
 हिइ, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदिहिइ । जस्सट्टाए  
 कीरइ णग्गभावे मुडभावे अण्हाणए जाव अदतवणए अच्छ-  
 त्तए अणोवाट्ठेणए फलहसेज्जा कट्टुसेज्जा केसलोए वभचेरवासे  
 परघरपवेसे पिडवाओ लद्धावलद्धे उच्चावया य गामकटया  
 अहियासिज्जइ, तमट्टु आराहिइ, आराहित्ता, चरिमेहि उस्सासनि-  
 स्सासेहिं सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव सब्बदुक्खाणं अत काहिइ ।  
 एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं  
 जाव निम्बेवओ ॥ ३ ॥

पढम अज्झयण समत्त ॥ १ ॥

છાયા—તતઃ સ્વલ્લુ અર્હન્ અરિષ્ટનેમિરન્યદા કદાચિત્ દ્વારાવત્યા નગર્યાં  
યાવત્ બહિર્જનપદવિહાર વિહરતિ । નિપધ. કુમારઃ શ્રમણોપાસકો જાતઃ અભિ  
ગતજીવાજીવો યાવદ્ વિહરતિ । તતઃ સ્વલ્લુ સ નિપઃ કુમારઃ અન્યદા કદા  
ચિત્ યત્ર પોપધશાલા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય યાવદ્ ધર્મસસ્તારોપગતો  
વિરહતિ । તતઃ સ્વલ્લુ તસ્ય નિપઃસ્ય કુમારસ્ય પૂર્વરાત્રાપસાત્રકાલે ધર્મજાગ  
રિકા જાગ્રતોઽયમેતદ્રૂપઃ આખ્યાત્મિકઃ—ગ્ન્યાઃ સ્વલ્લુ તે ગ્રામાગર યાવત્ સન્નિ-  
વેશાઃ, યત્ર સ્વલ્લુ અર્હન્ અરિષ્ટનેમિર્વિહરતિ, ધન્યા. સ્વલ્લુ તે રાજેશ્વર યાવત્  
સાર્થવાહપ્રભૃતિકાઃ, યે સ્વલ્લુ અરિષ્ટનેમિં ચન્દન્તે નમસ્યન્તિ યાવત્૦ પર્યુપાસતે,

‘તત્ત્વણ અરહા’ ઇત્યાદિ—

ઉસકે બાદ અર્હત્ અરિષ્ટનેતિ એક સમય દ્વારાવતી નગરીસે  
નિકલકર જનપદ=દેશમેં વિહાર કરને લગે । ‘નિપધકુમાર’ શ્રમણો  
પાસક હો ગયે ઓર વહ જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોંકો જાનકર વિચરને  
લગે । ઉસકે બાદ વહ નિપધકુમાર એક સમય જહાં પોપધશાલા થી  
વહાં ગયે ઓર વહાં દામકા આસનપર વેઠકર ધર્મધ્યાન કરતે હુણ  
વિચરને લગે । ઉસકે બાદ રાત્રિકે અન્તિમ પ્રહરમે ધર્મ જાગરણા કરતે  
હુણ ઉસ ‘નિપધકુમાર’ કે હૃદયમેં ઇસ પ્રકારકા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ  
કિ વહ ગ્રામ યાવત્ સન્નિવેશ ધન્ય હૈ જહાં અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન્  
વિચરતે હૈં ! બે રાજા ઈશ્વર તલવર માહમ્બિક યાવત્ સાર્થવાહ પ્રભૃતિ  
ધન્ય હૈ જો ભગવાનકો વન્દન નમસ્કાર કરતે હૈં ઓર સેવા કરતે હૈં ।

‘તત્ત્વણ અરહા’ ઇત્યાદિ

ત્યાર પછી અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ એક સમય દ્વારાવતી નગરીથી નીકળીને  
દેશમા વિચરવા લાગ્યા નિપધકુમાર શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને તે જીવ અજીવ  
આદિ તત્ત્વોંકો જાનકર વિચરવા લાગ્યા ત્યાર પછી તે નિપધકુમાર એક વખત જ્યા  
પોપધશાળા હતી ત્યાં ગયા અને ત્યાં દામકા આસન (આસન) બિછાવી તેના પર  
એસી ધર્મધ્યાન કરતા વિચરવા લાગ્યા ત્યાર પછી પાછલી રાત્રિએ ધર્મ-જાગરણ  
કરતા તે નિપધકુમાર ના મનમા એવો વિચાર પેદા થયો કે તે ગ્રામ સનિવેશ  
આદિ ધન્ય છે કે જ્યાં અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન વિચરે છે તે રાજા ઈશ્વર,  
તલવર, માહમ્બિક, કૌટુંબિક યાવત્ સાર્થવાહ આદિ ધન્ય છે બે ભગવાનને વન્દન  
નમસ્કાર કરે ૪

यदि खलु अहंन् अरिष्टनेमिः पूर्वानुपूर्वी० नन्दनवने विहरेत् तर्हि खलु अह-  
महन्तमरिष्टनेमिं वन्देय नमस्येय यावत् पर्युपासीय । ततः खलु अहंन् अरिष्ट-  
नेमिः निपथस्य कुमारस्य इममेतद्रूपमाध्यात्मिक यावद् विज्ञाय अष्टादशभिः  
श्रमणसहस्रं, यावद् नन्दनवने उद्याने समवस्रतः, परिपद् निर्गता । तत  
खलु निपथः कुमार अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् हृष्ट० चातुर्गुण्डेन अश्वरथेन  
यावद् निर्गतः, यथा जमालि, यावद् अम्बापितरौ आशुच्छय प्रव्रजितः,  
अनगारो जातो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । ततः खलु स निपथोऽनगारः अहंतो-  
रिष्टनेमेस्तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि जग्गीते,

यदि अहंत् अरिष्टनेमि भगवान् पूर्वानुपूर्वी विचरते हृष्ट नन्दन  
वनमें पधारें तो मैं भी भगवानको चन्दन नमस्कार करूँ और उनकी  
सेवा करूँ । उसके बाद भगवान् अहंत् अरिष्टनेमि उस 'निपथकुमार'  
के इस प्रकारका आध्यात्मिक=अन्तःकरणका विचार जानकर, अठारह  
हजार श्रमणोंके साथ उस नन्दनवन उद्यानमें पधारे । भगवानके  
दर्शनके लिए परिपद् अपने ० घरसे निकली । उसके बाद 'निपथकुमार'  
भी इस वृत्तान्तको जानकर हृष्ट तुष्ट हृदयसे चार घटावाला अश्वर-  
थपर चढ़कर भगवानका दर्शनके लिये निकले, और जमालिके समान  
यावत् माता पिताकी आज्ञासे प्रव्रजित होकर अनगार हो गये । तथा  
ईर्ष्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हो गये । उसके  
बाद वह निपथ अनगार अहंत् अरिष्टनेमि भगवानके तथारूप स्था-  
विरोंके समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया तथा

जो अहंत् अरिष्टनेमि भगवान् पूर्वानुपूर्वी विचरता नन्दनवनमा पधारे  
तो हु पछ भगवानने वदन नमस्कार कइ अने तेमनी सेवा कइ, त्थार पछी  
भगवान् अहंत् अरिष्टनेमि ते निपथकुमार ना आ प्रकारना आध्यात्मिक=अन्तः  
करणका विचार आदि जालीने अठार हजार श्रमणोनी साथे ते नन्दनवन उद्यानमा  
पधार्या भगवानना दर्शन करवा भाटे परिपद् पोतपोताने घेरथी नीकणी त्थार पछी  
निपथकुमार पछु आ वृत्तान्तने जालीने हृष्ट तुष्ट हृदयथी आर घटावाणा अश्व-  
रथ उपर चडीने भगवानना दर्शन करवा नीकण्या अने जमालीनी पेठे मातापितानी  
आज्ञाथी प्रव्रजित थधने अनगार थर्ष गया तथा ईर्ष्यासमिति आदिथी युक्त थर्ष  
गुप्तब्रह्मचारी बनी गया त्थार पछी ते निपथ अनगारे अहंत् अरिष्टनेमि भग-  
वानना तथारूप स्थविराणी पासे सामायिक आदि अगीथार अंगोनु अध्ययन कथु

अधीत्य बहुनि चतुर्थं षष्ठं यावद् विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् बहु  
प्रतिपूर्णानि नव वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, चत्वारिंशद् भक्तानि अनशनं  
उिनत्ति, आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः आनुपूर्व्यां कालगतः । ततः खलु  
स वरदत्तोऽनगारो निषधमनगारं कालगतं ज्ञात्वा यत्र अहं अरिष्टनेमिस्तत्रै-  
वोपागच्छति, उपागत्य यावद् एमयादीत्-एव खलु देवानुमियाणामन्तेवासी  
निषधो नाम अनगारः प्रकृतिभद्रो यावद् विनीतः । स खलु भदन्त !  
निषधोऽनगारः कालमासे कालं कृत्वा वरं गतः ? क्व उपपन्नः ? वरदत्त !  
इति अहं अरिष्टनेमि, वरदत्तमनगारमेमयादीत्-एव खलु वरदत्त ! ममान्ते-  
वासी निषधो नाम अनगारः प्रकृतिभद्रो यावद् विनीतो मम तथारूपाणां  
स्थविराणामन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अग्रेत्य बहुप्रतिपूर्णानि नव

वहुतसे चतुर्थं षष्ठं अष्टम आदि विचित्र तपसे आत्माको भावित  
करते हुए पूरे नौ वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन किया । बयालीस  
भक्तोंको अनशनसे छेदनकर पापस्थानोंकी आलोचना और प्रतिक्रमण  
कर समाधि प्राप्त हो, क्रमसे काल प्राप्त हुए । उसके बाद निषध  
अनगारको कालगत जानकर वरदत्त अनगार जहाँ अहं अरिष्टनेमि  
थे वहाँ आये और वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार पूछे-हे भदन्त !  
आपके अन्तेवासी निषध अनगार प्रकृतिभद्रक ओर यावत् विनीत थे,  
सो हे भदन्त ! वह निषध अनगार काल अवसरमें कालकर कहाँ  
गये और कहाँ उत्पन्न हुए ? वरदत्त अनगारका इस प्रकार बचन  
सुनकर भगवानने उनसे कहा—

हे वरदत्त ! मेरा अन्तेवासी प्रकृतिभद्रक यावत् विनीत निषध

तथा धर्मा चतुर्थं, षष्ठं, अष्टम आदि विचित्र तप वडे आत्माने भावित करता पूरा  
नव वर्ष मुधी शिक्षा पर्यायनु पालन करुं गेतालीस भक्तोनु अनशनथी छेदन करी  
पापस्थानोनी आलोचना तथा प्रतिक्रमण करी समाधि प्राप्त यता आनुपूर्वीं काल  
गत यथा त्थार पछी निषध अनगारने कालगत थयेला जखणीने वरदत्त अनगार  
जया अहं अरिष्टनेमि हुता त्या आप्या अने वदन नमस्कार करी आ प्रकारे  
पूछ्यु -हे भदन्त ! आपना अ तेवासी निषध अनगार प्रकृतिभद्रक अने जहुं विनीत  
हुता मा? हे भदन्त ! ते निषध अनगार काण अवसरमा काण करीने क्या गया  
अने क्या जन्ने रे ? वरदत्त अनगारना आ प्रकारना बचन साबणीने लगवाने तेने कहुं -  
हे वरदत्त ! मेरा प्रकृतिभद्रक अ तेवासी अने विनीत जेवा निषध अनगार

गर्वाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा द्विचत्वारिंशद् भक्तानि अनशनेन छित्वा  
आलोचितप्रतिक्रान्तः समाप्तिप्राप्त कालमासे काल कृत्वा ऊर्ध्वं चन्द्र-सूर्य-  
ग्रह-नक्षत्र-तारारूपाणा सौधर्मेशान० यावद् अन्युत त्रीणि च अष्टादशोत्तराणि  
त्रैवेयकविमानावासगतानि व्यतिवर्त्य सर्वार्थसिद्धविमाने देवत्वेनोपपन्नः । तत्र  
खलु देवाना त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमा स्थितिः प्रज्ञप्ता । तत्र खलु निपधस्यापि  
देवस्य त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु भदन्त ! निपधो  
देवस्तस्माद् देवल्लोकाद् आयुक्षये भवक्षयेण स्थितिक्षयेण अनन्तरं वयं च्युत्वा  
क्व गमिष्यति ? क्व उपपत्स्यते ? वरदत्त ! इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे

अनगर मेरे तथारूप स्थितिरोंके समीप सामयिक आदि ग्यारह अगोका  
अध्ययनकर पूरे नौ वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालनकर बयालीस  
भक्तोका अनशनसे छेदनकर पापस्थानोकी आलोचना और प्रतिक्रम  
णकर समाधि प्राप्त हो काल अवसरमे कालकर चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र  
तारा आदिसे ऊपर सौधर्म ईशान आदि यावत् अच्युत देवलोकको  
उल्लङ्घन कर तीनसौ अठारह त्रैवेयक विमानावासको भी उल्लङ्घन  
करता हुआ सर्वार्थसिद्ध विमानमे देवता होकर उत्पन्न हुआ । वहाँ  
देवताओंकी स्थिति तैत्तीस सागरोपम है । उसी प्रकार निपध देवकी  
भी तैत्तीस सागरोपम स्थिति है ।

वरदत्त पूछते हैं—हे भदन्त ! वह निपध देव उम देवलोकसे  
देव सम्बन्धी आयु भव और स्थिति क्षयके बाद च्यवकर कहाँ जायँगे  
और कहाँ उत्पन्न होंगे ?

माना तथार्थ स्वविदेशी पासै सामयिक आदि अगोकार अगोनु अध्ययन करी पूरा  
नव वरस सुधी दीक्षा पर्यायनु पालन करीने अनशन वडे भेतालीस भक्तोनु छेदन  
करी पोताना पापस्थाननी आलोचना तथा प्रतिक्रमण करीने समाधि प्राप्त यता  
काल अवसरमा काल करीने चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा, आदिनी उपर सौधर्म  
ईशान आदि यावत् अन्युत देवलोकनु उल्लङ्घन करी त्रयसौ अठारह त्रैवेयक विमाना  
वासनु पण्य उल्लङ्घन करता सर्वार्थसिद्ध विमानमा देवतापण्यमा उत्पन्न यथा त्या  
देवताओंनी स्थिति तैत्तीस सागरोपम छे जेवी ७ गीते निपध देवनी पण्य तैत्तीस  
सागरोपम स्थिति छे

वरदत्त पूछे ३—हे भदन्त ! ते निपधदेव ते लोकमाथी देव सणधी  
आयुभय अने स्थिति क्षय पछी ब्यवीने क्या जशे अने क्या उत्पन्न वशे ?



वर्षे उन्नाते नगरे विशुद्धपितृवशे राजकुले पुत्रतया प्रत्यायास्यति । ततः खलु स उन्मुक्तगालभावः विज्ञातपरिगतमात्रः यौवनकमनुप्राप्तः तथारूपाणा स्थविराणामन्तिके केवलगोर्षि बुद्ध्या अगाराद् अनगारता प्रव्रजिष्यति । स खलु तत्रासनगारो भविष्यति, ईर्यासमितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । स खलु तत्र बहूनि चतुर्थपष्ठाष्टमदशमद्वादश मासार्द्धमागक्षपणैः विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मान भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयिष्यति, पालयित्वा मासिक्या सलेखनया आत्मान जोषयिष्यति, जोषयित्वा पट्टि भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति । यस्यार्थं क्रियते नग्नभावो, मुण्डभावः, अस्नानको, यावद् अदन्तवर्णकः,

भगवान् कहते हैं—

हे वरदत्त ! यह निषध देव इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमे विशुद्ध पितृवशवाले राजकुलमे पुत्र रूपसे उत्पन्न होगा । उसके बाद वाल्यकाल बीतनेपर, सुप्त दसो अगोके जागनेपर वह युवावस्था को प्राप्त होगा, और तथारूप स्थविरोके समीप शुद्ध सम्यक्त्वको प्राप्तकर अगारसे अनगार होगा । वह अनगार वहाँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा । वह वहाँ बहुतसे चतुर्थ पष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्द्ध मास क्षपण-रूप विचित्रतपसे आत्माको भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन करेगा । बादमे मासिकी सलेखनासे आत्माको सेवित कर साठ भक्तोंको अनशनसे छेदित करेगा । जिम् मोक्ष प्राप्तिके लिये अनगार, नग्नत्व=परिमितवस्त्रधारित्व मुण्डभाव=द्रव्य भावसे

भगवान् कहे छे —

हे वरदत्त ! आ निषधदेव आज जम्बूद्वीप नामे द्वीपनी अहो महाविदेह क्षेत्रना उन्नात नगरमा विशुद्ध पितृवशवाला राजकुलमा पुत्ररूपे जन्मशे, त्पार पछी आत्यकाण वीती गया पछी सुनेला दशेय अगोनी जगृनि थता ते युवावस्थाने प्राप्त थशे अने तथात्र स्थविरे पासो शुद्ध सम्यक्त्वने प्राप्त करी अगारमाथी अनगार थशे ते अनगार त्या ईर्यासमिति आदिथी युक्त थध यावत् गुप्तब्रह्मचारी थशे ते त्या घणा चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मासार्द्ध, मास, क्षपणरूप विचित्र तपथी—आत्माने भावित करता घणा वर्ष सुधी दीक्षापर्यायनु पालन करथे पछी मासिकी सलेखनाथी आत्माने सेवित करी अनशनथी साठ भक्तोनु छेदन करथे ते मोक्षप्राप्ति माटे अनगार नग्नत्व=परिमित वस्त्रधारित्व, मुण्डभाव=द्रव्य भावथी

अच्छत्रकः, अनुपानत्कः, फलकशय्या, काष्ठशय्या, केशलोचो, ब्रह्मचर्यवासः,  
परगृहप्रवेशः, पिण्डपातः, लब्धापलब्धः, उच्चावचाश्च ग्रामरूपा अ यास्यन्ते,  
तमर्थमाराधयिष्यति, आरा ४ चरमैरुच्चास-निःश्वासैः सेत्स्यति, भोत्स्यते,  
यावत् सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । एव खलु जन्म १ श्रमणेन भगवता  
महावीरेण यावत्समाप्तेन यावत् निक्षेपकः ॥ ३ ॥

॥ प्रथममययन समाप्तम् ॥ १ ॥

टीका—‘तएण अरहा’ इत्यादि । यस्यार्थः=यन्मोक्षप्राप्त्यर्थं क्रियते  
नमभावः=अवेलेत्वं परिमितवस्त्रधारित्वमित्यर्थः, मुण्डभावः=दीक्षितत्वम् । अस्ना-  
तकः=देशसर्वस्नानवर्जितः स्वात्मेति शेषः, अदन्तवर्णकः=दन्तवर्णो-दन्ताना-  
मुज्ज्वलीकरणं स एव दन्तवर्णकः, अर्गुलिदन्तशाणकाष्ठादिभिर्दन्तवर्णनं, न दन्त-  
वर्णकोऽदन्तवर्णकः=दन्तोज्ज्वलीकरणव्यापारराहित्यम् । अच्छत्रकः=उत्तररहितः ।  
अनुपानत्कः=पादत्राणरहितः, उपलक्षणमेतन्-शरूटशिविकातुरगादि वाहनानामपि  
फलकशय्या=फलकः=मतिलमायतकाष्ठ तदूपा शय्या (पाटा) इति भाषायाम् ।

मुण्डत्व, अस्नातकः=देशतः और सर्वतः स्नान वर्जन, अदन्तवर्णकः=अर्गुलि  
दातन आदिसे दातोको स्वच्छ न करना और मिसी आदिसे दातको  
न रगना, अच्छत्र=रजोहरण आदिका भी छत्र धारण नहीं करना,  
अनुपानत्कः=पगरखी तथा मौजे आदिको नहीं पहिनना, एव गाडो  
शिबिका और घोडा आदिकी सवारी नहीं करना, फलकशय्या=काष्ठ  
आदिके पाटपर सोना, काष्ठशय्या=काष्ठपर सोना, केशलोचः=अपने या  
दूसरे साधुओंके हाथसे केशोका लुचन करना-कराना । ब्रह्मचर्यवासः=  
विषय सुख परित्याग रूप ब्रह्मचर्यमें स्थिर होना, परगृहप्रवेशः=भिक्षाके  
लिए गृहस्थोंके घरमें जाना, पिण्डपातः=भिक्षाग्रहण, लब्धापलब्धः=लभ

मुञ्जत्वं, अस्नातकः=देशतः अने सर्वतः स्नान वर्जन (न गडावु), अदन्तवर्णकः=  
आगणी दन्तशाणकाष्ठ (लाडु) आदिथी दातोने अच्छ न करवा तथा भीशी आदिथी  
दातने न रगवा अच्छत्र=रजोक्षु आदिनु पणु छत्र धारण न करवु, अनुपानत्कः=  
पगरखा अने मोजा आदि पगमा न पहरेवा, वणी गाडी यावणी अने घोडा आदिनी  
सवारी न करवी, फलकशय्या=लाडुआनी (जण्डेनी गनावेली) पाट उपर सूवु काष्ठशय्या=  
लाडु पर सूवु केशलोचः=पोताना के भील साधुओंना हाथथी केशोनु लुचन करवु-  
करावु, ब्रह्मचर्यवासः=विषयसुख परित्यागथी ब्रह्मचर्यमा स्थिर रहेवु, परगृहप्रवेश  
भिक्षा माटे गृहस्थोना घरमा आवु, पिण्डपातः=भिक्षाग्रहण, लब्धापलब्धः=लाभ तेभ

वर्षे उन्नाते नगरे विशुद्धपितृवशे राजकुले पुत्रतया प्रत्यायास्यति । ततः खलु स उन्मुक्तमालभावः विज्ञातपरिगतमात्रः यौवनरुमनुप्राप्तः तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके केवलयोगिं बुद्ध्वा अगाराद् अनगारता प्रव्रजिष्यति । स खलु तत्राऽनगारो भविष्यति, ईर्यासमितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी । स खलु तत्र बहूनि चतुर्थपष्ठाष्टमदशमद्वादशी मासार्द्धमामक्षणैः विचित्रैः तपःकर्मभिरात्मानं भावयन् बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयिष्यति, पालयित्वा मासिक्या सलेखनया आत्मानं जोषयिष्यति, जोषयित्वा पट्टं भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति । यस्यार्थं क्रियते नग्नभावो, मुण्डभावः, अस्नानको, यावद् अदन्तवर्णकः,

भगवान् कहते हैं—

हे वरदत्त ! यह निषध देव इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीपके अन्दर महाविदेह क्षेत्रके उन्नात नगरमें विशुद्ध पितृवशवाले राजकुलमें पुत्ररूपसे उत्पन्न होगा । उसके बाद बाल्यकाल बीतनेपर, सुप्त दसो अगोके जागनेपर वह युवाऽवस्था को प्राप्त होगा, और तथारूप स्थविरोंके समीप शुद्ध सम्यक्त्वकी प्राप्तकर अगारसे अनगार होगा । वह अनगार वहाँ ईर्यासमिति आदिसे युक्त हो यावत् गुप्तब्रह्मचारी होगा । वह वहाँ बहुतसे चतुर्थ पष्ठ अष्टम दशम द्वादश मासार्द्ध मास क्षपण रूप विचित्रतपसे आत्माको भावित करता हुआ बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन करेगा । बादमें मासिकी सलेखनासे आत्माको सेवित कर साठ भक्तोंको अनशनसे छेदित करेगा । जिम् मोक्ष प्राप्तिके लिये अनगार, नग्नत्व=परिमितवस्त्रधारित्व मुण्डभाव=द्रव्य भावसे

भगवान् कहें छे —

हे वरदत्त ! आ निषधदेव आश्र जम्बूद्वीप नामे द्वीपनी अहं महाविदेह क्षेत्रना उन्नात नगरमा विशुद्ध पितृवशवाणा राजकुलमा पुत्ररूपे जन्मथे, त्पार पछी बाल्यकाण बीती गया पछी सुनेवा दृश्ये अगोनी जगृनि यता ते युवावस्थाने प्राप्त थथे अने तथाऽप स्थविरो पासे शुद्ध सम्यक्त्वने प्राप्त करी अगारमाथी अनगार थथे ते अनगार त्या ईर्यासमिति आदिथी युक्त थथ यावत् गुप्तब्रह्मचारी थथे ते त्या धर्मा चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मासार्द्ध, मास, क्षपणरूप विचित्र तपथी—आत्माने भावित करता धर्मा वर्ष सुधी दीक्षापर्यायनु पालन करथे पछी मासिकी सलेखनाथी आत्माने सेवित करी अनशनथी साठ भक्तोनु छेदन करथे ने मोक्षप्राप्ति भाटे अनगार नग्नत्व=परिमित वस्त्रधारित्व, मुण्डभाव=द्रव्य भावथी

एवं सेसा वि एकारस अज्झयणा नेयवा सगहणीअणु-  
सारेण, अहीणमइरिक्त एकारससु वि । तिवेमि ॥ ३ ॥

॥ वारस अज्झयणा समत्ता ॥ १२ ॥

॥ वह्निदसा नामं पंचमो वर्गो समत्तो ॥ ५ ॥

॥ निरयावलिया सुयकखंधो समत्तो ॥

॥ समत्ताणि उवगाणि ॥

- छाया-एव शेषाप्यपि एकादशा'यनानि ज्ञेयानि सग्रह्यनुसारेण, अही  
नातिरिक्तम् एकादशस्वपि । इति ब्रवीमि ॥ ३ ॥

॥ द्वादशा'यनानि समाप्तानि ॥ १२ ॥

॥ वृष्णिदशानामा पञ्चमोवर्गः समाप्तः ५ ॥

॥ 'निरयावलिकाश्रुतस्कन्धः समाप्तः' ॥

॥ समाप्तानि उपाङ्गानि ॥

ટીકા—एव शेषाप्यपि=अवशिष्टान्यपि एकादशा'यनानि सग्रह्यनु-  
सारेण=अस्यैवाध्ययनस्यादौ “निसदे मायनी” इत्यादिसग्रहणीगायानुसारेण  
ज्ञातव्यानि । एकादशस्वपि=मर्वेष्वप्य'यनेषु अहीनातिरिक्त=न्यूनाधिकभाव-  
रहितं वर्णनं विज्ञेयमिति भावः । शेष निगदिसिद्धम् । इति=यथा भगवत्समीपे  
मया श्रुतं तथैव ब्रवीमि=कथयामि ॥ ३ ॥

॥ इति द्वादशम-यन समाप्तम् ॥ १२ ॥

इसी प्रकार शेष ग्यारह अध्ययनोंको भी सग्रहणी गाथाके  
अनुसार जानना चाहिये । ग्यारहों अध्ययनोंमें न्यूनाधिकभावसे रहित  
वर्णन जानना चाहिये ।

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે વૃષ્ણદશાના પ્રથમ અધ્યયનના સાવ  
આ પ્રકારે કહ્યા છે (૩)

વૃષ્ણદશાનુ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત

આવી રીતે બાકીના અગીયાર અધ્યયનને પણ મગ્ગહણી ગાથાને અનુસરીને  
જાણવા જોઇએ અગીયારે અધ્યયનોમા ન્યૂનાધિક (વધતા ઓછા) સાવથી રહિત  
વર્ણન જાણવું જોઇએ

काष्ठशय्या=नाष्ठ स्थूलमायतमेव तद्रूपा शय्या, केशलोच=स्वपरहस्तेन केशो  
 त्पाटनम् । ब्रह्मचर्यवास=ब्रह्मचर्ये=त्रिपयसुखत्यागे यस्य ब्रह्मचर्यवासः । पर-  
 गृहप्रवेश=भिक्षाद्यर्थमन्यगृहप्रवेश । पिण्डपातः=भिक्षाग्रहणम् । लब्धापलब्धः=  
 लाभालाभः । उच्चावचा=उच्चाश्च अवचाश्च उच्चावचा=अनुकूलप्रतिकूल ग्राम  
 कण्टका.-ग्राम=इन्द्रियसमूहस्तस्य कण्टका इव कण्टकाः इन्द्रियवर्गानुकूलप्रति-  
 कूलशब्दादिषु सुखदुःखोत्पादकत्वेन मुक्तिमार्गं प्रति विप्रहेतुत्वादेया कण्टकत्व  
 व्यक्तम् । उच्चावचा ग्रामकण्टका अयास्यन्ते तम् अर्थ=मोक्षमाप्तिरूपम् आरा-  
 धयिष्यति । सेत्स्यति=सकलकार्यकारितया सिद्धो भविष्यति । भोत्स्यते=वि-  
 मलकेवलालोकेन सकललोकालोक ज्ञास्यति । यावच्छब्देन-‘मुच्चिद्भिः परिणि-  
 व्वाहिः’ इत्यनयो सङ्ग्रहः, तथाहि-मोक्षयते=सर्वकर्मभ्यो मुक्तो भविष्यति ।  
 परिनिर्वास्यति=समस्तकर्मकृतविकाररहितत्वेन स्वस्थो भविष्यति । सर्वदुःखानां=  
 समस्तक्लेशानाम् अतः=नाश करिष्यति अव्यायाधसुखमाग्नं भविष्यतीत्यर्थः ।  
 हे जम्बू ! एवम्=उक्तप्रकारेण श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सिद्धिगति  
 नामधेय स्थानं समाप्तेन यावद् निक्षेपक=समाप्तिमुखको राक्षयप्रवन्ध ॥३॥

इति प्रथममध्ययन समाप्तम् ॥ १ ॥

और अलाभ, और उच्चावचग्रामकण्टक=इन्द्रियोके अनुकूल प्रतिकूल शब्द  
 आदिको सहन करना, आदि मर्षादामें चलते हैं, उस मोक्षरूप अर्थकी  
 आराधना करेगा । और सकल कार्योंको सिद्ध करके अन्तिम उच्छ्वास  
 निश्वासोसे सिद्ध होगा । निर्मल केवलज्ञानसे सकल लोकालोकको  
 जानेगा और सर्वकर्मोंसे मुक्त होगा, और सकल-कर्मविकाररहित होकर  
 शीतलीभूत होगा और सम्पूर्ण दुःखोंका अन्त करके अव्यायाध सुखको  
 प्राप्त करेगा ।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने वृष्णिदशाके प्रथम अध्य-  
 यनका भाव इस प्रकार रहा है ॥ ३ ॥

वृष्णिदशाका प्रथम अध्ययन समाप्त हुआ

जेरलास, अने उच्चावचग्रामकण्टक=इन्द्रियोने अनुकूल शण्डे आदि सहन करवा आदि  
 मर्षादामा यवे हे, ते मोक्षरूप अर्थकी आराधना करये अने सकल कार्य सिद्ध करी  
 छेवा उच्छ्वास निश्वासो पछी सिद्ध यये निर्मल केवलज्ञानथी तमाम लोक अलोकने  
 जानेशे अने सर्व कर्मथी मुक्त यये अने सकल कर्म विकार रहित यधने शीतलीभूत  
 (शान्त) यये अने सम्पूर्ण दुःखोंको अन्त करके अव्यायाध सुखने प्राप्त करये ।

एवं सेसा वि एकारस अज्झयणा नेयत्ता सगहणीअणु-  
सारेण, अहीणमइरित्त एकारससु वि । तिवेमि ॥ ३ ॥

॥ चारस अज्झयणा समत्ता ॥ १२ ॥

॥ वह्निदत्ता नामं पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥

॥ निरयावलिया सुयकखंधो समत्तो ॥

॥ समत्ताणि उवंगाणि ॥

छाया—एव शेषाण्यपि एकादशाभ्ययनानि ज्ञेयानि सग्रहणनुसारेण, अही-  
नातिरिक्तम् एकादशस्वपि । इति ब्रवीमि ॥ ३ ॥

॥ द्वादशाभ्ययनानि समाप्तानि ॥ १२ ॥

॥ वृष्णिदशानामा पञ्चमोवर्गः समाप्तः ५ ॥

॥ निरयावलिकाश्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

॥ समाप्तानि उपाङ्गानि ॥

टीका—एव शेषाण्यपि=अवशिष्टान्यपि एकादशाभ्ययनानि सग्रहणनु-  
सारेण=अस्यैवाभ्ययनस्यादौ “निसदे मायनी” इत्यादिसग्रहणीगाथानुसारेण  
ज्ञातव्यानि । एकादशस्वपि=मर्वेण्वप्यभ्ययनेषु अहीनातिरिक्त=न्यूनाधिकभाव-  
रहित वर्णन विज्ञेयमिति भावः । शेष निगदिसिद्धम् । इति=यथा भगवत्समीपे  
मया श्रुत तथैव ब्रवीमि=कथयामि ॥ ३ ॥

॥ इति द्वादशमभ्ययन समाप्तम् ॥ १२ ॥

इसी प्रकार शेष ग्यारह अभ्ययनोंको भी सग्रहणी गाथाके  
अनुसार जानना चाहिये । ग्यारहों अभ्ययनोंमें न्यूनाधिकभावसे रहित  
वर्णन जानना चाहिये ।

सुधर्मा स्वाभी कहे छे —

हे नम्रणु ! श्रमणु भगवान महावीरे वृष्णिदशाना प्रथम अध्ययनना भाव  
आ प्रकारे कहे छे (३)

वृष्णिदशानु प्रथम अध्ययन समाप्त.

आवी रीते गाथीना अगीथार अध्ययनने पछु सअहली गाथाने अनुसरीने  
नलणुवा नेछमे अगीथारे अध्ययनोभा न्यूनाधिक (वधता ओछा) भावथी रहित  
वर्णन नलणुव नेछमे

મૂલમ્—નિર્યાવલિયાઉવગે-ળં, ઇગો સુચક્વધો, પચ વગ્ગા, પંચસુ દિવસેસુ ઉદિસ્સતિ, તત્થ ચ્ચઉસુ વગ્ગેસુ દસ-દસ ઉદેસગા, પચમવગ્ગે વારસ ઉદેસગા ॥

॥ નિર્યાવલિયાસુત્ત સમાપ્ત ॥

છાયા—નિર્યાવલિકોપાદ્ધિ લલ્લુ ઇકઃ શ્રુતસ્કન્ધ, પચ વર્ગા, પચસુ દિવસેસુ ઉદિશ્યન્તે, તત્થ ચતુર્ણુ વર્ગેણુ દશ દશ ઉદેશકા, પચમવર્ગે દ્વાદશોદેશકાઃ ॥

॥ ઇતિ નિર્યાવલિકાસૂત્ર સમાપ્ત ॥

સુધર્મા સ્વામી કર્તે હું—

હે જમ્બૂ ! ભગવાનકે સમીપ મેંને જૈસા સુના વૈસા તુમ્હેં કહા ॥ ૩ ॥

। વારહૃત્તો અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ ।

। વૃષ્ણિ દશા નામક પાંચવૉ વર્ગ સમાપ્ત હુઆ ।

નિર્યાવલિકા-નામક શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત.

( ઉપાદ્ધ સમાપ્ત હુય ).

નિર્યાવલિકા ઉપાદ્ધિમેં ઇક શ્રુતસ્કન્ધ હૈ, પાંચ વર્ગ હૈ, પાચ દિવનોમેં હસકા ઉપદેશ દિયા ગયા હૈ । હસકે ચાર વર્ગોમેં દસ-દસ ઉદેશ હૈ, પાચવૈ વર્ગમેં વારહ ઉદેશ હૈ ।

। ઇતિ નિર્યાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત ।

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જમ્બૂ ! ભગવાનની પાસે મે જેવું સાલખ્યું એવું તને કહું છું (૩)

પાચમુ અધ્યયન સમાપ્ત.

વૃષ્ણિદશા નામનો પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

નિર્યાવલિકા નામનો શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત

( ઉપાદેશ સમાપ્ત )

નિર્યાવલિકા, ઉપાદેશ, એક શ્રુતસ્કન્ધ છે પાચ વર્ગ છે પાચ દિવસમા આમે ઉપદેશ અપાયો છે આના ચાર વર્ગમા દશ-દશ ઉદેશો છે પાચમા વર્ગમા પાચ ઉદેશો છે

ઇતિ નિર્યાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત.

## ॥ શાસ્ત્રપ્રશસ્તિઃ ॥

કાઠિયાવાડ દેશેઽસ્મિન્, વાંકાનેરપુર મહત્ ।  
 અત્રેત્ય મુનિભિઃ સાર્દ, ગ્રામાદ્ગ્રામાન્તર વ્રજન્ ॥ ૧ ॥  
 ટીકામકાર્પમેતર્હિ, મૃદ્ધી સુન્દરવોધિનીમ્ ।  
 ત્રિપદ્વિસદ્સાન્દે, વિક્રમીયે સુસ્વાગ્દે ॥ ૨ ॥  
 અપાદે પદ્મલે પક્ષે, પશ્ચમ્યા બુધવાસરે ।  
 સેય સમ્પૂર્ણતા યાતા, મન્યાનામુપકારિણી ॥ ૩ ॥  
 ટીકાસમાપ્તિકાલે ચ સાધવ સત્ય ઉત્તમાઃ ।  
 સન્ત્યગ્ તેષા નામાનિ, કલ્પ્યન્તે ગુણવૃદ્ધયે ॥ ૪ ॥  
 સમ્પ્રદાયા લસન્ત્યગ્, નિરપાયાઃ સદાર્ઘતાઃ ।  
 લિમ્બહીસમ્પ્રદાયોઽજ, દીપ્યન્તે દિવિ ચદ્રવત્ ॥ ૫ ॥

પ્રશસ્તિ.

કાઠિયાવાડ પ્રાન્તમાં વાંકાનેર નામકા એક નગર છે । તીર્થંકર પરમ્પરાસે ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતે હુણ્ડ સ નગરમાં આકર વિક્રમ સમ્વત્ ૨૦૦૩ કો મેને હસ સુન્દરવોધિની નામક ટીકાકી રચના કી ॥ ૧ ॥ ૨ ॥

મન્યોંકી ઉપકારિણી યહ ટીકા અપાદ કૃષ્ણ પશ્ચમી બુધ-વારકો સમાપ્ત હૃઈ ॥ ૩ ॥

હસ ટીકાકી સમાપ્તિ સમય જો મહાસતિયાં તથા મુનિરાજ વિરાજતે થે उनके નામ ગુણવૃદ્ધિકે લિયે કહે જાતે હૈ ॥ ૪ ॥

હસ સસારમે પવિત્ર ઔર નિર્મલ ઘટતમી આર્હત સપ્રદાયે

પ્રશસ્તિ

કાઠિયાવાડ પ્રાન્તમા વાંકાનેર નામે એક નગર છે તીર્થંકર પરમ્પરાથી આમેશ્રામ વિહાર કરતા કરતા આ નગરમા આવીને વિક્રમ સ વત્ ૨૦૦૩ મા મે આ સુન્દરવોધિની નામની ટીકા રચી (૧-૨)

મન્યોની ઉપકાર કરવાવાળી આ ટીકા અપાદ (૩૦ જેઠ) વદિ પાચમ બુધવારે સમાપ્ત થઈ (૩)

આ ટીકાની સમાપ્તિ વખતે જે ઉત્તમ સાધુ અને ઉત્તમ સાધ્વીઓ હતી તેમના નામ ગુણવૃદ્ધિ માટે કહું છું (૪)

આ સસારમા ઘણા નિર્મલ અને ઉત્તમ જૈન સપ્રદાયો છે તે સપ્રદાયોમા લીંબહી સપ્રદાય આકાશમા ચન્દ્ર ની પેઠે દેહીધ્યામાન છે (૫)



મૂલમ્—નિરયાવલિયાઉવગે પાં, એગો સુર્યચ્ચલ્લો, પચ વગ્ગા,  
પંચસુ દિવસેસુ ઉદિસ્સતિ, તત્થ પચઉસુ વગ્ગેસુ દસ દિસ  
ઉદેસગા, પચમવગ્ગે વારસ-ઉદેસગા ॥

॥ નિરયાવલિયાસુત્તં, સમત્ત ॥

છાયા—નિરયાવલિકોપાદ્ધિ લલ્લુ એકઃ શ્રુતસ્કન્ધ, પચ્ચવર્ગાઃ, પચ્ચસુ દિવ-  
સેસુ ઉદિરયન્તે, તત્થ ચતુર્પુ વર્ગેષુ દશ દશ ઉદેશકા, પચ્ચમવર્ગે દ્વાદશોદેશકાઃ ॥  
॥ ઇતિ નિરયાવલિકાસૂત્ર સમાપ્તમ્ ॥

સુધર્મા સ્વામી કરતે, હૈં—

હે જન્મ ! ભગવાનકે, સમીપ મૈને, જૈસા સુના વૈસા  
તુમ્હેં કહા ॥ ૩ ॥

। વારહર્ણા અધ્યયન સમાપ્ત હુઆ, ।

। વૃષ્ણિ દશા નામક પાંચવર્ગ, સમાપ્ત હુઆ ।

નિરયાવલિકા નામક શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત. —

(ઉપાદ્ધ સમાપ્ત હુએ)

નિરયાવલિકા ઉપાદ્ધમે એક શ્રુતસ્કન્ધ હૈ, પાંચ વર્ગ હૈ, પાચ  
દિનોમૈં હસકા ઉપદેશ દિયા ગયા હૈ । હસકે ચાર વર્ગોમૈં દસ-દસ  
ઉદેશ હૈ, પાચવૈં વર્ગમે વારહ ઉદેશ હૈ ।

—ઇતિ નિરયાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત ॥

સુધર્મા સ્વામી કહે છે —

હે જન્મ ! ભગવાનની પાસેમૈં જેવું સાલજ્યુ એવું તને કહું છું. (૩)

પારશુ અધ્યયન સમાપ્ત.

વૃષ્ણિદશા નામનો પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

નિરયાવલિકા નામનો શ્રુતસ્કન્ધ સમાપ્ત.

(ઉપાદ્ધ સમાપ્ત)

નિરયાવલિકા ઉપાદ્ધમે એક શ્રુતસ્કન્ધ, છે, પાચ વર્ગ-છે, પાચ દિવસમા  
અમેા ઉપદેશ અપાયો છે આના ચાર વર્ગમા દશ-દશ ઉદેશો છે પાચમા વર્ગમા  
વારહ ઉદેશો છે

ઇતિ નિરયાવલિકા સૂત્ર સમાપ્ત

## ॥ શાસ્ત્રપ્રશસ્તિ: ॥

કાઠિયાવાડ દેશેઽસ્મિન્, વાકાનેરપુર મહત્ ।  
 એત્ય મુનિભિં સાર્દ્ધં, ગ્રામાદગ્રામાન્તર વ્રજન્ ॥ ૧ ॥  
 ટીકામકાર્યમેતર્હિ, મુદ્રીં મુન્દરચોગિનીમ્ ।  
 ત્રિપરદિમહસાન્દે, વિક્રમીયે મુખવાહે ॥ ૨ ॥  
 અપાદે પદ્મલે પક્ષે, પશ્ચમ્યા બુધવાસરે ।  
 સેય સમ્પૂર્ણતા યાતા, મન્યાનામુપકારિણી ॥ ૩ ॥  
 ટીકાસમાપ્તિકાલે ચ સાધવ સત્ય ઉત્તમાઃ ।  
 સન્ત્યજ તૈષા નામાનિ, કલ્યન્તે ગુણવૃદ્ધયે ॥ ૪ ॥  
 સમ્પ્રદાયા ભસન્ત્યજ, નિરપાયાઃ સદાહતાં ।  
 લિમ્બહીસમ્પ્રદાયોઽજ, દીપ્યતે દિવિ ચન્દ્રવત્ ॥ ૫ ॥

### પ્રશસ્તિ.

કાઠિયાવાડ પ્રાન્તમેં વાકાનેર નામકા નગર હૈ । તીર્થકર પરમ્પરાસે ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતે હુણ હસ નગરમેં આકર વિક્રમ સમ્વત્ ૨૦૦૩ કો મૈને હસ મુન્દરચોગિની નામક ટીકાકી રચના કી ॥ ૧ ॥ ૨ ॥

મન્યોંકી ઉપકારિણી ચહ ટીકા અપાદ કૃષ્ણ પશ્ચમી બુધ-વારકો સમાસ હુઈ ॥ ૩ ॥

હસ ટીકાકી સમાપ્તિકે સમય જો મહાસતિયા તથા મુનિરાજ વિરાજતે છે અનેક નામ ગુણવૃદ્ધિકે લિયે કહે જાતે હૈ ॥ ૪ ॥

હસ સસારમેં પવિત્ર ઔર નિર્મલ વહુતમી આર્હત સપ્રદાયે

### પ્રશસ્તિ

કાઠિયાવાડ પ્રાન્તમા વાકાનેર નામે એક નગર છે તીર્થકર પરમપરાયી આમેગ્રામ વિહાર કરતા કરતા આ નગરમા આવીને વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૩ મા મે આ મુન્દરચોગિની નામની ટીકા રચી (૧-૨)

મન્યોની ઉપકાર કરવાવાળી આ ટીકા અપાદ (ગુણ જેઠ) વદિ પાશ્વમ બુધવારે સમાસ થઈ (૩)

આ ટીકાની સમાપ્તિ વખતે જે ઉત્તમ સાધુ અને ઉત્તમ સાધ્વીઓ હતી તેમના નામ ગુણવૃદ્ધિ માટે કહુ છું (૪)

આ સસારમા ઘણા નિર્મલ અને ઉત્તમ જૈન સપ્રદાયો છે તે સપ્રદાયોમા લેંબહી સપ્રદાય આકાશમા ચન્દ્ર ની પેઠે દેહીધ્યાન છે (૫)

તત્રાસ્તિ શાન્તો મનસાઽથ દાન્તઃ, ક્રતો મુનિઃ કેશવલાલનામા ।

ગુર્ભૃરોરુચ્પદાઽધિકારી, સ્વતત્ત્વધારી ચિલસત્પ્રભાવઃ ॥ ૬ ॥

ગુણાભિરામો ગુણસમ્પચારે, સદાઽવિરામો નિહતસ્ત્રકામઃ ।

સુત્યક્તરામોઽપિ વિભાતિ નામ્ના, રામો મુનિઃ કેવલ ઇત્યય ચ ॥૭॥

પ્રવર્તિની ધ્રાકલચાહનામ્ની શ્રીજીકુમારેતિ સતીતરા ચ ।

સન્તોકચાર્દિતિ પરા સતી ચ, તિસ્રોઽપ્યજન્ન દધતે વ્રતિત્વમ્ ॥૮॥

હૈં । હન સપ્રદાયોમે લિમ્બડી સમ્પ્રદાય આકાશમે ચન્દ્રમાકે સમાન દેદીપ્યમાન હૈં ॥ ૫ ॥

હસ લિમ્બડી સમ્પ્રદાયમે શાન્ત તથા મન ઓર ઇન્દ્રિયોકો દમન કરને વાલે કૃતી અર્થાત્ પણિડતરાજ મુનિશ્રી 'કેશવલાલજી મહારાજ હૈં', જો ગુણોસે શુરુકે ઉચ્ચ પદકે ઉત્તરાધિકારી હૈં । તથા યે મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈનાગમકે તત્ત્વોકે નિરૂપણ કરનેમે પ્રવીણ હૈં, એવ અપને તેજસે દેદીપ્યમાન હૈં ॥ ૬ ॥

ઓર દસરે મુનિ જો ફિ ગુણોસે અભિરામ ( સુન્દર ) હૈં તથા ગુણોકે પ્રચારમે સર્વદા લગે રહેતે હૈં ઓર જિન્હેને મમી સાંસારિક કામનાઓંકા ત્યાગ કર દિયા હૈં હસ પ્રકારકે યહ મુનિરાજ સુત્યક્ત રામ=( રામા=સ્ત્રીકે ત્યાગી ) જોનેપર મી ' રામ ' હસ નામસે પ્રસિદ્ધ હૈં । ઓર તીસરે વિચાર્થી કેવલ મુનિ હૈં ॥ ૭ ॥

અથ મહાસતિયોકે નામ કહતે હૈં-

યહા પર યે મહાસતિયા સર્વદા પશ્ચમહાવ્રતકો ધારણ કરતી

આ લીંબડી સપ્રદાયમા શાન્ત તથા મન અને ઇન્દ્રિયોને સચમથી દમન કરવાવાળા કૃતી અર્થાત્ પણિડ પ્રવર મુનિશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ છે જે શુદ્ધ વડે શુદ્ધા ઉત્ત્યપદના ઉત્તરાધિકારી છે, તથા આ મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈન આગમના તત્ત્વોના નિરૂપણ કરવામા પ્રવીણ છે એ પ્રમાણે તેઓ પોતાના તેજ વડે દેદીપ્યમાન છે (૫)

વળી બીજા મુનિ કે જે શુદ્ધ વડે અભિરામ (સુન્દર) છે તથા શુદ્ધાના પ્રચારમા સર્વદા લડ્યા રહે છે તથા જેમણે સાંસારિક બધી કામનાઓનો ત્યાગ કર્તી છે એવા મુનિરાજ સુત્યક્તરામ=રામા (સ્ત્રી) ને છોડીને પણ ' રામ ' આવા નામથી શોભી રહ્યા છે અર્થાત્ બીજા રામ મુનિ છે ત્રીજા કેવલમુનિ છે (૭)

હવે મહામતીઓના નામ કહે છે -

અહીં સાધ્વીઓ હમેશા પાંચ મહાવ્રત ધારણ કરતા વિચરે છે તેમા પ્રથમ

સાધ્વી શ્રીપાર્વતીચાઈ, શ્રી હેમકુમરા ડમિધા ।  
 વૈયાટ્ચૈકશીલા શ્રી, સમ્મુવાઈ મહાસતી ॥ ૯ ॥  
 વાંકાનેરપુરસ્થ એવ પરમોદારો મહાધાર્મિકઃ,  
 શુદ્ધસ્થાનકવાસિધર્મનિરતઃ સમ્યક્ત્વમાવાન્વિતઃ ।  
 તત્ત્વાતત્ત્વપયોવિવેચનવિધૌ હસાયમાન સદા,  
 સર્વેષામુપકારકો વિજયતે શ્રી જૈનસઘો મહાન્ ॥ ૧૦ ॥

દુર્દ વિચર રહી હૈં, ઇનમેં પ્રથમ મહાસતીકા નામ પ્રવર્તિની શ્રી  
 શાકલવાઈ સ્વામી હૈ, દૂસરી મહાસતીકા નામ શ્રી શ્રીજી કુંવરવાઈ સ્વામિ  
 હૈ, તથા ત્રીસરી મહાસતીકા નામ શ્રી સન્તોકવાઈ સ્વામી હૈ । યે  
 ત્રીન ઠાળો સે સ્થિરવાસ વિરાજતી હૈ ॥ ૮ ॥

તથા મહાસતી શ્રી પાર્વતીચાઈ સ્વામી ઓર મહાસતી શ્રી હેમ-  
 કુવરવાઈ સ્વામી એવ સેવાભાવી મહાસતી શ્રી સમ્મુવાઈ સ્વામી યહા  
 ત્રીન ઠાળોં સે વિરાજતી હૈ ॥ ૯ ॥

વાકાનેરકા યહ પરમ ઉદાર મહાધાર્મિક શ્રી જૈનસઘ સદા વિજ  
 યશાલી હૈ । યહ જૈનસઘ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમેં નિરત હૈ તથા  
 સમ્યક્ત્વભાવસે યુક્ત હૈ, એવ તત્ત્વ ઓર અતત્ત્વ રૂપો દુગ્ધ ઓર  
 જલકે વિવેચનમેં હસકે સમાન હૈ, ઓર યહ સઘ સમી પ્રાણિયોંકા  
 હિતકારક હૈ ॥ ૧૦ ॥

મહાસતીનું નામ પ્રવર્તિની શાકલવાઈ સ્વામી છે બીજી સતીનું નામ શ્રીશ્રીજીકુવર-  
 વાઈ સ્વામી તથા ત્રીજી સતીનું નામ શ્રીસતોકવાઈ સ્વામી છે આ ત્રણ થાણા  
 સ્થિરવાસ ધરાવે છે (૮)

મહાસતી શ્રી પાર્વતીચાઈ સ્વામી તથા શ્રી હેમકુવરવાઈ સ્વામી અને  
 સેવાપરાયણ શ્રી સમજુવાઈ સ્વામી અહીં ધરાવે છે (૯)

વાકાનેરનો આ પરમ ઉદાર મહાધાર્મિક શ્રી જૈનસઘ સદા વિજયશાળી છે  
 આ જૈનસઘ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમા નિરત છે તથા સમ્યક્ત્વ ભાવથી યુક્ત છે  
 અર્થાત્ તત્ત્વ અને અતત્ત્વઉપી દૂધ અને પાણીના વિવેચનમા હંસ સમાન છે અને  
 આ સઘ સર્વ પ્રાણીઓનો હિતકારક છે (૧૦)

તત્રાસ્તિ શાન્તો મનસાઽથ દાન્તઃ, કૃતો મુનિઃ કેશવલાલનામા ।

ગુર્ણૌર્મુરોરુચ્ચપદાઽધિકારી, સ્વતત્ત્વધારી વિલસત્પ્રભાવઃ ॥ ૬ ॥

ગુણાભિરામો ગુણસમ્પચારે, સદાઽવિરામો નિહતસ્વકામઃ ।

મુત્યક્તરામોઽપિ વિભાતિ નામ્ના, રામો મુનિઃ કેવલ ઇત્યય ચ ॥૭॥

પ્રવર્તિની દ્વાકલલાદ્વાનામ્ની શ્રીજીકુમારેતિ સતીતરા ચ ।

સન્તોકવાર્દિતિ પરા સતી ચ, તિસ્રોઽપ્યજન્ન દધતે વ્રતિત્વમ્ ॥૮॥

હૈં । હન સપ્રદાયોમે લિમ્બડી સમ્પ્રદાય આકાશમે ચન્દ્રમાકે સમાન દેદીપ્યમાન હૈ ॥ ૫ ॥

હસ લિમ્બડી સમ્પ્રદાયમે શાન્ત તથા મન ઓર ઇન્દ્રિયોકો દમન કરને વાલે કૃતી અર્થાત્ પણ્ડિતરાજ મુનિશ્રી 'કેશવલાલજી મહારાજ હૈં, જો ગુણોસે શુરુકે ઉચ્ચ પદકે ઉત્તરાધિકારી હૈ । તથા ચે મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈનાગમકે તત્વોકે નિરૂપણ કરનેમે પ્રવીણ હૈ, એવ અપને તેજસે દેદીપ્યમાન હૈ ॥ ૬ ॥

ઓર દસરે મુનિ જો કિ ગુણોસે અભિરામ (સુન્દર) હૈં તથા ગુણોકે પ્રચારમે સર્વદા લગે રહેતે હૈ ઓર જિન્હોને સમી સાંસારિક કામનાઓંકા ત્યાગ કર દિયા હૈ હસ પ્રકારકે યહ મુનિરાજ મુત્યક્ત રામ=( રામા=સ્ત્રીકે ત્યાગી ) હોનેપર મી 'રામ' હસ નામસે પ્રસિદ્ધ હૈ । ઓર તીસરે વિદ્યાર્થી કેવલ મુનિ હૈ ॥ ૭ ॥

અચ મહાસતિયોકે નામ કહતે હૈ-

યહા પર ચે મહાસતિયો સર્વદા પચ્ચમહાવ્રતકો ધારણ કરતી

આ લીંબડી સપ્રદાયમા શાન્ત તથા મન અને ઇન્દ્રિયોને સચમથી દમન કરવાવાળા કૃતી અર્થાત્ પડિત પ્રવર મુનિશ્રી કેશવલાલજી મહારાજ છે જે શુદ્ધ પડે શુદ્ધા ઉચ્ચપદના ઉત્તરાધિકારી છે, તથા આ મુનિવર સ્વ=આત્મા અથવા જૈન આગમના તત્વોના નિરૂપણ કરવામા પ્રવીણ છે એ પ્રમાણે તેઓ પોતાના તેજ વડે દેદીપ્યમાન છે (૨)

પણી બીજા મુનિ કે જે શુદ્ધ પડે અભિરામ (સુન્દર) છે તથા શુદ્ધોના પ્રચારમા સર્વદા લગે રહે છે તથા જેમણે આસારિક બધી કામનાઓનો ત્યાગ કરી છે એવા મુનિરાજ મુત્યક્તરામ=રામા (સ્ત્રી) ને છોડીને પણ 'રામ' આવા નામથી શોભી રહ્યા છે અર્થાત્ બીજા રામ મુનિ છે ત્રીજા કેવલમુનિ છે. (૭)

હવે મહામતીઓના નામ કહે છે -

અહીં સાધ્વીઓ, હમેશા પાચ મહાવ્રત ધારણ કરતી વિચરે છે તેમા પ્રથમ



દેવે ગુરૌ ધર્મપથે ચ ભક્તિર્થેપા સદાચારરુચિર્દિ નિત્યમ્ ।

તે શ્રાવકા ધર્મપરાયણાશ્ચ સુશ્રાવિકાઃ સન્તિગૃહે ગૃહેઽન ॥૧૧॥

इति श्री विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धाचार-पञ्चदशभाषाकलितललित-  
कलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक-वादिमानमर्दक-श्री शाहूउत्र-  
पति कोल्हापुर राजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’भपद् भूषित-कोल्हापुरराज  
गुरु-गालब्रह्मचारि-जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल  
व्रतिविरचिता श्री निरयावलिकादि पञ्चमूत्राणा सुन्दरबोधिनी  
टीका समाप्ता ।

ॐ श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार ॐ

सचास्मि

श्री श्वेतान्वर स्थानरुवासी जैन श्रावक सच, जयपुर

इस नगरके घर घरमे देव, गुरु और धर्ममे सर्वदा अद्भुत  
रुचि रखनेवाले तथा सदाचारसे युक्त एवं धर्मपरायण श्रावक और  
श्राविकाएँ विद्यमान हैं । ॥ ११ ॥

इति श्री निरयावलिका आदि पांच सूत्रोंकी सुन्दरबोधिनी  
टीकाका हिन्दी अनुवाद समाप्त ।



જેમની દેવ, ગુરૂ તથા ધર્મમાં હમેશા ભક્તિ છે તથા સદાચારમાં રૂચી છે  
એવા શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ આ નગરમાં ઘેરઘેર વિદ્યમાન છે (૧૧) ;

ઇતિ નિરયાવલિકા આદિ પાંચ સૂત્રોની સુન્દરબોધિની ટીકાનો

જા. શુભશક્તી અનુવાદ સમાપ્ત

મદ્ગલ મગવાન વીરો મદ્ગલ ગૌતમ પ્રથુ ।

સુધર્મા મદ્ગલ જમ્બૂજૈનધર્મશ્ચ મદ્ગલમ્ ॥



